दास्तान ईमान फ़रोशों की

4

अलतमश

चौथा हिस्सा

सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर की
हक़ीक़ी कहानियाँ औरतों और मर्दों
की मारका आराइयाँ

लेखक

अलतमश

فرید بکڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

आ़लमे इस्लाम के नौजवानों के नाम

* राहे हक़ के मुसाफ़िर
* जांबाज़, जिन्नात और जज़्बात
* लड़की ने अपनी लाश देखी
* रात रूह़ और रौशनी
* एक मंज़िल के मुसाफ़िर
* जब फ़र्ज़ ने मोह़ब्बत का ख़ून किया
* तसादुम रूह़ बदरुह़ का
* जब बेटा मर रहा था
* साँप और सलीबी लड़की

तआरुफ़

"दास्तान ईमान फ़रोशों की" का चौथा हिस्सा पेश किया जाता है।

आप इस हक़ीक़त से बेख़बर नहीं होंगे कि हमारी उभरती हुई नस्ल का किरदार मजरूह हो चुका है। इस क़ौमी अल्मिया के अस्बाब से भी आप वाक़िफ़ होंगे। अगर नहीं तो हम बताते हैं। एक सबब तो यह है कि बच्चों को अपने आबाव अजदाद की रिवायात से बेख़बर रखा जा रहा है। उन्हें मालूम नहीं कि उनकी तारीख़ शुजाअत के कारनामों से भरपूर है। उनकी निसाबी किताबो में भी उन रिवायात का ज़िक्र नहीं मिलता।

दूसरा सबब यह है कि हमारे बच्चे और नौजवान ऐसी कहानियों के आदी हो गये हैं जिन में तफ़रीही और लज़ीज़ मवाद ज़्यादा होता है और जिनमें सन्सनी, सस्पेंस, हंगामा आराई और जिन्सीयात होती है और जो जज़्बात में हलचल बपा कर देती है। यह दर असल इन्सानी फ़ितरत का मुतालिबा है जिसे पूरा करना ज़रूरी है लेकिन बड़ी एहतियात की ज़रूरत है।

हमारे दुश्मन ने जो यहूदी भी हैं और दूसरे भी, इन्सान की उस फ़ितरी ज़रूरत को इस्लाम दुश्मन मक़ासिद और मुसलमान दुश्मन अज़ाइम की तकमील के लिए इस्तेमाल किया है। यह जो फ़हश, उरियां, मारधाड़ और जराईम से भरपूर कहानियां, रिसाले और फ़िल्में मक़्बूल हुई हैं, उनका ख़ालिक़ हमारा दुश्मन है और उन्हें हमारे क़ौम में फैलाने का काम दुश्मन ही कर रहा है। यह ज़हरीला अदब हमारे यहां इस हद तक मक़्बूल हो गया है कि ग़ैर इस्लामी नज़रियात की हामिल कहानियां भी मुसलमानों ने दिल व जान से क़ुबूल कर ली हैं। दुनिया के ज़र परस्त नाशिरों, रिसालों के मालिकों और क़लमकारों ने देखा कि इन कहानियों से तो दौलत कमाई जा सकती है, चुनांचे उन्होंने भी क़ौमी सूद व ज़्यां को नज़र अन्दाज़ करके फ़ुहाशी को ज़रिआ बना लिया है।

इसमें किसी शक व शूबहा की गुंजाइश नहीं रही कि इसाई और यहूदी ने और हमारे मुफ़ाद परस्त नाशिरों ने हमारी नस्ल की किरदार कुशी के लिए इन अख़्लाक़सोज़ कहानियों को ज़रिया बना रखा है।

हम ने अपनी उभरती हुई नस्ल के इन्फ़िरादी और क़ौमी किरदार के तहफ़्फ़ुज़ और नशुअ नुमा के लिए "हिकायत" में सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर की सच्ची कहानियों का सिलसिला शुरूअ कर दिया था। इस सिलसिले में हम तीन हिस्से किताबी सूरत में पेश कर चुके हैं। चौथा हिस्सा पेशे ख़िदमत है। इन कहानियों में आप को वह तमाम लवाज़मात मिलेंगे जो आप के और आपके बच्चों के फ़ितरी मुतालिबात की तस्कीन करेंगे। इनमें सन्सनी

भी है सस्पेंस भी और यह कहानियां आप को क़दम क़दम पर चौंकायेंगी मगर इनकी बुनियादी ख़ुबी यह है कि यह उस क़ौमी जज़्बे और ईमान को ज़िन्दा व बेदार करेंगी जिसे हमारा दुश्मन फ़ुहश और अख़्लाक सोज़ कहानियों के ज़रिए कमज़ोर बल्कि मुर्दा करने की कोशिश कर रहा है।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने एक जंग मैदान में लड़ी जिसे सलीबी जंगों का सिलसिला कहा जाता है। दूसरी जंग ज़मीन दोज़ मुहाज़ पर लड़नी पड़ी। यह जासूसी और कमाण्डो फ़ोर्स की जंग थी। यह मुख़्तलिफ़ औक़ात की तफ़सील और ड्रामाई वारदातें हैं, जिन में आप को सुल्तान अय्यूबी के और सलीबियों के जासूसों, सुराग़रसानों तख़रीबकारों, गोरीलों और कमाण्डो असकरियों के सन्सनी खेज़, वलवला अंगेज़ और चौंका देने वाले तसादुम, ज़मीन दोज़ तआक़ुब और फ़रार मिलेंगे।

सलीबियों ने मुसलमानों के यहां तख़रीबकारी, जासूसी और किरदार कुशी के लिए ग़ैर मामूली तौर पर हसीन और चालाक लड़कियां इस्तेअमाल की थीं, इसलिए यह औरत और ईमान की मार्का आराईयां बन गयीं।

अगर आप सच्चे दिल से फ़ुहश और मुख़र्रिबे अख़लाक कहानियों से अपने बच्चों को महफ़ूज़ करना चाहते हैं तो उन्हें "दास्तान ईमान फ़रोशों की" के सिलसिले की कहानियां पढ़ने को दें।

राहे हक़ के मुसाफ़िर

बादशाह एक झोंपड़े में छिपा हुआ था। यह वाक़िआ अप्रैल 1175 ई0 (रमज़ानुल मुबारक 570 हि0) का है। जब तीन मुसलमान हुक्मरान– नुरूद्दीन ज़ंगी का बेटा अल्मुलकुस्सालेह, गुमश्तगीन और सैफुद्दीन ग़ाज़ी, सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुक़ाबले में आये थे। उनकी पुश्त पनाही सलीबी कर रहे थे। सलीबियों ने उन्हें घोड़े, ऊंट आतिशी सय्याल के मटके और दिगर अस्लेहा दिया था। सलीबियों ने ज़रूरी नहीं समझा था कि वह सुल्तान अय्यूबी को मैदाने जंग में ही शिकस्त दें। असल मक़सद शिकस्त देना और सर ज़मीने अरब पर क़ब्ज़ा करके इस्लाम को ख़त्म करना था। फ़िलिस्तीन सलीबियों के क़ब्ज़े में था। उन्होंने मुसलमानों की दो तीन कमज़ोरियां भांप ली थीं। यह थीं इक़्तेदार की हवस, ज़र, ज़न और ऐश परस्ती। सलीबी यूरोप से तवक्क़ो ले कर आये थे कि वह अपने बरतर अस्लेहा, फ़ौजों की इफ़रात और बहरी जंगी क़ुव्वत से मुसलमानों को थोड़े अर्से में ख़त्म करके क़िब्ला अव्वल और ख़ना काबा पर क़ाबिज़ हो जाएंगे और इस्लाम का ख़ातमा कर दिया जाएगा।

मज़हब कोई दरख़्त नहीं जिसे जड़ों से काट दिया जाए तो सूख कर ख़त्म हो जाएगा। मज़हब किसी एक किताब या किताबों के अम्बार का नाम नहीं जिसे जला दिया जाए तो मज़हब जल कर राख हो जाएगा। मज़हब, अक़ाइद और नज़रियात का नाम है जो इन्सान के ज़ेहन व दिल में महफ़ूज़ होते हैं और इन्सान को अपना पाबन्द किये रखते हैं। इन्सानों के क़त्ल कर देने से अक़ाइद और नज़रियात ख़त्म नहीं हो जाते। किसी मज़हब को ख़त्म करने का ज़रिआ सिर्फ़ यह है कि ज़ेहनों और दिलों में तअीश पसन्दी और लज़्ज़त परस्ती डाल दी जाए। अक़ाइद और नज़रियात की गिरफ़्त ढीली पड़ने लगती है और इन्सान आज़ाद होता चला जाता है। यहूदियों और सलीबियों ने मुसलमानों के लिए यही जाल तैय्यार किया, सरज़मीने अरब और मिस्र मे लाकर बिछाया तो मुसलमान उमरा उसमें आने लगे। मिल्लते इस्लामिया की यह बदबख़्ती है कि मुसलमान इक़्तेदार और औरत की ख़ातिर अक़ीदे क़ुर्बान कर दिया करता है।

नुरूद्दीन ज़ंगी और सलाहुद्दीन अय्यूबी के दौर में यह मीठा ज़हर हर हुक्मरानों और उमरा की रगों में उतर चुका था और सलीबी फ़िलिस्तीन पर क़ाबिज़ हो चुके थे। मुतआद–ह मुसलमान रियासतें ऐसी थीं जिन पर सलीबियों का क़ब्ज़ा तो नहीं था लेकिन रियासतों के उमरा के दिलों पर उन्हीं का क़ब्ज़ा था। सलीबी और यहूदी, मुसलमानों की किरदार कुशी में इस हद तक कामयाब हो चुके थे कि किसी भी मुसलमान सालार के मुतअल्लिक़ यक़ीन से नहीं कहा जा सकता था कि वह सल्तनते इस्लामिया का वफ़ादार है। ज़ंगी और अय्यूबी के

लिए यह ग़द्दार बहुत बड़ा मस्ला बन गये थे। 1174–1175 ई० में सुल्तान अय्यूबी और फ़िलिस्तीन के दर्मियान कलमा गो भाई हायल हो गये थे। सलीबी दूर बैठे तमाशा देख रहे थे। सुल्तान अय्यूबी हर मैदान में सलीबियों को शिकस्त पे शिकस्त देता चला आ रहा था मगर सलीबियों ने मुसलमान उमरा को ही उसके मुकाबले में खड़ा कर दिया। उसका बेहद तकलीफ़देह पहलू यह था कि नुरूद्दीन ज़ंगी का अपना बेटा अल्मुलकुस्सालेह इस्माईल उसकी वफ़ात के बाद सुल्तान अय्यूबी के मुख़ालिफ़ कैम्प में चला गया।

यह बादशाह जो अप्रैल 1175 ई० में एक झोंपड़े में बैठा था, अल्मुलकुस्सालेह का इत्तेहादी सैफुद्दीन ग़ाज़ी था। उनका तीसरा इत्तेहादी गुमश्तगीन था। आप उस मार्के की तफ़सील पढ़ चुके हैं जिसमें सुल्तान अय्यूबी ने इन तीनों की मुत्तहदा फौज को ऐसी शर्मनाक शिकस्त दी थी कि तीनों अपनी–अपनी फौज के मरकज़ (हेडक्वार्टर) के ख़ेमे साज़ो सामान समेत छोड़ कर भाग गये थे। उन के जो जंगी कैदी सुल्तान अय्यूबी की फौज ने पकड़े थे उन्हें मुसलमान समझकर रिहा कर दिया गया था। यह सुल्तान अय्यूबी की कौम परस्ती और कुशादा ज़रफ़ी थी जो उसे महंगी पड़ी। यह कैदी वापस गये तो उन्हें फौज में लेकर चन्द दिनों में बिखरी हुई फौजें मुन्ज़िम कर ली गयीं। यह तो चन्द दिनों की बात है।

मैदाने जंग से अल्मुलकुस्सालेह, सैफुद्दीन ग़ाज़ी और गुमश्तगीन का भागना बड़ी अजीब था। उन्हें एक दूसरे का होश नहीं था। गुमश्तगीन हरान का किलादार था जो बग़दाद की ख़िलाफ़त के तेहत था लेकिन जंग से पहले उसने ख़ुद मुख़्तारी का एलान कर दिया था। वह भागा तो हरान जाने के बजाए हलब चला गया जिसे अल्मुलकुस्सालेह ने अपना दारुल ख़िलाफ़ा बना रखा था। वह इस ख़ौफ़ से हरान नहीं गया था कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी तआक्कुब में आकर उसे पकड़ लेगा।

सैफुद्दीन एक और शहर मुसिल और उसके मुज़ा'फ़ात का हुक्मरान अमीर था। हुक्मरान ही नहीं सालार भी था। मैदाने जंग के दाव पेंच से वाकिफ़ था, मगर उसने अपना ईमान बेच डाला था जो मोमिन की तलवार भी होता है ढाल भी। वह मैदाने जंग में भी हरम की चैदा–चैदा लड़कियों और नाचने वालियों को साथ ले गया था।

शराब के मटकों के अलावा ख़ुबसूरत परन्दे भी उसके साथ थे। वह ऐश व ईशरत का यह सारा सामान वहीं छोड़ कर भागा था। उसके साथ भागने वालों में उसका नायब सालार और एक कमानदार भी था। उसे मुसिल जाना था लेकिन सुल्तान अय्यूबी के छापामार दुश्मन के अक़ब में चले गये थे। उन्होने दुश्मन की बिखरी हुई फौज के लिए पस्पाई मुहाल कर दी थी।

सैफुद्दीन और उसके दोनों साथियों ने शायद छापामारों की कोई पार्टी देख ली थी जिससे बचने के लिए वह मुसिल के रास्ते से भटक गये। यह इलाका उस दौर मे अजीब था। रेगिस्तान भी था, चट्टानी भी और कहीं सर सब्ज़ भी। वहां उन्हें छिपने की जगहें मिलती रहीं। वह मुसिल से थोड़ी दूर थे। रात गहरी हो गयी थी। उन्हें चांदनी रात में कुछ मकान नज़र आये। सैफुद्दीन ने पहले ही मकान के दरवाज़े पर दस्तक दी। एक सफेद रेश बूढ़ा

बाहर आया। उसके सामने तीन घोड़सवार खड़े थे जो इस क़दर बुरी तरह हांप रहे थे कि बूढ़े ने पूछा– "मालूम होता है तुम भी मुसिल फौज के सिपाही हो और भाग कर आये हो। मैं दो दिनों से सिपाहियों को गुज़रते देख रहा हूं। वह पानी पीने के लिए रूकते हैं और मुसिल को चले जाते हैं।"

"यहां से मुसिल कितनी दूर है?" सैफुद्दीन ने पूछा।

"अगर तुम्हारे घोड़ों में दम हो तो सेहरी तक पहुंच सकते हो।" बूढ़े ने कहा– "यह गांव मुसिल का ही है।"

"अगर तुम्हारे पास जगह हो तो क्या हम रात तुम्हारें यहां गुज़ार सकते हैं?" सैफुद्दीन ने पूछा।

"जगह दिल में हुआ करती है।" बूढ़े ने जवाब दिया– "घोड़ों से उतरो और अन्दर चलो।"

एक कमरे में वह तीनों मशाल की रौशनी में बैठे तो बूढ़े ने उनके लिबास ग़ौर से देखे।

❖

"हमें पहचानने की कोशिश कर रहे हो?" सैफुद्दीन ने मुस्कुरा कर पूछा।

"मैं देखता हूं कि तुम सिपाही नहीं हो?" बूढ़े ने कहा– "तुम्हारा रूत्बा सालारी तक हो सकता है।"

"यह वालिये मुसिल सैफुद्दीन ग़ाज़ी हैं।" नायब सालार ने कहा– "तुमने किसी मामूली आदमी को पनाह नहीं दी। तुम्हें इसका इनाम मिलेगा। मैं नायब सालार हूं और यह कमानदार हैं।"

"एक बात ग़ौर से सुनलो मेरे बुज़ुर्ग!" सैफुद्दीन ने कहा– "हो सकता है हमें तुम्हारे घर ज़्यादा दिन रूकना पड़े। हम दिन के वक़्त बाहर नहीं निकलेंगे किसी को पता न चले कि हम यहां हैं। अगर किसी को पता चल गया तो तुम्हें सज़ा मिलेगी और अगर तुमने यह राज़ छिपाए रखा तो तुम्हें इनाम मिलेगा। जो मांगोगे मिलेगा।"

"मैं वालिये मुसिल को पनाह नहीं दी।" बूढ़े ने कहा– "आप भूखे भटके, मुसीबत के मारे मेरे यहां आये हैं। जितने दिन रहेंगे ख़िदमत करूंगा। अगर आप छिपकर रहने के ख़्वाहिशमंद हैं तो छिपाये रखूंगा, और मुझे आप के साथ इसलिए दिलचस्पी है कि मेरा बेटा आपकी फौज में सिपाही है।"

"हम उसे तरक्क़ी देंगे।" नायब सालार ने कहा।

"अगर आप उसे फौज से सुबुकदोश कर दें तो मेरे लिए बड़ा ईनाम होगा।" बूढ़े ने कहा।

"हां।" सैफुद्दीन ने कहा– "हम उसे फ़ौज से सुबुकदोश कर देंगे। हर बाप की ख़्वाहिश होती है कि उसका बेटा ज़िन्दा रहे।"

"मैंने उसकी ज़िन्दगी की आरज़ू कभी नहीं की।" बूढ़े ने कहा– "मैंने उसे अपनी कौम की फौज में भेजकर ख़ुदा के सुपुर्द कर दिया था। मैं भी सिपाही था। आप अभी पैदा नहीं हुए थे जब मैं फौज में भर्ती हुआ था। अल्लाह आपके वालिदे मोहतरम को जन्नत अता फरमाये। मैं

उनके दौर में सिपाही था। हम ने कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ मार्के लड़े हैं मगर मेरे बेटे को आप अपने भाइयों के ख़िलाफ़ लड़ाने ले गये हैं। मैं उसकी शाहदत का आरज़ू मन्द था। मौत का नहीं।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी नाम का मुसलमान है।" सैफुद्दीन ने कहा— "उसके ख़िलाफ़ जंग जाइज़ है बल्कि फर्ज़ है।"

"मोहतरम बुज़ुर्ग!" नायब सालार ने कहा— "इन बातों को आप नहीं समझ सकते। हम बेहतर जानते हैं कि कौन मुसलमान और कौन काफ़िर है।"

"मेरे बेटों!" बूढ़े ने कहा— "इबरत हासिल करो। मेरी उम्र पचहत्तर साल हो गयी है। मेरा बाप नब्बे वर्ष की उम्र में मरा था और उसका बाप पचास बरस की उम्र में मैदाने जंग में शहीद हुआ था। दादा ने अपने वक़्तों के किस्से कहानियां मेरे बाप को सुनाये थे। मेरे बाप ने वह मेरे सीने में डाल दिये थे। इस तरह मैं दावा कर सकता हूं कि जो मैं जानता हूं वह तुम नहीं जानते। बादशाही की हवस ने जिसे भाई से लड़ाया वह एक न एक दिन भाग कर किसी ग़रीब के झोंपड़े में जा छुपा। जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनका भी यही अन्जाम हुआ था। तुम्हारी तीन फौजों को सलाहुद्दीन अय्यूबी की एक फ़ौज ने पस्पा किया है, और जिस हालत में पस्पा किया है वह दोनों देख रहा हूँ। तुम्हारे दस फ़ौजें होती तो वह भी इसी तरह भागतीं। जो हक पर होते हैं वह फतह हासिल करते हैं और जब उन्हें शिकस्त होती है तो वह भागते नहीं, उनकी लाश मैदाने जंग से उठाई जाती हैं। वह छिपते नहीं।"

"तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी के हामी मालूम होते हो।" सैफुद्दीन ने ऐसे लहजे में कहा जिस में गुस्से की झलक थी— "हमें तुम पर भरोसा नहीं करनी चाहिए।"

"मै आप का हामी हूं।" बूढ़े ने कहा— "मैं इस्लाम का हामी हूं।" अपने तजुर्बे की रौशनी मे आप को यह बताना चाहता हूं कि आप ने अपने भाइयों के दुश्मन को दोस्त समझा और यह न समझ सके कि वह आप के मज़हब का दुश्मन है। आप की शिकस्त का सबब यही है। आप मुझ पर भरोसा करें। अगर सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज यहां अचानक आ गयी तो मैं आप को छिपाये रखूंगा धोखा नहीं दूंगा।"

इतने में एक जवान और ख़ूबसूरत लड़की खाना लेकर कमरे में आई। उसके पीछे एक जवान औरत आई। उसके हाथ में भी खाना था। सैफुद्दीन की नज़रें लड़की पर जम गई। वह खाना रखकर चली गयीं तो सैफुद्दीन ने बूढ़े से पूछा कि यह कौन हैं।

"छोटी मेरी बेटी है।" बूढ़े ने जवाब दिया— "और बड़ी मेरी दहू।" मेरे उस बेटे की बीवी जो आप की फ़ौज में है। मुझे यूं महसूस होता है जैसे मेरी बहू बेवा हो गयी है।"

"अगर तुम्हारा बेटा मारा गया है तो मैं तुम्हें बेअन्दाज़ रकम दूंगा।" सैफुद्दीन ने कहा— "और अपनी बेटी के मुतअल्लिक तुम्हें कोई फ़िक्र नहीं करनी चाहिए। यह किसी झोंपड़े में किसी सिपाही की बीवी बनकर नहीं जाएगी। हमने उसे अपने ज़ौजियत के लिए उसे पसन्द कर लिया है।"

"मैंने न अपना बेटा बेचा है, न अपनी बेटी बेचूंगा।" बूढ़े ने कहा— "झोंपड़े में पल कर

जवान होने वाली बेटी किसी सिपाही के झोंपड़े में ही अच्छी लगती है। मैं आप से एक बार फिर दरख़्वास्त करता हूं कि मुझे लालच न दें। आपे मेरे मेहमान हैं। मेज़बानी का हर फ़र्ज़ अदा करूंगा।"

"तुम सो जाओ।" सैफुद्दीन ने बूढ़े से कहा– "हमें तुम पर भरोसा है और ख़ुशी है कि हमारी रियासत में तुम जैसे साफ़ गो और बा उसूल बुज़ुर्ग मौजूद हैं।"

बूढ़ा चला गया तो सैफुद्दीन ने अपने साथियों से कहा– "इस क़िस्म के इन्सान धोखा नहीं दिया करते....तुमने इसकी बेटी को ग़ौर से देखा था?"

"अच्छा मोती है।" नायब सालार ने कहा।

"हालात ज़रा बेहतर हो लें तो यह मोती अपनी झोली में होगा।" सैफुद्दीन ने मुस्कुराकर कहा, फिर चौंक कर अपने नायब सालार से कहने लगा– "तुम मुसिल की ख़बर लो। फौज को यकजा करो। सलाहुद्दीन अय्यूबी की सरगर्मियां भांपो और मुझे बहुत जल्दी बताओ कि मैं मुसिल आ जाऊं या कुछ देर रुका रहूँ.....और तुम...." उसने कमानदार से कहा–" हलब वालों को बता दो कि मैं यहाँ हूं। ख़ुद जाओ या किसी को भेजो।"

दोनों रवाना हो गये। सैफुद्दीन जो शराब में बदमस्त होकर हसीन से हसीन लड़कियों से दिल बहलाकर महल में सोने का आदी था एक कच्चे से मकान के फ़र्श पर सो गया।

❖

उससे एक रोज़ पहले का वाक़िआ है कि मैदाने जंग से एक सिपाही भागा हुआ मुसिल की तरफ़ जा रहा था। वह घोड़ा दौड़ता था, रुकता था और आहिस्ता आहिस्ता चलाने लगता था। कभी घोड़ा रोक कर घबराहट के आलम में इधर उधर देखता था। वह आम रास्ते से कुछ हट कर जा रहा था। मालूम होता था कि उसपर ख़ौफ तारी है और उसका ज़ेहन उसके काबू में नहीं। एक जगह उसने घोड़ा रोका, उतरा और किब्ला रू होकर नमाज़ पढ़ने लगा। दुआ के लिए हाथ उठाये तो ज़ारो कतार रो पड़ा। वहां से वह उठा नहीं। सर हाथों में लेकर बैठा रहा।

यह फ़ौजें जब सुल्तान अय्यूबी से शिकस्त खाकर बिखरी और पस्पा हुई थीं, सुल्तान अय्यूबी के कई एक जासूस उनमें शामिल हो गये थे। यह सुल्तान अय्यूबी की इन्टेलीजेंस का तरीका था कि दुश्मन जब पस्पा होता था तो कुछ जासूस भागे हुए सिपाहियों या जंग की ज़द में आये हुए गांव के मुहाजरीन के बहरूप में दुश्मन के इलाके में चले जाते और दुश्मन की तन्ज़ीम नौ, और अज़ाइम और दिगर कवालफ़ देखकर इत्तलाअें फ़राहम करते थे। दमिश्क से जब अल्मुलकुस्सालेह अपनी फ़ौज के साथ भागा था तो भी जासूसों की ख़ासी तादाद फ़ौज और भागे हुए शहरियों के साथ चली गयी थी। जेसा कि पहले वज़ाहत से बयान किया जा चुका है कि सुल्तान अय्यूबी आधी जंग जासूसी के निज़ाम से जीत लिया करता था। जासूसी के लिए जिन आदमियों को मुन्तख़ब किया जाता था वह ग़ैरमामूली तौर पर ज़हीन, ठंडे मिज़ाज वाले, फ़ैसले की अहलियत और ख़ुद एतमादी रखने वाले, लड़ाके और फुर्तीले होते थे।

अप्रैल 1175 ई0 में सुल्तान अय्यूबी ने अपने मुसलमान दुश्मनों की मुत्तहदा फौज को शिकस्त दी तो उसकी इन्टलीजेंस के सरबराह, हसन बिन अब्दुल्लाह, ने उन जासूसों को जो उस काम के लिए तरबियत याफ्ता थे, दुश्मन की बिखरी हुई फौज में शामिल होकर हलब, मुसिल और हरान तक जाने और दुश्मन के आइन्दा अज़ाइम मालूम करने को भेज दिया। उनमें बाज़ दुश्मन की फौज के लिबास में थे और बाज़ देहाती लिबास में। उनका जाना बहुत ही ज़रूरी था क्योंकि यह ख़तरा हर लम्हा मौजूद था कि दुश्मन तन्ज़ीमे नौ (रीग्रुपिंग) करके जवाबी हम्ला करेगा। सुल्तान अय्यूबी ने दुश्मन को जो नुकसान पहुंचाया था उससे उसे अन्दाज़ा था कि दुश्मन रिग्रुपिंग में ख़ासे दिन सर्फ़ करेगा। दुश्मन की तीन फ़ौजें थीं। सुल्तान अय्यूबी को यह भी मालूम था कि उसके तीनों दुश्मन दिली तौर पर एक दूसरे के साथ नहीं। तीनों में से हर एक की ख़्वाहिश यह थी कि वह सुल्तान अय्यूबी को शिकस्त देकर सल्तनते इस्लामिया का मुख़्तारे कुल और शहँशाह बन जाए। वह एक दूसरे के भी ख़िलाफ थे मगर फ़िलहाल सूरत यह थी कि वह सुल्तान अय्यूबी को अपना मुश्तर्का दुश्मन समझते थे। इस लिए यह इम्कान मौजूद था कि वह तीनों फ़ौजों को एक फ़ौज की सूरत में मुन्ज़िम कर लेंगे और जवाबी हम्ला करेंगे।

सुल्तान अय्यूबी यह भी जानता था कि अय्याशियों के दिलदादा मैदाने जंग में नहीं ठहर सकते लेकिन उसे यह भी मालूम था कि उसके दुश्मनों के सलीबियों को मदद और पुश्त पानाही हासिल है और उनके पास सलीबी मुशीर भी मौजूद हैं। इस के अलावा मुसलमान सालारों में दो तीन ऐसे थे जो क़यादत की अहलियत रखते थे। इन में मुज़फ़्फ़रूद्दीन इब्ने ज़ैनुद्दीन ख़ास तौर पर काबिले ज़िक्र था। वह सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज में सलार रह चुका था, इस लिए सुल्तान अय्यूबी के दाव पेंच को ख़ूब समझता था। सलीबी मुशीरों और मुज़फ़्फ़रूद्दीन जैसे सालारों ने सुल्तान अय्यूबी को बहुत चौकस कर दिया था।

उसे जो उन्सर ज़्यादा परेशान कर रहा था वह उसकी अपनी फ़ौज की कैफ़ियत थी जो तसल्ली बख़्श कहलाई जा सकती थी लेकिन यह ख़तरा था कि फ़ौरी तौर पर दूसरी जंग नहीं लड़ सकेगा। जानी नुकसान कम न था। दुश्मन को शिकस्त तो दे दी गयी थी मगर कुछ कीमत भी देनी पड़ी थी जो थोड़ी नहीं थी। सुल्तान अय्यूबी के लिए एक मुश्किल यह भी थी कि वह अपने मुस्तक़र से दूर था। रस्द उसके साथ थी लेकिन तवील जंग की सूरत में रस्द की कैफ़ियत मख़्दूश हो सकती थी। उसने करीबी आबादियों से भर्ती शुरू करा दी थी। लोग भर्ती हो रहे थे। इनमें ज़्यादा तर तेग़ज़नी, तीर अन्दाज़ी और घोड़ सवारी से वाकिफ़ थे। लेकिन फौज की सूरत में लड़ाने के लिए ट्रेनिंग की ज़रूरत थी।

ट्रेनिंग शुरू कर दी गयी थी और उस के साथ ही सुल्तान अय्यूबी ने पेशक़दमी जारी रखी ताकि काम के इलाकों पर कब्ज़ा कर लिया जाए। उसे बाज़ मुकामात मुज़ाहमत के बग़ैर मिल गये और वह ऐसी जगह पहुंच गया जहां दूर दूर तक सब्ज़ा ही सब्ज़ा था और पानी अफ़रात थी। फ़ौज और जानवर थक कर चूर हो चुके थे। जानवरों की यह हालत थी कि इतना ज़्यादा सब्ज़ा और पानी देखकर भूल ही गये कि उनका इस्तेमाल और फ़राइज़ क्या

हैं।

सुल्तान अय्यूबी ने वहीं ख़ेमा ज़न होने का हुक्म दे दिया। देखभाल के दस्ते मौज़ूं जगहों पर भेज दिए। जासूस पहले ही चले गये थे। उसे हुक्म देने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। यह निज़ाम एक मशीन की तरह अज़ख़ूद चलता था। यह मुकाम जहां सुल्तान अय्यूबी ने कयाम किया था तुर्कमान के नाम से मशहूर थी। उसका पूरा नाम ट्बाबुल तुर्कमान (तुर्कमान का कुंवा) था।

"भर्ती और तेज़ करदो" सुल्तान अय्यूबी ने अपनी मरकज़ी कमान की पहली कान्फ्रेंस में कहा– "इज्तमाई तौर पर लड़ने की तरबियत और ज़्यादा तेज़ कर दो। ख़ुदा ने तुम पर करम किया है कि तुम्हें बड़ा ही अहमक दुश्मन दिया है। अगर उन लोगों में कुछ सूझ बूझ होती तो पस्पा होकर इस जगह इकट्ठे हो जाते। जंगी जानवरों और सिपाहियों के लिए यह मुकाम जन्नत से कम नहीं। यहां तुम्हारे जानवर इतना चारा खा लेंगे कि दस रोज़ बेग़ैर चारे के लड़ सकेंगे.........मेरे दोस्तों! दुश्मन को हकीर न समझना। फौज को आराम दो लेकिन तैय्यारी की हालत में रहना। तबीबों से कहो कि रातों को न सोयें। ज़ख़्मियों को बहुत जल्द सेहतयाब करें और बीमारों को दिन रात निगरानी में रखें ....और याद रखो, हमारा मकसद अपने भाइयों को कत्ल करना या उन्हें बुरा भला कहना और धुतकारना नहीं। हमारी मंज़िल फ़िलिस्तीन है। अगर आपस में दस्त व गरीबां होते रहे तो सलीबी अपने मकसद में कामयाब हो जाएंगे। नज़र फ़िलिस्तीन पर रखो और रास्ते में जो रूकावट आये उसे रौंदते चले जाओ।"

उसी मुकाम पर सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को अल्मुलकुस्सालेह की तरफ़ से सुलह का पैग़ाम मिला था जिस का तफ़सीली तज़करा पिछली किस्त में किया गया है। सुल्तान अय्यूबी ने अपनी शराइत पर सुलहनामा कुबूल कर लिया था। उससे उसे यह इत्मीनान हो गया था कि उसके दुश्मन ने हथियार डाल दिये हैं। सुल्तान अय्यूबी ने यह साबित करने के लिए कि वह अपने भाइयों को दुश्मन नहीं समझता आली ज़रफ़ी का यह मुज़ाहिरा किया था उसने दुश्मन के जो जंगी कैदी पकड़े थे, उन्हें मुख़्तसर सा वाअज़ देकर रिहा कर दिया था। अल्मुलकुस्सालेह के सुलहनामे पर अपनी मुहर सब्त करने से पहले भी उसने कोई कड़ी शर्त न रखी थी क्योंकि वह अपने मुसलमान भाइयों को ज़ेहन नशीन करना चाहता था कि तुम्हारा दुश्मन मैं नहीं हूँ सलीबी हैं।

इस पैग़ाम ने उसे जो इत्मीनान दिया था, वह तीन चार दिनों से ज़्यादा न रहा क्योंकि उसे अल्मुलकुस्सालेह का एक और पैग़ाम मिला। उसने खोल कर देखा तो यह उसके नाम नहीं बल्कि सैफ़ुद्दीन के नाम था जो ग़ल्ती से कासिद सुल्तान अय्यूबी के पास ले आया था। (पिछली किस्त में इस पैग़ाम का भी तफ़सीली ज़िक्र किया गया है) इस पैग़ाम से यह ज़ाहिर हुआ कि सैफ़ुद्दीन ग़ाज़ी (सुल्तान अय्यूबी के दुश्मन नम्बर दो) ने अल्मुलकुस्सालेह को लिखा था कि उसने सुल्तान अय्यूबी के साथ सुलह करके ग़लती की है और अपने इत्तेहादियों को धोखा दे दिया है। सैफ़ुद्दीन के उस पैग़ाम के जवाब में अल्मुलकुस्सालेह ने उसे लिखा

था कि बे फिक्र रहो। मैं ने सलाहुद्दीन अय्यूबी को सुलह का धोखा दिया है ताकि वह इस हालत में हमपर न आ धमके जबकि हमारी फौजें फौरी तौर पर मुकाबले के लिए तैय्यार नहीं। मै जानता हूं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की नज़र हलब पर है। उसकी फ़ौज भी अभी हम्ले के लिए तैय्यार नहीं। मैंने वक़्त हासिल करने के लिए उसे सुलह का झांसा दिया है। तुम लोग अपनी फौज को मुन्ज़िम करो। सलीबी मुशीर मेरी फ़ौज को तेज़ी से मुनज़्ज़म और तैय्यार कर रहे हैं। तुम मुझसे इत्तफ़ाक़ करोगे कि हम अभी लड़ने के क़ाबिल नहीं।

इससे पहले बताया जा चुका है कि अल्मुलकुस्सालेह नरूद्दीन ज़ंगी का बेटा था जिसकी उम्र सिर्फ तेरह साल थी। नुरूद्दीन ज़ंगी फ़ौत हो गया तो इन्तेज़ामिया और फ़ौज के मफ़ाद परस्त हुक्कामे बाला ने अल्मुलकुस्सालेह को नुरूद्दीन ज़ंगी का जांनशीन बनाकर उसे सुल्तान का ख़िताब दे दिया फिर उसे अपने हाथों में कठपुतली बना लिया। सुल्तनते इस्लामिया बिखरने लगी। सुल्तान अय्यूबी मिस्र से दमिश्क़ गया। अल्मुलकुस्सालेह उस के हव्वारी दमिश्क की फ़ौज के कुछ हिस्से के साथ भागकर हलब चले गये और उस शहर को दारूलसल्तनत बना लिया। अल्मुलकुस्सालेह को उसके हव्वारी इस्तेमाल कर रहे थे। सुल्तान अय्यूबी को सुलह का धोखा उन्हीं लोगों ने सलीबी मुशीरों के मशवरे से दिया था मगर पैग़ाम सैफुद्दीन के पास जाने के बजाए सुल्तान अय्यूबी के हाथ आ गया। यह उस दौर की तारीख़ का एक मशहूर वाकिआ है। बाज़ मोरअख़ीन ने लिखा है कि क़ासिद यह पैग़ाम ग़लती से सुल्तान अय्यूबी के पास ले गया था लेकिन मुसलमान मोरअख़ीन ने जिन में सिराजुद्दीन क़ाबिले ज़िक्र है, वसूक़ से लिखा है कि क़ासिद सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का जासूस था।

सुल्तान अय्यूबी को इस पैग़ाम ने परेशान कर दिया लेकिन उसने परेशानी से मुतास्सिर होकर फौरी तौर पर कूच और हम्ले का हुक्म न दिया। दुश्मन की तरह उसे भी अपने फ़ौज की कैफ़ियत को बेहतर बनाने की ज़रूरत थी। उसके पेशेनज़र सबसे अहम पहलू यह था कि उसका दुश्मन अपने मुस्तकर के करीब था और वह ख़ुद मुस्तक़र से बहुत दूर। रस्द का रास्ता तवील और ग़ैर महफ़ूज़ हो गया था। उसके अलावा वह अंधा धुंध पेशक़दमी का क़ायल नहीं था। जासूसों की मुस्तन्द रिपोर्टों के बेग़ैर वह आगे नहीं बढ़ता था। उसकी बजाए वह दुश्मन को आगे आने की मुहलत देता था चुनांचे उसने हसन बिन अब्दुल्लाह से कहा कि वह कुछ और जासूस दुश्मन के इलाके में भेज दे। जो बहुत जल्द मालूमात हासिल करके भेजें। उसके अलावा उसने कुछ और ज़रूरी इन्तज़ामात किये। उसने अपनी मरकज़ी कमान से कहा कि वह हम्ला नहीं करेगा बल्कि दुश्मन को हम्ले की मुहलत देगा ताकि वह अपने अड्डे से दूर निकल आए। इन हिदायात के बाद वह दूर–दूर की ज़मीन का जायज़ा लेने लगा जहां उसे दुश्मन को लड़ाना था।

❖

ज़िक्र उस सिपाही का हो रहा था जो मैदाने जंग से भाग कर मुसिल की सिम्त जा रहा था। वह मुसिल यानी सैफुद्दीन ग़ाज़ी की फ़ौज का सिपाही था। उस फ़ौज का बहुत सारा हिस्सा तो इज्तमाअआई तौर पर पस्पा हुआ था जो सिपाही छोटी –छोटी टोलियों में थे वह

बिखरकर अकेले–अकेले भागे थे। यह सिपाही अकेले भागने वालों में से था। वह परेशानी के आलम में था। उसने एक जगह घोड़ा रोका, नमाज़ पढ़ी और दुआ करते रो पड़ा। फिर वह उठा नहीं, सर हाथों में लेकर बैठा रहा। एक घोड़सवार उसके करीब जा रूका। सिपाही आलमे ख़याल में ऐसा महव था कि घोड़े के क़दमों की आहट भी उसे बेदार न कर सकी। सवार घोड़े से उतरा और सिपाही के कंधे पर हाथ रखा। तब उसने बिदक कर उपर देखा।

"यह तो मैं बता सकता हूं कि तुम मैदाने जंग से पस्पा होकर आए हो।" सवार ने उसके पास बैठते हुए कहा– "लेकिन तुम इस तरह क्यों बैठे हो? अगर ज़ख़्मी हो तो कुछ मदद करूं?"

"मेरे जिस्म पर कोई जख़्म नहीं।" सिपाही ने जवाब दिया और दिल पर हाथ रखकर कहा– "मेरे दिल में गहरा ज़ख़्म लगा है।"

यह घोड़सवार जो उसके पास आ बैठा था, सुल्तान अय्यूबी के उन जासूसों में से था जिन्हें दुश्मन की पस्पाई से फ़ायदा उठाते हुए दुश्मन के इलाक़ों में जाने को भेजा गया था। उसका नाम दाऊद था। ट्रेनिंग के मुताबिक़ वह उस सिपाही का ग़ौर से जायज़ा ले रहा था उसे वह इस्तेमाल कर सकता था। अपनी ज़ेहानत से वह समझ गया कि यह सिपाही जज़्बाती लिहाज़ा से उखड़ा हुआ है और यह शिकस्त की दहशत का असर है। उसने सिपाही के साथ ऐसी बातें कीं कि सिपाही के दिल में जो गुब्बार था वह बाहर आ गया।

"सिपाहगिरी मेरा ख़ानदारी पेशा है।" सिपाही ने कहा– "मेरा बाप सिपाही था। दादा भी सिपाही था। सिपाहगिरी हमारा ज़रिआ मआश भी है और हमारी रूह की ग़िज़ा भी। मैं अल्लाह का सिपाही हूं। अपने मज़हब और अपनी क़ौम के लिए लड़ता हूं। मुझे मालूम था कि सलीबी हमारे मज़हब के बद तरीन दुश्मन हैं, और मुझे यह भी मालूम है कि हमारा क़िब्ला अव्वल सलीबियों के क़ब्ज़े में है। मेरे बाप ने मुझे दोस्ती और दुश्मनी की तारीख़ ज़ुबानी सुनाई थी। मैं इस्लामी जज़्बे से फ़ौज में शामिल हुआ था। थोड़ा अर्सा गुज़रा हमें बताया जाने लगा कि सलाहुद्दीन अय्यूबी सलीबियों का दोस्त है और बदकार आदमी है। इससे पहले हम सुनते थे कि सलाहुद्दीन अय्यूबी सलीबियों के ख़िलाफ़ लड़ रहा है और सलीबी उससे डरते हैं और वह सलबियों से क़िब्ला अव्वल आज़ाद करायेगा। हमारी फौज के इमाम ने भी हमें सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ बहुत बुरी बुरी बातें बतायीं..........

"हम अपनी रियासत के वालीये सैफुद्दीन ग़ाज़ी को सच्चा समझते रहे। एक रोज़ हमारी फ़ौज को कूच का हुक्म मिला। हम इधर आये तो जंग हुई। जंग के दौरान हमें पता चला कि हम मुसलमान फ़ौज के ख़िलाफ़ लड़ रहे हैं। यह सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज थी। उस फ़ौज के सिपाही नारे लगा रहे थे– 'हक़ के ख़िलाफ़ न लड़ो मुसलमानों। तुम्हारे दुश्मन सलीबी हैं' हम नहीं। हमारा साथ दो। क़िब्ला अव्वल को आज़ाद कराओ। अय्याश हुक्मरानों के लिए न लड़ो। मैंने उस फ़ौज के झंडे देखे जिसपर कलमा तैय्यबा लिखा हुआ था...... मेरे दोस्त! मैंने उन सिपाहियों को जिस तरह लड़ते देखा उस से साफ़ पता चलता था कि अल्लाह उन के साथ है हमारे साथ नहीं। हमें कुछ पता ही नहीं चलता था कि तीर किधर

से आ रहे हैं और शोले कहां से उठ रहे हैं......

"एक जगह चट्टान फटी हुई थी। मेरे दिल पर मौत का नहीं ख़ुदा का ख़ौफ ऐसा तारी हुआ कि मेरे बाज़ूओं में ताकत न रही कि तलवार का वज़न उठा सकते। घोड़े की बागे खींचने की हिम्मत न रही। मैंने घोड़ा फटी हुई चट्टान के अन्दर कर लिया। मैं बुज़्दिल नहीं हूं मगर मेरा सारा जिस्म कांप रहा था। बाहर तलवारें टकरा र ही थीं, घोड़ों का शोर था और मुझे नारे सुनाई दे रहे थे– 'रमज़ान शरीफ़ में भाइयों के खिलाफ़ न लड़ो' मुझे याद आया कि हमें हुक्म मिला था कि जंग में रोज़े मांफ होते हैं। मुझे पता चला कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के सिपाही रोज़े से थे। मैं उस वक़्त तक उनमें से तीन सिपाहियों को क़त्ल कर चुका था। उनका ख़ून मेरी तलवार पर जम गया था। सिपाही अपनी तलवार पर ख़ून देखकर ख़ुश हुआ करता है मगर मैं अपनी तलवार को देखने से घबरा रहा था क्योंकि मेरे तलवार के साथ मेरे भाइयों का ख़ून था......

"मुझ में अब वहां से बाहर निकलने और लड़ने की हिम्मत नहीं थी। मैं वहीं दुबका रहा। सलाहुद्दीन अय्यूबी के एक सवार ने मुझे देख लिया और मुझे ललकारा। उसने बरछी मुझ पर सीधी की। मैंने ख़ून आलूदा तलवार उसके घोड़े के क़दमों में फेंक दी और कहा– "मैं तुमहारा मुसलमान भाई हूं, नहीं लड़ूंगा।' घमासान की जंग कुछ दूर थी। यह सवार शायद छापामार था और छिपे हुए सिपाहियों को ढूंढ रहा था। वह आगे गया और मुझ से पूछा– "तुम्हें एहसास हो गया कि तुम ख़ुदा के सच्चे मुसलमानों के खिलाफ़ लड़ रहे हो?" मैंने अपने गुनाह का इक़रार किया और कहा कि यह गुनाह मुझसे कराया गया है। मुझे गुमराह किया गया है। उसने मुझसे बरछी ले ली। तलवर तो मैं पहले ही फेंक चुका था। उसने एक तरफ़ इशारा करके कहा– 'ख़ुदा से अपने गुनाह की बख़्शिश मांगो और उधर को निकल जाओ।' पीछे न देखना। मैं अल्लाह के हुक्म से तुम्हारी जान बख़्शी करता हूं......

"मेरी आंखों में आंसू आ गये थे। मैदाने जंग में दुश्मन जान बख़्शी नहीं किया करता। मैंने घोड़े को ऐड़ लगाई और जो रास्ता उसने बताया था घोड़े उस पर डाल दिया। वह महफ़ूज़ रास्ता था। मैं मैदाने जंग से दूर निकल आया। रात को मैं एक जगह रूका और सो गया। ख़्वाब में मुझे वह तीन सिपाही नज़र आये जिन्हें मैंने जंग में क़त्ल किया था। उनके जिस्मों से ख़ून बह रहा था। वह मेरे इर्द गिर्द आहिस्ता–आहिस्ता घूम रहे थे। उनके पास कोई हथियार नहीं था। वह मुझे कुछ नहीं कह रहे थे। ख़ामोश थे। मेरे दिल पर ऐसा ख़ौफ तारी हो रहा था जिससे जिस्म से जान निकलती जा रही थी। मैंने बच्चों की तरह चीख़ना शुरू कर दिया और मेरी आँख खुल गयी। इतनी ठंडी रात में भी मेरे जिस्म से पसीना फूट रहा था। ख़ौफ से मैं मरा जा रहा था। मैं नफ़िल पढ़ने लगा और रोता रहा......

"मैं तीन चार दिनों से भटक रहा हूँ। रात को मैं सो नहीं सकता। दिन को कहीं चैन नहीं आता। रात को ख़्वाब में उन तीन सिपाहियों को देखता हूं जो मेरी तलवार से क़त्ल हुए हैं और दिन के वक़्त इन वीरानों में वह मुझे अपने इर्द गिर्द घूमते महसूस होते हैं, नज़र नहीं आते। अगर वह सवार जिस ने मुझे चट्टान में छिपा हुआ देख लिया था मुझे क़त्ल कर देता

तो अच्छा होता। उसने मेरी जान बख़्शी करके मुझ पर बहुत बड़ा ज़ुल्म किया है। अगर मेरे पास तलवार होती तो मैं अपने आप को ख़त्म कर लेता। मैंने अपने रसूल सल्ल० के तीन मुहाजिदों को कत्ल किया है।"

"तुम जिन्दा रहोगे।" दाऊद ने कहा– "यह ख़ुदा की रज़ा है कि तुम मरोगे नहीं। मैदाने जंग से तुम जिन्दा निकल आए हो। तुम्हारे पास ख़ुदकुशी करने के लिए कोई हथियार नहीं। इससे यह ज़ाहिर होता है कि ख़ुदा ने तुमसे नेकी का काम कराने के लिए जिन्दा रखा है। ख़ुदा ने तुम्हें मौका दिया है कि गुनाह का कफ़्फ़ारा अदा करो।"

"तुम मुझे यह बताओ कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुतअल्लिक मुझे जो बुरी बुरी बातें बताई गयी थीं वह सच्ची हैं या झूठी?"

"बिल्कुल झूठी।" दाऊद ने जवाब दिया– "बात सिर्फ यह है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी सलीबियों को यहां से निकाल कर ख़ुदा की हुक्मरानी क़ायम करना चाहता है और सैफुद्दीन और उसके दोस्त अपनी–अपनी बादशाही के ख़्वाहिशमन्द हैं। उन्होंने सलीब के पुजारियों के साथ गहरी दोस्ती कर ली है और उनकी मदद से यह सब सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ने आए थे।" दाऊद ने उसे पूरी तफ़सील से बताया कि सलाहुद्दीन अय्यूबी क्या है और क्या इरादे रखता है। मुसिल के हुक्मरान सैफुद्दीन के मुतअल्लिक उसे बताया कि वह इतना अय्याश है कि मैदाने जंग में मैं भी अय्याशी का सामान साथ ले गया था।

"मुझे यह बताओ कि मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी के इन तीन सिपाहियों के ख़ून का ख़िराज किस तरह अदा कर सकता हूं।" सिपाही ने दाऊद से पूछा– "अगर यह बोझ मेरे दिल से नहीं उतरा तो मैं बहुत बुरी मौत मरूंगा। अगर मुझे कहो तो मैं वालिये मुसिल सैफुद्दीन को क़त्ल कर दूं।"

"ऐसी भी कोई ज़रूरत नहीं।" दाऊद ने कहा– "तुम पसन्द करोगे कि मैं तुम्हारे साथ चलूं?"

"तुम कौन हो?" सिपाही ने पूछा– "मैंने यह तो तुमसे पूछा ही नहीं था कि तुम्हारा नाम क्या है और तुम कहां से आये हो, कहां जा रहे हो?........मेरा नाम हारिस है।"

"मैं मुसिल जा रहा हूं।" दाऊद ने झूठ बोला– "वहीं का रहने वाला हूं। जंग की वजह से मैं रास्ते से दूर जा रहा हूं। अगर तुम्हारा गांव रास्ते में पड़ता है तो वहाँ रूकूंगा।"

"मेरा गांव दूर नहीं।" सिपाही ने हारिस से कहा– "तुम मेरे घर नहीं रूकोगे तो ज़बरदस्ती रोकूंगा। तुमने मेरी ज़ख़्मी रूह को सकून दिया है। मैंने इतनी अच्छी बातें कभी नहीं सुनी थीं। मैं घर जाऊंगा। मुसिल की फौज में अब कभी नहीं जाऊँगा। मुझे उम्मीद है कि तुम मुझे निजात का कोई रास्ता दिखादोगे।"

❖

वालिये मुसिल सैफुद्दीन ग़ाज़ी बूढ़े के कच्चे से मकान मे फ़र्श पर गहरी नींद सोया हुआ था। वह कई राते जागा था। आज रात वह इतनी गहरी नींद सोया कि मकान के बाहर वाले दरवाज़े पर दस्तक हुई तो उसकी आँख न खुली। रात आधी गुज़र गयी थी। सफ़ेद रेश बूढ़े

की आंख खुल गयी। उसकी बेटी और बहू भी जाग उठीं। बूढ़े ने उकताये हुए लहजे में कहा– "मालूम होता है सलाहुद्दीन अय्यूबी का भगाया हुआ मुसिल का कोई और कमानदार या सिपाही आया है । रास्ते में घर नहीं होना चाहिए।"

उसने दरवाज़ा खोला तो बाहर दो घोड़े खड़े थे। सवार न उतर आए थे। हारिस ने सलाम किया तो बूढ़ा उसके साथ लिपट गया मगर उसने मोहब्बत की बेताबी का इज़हार अल्फ़ाज़ में न किया। बोला– "मेरे अजीज़ बेटे! मुझे खुशी है कि हराम मौत से बच आये हो, वरना जब तक मैं जिन्दा रहता लोगों से यही सुनता रहाता कि तुम्हारा बेटा इस्लामी फ़ौज के खिलाफ लड़ा था।" उसने अपने बेटे के साथी दाऊद के साथ हाथ मिलाया।

दाऊद कुछ कहने लगा था। बूढ़े ने अपने होंठों पर उंगली रख दी फिर सरगोशी में कहा–"तुम्हारा बादशाह और सालारे आला सैफुद्दीन ग़ाज़ी अन्दर सोया हुआ है। घोड़े ख़ामोशी से दूसरी तरफ ले जाकर बांध दो और अन्दर आ जाओ।"

"सैफुद्दीन ग़ाजी?" हारिस ने हैरत से कहा– "यहां कैसे आ गया है?"

"शिकस्त खाकर।" बूढ़े ने सरगोशियों में जवाब दिया– "अन्दर चलो।"

घोड़े दूसरी तरफ़ से अन्दर लेजाकर बांध दिए गये। दाऊद और हारिस को बूढ़ा अन्दर ले गया। हारिस ही उसका वह सिपाही बेटा था जिसके मुतअल्लिक उसने सैफुद्दीन को बताया था। हारिस दाऊद को उसी कमरे में ले गया जहां उसकी बीवी और जवान बहन थी। उसने बाप से कहा– "इसका नाम दाऊद है। इससे बेहतर और कोई दोस्त नहीं हो सकता।"

"क्या तुम भी भागकर आये हो?" बूढ़े ने दाऊद से पूछा।

"मैं फ़ौजी नहीं हूं।" दाऊद ने जवाब दिया– "मुसिल जा रहा हूँ।" जंग ने मुझे रास्ते से हटा दिया था। हारिस मिल गया तो मैं इसके साथ चल पड़ा।"

"मुझे यह बताओ कि वालिये मुसिल हमारे घर में कैसे आया है?" हारिस ने अपने बाप से पूछा।

सफेद रैश बाप ने उसे बताया कि वह किस तरह आया है। "आज ही रात आया है।" उसने कहा– "उसके साथ एक नायब सालार और कमानदार था। उन दोनों को इसने कहीं भेज दिया है। मेरे कानों में उसके यह अल्फ़ाज़ पड़े थे कि फ़ौज को यकजा करो और मुझे बताओ कि मैं मुसिल आ जाऊं या अभी छिपा रहूँ.....मैं उस वक़्त दरवाज़े के क़रीब था।"

"क्या आप ने उसकी बातों से महसूस किया है कि यह मुसिल की फौज को यकजा करके फ़ौरी तौर पर लड़ाना चाहता है।" दाऊद ने पूछा।

"अभी तो वह इतना डरा हुआ है कि मुझे कहता था कि किसी को पता न चलने दो कि यह यहाँ है।" बूढ़े ने जवाब दिया– "मैं अपने तजुर्बे की बिना पर कह सकता हूँ कि उसका इरादा सलाहुद्दीन के ख़िलाफ़ लड़ने का ज़रूर है.। अपने कमानदार को उसने मुसिल के बजाये किसी और तरफ़ भेजा है।"

"मैं उसे क़त्ल करूंगा।" हारिस ने कहा– "उसने मुसलमान को मुसलमान के खिलाफ़ लड़ाया है। अल्लाहो अकबर के नारे लगाने वालों ने एक दूसरे का ख़ून बहाया है। मुझे पागल

किया है।" वह गुस्से से बेकाबू होकर उठा दिवार के साथ बाप की तलवार लटकर रही थी। वह ले ली।

बाप ने पीछे से उसे दबोच लिया। दाऊद ने उसका बाज़ू पकड़ लिया। हारिस बेकाबू हो रहा था। बाप ने उससे कहा कि पहले मेरी बात सुन लो। दाऊद ने भी उसे रोका और कहा कि ऐसे फ़ैसले करने से पहले सोंच लेना अच्छा होता है। हम उसे क़त्ल करके ही चैन का साँस लेंगे लेकिन पहले आपस में सलाह मश्वार कर लें। हारिस मान तो गया लेकिन फुंफकार रहा था। गुस्से की शिद्दत से उसकी आँखें सुर्ख़ हो गयी थीं।

"उसे क़त्ल करना कोई मुश्किल काम नहीं।" बूढ़े ने अपने बिफरे हुए बेटे को बैठाकर कहा-- "वह गहरी नींद सोया हुआ है। उसे तो मेरे नातवां बाज़ू भी क़त्ल कर सकते हैं। उसकी लाश को छिपाया भी जा सकता है मगर उसके जो दो साथी चले गये हैं। वह हमें छोड़ेंगे नहीं। वह हमें शक में पकड़ लेंगे। तुम्हारी जवान बीवी और जवान बहन के साथ बहुत बुरा सलूक करेंगे। अगर हम उन्हें बतायेंगे कि वालिये मुसिल चला गया है तो वह नहीं मानेंगे क्योंकि उसने उन्हें कहा है वह यहीं वापस आयें।"

"मालूम होता है कि आप सैफुद्दीन को सच्चा समझते हैं।"हारिस ने कहा-- "आप मुसलमान के खिलाफ मुसलमान की लड़ाई को भी जायज़ समझते हैं।"

"यह भी एक वजह है कि मैं उसे अपने घर में क़त्ल करना नहीं चाहता।" बूढ़े ने कहा--"मैंने उसे साफ अल्फ़ाज़ में बता दिया है कि मैं उसे सच्चा नहीं समझता। उसने मुझे कहा था कि तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी के हामी मालूम होते हो। उसने मुझे यह लालच भी दिया है कि अगर तुम्हारा बेटा जंग में मारा गया तो उसके एवज़ में बहुत रक़म दूंगा। मैंने उसे कहा है कि मैं अपने बेटे की शहादत का ख़्वाहिशमंद हूं हराम मौत या रक़म का नहीं। सैफुद्दीन मेरे ख़्यालात जान गया है। अगर हमने उसे क़त्ल करके लाश ग़ायब कर दी तो उसका नायब सालार फ़ौरन मुझे पकड़ लेगा और कहेगा कि तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी के हामी हो इसलिए तुमने वालिये मुसिल को क़त्ल कर दिया है।"

"दाऊद भाई!" हारिस ने दाऊद से पूछा-- "तुम बताओ कि मैं क्या करूं। तुमने मेरी जज़्बाती हालत देखी थी।

तुमने मुझे कहा था कि ख़ुदा ने मुझे गुनाह का कफ़्फ़ारा अदा करने के लिए जिन्दा रखा है। इससे बढ़कर नेकी का और काम क्या हो सकता है कि इस हुक्मरान को क़त्ल कर दूं जिसने हज़ारों मुसलमानों को मुसलमान के हाथों क़त्ल कराया है। तुम दानिशमन्द इन्सान हो।"

"उस एक आदमी को क़त्ल करने से कुछ हासिल नहीं होगा।" दाऊद ने कहा-- "उसके दोस्त भी हैं जो हलब में हैं और हरान में भी। उनके बहुत से सालार हैं और उनकी तीन फ़ौजें हैं। अकेले सैफुद्दीन के क़त्ल से यह सब सलाहुद्दीन अय्यूबी के आगे हथियार नहीं डाल देंगे। हथियार डलवाने का तरीक़ा और होता है। इसके लिए यह ज़रूरी है कि इन सबको मैदाने जंग में ऐसा बेबस कर दिया जाए कि यह हथियार डाल दें और सलाहुद्दीन अय्यूबी

की शरायत मानने पर मजबूर हो जाएं।"

"यह काम सलाहुद्दीन अय्यूबी के सिवा और कौन कर सकता है?" हारिस ने कहा– "मेरे सीने में जो आग भड़क रही है वह किस तरह सर्द होगी? मुझे ख़ुदा तीन मुजाहिदीने इस्लाम का ख़ून क्योंकर बख़्शेगा?"

दाऊद बहुत ख़ुश था कि उसे वालिये मुसिल यही मिल गया है। वह हारिस और उसके बाप को यह बताने से झिझक रहा था कि वह जासूस है। जासूस को जज़्बात में आकर अपना पर्दा नहीं उठाना चाहिए, मगर पर्दा अपने ऊपर डाले रखने से वह कुछ भी नहीं कर सकता था। उसने तो यह सोंच लिया था कि सैफ़ुद्दीन जहां भी जाएगा वह उसका तअक्कुब करेगा और उस की सरगर्मियों को ग़ौर से देखेगा लेकिन इतने दिन हारिस के घर में ठहराना मुश्किल नज़र आ रहा था। उसे बाप बेटे के तआवुन की ज़रूरत थी। यह फ़ैसला करने के लिए वह एतमाद में ले या न ले उसने उनके साथ अपने अन्दाज़ से बातें शुरू कर दीं। उसने देखा कि हारिस तो सैफ़ुद्दीन को क़त्ल करने तुला ही हुआ था, उसका बाप भी सलाहुद्दीन अय्यूबी के इस दुश्मन का नाम हिक़ारत से लेता था।

"अगर मैं आप को ऐसा तरीक़ा बताऊं जिससे सैफ़ुद्दीन आइंदा उठने के क़ाबिल न रहे तो क्या आप मेरा साथ देंगे?" दाऊद ने उनसे पूछा।

"मेरे बेटे की तरह तुम जज़्बात से नहीं सोंच रहे तो मैं तुम्हारा साथ दूँगा।" बूढ़े ने कहा।

"और मैं क़त्ल से हटकर और कुछ नहीं सुनूंगा।" हारिस ने कहा।

"अगर तुम अपनी अक़्ल और जज़्बात की लगाम मेरे हाथ में दे दो तो तुम्हारे हाथों ऐसा काम कराऊँगा जो तुम्हारी रूह को सकून और चैन से मालामाल कर देगा।" दाऊद ने दोनों को बड़ी ग़ौर से देखा। हारिस की बीवी और बहन ज़रा अलग हटकर बैठी सुन रही थीं। दाऊद ने उन्हें भी ग़ौर से देखा और कहा– "मुझे कुर्आन दो।"

हारिस की बहन ने उठकर कुर्आन उठाया। आंखों से लगाया। चूमा और दाऊद को दे दिया। दाऊद ने भी कुर्आन को आँखों से लगाया चूमा और कुर्आन खोला। उसने एक जगह उंगली रखी और पढ़ा:

"शैतान ने उनको अपने क़ब्ज़े में ले लिया है और ख़ुदा की याद उनके ज़ेहनों से निकल गयी है। यह जमाअत शैतान का लश्कर है, और सुन रखो कि शैतान का लश्कर नुक़्सान उठाने वाला है। जो लोग ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं वह ज़लील व ख़्वार होंगे।"

यह अट्ठाइसवें पारे की अठ्ठारहवीं और उन्नीसवीं आयात (सुरह अलहश्र) थीं जो कुर्आन खुलते ही सामने आ गयीं। दाऊद ने कहा– "यह अल्लाह का पाक कलाम है। मैंने अपनी मर्ज़ी से यह सफ़ा नहीं खोला। यह अलफ़ाज़ अपने आप मेरे सामने आये हैं। यह ख़ुदा का फ़रमान है और यह ख़ुदा की बशारत है। कुर्आन ने हम से बता दिया है कि यह जमाअत शैतानों का लश्कर है लेकिन मैं अपने पीर उस्ताद का सबक़ तुम्हें पढ़ाना चाहता हूं। बेशक कुर्आन ने फ़रमाया है कि जो लोग ख़ुदा और उसके रसूल की मुख़ालिफ़त करते हैं वह

ज़लील व ख़्वार होंगे लेकिन वह उस वक़्त तक ज़लील व ख़्वार नहीं होंगे जब तक हम कोशिश करके उनकी ज़िल्लत ख़्वारी का सामान पैदा नहीं करेंगे। यह हम सब पर फर्ज़ आइद होता है कि हम उन्हें ज़लील व ख़्वार करें।"

उसने कुर्आन दोनों हाथों पर रख कर हाथ आगे किये और सबसे कहा– "सब अपना अपना दायां हाथ ख़ुदा के इस पाक कलाम पर रखो और कहो कि राज़ से पर्दा नहीं उठाओगे और दुश्मन को शिकस्त देने में अपनी जानें कुर्बान करोगे।"

सब ने जिनमें दोनों ख़्वातीन भी शामिल थी कुर्आन पर हाथ रख कर कसम खाई। कुर्आन ने उनके अन्दर जो तासिर पैदा कर दिया था वह उनके चेहरों से ज़ाहिर होता था। कमरे में ऐसी ख़ामोशी तारी हो गयी कि सबके सांसों की भी आवाज़ सुनाई देती थी। सब दाऊद की तरफ़ देख रहे थे।

"तुम सबने कुर्आन पर हाथ रखकर कसम खाई है।" दाऊद ने कहा– "ख़ुदा वन्द तआला ने कुर्आन तुम्हारी ज़ुबान में उतारा है। तुम इस मुकद्दस किताब का एक एक लफ़्ज़ समझते हो। अगर तुमने इस कसम से इन्हिराफ़ किया तो उसकी सज़ा कुर्आन में लिखी हुई है। तुम भी उसी ज़िल्लत व रूस्वाई में फेंक दिये जाओगे जो शैतान के लश्कर के मुकद्दर में लिखी हुई है।"

"तुम कौन हो?" बूढ़े ने हैरतज़दा आवाज़ में दाऊद से पूछा–"तुम किसी बहुत बड़े आलिम के मुरीद मालूम होते हो।"

"मेरे पास कोई इल्म नहीं।" दाऊद ने कहा– "मेरे पास अमल है। मैं कुर्आन की रौशनी में जान हथेली पर रखकर यहां आया हूं। यह सबक मुझे किसी आलिम ने नहीं सलाहुद्दीन अय्यूबी ने दिया है। मैं मुसिल नहीं दमिश्क का बाशिन्दा हूं, और मैं सुल्तान अय्यूबी का भेजा हुआ जासूस हूं। यह है वह राज़ जिसकी कसम तुम सबने खाई है कि इस से पर्दा नहीं उठाओगे। मुझे तुम सबके तआवुन की ज़रूरत है। मुझे यकीन दिलाओ कि जो मैं कहूंगा वह करोगे।"

"हम कसम खा चुके हैं।" बूढ़े ने कहा– " तुम अपना मकसद और मुद्दुआ बयान करो।"

"मुझे अल्लाह की ख़ुश्नूदी हासिल है।" दाऊद ने कहा– "मैं जिसके सीने से राज़ निकाल कर सलाहुद्दीन अय्यूबी तक पहुंचाना चाहता हैं वह मुझे उसी छत के नीचे मिल गया है जिस के नीचे मैं बैठा हूं। ख़ुदाये ज़ुलजलाल ने मुझे फरिश्तों की रहनुमाई दी और यहाँ पहुँचा दिया है। मुझे यह मालूम करना है कि सैफुद्दीन और उसके दोस्तों के इरादे और सरगर्मियां क्या हैं। अगर यह लोग जंग की तैय्यारियाँ करें तो उन्हें तैय्यारी से पहले या तैय्यारी की हालत में ख़त्म किया जा सकता है उनके इरादे कब्ल अज़्वक़्त मालूम करना ज़रूरी हैं। हो सकता है कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी तैय्यार न हो और यह लोग अचानक हम्ला कर दें। आप जानते हैं कि इसका नतीजा क्या होगा।"

"क्या मुझे इजाज़त होगी कि अपनी फौजों को धोखे में मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ाने वालों को कत्ल करूंगा?" हारिस ने पूछा।

"यह मैं बताऊँगा।" दाऊद ने जवाब दिया– "बाज़ हालात में क़त्ल न करना फायदे मंद होता है। तुम्हें हर क़दम ठंडे मिज़ाज से उठाना होगा। हमें सैफुद्दीन पर नज़र रखनी है और उसका तआक्कुब करना है जिस तरह यहाँ आकर छुप गया है उसी तरह मैं और हारिस छुपे रहेंगे और देखते हैं रहेंगे कि यह क्या करता है।"

❖

सैफुद्दीन उसी मकान के एक कमरे में गहरी नींद सोया रहा। सुबह तुलूअ हुई। बूढ़े ने झांक कर देखा वह सोया हुआ था। सूरज ख़ास ऊपर आ गया था जब उसकी आँख खुली। हारिस की बहन और बीवी ने उसके आगे नाश्ता रखा। उसने हारिस की बहन को ग़ौर से देखा और कहा– "तुम हमारी ख़िदमत कर रही हो उसका हम तुम्हें इतना सिला देंगे जो तुम्हारी तसव्वुर में भी नहीं आ सकता। हम तुम्हें अपने महल में रखेंगे।"

"अगर हम आप को इसी झोंपड़े में रखें तो आप ख़ुश नहीं रहेंगे?" लड़की ने मुस्कुराकर पूछा।

"हम तो सेहरा में भी रह सकते हैं।" सैफुद्दीन ने कहा– "लेकिन तुम फूलों के साथ सजा कर रखने वाली चीज़ हो।"

"क्या आप को यक़ीन है कि आपके नसीब में महल में दूबारा जाना लिखा है?" लड़की ने पूछा।

"ऐसी बात तुमने क्यों कही है?"

"आप की हालत देखकर।" लड़की ने कहा– "बादशाह का झोंपड़े में छिपना यह ज़ाहिर करता है कि उसकी सल्तनत छिन गयी है और उसकी फ़ौज साथ छोड़ गयी है।"

"फ़ौज ने मेरा साथ नहीं छोड़ा।" सैफुद्दीन ने कहा– "मैं ज़रा आराम के लिए यहाँ रुक गया हूँ। महल सिर्फ मेरे नसीब में नहीं तुम्हारे नसीब में भी लिखा हुआ है। क्या तुम मेरे साथ चलना पसन्द करोगी?"

हारिस की बीवी कमरे से निकल गयी थी। बहन सैफुद्दीन के पास बैठ गयी और कहने लगी– "अगर मैं आपकी जगह होती तो सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त दिए बग़ैर महल का नाम न लेती। अगर आप ने मुझे पसन्द किया है तो मैं आपको बता देती हूँ कि आपका भागना और छिपना मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं। जंगजू बादशाहों की तरह बाहर निकलें। अपनी फ़ौज को इकठ्ठा करें और सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी पर हम्ला कर दें।"

लड़की भोली भाली शक्ल की थी। उसकी सादगी में हुस्न था। सैफुद्दीन ने उसे बड़ी दिलचस्पी से देख रहा था और उस के होंटों पर ऐसी मुस्कुराहट थी जिस में शैतानियत भी और मोहब्बत भी थी।

"मैं शहज़ादी नहीं हूं।" लड़की ने कहा– "इन चट्टानों और सेहराओं में पैदा हुई यहीं जवान हुई हूं। मैं सिपाही की औलाद और सिपाही की बहन हूं। आप के साथ महल में नहीं मैदाने जंग में जाऊँगी। मेरे साथ आप तेगज़नी का मुक़ाबला करेंगे? चट्टानों के ऊपर नीचे मेरे साथ घोड़ा दौड़ायेंगे?"

"तुम सिर्फ़ ख़ूबसूरत ही नहीं जंगजू भी हो।" सैफुद्दीन ने उसके बालों पर हाथ फेरकर कहा– "ऐसे प्यारे बाल मैंने पहली बार देखे हैं।"

लड़की ने उसका हाथ आहिस्ता से परे कर दिया और कहा– "बाल नहीं बाज़ू। अभी आप को मेरे बालों को नहीं मेरे बाज़ूओं की ज़रूरत है। मुझे बताएं आप का इरादा क्या है?"

"तुम्हारा बाप ख़तरनाक आदमी है।" सैफुद्दीन ने कहा– "वह सलाहुद्दीन अय्यूबी का हामी है और मुझे शायद पसन्द नहीं करता। मुझे डर है कि वह मुझे धोखा देगा।"

लड़की अल्हड़ सी हंसी हंस पड़ी और बोली– "वह बूढ़ा आदमी है। मालूम नहीं आप के साथ उसने क्या बातें की हैं। हमारे सामने रात से वह आप की तारीफ़ें कर रहा है। उसने सलाहुद्दीन अय्यूबी का सिर्फ नाम सुना है। उसके बारे में और कुछ नहीं जानता। उससे आप न डरें। ज़ईफ़ आदमी आप का क्या बिगाड़ सकता है। मुझे आज़माएं।"

सैफुद्दीन ने उसकी तरफ हाथ बढ़ाया तो लड़की पीछे हट गयी। कहने लगी– "मैं आप को अपने जिस्म से महरूम नहीं करूंगी। अपने आप को आप के हवाले कर दूंगी लेकिन उस वक़्त जब आप सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त देकर आयेंगे। आप इस वक़्त मुश्किल में हैं। मुझसे दूर रहें। मुझे यह बताएं कि आप का इरादा क्या है?"

सैफुद्दीन अय्याश और ज़न परस्त इन्सान था। जवान और ख़ूबसूरत लड़की उसके लिए अजूबा नहीं थी लेकिन उस लड़की में उसने यह अजीब बात देखी कि वह उस के आगे झुक नहीं रही थी। उसके आगे तो हर लड़की सधाए हुए जानवरों की तरह इशरों पर नाचा करती थी। इस लड़की ने उस पर ऐसा वार किया कि उसकी ग़ैरत भड़क उठी।

"सुनो लड़की!" उसने कहा– "तुमने मेरी मर्दानगी का इम्तेहान लेना चाहा है। मैं अब उस वक़्त तुम्हारे जिस्म को हाथ लगाऊंगा जिस वक़्त मेरे हाथ में सलाहुद्दीन अय्यूबी की तलवार होगी और मैं उसी के घोड़े पर सवार हूंगा। मुझ से वादा करो कि तुम मेरे पास आ जाओगी।"

"मुझे अपने साथ मैदाने जंग में ले चलें।" लड़की ने कहा।

"नहीं।" सैफुद्दीन ने कहा– "मुझे अभी फ़ौज तैय्यार करनी है। मैंने एक आदमी को मुसिल भेज दिया है। मैंने उन्हें कहला भेजा कि फ़ौजें इकट्ठी करो और फ़ौरन सलाहुद्दीन अय्यूबी पर हम्ला कर दो ताकि वह हमारे शहरों का मुहासरा करने आगे न आ सके। आज शाम तक मेरे दोनों आदमी वापस आ जायेंगे तो मालूम होगा कि हलब और हरान की फ़ौजें किस हालत में हैं। हम शिकस्त तस्लीम नहीं कर रहे। जवाबी हम्ला करेंगे और फ़ौरन करेंगे।"

सैफुद्दीन की शख़्सियत यही कुछ थी। ज़न परस्ती और ईमान फ़रोशी ने उसका किरदार इतना खोखला कर दिया था कि उसने एक अल्हड़ और सीधी सादी लड़की से मुतास्सिर होकर उसे राज़ की भी एक दो बातें बता दीं। लड़की ने उसका हाथ चूम लिया और कमरे से निकल गयी।

❖

"उसके साथ जो दो आदमी आये थे उनमें से एक को उसने मुसिल भेजा है और दूसरे

को हलब।" हारिस की बहन अपने बाप को, हारिस और दाऊद को बता रही थी– "उसका इरादा यह है कि तीनो फौजों को इकठ्ठा करके सलाहुद्दीन अय्यूबी पर फौरन हम्ला किया जाए ताकि वह आगे आकर उनके शहरों को मुहासरे में न ले सके। उसके जो दो आदमी गये हुए हैं वह आकर उसे बतायेंगे कि फौजें लड़ने की हालत में हैं या नहीं।" सैफुद्दीन ने उसे जो कुछ बताया था वह उसने अपने बाप, भाई और दाऊद को बता दिया।

यह लड़की जिसका नाम फौज़ी था कोई ऐसी चालाक और होशियार लड़की नहीं थी। उसे खुदा ने ज़ेहानत और जज़्बा अता किया था। दाऊद ने उसे बताया था कि वह सैफुद्दीन के दिल से राज़ निकाले। फौज़ी को उसने तरीक़ा भी बताया था और यह भी बताया था कि यह शख़्स अय्याश और बदकार है इसलिए उसके जाल से बचकर रहना। फौज़ी ने यह काम ख़ुश अस्लूबी से कर लिया। उसने सैफुद्दीन से जो बातें कहलवाई थीं उनसे दाऊद को यह पता चल गया कि सैफुद्दीन का पीछा करना ज़रूरी है।

आधी रात से कुछ देर पहले बूढ़े की आँख खुल गयी। उसने दरवाज़े पर दस्तक सुनी और घोड़े हिनहिनाते भी सुना था। उसने दरवाज़ा खोला। बाहर सैफुद्दीन का नायब सालार खड़ा था। बूढ़ा उसका घोड़ा दूसरी तरफ़ ले गया और नायब सालार अन्दर चला गया। बूढ़े ने जाकर नायब सालार से खाने के मुतअल्लिक़ पूछा। उसने इन्कार कर दिया। बूढ़े ने गुलामों की तरह उनसे सलूक किया। सैफुद्दीन ने उससे कहा वह जाकर सो जाये। बूढ़ा रिआया की तरह के आदाब से वहाँ से निकला। उसने दाऊद को जगाया और दोनों ने दरवाज़े के साथ कान लगा दिये।

"गुमश्तगीन के मुतअल्लिक़ मालूम हुआ है कि हलब में अल्मुलकुस्सालेह के साथ है।" नायब सालार कह रहा था– "मैंने मुसिल में जो हालात देखे हैं वह कोई ऐसे बुरे नहीं कि हम लड़ नहीं सकें। सलाहुद्दीन अय्यूबी तुर्कमान रुक गया है। सलीबियों के जासूसों ने बताया है कि वह अलजज़ीरा, दयार और बकर और इर्द गिर्द के इलाक़ों से लोगों को फौज में भर्ती कर रहा है। यूं मालूम होता है कि जैसे वह फौरी तौर पर पेशक़दमी नहीं करेगा। पेश क़दमी ज़रूर करेगा, जो तूफानी होगी। उसकी फौज की ख़ेमागाह बता रही है कि वह वहां ज़्यादा दिन क़याम करेगा। वह ग़ालिबन इस ख़ुशफहमी में मुब्तला है कि हम लड़ने के क़ाबिल नहीं रहे। हमारी जो फौज मुसिल पहुंची है उसकी नफ़री एक तिहाई से कुछ ज़्यादा कम है। यह सिपाही मारे गये हैं और उनमें लापता भी शामिल हैं।"

"तो क्या मुम्किन हो सकता है कि हम उसी फौज से सलाहुद्दीन अय्यूबी पर हम्ला कर दें?" सैफुद्दीन ने पूछा।

"सिर्फ़ हमारी फ़ौज हम्ले के लिए काफ़ी नहीं।" नायब सालार ने जवाब दिया– "अल्मुलकुस्सालेह और गुमश्तगीन को साथ मिलाना ज़रूरी है। हमारे मुशीरों (सलीबियों) ने भी यही मश्वरा दिया है।"

"तुम ने उन्हें बता दिया है कि मैं कहाँ हूँ।" सैफुद्दीन ने पूछा।

"मैंने यह जगह नहीं बताई।" नायब सालार ने जवाब दिया– "उन्हें यह बताया है कि

आप तुर्कमान के मुज़ाफात में घूम फिर रहे हैं और सलाहुद्दीन अय्यूबी की नकल व हमल को अपनी आंखों से देखने की कोशिश कर रहे हैं ताकि अगले मार्के का मंसूबा तैय्यार किया जा सके.....मेरा ख़्याल है कि तीन चार रोज़ बाद आपको मुसिल चले जाना चाहिए।"

"मुझे हलब की ख़बर मालूम कर लेने दो।" सैफुद्दीन ने कहा– "वह (कमानदार) कल शाम तक आ जाएगा। तुम जानते हो कि गुमश्तगीन शैतान फ़ितरत का इन्सान है। उसे अपने किले (हरान) में चले जाना चाहिए था। हलब में वह क्या कर रहा है? मैं मुसिल जाने से पहले हलब जाऊंगा। गुमश्तगीन बेशक हमारा इत्तेहादी है मगर मैं उसे अपना दोस्त नहीं कह सकता। मुझे अल्मुलकुस्सालेह के सालारों को इस पर भी कायल करना है कि वह सलाहुद्दीन अय्यूबी के सुस्ताने से फायदा उठायें और वक़्त ज़ाया किए बेग़ैर हम्ला कर दें। मैं अब यह मश्वरा दूँगा कि तीनों फौजें एक मरकज़ी कमान के मातेहत होनी चाहिए और उनका एक सालारे आला होना चाहिए। हम ने सिर्फ़ इसलिए शिकस्त खाई कि हमारी फौजों की कमान अलग–अलग थी। हमें एक दूसरे के मंसूबे और चालों का इल्म नहीं था, वरना मुज़फ्फ़रूद्दीन ने सलाहुद्दीन अय्यूबी के पहलू पर जो हम्ला किया था वह कभी नाकाम न होता।"

"मरकज़ी कमान आपके पास होना चाहिए।" नायब सालार ने कहा।

"और हमें अपने दोस्तों से भी होशियार रहना चाहिए।" सैफुद्दीन ने कहा और पूछा–"सलीबी हमें मदद देंगे?"

"वह अपनी फौज तो नहीं देंगे।" नायब सालार ने जवाब दिया–"ऊंट, घोड़े और अस्लेहा वग़ैरह देंगे।" नायब सालार ने जवाब दिया–"यहां आप ने कोई ख़तरा तो महसूस नहीं किया?"

"नहीं।" सैफुद्दीन ने कहा– "बूढ़ा काबिले एतमाद मालूम होता है। उसकी बेटी जाल में आ गयी है लेकिन जज़्बाती और जोशिली है। कहती है पहले सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त दो। उसकी तलवार लाओ। उसके घोड़े पर सवार होकर आओ, तब मैं तुम्हारे साथ चलूंगी।"

नायाब सालार ने कहकहा लगाया। हारिस, उसका बाप और दाऊद दरवाज़े के साथ कान लगाये सुन रहे थे। सैफुद्दीन और उसके नायब सालार के फ़रिश्तों को भी मालूम ना था कि इस घर में सिर्फ़ एक बूढ़ा और लड़कियां ही नहीं, दो जवान मुजाहिद भी हैं जो किसी भी मोज़ूं मौके पर उसे कत्ल कर देंगे। सैफुद्दीन को ज़रा सा भी शक नहीं हुआ था कि उसने फौज़ी को अपने जाल में नहीं फांसा बल्कि ख़ुद उसके जाल में फंस गया है।"

❖

दाऊद और हारिस अन्दर रहे। सैफुद्दीन और उसका नायब सालार डेयोढ़ी के साथ वाले कमरे में बन्द रहे। दिन के दौरान फौज़ी तीन चार बार उस कमरे में गयी। वह चूंकि उससे दो हाथ दूर रहती थी इसलिए सैफुद्दीन उसकी तरफ और ज़्यादा खिचा आता था। फौज़ी से उसने पूछा– "तुम्हारा भाई मेरी फौज में सिपाही है, मैं उसे जैश का कमानदार बना दूँगा।"

"हमें तो यह भी नहीं मालूम कि वह जिन्दा भी है या नहीं।" फ़ौज़ी ने कहा– "अगर वह जिन्दा न हुआ तो हम बेआसरा हो जाएँगे।"

"इस सूरत में मैं तुम्हारे बाप को और तुम्हारे भाई की बीवी को भी अपने साथ ले जाऊँगा।" सैफुद्दीन ने कहा।

फ़ौज़ी का बाप भी सैफुद्दीन के पास जाता रहा। उसने अमली तौर पर सैफुद्दीन को यकीन दिलाया कि वह उसका वफ़ादार है।

रात को फ़िर दरवाज़े पर दस्तक हुई। बूढ़े ने दरवाज़ा खोला। बाहर सैफुद्दीन का कमानदार खड़ा था जिसे उसने हलब रवाना किया था। बूढ़े ने उसे सैफुद्दीन के कमरे में भेज दिया और उसका घोड़ा दूसरे घोड़ों के साथ बांधकर कमानदार से खाने के मुतअल्लिक पूछने गया। कमानदार बहुत तेज़ आया कहीं रूका नहीं था। इसलिए रास्ते में कुछ खा नहीं सका था। बूढ़ा अन्दर खाना लेने गया तो फ़ौज़ी ने कहा कि वह खाना ले जाएगी और बातें सुनेगी।

वह खाना लेकर गयी तो कमानदार बोलते बोलते चुप हो गया। सैफुद्दीन ने कहा– "तुम बात करो। यह अपनी बच्ची है।" फ़ौजी कमानदार के आगे खाना रखकर सैफुद्दीन के करीब बैठ गयी। यह पहला मौका था कि वह उसके इतनी क़रीब बैठी थी। सैफुद्दीन ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। फ़ौजी ने हाथ छुड़ाया नहीं, वरना सलीबियों का यह दोस्त हाथ से निकल जाता।

हलब की फ़ौज का जज़्बा काबिले तारीफ़ है।" कमानदार ने बोलना शुरू किया। फ़ौजी ने सैफुद्दीन की उंगली में पड़ी हुई अंगूठी को उंगलियों से मसलने और उसके हीरे को बच्चों के से इश्तियाक से देखना शुरु कर दिया जैसे उसे कमानदार की बातों के साथ कोई दिलचस्पी न हो लेकिन उसके कान उसी तरफ़ लगे हुए थे। कमानदार कह रहा था– "अल्मुलकुस्सालेह ने सलाहुद्दीन अय्यूबी को सुलह का पैग़ाम भेजा है।"

"सुलह का पैग़ाम?" सैफुद्दीन ने बिदक कर पूछा।

"जी हां, सुलह का पैग़ाम।" कमानदार ने कहा– "लेकिन मुझे पता चला है कि उसने सलाहुद्दीन अय्यूबी को धोखा दिया है। उसके सलीबी दोस्त उसकी फ़ौज के सामान का नुकसान पूरा कर रहे हैं और उसे उकसा रहे हैं कि वह मुसिल और हरान की फौज को मुश्तर्का कमान में लाकर सलाहुद्दीन अय्यूबी पर फ़ौरन हम्ला करे। अगर सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज ने सुस्ता लिया और उसने उसी इलाके से लोगों की भर्ती करके नफ़री पूरी कर ली तो फ़िर उसे रोकना मुहाल हो जायेगा। जासूस ख़बर लायें हैं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने तुर्कमान के सब्ज़ा में लम्बे अर्से के लिए पड़ाव कर लिया है और पेश क़दमी की तैय्यारियां बहुत तेज़ी से कर रहा है। अल्मुलकुस्सालेह के सालार भी यही कहते हैं कि तुर्कमान के मुक़ाम पर सलाहुद्दीन अय्यूबी पर फ़ौरी हम्ला होना चाहिए......

"मैंने हलब की फ़ौज के एक सलीबी मुशीर के साथ बात करने का मौका पैदा कर लिया था। मैंने अन्जान बन कर उसे कहा कि हम फौरी तौर पर हम्ले करने के काबिल नहीं। उसने

कहा कि यह तुम्हारी बहुत बड़ी जंगी लग़िजश होगी। सलाहुद्दीन अय्यूबी पर हम्ले का मक़सद यह नहीं होगा कि उसे शिकस्त दी जाए मकसद यह होगा कि उसे तैय्यारी की मुहलत न दी जाए। उसे तुर्कमान के इलाके में परेशान रखा जाए और ऐसी लड़ाई लड़ी जाए जो बड़ी तवील हो। जंग न हो मार्के लड़े जाएं। यह मार्के सलाहुद्दीन अय्यूबी के अन्दाज़ के ही हों, यानी ज़रब लगाओ और भागो, शब्ख़ून मारो और कोशिश करो कि तुर्कमान के सब्ज़ाज़ार से जहाँ पानी की भी बुहतात है, सलाहुद्दीन अय्यूबी को पीछे हटा दिया जाए ताकि उसकी फ़ौज को चारा और पानी न मिल सके।"

"बहुत अच्छी तरकीब है।" सैफुद्दीन ने कहा– "ऐसी जंग मेरा शेर, सालार मुज़फ़्फ़र–उद्दीन लड़ सकता है। वह बहुत अर्सा सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ रहा है। मैं कोशिश करूंगा कि तीनो फ़ौजों की मुश्तर्का कमान मुझे मिल जाए। मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी को सेहराई लोमड़ी की तरह धोखे दे देकर मार दूंगा।"

फ़ौज़ी ने सैफुद्दीन की तलवार ले ली और उसे म्यान से निकाल कर देखने लगी। वह बिल्कुल भोली बनी हुई थी।

"मैंने कोशिश की थी कि अल्मुलकुस्सालेह के साथ मेरी मुलाकात हो जाए।" कमानदार ने कहा– "लेकिन सालारों और दूसरे हुकाम ने उसे ऐसा घेरा हुआ था कि मैं उसे न मिल सका। यह बातें उसके सालारों से मालूम की हैं।"

"तुम्हें आज फिर हलब जाना होगा।" सैफुद्दीन ने कहा– "अल्मुलकुस्सालेह को यह पैग़ाम देना कि तुमने सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ सुलह करके हमें धोखा दिया है। तुमने उसके हौसले बढ़ा दिए हैं। उसके हाथ मजबूत कर दिए हैं। वह हममे से किसी को भी नहीं बख़्शेगा। तुम अभी बहुत छोटे हो। घबरा गये हो, या तुम्हारे सालारों ने लड़ाई से बचने के लिए तुम्हें मश्वरा दिया है।" सैफुद्दीन ने उस मौज़ूअ का तवील पैग़ाम दिया और कमानदार से कहा– "तुम्हें सेहरी की तारीकी में निकल जाना चाहिए। दिन के वक़्त तुम्हें इस गांव में कोई न देखे।"

यह था वह पैग़ाम जिस का ज़िक्र तारीख़ में आया है। कमानदार कुछ देर आराम करके हलब को रवाना हो गया।

❖

फ़ौज़ी ने जो कुछ सुना वह दाऊद को बता दिया। यह मालूमात भी काम की थीं। हारिस और उसका बाप गहरी नींद सो गये। दाऊद किसी काम से बाहर निकला। फ़ौज़ी भी दबे पांव निकल आई। दाऊद अपने घोड़े के पास जा रुका। फ़ौज़ी वहीं चली गयी।

"मुझे इससे कोई बड़ा काम बताओ।" फ़ौज़ी ने कहा– "मैं तुम्हारे लिए जान भी दे सकती हूं।"

"मेरे लिए नहीं अपनी क़ौम के लिए और अपने मज़हब के लिए जान देना।" दाऊद ने कहा– "तुम जो काम कर रही हो वह बहुत बड़ा है। हम जो जासूस हैं इसी काम में अपनी जानें कुर्बान कर दिया करते हैं। यह काम मेरा था जो मैं तुमसे करा रहा हूँ। मैंने तुम्हें ख़तरे में डाल

दिया है।"

"खतरा कैसा?"

"तुम इतनी चालाक लड़की नहीं हो फौज़ी।" दाऊद ने कहा– "सैफुद्दीन बादशाह है। वह इस झोंपड़े में भी बादशाह है।"

"तो क्या बादशाह मुझे खा जाएगा?" फौज़ी ने कहा– "मैं चालाक तो नहीं, सीधी सादी भी नहीं हूं।"

"तुमने बादशाही की चमक देखी तो तुम्हारी आँखें बन्द हो जाएंगी।" दाऊद ने कहा– "उन लोगों ने उसी चमक से अंधा होकर ईमान बेचा है और इस्लाम की जड़ें काट रहे हैं। डरता हूं कहीं तुम भी उस जाल में न आ जाओ।"

"तुम कहाँ के रहने वाले हो?"

"मैं कहीं का भी रहने वाला नहीं।" दाऊद ने जवाब दिया– "मैं जासूस और छापामार हूँ। जहाँ दुश्मन के हाथ चढ़ गया वहीं मारा जाउंगा और जहां भी मारा जाउंगा वह मेरा वतन होगा। शहीद का लहू जिस ज़मीन पर गिरता है वह ज़मीन सल्तनते इस्लामिया की हो जाती है। उस ज़मीन को कुफ्र से पाक करना हर मुसलमान का फ़र्ज़ बन जाता है। हमारी मांओं और बहनों ने हमें जवान किया और खुदा के हवाले कर दिया है। उन्होंने अपने दिलों पर पत्थर रख लिये हैं और उस ख़्वाहिश से दस्तबरदार हो गयी हैं कि हम उन्हें कभी मिलेंगे।"

"तुम्हारे दिल में अपने घर जाने की, अपनी मां को देखने की, बहन से मिलने की ख़्वाहिश तो होगी।" फौज़ी ने जज़्बाती लहजे में कहा।

"इन्सान ख़्वाहिशों का गुलाम हो जाए तो फर्ज़ धरे रह जाते हैं।" दाऊद ने कहा– "जान से पहले जज़्बात कुर्बान करने पड़ते हैं। तुम्हें भी यह कुर्बानी देनी होगी।"

फौज़ी उसके करीब हो गयी और बोली– "मुझे अपने साथ रख सकते हो?"

"नहीं।" दाऊद ने कहा।

"कुछ दिन मेरे पास रह सकते हो?" फौज़ी ने पूछा।

"मेरे फ़र्ज़ ने ज़रूरत समझी तो रहूँगा।" दाऊद ने कहा–"मुझे अपने पास रखकर क्या करोगी?"

"तुम मुझे अच्छे लगते होना।" फौज़ी ने कहा– "तुम जब से आये हो तुम्हारी बातें सुन रही हूँ। ऐसी बातें मैंने कभी नहीं सुनी थीं। मेरे दिल में आती है कि तुम्हारे साथ रहूं और.... ..."

"मुझे ज़ांजीर न डालो फौज़ी।" दाऊद ने कहा– "अपने आपको भी जज़्बाती ज़ंजीर से आज़ाद रखो। हमारे सामने बड़े कठिन रास्ते हैं। एक दूसरे का हाथ ज़रूर थामेंगे, इकट्ठे चलेंगे मगर एक दूसरे के कैदी नहीं बनेंगे।" उसने ज़रा सोंच कर कहा– "फौज़ी तुम ज़्यादा दूर तक मेरा साथ नहीं दे सकोगी। मुझे तुम्हारी इस्मत भी अजीज़ है। काम जो मर्दों का है वह मर्द ही करेंगे।"

फौज़ी ने आह ली और उदास सी हो गयी। उसने दाऊद को सर से पांव तक देखा और

घूम कर वहाँ से हटने लगी। दाऊद ने लपक कर उसका बाज़ू पकड़ लिया और अपने क़रीब करके उसके आँखों में आखें डाल दीं। फ़ौज़ी उसके साथ लग गयी और जज़्बात से कांपती आवाज़ में बोली– "जो काम मर्दों का है वह औरतें भी कर सकती हैं। मेरी इस्मत कोई ऐसा कच्चा धागा नहीं कि ज़रा झटके से टूट जायेगा। मैं तुम्हें अपनी इस्मत पेश नहीं कर रही। तुम मुझे अच्छे लगते हो। तुम्हारी बातें मुझे अच्छी लगती हैं। तुमने मुझे जो रास्ता दिखाया है वह मेरे दिल को बहुत अच्छा लगा है। मैं तुम्हारे क़रीब इस लिए हो गयी हूँ कि शायद तुम्हें मेरे वजूद से अपनी मां की और बहन की बू बास मिल जाए। तुम बहुत थके हुए हो ना दाऊद! मुझे मेरे भाई की बीवी ने बहुत सी बातें बतायी हैं। वह कहती हैं कि मर्द जब थका हुआ घर आता है तो औरत के सिवा उसकी थकन और कोई दूर नहीं कर सकता। औरत न हो तो मर्द की रूह मर जाती है। मैं डरती हूं कि तुम्हारी रूह मुरझा गयी ....तो क्या होगा दाऊद?"

दाऊद हंस पड़ा और उसके गाल थपक कर बोला– "तुम्हारी इन भोली भाली बातों ने मेरी रूह को तरो ताज़ा कर दिया है।"

"तुम्हें मेरी कोई बात बुरी तो नहीं लगी?" फ़ौज़ी ने पूछा– "मेरे भाई को तो नहीं बताओगे कि मैं तुम्हारे पास आई थी?"

"नहीं।" दाऊद ने कहा–"तुम्हारे भाई को कुछ नहीं बताऊँगा और तुम्हारी कोई बात मुझे बुरी नहीं लगी।"

"हमारी मंज़िल एक है दाऊद।" फ़ौज़ी ने कहा– "मुझे मालूम नहीं कि दिल की बात किस तरह कही जाती है।"

"तुमने दिल की बात कह दी है फ़ौज़ी!" दाऊद ने कहा– "और मैंने समझ ली है। तुमने ठीक कहा कि हमारी मंज़िल एक है मगर यह न भूलना कि रास्ते में ख़ून की नदी भी है जिस पर कोई पुल नहीं। अगर हमेशा के लिए मेरी हो जाना चाहती हो तो हमारा निकाह लहू की तहरीर होगी, फिर हमारी लाशें एक दूसरे से दूर भी हुयीं तो हम इकठ्ठे हो जाएंगे। राहे हक़ के मुसाफिरों की शादियां आसमानों में होती हैं और बारातें कहकशां के रास्ते जाया करती हैं। उनकी ख़ुशी में सारा आसमान सितारों का चिराग़ां किया करता है।"

फ़ौज़ी जब वहां से चली तो उसके होंठों पर मुस्कुराहट थी। उस मुस्कुराहट में मुसर्रत का तासिर कम और ऐसा तासिर ज़्यादा था जिसमें अज़म था और कुछ कर गुज़रने का इरादा।

❖

दो दिनो के बाद कमानदार वापस आ गया जो अल्मुलकुस्सालेह के नाम सैफुद्दीन का पैग़ाम लेकर गया था। उसकी मुलाक़ात अल्मुलकुस्सालेह से नहीं हो सकी थी, पैग़ाम उस तक पहुंचा दिया गया था। उसने कहा था कि वह पैग़ाम का तहरीरी जवाब देगा। कमानदार वहां बता आया था कि सैफुद्दीन कहाँ है और जिस घर में वह बैठा है उसकी निशानियां क्या हैं......सैफुद्दीन अपने पैग़ाम के जवाब का इन्तज़ार करता रहा। जवाब न आया और वह परेशान होने लगा– तीसरे चौथे दिन वह बहुत ही बेचैन हो गया।

"क्यों न मैं खुद ही हलब जाऊं।" उसने अपने नायब सालार से कहा– "अगर हलब की फौज ने सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ सुलह और जंग बंदी का मुआहिदा कर लिया है तो हमें अपने मुतअल्लिक बहुत कुछ सोंचना पड़ेगा। गुमश्तगीन (वालिये हरान) का कुछ भरोसा नहीं। हम तन्हा तो नहीं लड़ सकते। हमें सलीबियों के साथ मिलकर कोई और मंसूबा बनाना पड़ेगा।"

"क्या यह मुम्किन हो सकता है कि अल्मुलकुस्सालेह सुलह का मुआहिदा तोड़ दे?" नायाब सालार ने पूछा।.

"यह मुम्किन है।" कमानदार ने कहा– "मैंने उस के जिन सालारों और कमानदारों से बात की वह कहते थे कि अल्मुलकुस्सालेह ने सलाहुद्दीन अय्यूबी को धोखा दिया है, अगर उसने धोखा नहीं दिया तो भी ज़्यादा तर सालार और दूसरे हुकाम उस मुआहिद को तस्लीम नहीं करते। मुशीर (सलीबी) तो फौरी हम्ले के हक में हैं।"

"आपको हलब चले जाना चाहिए।" नायब सालार ने उसे कहा– "और मैं मुसिल चला जाता हूं।"

"तुम एक बार फिर हलब चले जाओ।" सैफुद्दीन ने कमानदार से कहा– "अल्मुलकुस्सालेह को बता दो कि मैं आ रहा हूं तुम रवाना हो जाओगे तो अगली रात मैं भी रवाना हो जाउंगा। हो सकता है वह मुझसे मिलना न चाहे। शहर से बाहर अलमुबारक नाम के चश्में हैं, मैं वहीं कयाम करूंगा। अल्मुलकुस्सालेह से कहना कि मुझे वहाँ मिले। अगर वह न मिलना चाहे तो मुझे अल्मुबारक आकर बता देना।"

"क्या आपका अकेले जाना मुनासिब है?" नायब सालार ने पूछा।

"इन इलाकों में कोई ख़तरा तो नहीं।" सैफुद्दीन ने कहा– "मैं रात को जाऊँगा। किसी को क्या ख़बर की वालिये मुसिल जा रहा है।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी के जासूसों और छापामारों का कोई भरोसा नहीं।" नायब सालार ने कहा– "उन से हमारी कोई जगह महफ़ूज़ नहीं।"

"मुझे जाना ज़रूरी है।" सैफुद्दीन ने कहा– "ख़तरा मोल लेना ही पड़ेगा। आज तुम मुसिल को रवाना हो जाओ। मैं कल रात हलब को रवाना हो जाऊंगा।"

जिस वक़्त यह बातें हो रही थीं उस वक़्त दाऊद और हारिस के कान दरवाज़े की दर्ज़ के साथ लगे हुए थे। दोनों वहाँ से हट गये और अपने कमरे में चले गये। दाऊद गहरी सोंच में खोया हुआ था। उसे सैफुद्दीन का तआक्कुब करना था लेकिन किस तरह? सोंच–सोंच कर उसके दिमाग में एक तरकीब आ गयी।

"हम सैफुद्दीन के मुहाफ़िज़ बनेंगे और उसके साथ हलब जायेंगे।" दाऊद ने हारिस से कहा– "हम अचानक उसके सामने जायेंगे और कहेंगे कि हम उसके फौज के सिपाही हैं।"

अगर उसने कह दिया कि दोनों मुसिल चले जाओ तो क्या करोगे?" हारिस ने पूछा।

"मैं अपना जादू चलाने की कोशिश करूंगा।" दाऊद ने कहा।

"अगर यह भी नाकाम हुआ तो?"

"फिर यह भी हलब नहीं जायेगा।" दाऊद ने कहा– "अल्मुलकुस्सालेह ने सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ सुलह कर ली है तो सैफुद्दीन उसके मुआहिदे को मंसूख़ कराने के लिए हलब नहीं पहुंच सकेगा।" उसने हारिस को समझा दिया कि उन्हें क्या करना है।

उसी रात सैफुद्दीन बन्द कमरे में अपने नायब सालार और कमानदार के पास बैठा था उन्हें आख़िरी हिदायात दे रहा था। रात का पहला पहर था। पहले कमानदार वहीं से निकला। हारिस के बाप ने उसे घोड़ा खोल दिया। कुछ देर बाद नायब सालार भी चला गया। सैफुद्दीन अकेला रह गया। वह लेट गया। अचानक कमरे का दरवाज़ा धमाके से खुला। वह घबरा कर उठ बैठा। देखा, फ़ौज़ी मुसर्रत और ख़ुशी बनी हुई थी। वह दौड़ती आई और उसके पास बैठकर उसने सैफुद्दीन के दोनों हाथ पकड़ लिए।

"मेरा भाई आ गया है।" फौज़ी ने ख़ुशी से दिवाना होते हुए कहा– "उसके साथ उसका एक दोस्त है।"

"तुमने उन्हें बताया है कि मैं यहां हूं?" सैफुद्दीन ने पूछा।

"हाँ!" फौज़ी ने कहा–"मैंने बता दिया है और वह इतने ख़ुश हैं कि आप से मिलने की इजाज़त मांगते हैं।"

"उन्हें ले आओ।"

❖

दाऊद और हारिस सैफुद्दीन के सामने गये। फौजी अन्दाज़ से सलाम किया और सैफुद्दीन के इशारे से उसके पास बैठ गये। उन्होंने अपने कपड़ों और चेहरों पर गर्द डाली थी और वह सांसें इस तरह ले रहे थे जैसे बहुत थके हुए हों। सैफुद्दीन ने उनसे पूछा वह कौन से दस्ते में थे। हारिस चूंकि उसके फौज का सिपाही था, इसलिए उन सवालों का जवाब उसी ने दिया। दाऊद को तो कुछ भी मालूम नहीं था।

"तुम इतने दिन कहां रहे?" सैफुद्दीन ने पूछा।

"हमें बताते हुए शर्म आती है कि हमारी फ़ौज किस तरह पस्पा हुई।" दाऊद ने कहा– "हमें भी पस्पा होना था, लेकिन मैं इसे साथ लेकर एक चट्टान पर छुप गया और यह देखने लगा कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज तआक्कुब में आती है या कहीं पड़ाव करती है। मैंने जासूसी शुरू कर दी। आप को शायद याद होगा कि आप ने सलीबी मुशीरों से छापामार जैश तैयार कराये थे। मैं भी एक जैश में था। मैंने गहरी दिलचस्पी से तरबियत हासिल की थी। जंग में यह तरबियत बहुत काम आई। जंग ख़त्म हो गयी तो मैंने इस तरबियत से फ़ायदा उठाया और सोचा कि मैं अगर भागूं तो अपनी फ़ौज के दुश्मन के कुछ राज़ भी लेता चलूं। यह (हारिस) मिल गया। इसे मैंने अपने साथ रख लिया। सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज पेश क़दमी करती रही और हम देखते रहे। अगर हमारे साथ आठ सिपाही होते तो हम शबख़ून मार मार कर उस फ़ौज का बहुत नुक़सान करते........

"हमने सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज को तुर्कमान के इलाक़े में पड़ाव करते देखा है। फ़ौज ने ख़ेमे जिस तरह गाड़े हैं उससे पता चलता है जैसे फ़ौज, वहां लम्बे अर्से के लिए

ठहरेगी। मुझे यह अफसोस है कि हमारी फौजें घबराकर भाग आई हैं। इससे पूछें। हमने दुश्मन की फौज की जो लाशें देखी हैं उनकी तादाद चन्द सौ चन्द हज़ार है और ज़ख़्मियों का तो कोई हिसाब नहीं। हमने रात को उनकी ख़ेमागाह के करीब जाकर देखा। अल्लाह तौबा, ज़ख़्मियों का कराहना बर्दाश्त नहीं होता था। यूं मालूम होता था जैसे आधी फ़ौज जख़्मी है। अमीरे मोहतरम! अल्लाह आपका इकबाल बुलन्द करे। आप बेहतर जानते हैं कि क्या करना चाहिए। हम आपके ग़ुलाम हैं जो हुक्म देंगे बजा लायेंगे। मेरा ख़्याल यह है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज लड़ने के क़ाबिल नहीं। अगर आप अपनी फ़ौज फौरन इकठ्ठी करके हम्ला कर दें तो सलाहुद्दीन अय्यूबी को आप दमिश्क पहुंचा सकते हैं।"

सैफुद्दीन दाऊद की रिपोर्ट दिलचस्पी से सुन रहा था। वह शिकस्त ख़ुर्दा था इसलिए वह ऐसी बातें सुनने को तरस रहा था जो उसे यह तस्कीन दें कि उसे शिकस्त नहीं हुई और वह भागा नहीं बल्कि उसकी फौज और उसके इत्तेहादी घबराकर भागे थे। दाऊद उसकी यह नफ़्सीयाती ज़रूरत पूरी कर रहा था। यह उसकी कमज़ोरी थी जिस के असर से दाऊद की बातें उसे ज़ेहनी सकून दे रही थीं।

"हम मुसिल जा रहे थे।" दाऊद ने कहा– "इस (हारिस) का गांव रास्ते में पड़ता था।यह कहने लगा कि घरवालों से मिलते चलें। हम यहां आये तो इसके मोहतरम वालिद ने बताया आप यहाँ हैं। यक़ीन न आया। आपको यहाँ देखकर भी हमें यक़ीन नहीं आ रहा कि आप यहाँ हैं। हम यह बातें आप तक पहुंचाना चाहते थे। ख़ुदा ने हमपर बड़ा ही करम किया है।"

"हम तुम्हारी बातें सुनकर बहुत ही ख़ुश हुए हैं।" सैफुद्दीन ने बादशाहों की तरह कहा– "तुम्हें इस बहादूरी का इनाम मिलेगा।"

"हमारे लिए इससे बड़ा और इनाम क्या हो सकता कि आपकी बराबरी में बैठे आप के साथ बातें कर रहे हैं।" हारिस ने कहा– "हम आपके लिए जाने देकर अपनी रूहों को ख़ुश करने के लिए बेताब हैं।"

"मालूम हुआ है कि आपके साथ कोई और भी है?" दाऊद ने पूछा।

"वह दोनों चले गये हैं।" सैफुद्दीन ने कहा– "मैं भी चला जाऊँगा।"

"हम पूछने की जुर्रत नहीं कर सकते कि आप यहाँ क्यों रूके हुए हैं।" हारिस ने कहा– "और अब कहाँ जा रहे हैं। मैं आप से बहुत शर्मसार हूं कि मेरे घर वालों ने इस गंदे से कमरे में रखा और फर्श पर बैठा रखा है।"

"मेरी ख़्वाहिश यही थी।" सैफुद्दीन ने कहा– "मैं यहीं चन्द दिन गुज़ारना चाहता था। तुम किसी को न बताना कि मैं यहाँ हूं।"

"आप कहाँ जा रहे हैं?" दाऊद ने पूछा।

"मैं हलब जाऊँगा।" सैफुद्दीन ने जवाब दिया– "वहां से मुसिल चला जाऊँगा।"

"लेकिन आप अकेले हैं।" दाऊद बोला– "आपके साथ कोई मुहाफ़िज़ नहीं।"

"इस इलाके में कोई ख़तरा नहीं।" सैफुद्दीन ने कहा– "अकेला चला जाऊँगा।"

"गुस्ताख़ी की माफी चाहता हूँ।" दाऊद ने कहा– "इस इलाके को दुश्मन से खली न

समझें। जो मैं जानता हूं वह आप नहीं जानते। सलाहुद्दीन अय्यूबी के छापामार घूम फिर रहे हैं। किसी ने आप को पहचान लिया तो हम दोनों सारी उम्र पछताते रहेंगे कि हम आपके साथ क्यों न चले गये। इत्तफ़ाक से हम आ गये हैं। हमारे पास घोड़े हैं, हथियार हैं। हम आपके साथ चलेंगे। वैसे भी कोई हुक्मरान मुहाफ़िज़ों के बेगैर कहीं जाता अच्छा नहीं लगता।"

सैफुद्दीन को मुहाफ़िज़ों की ज़रूरत थी। वह तो पहले से ही डरा हुआ था। दाऊद ने उसे और डरा दिया। उसने उन्हें कहा कि वह अपने घोड़े साफ़ करलें और अगली रात चलने के लिए तैय्यार हो जाएं। वह अन्दर चले गये और सैफुद्दीन फ़ौज़ी का इन्तज़ार करने लगा लेकिन फ़ौज़ी उस कमरे में न गयी। दिन को दाऊद और हारिस उसके लिए खाना ले गये। उसके पास बैठे रहे और दिन गुज़र गया।

❖

जिस वक़्त यह तीन मुसलमान हुक्मरान सलाहुद्दीन अय्यूबी पर हम्ला करने की तैय्यारियों में मसरूफ़ थे वहाँ से कुछ दूर सलीबी कमानदारों और हुक्मरानों की कान्फ्रेंस हो रही थी। वह अल्मुलकुस्सालेह, गुमश्तगीन और सैफुद्दीन की मुत्तहदा अफ़वाज की शिकस्त पर ग़ौर कर रहे थे। उनमें तक़रीबन सब सुल्तान अय्यूबी के मुक़ाबले में आकर शिकस्त खा चुके थे।

"इन मुसलमान फ़ौजों की शिकस्त दरअसल हमारी शिकस्त है।" रिमाण्ड ने कहा– "जहां तक मैं जानता हूं सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज की नफ़री ज़्यादा नहीं थी।"

"मुझे आपकी राय से इत्तफ़ाक नहीं।" एक मशहूर फ्रांसीसी बादशाह रिनॉल्ट ने कहा– "हमारा मक़सद हरगिज नहीं कि मुसलमान आपस में टकरायें तो उनमें से किसी फ़रीक़ को फ़तह या शिकस्त हो। हमारा मक़सद सिर्फ़ इतना है कि मुसलमान आपस में लड़ते रहें और एक फ़रीक हमारे हाथ में खेलता रहे। हमारा बदतरीन और ख़तरनाक दुश्मन सलाहुद्दीन अय्यूबी है। हम चाहते हैं कि उसके मुसलमान भाई उसके रास्ते में हायल रहें और उस की ताक़त ज़ाया करते रहें। अगर उसके मुसलमान हरीफ़ों की ताक़त ज़ाया हो रही है तो होती रहे। यह भी हो सकता है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त देकर उसके हरीफ़ हमारे ख़िलाफ़ मुत्तहिद हो जाएं।"

"मैं आपको मुसलमान इलाक़ों और हुक्मरानों की पूरी कैफ़ियत सुनाता हूं जो हमारे मुशीरों ने भेजी हैं।" एक कमाण्डर ने कहा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी की दुश्मन तीनों फ़ौजों की जज़्बाती हालत यह है कि सिपाहियों में लड़ने का जज़्बा ख़तरनाक हद तक कम हो गया है। उनका जानी नुक़सान भी बहुत हुआ और वह बेशुमार अस्लेहा और सामान फेंक आये हैं। वह फ़ौरी तौर पर लड़ने के क़ाबिल नहीं थे। हमने उन्हें जो मुशीर दे रखे हैं उन्होंने मुसलमान हुक्मरानों को बड़ी मुश्किल से सलाहुद्दीन अय्यूबी पर हम्ला करने के लिए तैय्यार किया है। सलाहुद्दीन अय्यूबी हबाब अलतुर्कमान के ख़ूबसूरत इलाक़े में ख़ेमाज़न है। वह फ़ौरी तौर पर पेश क़दमी नहीं कर रहा। हमारे मुशीर पूरी कोशिश कर रहे हैं कि हलब, हरान और मुसिल की फ़ौजें ख़्वाह वह किसी भी हालत में हों हम्ला कर दें। हमें उम्मीद है कि वह सलाहुद्दीन अय्यूबी को बेख़बरी में जा लेंगे। उसे मारने का यही एक तरीक़ा है।"

"और यह तरीका शायद कामयाब न हो।" आगइस ने कहा– "क्योंकि अय्यूबी बेख़बर क़भी नहीं बैठा। उसका जासूसी का निज़ाम हर लम्हा बेदार और सरगर्म रहता है। उसे आने वाले वाकिआत और हम्लों की इत्तलाअ दो दिन पहले मिल जाती है। हमारे जो मुशीर मुसलमानों के साथ हैं उन्हें सख़्त हिदायत दो कि अपने जासूसों को और ज़्यादा तेज़ कर दें और उनकी तादाद भी बढ़ा दें। उन्हें यह काम दें कि तमाम इलाक़ों में घूमते फिरते रहें और सलाहुद्दीन अय्यूबी के जासूस पकड़ें। जब मुसलमान फ़ौजें हम्ले के लिए कूच करें तो जासूस और छापामार दूर–दूर बिखर जायें। जहां कोई मशकूक आदमी इधर उधर जाता नज़र आये उसे पकड़ लें........

मुसाफ़िरों को भी रोक लें। मक़सद यह है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी को हम्ले की ख़बर उस वक़्त हो जब उस के मुसलमान भाईयों के घोड़े उसकी ख़ेमागाह में दाख़िल होकर उसकी फ़ौज का कुश्त व ख़ून शुरू कर दें।"

"यह इत्तलाअ भी मिली है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी उन इलाक़ों से जो उसके क़ब्ज़े में हैं फ़ौज के लिए भर्ती कर रहा है और लोग भर्ती हो रहे हैं।" एक और कमाण्डर ने कहा– "यह सिलसिला रूकना चाहिए। उसका एक तरीक़ा तो यह है जो हम पहले ही इख़्तियार कर रहे हैं कि उसपर जल्दी हम्ला करवाया जाए ताकि उसे तैय्यारी की मुहलत न मिले। दूसरा तरीक़ा यह है कि उन इलाक़ों में अख़्लाकी तख़रीबकारी की वही मुहिम चलाई जाए जो हमने मिस्र में चलाई थी। यह सही है कि हमारे बहुत से आदमी और कई एक कारआमद लड़कियां पकड़ी गयीं और मारी गयीं हैं लेकिन यह क़ुर्बानी तो देनी ही पड़ेगी। हम भी तो मरते हैं। सलीब की ख़ातिर हमें ख़ुद भी मरना है और अपनी औलाद को मरवाना है। मुसलमान के ज़ेहनों पर हम्ला ज़रूरी है। मैं एतराफ करता हूं कि हम सलाहुद्दीन अय्यूबी को इस ख़ित्ते से बेदख़ल नहीं कर सके। उसने मिस्र में पांव जमा लिए हैं और यहां भी आ गया है। उसकी कामयाबी की एक वजह तो यह है कि वह मैदाने जंग का उस्ताद है, दूसरी वजह यह है कि वह इन्तज़ामिया का माहिर है और तीसरी बुनियादी वजह यह है कि उसने अपने सिपाहियों में क़ौमियत और मज़हब का जुनून पैदा कर रखा है। हमारे ख़िलाफ़ लड़ने को वह मज़हबी अक़ीदा समझते हैं। उसी का नतीजा है कि उसके छापामार भेड़ियों की तरह हमारी फ़ौज पर शपख़ून मारते हैं उस जुनून और उस अक़ीदे को तबाह करना ज़रूरी है।"

"हमने हमेशा इन्सान की इस कमज़ोरी से फ़ायदा उठाया है जिसे फ़रार और लज़्ज़त परस्ती कहते हैं।" शाह आगस्टस ने कहा– "जिन मुसलमानों के पास दौलत है वह हुक्मरान बनना चाहते हैं। हमने उनकी उसी कमज़ोरी को इस्तेमाल किया है। हमें कोई नया तरीक़ा इजाद करने की ज़रूरत नहीं। अलबत्ता एक और मुहिम शुरू करनी है। यह है अय्यूबी के ख़िलाफ़ नफ़रत की मुहिम। उसके ख़िलाफ़ इन्तेहाई घटिया बातें मशहूर करो लेकिन यह काम तुम नहीं करोगे बल्कि मुसलमानों की ज़ुबानें इस्तेमाल की जायेंगी। अपने मुख़ालिफ़ीन और दुश्मनों को बदनाम करने के लिए अपने किरदार और इख़्लाक़ की परवाह नहीं करनी चाहिए। अपने मफ़ाद को सामने रखना चाहिए। तुम्हारा दुश्मन हैसियत रूत्बे और शोहरत के

लिहाज़ से जिस कदर बुलन्द हो उसपर इतने ही घटिया और पस्त इल्ज़ाम आयद करो। सौ में पांच आदमी तो तुम्हारी बात मान जायेंगे।"

"इस दौरान अपनी जंगी तैय्यारियां जारी रखो।" एक कमाण्डर ने कहा– "हमें बहुत वक़्त मिल गया हैं आप ने बहुत कामयाबी से मुसलमानों में हुकूमत परस्ती का मर्ज़ पैदा करके उन्हें आपस में टकराया है। अगर हम मुसलमानों में अपने दोस्त पैदा न करते तो आज सलाहुद्दीन अय्यूबी फ़िलिस्तीन में होता। हमने उसी की कौम उसके रास्ते में खड़ी कर दी है।"

"मैं हैरान हूं।" रिमाण्ड ने कहा– "कि यही मुसलमान सिपाही अय्यूबी की फौज में हैं। वह हमारे दस दस सिपाहियों पर भारी पड़ते हैं। मगर यही मुसलमान सिपाही अय्यूबी के हरीफ़ों की फ़ौज में थे और ऐसी बुरी शिकस्त खा गये कि बिखरे हुए भागे।"

"यह अक़ीदे और नज़रिए का करिश्मा है जिसे मुसलमान ईमान कहते हैं।" रिनॉल्ट ने कहा– "जो सिपाही या सालार अपना ईमान नीलाम कर देता है उसमें लड़ने का जज़्बा नहीं रहता। उसे ज़िन्दगी और उजरत अज़ीज़ होती है। इसलिए हमने किरदार कुशी को ज़रूरी समझा है। इन लोगों में जिन्सीयत और नशे की आदत पैदा करो, फिर तुम्हें सिपाही और घोड़े मरवाने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

इस कान्फ्रेंस में फैसला किया गया कि हलब में तीनों मुसलमान फ़ौजों को यकजा करके एक कमान में रखा जाए। उन्हें वाजिबी मदद दी जाए। उन्हें एक मुहाज़ पर रखा जाए लेकिन उन तीनों में तफ़र्क़ा भी पैदा किया जाए।

❖

रात का पहला पहर गुज़र चुका था। हारिस के गांव पर नींद का ग़लबा था। उसके घर से तीन घोड़े निकले। एक पर सैफुद्दीन सवार हुआ। दूसरे पर हारिस और तीसरे पर दाऊद। उन दोनों के हाथों में बरछियां थीं जो उन्होंने फ़ोजी अन्दाज़ से उमूदी पकड़ रखी थीं। उन्हें अलविदा कहने के लिए हारिस का बाप, बहन और बीवी दरवाज़े के बाहर खड़ी थीं। हारिस के हाथ में मशाल थी। सैफुद्दीन फौज़ी पर नज़रें जमाये हुए था और फौज़ी दाऊद को टकटकी बांधे देख रही थी। उसने सैफुद्दीन को और अपने भाई को भी नज़र अन्दाज़ कर दिया था। "ख़ुदा हाफिज। ख़ुदा हाफ़िज।" की आवाज़ें सुनाई दीं और तीनो सवार चल पड़े।

घोड़े तारीकी में रूपोश हो गये। फौज़ी उनके टाप सुनती रही। ज्यों–ज्यों टाप धीमें होते गये। फ़ौज़ी के कानो में दाऊद की आवाज़ बुलन्द होती गयी– "राहे हक़ के मुसाफिरों की शादियां आसमानों में हुआ करती हैं। उनकी बारातें कहकशां के रास्ते जाया करती हैं।"

वह जब अन्दर जाकर सोने के लिए लेटी तो भी उसके गिर्द दाऊद के यही अल्फ़ाज गूंज रहे थे। अचानक यह सवाल उसके ज़ेहन में आया– 'क्या मैं दाऊद के साथ शादी करना चाहती हूं?" वह शर्मसार हो गयी, फिर उसे अपने आप पर गुस्सा आने लगा। उसे दाऊद के यह अल्फ़ाज़ याद आये– "रास्ते में ख़ून की नदी भी है जिस पर कोई पुल नहीं।" उसके ज़ेहन में ख़ून मौजें मारने लगा। शादी एक बेकार सा ख़्याल बनकर ज़ेहन से निकल गया।

सैफुद्दीन और उसके मुहाफ़िज़ों ने रात सफ़र में गुज़ार दी। सुबह तुलूअ हुई तो सैफुद्दीन आगे–आगे जा रहा था। दाऊद और हारिस इतना पीछे थे कि उनकी बातें सैफुद्दीन के कानों तक नहीं पहुंच सकती थीं। घोड़ों के कदमों की भी आवाज़ें थीं।

"मालूम नहीं तुम मुझे क्यों रोक रहे हो?" हारिस ने झुंझला कर दाऊद से कहा– "यहीं हम उसे कत्ल करके लाश कहीं दबा दें तो किसी को हम पर कत्ल का शक नहीं हो सकता।"

"उसे ज़िन्दा रखकर हम उसकी पूरी फ़ौज को कत्ल करा सकेंगे।" दाऊद ने कहा– "यह मर गया तो उसकी फ़ौज की कमान कोई और ले लेगा। मुझे राज़ मालूम करना है। तुम अपने आपको काबू में रखो।"

दोपहर से कुछ पहले उन्हें हलब के मीनार नज़र आने लगे। उससे अलग हटकर अल्मुबारक का सब्ज़ा ज़ार था जहां कुदरती चश्में थे। उस जगह के करीब पहुंचे तो सैफुद्दीन का वह कमानदार जो अल्मुलकुस्सालेह के लिए उसकी मुलाक़ात का पैग़ाम लाया था, दौड़ता आया। उसने बताया कि अल्मुलकुस्सालेह इन्तज़ार कर रहा है। अलमुबारक के सब्ज़ा ज़ार में दाख़िल हुए तो अल्मुलकुस्सालेह के दो सालार इस्तकबाल में खड़े थे। उसने इस ख़्वाहिश का इज़हार किया कि उसके लिए चश्में के किनारे ख़ेमा नसब किया जाए। वह उसी जगह कयाम करना चाहता था तारीख़ में इस सवाल का जवाब नहीं मिलता कि उसने शहर में अल्मुलकुस्सालेह के महल में जाना क्यों पसन्द नहीं किया था। उसने दाऊद और हारिस को अपने साथ रखा। उसके लिए निहायत ख़ुश्नूमा और कुशादा ख़ेमा नसब कर दिया गया। मुलाज़िम भी आ गये और ख़ेमें ने वहां महल का मंज़र बना दिया। अल्मुलकुस्सालेह ने उसे किले में राते के खाने पर मुदउअ किया और वहीं मुलाकात तय हुई।

❖

शाम को सैफुद्दीन और अल्मुलकुस्सालेह की मुलाकात हुई। काज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने अपनी याददाश्तों में "सुल्तान यूसूफ़ पर क्या उफ़ताद पड़ी" (सुल्तान अय्यूबी का पूरा नाम यूसूफ़ सलाहुद्दीन अय्यूबी था) में इस मुलाकात को न अल्फ़ाज़ में बयान किया है– "आख़िर कार यह तय पाया कि अल्मुलकुस्सालेह और सैफुद्दीन वालिये मुसिल की मुलाकात होगी। मुलाक़ात किले में हुई जहां अल्मुलकुस्सालेह ने सैफुद्दीन का इस्तकबाल किया। सैफुद्दीन ने कमसिन शहज़ादे (अल्मुलकुस्सालेह) को गले लगा लिया और रो पड़ा। मुलाकात के बाद सैफुद्दीन अपने ख़ेमे में चला गया जो चश्मा अलमुबारक के पास था। वहां उसने बहुत दिन कयाम किया।"

यह दोनों वकाओ निगारों ने जो कवाइफ़ कलमबन्द किये थे, वह इस तरह हैं कि सैफुद्दीन ने अल्मुलकुस्सालेह से कहा कि उसने उसके पैग़ाम के जवाब नहीं दिया। अल्मुलकुस्सालेह हैरान हुआ। उसने बताया कि उसने दूसरे ही दिन तहरीरी जवाब भेज दिया था। जिसमें उसने लिखा था कि आप फिक्र न करें, सुलह का मुआहिदा महज़ धोखा है जो वक़्त हासिल करने के लिए सुल्तान अय्यूबी को दिया गया है।

"मुझे आप का कोई पैग़ाम नहीं मिला।" सैफुद्दीन ने कहा– "मैं तो इसपर परेशान था

कि आप ने सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ सुलह का मुआहिदा करके ग़लती की है और हमें धोखा दिया है।"

अल्मुलकुस्सालेह के साथ दो सालार भी थे। उन्होंने उसी वक़्त उस आदमी को बुलाया जिसे पैग़ाम दिया गया था। उसने बताया कि क़ासिद कौन था। क़ासिद को बुलाने गये तो मालूम हुआ कि जिस रोज़ वह पैग़ाम लेकर गया था उस रोज़ के बाद किसी को नज़र नहीं आया। इस इत्तेलाअ पर भाग दौड़ शुरू हो गयी। क़ासिद का कुछ पता न चला। किसी को यह भी मालूम न था कि वह कहाँ का रहने वाला है। वह कहीं अकेला रहता था। वहाँ उसका सामान पड़ा था, वह खुद नहीं था। यह किसी के वहम व गुमान में भी नहीं था कि इतना अहम पैग़ाम सलाहुद्दीन अय्यूबी तक पहुंचा दिया गया है।

यह मामिला अल्मुलकुस्सालेह के सलीबी मुशीरों तक पहुंचा तो उन्होंने यह फ़ैसला दिया– "क़ासिद सलाहुद्दीन अय्यूबी का जासूस था, या सैफ़ुद्दीन की तरफ़ जाते हुए क़सिद अय्यूबी के जासूसों या छापामारों के हत्थे चढ़ गया उन्होंने उसे क़त्ल कर दिया होगा। उसका नतीजा यह होगा कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने जंगी तैयारियां तेज़ कर दी होंगी। यह भी हो सकता है कि वह हम्ले में पहल कर दे। इसका इलाज यह है कि तीनों अफ़वाज एक हाई कमान के तेहत होंगी और सुप्रीम कमाण्डर सैफ़ुद्दीन होगा। गुमश्तगीन ने अपनी फ़ौज शामिल तो कर दी लेकिन खुद हलब में रहना पसन्द किया। साफ़ ज़ाहिर था कि वह सैफ़ुद्दीन के मातेहत नहीं रहना चाहता था।

दो तीन दिनों में तीनों फ़ौजें हलब में जमा हो गयीं। सलीबियों ने अस्लेहा और सामान भेज दिया था। उन्होंने मज़ीद सामान का वादा किया और अफ़वाज को कूच कर दिया। हम्ले का प्लान उज्लत में बनाया गया था। कूच को पोशिदा रखने के लिए नक्ल व हरकत रात को की गयी। दिन को पड़ाव करना था। इसके अलावा यह इन्तज़ाम भी किया गया कि छापामारों की ख़ासी तादाद कूच के रास्ते दायें बायें इस हिदायत के साथ फैला दी गयी कि कोई मुसाफिर भी नज़र आये तो उसे पकड़कर हलब भेज दो ताकि फ़ौज का कूच ख़ुफ़िया रहे।

कूच से पहले सैफ़ुद्दीन ने दाऊद और हारिस को बुलाया। उन्हें शाबाश दी और कहा कि उन्होंने मुश्किल के वक़्त में उस का साथ दिया है। जंग के बाद उन्हें तरक्की मिलेगी और इनाम भी। उसने हारिस से कहा– "तुम्हारी बहन का मेरे सर पर एक फ़र्ज़ है। मैं उसके सामने उस वक़्त जाऊंगा जब मैं यह फ़र्ज़ अदा करने के क़ाबिल हूंगा। हारिस को हैरत में देखकर उसने कहा– "फ़ौजी ने कहा था कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की तलवार लेकर और उसके घोड़े पर सवार होकर आओगे तो मैं तुम्हारे साथ चली चलूंगी.......हारिस! मैं अगर फ़ातेह वापस आया तो तुम्हारी बहन मुसिल की मलिका होगी।"

"इन्शाअल्लाह।" हारिस ने कहा– "हम आप को फ़ातेह लायेंगे। क्या तीनों फ़ौजें इकठ्ठी जा रही हैं?"

"हाँ!" सैफ़ुद्दीन ने जवाब दिया– "और मैं तीनों का सालारे आला हूंगा।"

"ज़िन्दाबाद।" दाऊद ने कहा– "अब भागने की बारी सलाहुद्दीन अय्यूबी की है।"

दाऊद और हारिस ने गुलामाना अन्दाज़ से जोशिली बातें करके और फ़ौज़ी का नाम भी बार–बार लेकर उससे प्लान का ख़ाका मालूम कर लिया और नक़ल व हरकत का अन्दाज़ भी पूछ लिया।

"तुम दोनों अपनी फ़ौज में चले जाओ।" सैफुद्दीन ने कहा– "मेरा मुहाफ़िज़ दस्ता आ गया है। मैं तुम दोनों को हमेशा याद रखूंगा।"

❖

तीनों फौजों का कूच रात को हुआ। दाऊद और हारिस मुसिल की एक फ़ौज के जैश में शामिल हो गये थे। हारिस को तो कई सिपाही जानते थे क्योंकि वह उसी फ़ौज का था। दाऊद के मुतअल्लिक़ हारिस ने बताया कि यह वालिये मुसिल का भेजा हुआ आदमी है। कूच की हालत में किसी ने दाऊद के मुतअल्लिक़ छानबीन न की। रात को तीनों फ़ौजें तीन कालमों में चलती रहीं।

आधी रात के बाद इलाक़ा चट्टानी आ गया जहां कई जगहों पर कालम की तरतीब गडमड हो गयी। दाऊद ने हारिस से कहा– "यहाँ से निकलो, मौक़ा अच्छा है।"

रात के अंधेरे से फ़ायदा उठाते हुए दोनों ने घोड़े आहिस्ता–आहिस्ता एक तरफ़ करने शुरू कर दिये और फ़ौज से दूर हटते गये। दाऊद की स्कीम यह थी कि दूर जाकर घोड़े को सरपट दौड़ा देंगे। दिन को तीनों फ़ौजें पड़ाव करेंगी और वह दोनों तुर्कमान पहुंच जाएंगे और सलाहुद्दीन अय्यूबी को हम्ले की ख़बर देंगे। इस तरह उसे हम्ले की इत्तलाअ एक दिन पहले मिल जाएगी और वह दुश्मन के इस्तक़बाल का इन्तज़ाम करेगा।

दाऊद को अपनी स्कीम की कामयाबी पर मुकम्मल एतमाद था मगर उसे मालूम नहीं था कि इर्द गिर्द के इलाक़े में छापामारा और जासूस फ़ैला दिये गये हैं।

वह दोनों दूर दायें तरफ़ निकल गये। जब देखा कि फ़ौज से वह बहुत दूर महफ़ूज़ फ़ासिले पर आ गये हैं तो उन्होंने तुर्कमान का रूख़ कर लिया लेकिन घोड़े दौड़ाये नहीं, रफ़तार ज़रा तेज़ कर दी। वह घोड़ों को थकाने से भी गुरीज़ कर रहे थे क्योंकि उन्हें मंज़िल तक रूके बेग़ैर पहुंचना था। रात गुज़रती जा रही थी। सुबह का उजाला निखरने लगा था तो दाऊद घोड़े से उतरा और एक टीले पर चढ़कर उस तरफ़ देखने लगा जिधर अफ़वाज जा रही थीं। उसे दूर गर्द के सिवा कुछ नज़र नहीं आया। उसे इत्मीनान हो गया कि वह अफ़वाज से बहुत दूर हैं मगर यह उसकी ग़लती था। उसे कोई देख रहा था। नीचे आकर घोड़े पर सवार हुआ और दोनों ने घोड़ों की रफ़तार तेज़ कर दी। यह टीलों और रेतीली चट्टानों का इलाक़ा था। वह दो टीलों के दर्मियान से गुज़र रहे थे। आगे मोड़ था। वह मोड़ पर पहुंचे तो आगे से चार घोड़ सवार आ गये। चारों ने बरछियां उनकी तरफ़ कर दीं और रूक गये।

"घोड़ों से उतरो।" घोड़सवार ने रोब से कहा।

"हम मुसाफ़िर हैं।" दाऊद ने कहा।

"मुसाफ़िर मुसिल की फ़ौज के वर्दी में नहीं हुआ करते।" घोड़ सवार ने कहा– "मुसाफ़िरों के पास यह हथियार नहीं हुआ करते जो तुम ने उठा रखे हैं......तुम जो कोई भी हो तुम्हें हमारे

साथ हलब चलना होगा। हम तुम्हें छोड़ नहीं सकते। घोड़े मोड़ो।"

यह हलब के छापामार थे जो मशकूक आदमियों को पकड़कर हलब ले जाने के लिए तमाम इलाके में फैला दिये गये थे। चारों सवारों ने इन दोनों को घेरे में ले लिया। दाऊद ने हारिस से आहिस्ता से कहा—"वक़्त आ गया भाई।" हारिस ने अपने घोड़े की लगाम को झटका दिया। घोड़े ने अगली दोनों टांगें उठा दीं। हारिस ने ऐड़ लगायी। घोड़े ने जुस्त लगायी। हारिस ने सामने वाले घोड़सवार के सीने में बरछी उतार दी लेनिक उसके बायें जो सवार था उसकी बरछी हारिस के कंधे में उतर गयी। दाऊद तजुर्बाकार छापामार था। उसने घोड़े को ऐड़ लगकर वहीं से घूमाया और एक और सवार को बेख़बरी में ले लिया। वह चार थे और यह दो। यह जगह घोड़ों की लड़ाई के लिए मौजूं नहीं थी। दोनों तरफ़ टीले थे। थोड़ी देर घोड़े कूदते फलांगते रहे, बरछियां टकराती रहीं। हारिस घोड़े से गिर पड़ा। दाऊद को भी ज़ख्म आये थे जिन में दो तीन गहरे थे लेकिन उसने होश ठिकाने रखे।

आख़िर चारों सवार मारे गये या शदीद जख़्मी होकर गिर पड़ें। दाऊद भी शदीद जख़्मी था। उसने देखा कि मार्का ख़त्म हो गया है तो उसने हारिस के गांव का रुख़ कर लिया। हारिस को देखने की ज़रूरत महसूस नहीं की। उसे यकीन था कि वह मर गया है और उसे यह यकीन था कि वह खुद भी मर जायेगा लेकिन वह सुल्तान अय्यूबी को हम्ले से क़ब्ल अज़ वक़्त ख़बरदार करने के लिए ज़िन्दा रहने की कोशिश कर रहा था। उसका ख़ून इतना ज़्यादा बह गया था कि उसकी ज़ीन और घोड़े की पीठ भी लाल हो गयी थी। उसने अन्दाज़ा कर लिया था कि तुर्कमान दूर है और हारिस का गांव क़दरे कम दूर। उसकी नज़र हारिस के बाप पर थी। उसे उम्मीद थी कि वह ज़िन्दा पहुच गया तो बूढ़े से कहेगा कि अपने शहीद बेटे की रूह की तस्कीन के लिए तुर्कमान पहुंचो और सुल्तान अय्यूबी को ख़बरदार कर दो।

उसने घोड़े को ऐड़ लगा दी। घोड़ा जितना ज़्यादा हिलता था दाऊद के जिस्म से ख़ून उतना ही ज़्यादा निकलता था। प्यास से उसके हलक़ में कांटे चुभ रहे थे। उसकी आँखों के आगे अंधेरा छाने लगा। वह सरको झिटक झिटक कर रास्ता देखने की कोशिश करता था। उसने आयते करीमा का विर्द शुरू कर दिया और थोड़े—थोड़े वक़्त के बाद आसमान के तरफ़ मुँह करके बुलन्द आवाज़ से कहता— "ज़मीन व आसमान के मालिक! तुझे अपने रसूल का वास्ता, मुझे थोड़ी सी जिन्दगी अता कर दे।" उसके नीचे घोड़ा बड़ी अच्छी चाल दौड़ता जा रहा था मगर दाऊद के ज़ख्म खुलते जा रहे थे और वह महसूस कर रहा था जैसे उसके जोड़ भी अलग हो रहे हों। एक बार तो उसका सर ऐसा डोला कि वह घोड़े से गिरते गिरते बचा। वह चौंक कर संभल गया।

❖

वह एक बार फिर घोड़े से गिरने लगा। उसने संभलने की कोशिश की मगर संभल न सका। उसे अपने पांव के नीचे ज़मीन महसूस हुई। उसकी आंखों के आगे अंधेरा था। वह ज़रा अपने आप में आया तो उसे पता चला कि यह रात का अंधेरा है और उसे किसी ने थाम रखा है। उसे वह दुश्मन समझ कर आज़ाद होने की कोशिश करने लगा तो उसके कानों में

एक निस्वानी आवाज़ पड़ी— "दाऊद! तुम घर में हो। घबराओ नहीं।" उसने आवाज़ पहचान ली। यह फ़ौज़ी की आवाज़ थी। वह ग़शी की हालत में मंज़िल पर पहुंच गया था। आयते करीमा ने उसे रूह की रौशनी अता की थी।

"बाबा कहां हैं?" उसने अन्दर जाकर पूछा।

"वह बाहर चले गये हैं।" फ़ौज़ी ने कहा—"वह कल या परसो आयेंगे।"

फ़ौज़ी और उसकी भाभी उसके ज़ख्म धोने लगीं तो उसने पानी लिया पानी पीकर कहा— "फ़ौज़ी! तुम ने कहा था कि मर्दों के काम औरतें भी कर लिया करती हैं।" वह रूक—रूक कर बड़ी मुश्किल से बोल रहा था— "मेरे ज़ख्म न धोओ। बेकार है। मेरे अन्दर खून नहीं रहा...... .मैं ठीक होता तो बर्दाश्त न करता कि तुम्हें इस घर से बाहर जाने देता यहां मस्ला मेरी और तेरी ज़ात का नहीं। यह एक अमानत का मसला है। यह हमारे रसूल पाक की नामोस का मसला है।" उसने फ़ौज़ी को तुर्कमान का रास्ता समझाया और उसे पैग़ाम दिया कि हलब, हरान और मुसिल की फौजें किस तरह मुश्तर्का कमान में हम्ले के लिए आ रही हैं, किधर से आ रही हैं और उनका प्लान क्या है। उसने फ़ौज़ी को बतादा कि उसका भाई फर्ज़ की आदायगी में शही हो गया है।

फ़ौज़ी तैय्यार हो गयी और उसके साथ हारिस की बीवी भी तैय्यार हो गयी। एक घोड़ा घर में था, दूसरा दाऊद का था। फ़ौज़ी और उसकी भाभी दाऊद को उस हालत में छोड़कर जाने से घबरा रही थीं।

"फ़ौज़ी!" दाऊद ने नहीफ़ आवाज़ में कहा— "मेरे करीब आओ।" वह उसके करीब आई तो उसने लड़की का हाथ थाम कर और मुस्कुराकर कहा—"राहे हक़ के मुसाफिरों की शादियां आसमानों में हुआ करती हैं। उनकी बारातें कहकशां के रास्ते जाया करती हैं। हमारी शादी की ख़ुशी में आसमान पर सितारों का चिरागां होगा। और उसका सर एक तरफ़ लुढ़क गया। फ़ौज़ी ने उसे बुलाया मगर उसकी बारात कहकशां के रास्ते चल पड़ी थी।

फ़ौज़ी को सब कुछ बताकर दाऊद शहीद हुआ था। फ़ौज़ी और उसकी भाभी ने घर को अल्लाह के हवाले किया। घोड़े पर ज़ीन डाली और उस पर फ़ौज़ी की भाभी सवार हो गयी। फ़ौज़ी ने दाऊद के घोड़े को पानी पिलाया और सवार हो गयी। ज़ीन पर ख़ून की तह जमी हुई थी.......दोनों घोड़े गांव से निकल गये। दोनों लड़कियां अल्लाह के भरोसे पर जा रहीं थीं। उस रास्ते से वह वाकिफ़ नहीं थीं। दाऊद ने फ़ौज़ी को एक सितारा समझा दिया था। वह उस सितारे की रहनुमाई में चलती गयीं।

उधर तीनों अफ़वाज दिन भर क़याम करके रात को चल पड़ी थीं। तुर्कमान ज़्यादा दूर नहीं था। सुल्तान अय्यूबी तुर्कमान में आने वाले तूफ़ान से बेख़बर था। उसने देख भाल का इन्तज़ाम कर रखा था मगर उसके दुश्मन ने भी अब के अच्छे इन्तज़मात किये थे। उसने अपने छापामारों को बता दिया था कि तुर्कमान के करीब उन्हें सुल्तान अय्यूबी के ऐसे आदमी मिलेंगे जो देहाती लिबास में या ख़ानाबदोश के भेस में होंगे और वह देखभाल कर रहे होंगे। मोअर्रिख़ लिखते हैं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी का इस तूफ़ान से बचना मुम्किन नज़र नहीं

आता था। उसका बेख़बरी में दबोचे जाना यक़ीनी था। अपने सालारों से वह कह रहा था कि हलब, हरान और मुसिल वाले इतनी जल्दी हम्ला करने के काबिल नहीं हो सकते हालांकि उसे सैफुद्दीन की तरफ़ अल्मलुकुस्सालेह का भेजा हुआ पैग़ाम मिल गया था।

फ़ौज़ी और उसकी भाभी पर जैसे दिवानगी तारी थी। उन्हें यह एहसास ही नहीं रहा था कि वह मस्तूरात हैं और उनके रास्ते में कैसे—कैसे ख़तरे हैं। रात उन्होंने घोड़ों पर गुज़ार दी। सुबह का नूर फैलने लगा तो वह टीलों और रेतीली चट्टानों के करीब से गुज़र रही थीं। फ़ौज़ी ने एक चट्टान के सहारे एक आदमी को बैठे देखा। उसके कपड़े ख़ून से लाल हो गये थे। उसका सर लुढ़क गया था। फ़ौज़ी ने अपनी भाभी से कहा कि कोई ज़ख्मी मालूम होता है लेकिन रूकेंगी नहीं। मालूम नहीं कौन है। उन्हें उसके करीब से गुज़रना था। वह आदमी उठने की कोशिश कर रहा था।

घोड़े करीब गये तो फ़ौज़ी ने चीख़कर कहा— "हारिस" और वह घोड़े से कूद गयी।

वह हारिस था। वह शहीद नहीं हुआ था लेकिन उसका ज़िन्दा रहना भी मुअज्ज़िा था। उसके जिस्म पर बरछियों के बहुत से जख़्म थे। लड़कियों ने घोड़ों के साथ घानी के छोटे—छोटे मश्कीज़े बांध रखे थे। उन्होंने हारिस को पानी पिलाया। उसे ज़रा होश आया तो उसने पूछा— "मैं घर में हूं? दाऊद कहां है?"

फ़ौज़ी ने उसे सारी बात बता दी और बताया कि वह इस वक़्त कहाँ हैं और किधर जा रही हैं। हारिस ने कहा— "मुझे घोड़े पर डाल लो और तुर्कमान की तरफ़ घोड़े दौड़ा दो।"

दोनों लड़कियों ने उसे घोड़े पर बैठा दिया। फ़ौज़ी उसके पीछे बैठ गयी। हारिस रूह की कुव्वत से जिन्दा था वरना उसके जिस्म में ख़ून का एक कतरा नहीं बचा था। यह फ़र्ज़ की लगन का करिश्मा था। फ़ौज़ी ने उसकी पीठ अपने सीने से लगा रखी थी और उसे एक बाज़ू से पकड़ा हुआ था। वह सरगोशियों में फ़ौज़ी को रास्ता बता रहा था।

सुल्तान अय्यूबी की दुश्मन अफ़वाज सैफुद्दीन की कमान में तुर्कमान के करीब पहुंच रही थीं। इधर फ़ौज़ी, हारिस और हारिस की बीवी एक महफ़ूज़ सिम्त से तुर्कमान की तरफ़ जा रही थीं। उफ़क़ से आसमान गहरा बादामी होता जा रहा था और यह रंग ऊपर ही ऊपर उठता जा रहा था। फ़ौज़ी की भाभी ने उफ़क़ की तरफ़ देखा तो उसने घबराकर और चिल्ला कर कहा— "फ़ोज़ी उधर देखो।" हारिस ने सरगोशी की— "क्या है फ़ौज़ी?"

"आंधी।" फ़ौज़ी ने कहा और उसके दिल पर घबराहट तारी हो गयी।

इस ख़ित्ते के लोग इन आंधियों से वाकिफ थे। यह इलाका बेशक चट्टानी था लेकिन कुछ हिस्से रेतीले थे और इर्द गिर्द रेगज़ार था। आंधी जब आती तो चट्टानों को रेत में दफ़न कर जाती थी। इन्सानों और जानवरों के लिए यह क़यामत होती थी, लेकिन यह जो आंधी आ रही थी वह इस ख़ित्ते की चन्द एक भयानक आंधियों में से एक थी और इस आंधी ने तारीख़ी हैसियत हासिल कर ली। मेजर जनरल (रिटायर्ड) मोहम्मद अकबर ख़ान (रंगरूट) ने अपनी अंगेजी किताब "गुरीला वारफियर" में चन्द एक यूरोपी मोअर्रिख़ों और मुसलमान वक़ाए निगारों के हवाले देकर लिखा है— "जिस रोज़ अल्मलुकुस्सालेह, गुमश्तगीन और सैफुद्दीन

की मुत्तहदा अफ़वाज सुल्तान अय्यूबी पर बेख़बरी में हम्ला करने के लिए तुर्कमान के करीब पहुंच गयीं तो ऐसी आंधी आयी कि अपनी नाक से एक बालिश्त आगे कुछ नज़र नहीं आता था। सुल्तान अय्यूबी को मालूम नहीं था कि इस आंधी में उस पर एक और तूफ़ान आ रहा है।"

तारीख़ में यह लिखा गया है कि मुत्तहदा अफ़वाज सुल्तान अय्यूबी पर हम्ला करने में ताख़ीर कर दी तो सालारे आला की लग्ज़िश थी, लेकिन राहे हक़ के मुसाफ़िरों की मदद खुदा किया करता है। कहा जा सकता है कि ख़ुदाये ज़ुलजलाल ने दो मुसलमान लड़कियों के जज़्ब–ए हुर्रियत की लाज रख ली थी। एक बहन अपने ज़ख़्मी भाई को सीने से लगाये मुजाहिदीने इस्लाम को कुफ़्र की यलग़ार से ख़बरदार करने को दौड़ी जा रही थी। उसे कोई ग़म न था कि उसका भाई मर रहा है।

आंधी इतनी तेजी से आई कि किसी को संभलने का मौका न मिला। मुत्तहदा अफ़वाज चट्टानों की ओट में बिखर कर पनाह गुज़ीन हुई। घोड़े और ऊंट बेलगाम हो गये। कमाण्डरों को इत्मीनान था कि आंधी गुज़र जायेगी और फ़ौजों को मुन्ज़िम कर लिया जाएगा, मगर आंधी का जोर बढ़ता जा रहा था।

❖

सुल्तान अय्यूबी की ख़ेमागाह की भी हालत बहुत बुरी थी। ख़ेमे उड़ रहे थे। बंधे हुए घोड़ों, और ऊंटों ने क़यामत बपा कर रखी थी। रेत की बौछारों के साथ कंकरियां और रेज़े जिस्मों में दाख़िल होते महसूस होते थे। चीख़ें ऐसी जैसी बद रूहें और चुड़ैलें चीख़ रही हों। सूरज अभी गुरूब नहीं हुआ था मगर पता चलता था कि सूरज को आंधी उड़ा ले गयी है। कमाण्डर चिल्लाते फिर रहे थे। सिपाही उड़ते ख़ेमों को संभालते, गिरते, और उठते थे।

तीन चार सिपाही एक चट्टान की ओट में दुबके बैठे थे। एक घोड़ा जो आहिस्ता आहिस्ता चल रहा था उन पर चढ़ गया। सिपाहियों ने इधर उधर गिरते चिल्ला–चिल्ला कर कहा– "घोड़ा रोक बदबख़्त। कहीं ओट में हो जाओ।" घोड़ा रूका तो एक सिपाही ने अपने साथियों से कहा– "कुछ और न कहना औरत है।" एक और ने कहा–"यह दो औरते हैं।"

वह फ़ौज़ी और उसकी भाभी थीं। सिपाहियों ने यह समझ लिया कि आंधी में रास्ता भूलकर इधर आ निकली हैं, उनके घोड़ों की बागें पकड़ लीं और उन्हें चट्टान की ओट में करने लगे।

"हमे सुल्तान तक पहुंचाओ।" फ़ौज़ी ने आंधी की चीख़ों मे चिल्लाकर कहा– "सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी कहां है? हम बहुत ज़रूरी पैग़ाम लेकर आई हैं वरना सब मारे जाओगे।"

सिपाहियों ने घोड़े पर एक लहुलुहान ज़ख़्मी को भी देख लिया था। उन्होंने घोड़ों की बागें पकड़ीं और बड़ी ही मुश्किल से सुल्तान अय्यूबी के ख़ेमे तक पहुंचे मगर वहां कोई ख़ेमा नहीं था। ख़ेमा उड़ गया था। कमाण्डर ने देख लिया और लड़कियों को सुल्तान अय्यूबी तक ले गया। सुल्तान एक उमूदी चट्टान की ओट में बैठा था। उसकी हिफ़ाज़त के लिए क़नातें तानी गयी थीं। लड़कियों को देखकर सुल्तान अय्यूबी तेज़ी से उठा। सबसे पहले हारिस को घोड़े से उतारा गया। वह अभी ज़िन्दा था। लड़कियां घोड़ों से उतरीं और तेज़ी से बोलते हुए

फ़ौज़ी ने सुल्तान अय्यूबी को बताया कि मुत्तहदा फ़ौज हम्ले के लिए आ गयी है। हारिस ने सरगोशियों में ज़रूरी बातें बतायीं और वह बोलते–बोलते हमेशा के लिए खामोश हो गया।

उससे कुछ देर बाद आंधी का जोर थमने लगा। सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों को बुलाया और हुक्म दिया कि ख़ेमें संभालने की ज़रूरत नहीं। सिपाहियों को जैशों और दस्तों में इकट्ठा करो। छापामार दस्ते फ़ौरन बुलाओ। उसने सालारों को बताया कि क्या होने वाला है और रात के अन्दर–अन्दर क्या–क्या नक़ल व हरकत करनी है।

आंधी का जोर कुछ और कम हो गया लेकिन रात का अंधेरा फ़ैल गया। सैफ़ुद्दीन की मुत्तहदा फ़ौजें अपने आप को संभालने में मसरूफ़ हो गयीं। बहुत से सिपाही सो गये। रात का हम्ला इस बद नज़्मी की वजह से मंसूबी कर दिया गया कि जानवर भी इधर उधर भाग दौड़ रहे थे। आधी रात के बाद अफ़वाज पर नींद का ग़ल्बा तारी हो गया। सुल्तान अय्यूबी का कैम्प जाग रहा था और वहां बेपनाह सरगर्मी थी। सैफ़ुद्दीन को मालूम ही न हो सका कि उसके दायें बायें से दो तीन मील दूर उस फ़ौज का हिस्सा गुज़रता जा रहा है जिसे वह बेख़बरी में तबाह करने आया था।

❖

सुबह तुलूअ हुई। मुत्तहदा अफ़वाज बुरी तरह बिखरी हुई थीं। रस्द उड़ गयी थी। बाज़ घोड़ों ने मुंह जोर होकर सिपाहियों को कुचल डाला था। अफ़वाज को उज्लत से मुन्जिम किया गया। आधे से ज़्यादा दिन उसी में गुज़र गया। सैफ़ुद्दीन ने तीनों अफ़वाज के सालारों को हुक्म दिया कि चूंकि सुल्तान अय्यूबी बेख़बर है इसलिए सामने से खुला हम्ला कर दिया जाए।

दिन के पिछले पहर हम्ला किया गया। दायें बायें चट्टाने और सर सब्ज़ टीले थे। उनसे हम्लावरों पर तीरों का मेंह बरसने लगा। सामने से आग के गोले आने लगे। आतिशगीर मादे की हाडियां गिरती और फटती थीं। सय्याल मादा बिखर जाता था। उस पर जब मिन्जनिकों के फेंके हुए आग के गोले गिरते थे तो ज़मीन मुहिब शोले उगलती थी। हम्ला रूक गया। सैफ़ुद्दीन ने अफ़वाज को पीछे हटा लिया और हम्ले की तरतीब और स्कीम बदल दी मगर उसकी फ़ौजें पीछे हटीं तो अक़्ब से उन पर ऐसा शदीद तेज़ हम्ला हुआ कि फ़ौजों का शिराज़ा बिखर गया। यह हम्ला सुल्तान अय्यूबी के अपने महफ़ूज़ स्टाइल का था। हम्लावरों की तादाद थोड़ी थी। घोड़े सरपट दौड़ते आये। सवारों की बरछियों और तलवारें चलीं और वह ग़ायब हो गये।

ऐसे ही हम्ले पहलुओं पर हुए। सैफ़ुद्दीन की मरकज़ी कमान ख़त्म हो गयी। रात आई हम्ले रात को भी जारी रहे। सैफ़ुद्दीन और पीछे हटा तो उस पर तीरों की बौछारें आने लगीं। सुल्तान अय्यूबी के छापामार रात भर सरगर्म रहे। सुबह अभी धुंधली थी। जब सुल्तान अय्यूबी ने एक चट्टान पर चढ़कर मैदाने जंग की कैफ़ियत देखी। उसके सामने अब जंग का आख़िरी मरहला था। उसने क़ासिद को अपने रिजर्व दस्तों के कमाण्डरों की तरफ़ दौड़ा दिया। थोड़ी ही देर में सरपट दौड़ते घोड़ों ने ज़मीन हिला डाली। पयादा दस्ते दायें और बायें

से निकले। अल्लाहो अकबर के नारों से आसमान फटने लगा।

सैफुद्दीन की अफ़वाज इस काबिल नहीं रही थीं कि उस हम्ले की ताब ला सकें। घेरा भी था और घेरा मुकम्मल था। सामने से शदीद हम्ला आ गया। सैफुद्दीन की अफ़वाज का जज़्बा तो ख़त्म हो ही चुका था ख़ुद सैफुद्दीन दिल छोड़ बैठा। वह देख रहा था कि कमान उसके हाथ से निकल गयी है और अफवाज लड़ने के काबिल नहीं रही। सवार ज़ख़्मी सिपाहियों को रौंद रहे थे। आख़िर उन्होंने फरदन फरदन हथियार डालने शुरू कर दिये। सुल्तान अय्यूबी की वह फौज जो सैफुद्दीन के अक़्ब में थी आगे रही थी। दायें—बायें से छापामार हम्ले पे हम्ला बोल रहे थे। सैफुद्दीन की अफ़वाज शिकन्जे में पिस गयीं।

सैफुद्दीन के मरकज़ तक पहुंचें तो वहाँ शराब की सुराहियों के सिवा कुछ भी नहीं था। वहाँ से जो कैदी पकड़े गये, उन्होंने बताया कि उनका सालारे आला आखिरी बार एक चट्टान की ओट में देखा गया था फिर नज़र नहीं आया। उसे सुल्तान अय्यूबी के हुक्म से बहुत तलाश किया गया मगर वह कहीं भी नज़र नहीं आया। वह निकल गया था। अपनी अफ़वाज को सुल्तान अय्यूबी के रहम व करम पर छोड़कर वह भाग गया था।

रात एक ख़ेमे में जो तुर्कमान के सब्ज़ा ज़ार में ख़ास तौर पर नसब किया गया था फ़ौज़ी अपने भाई की लाश के पास बैठी कह रही थी—"मैंने ख़ून की नदी पार कर ली है जिस पर कोई पुल नहीं होता। हारिस! मैंने तुम्हारा फ़र्ज़ अदा कर दिया है।"

सुल्तान अय्यूबी उस ख़ेमें दाख़िल हुआ तो फ़ौज़ी ने पूछा— "सुल्तान क्या ख़बर है? मेरे भाई का ख़ून रायगां तो नहीं गया?"

"अल्लाह ने दुश्मन को शिकस्त दी है। तुम फ़ातेह हो मेरी अज़ीज़ बच्ची! तुम.......और सुल्तान अय्यूबी की आवाज़ रिक़्त में दब गयी। उसके आँसू बह निकले।

जांबाज़, जिन्नात और जज़्बात

तुर्कमान का मार्का ख़त्म हो चुका था या सुल्तान अय्यूबी के कम अज़कम उन नायब सालारों और कमाण्डरों की निगाह में यह मार्का ख़त्म हो चुका था जिन्होंने अल्मुलकुस्सालेह, सैफुद्दीन और गुमश्तगीन की मुत्तहदा अफ़्वाज को उन की तवक़्क़ोअ के खिलाफ़ बे तरतीब और बुज़्दिलाना पस्पाई पर मजबूर कर दिया था। सुल्तान अय्यूबी के फ़ातेह कमाण्डरों के सामने दुश्मन की लाशें पड़ी थीं, ज़ख्मी तड़प रहे थे, मुंहजोर घोड़े और ऊंट ज़ख़्मियों और लाशों को कुचल रहे थे। दुश्मन के जो सिपाही भाग नहीं सके थे वह हथियार फेंक कर अलग जमा होते जा रहे थे। बेअन्दाज़ा तलवारें, ढालें, बरछियां, कमानें, तीरों से भरे हुए तरकश, ख़ेमे, फ़ौजियों का ज़ाती सामान जिस में नक़दी और क़ीमती इश्या भी थीं दूर दूर तक बिखरी हुई थीं।

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी उस मुक़ाम पर खड़ा था जो उस के दुश्मन इत्तेहादियों के सुप्रीम कमाण्डर सैफुद्दीन ग़ाज़ी का हैडक्वार्टर और उसकी रिहाईश गाह थी। पहले बयान किया जा चुका है कि सैफुद्दीन अपनी अफ़्वाज को बिखरता और सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज को यक़ीनी फ़तह की तरफ़ बढ़ता देखकर किसी को बताये बेग़ैर भाग गया था। उसका फ़रार ख़ुफ़िया था और शर्मनाक भी। उसके साथ उसके हरम की मुन्तख़ब लड़कियां थीं, नाचने गाने वालियां और उनके साज़िन्दे थे, सोने के सिक्कों और दिगर नक़दी की बोरियां भरी हुई थीं। यह रक़म अफवाज की तन्ख़्वाह थी और यह सुल्तान अय्यूबी के आदमियों के ख़रीदने के लिए भी इस्तेमाल होती थी। सैफुद्दीन की यह रिहाईशगाह दिलकश कपड़ों के ख़ेमों, क़तानों और शामियानों से बनी थी। यह कपड़े की दिवारों और छतों का महल था। उस दौर के जंगजू हुक्मरान ऐसे महल औरत आसाईश और ईशरत का सामान साथ रखते थे। सैफुद्दीन भी उन्हीं हुक्मरानों में से था। उसने शराब की सुराहियां, रंगा रंग प्याले और मटके भी साथ रखे हुए थे।

सुल्तान अय्यूबी कपड़ों के उस दिलफ़रेब महल को देख रहा था। उसकी नज़र पलंग पर पड़ी। वहाँ तलवार पड़ी थी। सैफुद्दीन ऐसा बौखलाकर भागा था कि तलवार साथ लेजाना भूल गया था। सुल्तान अय्यूबी ने तलवार उठा ली। मयान से निकाली। तलवार चमक रही थी। सुल्तान अय्यूबी उस तलवार को देखता रहा। अपने साथ खड़े दो सालारों की तरफ़ देखकर उसने कहा— "मुसलमान की तलवार पर जब औरत और शराब का साया पड़ जाता है तो यह लोहे का बेकार टुकड़ा बन जाती है। इस तलवार को फ़िलिस्तीन फ़तह करना था मगर सलीब ने इसे अपने गुनाहों में डूबो कर अपनी तरह लकड़ी का डंडा बना डाला है। जो

तलवार शराब से भींग जाए वह लहू के रंग से महरूम रहती है।"

उससे मुल्हिक एक वसीअ और खुश्नूमा ख़ेमे में जवान, हसीन और नीम उरियां लड़कियां डरी सहमी हुई बैठी हुई थीं। उन्हें अपना अन्जाम कुछ और नजर आ रहा था। फ़ातेह फ़ौज के कब्ज़े में आकर वह जानती थीं कि उनके साथ क्या सलूक होगा। ऐसी दिलकश लड़कियों को देखकर कौन दरन्दिा नहीं बन जाता लेकिन उन्हें जब सुल्तान अय्यूबी का यह हुक्म सुनाया गया कि वह आज़ाद हैं और वह जहाँ जाना चाहें बतादें ताकि वहाँ तक उन्हें हिफ़ाज़त और इज़्ज़त से भेजा जा सके तो वह और ज़्यादा ख़ौफ़ज़दा हो गयीं। उन्हें अपनी हिफ़ाजत में ले लिया गया। सुल्तान अय्यूबी मैदाने जंग में औरत के वजूद को बर्दाश्त नहीं किया करता था। उन लड़कियों से पूछा गया कि उनकी तादाद कितनी थी तो उन्होंने बताया कि उनमें से दो लापता हैं। उनके मुतअल्लिक यह भी बताया गया कि वह मुसलमान नहीं थीं और वही दो सैफुद्दीन पर छाई रहती थीं। यही कहा जा सकता था कि वह सैफुद्दीन के साथ भाग गयी हैं।

उस दौर के जंगों में उमूमन यूं होता था कि जंग ख़त्म होते ही फ़ातेह फ़ौज माले ग़नीमत पर टूट पड़ती थी। ज़्यादा तर फ़ौजी शिकस्त ख़ुर्दा फ़ौज के आला कमाण्डर की रिहाईशगाह यानी मरकज़ पर धावा बोलते थे क्योंकि वहाँ ख़ज़ाना, शराब और औरतें होती थीं। एक तूफ़ानी हुड़दंग और बाज़ औक़ात दंगा फ़साद बरपा हो जाता था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के एहकाम सख़्त थे। किसी अफ़सर को भी उसका ओहदा कितना ही ऊंचा क्यों न हो, इजाज़त नहीं थी कि माले ग़नीमत को हाथ लगाये। माले ग़नीमत समेटने और एक जगह जमा करने का काम किसी एक दस्ते के सुपुर्द किया जाता था। उसकी तक़सीम सुल्तान अय्यूबी ख़ुद करता था। तुर्कमान के मार्के के बाद सुल्तान अय्यूबी ने माले ग़नीमत के मुतअल्लिक कोई हुक्म न दिया। उसने अपने और दुश्मनों के ज़ख़्मियों को उठाने, मरहम पट्टी करने और जंगी क़ैदियों को अलग करने का हुक्म दे दिया था।

सुल्तान अय्यूबी मैदाने जंग में नज़्म वह नस्क़ के और डीसीप्लीन का सख़्ती से पबान्दी कराता था। इस मार्के में दुश्मन बेतरतीबी से भागा था। सुल्तान अय्यूबी के बाज़ दस्तों ने तअक्कुब भी किया था लेकिन उसकी ट्रेनिंग ऐसी थी कि तअक्कुब में भी दस्ते और जैश तरतीब में और एक दूसरे के साथ राब्ते में रहते थे। सुल्तान अय्यूबी ने तअक्कुब रूकवा दिया और बायें पलहू को उसी तरह तैय्यार रखा था जिस तरह जंग से पहले थे। हम्ले में उसने दूसरे दस्ते, छापामार और रिजर्वों की कुछ नफ़री इस्तेमाल की थी। मार्का ख़त्म होने के बाद उसने पहलूओं के दस्तों को समेटा नहीं था। उसके अलावा उसने अपने महफ़ूज़ (स्ट्राइक फ़ोर्स) को फ़ौरन वापस बुलाकर उसे अपनी कमान में ले लिया था।

"दुश्मन के साज़ो सामान और जानवरों वग़ैरह के मुतअल्लिक़ क्या हुक्म है?" एक सालार ने सुल्तान अय्यूबी से पूछा और कहा– "लड़ाई हमारे हक़ में ख़त्म हो चुकी है।"

मैं अभी इस खुशफहमी में मुब्तला नहीं हुआ।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "लड़ाई अभी ख़त्म नहीं हुई। मेरे सबक़ इतनी जल्दी भूल न जाया करो। हमने दुश्मन की मरकज़ीयत और

जमीअत को बिखेरा है। क्या हमारे किसी दस्ते ने उसके पहलुओं पर हम्ला किया था?.....नहीं किया था। मुझे शक है कि उसके दोनों नहीं तो एक पहलू महफ़ूज है। वह आख़िर तीन फ़ौजें थीं। उनके सालार ईमान फ़रोश हो सकते हैं ऐसे अनाड़ी नहीं हो सकते कि उनके जो दस्ते लड़ाई में शामिल नहीं हुए उन्हें वह जवाबी हम्ले के लिए इस्तेमाल न करें। हो सकता है उन का महफ़ूज़ा भी महफ़ूज़ और तैय्यार हो।"

"उनकी मरकज़ी कमान ख़त्म हो चुकी है सुल्तान ने मोहतरम!" सालार ने कहा– "उन्हें हुक्म देने वाला कोई नहीं रहा।"

"सलीबियों का ख़तरा है।" सुल्तान अय्यूबीने कहा– "गो मुझे किसी तरफ़ से इत्तलाअ नहीं मिली कि सलीबी फ़ौज कहीं कुर्ब व जवार में मौजूद है लेकिन यह चट्टानी इलाक़ा है। यहाँ टीले और वरीअ नशैब भी हैं। बाज़ जगहों पर जंगल भी है और कुछ हिस्सा रेगिस्तानी भी है। नज़र दूर तक नहीं देख सकती। दुश्मन और सांप पर कभी भरोसा नहीं करना चाहिए। मरते–मरते डंक मार देता है। मुझे सैफ़ुद्दीन के साला मुज़फ़्फ़र–उद्दीन की कोई ख़बर नहीं। तुम सब जानते हो कि मुज़फ़्फ़र–उद्दीन इतनी आसानी से भागने वाला सालार नहीं। मैं उसका इन्तज़ार कर रहा हूं। अपनी आँखें खुली रखो। दस्तों को यकजा कर लो... मुज़फ़्फ़र–उद्दीन अगर मेरे सबक़ भूल नहीं गया तो वह मुझ पर जवाबी हम्ला ज़रूर करेगा।"

❖

सुल्तान अय्यूबी का ख़तरा बेबुनियाद नहीं था। आप ने कोरूने हमात की जंग में सैफ़ुद्दीन के एक सालार मुज़फ़्फ़र–उद्दीन बिन जैनुद्दीन का ज़िक्र पढ़ा है। मुज़फ़्फ़र–उद्दीन सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज में सालार रह चुका था और उसकी मरकज़ी कमान में उसके साथ भी रहा था, इसलिए उसे अच्छी तरह इल्म था कि सुल्तान अय्यूबी जंगी मंसूबा किन अनासिर को सामने रखकर तैय्यार करता और मैदाने जंग में इस में किस तरह रद्दो बदल करता है। मुज़फ़्फ़र–उद्दीन कुछ तो ज़ेहनी लिहाज़ से पैदाइशी जंगजू था, ज़्यादा तर तरबियत सुल्तान अय्यूबी से हासिल की, इसलिए उसमें वह जौहर थे जो उसे मैदाने जंग से मुंह नहीं मोड़ने देते थे। वह सैफ़ुद्दीन का क़रीबी रिश्तेदार (ग़ालिबन चचा ज़ाद भाई) था। जब सुल्तान अय्यूबी मिस्र से दमिश्क़ आया और मुसलमान उमरा उसके ख़िलाफ़ सफ़ेआरा हो गये तो मुज़फ़्फ़र–उद्दीन सुल्तान अय्यूबी को बताये बेग़ैर उसकी फ़ौज से निकल कर दुश्मन के कैम्प में चला गया था।

तुर्कमान के इस मार्के से पहले कोरूने हमात के मार्के में मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने सुल्तान अय्यूबी के पहलू पर ऐसा शदीद हम्ला किया था जिस का मुक़ाबला सुल्तान अय्यूबी ने पहलू के दस्तों की क़यादत अपने हाथ ले कर किया था। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद की तहरीर के मुताबिक़, अगर सुल्तान अय्यूबी ख़ुद क़यादत न करता तो मुज़फ़्फ़र–उद्दीन जंग का पांसा पलट देता। सुल्तान अय्यूबी मुज़फ़्फ़र–उद्दीन को फ़ने हरब व ज़रब का उस्ताद मानता था। अब तुर्कमान में उसे जासूसों ने उस मुत्तहदा दुश्मन की अफ़वाज के मुतअल्लिक़ जो मालूमात दी थीं उनमें एक यह भी थी कि मुज़फ़्फ़र–उद्दीन भी इन अफ़वाज के साथ है। यह

मालूम नहीं हो सका था कि वह कलब में है, दायें है, बायें है या वोह महफ़ूज़ा का सालार है। सुल्तान अय्यूबी ने चन्द एक जंगी कैदियों से उसके मुतअल्लिक पूछा। उन्होंने यह तस्दीक तो कर दी थी कि मुज़फ़्फ़र–उद्दीन लश्कर के साथ है मगर यह किसी को इल्म नहीं था कि कहाँ है।

"हो सकता है कैदियों ने उस पर पर्दा डाल लिया हो कि मुज़फ़्फ़र–उद्दीन कहाँ है।" सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों से कहा– "मैं तस्लीम नहीं कर सकता कि वह लड़े बेग़ैर भाग गया होगा। वह मेरा शागिर्द है। मैं उसकी जंगी अहलियत से भी वाकिफ़ हूँ और उसकी फ़ितरत से भी। वह हम्ला करेगा। अगर उसे यकीन हुआ कि वह शिकस्त खायेगा फिर भी वह हम्ला करेगा। उसे हम्ला करना चाहिए, वरना मुझे मायूसी होगी।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी यह न कहे कि मुज़फ़्फ़र–उद्दीन भी भाग गया है।" यह आवाज़ सैफुद्दीन के सालार मुज़फ़्फ़र–उद्दीन की थी जो तुर्कमान के मैदाने जंग से दो ढाई मील दूर सुनाई दे रही थी– "मैं लड़े बेग़ैर वापस नहीं जाऊंगा।"

उस वक़्त जब सुल्तान अय्यूबी सैफुद्दीन के रिहाईशी ख़ेमों में खड़ा था, सैफुद्दीन का कोई कमाण्डर यह पैग़ाम लेकर मुज़फ़्फ़र–उद्दीन के पास पहुंचा था कि सुल्तान अय्यूबी को किसी तरह क़ब्ल अज़ वक़्त पता चल गया था कि उस पर हम्ला आ रहा है इसलिए हम धोखे में आ गये। अब यहाँ लड़ना बेकार है। बेहतर यह है कि तुम भी वापस चले जाओ और अपने दस्तों को किसी और बेहतर जगह लड़ाने के लिए बचा कर ले जाओ। सैफुद्दीन ने उस पैग़ाम में अपने मुतअल्लिक बताया था कि वह किसी को बताये बेग़ैर मैदाने जंग से जा रहा है।

"हम आप का हर हुक्म बजा लायेंगे।" मुज़फ़्फ़र–उद्दीन के एक नायब सालार ने उससे कहा–"लेकिन इस हालत में जबकि हमारी फ़ौज के लड़ने वाले हिस्से मारे गये, ज़ख़्मी या कैदी हो गये या भाग गये हैं, इस थोड़ी सी फ़ौज से जवाबी हम्ला करना मुनासिब मालूम नहीं होता।"

"मैं इन दस्तों को नाकाफ़ी नहीं समझता जो मेरे पास हैं।" मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने कहा– "यह उस फ़ौज का एक चौथाई है। जो हम साथ लाये थे। सुल्तान अय्यूबी इससे भी कम नफ़री से लड़ता और कामयाब हुआ करता है। मैं उसके पहलू पर हम्ला करूंगा। मैं अब उसे वह चाल नहीं चलने दूंगा जो उसने कोरूने हमात में चली थी। तुम सब हम्ले के लिए तैय्यार रहो।"

"आली मुक़ाम सैफुद्दीन ग़ाज़ी वालिये मुसिल तीन फ़ौजों की नफ़री से हार गये हैं।" नायब सालार ने कहा–"मैं अपने मश्वरे को दुहराउंगा कि इस थोड़ी सी नफ़री से हम्ला करना उसे मरवाने वाले बात है।"

"मैदाने जंग में अपने हरम और शराब के मटके साथ रखने वाला के पास तीन की बजाये दस फ़ौजें हो तो भी उनका अन्जाम यही होता है जो वालिये मुसिल सैफुद्दीन का हुआ है।" मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने कहा– "मैं भी शराब पीता हूं मगर यहाँ पानी भी न मिले तो भी परवान

नहीं करता। सुल्तान अय्यूबी मुझे ईमान फरोश और ग़द्दार कहता है लेकिन मैं इसलिए उससे लड़ने से मुंह नहीं मोड़ूंगा कि वह मुसलमान है। यह दो सालारों की टक्कर होगी। यह दो पहलवानों का दंगल होगा। यह दो तेग़ज़नों का मुकाबला होगा......अपने दस्तों को आज रात और परे ले चलो और हर तरफ़ दूर दूर तक अपने आदमी छोड़ दो। वह जिसे मश्कूक हालत में घूमता फिरता देखें उसे पकड़ लें।"

उसने एक जगह मुन्तख़ब कर ली थी जहाँ दस्तों को छिपाया जा सकता था। हम्ले के लिए उसने कोई दिन और वक़्त मुक़र्रर न किया। अपने नायब सालारों से कहा-- "सुल्तान अय्यूबी में लोमड़ी की चालाकी और खरगोश की फुर्ती है। मुझे मेरे मुख़्बिरों ने बताया है कि उसने अभी माले ग़नीमत सिमेटा नहीं और उसने अपनी फ़ौज के पहलुओं को भी नहीं समेटा। इससे पता चलता है कि वह पेश क़दमी नहीं करेगा और यह भी ज़ाहिर होता है कि वह हमारे जवाबी हम्ले का ख़तरा महसूस कर रहा है। मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ वह किस अन्दाज़ से सोंचा करता है। मैं उसे यह धोखा दूंगा कि हम सब भाग गये हैं और अब हम्ले का ख़तरा टल गया है। यह अक़ल और फहम व फ़िरास्त की जंग होगी। वह दो दिनों से ज़्यादा इन्तज़ार नहीं करेगा। उसकी तरह मैं भी अपने जासूसों को उसकी नक़ल व हमल देखने के लिए इस्तेमाल करूंगा। ज्योंहि वह माले ग़नीमत समेटने लगेगा और उसकी तवज्जो दायें बायें से हट जायेगी। हम उसके पहलू पर हम्ला कर देंगे।"

यह वह ख़तरा था जिसे सुल्तान अय्यूबी महसूस कर रहा था।

❖

सैफुद्दीन के लशकर पर जिस तरह सुल्तान अय्यूबी ने बेख़बरी में उसकी तवक़्क़ोआत और उसके ख़्वाबों के ख़िलाफ हम्ला किया था उसकी तफ़सीलात पिछली नशिस्त में सुनाई जा चुकी हैं। आपने पढ़ा है कि सुल्तान अय्यूबी ने एक तो अपने दस्ते सैफुद्दीन की फौज के दायें बायें से उसके अक़ब में भेज दिए थे, उनके अवाला उसने अपने छापामार भी रवाना कर दिये थे। यह उसकी कमाण्डो फोर्स थी जिस के हर कमाण्डर और सिपाही में ग़ैर मामूली ज़ेहानत, दिलेरी और फुर्ती थी और यह तरबियत याफ़ता जासूस थे। इस फौर्स ने चार—चार से लेकर बारह—बारह की टोलियों में तकसीम होकर दुश्मन को बहुत नुकसान पहुचाया था। उनमें एक टोली बारह सिपाहियों की थी जिसके सिर्फ तीन सिपाही और टोली का कमाण्डर अल्नासिर ज़िन्दा थे।

अल्नासिर अपनी टोली के साथ तुर्कमान के मार्के से ही सैफुद्दीन की मुत्तहदा फौज के दूर पीछे चला गया था। उसका निशाना अमुमन दूश्मन की रस्द होती थी। अब के भी वह अपनी टोली को घोड़ों पर ले गया था। उसके पास पलीतें वाले (आतिशीं) तीर थे। थोड़ा सा आतिशगीरमादा था, बरछियां, तलवारें और खंजर थे। रस्द बहुत दूर थी। अल्नासिर को ज़मीन ने यह सहूलतें मुहैय्या की थी कि यह मैदाने या रेगज़ार नहीं बल्कि दूर दूर तक चट्टानों, टीले और नशीबी इलाके थे जिन में छिपना आसाना था। दिन के दौरान हदफ के करीब घोड़े छिपाये जा सकते थे। इत्तहादियों की अफ़वाज की रस्द जिस में फौज के लिए

अनाज और जानवरों के लिए ख़ुश्क घास और दाना वग़ैरह था, पीछे आ रहा था। उस सामान में तीर व कमान और बरछियां वग़ैरह भी थीं। अल्नासिर ने पहली ही रस्द पर कामयाब छापा मारा था। बहुत सी रस्द आतिशीं तीरों से जल गयी थी। दिन को वह अपनी टोली के साथ एक जगह छिपा रहा था मगर सोया नहीं था। उसने देख लिया था कि दुश्मन ने फ़ौजी खड्नालों में और टीलों की ओट में उसकी पार्टी को ढूंढ रहे थे। उसने अपने सिपाहियों को इधर--उधर मौज़ूं बुलन्दियों पर बैठा दिया था। उन्होंने क़मानों में तीर डाल रखे थे। दुश्मन के फ़ौजी दूर से ही वापस चले गये थे। सूरज ग़ुरूब होने के बाद उसने छुप कर रस्द का क़ाफ़िला देखा। क़ाफ़िले ने पड़ाव डाल दिया था मगर उस रात शबख़ून आसान नज़र नहीं आता था। दुश्मन ने इर्द गिर्द गश्ती पहरे का बड़ा सख़्त इन्तज़ाम कर दिया था। यह पहरा पैदल भी था, और घोड़सवार भी। इसके बावजूद अल्नासिर ने शबख़ून का इरादा कर लिया दुश्मन की अभी बहुत सी रस्द बाक़ी थी। यह सुल्तान अय्यूबी का एक तबाहकुन तरीका था। दुश्मन कीरस्द को छापामारों से तबाह करा दिया करता था। उसके लिए उसने ऐसे फ़ौजी तैय्यार कर रखे थे जो जज़्बे के लिहाज़ से जुनूनी और ख़ब्ती थे। उनकी दिलेरी ग़ैर मामूली और ज़ेहानत ओस्त दरजा के सिपाहियों से ख़ासी ज़्यादा थी। उन जांबाज़ों की दयानतदारी का यह आलम था कि इतनी दूर जाकर भी जहाँ उन्हें देखने वाला कोई नहीं होता था वह फ़र्ज़ शनासी का जांबाज़ाना मुज़ाहिरा करते थे।

अल्नासिर ने रात को घोड़े वहीं बंधे रहने दिये जहां दिन को छिपाये थे। अपनी पार्टी को पैदल ले गया। एक जगह से वह दुश्मन की रस्द के पड़ाव में दाख़िल हो गया। उस ने सामान के अंबारों पर आतिशगीर मादा छिड़का आग लगा दी। अपनी टोली को बिखेर दिया। सिपाहियों ने शोलों की रौशनी में भागते दौड़ते सिपाहियों को तीर का निशाना बनाना शुरू कर दिया। दूश्मन के फ़ौजी उन्हें तलाश करने लगे। छापामार कबतक छुप सकते थे। एक--एक करके पकड़े और मारे गये। उनमें से वही तीन ज़िन्दा रहे जो अल्नासिर के साथ थे। उन्होंने बहुत तबाही मचाई थी। रस्द के साथ जो पहरेदार और दिगर लोग थे, उन्होंने उन सबको घेरे में लेने की कोशिश की। अल्नासिर ने अपने तीन साथियों को अलग न होने दिया। वह शोलों से दूर हटकर अंधेरे में घोड़ा गाड़ियों और ख़ेमों के ओट में छुपते, अपने क़रीब से गुज़रते सिपाहियों से बचते किसी और ही सिम्त को निकल गये।

अल्नासिर ने आसमान की तरफ़ देखा। उसे कोई सितारा नज़र न आया। छापामारों को सितारों से सिम्त मालूम करने की ट्रनिंग दी जाती थी मगर उस रात आसमान गर्दो ग़ुबार की तरह के बादलों में छिपा हुआ था। अल्नासिर रस्द के पड़ाव से दूर निकल गया। उसे दुश्मन की जलती हुई रस्द और साज़ों सामान के शोलों की सुर्ख़ी दिखाई दे रही थी। उसे मालूम नहीं था कि उसके बाक़ी नौ सिपाही ज़िन्दा हैं या शहीद हो चुके हैं। उसने दिल ही दिल में उनकी सलामती के लिए दुआ की और अपने तीन साथियों को साथ लिए अन्दाज़े के मुताबिक उस तरफ़ चल पड़ा जहां उसकी टोली के घोड़े बंधे हुए थे। वह रात भर चलता रहा। दुश्मन की रस्द के शोले नज़रों से ओझल हो गये। फ़िज़ा में शोलों की जो सुर्ख़ी नज़र आती थी वह

ग़ायब हो गयी। अगर यह सुर्ख़ी नज़र आती तो वह अपने ठिकाने तक पहुंच सकता था यह भी न रही और वह अंधाधुंध चलता गया।

ज़मीन के ख़दोख़ाल बदल गये थे। दरख़्त तो कोई था ही नहीं। उसने पांव तले सख़्त ज़मीन की बजाए रेत महसूस की। टीले और चट्टाने भी नहीं थी। रेते उसके और उसके साथियों के पांव वज़नी कर दिए पानी और खाने की इश्यिां घोड़ों के साथ थैलों मे बंधी थी और घोड़े न जाने कहाँ थे। उसने प्यास महसूस की। वह बहुत थक गया था। उसके तीनों साथी भी प्यास की शिकायत कर चुके थे। उन सबकी रफ़्तार भी ख़त्म होती जा रही थी। अल्नासिर ने वहीं रूक जाना और आराम कर लेना मुनासिब समझा। उसके साथियों ने इस उम्मीद पर चलते रहने का मश्वरा दिया कि कहीं पानी मिल जायेगा। इस ख़ित्ते में पानी की किल्लत नहीं थी लेकिन वह इस ख़ित्ते के उस ख़ित्ते में जा निकले जो रेगज़ार था। वहाँ पानी का नाम व निशान नहीं था। वह कुछ देर और चले और थक हार कर बैठ गये।

❖

अल्नासिर की आँख खुली तो उसके तीनों सिपाही बेहोशी की नींद सोये हुए थे। सूरज उफ़क़ से उठ आया था। अल्नासिर ने चारों तरफ़ देखा। वह रेत के समन्दर में खड़ा था। उसका दिल डूबने लगा। वह तो सेहराओं में जना पला और सेहराओं में उसने लड़ाइयां लड़ी थीं। वह रेगज़ार से डरने वाला नहीं था। उसकी घबराहट की वजह यह थी कि उसे तवक्क़ो नहीं थी कि यहाँ रेगिस्तान होगा। घबराहट की वजह यह भी थी कि उफ़क़ तक पानी के कोई आसार नज़र नहीं आते थे। प्यास से वह हलक़ में जलन और चुभन महसूस कररहा था। अपने साथियों की हालत का वह अन्दाज़ा कर सकता था। उसने सूरज के मुताबिक़ उस सिम्त देखा जिधर तुर्कमान था। उसे पहाड़ियों की टेढ़ी सी लकीरें नज़र आयी। वह सीधा उस सिम्त नहीं जा सकता था क्योंकि रास्ते में दुश्मन की फ़ौज थी।

उसने अपने साथियों को जगाया। वह उठे तो उनके चेहरों पर भी घबराहट और तज़—बज़ुब के आसार पैदा हो गये।

"हम दो दिन और भूखे और प्यासे रह सकते हैं।" उसने अपने साथियों से कहा— "और इन दो दिनों में हम मंज़िल तक न पहुंच सके तो पानी तक ज़रूर पहुंच जायेंगे।"

तीनों ने अपने अपने ख़्याल और अन्दाज़े का इज़हार किया मगर वह बहुत दूर निकल गये थे। अगर उनके पास घोड़े होते तो मुश्किल ज़रा आसान हो जाती। नींद ने उनके जिस्मों को कुछ ताज़गी दे दी थी।

"साथियों!" अल्नासिर ने कहा— "ख़ुदाए ज़ुलजलाल ने हमें जिस इम्तेहान में डाल दिया है उसमें पूरा उतरना और कोई गिलाशिकवा न करना हमारा फ़र्ज़ है।"

"यहाँ रूके रहना कोई इलाज नहीं।" एक साथी ने कहा— "पेश्तर इसके कि सूरज हमारे सरों पर आकर हमें जलाने लगे, चल पड़ो। अल्लाह रास्ता दिखायेगगा।"

वह चल पड़े। सिम्त का उन्होंन महज अन्दाज़ा किया था। उन्हें दूर का चक्कर भी काटना था। सूरज उपर आता रहा। रेत गर्म होती गयी और थोड़ी दूर यूं नज़र आता जैस यह रेत

नहीं पानी हो। ज़मीन से लरज़ता हुआ धुंआ सा उपर को उठ रहा था। वह चारों सेहरा के कहर से वाकिफ थे और आदी भी। उन्हें सिराब भी नज़र आने लगे मगर सेहरा के इस धोखे से वाकिफ होने की बदौलत उन्होंने हर सिराब को नज़र अन्दाज़ किया।

"साथियों!" अल्नासिर ने कहा– "हम डाकू नहीं हैं। अल्लाह हमें सज़ा नहीं देगा। अगर हम मर गये तो यह मौत नहीं शहादत होगी। दिल में ख़ुदा को याद करते चलो।"

"अगर कोई ऐसा मुसाफिर मिल गया जिसके पास पानी हो तो मैं डाका डालने से गुरीज़ नहीं करूंगा।" एक सिपाही ने कहा।

सब हंस पड़े और सबने महसूस किया कि हंसने के लिए भी उन्हें ताकत सर्फ़ करनी पड़ी थी......फिर सूरज उनके सरों पर आ गया। ऊपर से सूरज और नीचे से रेत उन सबको जलाने लगी। अल्नासिर एक जंगी तराना गुनगुनाने लगा। तराना ख़त्म हो गया तो उन्होंने एक आवाज़ और एक लै में लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह का तरन्नुम के साथ विर्द शुरू कर दिया। हल्की हल्की हवा चल रही थी। रेत के चमकते हुए ज़र्रे उनके नुकूश को मिटाते जा रहे थे।

सूरज दूसरी सिम्त नीचे उतरने लगा। चारों की आवाज़ धीमी होती जा रही थी। कदम वज़नी और रफ़तार घट गयी थी। होंठ ख़ुश्क हो गये और मुंह बन्द नहीं होते थे। उनके साये जब दूसरी तरफ़ बढ़ने लगे तो उनका एक साथी ख़मोश हो गया। कुछ देर बाद दूसरे की भी ज़ुबान जवाब दे गयी। अल्नासिर और उसके तीसरा साथी सरगोशियों में लाइलाह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह का विर्द कर रहे थे। कुछ दूर गये तो सरगोशियां भी ख़ामोश हो गयीं।

"साथियों!" अल्नासिर ने जिस्म की बची खुची ताकत सर्फ़ करके कहा– "हौंसला न हारना। हमारे जिस्मों में ईमान की बहुत नमी है। हम ईमान की ताकत से ज़िन्दा रहेंगे।" उसने अपने साथियों के चेहरों को बारी–बारी देखा। वहाँ ख़ून का नाम व निशान नहीं था। सबकी आंखें अन्दर चली गयी थीं।

सूरज गुरूब हो गया। ज्यों–ज्यों शाम तारीक हो ती गयी, रेत ठंडी होती गयी। अल्नासिर ने साथियो को रूकने नहीं दिया। ख़ुन्की में ज़रा तेज़ चला जा सकता था। अगर वह कोई आम मुसाफ़िर होते तो कभी के गिर चुके होते। वह फौजी और छापामार थे। उनके जिस्म आम जिस्म के इन्सानों की निस्बत ज़्यादा अज़ीयतें बर्दाश्त कर सकते थे। वह चलते गये और कुछ फासिला तय करके अल्नासिर ने उन्हें रूकने और सो जाने को कहा।

सुबह काज़िब के करीब अल्नासिर जागा। आसामान साफ था। सितारों को देखकर उसने अन्दाज़ा किया कि रात कितनी रहती है। एक सितारे को देखकर उसने सिम्त तय की और अपने साथियों को जगाकर उन्हें साथ लिया और सब चल पड़े। उनकी रफ़तार अच्छी थी मगर प्यास उन्हें बोलने नहीं दे रही थी।

"यह रेगिस्तान इतना वसीअ नहीं हो सकता।" अल्नासिर ने बड़ी मुश्किल से यह अलफ़ाज़ ज़ुबान से निकाले– "आज ख़त्म हो जायेगा। हम आज पानी तक पहुंच जायेंगे।"

पानी जो दिन को सिराब था अंधेरे में उम्मीद बन गया और वह उस उम्मीद की ताकत पर चलते गये। सुबह का उजाला सुपेद हुआ फिर उफ़क़ से सूरज उभरा। उन जांबाज़ मुसाफ़िरों को सबसे पहला सद्मा यह हुआ कि पानी की उम्मीद दम तोड़ गयी। रेत तो नहीं थी, ज़मीन सख़्त थी। उसमें दरारें पड़ी हुई थीं। यह फ़टी–फ़टी ज़मीन थी। पांव की जहाँ ठोकर लगती थी, वहां से रेत और मिट्‌टी उड़ती थी। आठ दस मील दूर ज़मीन से उभरे हुए सतून और मिनार से नज़र आते थे। यह मिट्‌टी के टीले और रेतीली चट्‌टानों की चोटियाँ थीं। दरख़्त एक भी नज़र नहीं आता था। ज़मीन की हालत बताती थी कि सदियों से प्यासी है और यह किसी इन्सान का ख़ून पीने से गुरीज़ नहीं करेगी।

अल्नासिर ने अपने साथियों के चेहरों का जायज़ा लिया। उसे अन्दाज़ा हो गया कि उसके अपने चेहरे की हालत कैसी है। उसके एक साथी की ज़ुबान कुछ बाहर निकल आई थी। होंठों पर हल्की–हल्की सूजन थी। यह अलामतें ख़ौफ़नाक थीं। सेहरा ने ख़िराज वसूल करना शुरू कर दिया था। सुल्तान अय्यूबी के इस जांबाज़ का ख़ून प्यासी ज़मीन की भेंट चढ़ने लगा था। दूसरे दो सिपाहियों की ज़ाहिरी हालत यह तो नहीं थी लेकिन साफ़ नज़र आ रहा था कि मीनारों जैसे टीलों तक नहीं पहुंच सकेंगे। अल्नासिर उनका कमाण्डर था। अपनी ज़िम्मेदारी का उसे इतना ज़्यादा एहसास था कि उसका दिमाग़ उस के क़ाबू में था। उसकी जिस्मानी हालत अपने साथियों से बेहतर नहीं थी। उसने बोलने की कोशिश की यह उसकी क़ुव्वते इरादी थी कि उसके मुंह से चन्द अल्फ़ाज़ निकल आये। उसने अपने साथियों का हौसला बढ़ाने की कोशिया की मगर यह एक नाकाम कोशिश थी।

ज्यों ज्यों सूरज ऊपर उठता आ रहा था ज़मीन के ग़ैर मरई शोले बुलन्द होते जा रहे थे। उन चालों की रफ़्तार का अब यह हाल था कि वह क़दम उठाते नहीं पांव घसीटते थे। जिस सिपाही की ज़ुबान बाहर निकल आई थी उसकी बरछी उसके हाथ से गिर पड़ी। फिर उसने कमर बन्द से तलवार खोली और फेंक दी। उसने यह हरकात बेख़्याली में की थी। उसके हाथ अपने आप काम कर रहे थे और वह नाक की सीध में चला जा रहा था। यह सेहरा का एक ज़ालिमाना असर होता है कि भटका हुआ प्यासा मुसाफिर नींद में मुख़्तलिफ़ हरकात करने के अन्दाज़ से अपने जिस्म से बोझा फेंकना शुरू कर देता है। मुख़्तलिफ़ अशिया फेंकने के बाद वह अपने जूते भी उतार फेंकता है। वह कहीं रूकता नहीं चलता जाता और चीजें फेंकता जाता है। सेहराई मुसाफिर जगह–जगह ऐसी ईशियां देखते हैं तो वह इस तवक्को पर आगे बढ़ते हैं कि कुछ दूर आगे एक लाश पड़ी होगी या उस बदनसीब की हड्डियों का ढांचा पड़ा होगा जो रास्ते में अपनी आख़िरी मताअ बिखेरता गया है।

सेहरा ने अल्नासिर के एक साथी को इस मरहले में दाख़िल कर दिया था जहँ वह दुनिया की इशिया और अपने फराइज़ से दस्तबरदार हो रहा था। अल्नासिर ने उसकी बरछी और तलवार उठाली औरउस सिपाही से बड़े प्यार से बोला– "इतनी जल्दी न हारो मेरे अजीज दोस्त! अल्लाह का सिपाही मर जाता है, हथियार नहीं फेंका करता। अपनी इज़्ज़त और अज़मत को रेत में न फेंको।"

उसके साथी ने उसे देखा। अल्नासिर उसे देखता रहा। सिपाही ने अचानक कहकहा लगाया और सामने देखते हुए हाथ से इशारा किया। बड़ी जानदार आवाज़ में बोला– "पानी. .....वह देखो.......बाग़........पानी मिल गया।" ....और वह आगे को दौड़ पड़ा।

वहाँ पानी था न पानी का सराब। वह ज़मीन ऐसी थी जहाँ सिराब नज़र नहीं आया करते। सराब रेते की चमक का होता है। उस पर सेहरा का दूसरा ज़ालिमाना हम्ला होने लगा था। यह थे वाहमें और ऐसे तसव्वुरात जो हकीकी रूप में दिखाई देते हैं। पानी की झीलें और बाग़ नज़र आते हैं। ईमारतें दिखाई देती हैं। यूं भी नज़र आता है जैसे एक दो मील दूर शहर है। काफिले जाते या अपनी तरफ़ आते दिखाई देते हैं। नाचने और गाने वगलियाँ भी नज़र आती हैं........इस बेरहम वीराने ने अल्नासिर के एक साथी को फ़रेब देने शुरू कर दिए थे। सेहरा उस की जान से खेलने लगा था। यह शायद सेहरा की रहम दिली भी है कि किसी मुसाफिर की जान लेने से पहले उसे बड़ी ही हसीन और दिलफरेब तसव्वुरों में उलझा देता है ताकि मरने वाला अज़ीयत से महफ़ूज़ रहे।

अल्नासिर का साथी आगे को दौड़ पड़ा। वही सिपाही जो क़दम घसीट रहा था ताज़ा आदमी की तरह दौड़ रहा था मगर यह दौड़ उसकी उस चिराग़ की मानिन्द थी जो बुझने से पहले आख़िरी बार टिमटिमाया हो। अल्नासिर उसके पीछे दौड़ा और उसे पकड़ लिया। उसके दूसरे दो साथियों में अभी कुछ दम बाकी था। वह भी दौड़े और अपने साथी पर काबू पा लिया। वह उन से आज़ाद होने को तड़प रहा था औ चिल्ला रहा था– "चलो झील तक चलो। वह देखो, कितने ग़ज़ाल झील से पानी पी रहे हैं।"

साथियों ने उसे पकड़े रखा और वह आहिस्ता–आहिस्ता क़दम घसीटते चलते गये। अल्नासिर ने वह कपड़ा जो उसके सर पर रखा था उसके चेहरे पर डाल दिया ताकि वह कुछ देख ही न सके।

❖

सूरज सर के ऐन ऊपर आ गया था जब एक और सिपाही ने बड़ी ही बुलन्द आवाज़ से कहा– "बाग़ में रकासा नाच रही है। लानत भेजो पानी पर। चलो नाच देखें। हुस्न देखो..... चलो दोस्तो! वहाँ पानी मिल जायेगा। लोग खाना खा रहे हैं। मैं सबको जानता हूँ.......चलो. ....चलो।" और वह दौड़ पड़ा।

जिस सिपाही को पहले वाहिमा नज़र आया था वह कुछ देर ख़ामोश रहा था इसलिए साथियों ने उसे छोड़ दिया था वह अपने साथी को दौड़ता देखकर उसके पीछे दौड़ पड़ा और चिल्लाने लगा– "रक़ासा बहुत ख़ुबसूरत है। मैंने उसे क़ाहिरा में देखा था। वह मुझे जानती है। मैं उसके साथ खाना खाऊँगा। उसके साथ शरबत पिउँगा।"

अल्नासिर का सर डोल गया। वह सेहरा की सऊबतें बर्दाश्त कर सकता था, अपने साथियों की यह हालत उसकी बर्दाश्त से बाहर थी। उन्हें संभालना उसके बस से बाहर हुआ जा रहा था। उसकी अपनी जिस्मानी हालत भी ख़राब हो गयी थी। उसके साथ अब एक साथी रह गया था जिसका दिमाग़ अभी ठिकाने था। जिस्मानी लिहाज़ से वह बेशक ख़त्म हो चुका

था।

उनके जो दो साथी बाग़ और रक़्स के वाहिमे के पीछे दौड़े थे, चन्द क़दम दौड़ कर गिर पड़े। उन्हें गिरना ही था। उनके जिस्मों में रहा ही क्या था। अल्नासिर और उसके साथी उन्हें बैठाकर अपने सहारे ले लिया और उन पर कपड़ों का साया कर दिया। उनकी आंखे बन्द हो गयी थीं और सर डोल रहे थे।

"तुम अल्लाह के सिपाही हो।" अल्नासिर ने धीमी सी आवाज़ में कहना शुरू किया– "तुम किब्ला अव्वल और ख़ाना काबा के पासबां हो। तुम ने इस्लाम के दुश्मनों की कमर तोड़ी है। तुम से कुफ़्फ़ार डरते और कांपते हैं। तुम शोलों को रौंदने वाले मर्दे मोमिन हो। इस सेहरा को, प्यास को और सूरज के क़हर को तुम क्या समझते हो। तुम पर अल्लाह की रहमत बरस रही है। तुम्हें फरिश्ते बहिश्त की ठंडक पहुंचा रहे हैं.....तुम्हारा जिस्म प्यासा है रूह प्यासी नहीं। इमान वाले पानी की ठंडक से नहीं इमान की हरारत से ज़िन्दा रहते हैं।"

दोनों ने आंखें खोल दीं और अल्नासिर को देखा। अल्नासिर ने मुस्कुराने की कोशिश की। उसने जज़्बात के ग़ल्बे से जो बातें कही थीं वह असर कर गयीं। वह दोनों सिपाही तसव्वुरों और वाहिमों की दुनिया से निकल कर हक़ीक़त में आ गये। वह उठे और निहायत आहिस्ता आहिस्ता चल पड़े।

सुबह रवांगी के वक़्त उन्हें टीलों और रेतीली चट्टानों के जो सुतून नज़र आये थे वह क़रीब आ गये थे। अब वह बहुत बड़े–बड़े हो गये थे। उम्मीद रखी जा सकती थी कि वहाँ पानी होगा। वहाँ नशीब और खडनाले भी हो सकते थे। अल्नासिर ने अपने साथियों से कहा कि वह पानी के क़रीब आ गये हैं और आज शाम से पहले पानी मिल जाएगा, मगर वह ज़मीन और वह माहौल ऐसी गर्म हक़ीक़त थी कि पानी की उम्मीद शबनम के क़तरे की तरह उड़ गयी। वह टीलों और टेकरियों के और क़रीब चले गये। अचानक एक सिपाही दौड़ उठा। वह नारे लगा रहा था मेरा गांव आ गया है। मैं सबके लिए खाना पकवाने जा रहा हूं। कुंवे से मेरे गांव की लड़कियाँ पानी निकाल रही हैं।"

उसके पीछे दूसर सिपाही दौड़ पड़ा और चिल्लाने लगा– "मुर्ग़ाबियाँ.......मुर्ग़ाबियाँ दौड़ते–दौड़ते मुंह के बल गिरे और हाथ से मिट्टी और रेत उठाकर मुंह में डाल ली।

अल्नासिर और उसका तीसरा साथी दौड़े। उसके मुंह से मिट्टी निकाली। कपड़े से मुंह साफ किया और उसे उठाया, मगर वह चलने के काबिल नहीं था। दुसरा सिपाही भी गिर पड़ा था और पेट के बल रेंगते हुए कह रहा था– "कुंवे से पानी पीलूं फिर तुम्हारे लिए खाना पकवाऊँगा।"

अल्नासिर ने अपने हाथ दुआ के लिए उठाये और आसमान की तरफ मुंह करके कहा– "ऐ ख़ुदाए ज़ुलजलाल! हम तेरे नाम पर लड़ने और मरने आए थे। कोई गुनाह नहीं किया। कहीं डाका नहीं डाला। अगर कुफ़्फ़ार से लड़ना गुनाह है तो हमें बख़्श दे, बख़्श दे सेहराओं को आग लगाने वाले ख़ुदा! मेरी जान ले ले। मेरे ख़ून को पानी बना दे। मेरे साथी पीकर जिन्दा रहें। इन्होंने तेरे रसूल के किब्ला अव्वल के ग़ासिबों के ख़िलाफ लड़ाई लड़ी है। मेरे

ख़ून को पानी बना और इन्हें पिला दे।"

उसके साथ आहिस्ता आहिस्ता उठे और हाथ आगे फैलाकर यूं चलने लगे जैसे उन्हें कुछ नज़र आ रहा हो जिस तक वह पहुंचना चाहते हों। अल्नासिर और उसके साथी ने जो ज़ेहनी लिहाज से अभी ठीक था अपने साथियों को देखा तो वह भी क़दम घसीटने लगे। उस वक़्त अल्नासिर की आँखों के आगे अंधेरा आया और छट गया जैसे स्याह घटा का टुकड़ा चाँद के आगे से गुज़र गया है। अंधेरा गुज़र जाने के बाद उसे यूं महसूस हुआ जैसे उसे सब्ज़ ज़ार नज़र आया हो मगर उसके सामने टीलों और चट्टानों के मीनार और सुतून थे। उसने एक लम्हे के लिए सब्ज़ा देखा ज़रूर था। उसने अपने आप को संभाल लिया। वह समझ गया कि सेहरा उसे भी फरेब देने लगा है।

❖

वह टीलों के अन्दर जा रहे थे। यह टीले चौड़े थे। कोई ऊंचा नहीं था। कहीं–कहीं कोई रेतीली चट्टान भी नज़र आती थी। वह और आगे गये तो किसी नदी या दरिया का ख़ुश्क पाट आ गया। साफ पता चलता था कि सदियों से यहाँ से पानी नहीं गुज़रा।

अल्नासिर आगे–आगे और उसके साथी उसके पीछे–पीछे जा रहे थे। अल्नासिर चलते–चलते रुक गया। उसने अपने सर को ज़ोर से झटका दिया, मगर उसे जो कुछ दिखाई दिया था वह बदस्तूर नज़र आता रहा– "ख़ुश्क पाट के बायें किनारे पर रेतीली चट्टान थी जो उपर ज़ाकर आगे को झुक आयी थी। शायद एक दो नदियों पहले उसके दामन से पानी टकराता रहा था। वहाँ से यह पानी की मारी हुई थी। उसकी शकल बरामदे की सी बनी हुई थी। छत खासी ऊंची थी और वहाँ साया था। उस साये में दो घोड़े खड़े थे और उनके करीब दो जवान लड़कियाँ बैठी हुइ थीं। वह उठ खड़ी हुई। उनके रंग गोरे और नक़्श व निगार दिलकश थे।

अल्नासिर ने उनसे दूर रुककर अपने साथियों से पूछा– "तुम्हें भी वह लड़कियाँ और घोड़े नज़र आ रहे हैं?"

उसके वह दो साथी जो वाहिमों और तसव्वुरों के शिकार हो चुके थे ख़ामोश रहे। एक ने कहा– "धुंध है। कुछ भी नज़र नहीं आ रहा है।" और वह गिर पड़ा।

उसका साथी जो ज़ेहनी लिहाज से अभी ठीक था, सरगोशी में बोला– "मैं उन्हें देख रहा हूं।"

"अल्लाह हम पर रहम करे।" अल्नासिर ने कहा– "हम दोनों के भी दिमाग़ ग़ायब हो गये हैं। हमें भी वह चीज़ें नज़र आने लगी हैं जो हक़ीक़त में नहीं हैं। जहन्नम के इस वीराने में इतनी ख़ूबसूरत लड़कियाँ नहीं आ सकतीं।"

"अगर उनका लिबास सेहराई ख़ानाबदोश जैसा होता तो हम कह सकते थे कि यह तसव्वुर नहीं हक़ीक़त है।" उसके साथी ने कहा– "आगे चलें साये में बैठ जाते हैं। यह लड़कियां नहीं हमारे ज़ेहनों का फ़तूर है।'

"मगर मैं होश में हूँ।" अल्नासिर ने कहा– "मैं तुम्हें पहचान रहा हूँ। तुम्हारी बात समझ

गया हूँ। मेरा दिमाग़ मेरे काबू में है।"

"मैं भी होश में हूं।" उसके साथी ने कहा– "अगर हम हकीकत में लड़कियां देख रहे हैं, तो जिन्नात होंगे।"

लड़कियाँ इस तरह बेहरकत खड़ी उन्हें देख रही थीं जैसे बुत हों। अल्नासिर दिलेर आदमी था। वह आहिस्ता–आहिस्ता उनकी तरफ़ बढ़ा। लड़कियाँ ग़ायब न हुईं। वह उन से चार पाँच क़दम दूर था जब एक लड़की ने जो दूसरी से उम्र में बड़ी लगती थी दायां बाज़ू अल्नासिर की तरफ़ किया। लड़की की मुट्ठी बन्द थी। उसने शहादत की उंगली और दर्मियानी उंगली आगे को कर दी। अल्नासिर रूक गया। उसने इतनी ख़ूबसूरत लड़कियाँ पहले कभी नहीं देखी थीं। सर की ओढ़नी से उनके जो बाल शानू पर पड़े नज़र आ रहे थे वह बारीक रेशम के तारे लगते थे। वह दोनों लड़कियों की आँखें का रंग भी दिलकश और अजीब था। आँखें हीरों की तरह चमकती थीं।

"तुम सिपाही हो।" बड़ी लड़की ने कहा– "किस के सिपाही हो?"

"सब कुछ बताउँगा।" अल्नासिर ने कहा–"मुझे यह बतादो कि तुम सेहरा का धोखा हो या जिन्नात की मख़्लूक़ से हो।"

"हम जो कुछ भी हैं, तुम बताओ कौन हो और इधर क्या करने आये हो।" लड़की ने पूछा– "हम सेहरा का फ़रेब नहीं। तुम हमें देख रहे हो, हम तुम्हें देख रही हैं।"

"हम सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के छापामार सिपाही हैं।" अल्नासिर ने कहा– "रास्ता भूल कर इधर आ निकले हैं। अगर तुम जिन्नात में से हो तो तुम्हें हज़रत सुलैमान का वास्ता, मेरे इन साथियों को पानी पिलादो और उसके एवज़ मेरी जान ले लो। यह मेरी ज़िम्मेदारी में हैं।"

"अपने हथियार हमारे आगे फेंक दो।" लड़की ने अपना बाज़ू नीचे करते हुए कहा– "हज़रत सुलैमान के नाम पर मांगी हुई चीज़ से हम इन्कार नहीं कर सकते। अपने साथियों को साये में ले आओ।"

अल्नासिर ने अपने वजूद में एक लहर दौड़ती महसूस की जैसे सर से दाख़िल हुई और पांव से निकल गयी हो। वह इन्सानों का मुकाबिला करने वाला जांबाज़ था। उसके शबख़ून उसके साथियों को हैरान कर दिया करते थे मगर उन लड़कियों के आगे वह बुज़्दिल बन गया था। उसके दिल पर ऐसे ख़ौफ की गिरफ़्त थी जो उसने कभी महसूस नहीं की थी। वह जिन्नात की कहानियां सुनता रहा था, जिन्नात से कभी आमना सामना नहीं हुआ था। उसे हर लम्हा तवक्को थी कि यह दो लड़कियां और दो घोड़े ग़ायब हो जाएंगे या शकलें बदल लेंगे। उनके ख़िलाफ़ वह कुछ नहीं कर सकता था। वह बेबस और मजबूर हो गया। उसने अपने साथियों से कहा कि वह साये में चलें। उनमें से एक तो बेहोश पड़ा था। उसे घसीट कर साये में ले गये।

"अपने मुतअल्लिक बताओ कि तुम क्या करके आये हो।" लड़की ने पूछा।

"पानी पिलाओ।" अल्नासिर ने इल्तिजा की– "सुना है जिन्नात हर चीज़ हाज़िर कर

दिया करते हैं।"

"घोड़ों के साथ मश्कीज़े हैं। लड़की ने कहा– "एक खोल लो।"

अल्नासिर ने एक घोड़े की ज़ीन के साथ बंधा हुआ मश्कीज़ा खोला। पानी से भरा हुआ था। उसने सबसे पहले बेहोश साथी के मुंह में पानी टपकाया। उसने आंख खोली और उठ बैठा। अल्नासिर ने मश्कीज़ा उसके मुंह से लगा दिया लेकिन उसे ज़्यादा पानी न पीने दिया। बारी बारी सबने पानी पी लिया। अल्नासिर का दिमाग़ साफ़ हो गया। उसने सोंचा कि यह लड़कियाँ तसव्वुर या वाहिमा होता तो दिमाग़ में जान आ जाने से यह वाहिमा ग़ायब हो जाता लेकिन लड़कियाँ वहाँ मौजूद थीं और सबसे बड़ी हकीकत यह थी कि उसने पानी पीया था। अगर पानी महज तसव्वुर होता तो उससे उसके जिस्म में ताज़गी न आती। उसने लड़कियाँ को एक बार फिर देखा और बड़ी ग़ौर से देखा। अब वह उसे और ज़्यादा हसीन नज़र आयीं। वह यकीनन इन्सान नही थीं।

अल्नासिर की ज़ेहनी, जज़्बाती और जिस्मानी कैफ़ियत यह थी कि उसे अपने ऊपर कोई इख़्तियार नही रहा था। वह महसूस कर रहा था कि वह अपनी मर्ज़ी से सोंचने के काबिल नहीं रहा। उसके साथियों के चेहरों पर ज़िन्दगी ऊद कर आई थी। यह उस थोड़े से पानी का करिश्मा था जो उनके जिस्मों में आ गया था मगर अल्नासिर की तरह उन पर भी ख़ौफ तारी हो गया था। लड़कियां उन्हें ख़ामोशी से देख रही थीं। बाहर की दुनिया जल रही थी। ज़मीन ऐसे शोले उगल रही थी जो महसूस होते थे, नज़र नहीं आते थे लेकिन जहां यह लोग बैठे थे, वह उन शोलों से महफ़ूज़ थे। ऊपर रेतीली चट्टान की छत थी और जगह ख़ासी कुशादा थी।

❖

बड़ी लड़की ने बाज़ू अल्नासिर की तरफ़ बढ़ाया। दर्मियानी उंगली और शहादत की उंगली आगे करके बाज़ू को घोड़ों की तरफ घूमाकर कहा– "वह थैला खोल लाओ और अपने साथियों को दो।"

अल्नासिर ऐसे अन्दाज़ से घोड़े की ज़ीन के साथ बंधा हुआ चमड़े का थैला खोल लाया जैसे उसने यह हरकत किसी जादू के जेरे असर किया हो। उसने थैला खोला तो उसमें ख़जूरों के अलावा खाने की कुछ ऐसी चीज़ें पड़ी थीं जो सिर्फ़ अमीर लोग खाया करते थे। ख़ुश्क गोश्त भी था जो खाने के काबिल था। उसने लड़कियों को देखा। बड़ी लड़की ने कहा– "खाओ।" अल्नासिर ने यह चीज़ें अपने साथियों में तकसीम कर दीं। इन सबके पेट पीठ से लगे हुए थे। उन्होंने खाना शुरु कर दिया। खाना मिक्दार के लिहाज से थोड़ा था जो बज़ाहिर एक आदमी के लिए काफ़ी था लेकिन चारों सेर हो गये। उन्हें माहौल निखरा हुआ दिखाई देने लगा। लड़कियों का हुस्न पहले से कहीं ज़्यादा पुरकशिश और पुरअसरार हो गया।

"तुम हमारे साथ क्या सलूक करोगी?" अल्नासिर ने लड़की से कहा– "जिन्न और इन्सान का कोई मुकाबला नहीं। तुम आग हो, हम मिट्टी और पानी हैं। हम सबका ख़ालिक

ख़ुदा है। हमें अपने ख़ालिक की मख़्लूक समझकर हमपर रहम करो। हमें तुर्कमान के रास्ते पर डाल दो। तुम चाहो तो पलक झपकते हमें तुर्कमान पहुंचा सकती हो।"

"तुम कहीं शबख़ून मारने गये थे?" बड़ी लड़की ने पूछा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी के छापामार भी जिन्न होते हैं। हमें बताओ कि तुम कहाँ गये थे और क्या करके आये हो।"

अल्नासिर ने उसे अपनी तमाम कारगुज़ारी सुना दी। उसकी टोली ने जिस दिलेरी से शबख़ून मारे और जो नुक़सान किया था वह पूरी तफ़सील से सुनाया, फिर यह बताया कि वह किस तरह वापसी के रास्ते से भटक गया हैं।

"तुम अपने सिपाहियों से बेहतर सिपाही मालूम होते हो।" लड़की ने कहा– "क्या तुम्हारी फ़ौज का हर एक सिपाही यह काम कर सकता है जो तुमने किया है?"

"नहीं।" अल्नासिर ने जवाब दिया– "हम चारों को तुम इन्सान न समझो। हमें उस्तादों ने जो तरबियत दी है वह हर एक सिपाही बर्दाश्त नहीं कर सकता। हम सेहराई हिरन की तरह दौड़ सकते हैं। उक़ाब की तरह हमारी आँखे बहुत दूर तक देख सकती हैं और हम चीते की तरह हम्ला करते हैं। हम में से किसी ने भी चीता नहीं देखा। उस्तादों ने बताया था कि चीता क्या होता है और किस तरह हम्ला करता है। इस जिस्मानी फुर्ती के अलावा हमारे दिमाग़ दूसरे सिपाहियों की निस्बत ज़्यादा अच्छी तरह सोंच सकते हैं। हमें उस्तादों ने यह हुनर भी सिखाया है कि दुश्मन के मुल्क में जाकर फ़ौजी राज़ किस तरह हासिल किये जाते हैं। हम भेस बदल लेते हैं। आवाज़ बदल लेते हैं। अंधे बन सकते हैं। ज़रूरत पड़े तो हम आंसू बहा सकते हैं और जब पकड़े जाने का ख़तरा हो तो हम अपनी ज़िन्दगी से दस्तबरदार होकर लड़ते हैं और निकलने की कोशिश करते हैं। हम क़ैद नहीं होते शहीद हुआ करते हैं।"

"अगर हम जिन्न होतीं तो तुम हमारे साथ क्या सलूक करते?" लड़की ने पूछा।

"तुम यक़ीन नहीं करोगी।" अल्नासिर ने कहा– "हम वह पत्थर हैं जिन्हे औरत का हुस्न तोड़ नहीं सकता। मुझे यक़ीन हो जाए कि तुम इन्सान हो और पता चल जाए कि रास्ते से भटक गयी हो तो तुम दोनों को अपनी पनाह में ले लूंगा और अपने इमान कीतरह क़ीमती समझूंगा, मगर तुम इन्सान नहीं हो। तुम्हारी हालत बता रही है कि तुम इन्सान नहीं हो। तुम जैसी लड़कियाँ इस जहन्नम में नहीं आ सकतीं। अब मैं तुमसे इल्तिजा करता हूँ कि हमें पनाह में लेलो।"

"हम इन्सानों के मख़्लूक़ से नहीं।" लड़की ने कहा– "हमें मालूम था तुम क्या कर रहे हो। हमें मालूम था कि तुम रास्ते से भटक गये हो। अगर तुम गुनहगार होते तो जिस सेहरा से तुम गुज़र कर आये हो वह तुम्हारा ख़ून पी जाता और तुम्हारे जिस्म के गोश्त को रेत बनाकर तुम्हारी हड्डियां नंगी कर देता। उस सेहरा ने भटके हुए गुनाहगारों को कभी नहीं बख़्शा। हम दोनों तुम्हारे साथ थीं। तुम्हें जो परेशानियां बर्दाश्त करनी पड़ी हैं वह इसलिए तुम पर डाली गयी हैं कि तुम ख़ुदा को भूल न सको और तुम्हारे दिल से गुनाह का ख़्याल और इरादा निकल जाए। हमें मालूम था कि हम जैसी ख़ूबसूरत लड़कियों को देखकर तुम भूख और प्यास को भूल जाओगे और तुम्हारे दिल पर शैतान का क़ब्ज़ा हो जाएगा।"

"तुम हमारे साथ क्यों रहीं?" अल्नासिर ने पूछा।

"हमे उसने भेजा है जो सेहराओं में रास्ता भूल जाने वाले नेक बन्दों को राह दिखाता है।" बड़ी लड़की ने कहा— "तुम पर ख़ुदा ने जो रहमत नाज़िल की है उसका तुम हिसाब नहीं कर सकते। उसने हमें कहा था कि मर्द नज़ाअ के आलम में भी शैतान के असर से आज़ाद नहीं होता। इस नापाक क़ब्ज़े से आज़ाद करने के लिए ख़ुदा ने तुम्हें अज़ाब में डाला है। फिर हमें हुक्म मिला कि इन के सामने आ जाओ और उन्हें पनाह में ले लो...हम जानते थे तुमने दुश्मन को किस तरह और कितना नुक़सान पहुंचाया है।"

"फिर मुझसे क्यों पूछा था?" अल्नासिर ने पूछा।

'यह देखने के लिए कि तुम कितना झूठ और कितना सच बोलते हो।" लड़की ने कहा— "तुम सच्चे हो।"

"हम झूठ नहीं बोला करते।" अल्नासिर ने कहा— "शबख़ून मारने वाले ख़ुदा को गवाह बनाया करते हैं।

अपनी फ़ौज और अपने सालारों की नज़रों से ओझल होकर हम इस हक़ीक़त को दिल में बैठा लेते हैं कि हमें ख़ुदा देख रहा है। हम ख़ुदा को धोखा नहीं दे सकते।" अल्नासिर ख़ामोश हो गया और पूछा— "तुमने मेरे इस सवाल का जवाब नहीं दिया कि हमारे साथ क्या सलूक करोगी।"

"जो हमें हुक्म मिला है उसके ख़िलाफ़ हम कुछ नहीं कर सकते।" लड़की ने जवाब दिया— "हमारा सलूक बुरा नहीं होगा.......हम देख रहे हैं कि तुम अब बोल नहीं सकते। तुम्हारे साथियों की आँखें बन्द हो रही हैं मगर तुम्हारे दिलों में जो ख़ौफ़ है वह तुम्हें सोने नहीं दे रहा। दिल से खौफ निकाल दो और सो जाओ।"

"फिर क्या होगा?" अल्नासिर ने पूछा।

"जो अल्लाह का हुक्म होगा।" लड़की ने जवाब दिया— "हम तुम्हें नुक्सान नहीं पहुंचा सकते। अगर भागने की कोशिश करोगे तो उन रेतीले सुतूनों की तरह सुतून बन जाओगे। तुम्हें दूर से यह सुतून नज़र आये होंगे। इनके ऊपर कोई छत नहीं। यह मीनार लगते हैं, असल में इन्सान हैं......इन्सान थे। हमें हुक्म नहीं कि तुम्हें दिखाऊं। अगर हुक्म होता तो किसी भी मीनार पर तुम जब तलवार की ज़रब लगाते तो उसमें से खून फूटता।"

अल्नासिर और उसके साथियों की आँखें खौफ से बाहर आने लगीं। उनकी सांसे रूक गयीं।

"यह रूये ज़मीन का जहन्नम है।" लड़की ने कहा— "इधर वही आता है जो राह से गुमराह हो जाता है और वह कि जो भूले भटके मुसाफिरों को रास्ता दिखाता और किसी को नज़र नहीं आया करता, उन्हें ग़ज़ाल जैसे ख़ूबसूरत जानवरों या हम जैसी ख़ूबसूरत लड़कियों के रूप आकर उन्हें राह पर डालता, पानी पिलाता और उन्हें इस दोज़ख़ की अज़ीयत से बचा लेता है मगर इन्सान गुनाहों का इतना शैदाई है कि ग़ज़ाल को देखता है तो उस पर तीर चलाता है कि उसे मारे और उसका गोश्त खाये, और जब हम जैसी लड़कियों को देखता है

तो उसे तन्हा और मजबूर समझकर उसे ऐश व ईशरत का ज़रिआ बनाने की कोशिश करता है। वह भूल जाता है कि उसका आख़िरी वक़्त आ पहुंचा है, वह लड़की से कहता है कि आओ मेरे साथ, तुम्हारे साथ शादी करूंगा। तुम मेरे हरम की मलिका होगी.....रेत और मिट्टी के यह बेढंगे और लम्बूतरे मीनार ऐसे ही आदमी थे। तुम इनमें शामिल नहीं होगे.....सो जाओ। अगर हमें देखकर तुम्हारे दिल में गुनाह अंगडाई ले तो उसे भी सुला देना, वरना तुम्हारा अन्जाम यही होगा जो तुम देख रहे हो। इन्सान की यह कमज़ोरी है कि जिस लज़्ज़त की वह पैदवार है उसी लज़्ज़त का शैदाई होकर तबाह होता है और बड़े बुरे अन्जाम को पहुंचता है। इन्सान की इस कमज़ोरी ने कौमों के नाम व निशान मिटा दिए हैं।"

लड़की के बोलने के अन्दाज़ में जादू का सा असर था। यह किसी पहलू इस दुनिया की नहीं थी। उसके सीने में एक मुक़द्दस पैग़ाम था। अल्नासिर और उसके साथियों पर तक़द्दस तारी हो गया और वह खुद फरामोशी के आलम में सुनते रहे। फिर वह ऊंघने लगे और एक-एक करके लुढ़क गये। चारों गहरी नींद सो गये तो बड़ी लड़की ने छोटी लड़की की तरफ़ देखा। दोनों मुस्कुरायीं और उन्होंने सुकून की लम्बी आह भरी।

❖

अल्नासिर को कुछ ख़बर नहीं थी कि जिस तरह उसका मिशन कामयाब हो चुका है उसी तरह उसकी फ़ौज भी एक ही हल्ले में अपने मिशन में कामयाब हो चुकी है। इत्तेहादी फौज को सुल्तान अय्यूबी बिखेर कर भगा चुका था। इत्तेहादी फ़ौज का सालारे आला सैफुद्दीन मैदाने जंग से लापता हो चुका था और अब सुल्तान अय्यूबी सैफुद्दीन के एक सालार मुज़फ़्फ़र-उद्दीन का इन्तज़ार कर रहा था। उसे ख़तरा महसूस हो रहा था कि अगर मुज़फ़्फ़र-उद्दीन मैदाने जंग में हुआ तो वह जवाबी हम्ला ज़रूर करेगा। सुल्तान अय्यूबी का अन्दाज़ा ग़लत नहीं था। मुज़फ़्फ़र-उद्दीन वहीं था। उसके पास उस फ़ौज का चौथाई हिस्सा था जो सुल्तान अय्यूबी के हम्ले की ताब न लाकर भाग चुकी थी। इस चौथाई हिस्से को जंग में शरीक होने का मौका ही नहीं मिला था यह शिकस्त ख़ुर्दा फ़ौज का महफ़ूज़ा था जो महफ़ूज़ था और सुल्तान अय्यूबी उसकी मौजूदगी से बेख़बर था। यह उसकी छटी हिस थी जो उसे बता रही थी कि ख़तरा अभी मौजूद है। उसने अपने जासूसों को मैदाने जंग के इर्द गिर्द दूर दूर तक फैला दिया था ताकि किसी भी जगह कोई फ़ौज हो उसकी इत्तेलाअ फ़ौरन पहुंचाएं।

वहां हर फ़ौजी के ज़ेहन में यही ख़्याल था कि सैफुद्दीन की फ़ौज मुकम्मल तौर पर ख़त्म हो चुकी है और यह सवाल ही पैदा नहीं होता था कि उस फ़ौज का कोई सिपाही या अफ़सर जिन्दा मौजूद होगा। इनमें से जो जिन्दा मौजूद थे, वह सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज की हिरासत में जंगी क़ैदी थे। पहले बताया जा चुका है कि यह ख़ित्ता ऐसा था जिस के ख़िद व ख़ाल कई कई दस्तों को एक-एक नशैब में, चट्टानों के झुरमुट में या जंगल में छुपा सकते थे। सुल्तान अय्यूबी के जासूसी निज़ाम को यही दुश्वारी पेश आ रही थी, हालांकि यह वह निज़ाम था जो दुश्मन के पेट में जाकर राज़ निकाल लाया करता था।

मुज़फ़्फ़र--उद्दीन ने मैदाने जंग से दो ढाई मील दूर ऐसी जगह अपने दस्ते छिपा रखे थे जो इस ख़ित्ते का नशीबी इलाका था। वहां जंगल भी था और इर्द गिर्द चट्टानें भी। वह अपने ख़ेमे में बैठा सुल्तान अय्यूबी पर हम्ले का मंसूबा बना रहा था। वह बहुत जल्दी में था। उसका एक नायब सालार ख़ेमें में दाख़िल हुआ। उसके साथ एक और आदमी था।

"कोई नयी ख़बर है?" मुज़फ़्र–उद्दीन ने पूछा।

"सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज में कोई तबदीली नहीं आयी।" नायब सालार ने कहा– "तफ्सील इससे सुन लो। यह सबकुछ देखकर आया है।"

यह आदमी जासूस था। उसने कहा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज ने अभी हमारी उस फौज का सामान नहीं उठाया जो भाग गयी है। ज़ख़्मियों को उठा ले गये हैं। लाशें भी उठा ली गयीं हैं। हमारी लाशों को भी वह अपनी लाशों के साथ अलग–अलग कब्रों में दफ्न कर रहे हैं।"

"मुझे उनकी ख़बर सुनाओ जो अभी जिन्दा हैं।" मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने कहा– "मरने वालों को कब्रों में उतरना है, वह उतर रहे हैं। क्या अय्यूबी ने अपनी फौज में कोई रद्दो बदल किया है? उसका दायां बाज़ू वहीं है या इधर उधर हो गया है?"

"काबिले सद एहतराम सालार!" जासूस ने कहा– "मैं सिपाही नहीं कमानदार हूँ। मैं जो ख़बर दे रहा हैं वह कुछ सोंच कर और कुछ समझ कर दे रहा हूं। मेरा मकसद यह नहीं कि आप को ख़ुश करूं और आपकी ख़फ़गी से डरूं। मेरा मकसद बिल्कुल आपही की तरह यही है कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़तह को शिकस्त में बदला जाए। आप कुछ जल्दी में मालूम होते हैं। जल्दी ज़रूर करें, जल्दबाज़ी से बचें। मैं जो कह रहा हूँ मुझे कहने दें। मुझे पाबन्द न करें। मैं जानता हूं कि आप की नज़र सलाहुद्दीन अय्यूबी के दायें पहलू पर है क्योंकि यही हदफ आप की आसान ज़द और रसाई में है मगर मैंने उसकी फ़ौज के दूसरे हिस्सों को यह पेशे नज़र रखकर देखा है कि हम उसके दायें पहलू पर हम्ला करेंगे, तो सुल्तान अय्यूबी फ़ौज के दूसरे हिस्सों को किस तरह इस्तेमाल करेगा।"

वह हमें घेरे में लेने की कोशिश करेगा।" मुज़फ़रुद्दीन ने कहा– "घेरा वसीअ रखेगा। हमें घूमाये फिरायेगा और घेरा तंग करता जायेगा। मैं उसके चालों के मुतल्लिक पेशगोई कर सकता हूँ।"

सलाहुद्दीन अय्यूबी ने महफूज़ा के उन दस्तों को जिन से उसने हमारे कलब पर हम्ला किया और कामयाबी हासिल की है फिर से समेट लिया और अगले दस्तों से एक कोस पीछे तैय्यार रखा हुआ है। आप ठीक समझे हैं कि सुल्तान अय्यूबी हमारे हम्लावर दस्तों को घेरे में लेने की कोशिश करेगा। मैं कब्रों का जो ज़िक्र कर रहा था, वह बे मानी नहीं। सुल्तान अय्यूबी का दायां बाज़ू जिस जगह उससे ढेड़ एक कोस पीछे हमारी और अय्यूबी की फ़ौज की लाशों के लिए कब्रें खोदी गयी हैं। उनकी तादाद डेढ़ हज़ार के लगभग होगी। यह डेढ़ हज़ार गड्ढे हैं। आप कब्र की लम्बाई, चौड़ाई और गहराई से वाकिफ़ हैं। आप ऐसी सिम्त से हम्ला करें कि अय्यूबी के दस्ते पीछे हटें। आप उन्हें कब्रों के करीब ले जाएं। दस्त बदस्त लड़ने की

बजाए तीरों का अंधा धुंध इस्तेमाल करें और उन्हें मजबूर करें कि कब्रों पर चले जाएं। आप तसव्वुर कर सकते हैं कि घोड़े खुली हुई कब्रों में किस तरह गिरेंगे। इनमें से जिन कब्रों में लाशें उतार कर उनपर ढेरियां बना दी गयीं हैं वह भी उनके लिए रूकावट बनेंगी।"

"अय्यूबी के दायें बाज़ू की कुव्वत कितनी और किस किस्म की है?" मुज़फ्फ़र–उद्दीन ने पूछा।

"कम अज़कम एक हज़ार सवार और डेढ़ हज़ार पयादे हैं।" जासूस कमानदार ने जवाब दिया– "यह दस्ते तैय्यारी की हालत में हैं। आप उन्हें बेख़बरी में नहीं ले सकते।" उसने उस नक्शे पर जो मुज़फ़्फ़र–उद्दीन के आगे पड़ा था, एक जगह उंगली रखकर कहा–"यह है दुश्मन (अय्यूबी) का दायां बाज़ू। मेरे अन्दाज़े के मुताबिक़ उसका फैलाव आठ सौ क़दम है। उसके सामने की ज़मीन गढ्ढों वाली है। नीची–नीची गोल गोल टेकरियां भी हैं। उस के दायें का इलाक़ा साफ है। हम्ले के लिए यह रास्ता मौज़ूं नज़र आता है मगर हम्ला सामने से किया जाए। दुश्मन पीछे हटेगा।"

"मेरा हम्ला सामने के बेकार रास्ते से भी होगा, दायें जानिब से साफ रास्ते से भी।" मुज़फरूद्दीन ने कहा–"मैं कब्रों के गढ्ढों और ढेरियों को इस्तेमाल करूंगा।" उसने अपने नायब सालार से कहा–"कोई भी आदमी कहीं भी नज़र आये उसे पकड़ लो। यह इलाक़ा जंग की लपेट में आया हुआ है। इधर से कोई मुसाफ़िर नहीं गुज़रेगा। इधर से वही गुज़रेगा जो जासूस होगा।"

❖

दो मुसाफ़िरों को शायद यह मालूम नहीं था कि यह इलाक़ा जंग की लपेट में आया हुआ है। एक ऊंट पर सवार था। वह बूढ़ा था। उसकी दाढ़ी सफेद थी। ऊंट पर कुछ सामान भी लदा हुआ था। दूसरे ने ऊंट की महार पकड़ रखी थी। वह दोनों देहाती लिबास में थे। वह उस जगह से गुज़र रहे थे जहां से मुज़फरूद्दीन के छिपे हुए दस्ते नज़र आ रहे थे। एक फ़ौजी ने उन्हें पुकारा। वह न रूके। उनकी रफ़्तार तेज़ हो गयी। एक घोड़ सवार उनके पीछे गया तो वह रूक गये। सवार ने उन्हें साथ चलने को कहा।

"हम मुसाफ़िर हैं।" जवान आदमी ने कहा–"आपका क्या बिगाड़ा है? हमें जाने दें।"

"हुक्म है कि यहां से जो गुज़रे उसे रोक लिया जाए।" घोड़सवार ने कहा और उन्हें अपने साथ ले गया।

उन्हें एक ख़ेमे के सामने जा खड़ा किया और ख़ेमे में इत्तलाअ दी गयी। एक कमानदार बाहर आया। उसने उनसे पूछा कि वह कहां से आये हैं और कहाँ जा रहे हैं। उन्होंने जो जवाब दिया उससे कमानदार मुत्मईन हो गया, लेकिन उसने उन्हें बताया कि उन्हें आगे नहीं जाने दिया जायेगा। उन्हें इज़्ज़त से रखा जायेगा क़ैद में नहीं। उनके इस सवाल का जवाब न दिया जा सका कि उन्हें कब तक यहां रखा जायेगा। यह पहले मुसाफ़िर थे जिन्हें मुज़फरूद्दीन के हुक्म के मुताबिक़ रोका गया था। उन्हें दो सिपाहियों के हवाले कर दिय गया और कहा गया कि वह उनके ख़ेमें में रहेंगे। उनकी किसी ने न सुनी।

उन्हें जिस ख़ेमें में रखा गया वहाँ यही दो सिपाही रहते थे। रात को सिपाही सो गये। सफेद रेश बूढ़ा जाग रहा था। ख़ेमें में अंधेरा था बूढ़े ने खर्राटों से अन्दाज़ा किया कि दोनों सिपाही सो गये हैं। उसने अपने साथी को ठोकर मारी। दोनों लेटे–लेटे सरकने लगे। जब खेमे के दरवाज़े तक पहुंचे तो बाहर को सरक गये। बाहर ख़मोशी थी। ख़ेमे से कुछ दूर जाकर बूढ़े ने अपने साथी से कहा कि वह उस से अलग हो जाए और किसी और सिम्त से ख़ेमागाह से बाहर निकले। दोनों अलग हो गये। उनकी यह तवक्को पूरी न हुई कि वहाँ सारा कैम्प सोया हुआ होगा। संतरी जाग रहे थे। एक संतरी ने अंधेरे मे साये हरकत करते देखा तो उसे बुलाने की बजाए उसके पीछे चल पड़ा।

वह बूढ़ा था। उसने संतरी को देख लिया और कहीं छुप गया। संतरी आया। उसे ढूंढने लगा। वहां कुछ सामान पड़ा था। उस ढेर में कहीं छुपा रहा। फिर अंधेरे से फायदा उठाते हुए वहाँ से दबे पांव निकल गया। बिल्कुल उसी तरह एक और संतरी ने उसके साथी को देख लिया। मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने जासूसों पर नज़र रखने, और उन्हें पकड़ने के बड़े ही सख़्त एहकाम दे रखे थे। उसे मालूम था कि सुल्तान अय्यूबी के जासूस बहुत तेज़ और होशियार हैं। चुनांचे मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने उसके जासूसों को पकड़ने के लिए ख़ास किस्म की हिदायत दी थीं। उन्हीं हिदायात के मुताबिक़ संतरी बूढ़े और उसके साथी को पुकारते नहीं थे। उनका पीछा कर रहे थे।

बूढ़े का साथी भी छुप गया। इधर बूढ़ा भी एक संतरी के साथ आँख मिचोली खेल रहा था। थोड़ी देर बाद बूढ़ा एक और जगह छिप गया। संतरी उसके पीछे आ रहा था। संतरी ग़लतफ़हमी में आगे निकल गया। बूढ़े ने ख़ंजर निकाल लिया। उसने इरादा कर लिया था कि संतरी से निजात हासिल करने के लिए उसे ख़ंजर से हलाक कर देगा। बूढ़ा उठा। अभी देख ही रहा था कि किधर को निकले कि अचानक एक आदमी उसके क़रीब आ रूका। बूढ़ा ज़र्रा भर भी देर न किया। ख़ंजर उस आदमी के दिल में उतार दिया। फ़ौरन बाद दूसरा वार किया। उस आदमी के मुंह से आवाज़ निकली और ख़ामोश हो गयी। वह आदमी गिर पड़ा।

बूढ़ा वहाँ से भागने की राह देख रहा था कि किसी ने पीछे से उसे दबोच लिया। बूढ़े ने जिस्म को इतनी ज़ोर से झटका दिया कि उसे दबोचने वाला उससे अलग होकर गिर पड़ा। वह तेज़ी से भागा मगर किसी चीज़ से ठोकर खाकर गिर पड़ा। उसने जिसे गिराया था वह उठ खड़ा हुआ था। वह तेज़ दौड़ा और बूढ़े को पीछे से पकड़ लिया, साथ ही उसने शोर मचा दिया। मशाले जल उठीं। तीन चार संतरी दौड़े आये। उन्होंने मशालों की रौशनी में देखा कि यह तो कोई सफेद रेश बुज़ुर्ग है मगर उन सबसे आज़ाद होने के लिए ऐसी फुर्ती और ऐसी ताक़त का मुज़ाहिरा कर रहा था जो उस उम्र में कम किसी इन्सान में होती है। वह अकेला था। संतरी ज़्यादा थे। वह उनसे आज़ाद न हो सका मगर उस कोशिश में उसकी सफेद दाढ़ी उतर कर गिर पड़ी। सबने देखा कि उसके चेहरे पर छोटी–छोटी स्याह दाढ़ी थी जो सलीक़े से तराशी हुई थी और वह एक जवान आदमी था। सफेद दाढ़ी नकली थी।

उसे पकड़ कर उस जगह लेगये जहाँ उसने एक संतरी को ख़ंजर के दो वार करके मार

डाला था। मशाल की रौशनी में सबने देखा कि वह कोई संतरी नहीं बल्कि उसी आदमी का साथी था। वह मर चुका था। उस आदमी ने जो सफेद दाढ़ी लगाकर बूढ़ा बना हुआ था अपने ही साथी को संतरी समझ कर हलाक कर दिया था। यह दोनों साथी अलग–अलग होकर कैम्प से निकलने की कोशिश कर रहे थे मगर संतारियो ने उन्हें देख लिया। यह दोनों तअक्कुब से बचने की कोशिश में इकठ्ठे हो गये। सफेद दाढ़ी वाले ने उसे संतरी समझा और निहायत उज्लत में उसे ख़ंजर से मार डाला। लाश की तलाशी ली गयी। उसके कपड़ों के अन्दर से खंज़र बरामद हुआ। उनके ऊंट पर जो सामान लदा था वह खोल कर देखा गया तो कोई सामान नहीं था, बोरियों में घास फूंस भर कर सामान का धोखा दिया गया था।

उस आदमी को एक नायब सालार के ख़ेमें में ले गये। नायब सालार जाग उठा था। उसने उस अदमी से बहुत कुछ पूछा लेकिन उसने ख़मोशी इख़्तियार किए रखी। उसकी सफेद दाढ़ी जो उसके चेहरे से उतरी थी, नायब साला को दिखाई गयी। उसके मुतअल्लिक भी उसने ख़ामोशी इख़्तियार की मगर यह ऐसे सबूत थे जिन्हें वह झुठला नहीं सकता था। उसे कहा गया कि वह तस्लीम कर ले कि वह सुल्तान अय्यूबी का जासूस है और उसका साथी भी जासूस था। उसने यह इल्ज़ाम तस्लीम करने से इन्कार कर दिया। उसे मारा पीटा गया। बहुत परेशान किया गया लेकिन उसने एतराफ़ न किया कि वह जासूस है। रात गुज़र गयी।

सुबह उसे मुज़फ़्फ़र–उद्दीन के सामने ले जाया गया और उसे रात का वाक़िआ सुनाया गया। उसकी नकली दाढ़ी और उसके ऊंट का सामान भी मुज़फ़्फ़र–उद्दीन के आगे रखा गया।

"अली बिन सुफ़िया के शगिर्द हो या हसन बिन अब्दुल्लाह के?" मुज़फरूद्दीन ने उससे पूछा। (अली बिन सुफ़ियान सुल्तान अय्यूबी की मिलिट्री इन्टेलीजेंस का सरबराह और हसन बिन अब्दुल्लाह नायब था।)

"मैं उन दोनों में से किसी को नहीं जानता।" मुल्ज़िम ने जवाब दिया।

"मैं जानता हूँ उन दोनों को।" मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने कहा– "मैं सुल्तान अय्यूबी का शागिर्द हूँ उस्ताद अपने शागिर्द को धोखा नहीं दे सकता।"

"मेरा आपके साथ और सुल्तान अय्यूबी के साथ कोई तअल्लुक नहीं।" मुल्ज़िम ने जवाब दिया।

"सुनो मेरे बदकिस्मत दोस्त!" मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा– "मैं तुम्हारे साथ बहस नहीं करुंगा। मैं यह भी नहीं कहूँगा कि तुम नालायक और निकम्मे हो। तुमने अपना फर्ज़ ख़ुश अस्लूबी से अदा किया है। पकड़ा जाना कोई अजीब नहीं। तुम्हारी बदकिस्मती कि तुम्हारा साथी तुम्हारे ही हाथों मारा गया है। मुझे सिर्फ यह बता दो कि तुम्हारा कोई साथी यहाँ से हो गया है अय्यूबी को इत्तलाअ दे चुका है कि इस जगह फ़ौज है? और यह बता दो कि इस वक़्त तुम्हारी फौज की तरतीयत क्या है और दस्ते कहां हैं। इन सवालो का जवाब दो और तुम्हारे साथ कुर्आन के नाम पर वादा करता हूँ कि जंग ख़त्म होते ही तुम्हें

रिहा कर दूंगा। उस वक़्त तक पूरी इज़्ज़त से तुम्हें अपने पास रखूंगा।"

"मुझे आप की कसम पर एतबार नहीं।" मुल्ज़िम ने कहा– "क्योंकि आप कुर्आन से मन्हरिफ़ हो चुके हैं।"

"क्या मैं मुसलमान नहीं?" मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने तहम्मुल से कहा।

"आप यक़ीनन मुसलमान हैं।" मुल्ज़िम ने जवाब दिया– "लेकिन आप कुर्आन के नहीं सलीब के वफ़ादार हैं।"

"मैं अपनी तौहीन इस शर्त पर बर्दाश्त कर लूंगा कि मैंने जो पूछा है वह मुझे बता दो।" मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने कहा– "तुम्हारी जान मेरे हाथ में है।"

"आप ख़ुदा के हाथ से मेरी जान छीन नहीं सकते।" मुल्जिम ने कहा– "आप हमारी फ़ौज में रह चुके हैं। आप को अच्छी तरह मालूम है कि हमारी फ़ौज का हर सिपाही अपनी जान ख़ुदा के सुपुर्द कर चुका है। मैं आप को यह बता देता हूं कि मैं अपनी फ़ौज का जासूस हूं और मेरा साथी भी जासूस था। मैं आपके किसी और सवाल का जवाब नहीं दूंगा। मैं जिन्दा हूं, मेरी खाल उतारनी शुरू कर दें। मेरे मुंह से अपने सवालों का जवाब नहीं सुन सकोगे..... .और मैं आपको यह भी बता देता हूं कि शिकस्त आप के मुकद्दर में लिख दी गयी है।"

"इसके टख़्नों में रस्सी डालो और उस दरख़्त के साथ लटका दो।" मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने एक दरख़्त की तरफ इशारा करके हुक्म दिया और अपने ख़ेमे में चला गया।

❖

"वह दोनों अभी तक नहीं आये।" हसन बिन अब्दुल्लाह सुल्तान अय्यूबी से कह रहा था– "उनके पकड़े जाने का तो ख़तरा नहीं था। हमारे जासूसों को यहाँ पकड़ने वाला कौन है। उन्हें बहुत दूर भी नहीं जाना था।"

"हो सकता है वह पकड़े गये हों? सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "वह जो सुबह के गये हुए शाम के बाद तक नहीं आये वह पकड़े गये होंगे। उनका न आना ज़ाहिर करता है कि यहाँ पकड़ने वाले मौजूद हैं। आज रात कुछ आदमी और भेज दो और ज़रा दूर के इलाके की देखभाल कराओ।"

वह उन्हीं दो जासूसों के मुतअल्लिक बातें कर रहे थे। सुल्तान अय्यूबी ने हमेशा अपने जासूसी निज़ाम पर भरोसा किया और दुश्मन को उसी निजाम की रहनुमाई में नाकों चना चबवाये थे मगर अब उसका यह निज़ाम उसके लिए बेकार होता रहा था। उसकी वजह यह थी कि उसका मदे मुक़ाबिल उसका शगिर्द मुज़फ़्फ़र–उद्दीन था। गुज़िश्ता रात सुल्तान अय्यूबी के एक जासूस की लाश तुर्कमान से कुछ दूर वीराने में पड़ी मिली थी। उसके पहलू में तीर उतरा हुआ था। मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने अपने नायब सालारों से कहा था–" अगर सलाहुद्दीन अय्यूबी के जासूसों के ख़िलाफ इक़दाम कर सको तो वह अंधा और बहरा हो जाए। फिर तुम उसे शिकस्त देने की सोंच सकते हो।" अब सुल्तान अय्यूबी के दो और जासूस लापता हो गये थे। सुल्तान अय्यूबी उन दोनों वाक़िआत को नज़र अन्दाज़ नहीं करना चाहता था। उसके हुक्म पर हसन बिन अब्दुल्लाह ने छः छापामार जासूस रवाना कर दिए।

सुबह की आज़ान की पहली अल्लहो अकबर गूंजी तो सुल्तान अय्यूबी की आँख खुली.. ....वह ख़ेमे से बाहर निकला तो उसके ख़ादिम ने मशाल जलाकर उसके ख़ेमे के आगे रख दिया। उधर से एक घोड़सवार घोड़ा दौड़ात आया। सुल्तान अय्यूबी के सामने रूक कर वह घोड़े से उतरा और कहा– "सुल्तान का इक़बाल बुलन्द हो। अपने दायें पहलू के इलाके के सामने किसी फ़ौज की हरकत सुनी गयी है। देख भाल के लिए दो आदमी आगे गये थे। उन्होंने तस्दीक़ की है कि फ़ौज आ रही है।"

सुल्तान अय्यूबी ने मरकज़ी कमान के सालारों के नाम लेकर कहा कि उन्हें फौरन बुलाओ। वह ज़मीन पर बैठ गया और तयम्मुम करने लगा। उसके पास वज़ू के लिए वक़्त नहीं था। वहीं क़िब्ला रू होकर उसने मुसल्ले बिछाये बग़ैर नमाज़ पढ़ी। मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में दुआ मांगी और अपना घोड़ा मंगवाया।

"यह मुज़फ़्फ़र–उद्दीन के सिवा और कोई नहीं हो सकता।" सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों से कहा– "सलीबी नहीं हो सकते। उनके आने की सिम्त यह नहीं हो सकती। अगर यह इत्तलाअ सही है कि दुश्मन हमारे दायें पहलू के दस्तों के सामने और दायें से आ रहा है तो ख़्याल रखना कि यह दो तरफ़ा हम्ला होगा। अपने किसी दस्ते को पीछे न हटने देना। पीछे डेढ़ हज़ार क़ब्रों के गढ्ढे हैं। तमाम लाशों को अभी दफ़्न नहीं किया गया। यह गढ्ढे हमारे सवारों की क़ब्रें बन जायेंगे।"

सुल्तान अय्यूबी घोड़े पर सवार हुआ। उसके मुहाफिज़ दस्ते के बारह मुहाफ़िज़ उसके पीछे चल पड़े। वह सवार थे। उसने आधी दर्जन तेज़ रफ़्तार सवार क़ासिद भी साथ ले लिए थे और साथ दो सालार भी थे। उसने घोड़े को ऐड़ लगा दी और एक ऐसी चट्टान पर चढ़ा जहाँ से वह अपने दायें बाज़ू के सामने का इलाक़ा और अपने दस्तों को देख सकता था। सुबह का धुंधलका छटने लगा था। वह चट्टान से उतरा और दायें बाज़ू के दस्तों के कमानदारों को बुलाकर हुक्म दिया कि सवारों को घोड़ों पर सवार करो और पयादा दस्तों के तीर अन्दाज़ों को सामने वाले इलाक़े के खड्डों में और बुलन्दियों के पीछे मोर्चा बन्द होने को दौड़ा दो।

"अब से दायें पहलू के दस्तों की आला कमान मेरे पास होगी।" उसने कामनदारों और नायब सालारों से कहा–"अपने क़ासिद अपने साथ रख लो और मेरे साथ राब्ता क़ायम रखो।"

सुल्तान अय्यूबी की ट्रेनिंग में नक़्ल व हरकत की बर्क़ रफ़्तारी पर ज़्यादा ज़ोर दिया जाता था। किसी चाल के हुक्म की तकमील हैरानकुन रफ़्तार से होती थी। मुज़फ़्फ़र–उद्दीन की फ़ौज अभी इतनी क़रीब नहीं आई थी कि सुल्तान अय्यूबी के दस्तों की हरकात देख सकती।

❖

मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने घोड़सवारों से हम्ला किया। ज्योंहि उसका पहला सवार दस्ता सुल्तान अय्यूबी के दस्तों के सामने वाले इलाक़े में आया उसकी तरतीब ख़राब हो गई

क्योंकि वहाँ खड्ड और ढेरियों की टीकरियां थीं। उन खड्डों में सुल्तान अय्यूबी के तीर अन्दाज़ बैठ गये थे। उन्होंने अपने करीब से और अपने ऊपर से गुज़रते और सरपट दौड़ते घोड़ों पर तीर बरसाना शुरू कर दिये। सवार गिरने लगे। जिस घोड़े को तीर लगता था वह बेलगाम होकर इधर उधर भागने दौड़ने लगता था। यह तो हर मार्के में होता था। मुज़फ्फर–उद्दीन के लिए यह सूरतेहाल अजीब नहीं थी। अल्बत्ता उसे यह परेशानी हुई कि उसकी तवक्को के ख़िलाफ़ सुल्तान अय्यूबी के दायें बाज़ू के दस्ते बेदार थे और मुकाबले के लिए तैय्यार। इस यलग़ार में सुल्तान अय्यूबी के बेशुमार तीर अन्दाज़ कुचले गये। इस कुर्बानी से सुल्तान अय्यूबी ने यह फायदा हासिल किया कि मुज़फ्फर–उद्दीन की हम्ले की शिद्दत खत्म हो गयी। अब सुल्तान अय्यूबी जम कर लड़ सकता था। मुज़फ्फर–उद्दीन यह जो तवक्को लेकर हम्लावर हुआ था कि वह अचानक आ पड़ेगा और सुल्तान अय्यूबी को वह अपनी चालों का पाबन्द करके उसे मैदाने जंग में अपनी पसन्द के मुताबिक लड़ाता रहेगा, उसकी यह तवक्को ख़त्म हो गयी थी।

सुल्तान अय्यूबी अपनी चालें चलने के लिए आज़ाद था। उसके चन्द एक तीर अन्दाज़ों ने मुज़फ्फर–उद्दीन के घोड़ो के कदमों में बैठकर जानें कुर्बान कर दी थीं लेकिन अपने सुल्तान को वह बड़ा ही कीमती जंगी फायदा दे गये थे। मुज़फ्फर–उद्दीन का हम्लावर दस्ता कई एक घोड़े और उनके सवार मरवा कर आगे निकल आया। आगे सुल्तान अय्यूबी खुद था। उसने हम्लावरों का फैलाव देखा तो उसके मुताबिक अपने सवारों को एक हुक्म दे दिया। हम्लावर करीब आये तो सुल्तान अय्यूबी के बायें सवारों ने घोड़े बायें को मोड़े और ऐड़ लगा दी। दायें के सवारों ने भी ऐसा ही किया। हम्लावरों के सामने कोई मज़ाहमत न रही। मज़ाहमत करने वाले दायें और बायें भाग गये थे।

हम्लावरों के कुछ घोड़े दायें को मुड़े और कुछ घोड़े बायें को। और ज़्यादातर नाक की सीध में चले आये। सुल्तान अय्यूबी के दायें बायें को भागने वाले सवारों ने अन्दर को घोड़े मोड़े। अब हम्लावरों के घोड़ों के पहलू उनके सामने थे। उन्होंने ऐड़ लगा दी......दोनों तरफ़ से सवारों ने हम्ला बोला तो उनकी बरछियों का कोई वार ख़ाली न गया। हम्लावर तो आगे को दौड़े जा रहे थे। वह अपने पहलुओं की हिफ़ाजत करने के काबिल ही नहीं थे। उनकी आफियत उसी में थी कि वह आगे को निकल जाएं। आगे डेढ़ हज़ार कब्रें थीं। हम्लावरों के पीछे सुल्तान अय्यूबी के सवार आ रहे थे। सूरत ताआक्कुब की बन गयी थी। हम्लावरों के घोड़े खुली हुई कब्रों में गिरने लगे।

मुज़फ्फर–उद्दीन घबरा जाने वाला सालार नहीं था। उसने कम से कम तादाद से हम्ला करवाया था। इससे उसने मैदाने जंग का जायज़ा ले लिया और सूरते हाल मालूम कर ली। उसने फौरन सवारों की दूसरी मौज छोड़ दी। सुल्तान अय्यूबी के सवारों ने घोड़े रोक लिए थे क्योंकि वह कब्रों से दूर रहना चाहते थे। वह अगले हुक्म की तकमील करने ही लगे थे कि मुज़फ्फर–उद्दीन के सवारों का दूसरा दस्ता उनके सर पर आ गया। उन्हें संभलने की मुहलत न मिली। यह अच्छी हम्ला था। उसमें सुल्तान अय्यूबी के सवारों का बहुत जानी

नुकसान हुआ। कई सवार आगे को भ.गे और उनके घोड़े क़ब्रों में गिरे। उसके साथ ही मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने दायें तरफ़ भी हम्ला कर दिया।

सुल्तान अय्यूबी के लिए सूरते हाल परेशानकुन हो गयी। उसने क़ासिद को इस हुक्म के साथा दौड़ाया कि महफ़ूज़ा अक़्ब से हम्ला करे। सुल्तान अय्यूबी ने दायें बाज़ू के दस्तों को जिस तरह तकसीम किया था वह बेकार हो गयी। मुज़फ़्फ़र–उद्दीन उसी के उसूलों पर लड़ रहा था। मुज़फ़्फ़र–उद्दीन की कमज़ोरी यह थी कि उसके पास कुमुक नहीं थी। सुल्तान अय्यूबी ने क़ासिदों के ज़रिए अपने दस्तों के कमाण्डरों से राब्ता रखकर उन्हें दायें बायें बिखेरना शुरू कर दिया और जब अक़्ब से उस महफ़ूजा ने हम्ला किया तो मुज़फ़्फ़र–उद्दीन के औसान ख़ता हो गये। उसका मरकज़ ख़तरे में पड़ गया, लेकिन उसने निकल भागने की न सोंची।

मोअर्रिख़ों के मुताबिक़ दिन के पिछले पहर तक दोनों फ़ौजों ने जो मार्का लड़ा वह बड़ा ही खुंरेज़ और बड़ा ही सख़्त था। कमान सुल्तान अय्यूबी के हाथ में थी वरना सूरते हाल कुछ और होती। जहँ तक लड़ने के जज़्बे का और जंगी क़ाबिलियत का तअल्लुक़ था मुज़फ़्फ़र–उद्दीन ने सुल्तान अय्यूबी के ज़ुबान से दाद व तहसीन के कलमे कहलवा लिए थे। उसे शिकस्त इसलिए हुई कि उसके पास यही कुछ था जो उसने आख़िरी बाज़ी पर लगा दिया था। वह बाज़ी हार गया। मार्के के आख़िरी मरहले में सुल्तान अय्यूबी ने रिज़र्व सवार दस्ते से हल्ला बोला। मुज़फ़्फ़र–उद्दीन की पोज़ीशन बहुत कमज़ोर हो चुकी थी। उसने पस्पाई में ख़ैरियत समझी। सुल्तान अय्यूबी ने बहुत से कैदी पकड़े जिनमें मुज़फ़्फ़र–उद्दीन का एक मुशीर फ़ख़रूद्दीन भी था। यह कोई मामूली सा इन्सान नहीं था, सैफ़ुद्दीन का वज़ीर था। तुर्कमान के मार्के में जब सैफ़ुद्दीन भागा तो फ़ख़रूद्दीन मुज़फ़्फ़र–उद्दीन के पास चला गया था और उसकी हौसला अफ़ज़ाई की थी कि वह सुल्तान अय्यूबी पर हम्ला करे।

यह मार्का शव्वाल 571 हि0 अप्रैल 1176ई0 में लड़ा गया। बेशक मुज़फ़्फ़र–उद्दीन को शिकस्त हुई थी और सुल्तान अय्यूबी के मुसलमान दुश्मनों की कमर टूट गयी थी मगर सुल्तान अय्यूबी का इतना ज़्यादा नुक्सान हुआ था कि दो माह तक वह तुर्कमान से हिलने के क़ाबिल नहीं रहा। उसका दायां बाज़ू ख़त्म हो गया था जैसे उसका अपना बाज़ू मफ़लूज हो गया हो। उसके पास नयी भर्ती आ रही थी, लेकिन वह रंगरूटों के साथ पेशक़दमी नहीं कर सकता था। उसने उसी रोज़ दमिश्क़ और मिस्र क़ासिद दौड़ा दिए कि कुमुक भेजो। अगर उस का इतना ज़्यादा नुक्सान न होता तो वह आगे जाकर हलब, मुसिल और हरान वग़ैरह पर यलग़ार करता और अपने उन मुसलमान दुश्मनों के जो फ़िलिस्तीन के रास्ते में हायल हो गये थे राहे रास्त पर ले आता या ख़त्म कर देता।

"यह मेरी फ़तह नहीं।" सुल्तान अय्यूबी ने उस मार्के के बाद अपने सालारों से कहा–"यह सलीबियों की फ़तह है। वह हमें कमज़ोर करना चाहते थे। वह उस मकसद में कामयाब हो गये हैं। उन्होंने मेरी पेशक़दमी की रफ़्तार सुस्त करके फ़िलिस्तीन पर अपने कब्ज़े के अर्से

को कुछ और तवील कर लिया है। हमारे यह मुसलमान भाई कब तक समझेंगे कि कुफ़्फ़ार उनके दोस्त नहीं हो सकते और उनकी दोस्ती में भी दुश्मनी होती है। मैं कह नहीं सकता कि तारीख़ लिखने वाले हमारी आनेवाली नस्लों को किन अल्फ़ाज़ में सुनायेंगे कि हम आपस में लड़े थे।"

उसे अभी मालूम नहीं था कि उसके भाई जो उससे शिकस्त खाकर भाग गये हैं, उस के कत्ल का एक और मंसूबा बना रहे हैं। इस मक़सद के लिए उसका तीसरा दुश्मन गुमश्तगीन, हशीशीन के सरदार शेख़ सन्नान के यहां गया हुआ था। उस वक़्त शेख़ सन्नान इस्याब नाम के एक क़िले में मुक़ीम था। उसे यह क़िला सलीबियों ने दिया था जिस में उसने अपनी फौज रखी हुई थी। इस क़िले में उसके पेशावर क़ातिलों का गिरोह भी था।

❖

इस्याब और तुर्कमान के दर्मियान उस जहन्नमनुमा इलाक़े में जहां सुल्तान अय्यूबी के चार छापामार भूले भटके पहुंच गये थे। सूरज उफ़क़ के क़रीब चला गया था। छापामार के कमाण्डर अल्नासिर की आंख खुली। वह उठ बैठा। दोनों लड़कियां जाग रही थीं। अल्नासिर के दिल पर घबराहट तारी हो गयी। उन लड़कियों में एक ने उसके साथ ऐसी बातें की थीं जिनसे ज़ाहिर होता था कि वह उसके साथियों के साथ बुरा सुलूक नहीं करेंगी, फिर भी अल्नासिर डर गया।

"उन्हें जगाओ।" बड़ी लड़की ने कहा– "हमें दूर जाना है।"

"हमें रास्ते पर डाल कर जाओगी?" अल्नासिर ने पूछा।

"तुम सब हमारे साथ चलोगे।" लड़की ने जवाब दिया– "हमारे बग़ैर तुम मंज़िल तक नहीं पहुंच सकोगे।"

अल्नासिर ने अपने साथियों को जगाया बड़ी लड़की ने छोटी लड़की से कुछ कहा। वह उठी और दूसरे घोड़े के साथ बंधे हुए थैले से कुछ निकाला। पानी का मश्कीज़ा खोला। मश्कीज़े का मुंह खोल कर उसने थैले में से जो चीज़ निकाली थी वह मश्कीज़े में डाल दी। उसे हिलाया और मश्कीज़ा अल्नासिर को देकर कहा–"पानी पी लो। मंज़िल तक शायद पानी न मिले।"

अल्नासिर और उसके साथियों ने पानी पी लिया। बड़ी लड़की ने चारों को कुछ खाने को दिया। कुछ देर गुज़र गयी, तो लड़कियों ने थैले और मश्कीज़े घोड़ों की ज़ीनों के साथ बांध दिये। सूरज नीचे जा रहा था।

"तुमने इस जगह को जहन्नम कहा था।" अल्नासिर ने बुलन्द आवाज़ में कहा– "यहां तो सब्ज़ा ज़ार है। तुमने हमें इतनी जल्दी यहां किस तरह पहुंचा दिया है?"

उसके तीनों साथी हैरत से इधर उधर देख रहे थे।

"क्या तुम तीनों को भी सब्ज़ा नज़र आ रहा है?" बड़ी लड़की ने पूछा।

"हम सब्ज़ाज़ार में बैठे हैं।" एक ने कहा।

"क्या तुम हमारी जान तो नहीं लोगी?" दूसरे ने कहा– "तुम जिन्नात में से हो।"

"नहीं।" लड़की ने मुस्कुराकर कहा–"हम तुम्हें इस से ज़्यादा हसीन ख़ित्ते में ले जा रहे हैं।"

बड़ी लड़की ने अल्नासिर के दूसरे दो साथियों को उसी तरह आमने सामने बैठाकर अपने बाज़ू उनके गिर्द डाले और उन्हें अपनी आँखों में देखने को कहा– "चारों के कानो में बड़ी लड़की की मुतरन्नुम आवाज़ दाख़िल हो रही थी– "यह तुम्हारी बहिश्त है। इन फूलों के रंग देखो, इनकी महक सूंघो। उनमें जो परिन्दे उड़ रहे हैं, वह देखो कितने ख़ूबसूरत हैं। यह तुम्हारा इनाम है। तुम्हारे पांव तले मख़्मल जैसी घास है। चश्मे देखो। उनका शफ़ाफ़ पानी मीठा है....."

लड़की की आवाज़ जादू की तरह उन चारों की अक़्ल पर और आँखों पर और तमाम हिस्सों पर ग़ालिब आती जा रही थी। अल्नासिर ने बाद में हसन बिन अब्दुल्लाह को जो बयान दिया था उसमें उसने बताया कि लड़कियों की आँखों में देखा तो उन्हें पानी के शफ़ाफ़ चश्में नज़र आने लगे। उनके रेशम जैसे बाल जो उनके शानू पर बिखरे हुए थे किसी बड़े ही दिलकश पौधे की फूलदार बेलें बन गयीं और उन्होंने अपने आप को एक बाग़ में पाया जिस के हुस्न को और जिसके फूलों के रंग को बयान नहीं कर सकता। वहाँ रेत और मिट्टी के लम्बे–लम्बे टीले थे। रेगज़ार नहीं था। हरे –भरे दरख़्त और पौधे थे और नीचे मख़्मल जैसी घास का फ़र्श था। रंग बिरंगे परन्दि फ़ुदक और चहचहा रहे थे और वह उस बहिश्त में चले जा रहे थे।

❖

वह चारों मख़्मल जैसी घास पर चले जा रहे थे वह दर हक़ीक़त रेत थी कहीं–कहीं ज़मीन सख़्त भी थी और वह चारों एक गीत गुनगुनाते जा रहे थे। वह दोनों लड़कियां उनसे चन्द क़दम पीछे घोड़ों पर जा रही थीं। उनका रूख़ तुर्कमान की तरफ नही था जहां सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज थी और जो इन चारों छापामारों की मंज़िल थी बल्कि उनका रूख़ इस्याब के क़िले की तरफ़ था जहां हशीशीन का सरदार शेख़ सन्नान रहता था अल्नासिर और उसके साथियों को कुछ इल्म नहीं था कि वह किधर जा रहे हैं। उनका यह एहसास मुर्दा हो चुका था कि वह जा नहीं रहे ले जाया जा रहा है। उनके पीछे–पीछे जाती लड़कियाँ आपस में बातें कर रही थीं। यह बातें छापामारों के कानों तक नहीं पहुँच रही थीं। सूरज ग़ुरूब हो चुका था।

"तुम कहती हो कि रात कहीं क़याम नहीं करेंगी" छोटी लड़की ने बड़ी से कहा– "क्या यह चारों रात भर पैदल चल सकेंगे?"

"तुम ने पानी में उन्हें हशीश की जो मिक़दार पिलाई है, उसका असार कल शाम तक रहेगा।" बड़ी लड़की ने कहा– "और मैंने उन्हें जो खिलाया है वह तुम ने देखा है। उनसे तुम बेफ़िक्र हो जाओ। मुझे उम्मीद है कि सूरज निकलने से पहले हम इस्याब पहुँच जाएंगे।"

"मैं तो उन्हें देखकर डर गयी थी।" छोटी लड़की ने कहा– "यह तुम्हारा कमाल है कि तुमने उन पर काबू पा लिया और उन पर यह ज़ाहिर किया कि हम जिन्नात हैं। यह मुसलमान

जिन्नात के वजूद को मानते हैं।"

"यह अक़्ल का खेल था।" बड़ी लड़की ने कहा– "मैंने उनकी ज़ेहनी हालत पर कब्ज़ा किया था। उनके चेहरे और उनकी चाल ढाल देख कर मैं समझ गयी थी कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के फौजी हैं और रास्ते से भटक गये हैं। मैं यह भी समझ गयी थी कि हमें देखकर यह चारों डर गये हैं। अगर हम डर जातीं और औरतों की तरह बुज़्दिली का मुज़ाहिरा करतीं यह चारों हमारे साथ वह सलूक करते जो तुम सारी उम्र न भूल सकतीं। इस वीराने में किसी को हम जैसी लड़कियाँ मिल जाएं तो वह उन्हें बहने और बेटियाँ नहीं समझा करता। मैंने उनकी जिस्मानी हालत देखी, फिर मैंने मुसलमान की यह कमज़ोरी सामने रखी कि जिन्नात के मामिले में यह कौम तौहुम परस्त है। मैंने अपने आप को जिन्न बना लिया। इस जहन्नम में हम जैसी लड़कियों की मौजूदगी उनकी अक़्ल तस्लीम नहीं कर सकती थी। हमें वह तसव्वुर समझ सकते थे या जिन्नात। मैंने उनसे जिस अन्दाज़ से बात की उससे उन्हें यकीन हो गया कि हम जिन्नात हैं। मैं इस कौम की जज़्बाती कमज़ोरियों से वाकिफ़ हूं। तुम्हें अभी बहुत कुछ सीखना है। ज़रा जल्दी सीख लो। हमने सैफुद्दीन जैसे चालाक आदमी को अपने इशारों पर नचा दिया है। यह तो सिपाही हैं।"

"मालूम नहीं मैं क्यों इस फ़न में कामयाब नहीं हो रही।" छोटी लड़की ने कहा– "मेरा दिल साथ नहीं देता। कोशिश करती हूँ कि तुम जैसे कमालात दिखा सकूं लेकिन दिल से आवाज़ आती है कि यह फ़रेब है।"

"फिर तुम इन मर्दों के हाथों खिलौना बनी रहोगी।" बड़ी लड़की ने कहा– "तुम पहली बार बाहर निकली हो। मैंने देखा है कि तुम कामयाब नहीं हुई। तुम सिर्फ दाश्ता बनी रही। इस तरह सलीब की कोई ख़िदमत नहीं कर सकती। तुम अपने जिस्म को वक़्त से पहले बूढ़ा कर लोगी और यह मर्द तुम्हें उठा कर बाहर फेंक देंगे। हमारा मकसद यह नहीं कि मुसलमान उमरा और हुक्मरानोंके लिए तफ़रीह का सामान बनें। हमें एक जादू बनकर उनकी अक़्ल पर ग़ालिब आना है। उन चारों में तुमने जो तौहुमपरस्ती की कमज़ोरी देखी थी, वह हमारे सलीबी उस्तादों और यहूदियों ने पैदा की है। तुमने देख लिया है कि मैंने उन्हें कितनी जल्दी अपने कब्ज़े में ले लिया है। मैंने उन चारों से एक बात कही थी। यह मुझे मेरे उस्ताद ने बताई थी। वह यह थी कि इन्सान एक लज़्ज़त की पैदवार है और वह हमेंशा उस लज़्ज़त का ख़्वाहां रहता है। उस ख़्वाहिश को दबाने की कोशिश भी नही करता है। हमारा मकसद यह है कि मुसलमानों में लज़्ज़त परस्ती उभारी जाए क्योंकि यही इन्सान की कमज़ोरी है जो उसे तबाही तक पहुंचाती है। तुम्हें वह रात याद नहीं जब सैफुद्दीन ने हमारी मौजूदगी में अपने एक सालार से कहा था कि वह इस पर ग़ौर करना चाहता है कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी से सुलह कर ली जाए। मैंने उसी रात उसके दिमाग़ से यह ख़्याल निकाल दिया था।"

"इस्तियाब पहुँच लें तो यह उस्तादी मुझमे भी पैदा करो।" छोटी लड़की ने कहा– "तुम्हें मेरे साथ तरबियत के लिए भेजा गया था। मैंने तुम्हारी कमज़ोरियाँ देख ली हैं। यह दूर हो जाएंगी।"

अल्नासिर अपने साथियों के साथ चला जा रहा था। लड़कियों ने घोड़े उनसे आगे कर लिए ताकि यह चारों रास्ते से हट न जाएं। वह एक आवाज़ में गीत गाते जा रहे थे। रेत, मिट्टी पत्थर उन के लिए घास बने हुए थे।

"उन्हें किसी दूसरी तरफ रवाना कर देना था।" छोटी लड़की ने कहा–"उन्हे इस्याब लेजाकर क्या करोगी?"

"अपने पीर उस्ताद शेख सन्नान के लिए इससे बेहतर और कोई तोहफ़ा नहीं हो सकता।" बड़ी लड़की ने जवाब दिया– "यह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के छापामार हैं और जासूस भी। मुझे ख़ास तौर पर यह बताया गया था कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का एक जासूस पकड़ कर उसके ज़ेहन को अपने कब्ज़े में ले लो तो समझो कि तुमने उस फ़ौज के लिए एक हज़ार सिपाही बेकार कर दिए हैं। अय्यूबी ने अपने छापामारों और जासूसों को जो तरबियत दे रखी है उससे वह ओस्त दरजा के इन्सानों से बहुत ऊपर चले गये हैं। जिस्मानी लिहाज से उनमें ग़ैरमामूली फुर्ती और कुव्वते बर्दाश्त होती है और ज़ेहनी लिहाज से यह अपने फ़र्ज़ के दिवाने होते हैं। इन चारों ने जो शबख़ून मारे और उस थकन के बाद सेहरा में जो मुसीबत, भूख और प्यास बर्दाश्त की है वह कोई और इन्सान बर्दाश्त नहीं कर सकता। हमारी फ़ौज में यह जज़्बा नहीं है। इन चारों को मैं शेख़ सन्नान के हवाले करूंगी। उसके आदमी जो इस फ़न के माहिर हैं इन चारों के उसी जज़्बे और जिस्मानी ख़ूबियों को अपनी तरफ मुन्तिकिल कर लेंगे। तुम्हें शायद मालूम न हो कि सलाहुद्दीन अय्यूबी को कत्ल करने की कई कोशिशें हो चुकी हैं मगर कामयाब एक भी नहीं हुई। इन चारों को हशीशीन और उस्तादी के ज़रिए अय्यूबी के कत्ल के लिए तैय्यार किया जा सकता है। यह उसके अपने छापामार हैं। उस तक रसाई हासिल कर सकते हैं।"

"क्या सलाहुद्दीन अय्यूबी पर उस तरह काबू नहीं पाया जा सकता जिस तरह सैफुद्दीन, गुमश्तगीन वग़ैरह को अपने कब्ज़े में ले लिया गया है?' छोटी लड़की ने पूछा।

"नहीं।" बड़ी लड़की ने जवाब दिया– "जो इन्सान लज़्ज़त से दस्तबरदार होकर एक मुकद्दस मकसद को दिल में बैठा ले उसे हम जैसी हसीन लड़कियाँ और सोने के अम्बार रास्ते से नहीं हटा सकते। अय्यूबी एक बीवी का कायल है। नुरूद्दीन ज़ंगी में भी यही ख़राबी थी कि सुल्तान होकर भी उसने घर में एक ही बीवी रखी और मरते दम तक उसका वफ़ादार रहा। यही ख़राबी सलाहुद्दीन अय्यूबी में है। कोशिश की जा चुकी है। उस पत्थर को मोम नहीं किया जा सका। फ़िलिस्तीन पर कब्ज़ा बरकरार रखने का यही तरीका रह गया कि अय्यूबी को कत्ल कराया जाए।"

"मुझे ऐसे आदमी अच्छे लगते हैं जो एक औरत के वफ़ादार होते हैं।" छोटी लड़की ने कहा– "मैं सलीब की परस्तार हूं और सलीब का मकसद समझने के बावजूद कभी–कभी सोंचा करती हूं कि मैं किसी एक आदमी के दिल में उतर जाऊं और वह मेरे जिस्म और मेरे रूह का हिस्सा बन जाए।"

"जज़्बात से निकलो।" बड़ी लड़की ने उसे डांट कर कहा– "अपने उस अज़ीम मकसद

को सामने रखो जो तुम्हें सलीब ने दिया है। अपने हलफ़ को याद करो जो तुमने सलीब हाथ में लेकर उठाया था। मैं जानती हूं तुम जवान हो और जज़्बात पर काबू पाना आसान नहीं होता लेकिन सलीब हम से कुर्बानी मांग रही है।"

यह पुरअसरार काफ़िला चलता रहा। अल्नासिर और उसके साथी लड़कियों के घोड़ों के पीछे-पीछे गाते, गुनगुनाते और कहकहे लगाते जा रहे थे। ज्यों-ज्यों रात गुज़रती जा रही थी उनकी मंज़िल करीब आती जा रही थी।

❖

यह लड़कियाँ कौन थीं?

यह उसी कबील की लड़कियाँ थीं जिन के मुतअदह किस्से आप पढ़ चुके हैं। सलीबी और यहूदी वग़ैरह ग़ैर मामूली तौर पर हसीन और दिलकश बच्चियों को उस्तादों के हवाले करके उन्हें ख़ुसूसी तरबियत देते थे। उन्हें ज़ेहनी तख़रीबकारी, किरदारकुशी और अपने दुश्मन को अपने मक़ासिद के लिए इस्तेमाल करने का ढंग सिखाते थे। उन्हें सरापा लज़्ज़त बना दिया जाता था। लड़कपन में उन्हें यह ट्रेनिंग दी जाती थी कि अपने दुश्मन की सोंचों पर किस तरह कब्ज़ा किया जाता है। उन लड़कियों में शोख़ी और बेहयाई पैदा की जाती थी। उन्हें जज़्बात से आरी कर दिया जाता था। यहूदी चूंकि मुसलमानों को अपना सबसे बड़ा दुश्मन समझते थे इसलिए वह अपनी बच्चियाँ सलीबियों के हवाले कर दिया करते थे। सलीबी अपनी लड़कियों को भी इस्तेमाल करते थे और वह उन इलाकों में जिन पर उनका कब्ज़ा था, मुसलमानों के काफ़िलों पर हम्ले करते और कोई ख़ूबसूरत बच्ची मिल जाए तो उसे उठा ले जाते थे। उसे अपने मक़ासिद के लिए तैय्यार कर लेते थे।

यह लड़कियाँ कुछ अर्सा पहले तोहफ़े के तौर पर सलीबियों ने वालिये मुसिल सैफ़ुद्दीन को भेजी थीं। आपने देख लिया है कि सैफ़ुद्दीन सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का दुश्मन था। उन दोनो लड़कियों को उस मक़सद के लिए भेजा गया था कि एक तो जासूसी करती रहें और दूसरा यह कि सैफ़ुद्दीन को कभी यह न सोंचने दें कि वह सुल्तान अय्यूबी के साथ सुलह कर ले। तीसरा मक़सद यह था कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ जो मुसलमान उमरा मुत्तहद हो गये थे उन्हें अन्दर से एक दूसरे के ख़िलाफ़ रखा जाए। यह काम सिर्फ़ उन दो लड़कियों के ज़िम्मे नहीं था। वहाँ सलीबियों की पूरी मशीनरी दरपरदा काम कर रही थी। उन्होंने चन्द एक मुसलमानों का इमान ख़रीद लिया था। यह मुसलमान उनके लिए काम कर रहे थे।

सैफ़ुद्दीन इत्तेहादी फौज का सालारे आला बनकर तुर्कमान के मुक़ाम पर सुल्तान अय्यूबी पर हम्ला करने गया तो बादशाहों के दस्तूर के मुताबिक़ अपने हरम की चीदा चीदा लड़कियाँ और नाचने वालियां भी मैदाने जंग में साथ ले गया। यह दो सलीबी लड़कियाँ भी उसके साथ गयीं। उन्हें वह मुसलमान और मासूम समझता था मगर बड़ी लड़की उस के असाब पर आसेब की तरह ग़ालिब आ गयी थी। हरम की बाक़ी लड़कियों को उसने अपना ग़ुलाम बना लिया था।

सैफुद्दीन ने जंगल में मंगल बनाया। वहां आंधी आयी जिसकी आप तफ़सील पढ़ चुके हैं। इस आंधी में फौज़ी नाम की एक लड़की अपने भाई की लाश घोड़े पर डाले सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी तक पहुंची और उसे बताया कि तीन इत्तेहादी अफवाज उस पर हम्ला करने के लिए पहुंच चुकी हैं। सुल्तान अय्यूबी ने तेज़ी से हरकत की और सैफुद्दीन के लश्कर पर हम्ला कर दिया। आप पढ़ चुके हैं कि सैफुद्दीन का लशकर बेख़बरी में मारा गया। वहाँ मार्का जो लड़ा गया वह एक तरफ़ा था। मैदाने जंग सुल्तान अय्यूबी के हाथ था। सैफुद्दीन इत्तेहादी अफ़वाज की कमान न संभाल सका। साफ़ नज़र आने लगा कि वह हार जाएगा। यह दो सलीबी लड़कियाँ उसके साथ थीं। वह अकेली नहीं थीं। सलीबियों के चन्द एक मुसलमान एजेंट सैफुद्दीन की फौज में अच्छे ओहदों पर थे। लड़कियों का उनके साथ राब्ता था। लड़कियाँ उन्हें इत्तलाअें और ख़बर देती थीं और वह उन्हें सलीबियों तक पहुंचाते थे।

उन्होंने देखा के जंग की सूरते हाल ऐसी हो गयी है कि इत्तेहादियों के सामने पस्पाई के सिवा कोई रास्ता नहीं तो इन दोनों लड़कियों को वहाँ से निकालने का इरादा किया गया। सलीबियों की यह लड़कियाँ बहुत कीमती थीं। सैफुद्दीन मैदाने जंग में भागा दौड़ा फिर रहा था। हरम की लड़कियां उसकी रिहाईशगाह में एक खेमे में इकठ्ठी हो गयी थीं। यह दो सलीबी लड़कियाँ अलग खड़ी थीं। उनके आदमी आ गये। उन्हें घोड़े दिए। घोड़ों की ज़ीनों के साथ पानी के चार छोटे मश्कीज़े और दो तीन थैलों में खाने का सामान बांध दिया। खंजर भी दिए लेकिन उनका निहायत कारगर हथियार हशीश थी और उसी किस्म का एक और नशा जिसका कोई ज़ायका नहीं था। किसी को धोखे में पिलाया जाता तो उसे पता ही नहीं चलता था कि पानी या शरबत में उसे कुछ और पिला दिया गया है। यह दोनों नशावर अशिया उन्हें इसलिए साथ बांध दी गयी थीं कि उन्हें किसी मर्द के साथ के बग़ैर सफ़र करना था। रास्ते में अगर वह किसी के हत्थे चढ़ जाएं तो उसे धोखे में यह नशा पिलाकर बेकार करना था।

रात के वक़्त जब मैदाने जंग में कुश्त व ख़ून हो रहा था यह दोनों लड़कियों को घोड़ों पर बैठाकर दो आदमी साथ ले गये। तुर्कमान से बहुत दूर तक यह आदमी साथ रहे फिर लड़कियों को रास्ता समझाकर वापस आ गये। लड़कियों की मंज़िल इस्यिाब का क़िला थी। बड़ी लड़की ज़हीन, तजुर्बाकार और दिलेर थी। वह छोटी लड़की को साथ लेकर रवाना हो गयी। सुबह तक वह सर सब्ज़ इलाक़े से दूर निकल गयी थीं और उस इलाक़े में दाखिल हो गयीं जो उस ख़ित्ते का जहन्नम था। लड़कियों को मालूम था कि इस मुक़ाम पर आकर ख़ुश्क पाट के अन्दर अन्दर जाना है। इलाक़ा डरावना था और तनूर की तरह गर्म था। सूरज सर पर आया तो उन्हें चट्टान नज़र आयी जो नीचे से अन्दर को गयी हुई थी। वह उसके नीचे रूक गयीं। खाना खाकर उन्होंने कुछ देर आराम किया। इतने में उन्हें अल्नासिर और उसके तीन साथी आते दिखाई दिए।

उन्हें देखकर बड़ी लड़की समझ गयी कि यह आदमी किस जिस्मानी और ज़ेहनी कैफ़ियत

में हैं। अपनी तरबियत के मुताबिक उसने कामयाब अदाकारी की जिस से अल्नासिर उन दोनों को वाहिमा या जिन्न समझ बैठा। लड़की की अदाकारी कामयाब थी उसने उन्हें पहले तो पानी और खाना दिया फिर उन्हें हशीश और दूसरा नशा पिला दिया। उसने और उसके साथ लड़की ने उन्हें नशा पिलाकर फूलों, सब्ज़ाज़ार, परिन्दों और मख़मल जैसी घास की जो बातें की थीं वह इन चारों के ज़ेहन में बहिश्त का तसव्वुर पैदा करने की कोशिश की थी। हसन बिन सबाह का तरीका था कि लोगों को हशीश पिलाकर उनके ज़ेहनों में बड़े हसीन तसव्वुरात पैदा किया करता और उन्हें अपने मकासिद के लिए इस्तेमाल करता था। अब एक सौ साल बाद शेख़ सन्नान उसका जानशीन था। यह गिरोह अब हशीशीन या फिदाई कहलाता था। बड़ी लड़की को इस काम की तरबियत हासिल थी। उसे यूं कह लें कि हशीश और बातों की मदद से अपने शिकार या मामूल को हिप्नोटाइज़ कर लिया जाता था। जितनी देर हशीश का नशा रहता वह आदमी उसी तसव्वुर को हकीकत समझता रहता था जो उस के ज़ेहन में पैदा किया जाता था।

अल्नासिर और उसके साथियों को उस लड़की ने अपने कब्ज़े में लेकर एक मकसद तो यह हासिल करना चाहा कि यह चार उन पर दस्त दराज़ी न करें या उन्हें अपने साथ न ले जाएं। दूसरा मकसद उस वक़्त उसके सामने आया था जब उसे पता चला कि यह सुल्तान अय्यूबी के उन छापामार जासूसों में से हैं जिनकी उसने बहुत शोहरत सुनी और जिनसे उसे डराया भी गया था। उसके तख़रीबकार फ़न ने सोच लिया कि इन आदमियों को शेख़ सन्नान के हवाले किया जाए। यह उसके काम आ सकते थे। उन दिनों सुल्तान अय्यूबी को कत्ल करने का एक मंसूबा तैय्यार हो रहा था। उसी मकसद के लिए हरान का ख़ुद मुख़्तार हुक्मरान गुमश्तगीन किला इस्याब में शेख़स सन्नान के पास गया हुआ था।

❖

तुर्कमान में मुज़फ़्फ़र-उद्दीन के हम्ले नाकाम करके सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों से कहा कि अब जंग ख़त्म हुई है। उसने माले ग़नीमत समेटने का हुक्म दे दिया। माले ग़नीमत बे अन्दाज़ था। ग़ाज़ी सैफुद्दीन के रिहाईशी कैम्प से बे अन्दाज़ सोना और नकदी मिली थी। दुश्मन की लाशों से भी नकदी और अंगूठी वग़ैरह की शकल में सोना मिला। फिर साज़ो सामान और अस्लेहा का कोई शुमार न था। सुल्तान अय्यूबी ने फ़ौज के काम का सामान फ़ौज को तकसीम कर दिया। दूसरा हिस्सा दमिश्क और उन इलाकों के ग़रीबों में तकसीम करने का हुक्म दिया जो मिस्र और शाम की सल्तनत (वहदत) में आ चुके थे। तीसरा हिस्सा मदरसा निज़ामुल मुल्क को दे दिया। एक यूरोपी मोअर्रिख़ लेन पोल के मुताबिक सुल्तान अय्यूबी ने उसी मदरसे में तालीम हासिल की थी। यह मोअर्रिख़ लिखता है कि तारीख़ में वाज़ेह शहादत मिलती है कि सुल्तान अय्यूबी ने माले ग़नीमत में से अपने लिए कुछ भी न रखा।

दूसरा मसला जंगी कैदियों का था। यह सब मुसलमान थे। सुल्तान अय्यूबी ने उन्हें इकठ्ठा करके कहा कि तुम मुसलमान हो और मुसलमानों के ख़िलाफ़ लड़ने आये थे।

तुम्हारी शिकस्त की वजह यही है। तुम्हारे हुक्मरान मज़हब के बदतरीन दुश्मन के साथ दोस्ती करके उसके हाथ मज़बूत कर रहे हैं। तुम्हारी दुनिया भी ख़राब हुई और आक़िबत भी। अपने गुनाह बख़्शवाने का यह एक तरीक़ा है कि इस्लाम के सिपाही बन जाओ और अपने क़िब्ला अव्वल को आज़ाद कराओ। ......सुल्तान अय्यूबी की यह तकरीर जोशिली और जज़्बाती थी। जंगी कैदियों में बहुत से नारे लगाने लगे। उन्होने अपने आप को सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज में पेश कर दिया। इस तरह सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज में तरबियत याफ़्ता सिपाहियों और ओहदेदारों का इज़ाफ़ा हो गया। इसके बावजूद सुल्तान अय्यूबी ने पेशक़दमी मुल्तवी कर दी। फौज की तंज़ीम नौ की ज़रूरत थी। उसने दमिश्क़ और क़ाहिरा से कुमुक भी मंगवा भेजी थी। ज़ख़्मियों के इलाज का उसने वहीं इन्तज़ाम कर दिया था। दरअसल मुज़फ़्फ़र–उद्दीन के तसादुम ने उसकी हालत कुछ ज़्यादा ही ख़राब कर दी थी।

❖

इस्यियात का किला आज के लेबनान की सरहद के अन्दर था। एक मिस्री वकाअ निगार मुहम्मद फरीद अबू हदीद की तहरीर के मुताबिक़ क़िला इस्यिाब हसन बिन सबाह के फ़िर्के हशीशीन का मरकज़ और मुस्तक़र था। इस किले में शेख़ सन्नान की हुक्मरानी थी जो हसन बिन सबाह का जानशींन था। उस क़िले में उस ने कुछ फ़ौज भी रखी हुई थी। इस्यिाब ज़रा बड़ा किला था। उससे दूर दूर तीन चार छोटे छोटे क़िले भी थे जो शेख़ सन्नान के हशीशीन के पास थे। उन्हें यह क़िले सलीबियों ने दे रखे थे। सलीबियों की कोशिश यह थी कि हशीशीन को मुसलमान कायदीन को क़त्ल के लिए और मुसलमान कौम की किरदार कुशी के लिए इस्तेमाल किया जाए, लेनिक हशीशीन जो इस्लाम का एक फ़िर्क़ा बनकर उभरना चाहते थे, किराये के क़ातिल बन के रह गये थे। उन्होंने सलीबी लीडरों को भी क़त्ल किया था। उन्हें नकदी दे कर कोई भी इस्तेमाल कर सकता था। सुल्तान अय्यूबी के दौर में सलीबियों ने उन्हें इतनी मुराआत दीं कि उन्हें किले तक दे दिए। वह उनके हाथों नुरूद्दीन ज़ंगी और सलाहुद्दीन अय्यूबी को क़त्ल कराने की कोशिश करते रहे।

नुरूद्दीन ज़ंगी की मौत के मुतअल्लिक़ मेजर जनरल मोहम्मद अकबर ख़ान रंगरूट ने बाज़ मोअर्रिख़ों के हवाले से लिखा है कि हशीशीन की कारस्तानी थी। उसे धोखे में कुछ खिला दिया गया था जिस से वह चन्द दिनों बाद फौत हो गया। अब सलाहुद्दीन अय्यूबी को क़त्ल करने के मंसूबे बन रहे थे। हशीशीन सलीबियों के हाथों में खेल रहे थे।

उस सुबह सूरज अभी नहीं निकला था जब अल्नासिर और उसके तीन साथी दो सलीबी लड़कियों के साथ इस्यिाब के किले के दरवाज़े पर जा रूके। बड़ी लड़की ने कोई ख़ुफ़िया अल्फ़ाज़ बोले। थोड़ी देर बाद किले का दरवाज़ा खुल गया और यह क़ाफ़िला अन्दर चला गया। अल्नासिर और उसके साथियों को किसी के हवाले करके लड़कियाँ शेख़ सन्नान के पास चली गयीं। वह हर पहलू से बादशाह था। उसका अन्दाज़ और उसकी शान व शौकत बादशाहों जैसी थी। उसे यह एहसास हीं नहीं था कि वह बूढ़ा हो चुका था। उसे जब बड़ी लड़की बता रही थी कि वह कहाँ से आई है और उनके दोस्त सैफुद्दीन पर क्या बीती है, शेख़

सन्नान की नज़रें छोटी लड़की पर जमी हुई थीं।

"यहाँ आओ।" शेख़ सन्नान ने बड़ी लड़की से तवज्जो हटाकर छोटी को अपने पास बुलाया और कहा– "तुम ज़रूरत से ज़्यादा ख़ूबसूरत हो। मेरे पास बैठो।" लड़की को बाज़ूसे पकड़ कर अपने पास बैठा लिया और उंगलियां उसके बालों में फेरने लगा। बोला– "तुम बहुत थकी हुई हो। आज मेरे पास आराम करना।"

इस लड़की ने शेख़ सन्नान को पहली बार देखा था। लड़की ने उसे घूर कर देखा जैसे बूढ़े की हरकत उसे पसन्द न आई हो। वह सरक कर उससे दूर हट गयी। शेख़ सन्नान ने उसे फिर बाज़ू से पकड़ा और इस तरह झटका देकर अपने क़रीब कर लिया जैसे लड़की ने परे सरक कर उसकी तौहीन कर दी हो। उसने बड़ी लड़की से कहा– "इसे हमारे मुतअल्लिक़ किसी ने नहीं बताया कि हम कौन हैं और हमारी तौहीन कितना बड़ा जुर्म है?"

"मैं आपकी लौंडी नहीं।" छोटी लड़की भड़कर बोली– "मेरे फ़राइज़ में यह शामिल नहीं कि जो मुझे घसीट कर अपने साथ लगा ले मैं अपना आप उसी के हवाले कर दूँ।" वह उठ खड़ी हुई और बोली– "मैं सलीब की ग़ुलाम हूं हशीशीन की ख़रीदी हुई लौंडी नहीं।"

बड़ी लड़की ने उसे डांट दिया और ख़ामोश रहने को कहा वह ख़ामोश न हुई और कहने लगी– "मुझे मुसलमानों के हरम में इस शख़्स ने नहीं देखा। मैंने कोई कोताही नहीं की। मैंने तुम्हारे साथ सैफुद्दीन और उसके मुशीरों की अक़्ल पर पर्दा डाले रखा है लेकिन मेरे फ़राइज़ में यह शामिल नहीं कि इस बूढ़े के कमरे में रहूं।"

"अगर तुम इतनी ख़ूबसूरत न होती तो हम तुम्हारी यह गुस्ताख़ी कभी माफ़ न करते।" शेख़ सन्नान ने कहा और बड़ी लड़की को हिदायात देने के अन्दाज़ में कहा– "इसे ले जाओ और इसे इस्यािब के क़िले के आदाब सिखाओ।"

बड़ी लड़की उसे बाहर छोड़ आई। उसने शेख़ सन्नान से कहा– "आपकी नाराजगी बजा है लेकिन हम अपने ऊपर वालों की इजाज़त के बग़ैर हर किसी का हुक्म नहीं मान सकतीं। मैं चूंकि आप को जानती हूं, इस क़िले में पहले भी आ चुकी हूं। अब आपके काम के चार आदमी फांस लाई हूं। आपको इस तरफ़ तवज्जो देनी चाहिए।" उसने शेख़ सन्नान को अल्नासिर और उसके साथियों के मुतअल्लिक़ पूरी तफ़सील सुनाई।

"मैं उन आदमियों से पूरा काम लूंगा।" शेख़ सन्नान ने कहा– "लेकिन मैं इस लड़की को अपने कमरे में ज़रूर रखूंगा।"

"यह काम मुझ पर छोड़ दें।" लड़की ने कहा– "वह कहीं भाग तो नहीं चली क्यों न मैं उसे आमादा कर लूं कि वह हंसी ख़ुशी आपके पास आये। आ जाएगी।"

❖

अल्नासिर और उसके साथियों को शेख़ सन्नान के दो आदमी अपने साथ ले गये थे। वह बेशक नशे में थे लेकिन सारी रात पैदल चलते रहे थे। उन्हें एक कमरे में ले गये। वह पलंगों पर गिरे और सो गये। उधर लड़कियां भी रात भर जागी हुई थीं, वह भी उस कमरे में जाकर सो गयीं जो उन्हें दिया गया था...... दोपहर के बाद अल्नासिर की आँख खुली। उसने इधर

उधर देखा। उसके साथी सोये हुए थे। उसने गर्दो पेश को पहचानने की कोशिश की। यह एक कमरा था। उसमें पलंग थे और पलंगों पर उसके तीन साथी गहरी नींद सोये हुए थे। उसे सब्ज़ा ज़ार, फूलों वाले पौधे, रंग बिरंगे परिन्दे और मख़मल की तरह की घास याद आयी। लड़कियां याद आयीं, सेहरा और सेहरा का बेरहम सफ़र याद आया। उसे वह ख़्वाब समझने लगा। सेहरा का सफ़र उसे हक़ीक़त की तरह याद था। लड़कियों से मुलाक़ात और उस के बाद के वाक़िआत उसे ख़्वाब या वाहिमे लगे मगर वह अब कहाँ हैं? यह सवाल उसे मुज़्तरिब करने लगा।

उसने अपने साथियों को न जगाया। उठा और दरवाज़े में जा खड़ा हुआ। यह कोई क़िला था। उसे सिपाही आते जाते नज़र आ रहे थे। वह किस फ़ौज के थे? यह कौन सा क़िला था? उसने किसी से पूछना मुनासिब न समझा। क़िला दुश्मन का हो सकता था तो क्या वह अपने साथियों के साथ क़ैद हो गया है? लेकिन यह कमरा क़ैदख़ाने का नहीं था। वह जासूस और छापामार था। उसने किसी से पूछे बग़ैर यह मामिला हल करने का इरादा किया। उसे कोई ख़तरा महसूस होने लगा था। दरवाज़े से हटकर पलंग पर जा बैठा। बाहर उसे क़दमों की आहट सुनाई दी। उसने आँखें बन्द कर लीं और ख़र्राटे लेने लगा। दो आदमी कमरे में दाख़िल हुए।

अभी सोये हुए हैं।" एक आदमी ने दूसरे से कहा।

"सोया रहने दो।" दूसरे ने कहा– "मालूम होता है उन्हें कुछ ज़्यादा पिला दी गयी है... इनके मुतअल्लिक़ क्या बताया गया है?"

"दो सलीबी लड़कियाँ। इन्हें फांस कर लाई हैं।" पहले ने जवाब दिया– "यह सलाहुद्दीन अय्यूबी के छापामार जासूस हैं। बहुत दिलेर और अक़्लमन्द बताये जाते हैं। इन्हें तैय्यार करना है।"

वह दोनों चले गये। अल्नासिर का रोवां–रोवां बेदार हो गया। उसे यक़ीन होने लगा कि वह बहुत बड़े धोखे का शिकार हो गया है। उसे अब यह मालूम करना था कि यह कौन सा क़िला है। किस इलाक़े में है और उसे और उसके साथियों को किस मक़सद के लिए तैय्यार किया जाएगा। वह इस तल्ख़ हक़ीक़त को जान गया था कि किसी क़िले से फ़रार होना मुश्किल ही नहीं नामुम्किन है।

लड़कियों के कमरे में यह कैफ़ियत थी कि छोटी लड़की थोड़ी देर सोकर जाग उठी थी और खिड़की खोल कर उसमें बैठी थी। उसने सफ़र के दौरान बड़ी लड़की के सामने अपने जज़्बात का इज़हार किया था। वह नौजवान थी। अभी पुख़्ताकार नहीं हुई थी। अपने जैसी दूसरी लड़कियों की तरह वह अभी अपने जज़्बात को दबा नहीं सकती थी। उसे पहली बार बाहर भेजा गया था। उसके साथ यह लड़की थी जो तजुर्बाकार थी। उसने भी देखा था कि यह छोटी लड़की इस जिन्दगी में कामयाब नहीं हो रही। उसे मर्दों को उंगलियों पर नचाने का फ़न नहीं आया था। उसने दरअसल इस फ़न को कबूल ही नहीं किया था। बूढ़े बूढ़े सालारों ने और सैफ़ुद्दीन ने उसे खिलौना बनाये रखा था। अब वह मैदाने जंग से भागकर

आई और इतनी कठिन और सब्र आज़मा मुसाफ़त तय की, रात भर सफ़र किया मगर आते ही शेख़ सन्नान जैसे बूढ़े ने उसे कह दिया कि मेरे कमरे में रहो।

बेशक उसे बचपन से इस ग़लीज़ तरज़े ज़िन्दगी की तरबियत दी गयी थी लेकिन जवानी में आकर उसके अपने जज़्बात का सर चश्मा फूटा तो इतने लम्बे अर्से की तरबियत के असरात धुल गये। जिन इन्सानों को उसे फांसने और सलीब के जाल में उलझाये रखने के लिए तैय्यार किया गया था इन इन्सानों से उसे नफ़रत हो गयी और अपने पेशे को वह हिक़ारत की नज़रों से देखने लगी। वह खिड़की के सामने बैठी बड़े तल्ख़ ख़्यालों में उलझी हुई थी। उसके आंसू निकल आये। उसे न कोई पनाह दिखाई दे रही थी न कोई राहे फ़रार।

बड़ी लड़की जाग उठी। अपनी साथी को खिड़की में बैठा देखकर उसके पास जा बैठी। उसकी आंखों में आंसू देखकर बोली– "इब्तेदा में जज़्बात की यही हालत होती है। हम जो कुछ कर रही हैं यह अपनी अय्याशी के लिए नहीं सलीब की हुक्मरानी के क़याम के लिए कर रही हैं। अपने सामने यह मक़सद रखो कि इस्लाम का नाम व निशान मिटाना है। हमारे सिपाही अपने मुहाज़ पर लड़ते हैं हमें अपने मुहाज़ पर लड़ना है। अपने ज़ेहन को वुसअत दो। अपने जिस्म से दस्तबरदार हो जाओ। तुम्हारी रूह पाक है।"

"मुसलमान अपनी लड़कियाँ इस तरह इस्तेमाल क्यों नहीं करते जिस तरह हमें किया जा रहा है?" छोटी लड़की ने पूछा– "हमारे बादशाह और उनकी फ़ौजें मुसलमानों की तरह क्यों नहीं लड़तीं? चोरों की तरह मुसलमानों को क़त्ल क्यों कराया जाता है? सलाहुद्दीन अय्यूबी के इन चार छापामारों की तरह सलीब की फ़ौज क्यों ऐसे छापामार तैय्यार नहीं करती? सिर्फ इसलिए कि हमारी क़ौम में बुज़्दिली है। चोरी छुपे वार करने वाले बुज़्दिल हुआ करते हैं।"

बड़ी लड़की सिटपिटा उठी और बोली– "ऐसी बातें किसी और के सामने न कर बैठना वरना क़त्ल हो जाओगी। इस वक़्त हम शेख़ सन्नान के पास हैं। इससे हमें बहुत बड़ा काम लेना है। उसे नाराज़ न करो।"

"मुझे इस शख़्स से नफ़रत हो गयी है।" छोटी लड़की ने कहा– "यह मुल्क का बादशाह नहीं किराये के क़ातिलों का सरग़ना है। मैं इसे इस क़ाबिल नहीं समझती कि मेरे जिस्म को हाथ भी लगाये।"

बड़ी लड़की ने बहुत देर के बहस के बाद इस पर आमादा कर लिया कि वह शेख़ सन्नान के साथ अच्छी तरह बातें करे। उसने छोटी को यक़ीन दिलाया कि वह शेख़ को उसका लालच और वादा दिए रखेगी। उसने छोटी लड़की से कहा– "तुमने मेरे कमालात देखे नहीं? मैं इन बादशाहों को मुट्ठी में लेकर उन्हें गुमराह करना जानती हूं। शेख़ सन्नान को तो मैं कुछ नहीं समझती।"

"क्या तुम ऐसी सूरत पैदा कर सकती हो कि हम यहाँ से जल्दी निकल जाएं?" छोटी लड़की ने पूछा।

"कोशिश करूंगी।" बड़ी लड़की ने जवाब दिया– "पहले तो अपने मुतअल्लिक़ यह

इत्तलाअ भेजवानी है कि हम यहाँ हैं।'

इतने में दो आदमी कमरे में आये। उन्होंने लड़कियों से इन चार आदमियों के बारे में पूछा। बड़ी लड़की ने उन्हें बताया कि वह कौन हैं और उन्हें किस तरह और क्यों लाया गया है।

"वह किस हाल में हैं?" बड़ी लड़की ने पूछा।

"अभी सोये हुए हैं।" एक आदमी ने जवाब दिया।

"उन्हें कैद में डाल दोगे?" छोटी लड़की ने पूछा।

"कैदखाने में डालने की ज़रूरत नहीं।" उस आदमी ने जवाब दिया– "यहाँ से भागकर कहाँ जायेंगे।"

"क्या हम उन्हें देख सकती हैं?" छोटी लड़की ने पूछा।

"क्यों नहीं।" उसे जवाब मिला–"वह तुम्हारा शिकार है। उन्हें देखो। बल्कि ज़रूरत भी यही है कि तुम उनके पास जाओ और उन्हें अपने जाल में लिए रखो।"

कुछ देर बाद छोटी लड़की बड़ी के रोकने के बावजूद उस कमरे में चली गयी अल्नासिर और उसके साथी सोये हुए थे। अल्नासिर दरअसल जाग रहा था। छोटी लड़की को देखकर वह उठ बैठा और पूछा– "हमें कहाँ ले आई हो?" मुझे यह बताओ कि तुम कौन हो, क्या हो और कौन सी जगह है?"

छोटी लड़की ने अल्नासिर को बड़ी गौर से देखा। उसके ज़ेहन से बगूला सा उठा। यह जज़्बात का बगूला था। उसने सरगोशी में अल्नासिर से पूछा– "फरार होना चाहते हो?"

"मैं यह नहीं बताऊंगा कि मैं क्या करना चाहता हूं।" अल्नासिर ने जवाब दिया–"मुझे जो कुछ करना होगा उसे करके दिखाऊंगा।"

लड़की उसके करीब आ गयी। धीमी आवाज़ में बोली– "मैं जिन्न नहीं इन्सान हूं। मुझ पर भरोसा करो।"

अल्नासिर ने उसे कहर भरी नज़रों से देखा। लड़की उसके साथ पलंग पर बैठ गयी।

❖❖

लड़की ने अपनी लाश देखी

जिन्नात की दहशत अल्नासिर के दिल व दिमाग़ पर बदस्तूर तारी थी। अरब का यह ख़ुबरू जवान सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के उन छापामारों में से था जो मौत की आखों में आंखे डाल कर देखा करते थे। सलीबियों का यह कहना था कि सुल्तान अय्यूबी के छापामारों से मौत भी डरती है। सेहराओं की सऊबतों को, दरियाओं की तुन्दी को, और संगलाख़ वादियों को ख़ातिर में न लाने वाले यह जांबाज़ आग में भी कूद जाया करते थे। यह हकीक़त है कि दुश्मन की रस्द वग़ैरह को आग लगाकर इनमे से बाज़ शोलों की लपेट में आकर जिन्दा जल जाया करते थे, मगर जिन्नात और भूत प्रेत ऐसी मख़लूक़ थी जिससे यह सरफ़रोश डर जाया करते थे। इनमें से किसी ने कभी जिन्न और भूत नहीं देखे थे, सिर्फ कहानियाँ और रिवायतें सुनी थीं जिन्हें वह सौ फिसद सच मानते थे और दिल पर जिन्नात का ख़ौफ़ तारी किये रखते थे।

अगर अल्नासिर इस्यिात तक अपनी मर्ज़ी से और अपनी होश में सफ़र करता तो वह इतना डरा हुआ न होता। अगर उसे कैदी बनाकर लाया जाता तो भी वह निडर रहता और फ़रार की तरकीबें सोंचता, लेकिन उसे हशीश के नशे में और उसके ज़ेहन में ग़ैर हक़ीकी तसव्वुरात डाल कर लाया गया था। अब नशा उतर चुका था। इस नशे में वह सब्ज़ाज़ार और बाग़ात में से गुज़र कर आया था। उसे याद आने लगा कि ज़मीन के इन ख़ित्ते में कहीं-कहीं सब्ज़ा और बाग़ हो सकता है मीलों वसीअ इलाक़ा ऐसा जन्नत नुमा नहीं हो सकता। अब उसके पलंग पर वह लड़की आ बैठी थी जिसे वह जिन्न समझा था। लड़की उसके तसव्वुरों से ज़्यादा ख़ूबसूरत थी। अल्नासिर उसे इन्सान तसव्वुर करने पर आमादा नहीं हो रहा था। लड़की ने उसे कहा कि वह उस पर भरोसा करे तो वह और ज़्यादा डर गया। उसने यह भी सुन रखा था कि जिन्नात बड़े दिलकश धोखे देरक मारा करते हैं। उसे यह किला जिन्नात या बदरूहों का मस्कन मालूम होने लगा। उसके साथी अभी गहरी नींद सोये हुए थे।

उसने दिल को हौसला देकर लड़की से पूछा– "मैं तुम पर क्यों भरोसा करूं? तुम मुझ पर इतनी मेहरबान क्यों हो गयी हो? हमें यहाँ क्यों ले आई हो? यह जगह क्या है?"

"अगर तुम मुझ पर भरोसा नहीं करोगे तो तुम्हारा अन्जाम बहुत बुरा होगा।" लड़की ने जवाब दिया– "तुम भूल जाओगे कि तुम कौन थे। तुम्हारे हाथ तुम्हारे अपने भाइयों के ख़ून से रंगे हुए होंगे, और तुम उस ख़ून को फूल समझ कर ख़ुश होगे। मैं अभी तुम्हें इस सवाल का जवाब नहीं दे सकती कि मैं तुम पर इतनी मेहरबान क्यों हो गयी हूँ। यह जगह एक किला है जिसका नाम इस्यिात है, यह फ़िदाइयों का किला है। यहां फ़िदाइयों का पैग़म्बर शेख़ सन्नान

रहता है। फ़िदाइयों को तुम जानते हो?"

"हां जानता हूँ।" अल्नासिर ने जवाब दिया– "बहुत अच्छी तरह जानता हूं, और अब यह भी जान गया हूँ कि तुम कौन हो। तुम भी फ़िदाई हो। मैं जानता हूं कि फ़िदाइयों के पास तुम जैसी ख़ूबसूरत लड़कियाँ होती हैं।"

मेरा इन लोगों के साथ कोई तअल्लुक नहीं।" लड़की ने जवाब दिया– "मेरा नाम लिज़ा है।"

"तुम्हारे साथ एक और लड़की थी।"

"उसका नाम थेरिया है।" लिज़ा ने जवाब दिया–"वह यहीं है। तुम्हें यहाँ तक हशीश के नशे में लाया गया है।"

वह इस से ज़्यादा न बोल सकी क्योंकि कमरे के दरवाज़े में अचानक थेरिया आ खड़ी हुई थी। थेरिया ने लिज़ा से सर के इशारे से बाहर बुलाया। लिज़ा बाहर निकल गयी।

"यहाँ क्या कर रही हो?" थेरिया ने पूछा– "उस शख़्स के इतनी क़रीब बैठकर तुम्हें ख़्याल न आया कि मुसलमान काबिले नफ़रत होते हैं? क्या तुम ग़द्दारी के जुर्म का इर्तकाब करना चाहती हो?"

लिज़ा का ज़ेहन खाली हो गया। उसकी ज़ुबान पर कोई जवाब न आया। वह जज़्बाती लिहाज़ से अपने पेशे यानी मुसलमान उमरा की किरदारकुशी से मुतनफ़िर हो गयी थी। यह नफ़रत इस हद तक पहुंच गयी थी जहाँ इन्सान अपने रद्दे अमल मे बेक़ाबू हो जाता है और वह इन्तक़ाम की राह इख़्तियार कर लेता है या फ़रार की।

"मैं भी जवान लड़की हूँ।" थेरिया ने कहा– "मुझे भी मुसलमान छापामार जिसका नाम अल्नासिर है अच्छा लगता है। यह दिलकश जवान है। अगर तुम यह कहो कि तुम्हारे दिल में उतर गया है तो मैं हैरान नहीं हूंगी। मुझे यह एहसास भी है कि तुम्हारे दिल में इन बूढ़े मुसलमान उमरा उनके सालारों के ख़िलाफ़ नफ़रत है जिनके हाथों में तुम खिलौना बनी रही हो, मगर अपने फ़र्ज़ को सामने रखो, सलीब की अज़मत को सामने रखो। यह मुसलमान तुम्हारे दुश्मन हैं।"

"नहीं थेरिया।" लिज़ा ने परेशान लहजे में कहा– "मुझे इसके साथ वह दिलचस्पी नहीं है जो तुम समझ रही हो।"

"फ़िर इसके पास क्यों आ बैठी थीं?"

"मैं अच्छी तरह बयान नहीं कर सकती।" लिज़ा ने उकताये हुए लहजे में जवाब दिया– "मालूम नहीं ज़ेहन में क्या आया था कि मैं उसके पास आ बैठी।"

"उसके साथ क्या बाते हुइ हैं?"

"कोई ख़ास बाते नहीं हुई।" लिज़ा ने कहा।

"तुम अपने फ़र्ज़ में कोताही कर रही हो।" थेरिया ने कहा– "यह ग़द्दारी भी है जिस की सज़ा मौत है।"

"लेकिन सुन लो थेरिया!" लिज़ा ने कहा–"मैं इस बूढ़े शेख़ सन्नान के पास अकेली नहीं जाऊंगी अगर उसने जबरदस्ती की तो उसे या अपने आप को ख़त्म कर लूंगी।"

हर किसी के दिल को भाती है और जिसे हर कोई अपनी मिल्कियत में रखना चाहता है लेकिन पत्थर की अपनी कोई पसन्द या नापसन्द नहीं होती। लिज़ा अभी उस मुकाम से बहुत दूर थी जहाँ औरत अपने जज़्बात और अपनी मोहब्बत और नफ़रत से दस्तबरदार हो जाया करती है।

थेरिया ने उसे कहा– "मुझे बिल्कुल अन्दाज़ा नहीं था कि तुम इतनी ज़्यादा जज़्बाती हो जाओगी वरना यहाँ न आती। मगर यही एक किला था जो करीब था। त्रीपोली तक हमारा पहुँचना मुम्किन नहीं था। मैंने तुमसे वादा किया है कि शेख़ सन्नान से तुम्हें बचाने की पूरी कोशिश करूंगी और यहाँ से जल्दी निकलने की भी कोई सूरत पैदा करूंगी। तुम अपने कैदी में इतनी दिलचस्पी का मुज़ाहिरा न करो।"

"सच बतादूँ थेरिया।" लिज़ा ने कहा– "मैं इन छापामारों को यहाँ से फ़रार के लिए इस्तेमाल करना चाहती हूँ। तुम न ख़ुद यहाँ से निकल सकोगी न मुझे निकाल सकोगी। यह छापामार हैं जिन की बहादुरी की मैंने हैरानकुन कहानियाँ सुन रखी हैं। उन्हें अगर ज़रा सा भी मौका फराहम किया गया तो यह फ़रार हो जाएंगे और मुझे और तुम्हें भी साथ ले जायेंगे। इसके सिवा और कोई तरीका नहीं।"

"मैं इन की उस्तादी और बहादुरी को मानती हूँ।" थेरिया ने कहा– "लेकिन तुमने यह नहीं सोंचा कि हम दोनों या तुम अकेली इनके साथ निकल गयी तो यह तुम्हें अपने साथ ले जायेंगे, हमे हमारी मंज़िल पर नहीं पहुंचाएंगे। झूठे सहारे तलाश करने की कोशिश न करो. ....और सुनो!" थेरिया ने कहा– "नहा लो और कपड़े बदल लो। आज रात के खाने पर शेख़ सन्नान ने हमें मदुअ किया है। मैं तुम्हें बताउंगी कि उसके साथ तुम्हारा सलूक और रवैया कैसा होगा। उसपर यह ज़ाहिर करना है कि तुम उसे नापसन्द नहीं करती और उससे भागने की भी नहीं सोंचोगी। मुझे अभी मालूम हुआ है कि हरान का ख़ुद मुख़्तार मुसलमान हाकिम गुमश्तगीन भी आया हुआ है। तुम्हे अच्छी तरह मालूम है कि गुमश्तगीन सलाहुद्दीन अय्यूबी का सबसे बड़ा दुश्मन है। उसे अपना दोस्त समझना। हमने बड़ी मुश्किल से इन मुसलमान हुक्मरानों को अपने हाथ में लिया और उन्हें सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ा रहे हैं।"

❖

लिज़ा को थेरिया जब अपने साथ ले गयी तो अल्नासिर गहरी सोंच में डूब गया। उसे किसी हद तक यकीन आ गया था कि लड़कियाँ जिन्नात नहीं लेकिन लिज़ा का उस पर मेहरबान हो जाना उसे परेशान करने लगा। लिज़ा ने उसे बता दिया था कि उसे और उसके साथियों को हशीश के नशे में यहाँ तक लाया गया है। इससे वह समझ गया कि यह लड़कियाँ फ़िदाइयों के गिरोह की हो सकती हैं। उसे यह शक भी होने लगा कि उसे हशीश के अलावा इस नौजवान और ख़ूबसूरत लड़की के ज़रिए अपने हाथ में लेने और अपने मकसद के लिए इस्तेमाल करने की कोशिश की जा रही है। वह चूंकि छापामार था जिसे दुश्मन के इलाकों में जाना होता था, इसलिए उसे फ़िदाइयों और उनके तौर तरीकों के मुतअल्लिक और हशीश

के असरात के मुतअल्लिक ख़ास तौर पर बताया गया और ख़बरदार किया गया था।

उसने अपने साथियों को जगाया। जागकर वह भी उसी तरह हैरना हुए जिस तरह अल्नासिर हुआ था। वह तीनों अल्नासिर के मुंह की तरफ देखने लगे।

"दोस्तो!" अल्नासिर ने उन्हें कहा– "हम फ़िदाइयों के जाल में आ गये हैं। इस किले का नाम इस्यािज है। यहां फ़िदाई और उनकी फौज रहती है। यह लड़कियाँ जिन्नात नहीं हैं। मैं अभी बता नहीं सकता कि हमारे साथ क्या सलूक होगा। हमें एहतियात करनी पड़ेगी। तुम सब जानते हो कि फ़िदाई क्या तरीके इख़्तियार करते हैं। अगर मुझे इस कमरे से बाहर निकलने का मौका मिला तो किले से फरार की कोई तरकीब सोंच लूंगा। तुम ख़ामोश रहना। यह लोग कुछ पूछें तो उन्हें बहुत थोड़ा जवाब देना। इन शैतानों से बचना आसान नहीं होता।"

"क्या यह हमें कैद में डाल देंगे?' अल्नासिर के एक साथी ने पूछा।

"अगर कैद में डाल देंगे तो हमें खुश होना चाहिए।" अल्नासिर ने जवाब दिया– "मगर यह लोग हशीश और लड़कियों के ज़रिए हमारे ज़ेहन इस तरह बदल देंगे कि हमें याद ही नहीं रहेगा कि हम कौन थे और हमारा मज़हब क्या था।"

"मुझे फरार के सिवा और कोई ज़रिये निजात नज़र नहीं आता।" अल्नासिर के एक साथी ने कहा।

"हम मरना पसन्द करेंगे ईमान ख़राब नहीं होने देंगे।" एक और ने कहा।

"होशियार रहना।" अल्नासिर ने कहा– "अल्लाह पर छोड़ दो। हम इतनी जल्दी उनके कब्ज़े में नहीं आयेंगे।"

शाम गहरी होने लगी थी। एक आदमी दो जलती कंदीलें कमरे में रख गया। उसने इनके साथ कोई बात न की। उन्हें भूख ने परेशान कर रखा था। इनके कमरे से दूर किले के एक हिस्से में सन्नान का महल था जहाँ औरत और शराब की रौनक थी। सन्नान के ख़ुसूसी कमरे में खाने चुने हुए थे। शराब की सुराहियां रखी थीं। रंगा रंग खानों की महक से दरो दिवार मख़्मूर हुए जा रहे थे। खाने पर शेख़ सन्नान बैठा था। उसके एक तरफ थेरिया और दूसरी तरफ लिज़ा बैठी थी और उनके सामने गुमश्तगीन बैठा खाना खा रहा था।

गुमश्तगीन के मुतअल्लिक कई बार बताया जा चुका है कि वह हरान नाम के एक किले का गवर्नर (किलादार) था। नुरूद्दीन ज़ंगी के वफ़ात के बाद उसने ख़ुद मुख़्तारी का एलान करके हरान किले और गिर्द व नवाह के इलाके को अपनी रियासत बना लिया था। वह सुल्तान अय्यूबी के मुसलमान दुश्मनों (अल्मुलकुस्सालेह और सैफुद्दीन) का इत्तेहादी था। उसने भी अपनी फ़ौज मुत्तहदा फ़ौज में शामिल की थी जिसे सुल्तान अय्यूबी ने शिकस्तें फ़ाश दी थी। गुमश्तगीन ख़ुद अपनी फ़ौज के साथ नहीं गया था। तीनो अफ़वाज का सुप्रीम कमाण्डर सैफुद्दीन था। गुमश्तगीन ने अपने इत्तेहादियों की तरह सलीबियों से दोस्ताना गांठ रखा था। सलीबियों ने उन्हें फौज की सूरत में तो अभी कोई मदद नहीं दी थी, अपने मुशीर, जासूस और तख़रीबकार दे रखे थे और उन्हें अपने हाथ में रखने के लिए आला किस्म

की शराब, हसीन लड़कियाँ और रकम देते रहते थे।"

गुमश्तगीन को खुदा ने साज़िशी ज़ेहन दिया था। अपने दुश्मन पर वह ज़मीन के नीचे से वार करता था और अपने दोस्तों के ख़िलाफ़ भी दिल में दुश्मनी रखता था। उसे प्यार सिर्फ़ इक़्तेदार से था। वह अपनी रियासत के मुतअलक़ुअनान बादशाह बनकर रियासत में तौसीअ करने के ख़्वाब देखता रहता था। उसे जो कोई दोस्ताना मदद देता था, उसे भी वह शक की निगाहों से देखता था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के क़त्ल की कोशिशों में गहरी दिलचस्पी लेता था। उसे अच्छी तरह मालूम था कि इक़्तेदार पसन्द हुक्मरान का तख़्ता सिर्फ फ़ौज उलट सकती है। सुल्तान अय्यूबी ही एक सालार था जिसके दिल में क़ौमी जज़्बा मौअज़्ज़न था। उसकी जंगी काबिलियत के साथ उसका इमान उसकी कुव्वत था। गुमश्तगीन उसकी इस कुव्वत से डरता था। अब जबकि उसने अपनी फ़ौज सैफुद्दीन की कमान में देकर तुर्कमान रवाना कर दी थी वह किसी को बताये बेग़ैर शेख़ सन्नान के पास क़िला इस्यिात में आ गया था। वह यही मिशन लेकर आया था कि सुल्तान अय्यूबी के क़त्ल का कोई ऐसा इन्तज़ाम किया जाए जो पहली क़ातिलाना कोशिशों की तरह नाकाम न हो।

इस्यिा में वह अल्नासिर और थेरिया के पहुंचने से एक रोज़ पहले आया था। उसे अभी मालूम नहीं था कि सैफुद्दीन की ज़ेरेकमान उसकी फ़ौज का सुल्तान अय्यूबी के हाथों क्या हश्र हुआ है। वह अफ़वाज को रवाना करके अपने साज़िशी दौरे पर निकल गया और इस्यिात जा पहुंचा था।

❖

"गुमश्तगीन भाई!" शेख़ सन्नान ने उसे खाने के दौरान कहा– "तुम्हारे दोस्त तुर्कमान से भाग गये हैं।" उसने थेरिया से कहा– "उन्हें मैदाने जंग की तफ़सील सुनाओ।"

गुमश्तगीन को इस ख़बर से इतना सद्मा हुआ कि वह कुछ भीन बोला। उसका रंग उड़ गया और वह सद्मे और हैरत से थेरिया की तरफ देखने लगा। थेरिया ने उसे बताया कि सुल्तान अय्यूबी ने क़लील सी नफ़री से किस तरह मुत्तहदा अफ़वाज पर हम्ला किया और भगाया है। सैफुद्दीन के मुतअल्लिक़ थेरिया ने बताया कि उसके वहाँ से रवाना होने तक सैफुद्दीन मैदाने जंग से लापता था। गुमश्तगीन ख़ामोशी से सुनता रहा।

"मुझे मेरे दोस्तों ने ज़लील किया है।" गुमश्तगीन ने ग़ुस्से से कहा– "मैं सैफुद्दीन को तीनों फ़ौजो की कमान देने के हक़ में नहीं था। मगर मेरी किसी ने न सुनी। मालूम नहीं मेरी फ़ौज किस हालत में होगी।"

"बहुत बुरी हालत में।" थेरिया ने कहा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी के छापामारों ने आपकी फ़ौजों को इत्मीनान और ख़ैरियत से पस्पा भी नहीं होने दिया।"

"सन्नान भाई! तुम जानते हो मैं यहाँ क्यों आया हूँ।" गुमश्तगीन ने कहा।

"सलाहुद्दीन अय्यूबी के क़त्ल के लिए।" सन्नान ने कहा।

"हां!" गुमश्तगीन ने कहा– "आप जो मांगेगे पेश करूंगा। अय्यूबी को क़त्ल कराओ।"

"मैंने सलीबियों और सैफुद्दीन के कहने पर अय्यूबी के क़त्ल के लिए चार फ़िदाई भेज

रखे हैं।" सन्नान ने कहा– "लेकिन मुझे यक़ीन नहीं है कि वह उसे क़त्ल कर सकेंगे।"

"मुझसे अलग अपना इनाम लो।" गुमश्तगीन ने कहा– "नये आदमी दो, लेकिन यह आदमी मुझे दे दो। यह काम मैं ख़ुद कराऊंगा।"

"यह आख़िरी चार फ़िदाई हैं। जो मैंने भेजे हैं।" शेख़ सन्नान ने कहा–"मेरे पास क़ातिलों की कमी नहीं लेकिन मैं सलाहुद्दी अय्यूबी के क़त्ल से दस्तबरदार होता हूं।"

"क्यों?" गुमश्तगीन ने हैरान होकर पूछा– "अय्यूबी ने तुम्हें कोई क़िला दे दिया है?"

"नहीं!" सन्नान ने जवाब दिया– "इस शख़्स के क़त्ल के लिए मैं अपने बड़े क़ीमती फ़िदाई ज़ाया कर चुका हूं। मेरे फ़िदाईयों ने उस पर सोते में ख़ंजर से हम्ला किया मगर वह ख़ुद क़त्ल हो गये। एक बार उस पर तीर चलाये गये, वह भी ख़ता हो गये। मैं तो अब यह समझ बैठा हूं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी पर ख़ुदा का हाथ है। उसमें कोई ऐसी कुव्वत है कि उसपर न ख़ंजर असर करता है न तीर। मेरे जासूस ने मुझे बताया है कि अय्यूबी पर जब क़ातिलाना हम्ला होता है तो हम्ले को नाकाम करके वह घबराने या ग़ुस्से में आने के बजाए मुस्कुराता है और फ़ौरन भूल जाता है कि क्या हुआ था।

"मुझे अपनी उजरत बताओ।" गुमश्तगीन ने झुंझला कर कहा– "मैं अय्यूबी को जिन्दा नहीं देखना चाहता। तुमने अनाड़ी क़ातिल भेजे होंगे।"

"वह सब उस्ताद थे।" शेख़ सन्नान ने कहा– "उनसे कभी कोई बच कर नहीं गया था। वह मौत से डरने वाले नहीं थे। मेरे पास उनके भी उस्ताद मौजूद हैं। यह ऐसे तरीक़ों से क़त्ल करते हैं कि उनका कोई सुराग़ नही मिलता, लेकिन गुमश्तगीन! मैं अपने किमती फ़िदाइयों को यूं ज़ाया नहीं करूंगा....तुम तीन फ़ौजों से अय्यूबी को नहीं मार सके, मेरे तीन चार आदमी उसे किस तरह क़त्ल कर सकते हैं?"

"तुम अय्यूबी के क़त्ल से जो डर गये हो? उसकी वजह कुछ और होगी।"

"और वजह यह है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ मेरी कोई ज़ाती दुश्मनी नहीं।" सन्नान ने कहा– "हसन बिन सबाह ने तो पैग़म्बर बनना चाहा था लेकिन उसके मरने के बाद हमारा फ़िर्क़ा पेशेवर क़ातिल बन कर रह गया। मैं पेशावर क़ातिल हूं गुमश्तगी! अय्यूबी मुझे तुम्हारे क़त्ल के लिए उजरत देगा तो मैं तुम्हें भी क़त्ल करा दूंगा।"

"लेकिन सलाहुद्दीन अय्यूबी बुज़्दिलों की तरह किसी को क़त्ल नहीं कराता।" लिज़ा ने कहा– "यही वजह है कि वह बुज़्दिलों के हाथों क़त्ल नहीं होता।"

"ओह!" सन्नान ने लिज़ा को अपने बाज़ू के घेरे में लेकर प्यार से कहा– "तुमने इसी उम्र में जान लिया है कि जो बुज़्दिल नहीं होते उनका बुज़्दिल कुछ नहीं बिगाड़ सकते।" उसने गुमश्तगीन से कहा– "तुम सैफ़ुद्दीन और अल्मुलकुस्सालेह और सलीबी इसलिए एक दूसरे के दोस्त बने हुए हो कि सलाहुद्दीन के दुश्मन हो, वरना तुम्हारी आपस में कोई दोस्ती नहीं। मुझे यह बताओ कि अय्यूबी को क़त्ल करके तुम क्या हासिल कर सकोगे? वह मर गया तो आपस में लड़ोगे.......ग़ौर से सुनो गुश्मतगीन! अय्यूबी के क़त्ल के बाद तुम्हे सल्तनत से बालिश्त भर ज़मीन नहीं मिलेगी जो अय्यूबी ने क़ायम कर ली है। उसके भाई और उसके

सालार मुतहद हैं। तुम अगर किसी को कत्ल करना ही चाहते तो सैफुद्दीन को कत्ल करा दो और मुसिल पर कब्ज़ा कर लो। उसे तुम ख़ुद कत्ल कर सकते हो। वह तुम्हें अपना दोस्त और इत्तेहादी समझता है। उसे ज़हर दिला सकते हो। उसपर हम्ला करा सकते हो।"

गुमश्तगीन गहरी सोंच में खो गया, फिर बोला—"हां सैफुद्दीन को कत्ल करादो। बताओ क्या मांगते हो।"

"हरान का किला।" शेख़ सन्नान ने कहा।

"तुम्हारा दिमाग़ ठीकाने है सन्नान?" गुमश्तगीन ने कहा— "ज़र व जवाहरात की सूरत में अपनी कीमत बताओ।"

"ज़र व जवाहरात के एवज़ में तुम्हें चार आदमी देता हूं।" सन्नान ने कहा— "लेकिन यह मेरे फ़िदाई नहीं हैं, सुल्तान अय्यूबी के छापामार हैं। उन्हें यह दोनों लड़कियाँ हशीश के नशे में साथ लाई हैं। मैं उन्हें किसी के हवाले नहीं करना चाहता था। ऐसे तजुर्बाकार आदमी मिलते ही कहाँ हैं। इत्तफाक से आ गये हैं। तुम जानते हो कि हशीश और मेरी परियाँ उन्हें अपने रंग में रंग कर ऐसा कातिल बना लेंगी कि अपने मां बाप का भी ख़ून बहा आयेंगे। मैं तुम्हें मायूस नहीं करना चाहता। इनको ले जाओ। थोड़े दिन उन्हें अपनी जन्नत दिखाओ। उन्हें अपने हरम के शहज़ादे बना दो। उन्हें बताये बेग़ैर हशीश दो, फिर उन्हें शराब का आदी बना दो।" तुम्हारे इशारों पर नाचेंगे।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी के छापामार इतने कच्चे नहीं होते जितना तुम समझ रहे हो।" गुमश्तगीन ने कहा।

"तुम जानते हो गुमश्तगीन, हम फ़िदाई कहलाते हैं। इन्सानों के ज़ेहन के साथ खेलते हैं।" शेख़ सन्नान ने कहा— "हम अपने शिकार के ज़ेहन में दिलफरेब तसव्वुर डाल कर उसकी यह हालत कर देते हैं कि वह तसव्वुर को हकीकत समझने लगता है। किसी इन्सान के ज़ेहन में औरत का हसीन तसव्वुर पैदा कर दो और उसके साथ उसे नशा देते जाओ तो वह इस तसव्वुर का ग़ुलाम हो जाता है। इन्सान को औरत के तसव्वुरों में खोये रहने का आदी बनादो, फिर तुम उसका किरदार और उसका इमान बड़े कम दामों पर ख़रीद सकते हो...... .तुम इन चारों को ले जाओ। यह न सोंचो कि उन्हें तुम अपने मकसद के लिए इस्तेमाल नही कर सकोगे।" सन्नान ने मुस्कुराकर कहा—"अपने आप पर नज़र डालो। औरत, शराब और ऐश परस्ती तुम्हें कहाँ से कहां ले आई है। मुसलमान होकर तुम मुसलमानों के दुश्मन बने हुए हो।"

शेख़ सन्नान ने उसे अपनी कीमत बताई। सौदा तय हो गया कि गुमश्तगीन अल्नासिर और उसके साथियों को अपने साथ हरान ले जायेगा। सन्नान ने उसे बताया कि वह इन चारों को कैदखाने में न डाल दे बल्कि उन्हें शहज़ादे बनाकर रखे। गुमश्तगीन ने यह हिदायात सुनी और यह कह कर चला गया कि एक दो दिनों में वह इन छापामारों को ले जायेगा।

❖

गुमश्तगीन वहाँ से निकला तो शेख़ सन्नान का एक आदमी अन्दर आया। उसने पूछा कि

आज जो चार आदमी लाये गये हैं उनके मुतअल्लिक़ क्या हुक्म है।

"हरान का वालिये गुमश्तगीन आया हुआ है।" सन्नान ने कहा– "वह उन्हें साथ ले जा रहा है। उनके खाने और आराम वग़ैरह का इन्तज़ाम करो। हम उन्हें नहीं रखना चाहते। उन्हें यह न बताना कि उन्हें कहाँ भेजा जा रह है।"

यह आदमी चला गया। उसने अल्नासिर और उसके साथियों के लिए खाना भेजवाया। अल्नासिर ने खाने से इन्कार कर दिया। उसे शक था कि खाने में हशीश डाली गयी है। बहुत ही मुश्किल से यकीन दिलाया गया कि खाने मे कुछ नहीं मिलाया गया। अल्नासिर और उसके साथी भूख से बेहाल हुए जा रहे थे। अपने सामने इतना अच्छा खाना देखकर उन्होंने ने खाने का ख़तरा मोल ले लिया।

शेख़ सन्नान ने थेरिया से कहा वह चली जाए और लिज़ा को उसके पास छोड़ जाए। थेरिया ने उससे कहा कि वह तीन चार दिन मुसलसल सफ़र में रही हैं इसलिए आराम करेंगी। सन्नान में इन्सानियत कम और दरिन्दगी ज़्यादा थी। उसने लिज़ा के साथ पहले तो छेड़ छाड़ की जो लिज़ा थेरिया के कहने के मुताबिक़ बर्दाश्त करती रही और उससे गुलू ख़लासी करने के लिए बहाने भी तराशती रही। सन्नान ने दस्दराज़ी शुरू कर दी। लिज़ा का मिज़ाज बिगड़ने लगा। अचानक दरवाज़ा खुला। दरबान ने किसी की आमद की इत्तलाअ दी। सन्नान ने ग़ुस्से से कहा– "इस वक़्त कोई अन्दर नहीं आ सकता।" मगर अन्दर आने वाले ने उसके हुक्म की परवाह न की। वह दरबान को एक तरफ करके अन्दर आ गया।

वह एक सलीबी था जो उसी वक़्त क़िले में पहुंचा था। सन्नान उसे जानता था। उसे देखते ही सन्नान ने उसका नाम लिया और ख़ुशी का इज़हार किया लेकिन यह भी कहा– "तुम आराम करो। सुबह मिलेंगे।"

"मैं शायद सुबह ही आप के पास आ जाता।" सलीबी ने कहा– "लेकिन यहां आते ही पता चला है कि यह लड़कियां आई हैं, मुझे इनसे बहुत कुछ पूछना है। मैं इन्हे अपने साथ ले जा रहा हूँ।"

सन्नान ने थेरिया के कंधे पर हाथ रखकर कहा–"इसे ले जाओ।" और उस ने लिज़ा को अपनी तरफ़ घसीट कर कहा– "इसे मैं यहीं रखूंगा।"

"शेख़ सन्नन!" सलीबी ने क़दरे दबदबे से कहा– "मैं दोनों को ले जा रहा हूं। तुम जानते हो मैं किस काम से आया हूँ और तुम यह भी जानते हो कि इन लड़कियों के क्या फ़राईज़ हैं। तुम्हारे बग़ल में बैठना इनके फ़राईज़ में शामिल नहीं।" उसने लड़कियों से कहा– "दोनों मेरे साथ आओ।"

दोनों उचक कर उठीं और सलीबी के पास जा खड़ी हुई।

"क्या तुम मेरे साथ दुश्मनी का ख़तरा मोल लेना चाहते हो?" शेख़ सन्नान ने कहा– "तुम मेरे क़िले में हो, मैं तुम्हें मेहमान से क़ैदी भी बना सकता हूँ और तुम कोशिश कर रहे हो कि तुम्हें मेहमान से क़ैदी बना दिया जाए।" उसने गरज कर कहा– "इस लड़की को मेरे पास छोड़कर बाहर निकल जाओ।"

"सन्नान।" सलीबी ने तन्ज़िया लहजे में कहा– "क्या तुम भूल गये हो कि यह किला हमने दिया है? क्या तुम्हारे ज़ेहन से यह हक़ीक़त भी उतर गयी है कि हम तुम्हारी पीठपर हाथ न रखें तो तुम और तुम्हारे फ़िदाई किराये के क़ातिलों के सिवा कुछ भी नहीं रहेंगे?"

शेख़ सन्नान पर सिर्फ़ शराब का नशा तारी नहीं था वह इस किले का बादशाह था और वह किसी भी बादशाह को किसी वक़्त ऐसे तरीक़े से क़त्ल करा सकता था कि किसी को शक तक न होता कि क़ातिल सन्नान या उसका कोई फ़िदाई है। उसने सलीबी अफ़सर भी क़त्ल कराये थे। यह सलीबियों की आपस की अदावत का नतीजा था। उनका कोई जरनल या कोई और फ़ौजी या ग़ैरफ़ौजी अफ़सर अपने किसी हरीफ अफ़सर को क़त्ल कराने की ज़रूरत कभी महसूस करता तो इस मक़सद के लिए वह सन्नान की ख़िदमात हासिल किया करता था। इस्यिात के किले में रहते तो इन्सान थे लेकिन यह बदरूहों का किला मालूम होता था। इसके तहखनों में इन्सान गुम हो जाते थे। फ़िदाई पागल लगते थे। किसी का क़त्ल करना उनके लिए मुंह का निवाला लेने से ज़्यादा हैसियत नहीं रखता था। उसके महल का यह हुस्न था कि छतों और दिवारों में रंगारंग शीशों के टुकड़े जड़े हुए थे। फ़ानूसों की रौशनी से रंगारंग शुआएं निकलती थीं। यहाँ इन्सान भूल जाता था कि इस जन्नत के इर्द गिर्द बेरहम सेहरा और तपते हुए टीले हैं।

इस माहौल और इस हैसियत में शेख़ सन्नान अपने आप को देवता समझता था। उसमें हैवानियत और दरिन्दगी ज़्यादा थी। लिज़ा जैसी लड़की से वह दस्तबरदार नहीं होना चाहता था। उसने सलीबी से कहा– "मैं तुम्हें सोचने की मुहलत दूंगा। इस क़िले में ख़ुदा के भेजे हुए फरिश्ते भी गुम कर दिए जाते हैं। ख़ुदा को भी पता नहीं चलता। मैं इस लड़की को किले से बाहर नही जाने दूंगा। तुम ने मज़ाहमत की तो तुम भी किले से बाहर नहीं जा सकोगे।"

"मेरा एक साथी आगे चला गया है।" सलीबी ने कहा– "वह वहाँ बता देगा कि मैं यहाँ हूँ। तुम जानते हो कि हम तुम्हारे यहाँ क़याम करते हैं जिसके तेहत तुम्हें क़िला दिया गया था। यह हमारी पनाहगाह है और हमारा आरज़ी पड़ाव भी। तुम हमारी हड्डियां ग़ायब कर दोगे तो भी तुमसे पूछा जायेगा कि हमारा एक आदमी और दो लड़कियां कहाँ हैं।" सलीबी ने कुछ सोंचा और कहा– "अगर तुम सलाहुद्दीन अय्यूबी को क़त्ल कर दो तो इस जैसी एक दर्जन लड़कियाँ तुम्हारे हवाले कर देंगे मगर तुम हमारी रक़म और सोना हज़म करते रहे अय्यूबी को क़त्ल नहीं कर सके। मुझे मालूम हुआ है कि तुमने चादर फ़िदाई अय्यूबी के क़त्ल के लिए भेज रखे हैं लेकिन यह सिर्फ़ अफ़वाह मालूम होती है। अय्यूबी अभी तक ज़िन्दा है और फ़ातेह है।"

"यह अफ़वाह नहीं।" सन्नान ने नशे और ग़ुस्से से लरज़ते हुए कहा– "मैंने चार आदमी भेज रखे हैं। चन्द दिनों में तुम ख़बर सुनोगे कि सलाहुद्दीन अय्यूबी क़त्ल हो गया है।"

"फ़िर मैं तुमसे वादा करता हूँ कि तुम्हें हमारे हुक्मरानों से जो इनाम व इकराम मिला है उसके अलावा मैं तुम्हें इस (लिज़ा) जैसी दो लड़कियाँ अपनी तरफ से दूंगा।"

"वह देखा जाएगा।" सन्नान ने कहा– "मैं तुम्हें बता देता हूँ कि इस लड़की को तुम मेरी ख्वाबगाह से बाहर ले जा सकते हो, उसे क़िले से बाहर नहीं ले जा सकोगे। जाओ, मैं ने क़िले

में सलीबियों के लिए जो कमरे अलग रखे हैं वहाँ चले जाओ। खाओ पिओ, ऐश करो और मुझे सोंचकर जवाब दो कि यह लड़की मेरे हवाले करोगे या नहीं।"

सलीबी दोनों लड़कियों को साथ लिए बाहर निकल गया। यह सलीबी जासूसी और तख़रीबकारी के मुहकमे का अफ़सर था। वह मुसलमानों के इलाकों में घूमता फिरता रहता था और अब वापस अपने इलाके में जा रहा था। इस्यिात के किले में सलीबियों के लिए आरज़ी क़याम का इन्तज़ाम किया गया था। जो सलीबी जब चाहता था इस किले में आ सकता था। थेरिया भी उसी सहूलत के तेहत लिज़ा और अल्नासिर के साथियों को यहाँ लाई थी और यह सलीबी भी ज़रा आराम के लिए यहाँ आया था। एक दो रोज़ बाद उसे आगे चले जाना था। किले में आते ही उसे किसी ने बताया कि दो सलीबी लड़कियां आई हैं जो इस वक़्त शेख़ सन्नान के पास हैं। वह उन्हें देखने के लिए अन्दर चला गया और सन्नान के गरमा गरमी के बाद दोनों को वहाँ से ले आया।

उसके जाने के बाद शेख़ सन्नान ने अपने ख़ास आदमी को बुलाकर कहा– "यह सलीबी और यह दोनों लड़कियां हमारी कैदी नहीं हैं लेकिन उन्हें उनकी मरज़ी से किले से बाहर न जाने दिया जाए। उन्हें इस हक़ से महरूम कर दिया जाए कि जब चाहें किले में आ जाएं और जब चाहें किले से निकल जाएं। उन पर नज़र भी रखना....और गुमश्तगीन जब चाहे उन चार कैदियों को अपने साथ ले जा सकता है जिन्हें आज यह लड़कियां बाहर से लाई हैं।"

सलीबी को बताया गया कि हरान का वालिये गुमश्तगीन भी आया हुआ है और वह सलाहुद्दीन अय्यूबी के क़त्ल का इन्तज़ाम करता फिर रहा है। उसे अल्नासिर और उसके साथियों के बारे में बताया गया। सलीबी लड़कियों को किले के उस ख़ित्ते में ले गया जहां आरज़ी तौर पर आने वाले सलीबियों के लिए कमरे मख़्सूस किए गये थे।

❖

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सैफुद्दीन के सालार मुज़फ़्फ़रुद्दीन का हम्ला जिस तरह पस्पा और उसकी फ़ौज को जिस तरह तहस नहस किया था वह पूरी तफ़सील से सुनाया जा चुका है। मुज़फ़्फ़र–उद्दीन मैदाने जंग से ग़ायब हो गया था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज ने जो कैदी पकड़े उनमें सैफुद्दीन का एक मुशीर फ़ख़रुद्दीन भी जो मुसिल में उस का वज़ीर भी रह चुका था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी फ़ख़रुद्दीन को जंगी कैदियों से अलग करके अपने ख़ेमें में ले गया और उसे उसी इज़्ज़त व एहतराम से रखा जिसका वह हक़दार था। माले ग़नीमत तक़सीम करके सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने पहला फ़ैसला यह किया कि पेशक़दमी यानी भागते दुश्मन का तआक्कुब नहीं किया जाएगा। बाज़ मोअर्रिख़ीन ने सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के इस फ़ैसले को उसकी जंगी लग़्ज़िश कहा है लेकिन तारीख़ इस्लाम का यह मुजाहिद बहुत दूर की सोंचा करता था। यह सही है कि वह दुश्मन की फ़ौज का तआक्कुब करता तो उसकी फ़ौज को वह हमेशा के लिए ख़त्म कर देता और उसका नतीजा यह होता कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुसलमान दुश्मन उसके क़दमों में गिर पड़ते।

तआक्कुब न करने की एक वजह यह थी कि मुज़फ़्फ़र–उद्दीन के साथ इसने जो मार्का लड़ा था उसमें उसे फ़तह बहुत मंहगी पड़ी थी। उसकी फ़ौज का जानी नुक़सान बहुत हुआ था। ज़ख़्मियों की तादाद ज़्यादा थी, इसलिए वह पेशक़दमी करने के क़ाबिल नहीं था। अगर वह पेशक़दमी करने का फ़ैसला करता तो वह अपने रिज़र्वों को इस्तेमाल कर सकता था लेकिन उसने ऐसा फ़ैसला न किया जिसकी वजह यह भी थी कि वह नहीं चाहता था कि मुसलमान के हाथों मुसलमान का और ज़्यादा ख़ून बहे। वह अपनी क़ौम को मज़ीद ख़ूंरेज़ी से बचाना चाहता था।

सुल्तान अय्यूबी उस जगह खड़ा था जहाँ सैफ़ुद्दीन की ज़ाती ख़ेमागाह थी। इसमें जो कुछ बरामद हुआ वह बयान किया जा चुका है। सैफ़ुद्दीन का अपना ख़ेमा बजाए ख़ुद बहुत क़ीमती था। यह रेशमी कपड़ों का महल था। क़नातें और शामियाने रेशमी थे। पर्दे रेशमी थे। इसके अन्दर खड़े होकर शीश महल का गुमांन होता था। सैफ़ुद्दीन का एक भतीजा, अज़ीज़ुद्दीन फ़रूख़ शाह सुल्तान अय्यूबी के फ़ौज में सालार था। यह अजीब जंग और अजीब दुश्मनी कि भतीजा चचा के ख़िलाफ़ लड़ रहा था। इसके अलावा और कई एक फ़ौजी थे जो अपने ख़ून के रिश्तों के ख़िलाफ़ लड़ रहे थे। सुल्तान अय्यूबी ने सैफ़ुद्दीन की यह ख़ेमागाह देखी तो उसने उसके भतीजे अज़ीज़ुद्दीन को बुलाया, और मुस्कुरा कर कहा– "अपने चचा की जायदाद के वारिस तुम हो। मैं उसका ख़ेमा तुम्हें पेश करत हूँ। यह समेट लो।"

सुल्तान अय्यूबी ने मुस्कुराकर उसे ख़ेमा पेश किया था मगर अज़ीज़ुद्दीन के आँसू निकल आए। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने अपनी याददाश्तों में इस वाक़िआ का ज़िक्र जज़्बाती अन्दाज़ में किया है। उसके मुताबिक़, सुल्तान अय्यूबी ने अज़ीज़ुद्दीन की आँखों में आँसू देखकर कहा– "अज़ीज़ुद्दीन! तुम्हारे जज़्बात को मैं अच्छी तरह समझता हूँ लेकिन क़ुर्आन का हुक्म मानो। अगर मेरा बेटा शिर्क का और जिहाद के रास्ते में फ़िसक़ व फ़ज़ूर का मुर्तकिब होगा तो मेरी तलवार उसका सर क़लम करने से गुरीज़ नहीं करेगी। तुम अपने शिकस्त ख़ुर्दा चचा का ख़ेमा देखकर आँखों में आँसू ले आये हो। मैं अपने शिकस्त ख़ुर्दा बेटा का कटा हुआ सर देखकर भी आंसू नहीं बहाऊंगा।"

सुल्तान अय्यूबी ने इस मुक़ाम से ज़रा आगे जाकर लम्बे अर्से के लिए पड़ाव डाल दिया। यह पहाड़ी इलाक़ा था। इसका नाम "कोहे सुल्तान" मशहूर हो गया। तारीख़ में भी कोहे सुल्तान आया है। वहाँ से हलब पन्द्रह मील दूर था। हलब के मुतअल्लिक पहले तफ़सील से सुनाया जा चुका है। अल्मुलकुस्सालेह ने इस शहर को अपना दारुल हुकूमत और मुस्तक़र बना लिया था और अब यह मुत्तहदा अफ़वाज का हैडक्वार्टर बन गया था। यह भी सुनाया जा चुका है कि इस शहर का दिफ़ाअ इतना मज़बूत और यहाँ के लोग (जो सब मुसलमान थे) इतने दिलेर और जंगजू थे कि सुल्तान अय्यूबी का मुहासिरा नाकाम हो गया था। अब सुल्तान अय्यूबी एक बार फ़िर इस अहम शहर को मुहासिरे में लेना और उस पर क़ब्ज़ा करना चाहता था लेकिन अब वह अपना अड्डा मज़बूत करके आगे बढ़ने की स्कीम बना रहा था।

रास्ते में दो किले थे। एक का नाम नबीज और दूसरे का बूज़ा था। बाज़ तारीख़ों में नबीज को मिम्बस भी लिखा गया है। इस दोनों किलों के उमरा ख़ुद मुख़्तार मुसलमान थे। ऐसे कई और किले और कई जागीरें थीं जिन पर मुसलमान की हुक्मरानी थी। इस तरह सल्तनते इस्लामिया किलों, जागीरों और रियासतों में बटी हुई थी। सुल्तान अय्यूबी बिखरे इन ज़र्रों को यकजा करके एक सल्तनत बनाना और उसे एक ख़िलाफत के तेहत लाना चाहता था। दुश्वारी यह थी कि यह उमरा और जागीरदार अपनी अलग–अलग हैसियत क़ायम रखने के ख़्वाहिश मन्द थे। वह अपनी बक़ा के लिए सलीबियों तक से मदद ले लिया करते थे।

सुल्तान अय्यूबी ने एक पैग़ाम बूज़ा के अमीर के नाम लिखा और दूसर नबीज के अमीर के नाम। बूज़ा को अज़ीज़ुद्दीन को रवाना किया और नबीज को सैफुद्दीन के मुशीर फख़रूद्दीन को। फख़रूद्दीन जंगी कैदी था लेकिन सुल्तान अय्यूबी ने इज़्ज़त व एहतराम से उसका दिल जीत लिया था और फख़रूद्दीन ने सुल्तान अय्यूबी की इताअत कुबूल कर ली थी। सुल्तान अय्यूबी ने जब उसे अपना ख़ास एल्ची बनाकर नबीज जाने को कहा और उसे यह इख़्तियार भी दिए कि वह इसकी नुमाइंदगी करते हुए यह किला हासिल करने की बात चीत करे तो फख़रूद्दीन ने उसे आँखे फ़ाड़ कर देखा।

"क्या आप मुसलमान नहीं हैं?" सुल्तान अय्यूबी ने उसे कहा– "आपने मुझे यूं हैरत से देखा है जैसे मैं किसी काफ़िर को अपना एल्ची और नुमाइंदा बनाकर भेज रहा हूँ। क्या आप को मुझ पर भरोसा नहीं या अपने ईमान पर एतमाद नहीं?.....मैं नबीज का किला लेना चाहता हूं। आप इसके अमीर को मेरा पैग़ाम पहुंचा दें और उसे कायल करें कि ख़ून ख़राबे के बेग़ैर क़िला हमें दे दे और अपनी फ़ौज हमारी फ़ौज में शामिल कर दे।"

अज़ीज़ुद्दी और फ़ख़रूद्दीन रवाना हो गये।

❖

बूज़ा के अमीर ने अज़ीज़ुद्दीन का इस्तक़बाल तपाक से किया। सुल्तान अय्यूबी का पैग़ाम पढ़ा। उसमें लिखा था–"मेरे अज़ीज़ भाई! हम एक ख़ुदा एक रसूल और एक कुर्आन के परस्तार हैं मगर हम सब इस तरह बिखर गये हैं जिस तरह एक जिस्म के अज़ा रेगज़ार की रेत पर बिखरे पड़े हों। क्या यह जिस्म हरकत कर सकता है? किसी काम आ सकता है? इस जिस्म का फ़ायदा सलीबियों को पहुंच रहा है जो कटे हुए अज़ा को गिद्धों की तरह खा रहे हैं। हमें एक उम्मत की सूरत मुत्तहिद होना है वरना हम में से कोई भी जिन्दा नहीं रह सकेगा। मैं आप को एक उम्मत की सूरत में मुत्तहिद होने की दावत देता हूँ। अपनी मौजूदा हैसियत पर ग़ौर करें। आप अपनी इमारत को ज़िन्दा रखने के लिए अपने दुश्मन के आगे भी हाथ फ़ैला देते हैं। मैं आप तक कुर्आन का फ़रमान पहुंचा रहा हूँ। इसे समझने और इस पर अमल करने की कोशिश करें। पहली ज़रूरत यह है कि अपना किला सल्तनते इस्लामिया की मिल्कियत मे दे दें और मेरी इताअत कुबूल कर लें। इस सूरत में आप की फौज मेरी फ़ौज में मुदगम हो जाएगी। आप किलादार होंगे और किले पर सल्तनते इस्लामिया का झंडा लहरायेगा। अगर

आप को यह सूरत कुबूल न हो तो मेरी फौज के मुहासिरे में लड़ने की तैय्यारी कर लें और अपने सामने हलब, मुसिल और हरान की मुत्तहदा फौज की बरबादी और पस्पाई को रखें, आप को फ़ैसला करने में सहूलत होगी। मेरी पेशकश कुबूल कर लें और मुझसे बेहतर सलूक की तवक्को रखें। मेरी आप के साथ कोई दुश्मनी नहीं। मैं जो कुछ कर रहा हूँ एहकामे ख़ुदावन्दी के तेहत कर रहा हूँ।"

बूज़ा के अमीर ने यह पैग़ाम पढ़ा तो अज़ीजुद्दीन की तरफ़ देखा। अज़ीजुद्दीन ने कहा–"आप का किला मज़बूत नहीं और आप की फ़ौज को बहुत थोड़ी है। इस फौज हमारे हाथों न मरवायें।"

बूज़ा के अमीर ने पेशकश कुबूल कर ली और सुल्तान अय्यूबी के नाम तहरीरी पैग़म दिया कि वह आये और किला ले ले।

नबीज के अमीर ने भी इताअत कुबूल कर ली। फख़रूद्दीन ने उससे पैग़ाम लिखवा लिया और वापस चला गया।

सुल्तान अय्यूबी ख़ुद दोनों किलों में गया। वहाँ जो फ़ौजें थीं उन्हें किले से निकाल कर अपनी फ़ौज में शामिल कर लिया और अपने दस्ते क़िलों में भेज दिये। दोनों किलों में उसने रस्द वग़ैरह रख दी लेकिन फ़ौज को किला बन्द न किया। हलब के क़रीब एज़ाज़ नाम का एक मज़बूत किला था। इस किले के दिफ़ायी इन्तज़ामात हलब वालों ने अपने ज़िम्मे ले रखे थे। इसका किलादार या अमीर ने अपनी वफ़ादारी हलब यानी अल्मुलकुस्सालेह को दे रखी थी। सुल्तान अय्यूबी हलब का मुहासिरा करने से पहले इस किले को भी लड़े बेग़ैर लेना चाहता था। उसने अपने एक सालार अल्हमीरी को तहरीरी पैग़ाम के साथ एज़ाज को रवाना किया। एज़ाज़ के अमीर ने सुल्तान अय्यूबी का पैग़ाम पढ़ा। इस पैग़ाम के भी अल्फ़ाज वहीथे जो बूज़ा और नबीज के उमरा को लिखे गये थे। एज़ाज के अमीर ने पैग़ाम अलहमीरी की तरफ़ फेंक कर कहा– "तुम्हारा सुल्तान ख़ुदा और रसूल के नाम पर सारी दुनिया का बादशाह बनने के ख़्वाब देख रहा है। उसे कहना कि तुमने हलब का मुहासिरा करके देख लिया था। अब एज़ाज़ का मुहासिरा करके देखो।"

"क्या आप मुसलमान के हाथों मुसलमान क ख़ून बहाना पसन्द करेंगे?" अलहमीरी ने कहा– "क्या आप पसन्द करेंगे कि हम आपस में लड़ें और सलीबी हमारा तमाशा देखें?"

"अपने सुल्तान से जाकर कहो कि सलीबियों से लड़े।" एज़ाज़ के अमीर ने कहा।

"क्या आप सलीबियों से नहीं लड़ेंगे?" अलहमीरी ने पूछा– "क्या आप उन्हें अपना दुश्मन नहीं समझते?"

'इस वक़्त हम सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को अपना दुश्मन समझते हैं जिसने हमें ललकारा है।" अमीर ने कहा– "वह हमसे यह क़िला बज़ोरे शमशीर लेना चाहता है।"

अलहमीरी उसे क़ायल न कर सका। उसने अलहमीरी की ज़र्रा बराबर भी इज़्ज़त न की और उसे चले जाने को कहा।

❖

इस्यिाल के किले में सलीबी गुमश्तगीन के पास बैठा था। थेरिया और लिज़ा भी उसके साथ थीं। गुमश्तगीन और सलीबी की पहले से जान पहचान थी। सलीबी ने कहा– "सुना है आप सलाहुद्दीन अय्यूबी को कत्ल कराते–कराते सैफुद्दीन के कत्ल का इरादा कर बैठे हैं।"

"क्या आप ने सुना नहीं कि सैफुद्दीन ने कैसी बुज़्दिली और जंगी ना अहली का मुज़ाहिरा किया है?" गुमश्तगीन ने कहा– "यह लड़कियाँ बताती हैं कि उसने हमारी तीनो फौजों को ऐसा बुरा हाल कर लिया है कि अब हम बड़े लम्बे अर्से के लिए लड़ने के काबिल नहीं रहे। मैं बिखरी हुई फौजों को इकठ्ठा करके अय्यूबी को हलब से दूर रोकना चाहता हूँ। अगर सैफुद्दीन ज़िन्दा रहा तो ख़िफ्फ़त मिटाने के लिए एक बार फिर कमान लेने की ज़िद करेगा और हमें एक और शिकस्त होगी। क्यों न उसे ठिकाने लगा दिया जाए।"

"सैफुद्दीन इतनी अहम शख़्सियत नहीं जितना आप समझ रहे हैं।" सलीबी ने कहा– "जो हम जानते हैं वह आप नहीं जानते। हम आप के हर एक दोस्त और हर एक दुश्मन को आप से ज़्यादा जानते हैं, इसलिए हमने अपने आप को अपने मुशीरों और अपने जासूस दे रखे हैं। मैं जो अय्यूबी के इलाकों में भेस बदल–बदल कर और अपने आप को ख़तरों में डाल कर मारा–मारा फिर रहा हूँ वह सिर्फ आप की बका और आपकी रियासत की तौसीअ के लिए है। मैं जो हालात देख आया हूं उनका तकाज़ा सिर्फ यह है कि सुल्तान अय्यूबी को कत्ल किया जाए। नुरूद्दीन ज़ंगी मर गया तो आप सब आज़ाद हो गये। आप किलादार से ख़ुद मुख़्तार हुक्मरान बन गये। अय्यूबी मर गया तो आप इससे दुगुने इलाके का हुक्मरान बन जायेंगे जो आप के पास है। जंग व जदल का ख़तरा हमेशा के लिए टल जायेगा। मैं त्रीपोली जा रहा हूँ। आप की फौज ने घोड़ों और ऊंटों का जो नुक्सान उठाया है वह मैं बहुत जल्दी पूरा करूंगा। हथियार भी भेजवाऊंगा। हिम्मत न हारें। अय्यूबी मर गया तो हम आप को इतनी मदद देंगे कि आप सैफुद्दीन, अल्मुलकुस्सालेह और दूसरे तमाम ख़ुद मुख़्तार मुसलमान उमरा पर छा जाएंगे और आप को वही हैसियत हासिल हो जाएगी जो आज सलाहुद्दीन अय्यूबी को हासिल है।"

इक़्तेदार की हवस और ऐशपरस्ती ने गुमश्तगीन की अक्ल पर पर्दा डाल रखा था। उसकी अक्ल में इतनी सी बात नहीं आ रही थी कि यह सलीबी अपनी कौम का नुमाइंदा है और वह जो कुछ कह रहा है और कर रहा है वह अपने कौमी मकासिद की ख़ातिर कह और कर रहा है। यह बहुत बड़ा जासूस और तख़रीबार था जो यह देखता फिर रहा था कि सुल्तान अय्यूबी के तूफान को किस तरह रोका जा सकता है। हर मैदान मे शिकस्त खाकर सलीबियों ने यही तरीका बेहतर जाना था कि सुल्तान अय्यूबी को कत्ल करा दिया जाए और मुसलमान हुक्मरानों को एक दूसरे का भी दोस्त न रहने दिया जाए ताकि सुल्तान अय्यूबी के मरने के बाद यह आपस मे लड़ते–लड़ते ख़त्म हो जाएं और सलीबियों को जंग वह जदल के बाद दुनियाए अरब की हुक्मरानी मिल जाए। इसी मकसद की तकमील के लिए उन्होंने मुसलमान उमरा के दिमागों में ज़र परस्ती और बादशाही का कीड़ा डाल दिया था।

"सलाहुद्दीन अय्यूबी के कत्ल से तो शेख़ सन्नान भी दस्तबरदार हो गया है।" गुमश्तगीन

ने कहा– "वह कहता है कि उसने चार और फ़िदाई भेज रखे हैं लेकिन वह पुर उम्मीद नज़र नहीं आता।"

"इतने ज़्यादा कातिलाना हम्ले नाकाम होने के बाद सन्नान को अय्यूबी के कत्ल से दस्तबरदार हो जाना चाहिए।" सलीबी ने कहा– "इन हम्लों की नाकाम होने का सबसे बड़ी वजह यह है कि फ़िदाई हशीश के नशे में जाते हैं। अय्यूबी को सिर्फ़ वह आदमी कत्ल कर सकता है जो होश में हो और दिल की गहराइयों से महसूस करे कि उसे सलाहुद्दीन अय्यूबी को अपने ज़ाती या कौमी जज़्बे से कत्ल करना है। आप शायद इन्सानी फितरत को नहीं समझते। अय्यूबी पर जो कातिलाना हम्ला करने जाता है, उस पर नशे का असर होता है। ज्योंहि आगे से मज़ाहमत होती है नशा उतर जाता है और हम्लावर अपनी जान बचाने की कोशिश करता है। इसकी बजाए आप किसी को जज़्बात से अंधा करके, और उसके दिल में अय्यूबी की नफ़रत पैदा करके उसके कत्ल के लिए भेजे तो वह उसे कत्ल करके ही रहेगा।"

"शेख़ सन्नान ने मुझे सलाहुद्दीन अय्यूबी के चार छापामार दिए हैं।" गुमश्तगीन ने कहा– "और कहा है कि उन्हें तैय्यार करके उनसे सैफुद्दीन को कत्ल कराओ। यह छापामार सैफुद्दीन को अपना दुश्मन समझते है इसलिए यह उसे कत्ल करने में ख़ुशी महसूस करेंगे। मैं उन्हें मौका फराहम करूंगा। सैफुद्दीन को मौत के जाल में लाना मेरा काम है।"

"क्यों न उन्हीं को सुल्तान अय्यूबी के कत्ल के लिए तैय्यार किया जाए?" सलीबी ने कहा– "लेकिन उन्हें हशीश या कोई और नशा न दिया जाए। उन पर जज़्बातियत का नशा तारी किया जा सकता है।"

"ऐसा नशा आप ही तारी कर सकते हैं।" गुमश्तगीन ने कहा।

सलीबी ने थेरिया औ लिज़ा की तरफ देखा और मुस्कुराया। लिज़ा ने कहा– "मैं छापामारों के कमाण्डर को तैय्यार कर सकती हूँ जिसका नाम अल्नासिर है। बाकी तीन को आप संभाल लें।"

"तुम अल्नासिर को संभालो।" सलीबी ने कहा– "दूसरों को अभी उन के हाल पर छोड़ दो। जहां तक मैं इन्सानी फितरत को समझता हूं अल्नासिर ख़ुद ही अपने साथियों को संभाल लेगा।" उसने पूछा– "वह हैं कहां? उन्हें इस जगह ले आओ। अल्नासिर को अलग कमरा दो और उसके साथियों को अलग कमरे में रखो.......और तुम सब मोहतात रहना। सन्नान ने इस लड़की पर नज़र रखी हुई है। लड़की उसे इतनी पसन्द आई है कि उससे जुदा होना नहीं चाहता। उसने मुझे धमकी दी है कि यह लड़की (लिज़ा) इसके हवाले कर दूं वरना मैं उसका मेहमान नहीं कैदी हूंगा। उसने मुझे सोचने की मुहलत दी है।"

इसके मुतअल्लिक आप परेशान न हों।" गुमश्तगीन ने कहा– "मैं इन चार छापामारों को अपने साथ ले जा रहा हूँ। आप भी और यह लड़कियाँ भी मेरे साथ चलेंगी।"

❖

अल्नासिर और उसके तीनों साथियों को उन कमरों में से एक में ले गये जो सलीबी अफ़सरों के लिए मख़सूस थे। अल्नासिर को अलग कमरा दिया गया जो उसने यह कहकर

...कर दिया कि वह अपने साथियों से जुदा नहीं होगा। उसे थेरिया और लिज़ा अपने जाल में फांसने के लिए अलग रखना चाहती थी।

"तुम इनके कमाण्डर हो।" सलीबी ने कहा– "तुम्हें अपने मातेहतों से अलग रहना चाहिए।"

"हमारे यहां ऊँच नीच का रिवाज नहीं।" अल्नासिर ने कहा– "हमारा सुल्तान अपनी फ़ौज के साथ रहता है। मैं मामूली सा कमानदार हूँ अपने साथियों से अलग रहकर तकब्बुर का गुनाह नहीं करूंगा।"

"हम तुम्हारी ताज़ीम करना चाहते हैं।" सलीबी ने कहा– "अपने यहाँ जाकर जो जी आये करना। यहाँ तुम्हें तुम्हारे मातेहतों के साथ रख कर हम तुम्हारी तौहीन नहीं करना चाहते।"

"हमारे छापामार कमानदार अपने सिपाहियों के साथ जिन्दा रहते हैं और उनके साथ मरते हैं" अल्नासिर ने कहा– "हम मौत की मंज़िल के हमसफर हैं। एक दूसरे से जुदा नही हुआ करते। अगर हम आप के मेहमान होते तो शायद मैं आप की बात मान जाता। हम आपके कैदी हैं। हमारी किस्मत एक है जो अज़ीयत और सऊबत एक को मिलेगी, इससे हम सब हिस्सा वसूल करेंगे एक साथी को जिन्दा रखने के लिए हम तीन साथी अपनी जानें कुर्बान कर देंगे।"

"क्या तुम हमारी कैद से फ़रार होने की कोशिश करोगे?" गुमश्तगीन ने पूछा।

"हम आज़ाद होने की कोशिश ज़रूर करेंगे। यह हमारे फ़राइज़ में शामिल है।" अल्नासिर ने कहा– "मर कर आज़ाद हो जाएंगे या तुम सब को मार कर। हमें कैद में रखना है तो हमें ज़ंजीरें डाल दो, धोखे न दो। हम मैदान के मर्द हैं। हम सैफुद्दीन और गुमश्तगीन जैसे ईमान फ़रोश नहीं हैं।"

"मैं गुमश्तगीन हूँ।" गुमश्तगीन ने कहा– "हरान का ख़ुद मुख़्तार हुक्मरान। तुमने मुझे ईमान फ़रोश कहा है।"

"मैं आप को एक बार फिर ईमान फ़रोश कहता हूँ।" अल्नासिर ने कहा– "मैं आप को ग़द्दार भी कहता हूँ।"

"लेकिन अब मैं ईमान फ़रोश हूँ न ग़द्दार।" गुमश्तगीन ने अल्नासिर को धोखा देने के लिए झूठ बोला– "देख लो, जंग तुर्कमान में लड़ी जा रही है और मैं यहाँ हूँ। अगर मैं तुम्हारा दुश्मन होता तो तुम्हें इस तरह आज़ाद न रहने देता जिस तरह अब हो। सैफुद्दीन और अल्सालेह से अलग हो चुका हूं। तुम्हें इज़्ज़त और ताज़ीम से इस किले से ले जा रहा हूँ और इज़्ज़त से रूख़्सत कर दूंगा। तुम हो तो मामूली से कमानदार लेकिन तुम्हारे सीने में सलाहुद्दीन अय्यूबी की अज़मत और जज़्बा है।"

"लेकिन मैं अपने साथियों से अलग नहीं रहूंगा।" अल्नासिर ने कहा– "मुझ से यह गुनाह न कराएं।"

"न सही।" सलीबी ने कहा– "अपने साथियो के साथ रहो।"

उस वक़्त उसके साथी एक कुशादा और ख़ुश्नुमा कमरे में थे जहाँ नरम व गुदाज़ बिस्तर बिछे हुए थे। वहाँ एक ख़ादिम भी था जिससे इन तीनों ने पूछा था कि यह किले का कौन सा

हिस्सा है और यहाँ क्या होता है। ख़ादिम ने उन्हें बताया कि यह मेहमानों के कमरे हैं। यहाँ सिर्फ़ मेहमान रखे जाते हैं जो ऊँचे रुत्बे के बाइज़्ज़त लोग होते हैं। यह तीनों छापामार देख रहे थे कि उनके साथ क़ैदियों वाला सलूक नहीं हो रहा। वह बहुत थके हुए थे। ऐसे नर्म बिस्तरों पर उन्हें फ़ौरन नींद आ गयी और वह गहरी नींद सो गये।

❖

सलीबी और गुमश्तगीन ने अल्नासिर को बहुत देर अपने पास रखा, उसके साथ इज़्ज़त से पेश आते हुए ऐसी बातें करते रहे जिनसे अल्नासिर के जज़्बे की तेज़ी और तुन्दी कुछ कम हो गयी। यह इन दोनों की कामयाबी का पहला क़दम था। लिज़ा इस कमरे से निकल गयी थी। अल्नासिर उस वक़्त उस कमरे से निकला जब उसके साथी गहरी नींद सो गये थे। वह बरामदे में जा रहा था। एक निस्वानी आवाज़ ने उसे सरगोशी में पुकारा। वहाँ अंधेरा था। वह रुक गया। एक तारीक साया आगे आया। यह लिज़ा थी जिसने अल्नासिर का बाज़ू पकड़ कर कहा– "अब तुम्हें यक़ीन आ गया है कि मैं जिन्न नहीं इन्सान हूँ?"

"मुझे समझ नहीं आ रही कि यहाँ क्या हो रहा है।" अल्नासिर ने झुंझलाहट से कहा– "मैं क़ैदी हूं और मेरी यूं इज़्ज़त की जा रही है जैसे मैं शहज़ादा हूँ।"

"तुम्हारी हैरत बजा है।" लिज़ा ने कहा– "ज़रा समझने की कोशिश करो। गुमश्तगीन ने तुम्हें बता दिया है कि उसने सलाहुद्दीन अय्यूबी की दुश्मनी तर्क कर दी है। अब वह अय्यूबी के किसी फौजी को जंगी क़ैदी नहीं समझता। तुम और तुम्हारे साथी ख़ुश क़िस्मत हैं कि तुम यहाँ आये और गुमश्तगीन यहाँ था। दूसरी वजह मेरी ज़ात है। तुम मेरी हैसियत और रुत्बे को नहीं जानते मैं तुम्हारी नज़र में बदकार लड़की हूँ जो हुक्मरानों और आला हुकाम की तफ़रीह का ज़रिआ बनती हूं। यह सब ग़लत है और तुम्हारा वहम है।" लिज़ा ने उसे बाज़ू से पकड़ा और कहा– "आओ यहाँ से दूर जा बैठें। आ जाओ। मैं तुम्हारे वहम दूर करना चाहती हूँ फिर तुम आज़ाद हो। मेरे मुतअल्लिक़ जो राय क़ायम करना चाहो कर लेना।"

क़िले का यह हिस्सा ख़ुश्नुमा था। खुला मैदान था जिस के वस्त में चट्टाने थीं। इनके इर्द गिर्द सब्ज़ा था। सब्ज़े में फूलदार पौधे और दरख़्त थे। क़िला बहुत वसीअ व उरीज़ था। लिज़ा अल्नासिर को बातों में उलझाकर कमरों से दूर चट्टान के दामन में ले गयी जहाँ फूलों की महक थी। वह जब उधर जा रहे थे, उस वक़्त सलीबी और थेरिया एक दिवार के साथ खड़े छिप कर देख रहे थे।

"लिज़ा उसे क़ाबू में ले लेगी।" सलीबी ने कहा।

"लड़की जज़्बाती है।" थेरिया ने कहा– "अपने फ़राइज़ से घबराकर उसी के पास जा बैठी थी। इतनी कच्ची भी नहीं।"

"इस उम्र में उसे बाहर की ड्यूटी पर नहीं भेजना चाहिए था।" सलीबी ने कहा– "हम साथ हैं कोई गड़बड़ नहीं करेगी।"

"लिज़ा अल्नासिर से कह रही थी– "तुमने मुझसे पूछा था कि मैं तुम पर इतनी मेहरबान क्यों हो गयी हूँ। तुमने मुझे अपना दुश्मन समझ कर यह बात मुझसे पूछी थी। मैं तुम्हें यक़ीन

नहीं दिल सकती कि दुश्मनी तुम्हारे और मेरे बादशाहों के दर्मियान है। मेरी और तुम्हारी क्या दुश्मनी हो सकती है?"

'और दोस्ती भी क्या हो सकती है?" अल्नासिर ने कहा।

लिज़ा ने गहरी आह भरी और बाज़ू अल्नासिर के कंधों पर रखकर कहा– "तुम पत्थर हो। मैंने सुना था कि मुसलमानों के दिल रेशम की तरह नर्म होते हैं। मज़हब को ज़रा देर के लिए अलग रख दो। अपने आप को मुसलमान और मुझे ईसाई न समझो। हम दोनों इन्सान हैं। हमारे सीनों में दिल हैं। क्या तुम्हारे दिल में कोई ख़्वाहिश, कोई पसन्द और किसी चीज़ से प्यार नहीं है? है और ज़रूर है। तुम मर्द हो। तुम अपने दिल पर काबू पा सकते हो। मुझमें इतनी हिम्मत नहीं। मेरा दिल बेक़ाबू हो गया है। तुम मेरे दिल में उतर गये हो। हम तुम्हें नशे की हालत में किले में लायीं तो शेख़ सन्नान ने हुक्म दे दिया कि इन चारों को तहख़ानों में बन्द कर दो। अगर तुम्हें वहाँ ले जाते तो वहां से लाश बनकर निकलते। मैं तुम जैसे ख़ूबसूरत जवान का यह अन्जाम बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। मैंने शेख़ सन्नान से कहा कि यह तुम्हारे नहीं हमारे कैदी हैं और यह हमारी तहवील में रहेंगे। इस बूढ़े के साथ मुझे और थेरिया को बहुत देर तक झिक झिक करनी पड़ी। उसने एक शर्त बताई। कहने लगा– "अगर तुम इन्हें तहखाने से बचाना चाहती हो तो मेरी ख़्वाबगाह में आ जाओ।" मेरे दिल में इस बूढ़े के खिलाफ़ नफ़रत पैदा हो गयी। मैंने पश व पेश की तो उसने कहा– "यह चारों तहखाने में जाएंगे या तुम मेरी ख़्वाबगाह में आओगी।" मुझे बहुत शिद्दत से महसूस हुआ कि मैं तुम्हें आज से नहीं बचपन से जानती हूं और मैं तुम्हारी ख़ातिर अपना जिस्म, अपनी जान और अपनी आबरू कुर्बान कर देने की हिम्मत रखती हूँ।"

"क्या तुम ने अपनी आबरू कुर्बान कर दी है?" अल्नासिर ने तड़प कर पूछा।

"नहीं।" लिज़ा ने कहा– "मैंने उसे वादे पर टाला है। उसने मुझे यह कह कर मुहलत दे दी है कि हम किले मे आज़ाद रहेंगे लेकिन हम इस किले के कैदी होंगे।"

"मैं तुम्हारी आबरू की हिफ़ाज़त करूंगा।" अल्नासिर ने कहा।

"क्या तुमने मेरी मोहब्बत कुबूल कर लिया है?" लिज़ा ने भोले भाले लहजे में पूछा।

अल्नासिर ने कोई जवाब न दिया। यह तो उसे ट्रेनिंग में बताया गया था कि सलीबी लड़कियाँ हुस्न व जवानी और हसीन फरेब का जाल किस तरह बिछाया करती हैं लेकिन यह ज़ुबानी हिदायात थीं जिन की हैसियत वाअज़ से बढ़कर कुछ भी नहीं थी। उसे ऐसे जाल से बचने के की अमली ट्रेनिंग नहीं दी गयी थी न दी जा सकती थी। अब एक सलीबी लड़की ने जाल बिछाया तो इन्सानी फितरत की कमज़ोरियां अल्नासिर की ज़ात से उभर आयीं और उसके अक्ल व दानिश पर ग़ालिब आने लगीं। वह रेगज़ारों और बयाबानों में मौत के साथ खेलने वाला इन्सान था। उसके एहसासात रेत में दबे रहते थे। उसने लिज़ा जैसी दिलकश लड़की कभी नहीं देखी थी। जहाँ तक देखने का तअल्लुक था लिज़ा के हुस्न और तिलिस्माती असर वाले जिस्म ने उस पर कुछ असर नहीं किया था मगर अब लिज़ा के खुले बिखरे हुए, रेशम जैसे मुलायम बाल उसके एक गाल से कभी उसके बाज़ू से मस कर जाते थे। उसके

वजूद में लहर दौड़ जाती और वह हर बार अपने जिस्म के अन्दर लरज़ा सा महसूस करता था।

कई बार ऐसा हुआ था कि दुश्मन के तीर उसके जिस्म को छूते हुए गुज़र गये थे। बरछियों की अन्नियों ने उसकी खाल चीर दी थी। वह कभी डरा नहीं था। जिस्म को छूकर गुज़रते तीरों और बरछियों ने उसके जिस्म पर एक सानिये के लिए भी लरज़ा तारी नहीं किया था। मौत कई बार उसके साथ लगकर गुज़र गयी थी। उसके एहसासात में ज़रा सी भी हलचल पैदा नहीं होती थी। वह अपने हाथों लगायी हुई आग के शोलों में से भी गुज़रा था मगर कमज़ोर सी एक लड़की के बालों के लम्स से उसके वजूद में भूंचाल आ गया था। उसने इस लम्स से बचने की वैसी कोशिश न की जैसी वह तीरों और बरछियों से बचने के लिए करता था, और जब लिज़ा उसके और ज़्यादा करीब हो गयी तो अल्नासिर ने महसूस किया कि लड़की अभी उससे दूर है।

लिज़ा को ट्रेनिंग दी गयी थी कि अपने शिकार को किस तरह हिप्नोटाइज़ कि ा जा सकता है। उसने कर लिया। अल्नासिर को ऐसी प्यास महसूस होने लगी जो सेहरा की प्यास से बहुत मुख़्तलिफ थी। पानी इस प्यास को नहीं बुझा सकता था। ज्यों--ज्यों रात गुज़रती जा रही थी अल्नासिर की असलियत ख़त्म होती जा रही थी। पहले तो नासिर का जिस्म कांपा था फिर उसका ईमान लरज़ गया। जज़्बे की बुनियाद हिल गयीं और जज़्बात के झकड़ और ज़्यादा तुन्द हो गये।

"हां!" अल्नासिर ने मख़मूर आवाज़ में कहा– "मैने तुम्हारी मोहब्बत कुबूल कर लिया है लेनिक इसका अन्जाम क्या होगा? क्या तुम मुझे यह कहोगी कि मैं तुम्हारे साथ चलूं? अपना मज़हब छोड़ दूं और तुम मेरे साथ शादी कर लोगी?"

"मैंने ऐसी कोई बात नहीं सोची।" लिज़ा ने कहा– "अगर तुमने मेरा साथ देने का इरादा कर लिया है और तुम हमेशा के लिए मुझे अपनी रफ़ीका बनाना चाहते हो तो मैं अपना मज़हब छोड़ दूंगी। तुम मुझसे कुर्बानी मांगोगे लेकिन मुझे वह मोहब्बत दो जो नापाक न हो। आरज़ी मोहब्बत तो मैं जहाँ से चाहूं हासिल कर सकती हूं। तुम्हें मेरी रूह ने चाहा है।"

अल्नासिर पर तिलिस्म तारी हो चुका था। रात आधी से ज़्याद गुज़र गयी थी। अल्नासिर वहाँ से उठना नहीं चाहता था। लिज़ा ने उसे कहा कि वह अपने कमरे में चला जाए। पकड़े जाने की सूरत में अन्जाम अच्छा नहीं होगा।

❖

अल्नासिर कमरे में दाख़िल हुआ तो उसके साथी गहरी नींद सोये हुए थे। वह लेट गया लेकिन उसे नींद न आई। लिज़ा अपने कमरे में दाख़िल हुई तो थेरिया की आँख खुल गयी।

"इतनी देर?" थेरिया ने कहा।

"तो क्या पत्थर एक फूंक से मोम हो जाया करते हैं?" लिज़ा ने कहा।

"पत्थर ज़्याद सख़्त तो नहीं?"

"मुझे नाकामी की तवक्को नहीं थी।" लिज़ा ने जवाब दिया– "लेकिन मुझे तरकश का आख़िरी तीर भी चलाना पड़ा। वह पूरी तरह मेरा ग़ुलाम हो गया है।"

"यह कहने की ज़रूरत तो नहीं कि ख़ुद ही कहीं मोम न हो जाना।" थेरिया ने कहा।

"आदमी ख़ूबसूरत है।" लिज़ा ने कहा और हंस पड़ी। कहने लगी– "मुझे इतना भी भोला भाला न समझो, लेकिन मैं यह ज़रूर कहूंगी कि मुझे इस क़िस्म के भोले भाले मर्द अच्छे लगते हैं जिनके किरदार में कोई फ़रेब नहीं होता। हो सकता है यह आदमी इसलिए मुझे अच्छा लगा है कि मैं सैफ़ुद्दीन जैसे बूढ़े और अय्याश मर्दों के साथ रह कर उनसे मुतन्फ़िर हो गयी हूँ।"

"अल्नासिर से भी मुतन्फ़िर रहना।" थेरिया ने कहा– "मोहब्बत के झांसे को और ज़्यादा तिलिस्माती बना लेना। याद रखना कि उसके हाथों हमें सलीब के सबसे बड़े दुश्मन सलाहुद्दीन अय्यूबी को क़त्ल कराना है।"

थेरिया ने उसे कुछ और हिदायात दीं। एक दो नये तरीके बताये और दोनों सो गयीं। अल्नासिर अभी तक जाग रहा था। तन्हाई में उसने लिज़ा की बातों पर और इज़हारे मोहब्बत पर ग़ौर किया तो उसका ज़ेहन तक़सीम हो गया। उसे अपनी ट्रेनिंग याद आई जिसमें उसे सलीबी लड़कियों के जादू भरे झांसो के मुतअल्लिक़ बताया गया था। लिज़ा उसे हसीन फ़रेब नज़र आने लगी लेकिन उसके ज़ेहन में यह ख़्याल भी ग़ालिब आता थाकि यह फ़रेब नहीं। जहाँ तक जिस्म और चेहरे मोहरे का तअल्लुक था, अल्नासिर में बहुत कशिश और जाज़बीयत थी। अपने इन औसाफ़ से वह ख़ुद भी आगाह था। इन्सानी फ़ितरत की कमज़ोरियां अल्नासिर को वहम और वसवसों और ख़ुश फ़हमियों में मुब्तिला कर रही थीं। वह किसी नतीजे पर न पहुंचा और उसकी आँख लग गयी।

उसे एक आदमी ने जगाया और कहा कि उसे थेरिया ने अपने कमरे में बुलाया है। वह चला गया। इस कमरे में थेरिया अकेली थी।

"बैठो अल्नासिर!" थेरिया ने कहा– "मैं तुम्हारे साथ बहुत ज़रूरी बात करना चाहती हूँ।" अल्नसिर उसके सामने बैठ गया तो थेरिया ने कहा– "मैं तुमसे यह नहीं पूछूंगी कि रात लिज़ा तुम्हें बाहर ले गयी या तुम उसे ले गये थे। मैं यह कहना चाहती हूँ कि यह लड़की बहुत भोली और मासूम है। मैं जानती हूँ कि वह तुम्हें पसन्द करती है लेकिन मैं उसे और तुम्हें इजाज़त नहीं दे सकती कि इस तरह रात–रात भर बाहर बैठे रहो। लिज़ा को गुमराह करने की कोशिश न करो।"

"मैंने ऐसी कोशिश नहीं की।" अल्नासिर ने कहा– "हम दोनों बातें करते–करते ज़रा दूर निकल गये थे।"

"मैं लिज़ा को यह नहीं कह सकती कि वह तुम्हारी मोहब्बत में ऐसी पागल बने कि उसे किसी का होश ही न रहे।" थेरिया ने कहा– "मैं तुम से उम्मीद रखूंगी कि उसकी कम उम्री और जज़्बातियत से फ़ायदा न उठाओ।"

"लिज़ा तुम्हारी तरह शहज़ादी है।" अल्नासिर ने कहा– "और मैं तुम्हारा क़ैदी हूँ। मैं

एक हकीर इन्सान हूँ। लिज़ा का मज़हब कुछ और है और मेरा कुछ और। शहज़ादी और कैदी में इतनी मोहब्बत नहीं हो सकती।"

"तुम औरत की फितरत से शायद वाकिफ़ नहीं।" थेरिया ने कहा– "शहज़ादी अपने कैदी को दिल दे बैठे तो उसे शहज़ादा समझकर अपने आपको उसका कैदी बना लिया करती है। मोहब्बत मज़हब की ज़ंज़ीरों तोड़ दिया करती है। मैं उसके साथ बात कर चुकी हूँ। वह कहती है कि मेरा जीना और मेरा मरना अल्नासिर के लिए है। वह कहेगा कि अपना मज़हब छोड़ दो तो मैं गले से सलीब उतार कर फेंक दूंगी। तुम नहीं जानते अल्नासिर, लिज़ा ने सिर्फ़ तुम्हारी ख़ातिर शेख़ सन्नान को नाराज़ कर दिया है। वह तुम्हे और तुम्हारे साथियों को कैद में डाल देना चाहता है लेकिन लिज़ा ने उसके साथ दुश्मनी मोल लेकर तुम्हें अपने साथ रखा है। सन्नान ने लिज़ा को जो शर्त बताई है वह सिर्फ़ उस लड़की के लिए काबिले कुबूल हो सकती है जिसे किसी की मोहब्बत ने अंधा कर रखा हो। अगर हम इस किले से जल्दी न निकल सके तो लिज़ा यह शर्त मान लेगी।"

"मैं ऐसा नहीं होने दूंगा।" अल्नासिर ने कहा– "मैं लिज़ा की आबरू की ख़ातिर कट मरूंगा।।"

"क्या तुम्हारे दिल में लिज़ा की इतनी ही मोहब्बत है जितनी उसके दिल में है?"

"अगर वह लड़की होकर मेरी मोहब्बत का एतराफ करती है और इसके इज़हार से नहीं डरती तो मैं इन्कार क्यों करूं? मैं मर्द हूं। मेरे दिल में लिज़ा की मोहब्बत है।"

"मैं तुमसे सिर्फ़ यह इल्तिजा करती हूँ कि उसे धोखा न देना।" थेरिया ने कहा– "तुम हमारे कैदी नहीं हो। गुमश्तगीन तुम्हें अपना मेहमान समझता है।"?

अल्नासिर का ज़ेहन जो लिज़ा के मुतअल्लिक दो हिस्सों में बंटा हुआ था वह साफ हो गया। उसपर लिज़ा की मोहब्बत का नशा तारी हो गया और वह उसे देखने के लिए बेताब हो गया। उसने थेरिया से पूछा कि वह कहां है। थेरिया ने उसे बताया कि वह रात भर जागती रही है, दूसरे कमरे में सोई हुई है। थेरिया का तीर निशाने पर लगा। उसने लिज़ा के तिलिस्म को अल्नासिर की अक्ल पर पूरी तरह तारी कर दिया.....यही उसका मकसद था। यह लड़की क्या इन्तेहां दरजे की चालाक थीं। यही उनकी तरबियत थी। वह इन्सानी कमज़ोरियों के साथ खेलना ख़ूब जानती थीं। अल्नासिर वहाँ से उठा तो वह हवा में उड़ रहा था। अपने कमरे में गया तो साथियों ने उसे पूछा कि वह कहाँ गया था। उसने झूठ बोला और उन्हें तसल्ली दी कि सब ठीक हो जाएगा। वह अपने फ़र्ज़ से परे हटने लगा था।

❖

सलीबी गुमश्तगीन के पास बैठा हुआ था गुश्तगीन उसे कह रहा था कि वह अल्नासिर और उसके साथियों को एक दो दिनों में हरान ले जाना चाहता है। इतने में थेरिया आ गयी। उसने इन दोनों से कहा– "इन छापामारों का कमाण्डर हमारे जाल में आ गया है।" उसने बताया कि किस तरह अल्नासिर के दिल पर लिज़ा का कब्ज़ा मुकम्मल और पुख़्ता कर दिया है। उसने कहा– "इस आदमी को सलाहुद्दीन अय्यूबी के क़त्ल के लिए इस्तेमाल किया जा

सकता है। अब देखना यह है कि यह आदमी कितने वक़्त में अपनी असलियत को भूल कर अपने सुल्तान के कत्ल के लिए तैय्यार होता है।"

"मैं इन चारों को एक दो दिनों में हरान ले जाना चाहता हूँ।" गुमश्तगीन ने कहा– "क्या तुम दोनों या अकेली लिज़ा मेरे साथ चलेगी और मेरे साथ रहेगी? कत्ल के लिए अल्नासिर को लिज़ा ही तैय्यार करेगी।"

"मैं लड़कियों को अपने साथ ले जा रहा हूं।" सलीबी ने कहा– "मैं ज़्यादा दिन रुक नहीं सकता। मुझे अपने हुक्मरानों को जल्दी यह इत्तलाअ देनी है कि हलब, मुसिल और हरान की फ़ौजें बिल्कुल बेकार हैं। और उन फ़ौजों के सालार सिवाये भागने के और कुछ नहीं जानते। मैं उन्हें सूरते हाल से आगाह करके सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त देने का कोई तरीका इख़्तियार करने का मश्वार दूंगा। हो सकता है हमारी तरफ से आप लोगों को जो मदद मिलती है वह बन्द कर दी जाए।"

"ऐसा न कहो।" गुमश्तगीन ने मिन्नत समाजत के लहजे में कहा–"मुझे एक मौका दो। मैं अय्यूबी को कत्ल करा दूंगा फिर देखना मैं किस तरह फ़ातेह बन कर दमिश्क में दाख़िल होता हूं। यह दोनों लड़कियाँ या सिर्फ़ लिज़ा मुझे दे दो। इस ने छापामारों के कमानदार पर कब्ज़ा कर लिया है। वह इसे तैय्यार कर लेगी। अल्नासिर सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास बिला रोक टोक जा सकता है, क्योंकि यह उसका छापामार है। वह अय्यूबी को आसानी से कत्ल कर सकता है और यह भी तो सोंचो, लिज़ा को आप ले गये तो अल्नासिर मेरे किसी काम का नहीं रहेगा।"

कुछ बहस मुबाहिसे के बाद सलीबी ने कहा– "हरान जाने के बजाए हम यहीं रुके रहते हैं। यह दोनों लड़कियाँ अल्नासिर को तैय्यार कर लेंगी और हो सकता है कि इसके तीनो साथियों को भी तैय्यार किया जा सके। इनके दिलों में सलाहुद्दीन अय्यूबी की नफ़रत पैदा करनी है।"

"अल्नासिर के मुतअल्लिक मेरी राय यह है कि बहुत कच्चा आदमी है।" थेरिया ने कहा–"लिज़ा उसके अकल पर काबिज़ हो चुकी है। दो तीन मुलाकातों के बाद वह लिज़ा के इशारों पर नाचने लगेगा।"

"आज इन चारों को अपने साथ बैठाकर खाना खिलाओ।"

खाने का वक़्त हुआ तो अल्नासिर और उसके साथियों को भी खाने के कमरे में बुलाया गया। उनके साथ दोस्ताना बेतकल्लुफ़ी पैदा कर ली गयी। खाना अभी रखा नहीं गया था कि शेख़ सन्नान के एक ख़ादिम ने आकर सलीबी से कहा कि उसे सन्नान ने बुलाया है। सलीबी चला गया।

"उस लड़की के मुतअल्लिक तुमने क्या सोंचा है?" शेख़ सन्नान ने पूछा।

"मैं जब जाऊंगा उसे अपने साथ ले जाऊंगा।" सलीबी ने जवाब दिया।

"तुम्हारे जाने तक लड़की मेरे पास रहेगी।" सन्नान ने कहा।

"मैं आज ही चला जाऊंगा।"

"जाओ।" शेख सन्नान ने कहा– "और लड़की को यहीं छोड़ जाओ। तुम उसे किले से बाहर नहीं ले जा सकोगे।"

"सन्नान!" सलीबी ने कहा– "इस किले की ईंट से ईंट बज जाएगी। मुझे ललकारने की जुर्रत न करो।"

"मालूम होता है तुम्हारा दिमाग़ अभी ठीकाने नहीं आया।" शेख सन्नान ने कहा–"आज रात लड़की को तुम ख़ुद मेरे पास ले आना। ख़ुद जाओ या रहो। अगर तुम रात लड़की को न लाये तो तुम तहखाने में और लड़की मेरे पास होगी। जाओ। ठंडे दिल से सोंच लो।"

❖

सलीबी खाने के कमरे में दाख़िल हुआ। सब बेताबी से उसका इन्तज़ार कर रहे थे। वह फुंफकार रहा था। कहने लगा– "सुनो दोस्तों! शेख सन्नान ने मुझे ललकार कर कहा है कि आज रात लिज़ा उसके पास होगी। उसने मुझे यहाँ तक कह दिया है कि लिज़ा को मैं ख़ुद उसके पास ले जाऊं, और अगर मैं न ले गया तो वह मुझे तहखाने में डाल देगा और लिज़ा को ले जाएगा।"

"आप अगर तहख़ाने में चले गये तो क्या हम मर जाएंगे?" अल्नासिर ने कहा– "वह लिज़ा को नहीं ले जा सकेगा।"

"लेकिन यह लड़की तुम्हारी क्या लगती है अल्नासिर?" उसके एक साथी ने पूछा।

"तुम अपने आप को हमारा क़ैदी न समझो। गुमश्तगीन ने कहा– "यह मुसीबत हम सबके लिए आ रही है।"

"तुम हमारे नहीं शेख़ सन्नान के क़ैदी हो।" सलीबी ने कहा– "तुम हमारा साथ दो। हम बाहर जाकर तुम्हें आज़ाद कर देंगे। अब यहाँ से निकलने की सोंचो।"

"मुझे शेख़ सन्नान ने इजाज़त दे रखी है कि इन चारों को अपने साथ ले जाऊं।" गुमश्तगीन ने कहा– "मैं इन्हें आज ही ले जा रहा हूँ। जल्दी–जल्दी खाना खा लो। मुझे शाम से पहले रवाना होना है।"

गुमश्तगीन का दिमाग़ बहुत तेज़ था। उसने खाने के दौरान सबको बता दिया कि उसने क्या सोंचा है। खाना खाकर उसने अपने ख़ादिमों और बॉडीगार्डों को बुलाया और कहा कि वह फ़ौरन क़िले से रवाना हो रहा है। सामान फ़ौरन बांध लिया जाए। उसी वक़्त उसका क़ाफ़िला तैय्यार होने लगा। उसके अपने घोड़े के अलावा चार घोड़े बॉडीगार्डों के थे। चार ऊंट थे जिन पर खाने पीने के सामान के अलावा ख़ेमे लादे गये। सफ़र लम्बा था। इसलिए ख़ेमे साथ रखे गये थे। उन्हें उनके बांसों पर लपेटा गया था।

गुमश्तगीन शेख़ सन्नान के पास गया और उसे बताया कि वह जा रहा है और चारों छापामारों को भी साथ ले जा रहा है। उनके मुतअल्लिक सौदा तय हो चुका था। गुमश्तगीन ने ज़र व जवाहरात की सूरत में कीमत अदा कर दी थी।

"मुझे उम्मीद है कि मैंने सलीबियों के कहने पर जो चार आदमी भेज रखे हैं वह सलाहुद्दीन अय्यूबी का काम तमाम करके ही आयेंगे।" शेख़ सन्नान ने कहा– "तुम सैफुद्दीन को इन

छापामारों से कत्ल कराओ। तुम लोग लड़ नहीं सकते अपने दुश्मनों को चोरी छुपे कत्ल कराओ......तुम्हारा सलीबी दोस्त और उसकी परियां कहाँ हैं?"

"अपने कमरे में हैं।" गुमश्तगीन ने कहा।

"उस छोटी लड़की के मुतअल्लिक कोई बात तो नहीं की?"

"उसे कह दिया था कि आज रात शेख सन्नान के पास चली जाना।" गुमश्तगीन ने जवाब दिया– "वह आप से बहुत डरा हुआ मालूम होता था।"

"यहाँ बड़े–बड़े जाबिर आदमी डर जाते हैं।" शेख सन्नान ने कहा– "कम्बख़्त लड़की को मुझसे यूं छुपा रहा था जैसे वह उसकी अपनी बेटी है।"

गुमश्मगीन उससे रुख़सत हुआ। उसका क़ाफ़िला तैय्यार खड़ा था। वह घोंड़े पर सवार हुआ। उसके बॉडीगार्ड भी घोड़ों पर सवार हुए। दो गुमश्तगीन के आगे हो गये और दो उसके पीछे। उनके हाथों में बरछियां थीं। घोड़ों के पीछे अल्नासिर और उसके साथी और उनके पीछे सामान से लदे हुए ऊंट थे। किले का दरवाज़ खुला। क़ाफ़िला बाहर निकल गया और दरवाज़ा बन्द हो गया।

❖

काफ़िला किले से दूर ही दूर होता गया और सूरज उफ़क के अक़ब में छिपने लगा। सूरज ने ग़ुरूब होकर काफ़िले और किले को छुपा लिया। किले में कंदीले और फानूस जल उठे। शाम पूरी तरह तारीक हो गयी तो शेख सन्नान ने अपने दरबान से पूछा– "वह सलीबी लड़की को लेकर नहीं आया?" उसे नफ़ी में जवाब मिला। उसने तीन चार बार पूछा तो भी उसे नफी में जवाब मिला। उसने अपने ख़ुसूसी ख़ादिम को बुलाकर कहा– "उस सलीबी से जाकर कहो कि छोटी लड़की को लेकर जल्दी आए।"

ख़ादिम उनके कमरे में गया जहाँ सलीबी ठहरा करते थे। वहाँ कोई नहीं था। लड़कियां भी नहीं थीं। तमाम कमरे ख़ाली थे। उसने इधर उधर देखा। क़िले के बाग़ में घूम फ़िर कर देखा। चट्टान के इर्द गिर्द घूम कर देखा। वहाँ से भी मायूस लौटा तो शेख़ सन्नान से कहा कि सलीबी और लड़कियां नहीं मिलीं। सन्नान ने आसमान सर पर उठा लिया। अपनी फ़ौज के कमाण्डर को बुलाकर हुक्म दिया कि किले के कोनों खड्डरों की तलाशी लो और सलीबी को बरामद करो। फ़ौज में खलबली मच गयी जिसे देखो भाग दौड़ रहा था। क़िले में हर तरफ कंदीले और मशालें मुतहरिक नज़र आती थीं। सलीबी कहीं से भी न मिला। शेख सन्नान ने उन आधा दर्जन पहरेदारों को बुलाया जो दरवाज़े पर ड्यूटी पर थे। इन से पूछा कि गुमश्तगीन के क़ाफ़िले के अलावा किसी और के लिए दरवाज़ा खोला गया था। उन्होंने बताया कि हुक्म के बेग़ैर किसी के लिए दरवाज़ा नहीं खोला जाता और गुमश्तगीन के अलावा किसी और के लिए खोला ही नहीं गया। उन्होंने गुमश्तगीन के काफ़िले की तफ़सील भी बतायी। इस काफिले के साथ सलीबी और लड़कियाँ नहीं थीं।

शेख सन्नान अपने कमरे में फुंफकार रहा था। रात का पहला पहर गुज़र गया था। गुमश्तगीन का क़ाफ़िला चला जा रहा था। उसने अपना घोड़ा रोक कर शुतरबानों से कहा–

"ऊंटों को बैठाओ और इन्हें बाहर निकालो, मर ही न जाएं।"

"ऊंटो को बैठाकर उनपर लदे हुए ख़ेमे उतार दिए गए। ख़ेमे खोले गये इनमें से सलीबी, थेरिया और लिज़ा निकलीं। वह पसीनें में नहाये हुए थे। गुमश्तगीन इन्हें खेमों में लपेट कर क़िला इस्यात से निकाल लाया था वह किले से बहुत दूर निकल गये थे। फ़िदाइयों से ऐसी तवक्को नहीं रखी जा सकती थी कि वह तआक्कुब में आयेंगे। यह फ़िरका जंगजू नहीं था। किसी के साथ आमने सामने की लड़ाई का ख़तरा मोल नहीं लिया करता था। फिर भी गुमश्तगीन ने काफ़िले को कयाम न करने दिया। लड़कियों को ऊंटों पर सवार कर दिया गया। सलीबी छापामारों के साथ पैदल चल पड़ा। उसका घोड़ा और लड़कियों के घोड़े किले में रह गये थे। सलीबी इस ख़ित्ते की ज़ुबान रवानी से बोलता था। उसने अल्नासिर के साथ बातें शुरू कर दीं। इन बातों में दोस्ती और प्यार का रंग ग़ालिब था। अल्नासिर के दिल से ख़तरे निकल गयें वह लिज़ा के क़रीब होना चाहता था।

लिज़ा के क़रीब होने का मौक़ा आधी रात के बाद मिला जब एक जगह काफ़िला कयाम के लिए रोका गया।

गुमश्तगीन के लिए ख़ेमा खड़ा कर दिया गया। बाकी सबके लिए अलग अलग खेमे नसब किये गये। छापामार और बॉडीगार्ड वग़ैरह खुले आसमान के तले लेट गये। वह बहुत थके हुए थे। फ़ौरन ही सो गये। अल्नासिर को नींद नहीं आ रही थी। वह सोंच रहा था कि लिज़ा को ख़ेमे से जगा लाए या वह ख़ुद आ जाएगी। वह भूल गया था कि वह छापामार है, और उसकी फ़ौज कहीं लड़ रही है। उसे यह ख़्याल भी न आया कि उसे वापस अपनी फ़ौज में जाना है और फ़रार का यह मौक़ा निहायत अच्छा जब कि सब बेहोशी की नींद सो गये हैं, घोड़े भी हैं, हथियार भी हैं और खाने पीने का सामान भी है। उसके साथी उसी पर भरोसा किये सो गये थे। वह अपने कमाण्डर के हिदायत के पाबन्द थे। उन्हें मालूम नहीं था कि उनका कमाण्डर अपनी अकल, अपना ईमान और अपना जज़्बा एक नौजवान लड़की के सुपुर्द कर चुका है। औरत अपनी तमाम तर तबाह कारी के साथ उसके असाब पर सवार हो चुकी थी।

उसे एक साया चलता नज़र आया जो किसी मर्द का नहीं था। वह आहिस्ता आहिस्ता उठकर बैठ गया, पांव पर सरका और अपने सोये हुए साथियों से दूर हट गया। साया इधर ही आ रहा था। ज़रा देर बाद दो साये एक दूसरे में जज़्ब हो गये। लिज़ा अल्नासिर को सोये हुए काफ़िले से कुछ दूर एक टीले की ओट में ले गयी। उस रात वह पहले से ज़्यादा जज़्बाती मालूम होती थी। अल्नासिर की जज़्बाती कैफ़ियत में दिवानगी आ गयी थी। लिज़ा जज़्बातियत का इज़हार ज़ुबान से कम और हरकात से ज़्यादा कर रही थी। उसने अचानक परे हटकर कहा– "अल्नासिर एक बात बताओ। तुम्हारी ज़िन्दगी में कभी कोई औरत दाखिल हुई है?"

"मां और बहन के सिवा मैंने किसी औरत को कभी हाथ भी नहीं लगाया।" अल्नासिर ने जवाब दिया–"तुमने मेरी जिन्दगी देख ली है। मैं नौजवानी में नुरुद्दीन ज़ंगी की फ़ौज में शामिल हो गया था जहाँ तक यादें पीछे जाती हैं मैं अपने आप को मैदाने जंग में, रेगिस्तान में, अपने साथियों से दूर दुश्मन के इलाको में ख़ून बहाता और भेड़ियों की तरह शिकार की

तलाश में फिरता देखता हूँ। मैं जहाँ भी होता हूँ अपने फ़र्ज़ से कोताही नहीं करता। मेरा फ़र्ज़ मेरा ईमान है।" वह चौंक उठा। ज़रा सी देर कुछ सोंचकर उसने पूछा– "लिज़ा, तुमने शायद मेरे ईमान की बुनियादें हिला दी है। मुझे बताओ कि तुम लोग मुझे और मेरे साथियों को कहाँ ले जा रहे हो।"

"मुझे यह बताओ कि तुम्हारे दिल में मेरी मोहब्बत है या मुझे देखकर तुम हैवान बन जाते हो?" लिज़ा ने ऐसे लहजे में पूछा जिसमें प्यार और हल्की सी मज़ाक की झलक नहीं थी। उसका अन्दाज़ गुज़िश्ता रात की निस्बत बदला हुआ था।

"तुमने मुझे कहा था कि मोहब्बत को नापाक न करना।" अल्नासिर ने कहा– "मैं तुम पर साबित करूंगा कि मैं हैवान नहीं। मुझे यह बताओ कि तुम्हारी कौम में एक से एक बढ़कर ख़ुबरू, जंगजू, तनूमंद और ऊंचे रूत्बे वाला मर्द मौजूद है। तुम किसी बादशाह के सामने चली जाओ तो वह तख़्त से उतर कर तुम्हारा इस्तक़बाल करेगा, फिर तुम ने मुझमें क्या देखा है?"

लिज़ा ने कोई जवाब न दिया। अल्नासिर ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा– "मुझे जवाब दो लिज़ा।" लिज़ा ने सर घूटनों पर रख दिया। अल्नासिर को उसकी सिसकियां सुनाई दीं। वह परेशान हो गया। उसने बार–बार उससे पूछा कि वह क्यों रो रही है। वह रोती रही। अल्नासिर ने उसे अपने बाज़ूओं में ले लिया तो लिज़ा ने सर उसके सीने में रख दिया। अल्नासिर समझ न सका कि जिस तरह उसकी अपनी ज़ात में इन्सानी फ़ितरत की बुनियादी कमज़ोरी उभकर उसकी अक़्ल पर ग़ालिब आ गयी थी उसी तरह लिज़ा भी एक कमज़ोरी की गिरफ़्त में आ गयी थी। यह वह कमज़ोरी थी जो मलिका को अपने ग़ुलाम के आगे झुका देती है और जो दौलत के अंबार को पत्थरों का ढेर समझ कर अपने दिल की तस्कीन के लिए किसी कुटिया में जा बैठती है। लिज़ा मोहब्बत की प्यासी थी। वह मोहब्बत जो रूह को मुत्मईन कर दे। उसे जिस्मानी मोहब्बत मिली थी और उन मर्दों से मिली जिन से उसे नफ़रत थी। उसने इस्यिात के क़िले की तरफ़ जाते हुए और क़िले में पहुंच कर भी थेरिया के आगे अपने जज़्बात का इज़हार कर दिया था। वह कुछ सोंचे समझे बग़ैर अल्नासिर के पास जा बैठी थी। उसे कहा था– "मुझ पर भरोसा करना।" उस वक़्त उसके दिल में कोई फ़रेबाकारी नहीं थी। यह उसके दिल की आवाज़ थी। वह अपनी रूह की रहनुमाई में अल्नासिर के पास चली गयी थी। अगर उसे थेरिया वहाँ से उठा न ले जाती तो न जाने अल्नासिर से और क्या कुछ कहती।

फ़िर उसे अल्नासिर को फ़ांसने को कहा गया। उसने यह कमाल भी कर दिखाया, मगर उसका दिल साथ नहीं दे रहा था। यह उसका फ़र्ज़ था जो उसने अदा किया था। वह अपने दिल और फ़र्ज़ के दर्मियान भटक गयी थी। अल्नासिर को मालूम नहीं था कि थोड़ी देर पहले जब क़ाफ़िला रूका और ख़ेमे नस्ब किये जा रहे थे तो गुमश्तगीन ने लिज़ा के कान में कहा था– "सब सो जाएंगे तो मेरे ख़ेमे में आ जाना। तुम्हारी कौम की भेजी हुई बेहतरीन शराब पेश करूंगा। तुम्हें बड़ी उस्तादी से शेख़ सन्नान से बचाकर लाया हूँ।"

लिज़ा ने उसे कोई जवाब नहीं दिया था। उससे हटी तो सलीबी ने उससे कहा–"ख़ुदा ने तुम्हें उस बूढ़े दरिन्दे से बचा लिया है। थेरिया सो जाए तो मेरे ख़ेमें में आ जाना। जश्न मनायेंगे।"

लिज़ा को अपनी ख़ूबसूरती और अपने जिस्म से नफ़रत होने लगी। वह अपने ख़ेमे में चली गयी थी। थेरिया सो गयी। लिज़ा की आँख न लगी। वह उठी और दबे पावं अल्नासिर की तरफ चल पड़ी। अल्नासिर उसीके ख़्याल और इन्तज़ार में जाग रहा था।

वह अल्नासिर को कोई जवाब देने ही लगी थी कि अल्नासिर ने चौंक कर कहा–"सुनो, तुम्हें कोई आहट सुनाई दे रही है? घोड़े आ रहे हैं।"

"धमक बड़ी साफ है।" लिज़ा ने कहा–"सबको जगा दें। शेख सन्नान ने हमारे तअक्कुब में सिपाही भेजे होंगे।"

अल्नासिर दौड़ कर टीले पर चढ़ गया। उसे बहुत से मशाले नज़र आयीं जो घोड़ों कीचाल के साथ ऊपर नीचे, ऊपर नीचे हो रही थीं। घोड़ों के क़दमों की आवाज़ें बुलन्द होती जा रही थीं। अल्नासिर दौड़ता नीचे आया, लिज़ा को अपने साथ लिया और सोये हुए क़ाफ़िले की तरफ़ दौड़ा। सबको जगाया। उसने अपने छापामारों को साथ लिया और टीले के क़रीब ले गया। लिज़ा को अपने साथ रखा। सबके पास बरछियां और तलवारें थीं। गुमश्तगीन के बॉडीगार्ड और शुतरबान भी बरछियां और तलवारों से मुसल्लह होकर मुक़ाबिले के लिए तैय्यार हो गये।

❖

वह पन्द्रह सोलह सवार थे। छः सात के हाथों में मशाल थीं। उन्होंने आते ही क़ाफ़िले को घेरे में ले लिया। एक ने ललकार कर कहा– "दोनों लड़कियाँ हमारे हवाले कर दो। शेख सन्नान ने कहा है, कि दोनों लड़कियाँ दे दोगे तो ख़ैरियत से जा सकोगे।"

अल्नासिर तजुर्बाकार छापामार था। उसने अपने छापामार पहले ही घेरे से दूर करके छुपा लिए थे। उसने इशारा किया और वह अपने तीन छापामारों के साथ उन सवारों पर टूट पड़ा जो उसके सामने थे। छापामारों ने पीछे से बरछियां उनके जिस्मों में दाख़िल कर दीं... ...सवार गिरे तो अल्नासिर ने अपने साथियों से बुलन्द आवाज़ से कहा– "इन घोड़ों पर सवार हो जाओ।" एक घोड़ा उसने पकड़ लिया। उस पर सवार होकर और अपने पीछे लिज़ा को बैठा लिया। उसे कहा कि बाज़ू मज़बूती से उसके कमर के गिर्द लपेट ले।

सन्नान के फ़िदाइयों ने हल्ला बोल दिया। उन्होंने मशालें फेंक दी थीं। यह जलती रहीं। अल्नासिर और उसके छापामारों ने बहुत मुक़ाबला किया। एक घोड़े की सरपट दौड़ने की आवाज़ आई जो दूर हटती गयी। वह गुमश्तगीन था। जो जान बचाकर भाग गया था। फ़िदाइयों ने अल्नासिर के घोड़े पर लड़की देख ली थी। उसे वह जिन्दा पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। तीन–तीन, चार–चार घोड़े उसे घेरे में लेते और सवार बरछियों से उसके घोड़े को ज़ख़्मी करने के लिए बरछियों के वार करते थे। अल्नासिर तजुर्बाकार लड़ाका था सवार था। उसने अपने घोड़े को बचाये रखा और दो फ़िदाई गिरा लिए। उसे दौड़ता घोड़ा यकलख़्त रोकना

और तेज़ी से मोड़ना पड़ता था। लिज़ा के पांव रकाबों में नहीं थे। एक बार अल्नासिर को घोड़ा तेज़ रफ़्तार ही में मोड़ना पड़ा। लिज़ा संभल न सकी और गिर पड़ी।

फ़िदाई घोड़ों से कूद आये। लिज़ा अल्नासिर की तरफ़ दौड़ी लेकिन दो फ़िदाई ने उसे पकड़ लिया। अल्नासिर ने घोड़े को ऐड़ लगायी और बरछी तानी। फ़िदाइयों ने लिज़ा को आगे कर दिया। अल्नासिर को अपने साथियों के मुतअल्लिक इल्म कुछ नहीं था। उसे भागते दौड़ते घोड़ों और बरछियां और तलवार टकराने की आवाज़े सुनाई दे रही थीं। वह तीन चार फ़िदाइयों में अकेला था। उसका हर वार खाली जा रहा था क्योंकि वह उनके करीब आता तो फ़िदाई लिज़ा को आगे कर देते थे। आख़िर वह घोड़े से कूद गया। बेजिगरी से लड़ा। जख़्मी हुआ और उसने दो फ़िदाइयों को गिरा लिया। इस दौरान लिज़ा चीखती रही। "अल्नासिर निकल जाओ। मेरे लिए न मरो। निकल जाओ तुम अकेले हो।" लेकिन वह दिवाना हुआ जा रहा था। उसने एक बार चिल्लाकर कहा—"ख़ामोश रहो लिज़ा। यह तुम्हें नही ले जा सकेंगे।"

अल्नासिर ने यह करके भी दिखाया कि फ़िदाई लिज़ा को न ले जा सके। उसने फ़िदाइयों को बुरी तरह ज़ख्मी करके फेंक दिया। इस मार्के में वह कयामगाह से दूर हट गये थे। अल्नासिर ने एक घोड़ा पकड़ा। लिज़ा को उस पर सवार किया। खु़द उसके पीछे सवार हुआ और घोड़े को ऐड़ लगा दी लेकिन भागा नहीं। मार्का ख़ामोश हो गया था। उसने जाकर देखा। वहां लाशें थीं और दो तीन फ़िदाई ज़ख़्मों से तड़प रहे थे। उसके तीनों साथी मारे गये थे। सलीबी भी मरा पड़ा था। थेरिया लापता थी। अल्नासिर ने ज़्यादा इन्तज़ार न किया। आसमान की तरफ़ देखा। कुतबी सितारे का अन्दाज़ा किया और घोड़े को उस रूख़ पर डाल दिया। बहुत दूर जाकर उसने घोड़ा रोक लिया।

"अब बताओ तुम कहां जाना चाहती हो।" उसने लिज़ा से पूछा— "मैं तुम्हें सिर्फ इसलिए अपने साथ नहीं ले जाऊंगा कि तुम तन्हा हो। कहो तो तुम्हें तुम्हारे इलाके में ले चलता हूँ। क़ैद हो गया तो परवाह नहीं करूंगा। तुम अमानत हो।"

"अपने साथ ले चलो।" लिज़ा ने कहा— "अल्नासिर! मुझे अपने पनाह में ले लो।"

घोड़ा रात भर चलता रहा। सुबह तुलूअ हुई तो अल्नासिर ने इलाक़ा पहचान लिया। यहीं कहीं उसने एक बार अपने जैश के साथ शबख़ून मारा था। वहाँ मिट्टी के टीले और भुरभुरी चट्टाने थीं। चलते—चलते वह एक चश्में तक पहुंच गये। यह एक चट्टान के दामन में था। अल्नासिर के कपड़े ख़ून से लाल हो गये थे। दोनों ने घोड़े से उतर कर पानी पिया, घोड़े को पानी पिलाया। अल्नासिर ने ज़ख़्म देखे। कोई ज़ख़्म गहरा नहीं था। ख़ून रूक गया था। उसने इस डर से जख़्म न धोये कि ख़ून जारी हो जायेगा। लिज़ा टहलती टहलती एक तरफ़ निकल गयी। अल्नासिर उसे ढूंढते ढूंढते चट्टान के दूसरी तरफ़ गया। लिज़ा बैठी हुई थी। अल्नासिर की तरफ़ उसकी पीठ थी। वहाँ हड्डियां बिखरी हुई थीं जो इन्सानों की मालूम होती थीं। पस्लियों के पिंजरे थ। हाथों टांगों और बाज़ूओं की हड्डियां भी थीं। इनके दर्मियान तलवारें और बरछियां पड़ी थीं।

लिज़ा एक खोपड़ी को सामने रखे बैठी थी। किसी औरत की खोपड़ी मालूम होती थी।

चेहरे पर कहीं कहीं खाल थी। सर के लम्बे लम्बे बाल कुछ सर के साथ थे। बाकी इधर उधर बिखरे हुए थे। सीने का पिंजर खाल के बगैर था। पस्लियों में एक खंजर उतरा हुआ था। गले की हड्डी पर सोने का हार पड़ा था। इस पिंजर के इर्द गिर्द चिथड़े पड़े थे जो रेशमी कपड़े के थे.....अल्नासिर आहिस्ता--आहिस्ता चलता लिज़ा के पीछे जा खड़ा हुअ। लिज़ा खोपड़ी में खो गयी थी। अचानक उसने अपने दोनों हाथ कानों पर रखे और बड़ी ही जोर से चीख़ मारी। वह तेज़ी से उठकर घूमी। अल्नासिर ने उसे बाज़ूओं में लेकर सीने से लगा लिया। लिज़ा ने अपना चेहरा अल्नासिर के सीने में छुपा लिया। उसका जिस्म थर--थर कांप रहा था। अल्नासिर उसे चश्में तक ले गया।

❖

जब वह अपने आप में आई तो अल्नासिर ने उससे पूछा कि उसने चीख क्यों मारी थी?

"मुझे अपना अन्जाम नज़र आ गया था।" लिज़ा ने उदास लहजे में कहा– "तुमने वह खुश्क लाश देखी होगी किसी औरत की है। यह कोई मुझ जैसी होगी। उसने मेरे तरह हुस्न के जादू चलाये होंगे। हर किसी के लिए सुहाना फ़रेब बनी होगी और कहती होगी कि उसके हुस्न को जवाल नहीं और वह सदा जवान और हमेशा जिन्दा रहेगी। तुमने उसी पस्लियों के पिंजर में ख़ंजर फंसा हुआ देखा है? गले में हार देखा है? यह हार और यह ख़ंज़र जो कहानी सुनाते हैं वह मेरी कहानी है, और दूसरी जो खोपड़ियां बिखरी हुई हैं और उनके साथ जो तलवारे और बरछियां पड़ी हैं वह सौ बार सुनी हुई कहानी सुनाती है। मैंने यह कभी तो तवज्जा से नहीं सुनी थी। आज इस औरत की खोपड़ी देखी तो मुझे यूं नज़र आया जैसे यह मेरी अपनी खोपड़ी हो। इस खुश्क खोपड़ी पर गोश्त चढ़ गया तो मेरा चेहरा बन गया। मैंने गिद्ध देखा जो मेरे चेहरे से आँखे निकाल रहा था। एक भेड़िए को देखा जो मेरे गुलाबी गालों को नोच रहा था। इन मुरदार खोरों ने मेरा चेहरा खा लिया और पीछे खोपड़ी रह गयी। मुझे ऐसा नज़र आया जैसे खोपड़ी के जबड़े और खौफ़नाक दांत हिल रहे हों। मुझे आवाज़ सुनाई दी– 'यह है तुम्हारा अन्जाम' और मेरे दिल को किसी खौफनाक चीज़ ने दांतों में जकड़ लिया।"

कुछ दिनो बादवहां जा कर देखना जहां हम पर फ़िदाइयों ने हम्ला किया था।" अल्नासिर ने कहा– "वहां तुम्हें यही मंज़र नज़र आयेगा। लाशों के पिंजर, खोपडियां, तलवारें और बरछियां और शायद उनसे कुछ दूर थेरिया की खोपड़ी भी पड़ी मिल जाए। उसके सीने में ख़ंजर उतरा हुआ होगा। वह सब औरत के लिए मरे हैं यह सब भी औरत के लिए मरे हैं।"

"अगर मैंने अपनी रविश न छोड़ी तो एक रोज़ सेहरा में गिद्ध और भेड़िए मेरे इस जिस्म का गोश्त नोच रहे होंगे जिस पर मुझे नाज और जिसे हासिल करने के लिए कोई जान पेश करता है कोई दौलत।" लिज़ा ने कहा-- "मगर इन्सान इबरत हासिल नहीं करता। उनकी तबाही और बरबादी नहीं देखता जो उससे पहले इस ज़मीन पर अपने ऊपर हुस्न, दौलत और जिस्मानी ताक़त का नशा तारी करके तकब्बुर और ग़ुरूर से चलते फिरते थे......मैंने अपने आप को पहचान लिया। अपनी असलियत जान ली है। तुम सुन लो अल्नासिर! ख़ुदा ने

तुम्हें मर्दों की ताकत और मरदाना हुस्न दिया है। तुम्हें जो औरत देखेगी, वह तुम्हारे करीब आने की ख़्वाहिश करेगी देख लो तुम भी जाकर अपना अन्जाम देख लो।"

वह ऐसे अन्दाज़ से बोल रही थी जैसे उस पर आसेब का असर है। उसकी शोख़ियां और फ़रेबकारियां ख़त्म हो चुकी थीं। वह किसी तारिकुद्दुनिया फ़कीर के लहजे में बोल रही थी।

"मैं तुम्हें अपनी असलियत बता दूं?" उसने अल्नासिर से पूछा– "मैं तुम्हें दिखा दूं कि मेरे पस्लियों के पिंजर में क्या है?" उसने अपने सीने पर हाथ मारा और छुप गयी। उसका हाथ सोने के उस हार पर जा लगा। जिसमें जवाहरात भी थे। उसने हार को मुठ्ठी में लिया। ज़ोर से झटका दिया। हार टूट कर उसके हाथ में आ गया। उसने हार चश्में में फेंक दिया। उंगलियों से अंगूठियां उतारीं जिनमें हीरे जड़े हुए थे। यह भी चश्में में फेक दीं। कहने लगी– "मैं एक फ़रेब हूँ अल्नासिर! मैंने तुम्हें भी फ़रेब दिया था......मेरे दिल में तुम्हारी मोहब्बत भी पैदा हो गयी थी मगर इस पर मेरे फर्ज़ की बदरूह का भी असर था। यह बहुत अच्छा हुआ कि फ़िदाइयों ने हम पर हम्ला कर दिया, और यह और ज़्याद अच्छा हुआ कि मैंने अपने जिन्दगी में अपनी खोपड़ी देख ली, वरना मैं बता नहीं सकती कि जहाँ हम तुम्हें ले जा रहे थे वहां तुम पर क्या रूप चढ़ा दिया जाता, मेरी मोहब्बत का क्या हश्र होता! तुम एक बहुत बड़े फ़रेब का शिकार होने जा रहे थे। में अब झूठ नहीं बोलूंगी। तुम्हें इस मकसद के लिए ले जाया जा रहा था कि मैं अपनी ख़ूबसूरती और मोहब्बत के झांसे से तुम्हारी अक्ल पर कब्ज़ा कर लूं और तुम्हारे हाथों सलाहुद्दीन अय्यूबी को कत्ल कराया जाए। गुमश्तगीन किला इस्यिात में इस लिए गया था कि शेख़ सन्ना उसे सलाहुद्दीन अय्यूबी के कत्ल के लिए किराये के कातिल दे दे। सन्नान ने बताया कि उसने चार फ़िदाई भेज रखे हैं। अगर यह भी नाकाम हो गये तो आइंदा इस काम के लिए कोई फ़िदाई नहीं भेजूंगा क्योंकि वह बहुत से कारआमद फ़िदाई ज़ाया कर चुका है। आख़िर यह सौदा तय हुआ कि गुमश्तगीन तुम्हें और तुम्हारे साथियों को अपने साथ ले जाए और सैफुद्दीन के कत्ल के लिए तैय्यार करे। इतने में हमारा अफ़सर आ गया। उसने फ़ैसला किया कि अय्यूबी का कत्ल ज़रूरी है।"

"यह कभी मुम्किन नहीं हो सकता मैं सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के साये को भी मैली निगाह से नहीं देखूंगा।" अल्नासिर ने कहा– "दुनिया की कोई ताकत मुझे इतना बेअक़्ल नहीं बना सकती।"

लिज़ा हंस पड़ी। कहने लगी– "मैंने दिल से अपने फराइज़ को कुबूल नहीं किया, वरना हम फ़ौलाद को भी पानी बना दिया करती हैं।" उसने अल्नासिर को तफ़सील से बताया कि उसके फ़राइज़ और जज़्बात में कितना तज़ाद है। उसने यह भी बताया कि वह सैफुद्दीन के पास रही है। उसने पूछा– "क्या तुम मुझे जैसी नापाक लड़की कुबूल कर लोगे? मैं सच्चे दिल से इस्लाम कुबूल कर लूंगी।"

"अगर तुमने सच्चे दिल से तौबा कर ली है तो मेरे लिए गुनाह होगा कि मैं तुम्हें कुबूल न करूं।" अल्नासिर ने कहा– "लेकिन सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की इजाज़त के बगैर मैं कोई फ ैसला नहीं कर सकता। दिल से बोझा उतार दो। अगर तुम पाकीज़ा जिन्दगी बसर

करना चाहती हो तो ऐसी जिन्दगी तुम्हें सिर्फ हमारे मज़हब में मिलेगी।" उसने पूछा– "क्या तुम्हें मालूम है कि जो फि   दाई हमारे सुल्तान के कत्ल के लिए गये हैं वह किस भेस में गये हैं, और कातिलाना हम्ला किस तरह करेंगे?"

"कुछ इल्म नहीं।" लिज़ा ने जवाब दिया– "मेरे सामने इससे ज़्यादा कोई बात नहीं हुई कि चार फि   दाई भेजे गये हैं।"

"हमें उड़कर तुर्कमान पहुंचना होगा।" अल्नासिर ने कहा– "मुझे सुल्तान और उसके मुहाफ़िज़ों को ख़बरदार करना है।"

उसने लिज़ा को अपने आगे घोड़े पर बैठा लिया और ऐड़ लगा दी। इतनी हसीन लड़की उसके सीने से लगी हुई थी। उसके रेशम जैसे बाल उसके गालों पर लहरा रहे थे मगर उसके ज़ेहन में सुल्तान अय्यूबी समा गया था। फ   र्ज़ ने उसके जज़्बात को सुला दिया था। मकसद ने उसे मर्दे मैदान और इन्साने कामिल बना दिया था। और लिज़ा की तो जैसे रूह ही बदल गयी थी। वह इस कौवी और तनू मन्द जवान के कब्ज़े में और उसके रहम वह करम पर थी लेकिन उसे जैसे एहसास ही नहीं था कि वह मर्द है और यह एक नौजवान लड़की। अगर कोई वाअीज़ बरसों वअज़ सुनाता रहता तो लिज़ा पर कुछ असर न होता। अल्नासिर ने ख़ामोश ज़ुबान से यह हकीकत उसके दिल में उतार दी कि वह पाकीज़ा ज़िन्दगी बसर करना चाहती है तो ऐसी जिन्दगी उसे इस्लाम में मिलेगी।

❖

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को किला एज़ाज़ के किलादार का जवाब आग बगूला किए हुए था। उसे यह किला सर करना था और फ़ौरन बाद हलब को मुहासिरे में लेकर यह शहर लेना था। उसे बूज़ा और नबीज के दो किले लड़े बेग़ैर मिल गये थे। इनमें जो दस्ते थे इन्हें उसने अपनी फौज में शामिल करके उनकी जगह अपने दस्ते भेज दिए थे और वह एज़ाज़ और हलब की तरफ़ पेशकदमी की स्कीम बना रहा था। उसने हसबे मामूल देखभाल के लिए अपने फ़ौजी उस इलाके में भेज रखे थे जहां उसे आगे बढ़ना और मुहासिरा करना था। जासूसों ने उसे हलब और एज़ाज़ के दिफ़ाई इन्तज़ामात बता दिए थे। सुल्तान अय्यूबी ख़ुद भी आगे चला जाता था और अपनी आंखों से ज़मीन के ख़दो ख़ाल और दिगर जंगी कवाईफ का जायज़ा लेता था। ऐसे दौरों के दौरान वह अपना झंडा साथ नहीं रखता था और अपने मुहाफ़िज़ों को भी साथ नहीं ले जाता था कि दुश्मन को पता न चल सके कि यह सलाहुद्दीन अय्यूबी है। वह घोड़ा भी किसी दूसरे का इस्तेमाल करता था। उसके घोड़े को जिसके सफ़ेद रंग पर कहीं कहीं गहरे लाल धब्बे थे, दुश्मन के सालार पहचानते थे।

उसे कहा गया था कि वह मुहाफ़िज़ो के बेगैर इतनी दूर न निकल जाया करे लेकिन उसने अपनी हिफ़ाज़त की कभी परवाह नहीं की थी। अब तो उस पर जुनून सा तारी था। वह अपने मुसलमान दुश्मनों को नाको चने चबवा चुका था। उनके ताबूत में आख़िरी कील गाड़नी रह गयी थी। वह इलाका ऐसा था कि चट्टाने और टीले भी थे और कहीं कहीं दरख़्तों के झुंडे भी। कुछ हिस्से में गहरे खड्ड भी थे। ऐसे इलाके में सुल्तान अय्यूबी का

मुहाफ़िज़ों के बेग़ैर घूमना फिरना ख़तरनाक था।

"सुल्ताने मोहतरम!" उसकी इन्टलीजेंस के सरबराह हसन बिन अब्दुल्लाह ने एक रोज़ उसे झुंझला कर कहा-- "ख़ुदा न ख़्वास्ता आप पर क़ातिलाना हम्ला कामयाब हो गया तो सल्तनते इस्लामिया आप जैसा कोई दूसरा पासबान पैदा नहीं कर सकेगी। हम क़ौम को मुंह दिखाने के क़ाबिल नहीं रहेंगे। आने वाली नस्लें हमारी क़ब्रों पर लानत भेजेगी कि हम आप की हिफ़ाज़त न कर सके थे।"

"अगर ख़ुदा को यही मंजूर है कि मुझे किसी सलीबी या फ़िदाई के हाथों क़त्ल होना है तो मैं ऐसी मौत को कैसे रोक सकता हूँ।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा-- "बादशाह जब अपनी जान की हिफ़ाज़त में मगन हो जाते हैं तो वह मुल्क और क़ौम की आबरू की हिफ़ाज़त के क़ाबिल नहीं रहते। अगर मुझे क़त्ल होना है तो मुझे अपना फ़र्ज़ जल्दी जल्दी अदा कर लेने दो। मुझे मुहाफ़िज़ों का क़ैदी न बनाओ। मुझ पर बादशाही का नशा तारी न करो। तुम जानते हो कि मुझ पर कितने क़ातिलाना हम्ले हो चुके हैं। अल्लाह ने मुझे हर बार बचा लिया है। अब भी बचा लेगा।"

उसका ज़ाती अम्ला उसकी सलामती के लिए परेशान रहता था। पिछली कहानियों में वह तमाम क़ातिलाना हम्ले बयान किये गये हैं जो उस पर हुए थे। हर हम्ले के वक़्त वह अकेला लेकिन उसका मुहाफ़िज दस्ता क़रीब ही था जो हर बार वहां पहुंच गया। अब सुल्तान अय्यूबी ने यह तरीक़ा इख़्तियार कर लिया था कि वह अपने ज़ाती अम्ले और मुहाफ़िज़ों को किसी जगह खड़ा करके ख़ुद टीलों और चट्टानों में ग़ायब हो जाता था। हसन बिन अब्दुल्लाह ने यह इन्तज़ाम कर रखा था कि मुहाफ़िज़ दस्ते के चन्द एक आदमी दूर दूर रह कर सुल्तान अय्यूबी पर नज़र रखते थे। यह किसी को भी मालूम नहीं था कि बहुत दिनों से चार आदमी वीरानों में घूम फ़िर रहे हैं और वह सुल्तान अय्यूबी पर नज़र रखते हैं।

यही वह चार फ़िदाई थे जिनके मुतअल्लिक़ किला इस्यात में शेख़ सन्नान ने गुमश्तगीन को बताया था कि सुल्तान अय्यूबी के क़त्ल के लिए भेजे गये हैं। इन चारों ने देख लिया था कि सुल्तान अय्यूबी, मुहाफ़िज़ों के बेग़ैर घूमता फ़िरता रहता है, चुनांचे उन्होंने यह मंसूबा तर्क कर दिया था कि जंग ज़दा इलाके के पनाह गुज़ीनों के रूप में सुल्तान अय्यूबी के पास जाएंगे और उसे क़त्ल कर देंगे। सुल्तान अय्यूबी उन्हें बड़ा अच्छा मौक़ा दे रहा था। इन चार फ़िदाइयों की स्कीम अच्छी थी। उनकी कमज़ोरी यह थी कि वह अपने साथ तीर कमान नहीं लाये थे क्योंकि पकड़े जाने का ख़तरा था। अगर उनके पास एक ही कमान होती तो वह किसी भी जगह छुप कर सुल्तान अय्यूबी को निशाना बना सकते थे। वहां छुपने की जगहें बहुत थीं। आसानी से फ़रार हुआ जा सकता था। इनके पास लम्बे ख़ंजर थे।

उधर से अल्नासिर लिज़ा को घोड़े पर बैठाये तेज़ी से आ रहा था। लिज़ा ने उसे बता दिया था कि चार फ़िदाई सुल्तान अय्यूबी के क़त्ल के लिए गये हुए हैं। अल्नासिर बहुत जल्दी सुल्तान अय्यूबी तक पहुंचना और उसे ख़बरदार करना चाहता था मगर सफ़र लम्बा था और घोड़े पर दो सवारों का बोझ था। घोड़ा इतनी लम्बी मुसाफ़त दौड़ते हुए तय नहीं कर

सकता था। उसने रास्ते में घोड़े को आराम दिया। पानी पिलाया और चल पड़ा। इधर सुल्तान अय्यूबी अपनी हिफाज़त से बिल्कुल ही बेनयाज हो गया था और चार फ़िदाई छुप कर उसे देख रहे थे। इस इलाके में कोई फ़ौज नहीं थी। कोई आबादी भी नहीं थी। फ़िदाई जंगल के दरिन्दों की तरह शिकार की तलाश में रहते और रात वहीं कहीं गुज़ार लेते थे।

सूरज ग़ुरूब हो गया। अल्नासिर और लिज़ा का घोड़ा चलता रहा। उसकी चाल बता रही थी कि उसकी रफ़्तार कम हो गी बढ़ेगी नहीं। अल्नासिर ने बोझ कम करने के लिए घोड़े से छलांग लगा दी और लगाम पकड़कर पैदल चलने लगा। रात गुज़रती जा रही थी। लिज़ा ने अल्नासिर से तीन चार बार कहा कि वह ज़्यादा सवारी नहीं कर सकती। उसकी हड्डियां भी दुखने लगी थीं। वह कुछ देर आराम करना चाहती थी लेकिन अल्नासिर जो ख़ुद थकन, प्यास और भूख से बेहाल हुआ जा रहा था न रुका। उसने लिज़ा से कहा– "तुम्हारी और मेरी जान से सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी बहुत ज़्यादा कीमती है। अगर मैं रुक गया और सुल्तान कत्ल हो गया तो मैं समझूंगा कि मैं अपने सुल्तान का कातिल हूँ।"

❖

सुबह तुलूअ हुई। अल्नासिर अब कदम घसीट रहा था। लिज़ा घोड़े पर सर रखे सोयी हुई थी। घोड़ा मामूली सी चाल चल रहा था। एक जगह पानी और घास देखकर घोड़ा रुक गया। लिज़ा ने नींद से चौंक कर कहा– "ख़ुदा के लिए इसे मत घसीटो। इसे ज़रा खा पी लेने दो।" घोड़े ने पानी पी लिया तो अल्नासिर उसकी लगाम पकड़ कर चल पड़ा। घोड़ा दौड़ने के काबिल नहीं रहा था। अल्नासिर भी थक हार कर सवार हो गया। लिज़ा का रंग पीला पड़ चुका था। उसके मुंह से भी बात नहीं निकलती थी। अल्नासिर को यह तो मालूम ही नहीं था कि सुल्तान अय्यूबी कहाँ होगा। वह तुर्कमान को जा रहा था। सुल्तान अय्यूबी आगे चला गया था जिसे बाद में कोहे सुल्तान का नाम दिया गया था, मगर वह अब वहाँ भी नहीं था। इस मकाम से भी आगे चला गया था। अल्नासिर को तुर्कमान और कोहे सुल्तान की चट्टानें नज़र आने लगी थीं और वह सोंच रहा था कि किस तरफ़ से जाए। सूरज बहुत ऊपर आ गया था।

उस वक़्त सुल्तान अय्यूबी एक चट्टानी वीराने में अपने अम्ले के साथ वहाँ का जायज़ा ले रहा था। उसने अम्ले को एक जगह रुकने को कहा और अकेला ही एक तरफ निकल गया। उसके ज़ेहन में शायद अपनी फ़ौज की पेशकदमी की कोई स्कीम थी। घोड़े से उतर कर वह एक चट्टान पर चढ़ गया। चारो फ़िदाई इस चट्टान से थोड़ी ही दूर एक जगह छुप कर उसे देख रहे थे। वह कुछ देर ऊपर खड़ा इधर उधर देखता रहा।

"नीचे आने दो" एक फ़िदाई ने अपने साथियों से कहा।

"उसके मुहाफ़िज़ करीब ही कहीं छुपे हुए होंगे।" दूसरे ने कहा।

"आज बच कर न जाए।" एक और बोला।

"सिर्फ़ एक आदमी आगे जाएगा।" चौथे ने कहा– "वार पीछे से करना। ज़रूरत पड़ी तो बाकी आगे से जाएंगे।"

सुल्तान अय्यूबी चट्टान से उतरा और घोड़े पर सवार होकर किसी और तरफ़ चला गया। फ़िदाई उसके पीछे-पीछे गये। हम्ले के लिए यह जगह मौज़ूं नहीं थी। अल्नासिर अभी बहुत दूर था। सुल्तान अय्यूबी एक बार फिर घोड़े से उतरा। एक और चट्टान पर चढ़ा। थोड़ी देर बाद वहाँ से उतरा और घोड़े की लगाम पकड़ कर पैदल चल पड़ा। फ़िदाई इससे ज़रा ही दूर छुपे हुए थे। सुल्तान अय्यूबी एक जगह से घूम गया। आगे मैदान था। वह घोड़े पर सवार होने लगा था कि उसे दौड़ते क़दमों की आहट सुनाई दी। एक फ़िदाई एक फिट लम्बा ख़ंजर हाथ में लिए उससे दो तीन क़दम दूर रह गया था। सुल्तान अय्यूबी ने देख लिया।

सुल्तान अय्यूबी ने अपना ख़ंजर निकाला। फ़िदाई ने वार कर दिया। सुल्तान अय्यूबी ने उसकी ख़ंजर वाली कलाई के आगे अपनी कलाई रख कर वार रोकने की कोशिश की मगर फ़िदाई तनू मन्द था। वार बड़ी ही ताक़त से किया गया था। सुल्तान अय्यूबी ने वार किया जो फ़िदाई बचा गया। चट्टान की ओट से एक और फ़िदाई निकला। उसने भी वार किया जो सुल्तान अय्यूबी ने बचा लिया लेकिन उसके कुल्हे की खाल को चीर गया। सुल्तान अय्यूबी घोड़े की ओट में हो गया। एक फ़िदाई उधर आया तो सुल्तान अय्यूबी ने बायें हाथ का घूंसा उसके मुंह पर मारा। वह पीछे को गिरने लगा तो सुल्तान अय्यूबी ने ख़ंजर उसके दिल के मुक़ाम पर उतार कर ज़ोर से एक तरफ़ को झटका दिया। यह फ़िदाई ख़त्म हो गया।

दूसरे ने उसके पीछे से वार किया लेकिन सुल्तान अय्यूबी बर वक़्त संभल गया। फ़िदाई के ख़ंजर की नोक सुल्तान अय्यूबी के एक बाज़ू में लगी। यह ज़ख़्म भी गहरा नहीं था। बाक़ी दो फ़िदाई भी सामने आ गये। सरपट दौड़ते घोड़ों के टापू सुनाई दिए जो आने वाहिद में सुल्तान अय्यूबी के क़रीब आ गये। फ़िदाई भागे। एक को तो सवारों ने घोड़ों से कुचल डाला। दूसरे को मार डाला। सुल्तान अय्यूबी की पुकार पर आख़िरी फ़िदाई को जिन्दा पकड़ लिया गया। अल्लाह ने सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी को इस हम्ले से भी बचा लिया। उस पर जिस वक़्त हम्ला हुआ उस का अमला उससे सात आंठ सौ गज़ दूर एक बुलन्दी पर खड़ा था। इत्तफ़ाक़ से उनमें से किसी ने देख लिया वरना यह हम्ला नाकाम होने वाला नहीं था।

यह क़ातिलाना हम्ला मई 1176 ई0 (ज़ीक़ाअदा 571 हि0) का है। इसके मुतअल्लिक़ मोअर्रिख़ों इख़्तलाफ़ पाया जाता है। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने अपनी डायरी में इतना ही लिखा है कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी क़िला एज़ाज़ के मुहासिरे के लिए जा रहा था कि चार फ़िदाइयों ने उसपर क़ातिलना हम्ला किया। अल्लाह तबारको तआला ने उसे बचा लिया। मेजर जनरल (रिटायर्ड) मोहम्मद अकबर खान (रंगरूट) ने मुतअदद हवालों से लिखा है कि सुलतान अय्यूबी क़िला एज़ाज़ के मुहासिरे के दौरान दिन के वक़्त अपने एक सालार जवाल अरूदी के ख़ेमे मे सोया हुआ था जब एक फ़िदाई ने ख़ेमे में जाकर उसपर ख़ंजर से वार किया। इत्तफ़ाक़ से सुल्तान अय्यूबी के सर पर वह मख़्सूस पगड़ी थी जो वह मैदाने जंग में पहना करता था। उसे तरबूश कहते थे। हम्लावर का ख़ंजर तरबूश में लगा और सुल्तान अय्यूबी जाग उठा। फ़ौरन ही चार पांच फ़िदाई अन्दर आ गये और उनके साथ ही सुल्तान अय्यूबी के बॉडीगार्ड भी अन्दर आ गये जिन्होंने फ़िदाइयों को हलाक

कर डाला। जनरल मौसूफ़ ने लिखा है कि यह फ़िदाई कुछ अर्से से धोखे में सुल्तान अय्यूबी के मुहाफ़िज़ दस्ते में शामिल हो गये थे।

यूरोपी मोअर्रिख़ों ने लिखा है कि हम्लावर सुल्तान अय्यूबी के अपने बॉडीगार्ड थे। इन मोअर्रिख़ीन ने सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ यह शहादत मुहैया करने की कोशिश की है कि वह अपनी फ़ौज में बिल्कुल मक़बूल नहीं था, यहाँ तक कि उसके बॉडीगार्ड तक उसके वफ़ादार नहीं थे। उस वक़्त के वक़ाअ निगारों की ग़ैर मतबूआ तहरीरों से यही कहानी सामने आती है जो सुनाई गयी है। फ़िदाई उसके मुहाफ़िज़ दस्ते में थे न किसी धोखे से हम्लावर हुए थे। उन्हें सुल्तान अय्यूबी अकेला मिल गया था।

जो फ़िदाई पकड़ा गया था उसने बयान दिया कि वह चारों क़िला इस्यात से आये हैं। उसे हसन बिन अब्दुल्लाह के हवाला कर दिया गया जिस ने उसे किला इस्यात के मुतअल्लिक़ तमाम तर मालूमात ले लीं। यह भी पूछ लिया कि अन्दर कितनी फ़ौज है और उस के लड़ने की अहलियत कैसी है। यह मालूमात सुल्तान अय्यूबी को दी गयीं।

"कल रात के आख़िरी पहर हम इस्यात की तरफ़ कूच करेंगे।" सुल्तान ने कहा। उसने अपने हाई कमाण्ड के सालारों को बुलाया और कहा– "फ़िदाइयों का यह अड्डा उखाड़ना ज़रूरी हो गया है। इस पर फ़ौरन क़ब्ज़ा करना है। फ़ौज का तीसरा हिस्सा काफ़ी होगा।" उसने बताया कि कितनी नफ़री जाएगी और उसकी तरतीत क्या होगी।

उस शाम सुल्तान अय्यूबी को यह इत्तलाअ दी गयी कि अल्नासिर नाम का एक छापामार वापस आया है। हसन बिन अब्दुल्लाह अल्नासिर से सारी रिपोर्ट ले चुका था। उसे सुल्तान के पास पेश करना ज़रूरी था। अल्नासिर को बड़ी ही बुरी हालत में पेश किया गया। मुसलसल सफ़र, भूख और प्यास ने उसे अधमुवा का दिया था। उसके साथ लिज़ा थी। उसका रंग उड़ा हुआ और जिस्मानी हालत दिगर गों थी। अल्नासिर ने सुल्तान अय्यूबी को पूरी तफ़सील से सुनाया कि उसपर क्या गुज़री है। उसने कोई बात पोशिदा न रखी। लिज़ा के मुतअल्लिक़ भी सब कुछ बताया। सुल्तान अय्यूबी ने लिज़ा से पूछा कि वह अपने मुतअल्लिक़ फ़ैसले में आज़ाद है। लिज़ा शायद अपने आप को क़ैदी समझ रही थी और उसे बहुत बुरे सलूक की तवक्को थी, लेकिन यहाँ मामिला उलट था। उसने अल्नासिर के साथ रहने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। उसे बताया गया कि उसे दमिश्क़ भेज दिया जाएगा जहाँ वह नुरूद्दीन ज़ंगी की बेवा की तहवील में रहेगी और अल्नासिर उसे कुछ अर्सा के बाद मिलेगा। दर असल इस क़िस्म की लड़कियों को उनकी जज़्बाती बातों से मुतासिर होकर क़ाबिले एतमाद नहीं समझा जाता था। दमिश्क़ में उन्हें इज़्ज़त और आराम से रखा जाता था और उनकी ख़ुफ़िया निगरानी की जाती थी।

❖

अल्नासिर को ज़ख़्मों के इलाज और आराम के लिए पिछले कैम्प में भेज दिया गया।

शेख़ सन्नान का गुस्सा अभी ठंडा नहीं हुआ था। गुमश्तगीन उसे धोखा दे गया था। उसने गुमश्तगीन के क़ाफ़िले के तआक्कुब में जो आदमी भेजे थे उनमें से सिर्फ़ दो वापस आये थे। वह थेरिया को उठा लाये थे। लिज़ा को अल्नासिर बचा ले गया था। शेख़ सन्नान

थेरिया से इन्तकाम ले रहा था। उसे उसने कैद में डाल रखा था। थी तो वह भी बहुत खूबसूरत लड़की लेकिन शेख सन्नान की नज़र लिज़ा पर थी।

दिन का पिछला पहर था। इस्यात के किले की दिवारों पर खड़े संतरियां ने दूर गर्द के बादल उठते देखे, गर्द आगे ही आगे आ रही थी। संतरी देखते रहे, हत्ता कि गर्द में सैंकड़ो घोड़े नज़र आने लगे फिर प्यादा फौज नज़र आई। संतरियों ने नकारे बजा दिए। कमाण्डरों ने ऊपर जाकर देखा। शेख सन्नान को इत्तलाअ दी। वह भी सामने वाली दिवार पर चढ़ गया। इस वक़्त फौज किले के करीब आकर मुहासिरे की तरतीब में हो रही थी। शेख़ सन्नान ने मुक़ाबले का हुक्म दे दिया। किले की दिवारों पर तीर अन्दाज़ पहुंच गये लेकिन उन्होंने कोई तीर न चलाया क्योंकि वह बाहर की फौज का रवैया देखना चाहते थे। सुल्तान अय्यूबी को किले के अन्दर की मालूमात मिल चुकी थी। अल्नासिर उसके साथ था। दो मिन्जनिकें नस्ब कर दी गयीं। अल्नासिर ने उन्हें बताया कि शेख सन्नान का महल कहाँ है और कितनी दूर है। उसकी रहनुमाई में मिन्जनिकों ने पहले बड़े पत्थर फेंके जो ठिकाने पर पड़े। सन्नान के महल की दिवारों में शगाफ़ पड़ गये।

किले से तीरों का मेंह बरस पड़ा। सुल्तान अय्यूबी के हुक्म से मिन्जनिकों से आतिशगीर मादे की सरम्बहर हांडियां अन्दर फेंकी गयीं। यह सन्नान के महल के करीब गिर कर टूटीं। सय्याल मादा दूर दूर तक फैल गया। उसे आग लगाने के लिए फलीते वाले आतिशी तीर चलाये गये लेकिन आतिशगीर सय्याल पर न गिरे। तीर ठिकाने पर फेंकना आसान नहीं था। उन्हें किले की दिवार के ऊपर से अन्दर जाना था। इत्तफाक से करीब कहीं आग जल रही थी। एक हांडी उसके इतना करीब फटी कि आग ने उसके मादे को शोला बना दिया। दूसरे ही लम्हे सन्नान का महल शोलों की लपेट में आ गया। वहां बेशुमार आतिशगीर सय्याल गिरा और बह--बह कर फैल गया था।

शेख़ सन्नान पर शोलों ने दहशत तारी कर दी। उसकी फौज सलीबियों और मुसलमानों की लड़ाका फौज नहीं थी। यह नशे और काहिली की मारी हुई फौज थी। सन्नान ने हकीकत को तस्लीम कर लिया और उसने किले पर सफेद झंडा चढ़ा दिया। सुल्तान अय्यूबी ने जंग बन्दी का हुक्म दे दिया और कहा कि शेख सन्नान से कहो कि बाहर आये हर तरफ खामोशी तारी हो गयी।

ज़रा देर बाद किले का दरवाज़ा खुला और शेख सन्नान दो तीन सालारों के साथ बाहर आया। सुल्तान अय्यूबी उसके इस्तकबाल के लिए आगे नहीं बढ़ा। उसकी निगाह में सन्नान मुज्रिम था। वह जब सुल्तान अय्यूबी के सामने आया तो सुल्तान ने उसे और उसके सालारों को इतना भी न कहा कि बैठ जाओ।

"सन्नान!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा-, "क्या चाहते हो?"

"जान की अमान।" शेख सन्नान ने शिकस्त खुर्दा आवाज़ में कहा।

"और किला?" सुल्तान अय्यूबी ने पूछा।

"मुझे आपका फैसला मंज़ूर होगा।"

"अपनी फौज के साथ किले से फौरन निकल जाओ।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "तुम कोई सामान अपने साथ नहीं ले जा सकोगे। अपनी फौज को समेटो। किसी कमानदार और किसी सिपाही के पास कोई अस्लेहा न हो। यहां से खाली हाथ निकलो। तहखाने में जो कैदी हैं उन्हें वहीं रहने दो, और याद रखो, सल्तनते इस्लामिया की हदूद में न ठहराना। सलीबियों के पास जाकर दम लेना। तुमने अब के जो फिदाई मेरे कत्ल के लिए भेजे थे वह भी मारे गये हैं। मैंने तुम्हे बख़्श दिया है। सफेद झंडा तुम ने चढ़ाया है। मैं कुर्आन के फ़रमान का पाबन्द हू। मैं कह नहीं सकता ख़ुदा तुम्हें माफ़ करेगा या नहीं। अपने आप को मुसलमान कहना छोड़ दो, वरना मैं तुम्हें और तुम्हारे फ़िरके को बहेरा रोम में डूबो कर दम लूंगा।"

जब सूरज ग़ुरूब हो रहा था, दूर उफ़क पर इन्सानों की लम्बी कतार सर झुकाये चली जा रही थी। शेख सन्नान उसी कतार में था। इस कतार में उसके सिपाही और सालार भी थे और इस कतार में उसके पेशावर कातिल भी थे। वह अने साथ कुछ भी नही ले जा सके थे। उनके घोड़े और ऊंट किले में रख लिए गये। सूरज ग़ुरूब होने तक सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज किले पर क़ब्ज़ा कर चुकी थी। तहखाने से कैदियों को निकाल लिया गयाथा। किले से जो ज़र व जवाहरात बरामद हुए उनका कोई शुमार नहीं था।

❖

सुल्तान अय्यूबी ने किला एक सालार के हवाले किया और रात को ही कोहे सुल्तान को रवाना हो गया। वह अब ज़्यादा इन्तज़ार नहीं करना चाहता था। चन्द ही दिनों में उसने पेशकदमी और एजाज़ के किले का मुहसिरा किया। हलब वालों ने इस किले को दिफ़ाई लिहाज से बहुत मुस्तहकम कर रखा था। यह दरअसल हलब का दिफ़ाअ था। इसमें जो फ़ौज थी वह ताज़ा दम थी, मैदाने जंग मे नहीं गयी थी। सुल्तान अय्यूबी को ऐसी ख़ुश फ़हमी नहीं थी कि वह इस किले को फ़ौरन सर कर लेगा। यह खतरा भी था कि अक़्ब से हलब की फ़ौज हम्ला कर देगी। इस ख़तरे को रोकने का इन्तज़ाम कर लिया गया था। सुल्तान को यह फ़ायदा हासिल था कि हलब की फ़ौज तुर्कमान की लड़ाई से नुक़सान उठाकर आई थी। उसका लड़ने का जज़्बा मजरूह हो चुका था।

क़िला एजाज़ के दिफ़ाअ में लड़ने वालों ने बेजिगरी से मुक़ाबला किया। तमाम दिन और सारी रात उन्होंने सुल्तान की फ़ौज को क़िले के करीब न आने दिया। दिवारें तोड़ने वाली पार्टियों ने बहुत कोशिश की कि किसी जगह से दिवार के करीब चले जाएं और दिवार तोड़ सकें लेकिन तीर अन्दाज़ों ने उन्हें करीब न आने दिया। अगले दिन बड़ी मिन्जनिकों से किले के दरवाज़े पर वज़नी पत्थर मारे गये। आतिशगीर मादा की हांडियां भी दरवाज़े पर फेंककर आतिशी तीर चलाये गये। शोलों ने दरवाज़े को चाटना शुरू कर दिया। ऊपर से एजाज़ के तीर अन्दाज़ों ने मिन्जनिकें चलाने वालों पर बहुत से तीर बरसाये। यह तीर बड़ी कमानों से फेंके जा रहे थे, इसलिए दूर तक आ जाते थे। इनसे मिन्जनिकों के कई आदमी ज़ख़्मी और शहीद हुए लेकिन इस कुर्बानी के बेग़ैर क़िला सर करना मुम्किन नहीं था। एक शहीद होता तो दूसरा उसकी जगह ले लेता था।

दरवाज़ा जल रहा था और उस लगातार पत्थर पड़ रहे थे। बहुत देर बाद दरवाज़ें में अन्दर जाने लगे। शोलों ने लकड़ी को खा लिया था। लोहे का फ़रेम बाकी था जो पत्थरों से टेढ़ा हो रहा था। रात को शोले बुझ गये, दरवाज़े का आहनी ढांचा रह गया। इसमें से पयादे गुज़र सकते थे घोड़े गुज़ारना मुश्किल था। यहां जांबाज़ी की ज़रूरत थी। पयादा दस्तों को हुक्म दिया गया कि दरवाज़े के ढांचे में से गुज़र कर अन्दर जाएं। यह सुल्तान अय्यूबी के "क्रेक ट्रोप्स" थे। उन्होंने हल्ला बोल दिया। एजाज़ के सिपाहियों ने इन दस्तों का यह हश्र किया कि आगे गये थे उन्हें वहीं ढेर कर दिया। पीछे वाले अपने साथियों की लाशों के ऊपर से अन्दर गये।

यह मार्का बड़ी ख़ुंरेज़ था। इससे यह फ़ायदा उठाया गया कि दरवाज़े का आहनी ढांचा तोड़ लिया गया। जो पयादे ज़िन्दा थे वह अन्दर जाकर बिखर गये और ख़ूब लड़े। फिर घोड़सवारों को अन्दर जाने का हुक्म मिला....सुल्तान अय्यूबी ने क़िले के अन्दर आतिशज़नी का हुक्म दे दिया। एक दस्ता जगह--जगह आग लगाने लगा। एजाज़ वालों की फ़ौज हथियार डालने पर आमादा नज़र नहीं आती थी। यह क़िला हलब से नज़र आता था। रात को हलब वालों ने देखा कि जहां क़िला है वहाँ आसमान सुर्ख़ हो रहा है। शोले बुलन्द हो रहे थे। यह इत्तलाअ तो हलब वालों में पहुंच चुकी थी कि सुल्तान अय्यूबी ने एजाज़ को मुहासिरे में ले रखा है। हलब की हाई कमाण्ड ने इस इम्कान पर भी ग़ौर किया था कि सुल्तान अय्यूबी पर अक़्ब से हम्ला किया जाए मगर सालारों ने बताया कि फ़ौज लड़ने के क़ाबिल नहीं।

उस वक़्त सैफ़ुद्दीन हलब में ही था और गुमश्तगीन भी वहीं चला गया था। इन दोनों के दर्मियान एजाज़ और हलब के दिफ़ाअ के सिलसिले में तुर्श कलामी हुई जो इस हद तक बढ़ी की गुमश्तगीन ने सैफ़ुद्दीन को क़त्ल की धमकी दे दी। सैफ़ुद्दीन ने इत्तेहाद तोड़ दिया। उसकी जो बची खुची फ़ौज थी वह हलब से निकाल ले गया। यह लोग दर असल एक दूसरे के भी दुश्मन थे। अल्मुलकुस्सालेह की उम्र अब तेरह वर्ष से कुछ ऊपर हो गयी थी। वह सोंचने समझने के क़ाबिल हो गया था। उसने गुमश्तगीन का रवैया देखा तो उसने महसूस कर लिया कि उसका यह दोस्तसाज़शी है। उसने गुमश्तगीन को क़ैदख़ाने में डाल दिया। तारीख़ में तहरीर है कि गुमश्तगीन ने इन हालात में कि हलब और एजाज़ मुहासिरे में थे, अल्मुलकुस्सालेह के खिलाफ कोई नयी साज़िश तैय्यार की थी जिस का इन्केशाफ़ हो गया और उसे क़ैदख़ाने में डालकर दो तीन रोज़ बाद क़त्ल कर दिया गया।

आख़िर एजाज़ के मुहाफ़िज़ों ने हथियार डाल दिए। सुल्तान को इसकी बहुत क़ीमत देनी पड़ी। उसके जिन दस्तों ने क़िले के अन्दर मार्का लड़ा था उनकी नफ़री आधी रह गयी थी। एजाज़ वालों ने साबित कर दिया था कि वह बुज़्दिल नहीं। सुल्तान अय्यूबी ने फ़ौरन हलब को मुहासिरे में ले लिया। हलब क़रीब ही था। हलब के अन्दर जज़्बे की यह कैफ़ियत थी कि रात एजाज़ के शोलों ने उन्हें दहशत ज़दा कर दिया था। उन्हें यह भी मालूम था कि उनकी फ़ौज में इतना दम नहीं रहा कि शहर का दिफ़ाअ कर सके। उन्हीं शहरियों ने कुछ अर्सा पहले सुल्तान अय्यूबी के छक्के छुड़ा दिए थे, और उसे मुहासिरा उठाना पड़ा था मगर

अब यह शहर जैसे मर ही गया था।

❖

मुहासिरे के दूसरे दिन अल्मुलकुस्सालेह का एल्ची सुल्तान के पास आया। वह जो पैग़ाम लाया वह सुलह की पेशकश नहीं थी। यह एक ऐसा जज़्बाती पैग़ाम था जिसने सुल्तान अय्यूबी को झंझोड़ डाला। पैग़ाम यह था कि नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम की बच्ची सुल्तान अय्यूबी से मिलना चाहती है। इस बच्ची का नाम शम्सुन निसा था। यह अल्मुलकुस्सालेह की छोटी बहन थी। उम्र दस ग्यारह साल थी। अल्मुलकुस्सालेह जब दमिश्क से हलब गया था तो अपनी बहन को भी साथ ले गया था। उनकी मां रज़ीअ ख़ातून बिन्त मोइनुद्दीन (बेवा नुरूद्दीन ज़ंगी) दमिश्क में रही थी। वह सुल्तान अय्यूबी की हामी थी।

सुल्तान अय्यूबी ने हलब के एल्ची को जवाब दिया कि वह बच्ची को ले आए।

बच्ची आ गयी। उसके साथ अल्मुलकुस्सालेह के दो सालार थे। सुल्तान अय्यूबी ने बच्ची को सीने से लगा लिया और बहुत रोया। बच्ची के हाथ में अल्मुलकुस्सालेह का तहरीरी पैग़ाम था जिसमें उसने शिकस्त कबूल कर ली थी और सुल्तान अय्यूबी को सुल्तान तस्लीम कर लिया था। उसने सुल्तान अय्यूबी की इताअत भी कुबूल कर ली थी। उसमें यह भी लिखा था कि गुमश्तगीन को कत्ल कर दिया गया है इसलिए हरान भी सुल्तान अय्यूबी की मिल्कियत तसव्वुर किया जाए।

"तुम लोग बच्ची को क्यों साथ लाए हो? सुल्तान अय्यूबी ने सालारों से पूछा– "यह पैग़ाम तुम ख़ुद नहीं ला सकते थे?"

जवाब सालारों को देना चाहिए था लेकिन उन्होंने बच्ची की तरफ देखा। बच्ची ने सुल्तान अय्यूबी से कहता– "मामू जान! मुझे भाई सालेह ने भेजा है। आप एजाज़ का किला हमें दे दें और हमें हलब में रहने दें। हम आइंदा आप से लड़ाई नहीं करेंगे।"

सुल्तान अय्यूबी ने बच्ची के साथ आये हुए सालारों को गज़बनाक नज़रों से देखा। वह शर्त मनवाने के लिए ज़ंगी मरहूम की बच्ची को साथ लाए थे।

"मैं एजाज़ का किला और हलब तुम्हें देता हूं शम्सुन निसा।" सुल्तान अय्यूबी ने बच्ची को गले लगा कर कहा और हुक्म जारी कर दिया कि एजाज़ की किले से अपनी फ़ौज निकाल ली जाए और हलब का मुहासिरा उठा लिया जाए। उसने हलब के सालारों से कहा– "मैंने एजाज़ और हलब इस मासूम बच्ची को दिया है। तुम बुज़्दिल बेग़ैरत और ईमान फ़रोश इस काबिल भी नहीं कि तुम्हें फ़ौज में रहने दिया जाए।"

24 जून 1176 ई0 (14 ज़ीक़ाअदा 571 हि0) मुआहिदे पर दस्तख़त हो गये। सुल्तान अय्यूबी ने एजाज और हलब को सल्तनते इस्लामिया में शामिल कर लिया और अल्मुलकुस्सालेह को नीम ख़ुद मुख़्तारी की हैसियत दे दी। उसके फ़ौरन बाद सैफुद्दीन ने भी सुल्तान अय्यूबी की इताअत कुबूल कर ली, और मुसलमानों की आपस की लड़ाइयों का दौर ख़त्म हो गया, मगर कौम में गद्दार और ईमान फ़रोश बदस्तूर सरगर्म रहे।

❖❖

रात रूह और रौशनी

कब्रिस्तान बहुत ही वसीअ था तमाम कब्रें अभी ताज़ा थीं। मिट्टी की ढेरियां बे तरतीब थीं। कोई ऊंची कोई नींची बाज़ कब्रें एक दूसरे से मिल गयी थीं। मैदानें जंग की कब्रें ऐसी ही हुआ करती हैं। हमात से हलब तक ऐसे तीन कब्रिस्तान तैय्यार हो गये थे। यह सर सब्ज़ और शादाब ख़ित्ता उदास हो गया था। इसकी फ़िज़ा ख़ून की बू से बोझल हो गयी थी। जहाँ परिन्दे चहचहाते थे वहाँ गिद्ध मंडला रहे थे।

ऐसा एक कब्रिस्तान हलब के मुज़ाफ़ाती किला एजाज़ के क़रीब था। कब्रों की मिट्टी अभी नमनाक थी। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौजों का इमाम चन्द एक फौजियों के साथ वहाँ खड़ा फ़ातेहा पढ़ रहा था उसने जब मुंह पर हाथ फेरे तो आंसू उसकी ढाढ़ी तक पहुंच चुके थे।

"यह ख़ित्ता अब बांझ हो जाएगा। यहां अब कोई पत्ता हरा नहीं होगा।" उसने कहा– "यहाँ एक ही रसूल सल्ल० की इताअत करने वाले, एक ही कलमा और एक ही कुर्आन पढ़ने वाले एक दूसरे के कातिल हो गये थे। जिस ज़मीन पर भाई के हाथों भाई का ख़ून गिरता है वह ज़मीन सूख जाती है। यहां तकबीर के नारे टकराये थे। यह सब मुसलमान थे। एक दूसरे के हाथों कत्ल हुए हक के नाम पर जानें कुर्बान करने वाले शहीद हुए और बातिल के साथी उस रुत्बे से महरूम रहे। यह रोज़े महशर इकठ्ठे हो जाएंगे। ख़ुदाए ज़ुलजलाल उन्हें ज़रूर कहेंगे कि ख़ून जो तुमने एक दूसरे का बहाया है इतना तुम मिलकर इस्लाम के दुश्मन का बहाते तो फ़िलिस्तीन ही नहीं स्पेन भी एक बार फ़िर तुम्हारा होता।"

घोड़ों के क़दमों की हंगामाख़ेज़ आवाज़ें सुनाई दीं। इमाम के साथ खड़े किसी फ़ौजी ने कहा– "सुल्तान आ रहे हैं।" इमाम ने घूम कर देखा। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी आ रहा था। उसके साथ सालार और मुहाफ़िज़ दस्ते के छः सवार थे। कब्रिस्तान के करीब आकर सुल्तान अय्यूबी ने घोड़ा रोका, उतरा और इमाम के क़रीब आकर फ़ातेहा पढ़कर उसने इमाम से हाथ मिलाया।

"सुल्ताने मोहतरम!" इमाम ने सुल्तान अय्यूबी से कहा– "यह सही है कि यह भी मुसलमान थे जो हमारे खिलाफ़ लड़े लेकिन मैं उन्हें इस काबिल नहीं समझता कि उनकी कब्रों पर फ़ातेहा पढ़ी जाए। उन्हें शहीदों के साथ दफ़्न नहीं करना चाहिए था। हमारे मुजाहेदीन हक के ख़ातिर लड़ रहे थे। इन्हें आप ने दुश्मन के मक्तूलीन के साथ दफ़्न कर दिया है।"

"मैं उन्हें भी शहीद समझता हूं जो बातिल की ख़ातिर हमारे खिलाफ लड़े थे।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "यह अपने हुक्मरानों की फ़रेबकारी के शहीद हैं। हमने अपने सिपाहियों को

अल्लाह का पैग़ाम दिया था। उनके खिलाफ़ लड़ने वाले सिपाहियों को इनके बादशाहों ने जज़्बाती नारे और झूठा पैग़ाम देकर उनके दिलों में बातिल को हक़ बता कर बैठा दिया। उनके इमामों ने ईनाम व इकराम लेकर सिपाहियों को गुमराह किया और अल्लाहो अकबर के नारे लगाकर अल्लाह और रसूल के एहकाम की खिलाफ वर्ज़ी कराई। मैं इन लाशों को एक ही गढ्ढे में दबाकर यह कहीं फेंक कर उनकी तौहीन नहीं करना चाहता था। हमारे दुश्मन मुसलमानों के जिन सिपाहियों को एहसास हो गया था कि उन्हें गुमराह किया गया है वह हमारे साथ हैं, और यह जो मर गये हैं उनतक रौशनी नहीं पहुंची थी क्योंकि बादशाही के दिलदादा हुक्मरानों ने उनकी आंखों पर पट्टी बांध दी थी।"

पहले सुनाया जा चुका है कि मुसलमान उमरा सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के दुश्मन हो गये थे। वह खिलाफ़त से आज़ाद होकर ख़ुद मुख़्तार हुक्मारान बनना चाहते थे। इनमें एक नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम का बेटा अल्मुलकुस्सालेह था, दूसरा मुसिल का अमीर सैफ़ुद्दीन ग़ाजी और तीसरा गुमश्तगीन जो हरान का क़िलादार था लेकिन इस ने ख़ुद मुख़्तारी का एलान कर दिया था। इन तीनों ने अपनी फ़ौजों की मुत्तहदा हाई कमान बना ली और सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ महाज़ आरा हो गये थे। सलीबी इन की पुश्तपनाही कर रहे थे। सलीबियों को इनके साथ सिर्फ़ यह दिलचस्पी थी कि मुसलमान आपस में टकरा–टकरा कर ख़त्म हो जाएं या इतने कमज़ोर हो जाएं कि उन (सलीबियों) के खिलाफ़ लड़ने के क़ाबिल न रहें। हुक्मरानी के नशे, सलीबियों की दी हुई माली और जंगी इमदाद, शराब और यहूदियों की हसीन व ज़मील लड़कियों ने इन उमरा को ऐसा अंधा किया कि वह सुल्तान अय्यूबी के रास्ते में उस वक़्त हायल हो गये जब नुरूद्दीन ज़ंगी फ़ौत हो चुका था और सुल्तान अय्यूबी मिस्र से यह अज़्म लेकर आया था कि सलीबियों को आलमे इस्लाम से बेदख़ल करके क़िब्ला अव्वल को सल्तनते इस्लामिया में शामिल करेगा।

डेढ़ साल तक हमात से हलब तक के इस सर सब्ज़ खित्ते में मुसलमानों का खून बहाता रहा। आख़िर फ़तह हक़ की हुई। सुल्तान अय्यूबी ने फ़तह पाई। उसके दुश्मनों ने उसकी इताअत क़ुबूल कर ली लेकिन सुल्तान अय्यूबी के चेहरे पर मुसर्रत की हल्की भी झलक नज़र नहीं आती थी। क़ौम की अस्करी क़ुव्वत का बेश्तर हिस्सा तबाह हो चुका था। इस लिहाज़ से यह सलीबियों की फ़तह और मुसलमानों की शिकस्त थी। सलीबी अपने अज़ाइम में कामयाब हो गये थे। सुल्तान अय्यूबी अब कई बरसों तक बैतुल मुक़द्दस की तरफ़ पेशक़दमी के क़ाबिल नहीं रहा था।

जून 1176 ई0 के उस रोज़ जब सुल्तान अय्यूबी क़िला एजाज़ के क़रीब वसीअ क़ब्रिस्तान में अपने इमाम के पास खड़ा था तो उस दौर के वक़ाअ निगारों के मुताबिक़ उसका चेहरा बुझा बुझा था। उसने इमाम से कहा– "हर नमाज़ के बाद दुआ किया करें कि अल्लाह इन्हें बख़्श दे जिन की आंखों पर कुफ़्र की पट्टी बांध कर अपने भाइयों के खिलाफ़ लड़ाया गया था।" सुल्तान घोड़े पर सवार हुआ और उस ने क़ब्रिस्तान पर निगाह डाली– "ख़ुदा को इतने ज़्यादा ख़ून का हिसाब कौन देगा? यह गुनाह मेरे हिसाब में न लिख दिया जाए।"

अपने सालारों की तरफ देखकर उसने कहा—"हमारी कौम ख़ुदकुशी के रास्ते पर चल पड़ी है। कुफ्फ़ार उम्मते रसूलुल्लाह की कुव्वत और जज़्बे से इस क़दर ख़ाइफ हैं कि इस कुव्वत को दिलकश हरबों से कमज़ोर कर रहे हैं। उनके पास यही एक ज़रिआ रह गया है। हमारे बाज़ भाईयों ने उनके इस ज़रिए को कुबूल कर लिया है और तारीख़ में ख़ाना जंगी खु—का नया बाब खोल दिया है। अगर हमने इस बाब को यहीं बन्द न किया तो मैं मुस्तकबिल को जहाँ को जहां तक देख सकता हूं, मुझे उम्मते रसूलुल्लाह ख़ाना जंगी से ख़ुद कुशी करती नज़र आती है। कुफ़्फ़ार आज के दौर की तरह माली और जंगी इमदाद देदे कर उम्मत को आपस में लड़ाते रहेंगे। चन्द एक अफराद पर जब तख़्त व ताज के हिस्सों का जुनून सवार होता है तो वह कौम को आलाकार बनाकर कौम को ले डूबते हैं। बादशाही के यह भूखे लोग कौम का ख़ून इसी तरह बहाते रहेंगे। यह इतना वसीअ कब्रिस्तान देखो। क़ब्रे गिनों तो गिन नहीं सकोगे। हम पीछे जो लाशें दफ़्न कर आए हैं, उनका भी शुमार नहीं। मैं इतने ख़ून का हिसाब किस तरह से लूं? ख़ुदा को मैं क्या जवाब दूंगा?"

"ख़ाना जंगी का सिलसिला ख़त्म हो गया है।" एक सालार ने कहा— "अब आगे की सोंचें। हमें बैतुल मुकद्दस पुकार रहा है। क़िब्ला अव्वल हमारी राह देख रहा है।"

"और हमें मिस्र पुकार रहा है।" सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने घोड़ा चला दिया और कहने लगा— "वहाँ से बड़ी तश्वीशनाक ख़बरें आ रही हैं। वहाँ मेरा कायम मुकाम मेरा भाई है। वह मुझे परेशानी से बचाने के लिए हालात की संगीनी मुझ से छुपा रहा है। अली बिन सुफ़ियान और कोतवाल बलबीस भी मुझे तफ़सील से कोई बात नहीं बता रहे। सिर्फ इतनी ख़बर भेजते हैं कि दुश्मन की ज़मीन दोज़ तख़रीबी सरगर्मिया जारी हैं। उनका सद्दे बाब किया जा रहा है। परसो के कासिद ने बताया है कि काहिरा में तख़रीबकारी ज़ोर पकड़ती जा रही है। मालूम होता है कि शेख़ सन्नान को हमने इस्यिात से बेदख़ल कर दिया है मगर उसका कातिल गिरोह काहिरा में सरगर्म है। वह कमानदार ऐसे तरीके से कत्ल कर रहे हैं कि उनके जिस्मों पर ज़ख़्म और चोट का कोई निशान नहीं। मरने के बाद लाशों की हालत से यह भी पता नहीं चलता कि ज़हर दिया गया था। यह हशीशीन का ख़ास तरीका है।"

"तो क्या आप फ ौज को यहीं रहने देंगे या साथ ले जाएंगे?" एक सालार ने कहा।

"इसके मुतअल्लिक मैंने अभी फ़ैसला नही किया।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा—"शायद कुछ नफ़री ले जाऊं। फौज की ज़रूरत यहां ज़्यादा है। सलीबियों ने मिस्र में तख़रीबकारी इसीलिए तेज़ कर दी है कि मैं फ़िलिस्तीन की तरफ़ पेशक़दमी करने की बजाए मिस्र चला जाऊं। मैं उनकी यह ख़्वाहिश पूरी नहीं होने दूंगा, अलबत्ता मेरा मिस्र जाना ज़रूरी है।"

❖

सुल्तान अय्यूबी के ख़द्शे बेबुनियाद नहीं थे। सलीबियों की ज़हीनियत और अज़ाइम को उससे बढ़कर और कोई नहीं समझ सकता था। उस वक़्त जब वह कब्रिस्तान से फातेहा पढ़कर अपने जंगी हैडक्वार्टर की तरफ जा रहा था, शेख़ सन्नान त्रीपोली पहुंच चुका था। आप पढ़ चुके हैं कि हसन बिन सबाह के बाद इस फिर्के के जिस पीर व मुर्शिद ने शोहरत

हासिल की वह शेख सन्नान था। यह शख़्स हशीशीन (फ़िदाइयों) का सरबराह था। सुल्तान अय्यूबी और सलीबियों की जंगों के दौरान फ़िदाइयों का कातिल गिरोह शेख सन्नान की ज़ेरे कयादत बहुत ही ज़्यादा सरगर्म हो गया था। सुल्तान अय्यूबी पर कई बार कातिलाना हम्ले किये गए और हर हम्ले का अन्जाम यह हुआ कि कातिल मारे गये और जो बचे वह पकड़े गये। सलीबियों ने शेख सन्नान को इस्यािात नाम का एक किला दे रखा था जो मई 1176 ई0 में सुल्तान अय्यूबी ने मुहासिरे में लेकर शेख़ सन्नान से हथियार डलवाए और उससे किला खाली कराके उसे बख़्श दिया था। इस मुहासिरे की तफ़सीलात सुनाई जा चुकी हैं।

शेख सन्नान जून 1176 ई0 के एक रोज़ त्रीपोली (लेबनान) पहुंचा। उसके साथ उसके फ़िदाई और फ़ौज थी। किसी के पास कोई हथियार नहीं था। सुल्तान अय्यूबी ने उन्हें निहत्था करके रूख़सत किया था। त्रीपोली और गिर्द व नवाह का वसीअ इलाक़ा एक सलीबी हुक्मारान रिमाण्ड के कब्ज़े में था। शेख सन्नान उसके पास पहुंचा और पनाह मागी। दो रोज़ बाद रिमाण्ड ने इधर उधर से दूसरे सलीबी बादशाहों और कमाण्डरों को त्रीपोली बुलाया ताकि सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ आइंदा लाहय अमल तैय्यार किया जाए। सलीबियों की इन्टेलीजेंस का माहिर डायरेक्टर जरमन निज़ाह हरमन भी इस कान्फ्रेंस में मौजूद था।

"आप मुझे इस बिना पर नहीं कोस सकते कि मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी से शिकस्त खाकर आया हूं।" शेख सन्नान ने सलीबियों की इस कान्फ्रेंस में कहा— "आप जानते हैं कि हम फ़ौज की तरह नहीं लड़ सकते। सुल्तान अय्यूबी का मुकाबला तुम्हारी फ़ौज भी नहीं कर सकती, मेरे फ़िदाई उसके मुहासिरे में कैसे लड़ सकते हैं। ज़रूरत यह है कि आप अय्यूबी के दुश्मन मुसलमान उमरा को अपनी फ़ौजें दें। वह सब मिल कर भी उसके सामने नहीं ठहर सके।"

"शेख सन्नान।" रिमाण्ड ने कहा— "यह हम तक रहने दें कि अय्यूबी के खिलाफ़ हमें क्या करना चाहिए। हम आप को यह बताना चाहते हैं कि आपने उसके कत्ल के लिए चार आदमी भेजे थे वह भी नाकाम हो गये हैं। मारे गये और पकड़े गये हैं। सलाहुद्दीन अय्यूबी पर आप का एक भी कातिलाना हम्ला कामयाब नहीं हुआ। इससे यह ज़ाहिर होता है कि आप अपने बेकार आदमी भेजते रहे हैं जिनके मर जाने या गिरफ़्तार हो जाने से आप को कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। हम आपको जो इनाम व रकम देते रहे वह ज़ाया हो गयी है।"

"सिर्फ़ एक सलाहुद्दीन के कत्ल न होने से आप की रकम ज़ाया नही हुई।" शेख सन्नान ने कहा— "मैंने मिस्र में सलाहुद्दीन की हुकूमत के जो दो हाकिम कत्ल कराये हैं उन्हें अपनी रकम के हिसाब में रखें। आप के तीन ताकतवर मुख़ालिफ सूडान में थे। उन्हें मैंने कब्रों में उतारा और वहाँ आप का रास्ता साफ किया है। सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुख़ालिफ मुसलमान उमरा में से जो हलब में अल्मुलकुस्सालेह के साथ थे, वह सलाहुद्दीन के हामी हो गये थे। आप के इशारे पर मैंने उन्हें कत्ल कराया है और अब मिस्र में हाकिमों के ख़ुफ़िया कत्ल का जो सिलसिला शुरू हुआ है वह किसने शुरू किया है? क्या उसे भी नाकाम कहेंगे?"

"अय्यूबी कब कत्ल होगा?" फ्रांसीसी सलीबी गे ऑफ लोज़िनान ने मेज़ पर मुक्का मार कर पूछा— "सलाहुद्दीन अय्यूबी के कत्ल की बात करो। आपने नुरूद्दीन ज़ंगी को जो ज़हर

दिया था वह सलाहुद्दीन को कब दोगे?"

"जिस रोज़ इस किस्म के हालात पैदा हो जाएंगे जैसे नुरुद्दीन जंगी के वक़्त पैदा हुए थे।" शेख सन्नान ने कहा– "ज़ंगी ज़लजले की तबाहकारी के मुतासिरीन की इमदाद के लिए अकेला भागता दौड़ता रहता था। न उसे होश था न उसके अमले को कि उसके लिए जो खाना पकता है वह कौन पकाता है और कोई उसकी निगरानी भी करता है या नहीं। इस मौके से मेरे उन आदमियों ने जो मैंने आपके कहने पर उसके क़त्ल के लिए भेज रखे थे, फ़ायदा उठाया और उसके खाने में वह ज़हर मिला दिया जो गले की बीमारी बन गया और वह तीन चार दिनो बाद मर गया। उसके तीबीब आज भी कहते हैं कि नुररुद्दीन जंगी ख़ुन्नाक से मरा है मगर सलाहुद्दीन के खाने तक पहुंचना मुम्किन नहीं।"

"क्या आप उस बावर्ची को खरीद नहीं सकते जो उसका खाना बनाता है?" एक आला कमाण्डर ने पूछा।

"इसका जवाब हमारा दोस्त हरमन दे सकता है।" शेख सन्नान ने कहा और हरमन की तरफ़ देखकर मुस्कुराया।

पिछली कहानियों में हरमन का ज़िक्र चन्द बार आया है। वह जर्मनी का रहने वाला था। अली बिन सुफ़ियान की तरह जासूसी और सुराग़रसानी का माहिर था। तख़रीब कारी और किरदार कुशी में ख़ुसूसी महारत रखता था। मिस्र में सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ जो साज़िशें और वसीअ पैमाने पर एक बग़ावत जो हुई थी वह उसी ने कराई थी। सुल्तान अय्यूबी के उन दो चार आला हुक्काम को भी हरमने ने उसके खिलाफ कर दिया था जो सुल्तान अय्यूबी के मोअतमद थे। वह मुसलमान हुक्काम और अवाम की नफसीयात और कमज़ोरियों को ख़ूब समझता और उन्हें इस्तेमाल करने का फ़न जानता था। उसे एक सलीबी बादशाह फ़िलिप आगस्टस अपने साथ लाया था। वह सूडान, मिस्र और अरब के हर हिस्से की ज़ुबान मुक़ामी लब वह लहजे में बोल सकता था।

"शेख सन्नान ठीक कहते हैं।" हरमन ने कहा– "इस सवाल का जवाब मुझे देना चाहिए कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के बावर्ची को क्यों नहीं खरीदा जा रुकता। अगर सलाहुद्दीन पर होता तो वह अब तक ज़हर से मारा जा चुका होता। वह उसकी परवाह नहीं करता कि उसके खाने की किसी ने निगरानी की है या नहीं। उसने अपनी जान को ख़ुदा के सुपुर्द कर रखा है। इस अक़ीदे का वह पक्का है कि उसकी मौत का जो दिन मुक़र्रर है उस रोज़ उसे अपनी जान ख़ुदा के हुज़ूर पेश करनी है और उसे कोई इन्सान रोक नहीं सकता। उसके मुहाफ़िज़ दस्ते का कमाण्डर, ख़ुफ़िया मुहकमे का एक ज़िम्मेदार आदमी और उसका एक मोअमन्दे ख़ास उसका खाना खाकर देखते हैं। बाज़ औक़ात तबीब आ जाता है और वह भी खाना देखता है। इसकी इतनी कड़ी निगरानी के अलावा दूसरी दुश्वारी यह है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के बावर्ची और दिगर तमाम मुलाज़िम उसके मुरीद हैं। उनके दिलों में उसकी अंधी अक़ीदत है। अय्यूबी उन्हें अपने नौकर नहीं समझता। उनके साथ दोस्तों और भाइयों जैसे सलूक करता है। पूरी तरह जायज़ा लिया जा चुका है। सलाहुद्दीन अय्यूबी के इस ज़ाती

हल्के में से किसी को ख़रीदना या उस हल्के में अपना कोई आदमी दाख़िल करना मुम्किन नहीं। उसके पास अफ़राद ऐसे हैं जो उसके गिर्द हिसर खींचे हुए हैं। यह हैं अली बिन सुफ़ियान, ग़यास बलबीस, हसन बिन अब्दुल्लाह और ज़ाहेदान। यह सब इतने माहिर सुराग़रसा हैं कि इनकी नज़रें इन्सान के ज़मीर और रूह को भी देख लेती हैं।"

"इस्लाम का ख़ातमा।" फ़िलिप आगस्टस ने कहा— "मैं सौ बार कह चुका हूं हमें इस्लाम का ख़ातेमा करना है। यह ऐसा मज़हब है जो इन्सान की रूह को क़ब्ज़े में ले लेता है। जिस किसी ने इस्लाम को अपनी रूह में उतार लिया उसे दुनिया की कोई ताक़त शिकस्त नहीं दे सकती। आप सबने देख लिया है कि सलाहुद्दीन के गिर्द जिन मुसलमानों का घेरा है वह मज़हब के इतने पक्के हैं कि तुम ज़र व जवाहरात से और इतनी ख़ूबसूरत लड़कियों से उनका घेरा नहीं तोड़ सकते। वह मुसलमान कच्चे ईमानके हैं जिन्हें तुम ख़रीद लेते हो। उन्होंने इस्लाम को अपनी रूह में नही उतरने दिया। तुमने देखा है कि हमारे कितने बड़े–बड़े लश्करों को सलाहुद्दीन के कितने थोड़े–थोड़े सिपाहियों ने कितना–कितना नुक़सान पहुंचाया है। जहाँ हमारे घोड़े थकन और प्यास से रह जाते हैं, वहाँ सलाहुद्दीन के सिपाही थकन और प्यास से बेनियाज रहते हैं। इस क़ुव्वत को यह लोग ईमान कहते हैं। हमें उनका ईमान कमज़ोर करना है हरमन! उनके एक दो उमरा या आला हुकाम को हाथ में लेना बेहद ज़रूरी है। इससे आप ने बहुत फ़ायदा उठाया है लेकिन कोई ऐसा तरीक़ा इख़्तियार करो जिस से इस क़ौम के दिल में अपने मज़हब के खिलाफ़ बेज़ारी पैदा हो जाए। पुख़्ता उम्र के आदमियों के नज़रियात बदलना आसान नहीं होता, उनकी नस्ल को बचपन और लड़कपन में अपना निशाना बना लो। कच्चे ज़ेहन को तुम अपने सांचे में ढाल सकते हो। उनके हैवानी जज़्बे को भड़काओ।"

"यहूदी यह काम कर रहे हैं।" हरमन ने कहा— "और इस मुहाज़ पर मैं जो कुछ कर रहा हूं उसके नताइज आहिस्ता–आहिस्ता सामने आ रहे हैं। एक दिन चन्द एक दिनों में आप किसी के नज़रियात और अक़ीदे नहीं बदल सकते। इस अमल में वक़्त लगता है। एक दौर गुज़र जाता है।"

"यह अमल जारी रहना चाहिए।" फ़िलिप आगस्टस ने कहा— "मैं यह तवक्क़ो नहीं रखूंगा कि नताइज हमारी जिन्दगी में सामने आयें। मुझे पूरी उम्मीद है कि हमने किरदारकुशी का यह अमल जारी रखा तो वह वक़्त आयेगा कि मुसलमान बराये नाम मुसलमान रह जाएंगे, उनके हां मज़हबी फ़राइज़ मज़ह रस्मी बन जाएंगे और उनपर हमारा रंग चढ़ जाएगा। उनकी सोंचों पर सलीब ग़ालिब आजाएगी।"

शेख़ सन्नान!" रिमाण्ड ने शेख़ सन्नान से कहा— "अगर आप हम से इस्यािब के क़िले के बदले एक और क़िले का मुतालबा करेंगे तो हम अभी यह मुतालबा पूरा नहीं कर सकेंगे। हमारा मुआहिदा क़ायम रहेगा क़िले के सिवा दूसरी तमाम मराआत आप को हासिल रहेंगी। अगर आप इन मराआत और माली वज़ीफ़ों को बरकरार रखना चाहते हैं तो क़ाहिरा में और ख़ुसूसन तमाम तर मिस्र में सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज और इन्तज़ामिया की अहम

शख़्सियतों का कत्ल जारी रखें और सलाहुद्दीन के कत्ल की भी कोशिश जारी रखें।"

"सलाहुद्दीन के कत्ल के मुतअल्लिक मैं आप को साफ अल्फाज़ में बता देता हूं कि मैं इसमें और कोई आदमी ज़ाया नहीं करूंगा।" शेख सन्नान ने कहा– "इस शख़्स का कत्ल मुम्किन नज़र नहीं आता। मैं बड़े कीमती फ़िदाई ज़ाया कर चुका हूं। मुझे यह कहने की इजाज़त दें कि सुल्तान अय्यूबी ने मुझे नई जिन्दगी दी है। मैंने उसके आगे हथियार डाले तो मुझे यह उम्मीद नहीं थी कि मैंने उस पर जितने कातिलाना हम्ले कराये हैं उनका इन्तकाम लेने के लिए वह मुझे और मेरे चीदा चीदा फ़िदाइयों को कत्ल कर देगा लेकिन उसने मेरी और मेरे आदमियों की जान बख़्शी कर दी। मैंने यह समझा था कि यह हमें धोखा दे रहा है। ज्योंहि हम पीठ फेरेंगे वह हम पर तीरों का मेंह बरसा देगा या हम पर घोड़े दौड़ देगा। आप मुझे देख रहे हैं। मैंने अपने तमाम आदमियों और पूरी फ़ौज के साथ आप के सामने जिन्दा मौजूद हूं। आप मुझे मराआत से महरूम कर दें, मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी के कत्ल से दस्तबरदार हो गया हूं। अलबत्ता काहिरा में मेरे आदमियों की कागुज़ारी से आपको मायूसी नहीं होगी।"

"काहिरा में ऐसे हालात पैदा कर दिए गये हैं जो सलाहुद्दीन को काहिरा जाने पर मजबूर कर देंगे।" हरमन ने कहा– बहुत जल्द सूडानी मिस्र की सरहदी चौकियों पर हम्लों का सिलसिला शुरू कर देंगे। मिस्र पर कोई बड़ा हम्ला नहीं किया जाएगा, हम्ले का धोखा दिया जाएगा ताकि सुल्तान सलाहुद्दीन शाम से मिस्र चला जाए।"

हरमन जासूसी और सुराग़रसानी का माहिर था लेकिन उसे मालूम नहीं था कि इस कान्फ्रेंस में जो ख़ास मुलाज़िम शराब और खाने की चीज़ें ला और ले जा रहे थे, उनमें विक्टर नाम का एक फ्रांसीसी सुल्तान अय्यूबी का जासूस था और उन्हीं ख़ास मुलाज़िमों में राशिद चंगेज़ नाम का एक तुर्क मुसलमान भी था जिसने अपने आप को यूनान का ईसाइ जाहिर करके यह नौकरी हासिल की थी। यह भी सुल्तान अय्यूबी का जासूस था। हरमन ने इन ख़ास मुलाज़िमों को जो कान्फ्रेंसों और कमाण्डरों की मुहाफ़िज़ों और दावतों मे हाज़िर रहते और खाना खिलाते थे, गहरी छानबीन के बाद उस मुलाज़िमत के लिए मुन्तख़ब किया था। पहले बताया जा चुका है कि सुल्तान अय्यूबी ने जासूसों का जाल फैला रखा था। उसे सलीबियों के दूर अन्दर की बातों का कब्ल अज़ वक़्त इल्म हो जाता था। अब शेख़ सन्नान की इस कान्फ्रेंस की तमाम बातें उसके दो जासूसों ने सुन ली थीं जिन्हें चन्द दिनों तक सुल्तान अय्यूबी तक पहुंच जाना था।

❖

उन दिनों काहिरा में ज़मीन दोज़ तख़रीबकारी बढ़ गयी थी। मिस्र की फ़ौज़ के नायब सालार से एक दरजा कम ओहदे काएक कमानदार शहर के बाहर मुर्दा पाया गया। वह शाम के बाद घर से निकला था। सारी रात घर न आया। सुबह उसकी लाश देखी गयी। उसके जिस्म पर कोई ज़ख़्म नहीं था, कोई चोट नहीं थी। सुराग़रसानों ने जाये वारदात पर एक तो मरने वाले के नक़ूशे पा देखे और दो नक़ूश किसी और के थे। इस कमानदार के चाल चलन की सब तारीफ करते थे। उसका उठना बैठना ग़लत या मश्कूक किस्म के लोगों के साथ नहीं

था। उसकी एक ही बीवी थी जो उससे हर लिहाज़ से मुत्मईन थी। उसकी मौत का बाइस मालूम करने की बहुत कोशिश की गयी। अगर यह क़त्ल था तो क़ातिल का कोई सुराग़ नहीं मिल रहा था।

तीन चार दिनों बाद उसी ओहदे का एक और फ़ौजी कमानदार बिल्कुल उसी तरह एक सुबह अपने कमरे में मुर्दा पाया गया। वह फ़ौजी बारकों के एक कमरे में रहता था। उसके मुतअल्लिक़ भी रिपोर्टें बिल्कुल साफ थीं। उसके दोस्तों के हलक़े में अपने ही दस्ते के कुछ आदमी थे। इनमें से किसी के साथ इस का लड़ाई झगड़ा नहीं था। क़त्ल की बज़ाहिर वजह कोई नहीं थी। उसे क़त्ल कहा नहीं जा सकता था क्योंकि जिस्म पर ज़ख़्म या चोट का कोई हल्का सा भी निशान नहीं था। यह लाश सरकारी तबीब ने देखी। लाश के होंठों के कोनों में ज़रा सी झाग थी। उसने यह झाग लकड़ी के एक लम्बूतरे टुकड़े पर लगा ली। उसने एक कुत्ता मंगवाया और यह झाग गोश्त के एक टुकड़े पर लगाकर कुत्ते को खिला दिया।

उसने कुत्ते को अपने घर ले जाकर बांध दिया और उसे देखता रहा। कुत्ते ने कोई ग़ैर मामूली हरकत न की। उसे जो खाने को दिया गया वह खाता रहा। तबीब सारी रात जाग कर कुत्ते को देखता रहा। आधी रात के बाद कुत्ता उठा और जहाँ तक रस्सी इजाज़त देती थी वह बड़े आराम से टहलता रहा। बहुत देर टहल कर वह रूका और गिर पड़ा। तबीब ने देखा, कुत्ता मर चुका था। तबीब ने रिपोर्ट दी कि दोनों कमानदारों को ऐसा ज़हर दिया गया है जिससे कोई तल्ख़ी नहीं होती। इन्सान निहायत इत्मीनान से मर जाता है।

सुराग़रसानों ने दोनों कमानदारों के मुतअल्लिक़ गहरी तफ़्तीश की। यह मालूम करने की बहुत कोशिश की गयी कि जिन्दगी के आख़िरी रोज़ वह किस–किस से मिले, कहाँ गये और उन्होंने किस के साथ कुछ खाया पिया मगर कोई सुराग़ न मिला। शादी शुदा कमानदार को बीवी से भी पूछ गछ की गयी लेकिन उसपर शक की कोई वजह नहीं थी। दोनों कमानदारों में मुश्तर्का वस्फ़ यह था कि पक्के मुसलमान थे। मैदाने जंग में उनकी कमाण्ड और दिलेरी की तारीफ़ें सुल्तान अय्यूबी ने भी की थी। दोनो सरहदी दस्तों के कमाण्डर रह चुके थे और उन्होने कई एक सूडानियों को सरहद पार करते गिरफ्तार किया था। सूडानियों ने उन्हें बहुत रिश्वत पेश की थी जो उन्होंने कुबूल नहीं की थी। अब दोनो को नायब सालार की तरक्की मिलने वाली थी। वह इस क़ाबिल थे कि किसी भी जगह हम्ले की क़यादत आज़ादाना कर सकें।

अली बिन सुफ़ियान ने राय दी कि क़त्ल की यह दोनों वारदातें सलीबी तख़रीबकारों की हैं और क़ातिल फ़िदाई हैं। उसने कहा कि दुश्मन ने अब अहम शख़्सियतों के क़त्ल का सिलसिला शुरू कर दिया है। तमाम कमानदारों और हुकाम को ख़बरदार कर दिया गया कि किसी अजनबी या मश्कूक आदमी के हाथ कोई चीज़ न खायें और ऐसे आदमियों पर नज़र रखकर उन्हें पकड़ने की कोशिश करें जो दोस्ती लगाने और खाने पीने की कोई चीज़ पेश करने की कोशिश करें। सुराग़रसां मस्रूफ हो गये।

दूसरे कमानदार के क़त्ल के सात रोज़ बाद एक रात फ़ौज के ख़ेमों को आग लग गयी।

हज़ारों ख़ेमे एक जगह लिपटे पड़े थे। उनके अंबारों के ऊपर छप्पर थे। वहाँ पहरा भी था फिर भी आग लग गयी। यह आग तख़रीबकारी का नतीजा थी। वहां इत्तफाकिया आग लगने का कोई इम्कान नही था क्योंकि इन छप्परों के करीब आग जलाने की ममानियत थी। इस की सख़्ती से पाबन्दी की जाती थी। इसके अलावा पुर असरार से कुछ और वाकिआत हुए थे। सरहदी दस्तों को और ज़्यादा चौकस कर दिया गया था। सूडान की तरफ सरहद के अन्दर चोरी छुपे आने वालों की तादाद और रफ़्तार बढ़ गयी थी। इसका अन्दाज़ा उन लोगों की गिरफ़्तारियों से होता था।

❖

अली बिन सुफ़ियान ने अपनी इन्टेलींजेंस को और ज़्यादा फैला दिया और पहले से ज़्यादा होशियार कर दिया था। काहिरा से कुछ दूर दरियाए नील के किनारे पहाड़ी इलाका था। उसके अन्दर कहीं फ़िरऔनों का ज़माने के खंडर थे। इससे पहले ऐसे वाकिआत हुए थे कि सलीबी और सूडानी तख़रीबकारों ने ऐसे खंडहरों को ख़ुफ़िया अड्डों के तौर पर इस्तेमाल किया था। मिस्र में ऐसे खंडरों की तादाद कुछ कम नहीं थी। इस पहाड़ी इलाके को नज़र में रखने के लिए अली बिन सुफ़ियान ने अपने जासूसों को ख़ुसूसी हिदायात के साथ मुकर्रर कर रखा था। अब के सलीबी तख़रीबकारों ने यह कामयाबी भी हासिल कर ली थी कि उन्होंने दो तीन महीनों के अर्से में अली बिन सुफ़ियान के छः सात जासूसों जो काहिरा में मुख़्तलिफ़ जगहों पर मुख़्तलिफ़ बहरूपों में रहते थे ग़ायब कर दिये थे।

यह वह जासूस थे जो सलीबियों के जासूसों को पकड़ने के माहिर थे लेकिन वह ख़ुद पकड़े गये या मारे गये। ख़तरा यह था कि वह पकड़े गये तो सलीबी उन्हें हशीशीन के हवाले करके उन्हें मिस्र की हुकूमत और फ़ौज के खिलाफ़ इस्तेमाल करेंगे। असल खतरा तो यह था कि दुश्मन के जासूसों ने काहिरा के जासूसों को पहचान लिया था। जासूसी और सुराग़रसानी की इस जंग में दुश्मन जीत रहा था। अली बिन सुफ़ियान ने अब ज़रा ऊंचे ओहदों के ऐसे जासूस जो अपने फ़न में ख़ुसूसी महारत रखते थे इस्तेमाल करने शुरू कर दिए थे। इनमें एक मेंहदी अल हसन था जो योरूशलम और त्रीपोली तक बड़ी कामयाब जासूसी कर आया था। बहुत दिलेर और दनिशमंद जासूस था।

अली बिन सुफ़ियान ने यह पहाड़ी इलाका उसे दे रखा था। इस इलाके के अन्दर सिर्फ़ एक रास्ता था। पीछे दरिया और बाकी हर तरफ़ पहाड़ियां और चट्टानें भी थीं। अन्दरूनी इलाके में सब्ज़ा और दरख़्त थे, कहीं-कहीं पानी की झीलें भी थीं। इत्तलाअ मिली थी कि इसके अन्दर मश्कूक से आदमी आते जाते देखे गये हैं। फ़िरऔनों की किसी इमारत के खंडर सामने नज़र नहीं आते थे। किसी ने कभी देखे भी नहीं थे, लेकिन यह यकीन ज़रूर था कि इस कोहिसार के अन्दर फ़िरऔनों ने कुछ न कुछ बनाया था जो अब तक मौजूद है। बहरहाल यह जगह ऐसी थी जो तख़रीबकारों का ख़ुफ़िया अड्डा बनने के लिए मोज़ूं थी।

मेंहदी अल हसन वहाँ एक दो ऊंट और चन्द एक भेंड़ बकरियां लेजाकर सेहराई ख़ानबदोश या गड़ेरिये के बहरूप में जाया करता था। उसके जानवर इधर चरते चुगते रहते और वह

घूमता फिरता रहता था। उसने कुछ दूर अन्दर तक इलाक़ा देखा था। वहां उसे कुछ भी नज़र नहीं आया था। बहुत आगे जाकर एक पहाड़ी ऐसी थी जिसके दामन से बीस पच्चीस फिट ऊपर एक कुदरती सुरंग का दहाना था। मेंहदी अल हसन इस सुरंग के अन्दर गया था। यह इतनी ऊंची और फराख़ थी कि इसमें से ऊंट गुज़र सकता था। यह पहाड़ी की तरफ़ तक चली गयी थी। मेंहदी अल हसन दूसरी तरफ गया। वहां तंग सी एक वादी थी जहां कोई अड्डा नहीं हो सकता था। सुरंग बहुत लम्बी थी। उसके अन्दर दायें—बायें दिवारों में ग़ारें सी बनी हुई थीं। इतने बड़े—बड़े पत्थर भी थे कि एक पत्थर के पीछे आदमी बैठ कर छुप सकता था।

इस मिस्री जासूस ने अली बिन सुफ़ियान को रिपोर्ट दी थी कि वह जहाँ तक जा सका है, उसे कोई मश्कूक जगह नज़र नहीं आई और इतने दिन में उसे कोई एक भी आदमी अन्दर जाता या बाहर आता दिखाई नहीं दिया। अली बिन सुफ़ियान ने उसे कहा कि वह सारा दिन वहीं गुज़ारा करे और वह ज़्यादा अन्दर तक जाया करे क्योंकि पकड़े या मारे जाने का ख़तरा था। अली बिन सुफ़ियान ने उसे यह भी कहा कि कभी—कभी ऊंट पर सवार होकर रात को भी चला जाए करे। अगर कोई आदमी उसे मिल जाए तो उसे बताये कि वह काहिरा जा रहा है। अपने आप को किसान ज़ाहिर करे। इस हिदायात के तेहत मेंहदी अल हसन रात को भी वहाँ गया था। एक रात उसे किसी के भागते कदमों की आवाज़ सुनाई दी। यह कोई जंगली जानवर भी हो सकता था और यह कोई इन्सान भी हो सकता था। मेंहदी अल हसन आगे न गया। कुछ देर वहाँ रूका रहा फिर वापस आ गया।

❖

वह दूसरे दिन सूरज निकलने से पहले वह तीन ऊंट और भेंड़ बकरियां लेकर वहाँ चला गया। उन्हें खुला छोड़ कर ख़ुद इधर उधर घूमने फिरने लगा। वहाँ सब्ज़ा था। झाड़ियां और घास थी और जंगली पौधे भी। कुछ आगे जाकर उसे एक आदमी दिखाई दिया जो ज़मीन पर झुका हुआ था। उसने कीमती चुग़ा पहन रखा था और उसकी लम्बी दाढ़ी थी। सर पर अमामा भी कीमती था। मेंहदी अल हसन आहिस्ता—आहिस्ता उसकी तरफ चलने लगा। झुके हुए आदमी ने उसकी तरफ़ देखा। मेंहदी अल हसन ने अपनी चाल ढाल में जाहिलानापन नुमाया रखा और आहिस्ता—आहिस्ता उस आदमी के करीब जा खड़ा हुआ।

चुग़े वाले के हाथ में एक थैला था जिस में हरे पत्ते भरे हुए थे और उसके दूसरे हाथ में एक पौधे की हरी शाख़ थी।

"आप क्या ढूंढ रहे हैं?" मेंहदी अल हसन ने गंवारों के से लहजे में अहमकों की तरह हंस कर पूछा— "कोई चीज़ गुम हो गयी है? मैं भी तलाश करूं?"

"मैं हकीम हूं।" उस आदमी ने कहा— "जड़ी बूटियां ढूंढ रहा हूँ। इनकी दवाईयां बनाऊंगा।"

मेंहदी अल हसन ने उसका चेहरा देखकर पहचान लिया। वह काहिरा का हकीम था और ख़ासी शेहरत रखता था। मेंहदी अल हसन ने उसके जवाब को ग़लत न समझा कि वह जड़ी बूटियां ढूंढ रहा है। इस इलाके में जड़ी बूटियां मौजूद थीं। हकीम ने उससे पूछा वह यहाँ क्या

कर रहा है। उसने बताया कि वह यहाँ से थोड़ी ही दूर अपने एक कुम्बे के साथ खेमे में रहता है और यहाँ जानवरों को चराने और पानी पिलाने लाया है।

"इन बूटियों से आप किस मर्ज़ की दवा बनायेंगे?" मेंहदी अल हसन ने पूछा।

"तुम किसी मर्ज़ को नहीं समझ सकते।" हकीम ने जवाब दिया– "बाज़ मर्ज़ ऐसे होते हैं कि मरीज़ को भी मालूम नहीं होता कि उसे क्या है।"

यह हकीम मशहूर था। दूर–दूर से उसके पास मरीज़ आते थे। इत्तफ़ाक से मेंहदी अल हसन को यहाँ मिल गया। यह इन्सानी फ़ितरत की कमज़ोरी है कि इन्सान पर मर्ज़ का वहम भी तारी हो जाता है और इन्सान बड़ी लम्बी उम्र का और ऐसी जिस्मानी ताकत का मुतमन्नी रहता है जो कभी कम न हो। मेंहदी अल हसन को शायद मामूली सी कोई तकलीफ़ थी। उसने उसका ज़िक्र हकीम से किया। हकीम ने उसकी नब्ज़ पर हाथ रखा, फिर उसकी आँखों में झांका और यूं चौंका जैसे उसे उन आँखों में कोई अजीब चीज़ नज़र आयी हो। उसने मेंहदी अल हसन को सर से पांव तक देखा। हकीम के चेहरे पर हैरत का तास्सुर था।

"तुम मेरे दवाखाने में आ सकते हो?" हकीम ने पूछा– "शहर में आ जाओ।"

"मैं ग़रीब आदमी हूं।" मेंहदी अल हसन ने कहा–" आप को पैसे कहाँ से दूंगा।"

"तुम अभी मेरे साथ चलो।" हकीम ने कहा– "मेरा ऊंट उधर चर रहा है, तुम्हारे पास भी ऊंट है। मुझे पैसों की ज़रूरत नहीं। अमीर लोग बहुत पैसे दे जाते हैं। ग़रीबों का इलाज मुफ़्त करता हूं। तुम्हारी बीमारी इस वक़्त तो मामूली है लेकिन यह अचानक बढ़ जाएगी। मुझे कोई और शक भी है।"

मेंहदी अल हसन दरअसल ड्यूटी पर था। मामूली से मर्ज़ की ख़ातिर वह ड्यूटी नहीं छोड़ना चाहता था। उसने हकीम से कहा कि वह शाम को उसके दवाखाने में आयेगा, उसे रास्ता और जगह बता दे। मेंहदी अलहसन को अच्छी तरह मालूम था कि उसका दवाखाना कहाँ है। वह अन्जान बना रहा औ हकीम ने उसे समझा दिया कि दवाखाना कहाँ है।

❖

मेंहदी अल हसन शाम के बाददइसी बहरूप में हकीम के दवाखाने में चला गया। उसने ऊंट साथ रखा था ताकि हकीम को शक न हो। उसे ख़ुद हकीम पर कोई शक न था। वह जानता था कि हकीम जड़ी बूटियां तलाश करते रहते हैं। उसे फिलवाकेअ ख़्याल पैदा हो गया था कि जिसे वह मामूली सी तकलीफ़ समझता है वह ख़तरनाक बीमारी बन सकती है। हकीम ने उसे अच्छी तरह देखा और कहा– "मैं दवाई दे देता हूं। अगर इससे इफ़ाका न हुआ तो वह कोई और बन्दोबस्त करेगा क्योंकि उसे कोई और शक है।"

मेंहदी अल हसन ने पूछा कि और क्या शक है।?

"अल्लाह न करे मेरा शक दुरुस्त हो।" हकीम ने कहा– "तुम ख़ूबसूरत जवान हो। सेहरा में घूमते फिरते रहते हो। जिस जगह तुम मुझे मिले थे वह जगह ठीक नहीं। वहाँ बदरूहें रहती हैं। इनमें बाज़ फ़िरऔनों के वक़्तों की बड़ी हसीन लड़कियों की बद रूहें हैं। उन्हें फ़िरऔनों ने जबरदस्ती अपने पास रखा और अय्याशी का ज़रिआ बनाया था, फिर उन्हें

मार डाला था क्योंकि उनकी जगह उन्हें दूसरी लड़कियाँ मिल गयी थीं। रूह बूढ़ी नहीं होती हमेशा जवान रहती है। जिन लड़कियों को कत्ल किया गया था उनकी रूहें इस सब्ज़ खित्ते में भटकती रहती हैं। मुझे शक है कि तुम्हारी शक्ल व सूरत फ़िरऔनों के दौर के किसी ऐसे जवान से मिलती है जिसे उस दौर की कोई लड़की चाहती थी मगर वह किसी फ़िरऔन का शिकार हो गयी। तुम उस जगह जाते रहते हो। उसी लड़की की बदरूह ने तुम्हें देख लिया है और तुम्हारी रूह के साथ दिल बहला रही है।"

"यह मुझे नुक़सान तो नहीं पहुंचायेगी?" मेंहदी अल हसन ने हकीम के बात से मुतासिर होकर पूछा– "बदरूह की दोस्ती अच्छी तो नहीं होती। क्या आप बदरूह से निजात दिला सकते हैं?"

"मेरा शक ग़लत हो सकता है।" हकीम ने कहा– "पहले दवाई दूंगा। इफ़ाक़ा न हुआ तो बदरूह का कुछ करूंगा। मेरे पास इसका भी इलाज है। तावीज़ दूंगा। अमल करूंगा। ज़रूरत पड़ी तो उस बदरूह के साथ तुम्हारी मुलाक़ात करा दूंगा। बदरूह से निजात हासिल करने का यह भी एक तरीका होता है। बदरूह कोई नुक़सान नहीं पहुंचायेगी।"

मेंहदी अल हसन काबिल और ज़हीन जासूस था लेकिन वह आलिम फ़ाज़िल नहीं था। अपनी क़ौम के हर फ़र्द की तरह जिन्नात, चुड़ैलों और बदरूहों के वजूद पर यक़ीन रखता था। उसने उसकी जो कहानियां और रिवायतें सुनी थीं उन्हें सच मानता था। हकीम का एक–एक लफ़्ज़ उसके दिल में उतर गया और उसपर बदरूह का ख़ौफ़ तारी हो गया। वह हकीम के पास जासूसी के लिए नहीं इलाज के लिए ही गया था। हकीम ने उसे तसल्ली दी कि वह कोई फ़िक्र न करे लेकिन वह फ़िक्रमंद हो गया। हकीम ने दवाई की सिर्फ एक ख़ुराक दी और कहा कि रात सोने से पहले खा ले।

उसने सोने से पहले यह दवाई खा ली। उसे फ़ौरन नींद आ गयी। इस से पहले उसकी इतनी जल्दी आंख कभी नहीं लगी थी। सुबह आंख खुली तो उसने महसूस किया कि उसकी तबियत ग़ैर मामूली तौर पर हशाश बशाश है। वह सब से पहले अली बिन सुफ़ियान के पास गया। उसे यह न बताया कि उसने उस पहाड़ी इलाक़े में हकीम को जड़ी बूटियां तलाश करते देखा था। यह बताने वाली बात नहीं थी क्योंकि हकीम कोई मश्कूक इन्सान नहीं था। वह क़ाहिरा का इतना मशहूर और क़ाबिल हकीम था कि फ़ौज और हुकूमत के बड़े बड़े अफ़सर भी उसके पास इलाज के लिए जाते थे। उसके मुतअल्लिक़ यह भी मशहूर था कि तावीज़ भी देता और जिन्नात वग़ैरह को क़ब्ज़े में रखता है। अली बिन सुफ़ियान ने मेंहदी अल हसन से कहा कि वह उसी जगह जाए, उसे वहाँ कोई न कोई मशकूक इन्सान ज़रूर नज़र आयेगा। अली बिन सुफ़ियान दर असल तख़रीबकारों के एक अड्डे की तलाश में था।

मेंहदी अल हसन उस तरफ जाते हकीम के पास चला गया। वह गड़ेरियों के लिबास में था। उसने हकीम से कहा कि वह सुबह सवेरे इतनी दूर से यह बताने आया है कि रात उसे बड़ी गहरी नींद आई और अब वह इतना हशाश बशाश है जितना वह पहले कभी नहीं हुआ था।

"अगर शाम तक तुम इसी हालत में रहे तो बदरूह नहीं हो सकती।" हकीम ने कहा—"शाम को फिर आ जाना।"

मेंहदी अल हसन ऊंट पर सवार हुआ और अपनी ड्यूटी पर रवाना हो गया।

❖

इस सर सब्ज़ जगह वह बहुत दिनों से जा रहा था और सारा दिन वहीं रहता था। रात को भी वहाँ गया था मगर अब हकीम से मुलाक़ात के बाद उसे इस जगह से डर महसूस होने लगा। हकीम ने उसे बताया था कि बदरूहें नुक़सान नहीं पहुंचायेगी क्योंकि वह मोहब्बत की ख़ातिर उसकी रूह के पास आती है, फिर भी अनदेखी पुर असरार मख़्लूक़ का डर कुदरती था। उसे ऐसे महसूस होने लगा जेसे उसके गिर्द बदरूहें मंडला रही हों। वह दिलेर आदमी था। डर को दिल से निकालने की कोशिश करने लगा और उस बदरूह को तसव्वुर में लाने लगा जिस का ज़िक्र हकीम ने किया था। इस तसव्वुर ने उसे तस्कीन दी और वह इधर उधर घूमने लगा।

अचानक उसने महसूस किया कि उसकी तबियत जो इतनी ज़्यादा हशाश बशाश थी बुझ रही है और दिल पर घबराहट तारी हो रही है। उसने अपने आप को संभालने की बहुत कोशिश की लेकिन घबराहट बढ़ती गयी और उसने हकीम को अपनी जो तकलीफ बताई उसकी बनिस्बत ज़्यादा हो गयी। उसने उसी वक़्त हकीम के पास जाना चाहा लेकिन ड्यूटी नही छोड़ सकता था, बर्दाश्त करता रहा। बहुत देर बाद उसकी तबियत घबराहट से आज़ाद होने लगी और आहिस्ता—आहिस्ता उस हालत में आ गयी जिसमें कल दवाई खाने से पहले थी। उसे यक़ीन होने लगा कि यह बदरूह का असर है।

दिन गुज़र गया। उसने ऊंटों भेड़ बकरियों को इकठ्ठा किया और उन्हें वहाँ ले गया जहाँ रोज़ाना ले जाता था। ऊंट पर सवार होकर वह शहर में हकीम के पास चला गया। उसे अपनी तबियत की यह तब्दीली बताई हकीम ने बदरूह के शक का इज़हार किया लेकिन एक रोज़ और दवाई खाने को कहा। उसने दवाई दे दी जो मेंहदी अल हसन ने रात सोने से पहले खा ली। गुज़िश्ता रात की तरह उसे गहरी नींद आई और सुबह तबियत शगुफ़्ता थी। वह रोज़ मर्रा की तरह अली बिन सुफ़ियान के पास गया और वहाँ से अपनी ड्यूटी की जगह चला गया।

उसकी जिस्मानी हालत अच्छी रही, ज़ेहनी हालत यह थी कि बदरूह का ख़्याल ग़ालिब था। आधा दिन गुज़रा तो उसकी शगुफ़्तगी कम होने लगी जो आहिस्ता—आहिस्ता ख़त्म हो गयी और उसकी जगह घबराहट और उदासी आ गयी। उसने ध्यान इधर उधर करने की कोशिश की और टहलने लगा। फिर आहिस्ता—आहिस्ता तबियत ठिकाने आ गयी। उसके कानों में ऐसी आवाज़ पड़ी जेसे दूर कहीं कोई औरत रो रही हो। रोने की आवाज़ बुलन्द हुई फ़िर मद्धिम होते—होते ख़ामोश हो गयी। मेंहदी अल हसन जहाँ था वहीं रहा। यह कोई बदरूह रो रही थी और यह वही बदरूह हो सकती थी जिसका ज़िक्र हकीम ने किया था। मेंहदी अल हसन के दिल पर खौफ़ तारी हुआ जिस पर उसने क़ाबू पा लिया। उसने यह

इरादा किया कि बदरूह से बात करे लेकिन हकीम ने उसे बताया नहीं था कि बदरूह के साथ बात करनी चाहिए या नहीं। अगर वह किसी और जगह और मुख़्तलिफ माहौल में किसी औरत की रोने की आवाज़ सुनता तो दौड़ कर मदद को पहुंचता लेकिन यहाँ किसी जीती जागती औरत का कोई काम नहीं था। यह फिरऔनों के दौर की किसी लड़की की बदरूह थी।

शाम को वह कल की तरह हकीम के पास गया और उसे बताया कि उसकी हालत क्या हुई और उसने कैसी आवाज़ें सुनी हैं। हकीम गहरी सोचों में खो गया और बोला– "मेरा शक यकीन में बदल गया है। यह बदरूह है। घबराओ नहीं। मैं अभी एक तावीज़ दूंगा फिर बदरूह से पूछूंगा कि वह क्या चाहती है। इसके मुताबिक़ और कुछ करूंगा लेकिन तुम्हे डरना नहीं चाहिए। यह बदरूह तुम्हारे साथ मोहब्बत करती है, इसलिए तुम्हें कोई नुक्सान नहीं पहुंचायेगी। तुम उस जगह जाते रहना। अगर तुम ने उस बदरूह से भागने की कोशिश की तो नुक़्सान का ख़तरा है।"

हकीम ने उसे एक तावीज़ दे दिया जो उसने बाज़ू के साथ बांध लिया।

"मैं रात को अपना अमल करूंगा।" हकीम ने कहा– "कल सुबह मेरे पास आना। तुम्हें बताऊंगा कि बदरूह क्या है। तुमने रोने की जो आवाज़ें सुनी हैं वह उसी बदरूह की हैं। यह बदरूह शैतान नहीं, फिर भी कोशिश करूंगा कि तुम्हें इससे निजात मिल जाए।"

मेंहदी अल हसन दिल पर तज़ बज़ब और हिजान लेकर चला गया।

❖

अगले रोज मेंहदी अल हसन को अली बिन सुफ़ियान की तरफ से कुछ और हिदाया मिलीं। वह भागम भाग हकीम के पास गया। हकीम जैसे उसी के इन्तज़ार में बैठा था। उसे देखते ही उठ खड़ा हुआ और उसे अन्दर ले गया।

"वह तुम्हारे साथ सिर्फ एक मुलाकात करना चाहती है।" हकीम ने उसे कहा– "वह तुम्हारे सामने आयेगी अपना आप दिखायेगी। तुम उसे देख सकोगे। हो सकता है पहले रोज़ वह तुम्हारे सामने आये और ग़ायब हो जाए। वह दूसरी दुनिया की मख़लूक़ है। शायद इस दुनिया के इन्सानों के क़रीब आने से गुरीज़ करे। अगर उसने ऐसा ही किया तो तुम्हें अगले रोज़ फिर जाना पड़ेगा।"

"कहाँ?"

"वहीं, जहाँ तुम हर रोज़ जाते हो।" हकीम ने कहा– "जहाँ तुम ने मुझे देखा था। तुम वहाँ रात को जाओगे।"

"आप भी साथ होंगे?"

"नहीं।" हकीम ने जवाब दिया– "उस जहाँ में गई हुई रूह सिर्फ उसे नज़र आती है जिसे वह चाहती है और अगर कोई गुनाहगार बदरूह किसी इन्सान पर नज़र रख ले तो उसे फ़ौरन मार डालती है। यह बदरूह जो तुम्हें मिलना चाहती है किसी को परेशान करने वाली नहीं। उसके रोने को समझो। वह मज़लूम है। मोहब्बत की प्यासी है। मैंने रात जब उसे हाज़िर

किया तो वह ज़ारोक़तार रोई और उसने मेरी मिन्नत की कि इस शख़्स को थोड़ी देर के लिए मेरे पास भेज दो, फिर हमेंशा के लिए चली जाऊंगी।"

अगर यह बातें कोई और कर रहा होता तो मेंहदी अल हसन पर इतना ज़्यादा असर न होता जितना उसने क़ुबूल किया। यह बातें उस हकीम की ज़ुबान से निकल रही थीं जिसे मेंहदी अल हसन के बड़े हाकिम भी मुतासिर थे....वह हकीम भी था, और आलिम भी। उसके बोलने का अन्दाज़ ऐसा था जो सुनने वाले की रूह में उतर जाता था। उसने मेंहदी अल हसन को यक़ीन दिलाया कि रात को उस बदरूह की मुलाक़ात से उसपर कोई ख़ौफ तारी नहीं होगा और उसे नुक़्सान की बजाए कुछ फ़ायदा भी मिले।

"एक इहतियात भी ज़रूरी है।" हकीम ने उसे कहा– "किसी के साथ इस बदरूह के मुत अल्लिक़ या उसकी मुलाक़ात के मुतअल्लिक़ कोई बात न करे। अगर तुम ने यह राज़ फ़ाश कर दिया तो नुक़सान का ख़तरा है। तुम अपनी दुनिया के इन्सानों को धोखे दे सकते हो, आलमें ग़ैब में गयी हुई रूह का राज़ फ़ाश करोगे तो मैं बता नहीं सकता कि तुम्हारे जिस्म के कौन से दो अज़ा हमेंशा के लिए बेकार हो जाऐंगे। दोनों टांगे सूख जायेंगी या दोनों बाज़ू या दोनों आंखें बीनाई से महरूम हो जायेंगी। अब मैं तुम्हें जो बात बताने लगा हूं यह भी एक राज़ है। यह राज़ तुम्हें इस लिए दे रहा हूँ कि तुम इबरत हासिल कर सको। यहाँ की फ़ौज के दो आला रुत्बे के कमानदार रात के वक़्त मारे गये हैं। किसी को मालूम नहीं कि वह किस तरह मरे हैं। मुझे दो तीन बदरूहों ने बताया है कि उन्हें बदरूहों ने मारा है। उन्होंने बदरूहों के राज़ फ़ाश कर दिए थे।"

"वह किस तरह?" मेंहदी अलहसन गंवार गड़ेरिया या सेहराई ख़ानाबदोश बना हुआ था लेकिन वह दरअसल जासूस था वह इन दो कमानदारों की मौत का सुराग़ लेना चाहता था। उसने हकीम से तफ़सील पूछी।

"मैं ऐसी राज़ की बात किसी को बता नहीं सकता।" हकीम ने कहा– "जितनी इजाज़त थी उतनी बता दी है। तुम बिल्कुल ख़ामोश रहना। अपने इस राज़ के साथ वास्ता रखो जो मैं तुम्हें बता रहा हूँ। यह भी न सोंचना कि मैं तुम्हारी ज़ात में किसी लालच और किसी उजरत के बग़ैर इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहा हूं। मैं इन रूहों और बदरूहों की ख़्वाहिशात का पाबन्द हूं। अगर मैं उन्हें नाराज़ करूं तो मेरा इल्म बेकार हो जाए और बदरूहें मेरा भी वही हश्र कर दें जो वह अपने दुश्मनों की करती हैं। इस रूह ने जो तुम्हें देख कर रोती है मुझे कहा कि मैं उसके साथ तुम्हारी थोड़ी देर की मुलाक़ात करा दूं तो यह मेरा फ़र्ज़ है कि उसकी ख़्वाहिश पूरी करूं।

"अगर मैं उससे न मिलूं तो क्या होगा?"

"वह बदरूह बनकर तुम्हारी रूह पर अपना साया करेगी।" हकीम ने जवाब दिया– "तुम ने मुझे अपनी जो तकलीफ़ बताई थी वह कोई जिस्मानी तकलीफ़ नहीं। यह रूहानी आरिज़ा है। इसने तुम पर अभी अपना पूरा असर नहीं डाला था। तुम कोई नेक इन्सान हो। तुम्हारी नेकी तुम्हारे काम आई है। तुमने मेरे साथ इस तकलीफ़ का ज़िक्र कर दिया। ख़ुदाये ज़ुलजलाल

जिस पर रहमत फ़रमाना चाहते हैं उसके लिए वह किसी इन्सान को सबब बना देते हैं। यह करिश्मा अल्लाह की ज़ात का है कि तुमने मुझे वहां देख लिया और हम दोनो मिले। इस रहमत से डरो नहीं। अगर तुम इस बदरूह की मुलाक़ात की ख़्वाहिश करोगे तो वह इस दुनिया में तुम्हें बहुत फ़ायदा देगी। एक फ़ायदा यह हो सकता है कि वह निहायत ख़ूबसूरत लड़की के रूप में गोश्त पोस्त का जिन्दा जिस्म बनकर तुम्हें जब चाहोगे मिला करेगी। तुम उसे बीवी बनाकर घर रख सकते हो और अगर वह ज़्यादा मेहरबान हो गयी तो मुझे यक़ीन है कि वह तुम्हें किसी फ़िरऔन का मदफून ख़ज़ाने का भेद बता दे और ऐसा ज़रिआ पैदा कर दे कि तुम यह ख़ज़ाना निकाल कर और उस बदरूह को साथ लेकरमिस्र से कहीं दूर चले जाओ और किस ख़ित्ते के बादशाह बन जाओ।"

"मुलाक़ात कब होगी?"

"आज रात चले जाओ।" हकीम ने कहा।

हकीम ने उसे एक और तावीज़ दिया और उसे बहुत सी हिदायात दीं। ख़तरों से भी आगाह किया और फ़ायदे भी बताये और ज़ोर देकर कहा कि डरना नहीं। वहां पहुंचने का वक़्त भी बताया जो रात तारीक हो जाने के कुछ देर बाद का था। मेंहदी अल हसन अजीबो ग़रीब से तासुरात लेकर वहाँ से उठा और अपनी रोज़ मर्रा की ड्यूटी पर चला गया। दिन वहीं गुज़रा और सूरज ग़ुरूब होने से बहुत पहले वापस चला गया।

❖

रात तारीक हुई तो वह फिर वहीं मौजूद था मगर अब ड्यूटी पर नहीं बदरूह की मुलाक़ात के लिए गया था। ऐसी तारीक तन्हाई और ऐसे सुनसान माहौल में उसे ख़ौफ़ज़दा होना चाहिए था लेकिन हकीम की बातें उसे हौसला दे रही थीं। उसने बाज़ू के साथ दो तावीज़ बांध रखे थे और वह अपने तौर पर कोई विर्द भी कर रहा था। वह उस जगह पहुंच गया जो उसे हकीम ने बताई थी। यह पहाड़ियों के अन्दर थी। दरख़्त भूतों की तरह नज़र आ रहे थे। माहौल इस क़दर ख़ामोश था कि मेंहदी अल हसन को अपने दिल की धड़कन भी सुनाई दे रही थी।

उसे रोने की वही आवाज़ सुनाई दी जो उस ने दिन को सुनी थी। वह इस आवाज़ की तरफ़ चल पड़ा। कुछ देर ख़ामोशी तारी रही। वह ज़रा सा चल कर रूक गया। अब के रोने की आवाज़ उसके अक़ब से आने लगी। यह भी दूर थी। वह उस तरफ़ चल पड़ा। इस जगह से वह वाक़िफ़ था इसलिए आसानी से चला जा रहा था। यह आवाज़ भी ख़ामोश हो गयी।

मेंहदी अल हसन ने बुलन्द आवाज़ से कहा— "मुझे अपना आप दिखाओगी या इसी तरह डराती रहोगी?"

उसे अपने यही अल्फ़ाज़ साफ़ सुनाई दिए। अगर उसे यह इल्म न होता कि यह उसकी अपनी सदाये बाज़गश्त है तो वह डर के मारे भाग जाता। यह सेहराई पहाड़ियां थीं जो दिवारों की तरह खड़ी थीं। इनमें ज़्यादा तर उमूदी और कुछ ढलानी थीं। मेंहदी अल हसन को अपनी आवाज़ तीन चार बार सुनाई दी। उसकी आवाज़ माहौल और फ़िज़ा में घूमती और तैरती

महसूस होती थी।

इस आवाज़ की गूंज तारीक फ़िज़ा को तहलील हो गयी तो उसे एक निस्वानी आवाज़ सुनाई दी– "मुझ से डरो नहीं। आगे आओ।" यह आवाज़ दूर से आई थी। यह उसे कई बार सुनाई दी और आहिस्ता आहिस्ता ख़त्म हो गयी।

"आवाज़ फिर आई।" अब बेवफ़ाई न करना। मैं दो हज़ार साल से तुम्हारी राह देख रही हूं।"

मेंहदी अल हसन को यह अल्फ़ाज़ कई बार सुनाई दिए, फ़िर मेंहदी अल हसन की आवाज़ उभरी और बार–बार सुनाई देने के बाद ख़ामोश हो गयी। इस तरह दोनों तरफ़ से आवाज़ें उभरती, भटकती और गूंजती रही। बदरूह की आवाज़ में इल्तिजा थी जिस से मेंहदी अल हसन का ख़ौफ़ दूर हो गया। वह इस पहाड़ियो में अन्दर तक चला गया। उसे सामने रौशनी की चमक दिखाई दी जो आसमानी बिजली की तरह चमकी और बुझ गयी। इस चमक में उसने देख लिया कि वह कहाँ है। उसे इस चमक में उस सुरंग का दहाना नज़र आया था जिसमें से गुज़र कर वह एक बार दूसरी तरफ गया था। वह वहीं रूक गया।

कुछ देर बाद रौशनी फिर चमकी और उसमें उसे सुरंग के दहाने में कोई इन्सान खड़ा नज़र आया। रौशनी जाने कहाँ से आ रही थी। यह इतनी लम्बी चौड़ थी कि दहाने में खड़ा इन्सान साफ नज़र आता था। वह उससे कमोबेश पचास क़दम दूर था। उसने ग़ौर से देखा। चेहरा बड़ी ही ख़ूबसूरत लड़की का था। सिर्फ चेहरा नज़र आता था। बाक़ी सारा जिस्म सफेद कफ़न में लिपटा हुआ था। मेंहदी अल हसन डरने लगा। उसे निस्वानी आवज़ सुनाई दी– "मुझसे डरो नहीं। दो हज़ार साल से तुम्हारी राह देख रही हूँ।"

वह आगे बढ़ा। चन्द क़दम चला होगा कि कफ़न से एक बाजू बाहर आया जो मेंहदी अल हसन की तरफ़ बढ़ा। हाथ की हथेली इस तरह आगे हुई जैसे इशारा किया हो कि आगे न आना। मेंहदी अल हसन वहीं रूक गया। रौशनी बुझ गयी। वह इस इन्तज़ार में खड़ा रहा कि रौशनी एक बार फ़िर चमकेगी और उसे कफ़न में लिपटी हुई यह लड़की फिर नज़र आयेगी मगर उसे आवाज़ सुनाई दी।

"तुम पर एतबार कौन करे। चले जाओ–चले जाओ।"

"मुझ पर एतबार करो।" मेंहदी अल हसन ने कहा और आगे दौड़ा। वह पुकारता जा रहा था। मैं तुम्हारी ख़ातिर आया हूँ। मेरे क़रीब आओ।"

वह सुरंग के दहाने पर जा रूका। उसे सुरंग के अन्दर से अवाज़ सुनाई दी–"कल आना। चले जाओ। तुम फ़ानी दुनिया के इन्सान हो। तुम्हारे वादे भी फ़ानी हैं।"

मेंहदी अल हसन सुरंग के अन्दर चला गया और आगे ही आगे चलता गया। उसे सुरंग का दूसरा दहाना दिखाई दिया। सुरंग के अन्दर बाहर की निस्बत तारीकी कम थी इसलिए सुरंग का दहाना नज़र आ रहा था। सुरमयी रौशनी में एक लम्बूतरा साया दिखाई दिया जो फ़ौरन ग़ायब हो गया। यह कफ़न में लिपटी हुई लड़की के जैसा था। मेंहदी अल हसन दौड़ पड़ा। ठोकर खाकर गिरा और उठकर फ़िर दौड़ा। अगले दहाने में जाकर उसने आवाज़ें दीं

मगर उसे अपनी ही पुकार की सदाये बाज़गश्त के सिवा कोई जवाब न मिला। रोने की आवज़ भी न उभरी। बदरूह ने उसे न पुकारा। वह मायूस होकर वापस चल पड़ा। अभी वह सुरंग के वस्त ही में था कि उसे सुरंग के सामने वाले दहाने में रौशनी दिखाई दी, मगर उस रौशनी में कफ़न में लिपटी हुई लाश नहीं थी।

रौशनी बुझ गयी। मेंहदी अल हसन सुरंग से निकल गय। उसे सामने ज़रा बायें को बुलन्दी पर रौशनी का धोखा हुआ मगर वह किसी और तरह की रौशनी थी जैसे किसी ने खड्ड में या चट्टान के पीछे आग जला रखी हो। मेंहदी अल हसन ने कुछ सोंचा और उधर को चल पड़ा जिधर से आया था। वह इस पहाड़ी इलाक़े से निकल गया। उसका ऊंट बाहर बंधा था। वह ऊंट पर सवार हुआ और क़ाहिरा की सिम्त रवाना हो गया। उसकी ज़ेहनी कैफ़ियत ऐसी थी जिसमें डर और ख़ौफ़ नहीं था इज़्तराब और हिजान था। वह इन दो रौशनियों के मुतअल्लिक़ सोंच रहा था। एक वह जिसमें कफ़न में लिपटी हुई लाश नज़र आई थी और दूसरी वह जो उसे बुलन्दी पर दिखाई दी थी। बुलन्दी वाली रौशनी आग की थी।

वह अपने ठिकाने पर पहुंच गया। रात बहुत गुज़र गयी थी फिर भी उसे नींद न आई। बार–बार कफ़न में लिपटी हुई लड़की का चेहरा उसके सामने आता था और यह इरादा उसे तड़पा देता कि वह रात वहीं गुज़ारे और इस लड़की को क़रीब से देख कर लौटे।

❖

आदत के मुताबिक़ वह सुबह वक़्त पर उठा। मशीन की तरह रोज़ मर्रा के काम किए। अली बिन सुफ़ियान के पास जाकर नई हिदायात लीं जिस में एक यह थी कि उस इलाक़े में उसकी ड्यूटी ख़त्म कर दी गयी थी। उसे शहर के बारह किसी और जगह जाने को कहा गया।

"मुझे अभी वहीं जाने दें जहाँ इतने दिनों से जा रहा हूँ।" मेंहदी अल हसन ने कहा– "मुझे तवक्क़ो है कि इन पहाड़ियों में मुझे कुछ मिल जाएगा। मैं दो तीन रोज़ बाद आप को बता सकूंगा कि यह इलाक़ा साफ़ है या नहीं।"

अली बिन सुफ़ियान उसके मश्वरों को नज़र अन्दाज़ नहीं क़रता था। वह कोई आम क़िस्म का जासूस नहीं था। इस शोबे का ओहदेदार था और तजुर्बे के लिहाज से वह क़ाबिले एतमाद था। कुछ देर की बहस और ग़ौर व ख़ौज़ के बाद अली बिन सुफ़ियान ने अपने उसी इलाक़े में जाने की इजाज़त दे दी। मेंहदी अल हसन बदरूह से मिले बेग़ैर इस इलाक़े को छोड़ना नहीं चाहता था। यह शायदा पहला मौक़ा था कि उसने फ़र्ज़ पर अपनी ज़ाती ख़्वाहिश को तरजीह दी थी। अली बिन सुफ़ियान को ज़रा सा भी शक होता कि वह किसी और चक्कर में अपनी ड्यूटी बदलने से गुरेज़ कर रहा है तो उसे कभी न जाने देता। एक तजुर्बाकार जासूस और सुराग़रसां अपने आप को ऐसे ख़तरे में डाल रहा था जिसमें उसकी जान ज़ाया हो सकती थी।

मेंहदी अल हसन हकीम के पास गया और उसे रात की वारदात सुनाई। हकीम ने आँखें

बन्द कर ली और मुंह ही मुंह में कुछ बड़बड़ाता रहा। थोड़ी देर बाद उसने आँखे खोलीं और मेंहदी अल हसन की आँखों में झांका।

"आज फिर जाओ।" हकीम ने कहा– "उस पाक जहां की मख़्लूक नापाक दुनिया के किसी इन्सान के करीब आने से डरती है। तुम कोई ऐसी वैसी हरकत न करना। शायद आज भी ज़रा सी देर नज़र आकर वह ग़ायब हो जाए। तुम बेसब्र न हो जाना। वह तुम्हें मिलने को बेताब है। ज़रूर मिलेगी। अगर इस मुलाक़ात में तुम्हारा फ़ायदा न होता तो मैं तुम्हें वहाँ न भेजता। तुम्हारी जान को भी कोई ख़तरा नहीं।"

मेंहदी अल हसन चला गया। उस इलाक़ा में घूमा फिरा। सुरंग के अन्दर गया। दूसरी तरफ़ गया। सुरंग के दहाने से नीचे उतर गया। उसे ज़मीन पर कपड़े की एक पट्टी पड़ी नज़र आई। उसने उठाली। यह निस्फ़ इंच चौड़ी और कोई निस्फ़ गज़ लम्बी होगी। इसे वह देखता रहा और उसे अपने पास रख ली। वह फिर सुरंग में दाख़िल हुआ और बाहर आ गया। उसने उस बुलंदी की तरफ़ देखा जहाँ रात उसे आग का धोखा हुआ था। उधर ढलान थी। वह सुरंग से निकल कर ढलान पर चढ़ने लगा। उसे एक मर्दाना आवाज़ सुनाई दी– "ऊपर न जाना। जिसके लिए तुम आये हो वह तुम्हे रात को मिलेगी।" यह आवाज़ गूंज बनकर बार–बार सुनाई देने लगी।

"हमारी दुनिया में आकर खोज न लगाओ।" वही आवाज़ फिर सुनाई दी।

मेंहदी अल हसन रुक गया। उसे ऐसे महसूस होने लगा जैसे यह आवाज़ उसके इर्द गिर्द घूम रही है। वह ऊपर न गया। हैरतज़दा होकर इधर उधर देखता रहा। उसने सोंचा कि वह कोई ऐसी हरकत न कर बैठे जिससे यहाँ की कोई बदरूह उसे नुकसान पहुंचा दे। वह इस जगह से बाहर चला गया और एक जगह बैठकर सोंचने लगा कि इस जगह की हक़ीक़त क्या है। दिन इसी सोंच में गुज़र गया और वह रात को यहीं वापस आने के लिए चला गया।

❖

सूरज ग़ुरूब होने के बाद जब वह इस पहाड़ी ख़ित्ते में जाने लगा तो वही भेस बदला जिस में वह वहाँ जाया करता था। दिन के वक़्त जब वह ड्यूटी पर जाताथा तो अपना लम्बा ख़ंजर साथ ले जाता था। हकीम ने उसे बड़ी सख़्ती से कहा था कि वह रात का जब बदरूह से मिलने जाये तो अपने साथ कोई हथियार न ले जाए। गुज़िश्ता रात वह ख़ंजर अपने साथ नहीं ले गया था। अब शाम को वह बदरूह की मुलाक़ात के लिए जा रहा था। उसने गड़ेरियों का भेस बदल लिया। ख़ंजर दिवार के साथ लटक रहा था। उसने ख़ंजर को देखा और गहरी सोंच में खो गया। हिदायत के मुताबिक़ उसे ख़ंजर साथ नहीं ले जाना था लेकिन उसने गहरी सोंच से बेदार होकर ख़ंजर दिवार से उतार लिया। अपने कपड़ों के अन्दर कमर के साथ बांध लिया और बाहर निकल गया।

उस जगह पहुंच कर उसने ऊंट को बैठा दिया और उस जगह चला गया जहाँ से सुरंग का दहाना नज़र आता था। उसे अपने अक़ब में किसी के क़दमों की आवाज़ सुनाई दी जो फ़ौरन ख़ामोश हो गयी। उसके फ़ौरन बाद ऊपर से पत्थर लुढ़कने की आवाज़ आई जो ऐसी

बुलन्द तो नहीं थी, लेकिन ऐसे सकूत और ऐसी वादियों में जो उमूमी पहाड़ियों में घिरी हुई थीं, यह आवाज़ लुढ़कते पत्थर के साकिन हो जाने के बाद भी सुनाई देती रही फिर ऐसी गूंज बनकर फ़िज़ा में तैरने लगी जैसे कोई सिस्कियां और हिचकियां ले रहा हो। ज़रा और वक़्त गुज़रा तो मेंहदी अल हसन को रोने की आवाज़ सुनाई दीं।

"मेरे सामने आओ।" मेंहदी अल हसन ने बुलन्द आवाज़ से कहा– "मेरी दुनिया नापाक है, मैं नापाक नहीं हूं।"

"तुम मुझे फिर छोड़कर चले जाओगे।" यह निस्वानी आवाज़ कहीं क़रीब से आई।

मेंहदी अल हसन की आवाज़ और यह निस्वानी आवाज़ें यूं बार–बार सुनाई देने लगी जैसे एक दूसरे के तआक्कुब में दौड़ रही हों। रौशनी चमकी और बुझ गयी जिस से मेंहदी अल हसन को सुरंग का दहाना नज़र आया। वह दबे पांव तेज़ क़दम आगे चला गया और सुरंग के दहाने से ज़रा नीचे एक बड़े पत्थर के पीछे छुप गया। उसने उधर ऊपर देखा जहाँ गुज़िश्ता रात उसे आग का धोखा हुआ था। वह धोखा आज भी मौजूद था। सुरंग का दहाना बुलन्द था। वह पेट के बल सरकता ऊपर चला गया और वह चन्द लम्हों बाद दहाने के अन्दर था। वहाँ से उसने छुप कर इधर उधर देखा जिधर से उसे आग का धोखा नज़र आया था। अब चूंकि वह ख़ुद भी बुलन्दी पर था इसलिए उसे वहाँ आग की ऐसी रौशनी दिखाई दी जिसका शोला कहीं छुपा हुआ था।

उसे सुरंग के अन्दर से किसी औरत की आवाज़ सुनाई दी– "दो हज़ार साल से तुम्हारी राह देख रही हूं। आगे आओ।"

मेंहदी अल हसन सुरंग की दिवार के साथ–साथ अन्दर को चल पड़ा। उसे ख़्याल आया कि हकीम ने उसे कहा था कि अपने साथ कोई हथियार न ले जाना वरना उस लड़की की रूह सामने नहीं आयेगी। उसके पास डेढ़ फिट लम्बा खंज़रथा और बदरूह बोल रही थी। वह आगे चला गया और सुरंग के वस्त में पहुंच गया। सुरंग फराख़ थी। उसे कोई आता महसूस हुआ। वह दिवार के साथ लगकर बैठ गया। उसके क़रीब से कोई गुज़रने लगा। इतने घुप अंधेरे में भी उसने अन्दाज़ा लगा लिय कि यह वही लड़की है और यह कफ़न में लिपटी हुई है। लड़की रूक गयी और उसने रोने की आवाज़ निकाली। मेंहदी अल हसन ने यह आवाज़ पहले कई बार सुनी थी। उसका दिल बहुत ज़ोर–ज़ोर से धड़कने लगा।

कफ़न में लिपटी हुई लाश आगे को सरकी। ऐन उस वक़्त दहाने पर रौशनी चमकी और बुझ गयी। मेंहद अल हसन उठा और बिजली की तेज़ी से पीछे से लाश को दबोच लिया। लाश की आवाज़ सुनाई दी– "कम्बख़्त, तुम्हें किस वक़्त मज़ाक़ सुझा है। छोड़ो मुझे। शिकार इन्तज़ार में खड़ा है।"

मेंहदी अल हसन ने जिस शक मे जान की बाज़ी लगाकर उसे पकड़ा था वह शक सही साबित हुआ। उसने सोंच लिया था कि यह बदरूह हुई तो उसके हाथ नहीं आयेगी और उसकी जान निकाल लेगी और अगर यह कोई धोखा हुआ तो उसे बड़ा मोटा शिकार मिल जायेगा।

कफन में लिपटी हुई इस औरत की आवाज़ सुनते ही मेंहदी अल हसन सरगोशी में बोला– "ऊंची आवाज़ निकाली तो खंज़र एक पहलू में घोंप कर दूसरे पहलू से निकाल दूंगा।"

"मैं तुम्हारा दिल और कलेजा मुंह के रास्ते निकालकर खा जाऊंगी।" औरत ने कहा– "मैं रूह हूं।"

मेंहदी अल हसन ने उसे एक बाज़ू से दबोचे रखा और दूसरे हाथ से ख़ंजर निकाल कर उसकी नोक औरत के पहलू में रख दी। सुरंग के सामने वाले दहाने पर एक बार फिर रौशनी चमकी। मेंहदी अल हसन का उधर जाना पुर ख़तर था।

"मैं इसीलिए तुम्हें अपने क़रीब नहीं आने देती थी कि तुम फ़रेबी और फानी दुनिया के इन्सान हो।" औरत ने रूंधी हुई और असर अंगेज़ आवाज़ में कहा– "दो हज़ार साल से तुम्हारी राह देख रही हूं।"

"तुम्हारा इन्तज़ार ख़त्म हो गया है।" मेंहदी अल हसन ने कहा– "अब तुम रूहों की पाक दुनिया में वापस नहीं जाओगी। तुम अब मेरी नापाक दुनिया की औरत हो।"

"मैं औरत नहीं।" उसने कहा– "मैं जवान लड़की हूँ।" मैं हसीन लड़की हूँ। मैं ऊंचा नहीं बोलूंगी मेरी बात ग़ौर से सुन लो। मैं जानती हूँ कि तुम कौन हो और यहाँ क्यों आये हो। तुम मुझे इतने अच्छे लगते हो कि मैंने तुम्हें हासिल करने का फैसला कर लिया और यह तरीका इख़्तियार किया है।"

"तो मेरे साथ चलो।" मेंहदी अल हसन ने कहा।

"नहीं।" लड़की ने कहा– "तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हारे साथ गयी तो हम दोनों भूखे मरेंगे। तुम मेरे साथ आये तो फ़िरऔनों का खज़ाना हमारा होगा। फिर तुम्हें वीरानों में भटकते फिरने और थोड़ी सी तन्ख़्वाह के एवज़ जासूसी करते फिरने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

"तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

"ख़ज़ाना निकाल रहे हैं।" लड़की ने कहा– "मैं बहुत से आदमियों के साथ हूँ।"

"वह सब कहाँ हैं?"

"मेरे साथ चलो। सब तुम्हारा इस्तक़बाल करेंगे।" लड़की ने कहा– "मुझे रौशनी में देखोगे तो ख़ज़ानों को और अपनी दुनिया को भूल जाओगे।"

मेंहदी अल हसन जो ख़ुश्बू उस लड़की की जिस्म से सूंघ रहा था वह उस पर ख़ुमार तारी कर रही थी। उसने इस लड़की को जब अपने बाज़ूओं में दबोचा था तो उसने महसूस कर लिया था कि यह जिस्म ईमान खरीदने का असर रखता है। लड़की की आवाज़ में तरन्नुम था। उस पर नशा तारी होता चला था। उस लम्हें सुरंग के दहाने पर रौशनी फिर चमकी। मेंहदी अल हसन बेदार हो गया उसने लड़की से यह पूछना मुनासिब न समझा कि उसके आदमी सुरंगके पीछे हैं या नहीं। सामने के दहाने की तरफ वह नहीं जाना चाहता था क्योंकि उधर के मुतअल्लिक़ उसे यक़ीन था कि उधर आदमी होंगे और रौशनी का इन्तज़ाम तो उधर था ही।

"उठो।" उसने लड़की को उठाया और कहा– "कफ़न उतार दो।"

लड़की ने कफ़न उतार दिया। मेंहदी अल हसन ने कफ़न से लम्बी और चौड़ी पट्टियां फाड़ीं। एक से लड़की के हाथ पीठ के पीछे बांध दिये। दूसरी पट्टी से उसकी टांगे टख़्नों के करीब से बांधीं। तीसरी पट्टी उसके मुंह पर बांधकर उसे कंधे पर डाल लिया। ख़ंजर हाथ में रखा और वह सुरंग के पीछले दहाने की तरफ़ चल पड़ा। उसे वहँ से बहुत जल्दी निकलना था।

❖

गुज़िश्ता रात जब मेंहदी अल हसन यहाँ आया था तो वह बदरूह से ही मिलने आया था। सुरंग के दहाने पर वह रौशनी की चमक में उसे नज़र आई और ग़ायब हो गयी थी। मेंहदी ने दहाने पर जाकर एक तो दहाने के सामने बुलन्दी पर रौशनी सी देखी थी और फिर वह सुरंग के अन्दर गया तो उसने दूसरे दहाने में से एक साया सा बाहर जाते देखा था। दिन के वक़्त वह फिर सुरंग में से गुज़र कर दूसरी तरफ गया तो उसे कपड़ों की एक बारीक सी पट्टी ज़मीन पर पड़ी नज़र आई थी। उसे यह पट्टी देखते ही याद आ गया कि मैय्यत पर कफ़न ऐसी ही पट्टियों से बांधा जाता है। वह चूंकि अली बिन सुफ़ियान का तरबियतयाफ्ता था इसलिए वह ज़रा–ज़रा सी चीज़ों और लतीफ से इशारों को बहुत अहमियत दे रहा था। वह जब आज रात बदरूह की मुलाक़ात के लिए चला था तो उसने हकीम के मना करने के बावजूद ख़ंजर साथ ले लिया था। यह आज़माईश का एक तरीक़ा था। ख़ंजर के बावजूद बदरूह आ गयी।

उसने दिलेरी यह की कि आज दहाने पर रौशनी नज़र आते ही वह दहाने में चला गया और वहाँ से उसने बुलन्दी पर देखा। वहां आग का छुपा हुआ शोला था। दहाने पर चमक वही से आती थी। मेंहदी अल हसन को दो वाक़िआत याद आ गये। सलीबियों के एजेंटों ने मिस्र के ऐसे ही पहाड़ी इलाक़ों में मिस्र के देहातियों को तौहुम में उलझाने और उन्हें असर में लेने के लिए यह तरीक़ा इख़्तियार किया था कि एक पहाड़ी पर बड़े शोले वाला मशाल जलाकर छिपा रखी थी उसके सामने लकड़ी का ऐसा तख़्ता रखते थे जिस पर अभरक चिपका हुआ था। दूसरे वाकिआ में चमकती धातू की चादर इस्तेमाल की गयी थी। अभरक या धातु की चमक सामने वाली पहाड़ी पर पड़ती थी। मशाल और चादर के दर्मियान एक और तख़्ता रखते तो चमक बुझ जाती थी। यह मशाल और चमकती चादर ऐसी जगह रखी जाती जहाँ से यह लोगों को नज़र नहीं आती थीं।

इन दोनों वारदातों में सलीबी ऐजेंट पकड़े गये और उनका यह तरीक़ा बेनक़ाब हो गया था वरना सीधे सादे लोग उसे ग़ैब की चमक समझतेथे। इन दोनों वारदातों पर छापा मारनेवालों में मेंहदी अल हसन भी था। वह समझ गया कि सुरंग के बिल्कुल बिल्मुक़ाबिल पहाड़ी पर जो आग का धोखा सा होता है वह मशाल छुपी हुई है और सुरंग के दहाने पर उसी की चमक फेंकी जाती है।

उसे ट्रेनिंग के दौरान बताया गया था कि जो इन्सान मर जाता है वह हमेंशा के लिए

इसदुनिया से तअल्लुक तोड़ जाता है। ख़ुदा उसकी रूह को यूं भटकने के लिए नहीं छोड़ देता कि वह इन्सानों के पीछे दौड़ती फिरे। जो मर जाते हैं वह न जिस्मानी तौर पर वापस आते है न रूह या बदरूह की शकल में। मेंहदी अल हसन के ट्रेनिंग में यह अटल हकीकत ज़ेहन नशीन कराई गयी थी कि इन्सान को ख़ुदा ने इतनी ज़्यादा जिस्मानी और रूहानी कुव्वत अता की है जो पहाड़ों को रेज़ा–रेज़ा कर सकती है। ईमान जितना मज़बूत होगा यह कुव्वत इतनी ही ज़्यादा होगी। जिन्नात और भूत और चुड़ैलें इन्सान के अपने ज़ेहन की तख़्लीक़ है। सलीबी हमारा ईमान कमज़ोर करने के लिए हम पर वाहमे और तौहुमात तारी कर रहे हैं।

यह सबक़ कौम के हर फर्द को मिलना चाहिए था लेकिन यह मुम्किन न था। सुल्तान अय्यूबी ने लड़ाका जासूसों (कमाण्डोज़) के जो दस्ते तैय्यार किये थे उन्हें बड़ी काविश से ज़ेहन नशीन कराया गया था कि ईमान की कुव्वत क्या होती है। उन्हें तौहुमात से दूर रखा गया था। उन्हें अमली सबक़ भी दिए गये थे।

"सलीबियों ने तुम्हारे सामने हज़रत ईसा को ज़मीन पर उतारा था।" मेंहदी अल हसन को अली बिन सुफ़ियान का एक सबक़ याद आ गया था। "तुम्हारे सामने ख़ुदा को भी उन्होंने ज़मीन पर उतारा था। वह बद रूहों को भी लाये। तुमने यह फ़रेबकारी अपने आखों से देखी थी और यह भी देखा था कि यह फ़रेबकारी कैसी कारीगरी से जा की रही थी। तुम ने अपनी आँखों देखा है कि यह शोअबदाबाज़ी थी। यह इस्लामी नज़रियात को मजरूह और मस्ख़ करने की कोशिशें थीं जो तुम ने नाकाम कीं। ख़ुदा पहले ही ज़मीन पर मौजूद है। क़ुर्आन का फरमान है कि कोई पैगम्बर वापस नहीं आयेगा। रसूले अकरम सल्ल0 के बाद यह सिलसिला ख़त्म हो गया है। ख़ुदाये ज़ुलजलाल ने हमें अपना नूर दिखा दिया है। सलीबी इस कोशिश में मसरूफ हैं कि मुसलमानों के सीने में अल्लाह, रसूल सल्ल0 का यह नूर बुझ जाए।"

सुल्तान अय्यूबी ने अपनी फौज में और ख़ुसूसन अपने जांबाज़ दस्तों के दिलों में यह उसूल पेवस्त कर रखा था– "अल्लाह के नाम पर तुम जो भी ख़तरा मोल लोगे वह तुम्हारे लिए ख़तरा नहीं रहेगा क्योंकि तुम्हें ख़ुदा की ख़ुश्नूदी और मदद हासिल होगी। अगर आज तुम तौहुम परस्ती का शिकार हो गये तो तुम्हारी अगली नस्ल का ईमान इतना कमज़ोर होगा कि कुफ़्र के आगे हथियार डाल देगी।"

ऐसे ही कुछ और सबक़ थे जो मेंहदी अल हसन को याद आ गये थे। उसे अपनी अहमियत का भी एहसास हो गया था। जैसा कि बताया जा चुका है कि वह मामूली ओहदे या दरजे का जासूस नहीं था। उसकी क़ाबिलियत और तजुर्बा भी ग़ैर मामूली था। दुश्मन के तख़रीब कार उसे क़त्ल कर सकते थे। इसी इलाके में उसे दूर से तीर मार सकते थे लेकिन उस के पाये के जासूसों को दुश्मन जिन्दा पकड़ने या अपने जाल में फांस कर उसपर अपना तिलिस्म तारी करने की कोशिश करता था। सलीबियों और हशीशीन के पास ऐसे तरीक़े थे जिन से वह किसी भी इन्सान के ज़ेहन पर क़ब्ज़ा करके उसे अपने हक़ में इस्तेमाल कर सकते थे। मेंहदी अल हसन उनके काम का इन्सान था। यह ज़रूरी नहीं था कि उन्होंने सिर्फ उसको

पकड़ने के लिए इस पहाड़ी इलाके में यह ढोंग रचाया था। इस इलाके में किसी जगह उन्होंने अपना अड्डा बना रखा था। मेंहदी अल हसन को उन्होंने गडेरिए के रूप में पहचान लिया था। चुनांचे उसे फांसने का यह तरीका इख़्तियार किया गया था।

❖

मेंहदी अल हसन लड़की के हाथ पांव बांध कर उसे कंधे पर उठाये सुरंग के दूसरे दहाने की तरफ़ जा रहा था। उसे सारे सबक़ याद आ गये थे और उसके गिर्द सुल्तान अय्यूबी की आवाज़ गूंज रही थी– "जिस तरह एक ग़द्दार पूरी कौम को ज़िल्लत व रूसवाई में डाल सकता है, इसी तरह एक हुर्रीयत पसन्द जांबाज़ पूरी कौम को बड़े से बड़े ख़तरे से बचा सकता है।"

मेंहदी अलहसन के दिल में यह एहसास एक बड़ा ही मज़बूत जज़्बा बनकर बेदार हो गया कि उसकी क़ौम जो गहरी नींद सो रही है वह उसी के भरोसे पर सो रही है। वह जासूसों की ज़मीनदोज़ जंग का जांबाज़ था। उसे मालूम था कि कौम बहुत बड़े लश्कर और घोड़सवारों के तूफान का और तीरों की बौछारों का मुक़ाबला कर सकती है लेकिन दुश्मन के जासूसों और तख़रीबकारों का मुकाबिला सिर्फ एक या दो जासूस ही कर सकते हैं। मेंहदी अल हसन मिस्र और अपनी कौम का वाहिद पांसबां और सलामती का ज़ामिन बन गया मगर एक सवाल उसे परेशान कर रहा था– "क्या हकीम भी दुश्मन के तख़रीबकारों के गिरोह का फ़र्द है?"

उसका ज़ेहन तस्लीम करने पर अमादा नहीं था कि इतना आलिम, मुअज़्ज़िज़ और साहबे हैसियत तबीब जिस की इज़्ज़त हुक्कामे बाला भी करते थे दुश्मन का साथी हो सकता है। उसे याद आया कि उसे जो सबक़ दिए गये थे और उसके अपने जो तजुर्बे और मुशाहिदे थे उनसे उस पर यह हक़ीक़त वाज़ेह हुई थी कि ईमान फरोशी का ओहदे और रूत्बे के साथ कोई तअल्लुक नहीं। उसने देखा यह था कि ईमान का सौदा उमूमन ऊंचे रूत्बे के लोग करते हैं और ज़्यादा बड़ा बनने के लालच में आकर बाज़ इन्सान ईमान गिरवी रख देते हैं।

उसके सामने अब मसला यह था कि लड़की को साथ लेकर वह किस तरफ़ से बाहर निकले और अपने ऊंट तक पहुंचे। लड़की से इसलिए रहनुमाई नहीं लेना चाहता था कि वह उसे ग़लत रास्ते पर डाल कर किसी और जाल में फांस सकती है। वह जिस रास्ते से आया था उस रास्ते को वह अब मसदूद समझता था। रौशनी फेंकने वालों ने दहाने पर दो तीन बार रौशनी फेंकी थी मगर लड़की को मेंहदी अल हसन ने सुरंग में दबोच रखा था। लड़की की वह आवाज़ भी बन्द हो गयी थी जो मेंहदी अल हसन को बदरूह का तास्सुर देती थी। इन हालात में उसे यह ख़तरा नज़र आ रहा था कि उधर इस गिरोह के आदमी नीचे उतर आये होंगे। सुरंग की दूसरी तरफ़ उसे मालूम नहीं था कि किसी तरफ से बाहर जाने का रास्ता है या नहीं।

वह लड़की को उठाये सुरंग से बाहर निकल गया। एक तरफ़ दहाने से कुछ दूर जाकर उसने लड़की को ज़मीन पर बैठा दिया और उसके मुंह से पट्टी खोल कर कहा– "क्या तुम बताओगी कि मैं किस तरफ से जाऊं जिधर तुम्हारा कोई आदमी न हो?"

"अगर अकेले जाओ तो बता सकती हूँ।"

"तुम मेरे साथ चलोगी।" मेंहदी अल हसन ने कहा– "मुझे फांसने की कोशिश करोगी तो मैं अपने आपको जिन्दा नहीं रहने दूंगा न तुम्हें छोड़ूंगा।"

"मैं तुम्हें वह राज़ बता दूँ जो तुम जानना चाहाते तो अकेले चले जाओगे?"

"मैं वह राज़ जान चुका हूँ।" मेंहदी अल हसन ने कहा–"मुझे रास्ता बताओ।"

"मुझे सिर्फ एक बार रौशनी में देख लो।" लड़की ने कहा–"फिर मुझे अपना समझना। एक बार मेरे साथ चले चलो। मैं तुम्हें धोखा नहीं दे रही।"

लड़की ने मेंहदी अल हसन की मर्दानगी को भड़काने के जतन किये। ज़र व जवाहरात के लालच भी दिए मगर उसे रास्ता न बताया। मेंहदी अल हसन ने पट्टी से उसका मुंह बन्द कर दिया और ख़ुद ही एक महफ़ूज़ रास्ता सोंच लिया। यह रास्ता पहाड़ियों के ऊपर था। उसने लड़की को यहीं बैठे रहने दिया और ऊपर चढ़ने लगा। नीचे किसी की आवाज़ सुनकर वह वहीं दुबक गया। कोई मर्द इस लड़की को पुकार रहा था। मेंहदी अल हसन आहिस्ता–आहिस्ता नीचे आ गया और लड़की के क़रीब एक बड़े पत्थर के पीछे छुप कर बैठ गया। इस आदमी ने लड़की को शायद देख लिया था।

"तुम बोलती क्यों नहीं?" उस आदमी ने पूछा और ऊपर आने लगा। लड़की का मुंह बन्द था। वह आदमी उसके क़रीब आ बैठा और बोला–"क्या हुआ तुम्हें? उधर नहीं गयी?"

मेंहदी अल हसन उसके अक़ब में था। फ़ासिला दो चार क़दम था। उसने उठकर उस आदमी की पीठ में ख़ंजर का भरपूर वार किया। फ़ौरन बाद दूसरा वार किया। जवान आदमी के दोनों वार दूर तक उतर गये। उस आदमी की आवाज़ भी न निकली। मेंहदी अल हसन ने उसे घसीट कर उस पत्थर के नीचे फेंक दिया जिस के पीछे वह छुपा था। उसने लड़की को कंधे पर डाला और पहाड़ी पर चढ़ गया। यह कोई ऊंची पहाड़ी नहीं थी। ऊपर से चौड़ी थी। वह उस पर चलने लगा। उसके लिए आसान तरीक़ा यह था कि रात भर कहीं छुपा रहता और दिन की रौशनी में निकल जाता लेकिन उसकी कोशिश यह थी कि बहुत जल्द क़ाहिरा पहुंच जाए ताकि हकीम की गिरफ़्तारी और इस इलाक़े को मुहासिरे में लेने का इन्तज़ाम सुबह से पहले हो जाए।

उसने इधर उधर देखा जहाँ मशाल की रौशनी थी। अब चूंकि वह ख़ुद बुलन्दी पर था। इसलिए उसे बिल्मुक़ाबिल बुलन्दी पर मशाल नज़र आ रही थी। एक आदमी दोनों हाथों में आइने की तरह चमकती चादर (धातू की या अभरक की) उठाये इधर उधर अक्स मार रहा था। उसके साथ एक और आदमी था। मेंहदी अल हसन के लिए ऊपर ओट थी। वह इसकी मदद से रौशनी से बचता आगे ही आगे बढ़ता गया। हत्ता कि मशाल उसकी नज़रों से ओझल हो गयी।

❖

इसी पहाड़ी ख़ित्ते में दूर अन्दर जहां तक कोई मुसाफ़िर और कोई गड़ेरिया नहीं पहुंच सकता था, एक पहाड़ी के दामने में ग़ार का तंग सा दहाना था। उसके पीछे ग़ार इतना वसीअ

था जो ग़ार नहीं बल्कि बहुत ही कुशादा कमरा था। उसमें बहुत से आदमी बैठे थे। दो लड़कियां भी थीं।

"अब तक उसे वापस आ जाना चाहिए था।" एक आदमी ने कहा।

"आ जाएगी।" एक और ने कहा– "यहाँ कौन सा ख़तरा है। आज वह उसे लेकर ही आयेगी।"

"आदमी काम का है।" एक ने कहा– "कम्बख़्त बहुत तजुर्बाकार है। हम उसे तैय्यार कर लेंगे।"

इतने में एक आदमी दौड़ता अन्दर आया और बोला– "गोपल मरा पड़ा है और लड़की का कुछ पता नहीं चल रहा कहाँ है। गोपल को ख़ंजरों से हलाक किया गया है।"

"वह (मेंहदी अल हसन) कहां है?" किसी ने पूछा।

"कहीं नज़र नहीं आ रहा।" उसे जवाब मिला– "उसका ऊंट यहीं है, वह ख़ुद कहीं नज़र नहीं आ रहा।"

सब बाहर को दो मशालें उठाकर दौड़ पड़े और सुरंग के दहाने तक गये। वहाँ उन के साथी की लाश पड़ी थी। सुरंग में जाकर देखा लड़की का कफ़न पड़ा था। उसके लीडर ने सबसे कहा कि दो आदमी बाहर चले जाओ। अगर बाहर से कोई ख़तरा आये तो इत्तलाअ दो, अगर वह नज़र आये तो उसे पकड़ लो। मुकाबला करे तो मार डालो और बाक़ी आदमी फैल जाओ। वह यहीं कहीं होगा। अगर वह सुबह तक न मिले तो यहां से निकलो।

उस वक़्त मेंहदी अल हसन लड़की को कंधे पर उठाये एक मश्किल में फंसा हुआ था। वह सुरंग वाली पहाड़ी से दूर निकल गया था। आगे पहाड़ी दिवार की तरह हो गयी थी। न दायें ढलान थी न बायें, और यह बुलन्द थी। यह बिल्कुल दिवार थी जिस पर बयेक वक़्त दोनों पांव नहीं रखे जा सकते थे। वह इस पर इस तरह बैठ गया जिस तरह घोड़े पर बैठते हैं। वह आगे को सरकने लगा। लड़की को कांधे पर संभालना और तवाज़ुन कायम रखना मुश्किल हो रहा था। लड़की ने उसके तवाज़ुन को बिगाड़ने के लिए तड़पना शुरू कर दिया। मेंहदी अल हसन को मालूम था कि यहां से गिर तो हड्डियां टूट जायेंगी। इससे उसने अन्दाज़ा लगाया कि यहाँ जो भेद है वह इतना क़ीमती और नाज़ुक है कि यह लड़की उसे छुपाये रखने की खातिर मेंहदी अल हसन को अपने साथ गिराकर ख़ुद भी मरने की कोशिश कर रही है।

यह दिवार ख़त्म होने में नहीं आ रही थी और लड़की उससे संभल नहीं रही थी। उधर लड़की के गिरोह के आदमी तलाश और तअक्कुब में फैल गये थे। उनके लिए यह जिन्दगी और मौत का सवाल था। तख़रीबकारी के अड्डे का पकड़े जाना उनकी शिकस्त थी और उन में से जिन्हें पकड़े जाना था उनके लिए बड़ी ही अज़ीयत नाक मौत थी। मेंहदी अल हसन ने लड़की के गिर्द बाज़ू इस क़दर ज़ोर से लपेट लिया कि उसकी पस्लियां टूटने लगीं। वह तो अपनी रूह की भी ताक़त इस्तेमाल कर रहा था। आख़िर यही ताक़त उसे दिवार से गुज़ार ले गयी। आगे जो चोटी आई वह ख़ासी चौड़ी थी। मेंहदी अल हसन ने लड़की को ज़मीन पर पटख़ दिया और ग़ज़बनाक आवाज़ में बोला– "क्या तुम मेरा रास्ता रोक लोगी? उसने

लड़की को अपने ग़ुस्से का ज़ायका चखाने के लिए दो चार कदम पीठ के बल घसीटा और कहा– "मेरे लिए कोई मुश्किल पैदा की तो मैं तुम्हे इसी तरह घसीट कर ले जाऊंगा। मरती हो तो मर जाओ।"

उसे दूर नीचे एक मशाल दिखाई दी। वह बहुत थक गया था और वह महसूस करने लगा था कि ख़तरे से निकल आया है मगर इस जगह से निकलना अभी टेढ़ा मसला बना हुआ था। उसे बहुत जल्दी काहिरा पहुंचना था। उसने लड़की के पांव खोल दिए। हाथ पीठ पीछे बंधे रहने दिए। उसे आगे कर लिया और ख़ंजर की नोक उसकी पीठ के साथ लगा कर कहा– "चलो, मेरे कहे बग़ैर दायें बायें न घूमना।"

❖

तआक्कुब में जो आदमी निकले थे वह सुरंग में और उसके इर्द गिर्द वादियों में घूम फिर रहे थे। दो आदमी उस जगह जा खड़े हुए जहां से मेंहदी अल हसन अन्दर आता जाता था। मेंहदी अल हसन ढलान में उतरता और चढ़ाइयां चढ़ता एक ऐसी चट्टान पर जा पहुंचा जहाँ आगे कुछ भी नहीं था। उसे यह समझने में कुछ देर न लगी कि नीचे दरिया है और यह दरियाए नील है। उसने लड़की के हाथ भी खोल दिए और मुंह से पट्टी भी उतार दी। चट्टान की ढलान खड़ी थी। लड़की से कहा बैठो और नीचे को सरको।

दोनों सरक कर नीचे गये। पानी की आवाज़ साफ सुनाई देने लगी। चट्टान की ढलान खत्म हो चुकी थी। वह अभी दरिया की सतह से बुलन्द थे। उसने लड़की से कहा कि दरिया में कूदो। लड़की बोली– मैं तैरना नहीं जानती।"

मेंहदी अलहसन ने ख़ंजर नेयाम में डाला और लड़की को अपने बाज़ूओं में ले लिया जैसे बग़लगीर हुआ जाता है। उसने लड़की को मज़बूत गिरफ्त में लिए हुए दरिया में छलांग लगादी। दरिया का रूख़ काहिरा की तरफ़ था। लड़की को उसने दांनिस्ता छोड़ दिया। उसने देखा कि लड़की तैर रही है।

"मुझे मालूम था तुम तैर सकती हो।" मेंहदी अलहसन ने कहा– "तुम्हें हर ढंग सिखाकर हमारे मुल्क में भेजा जाता है। ज़्यादा ज़ोर न लगाओ, दरिया उधर ही जा रहा है जिधर हम जा रहे हैं।"

उनके एक तरफ़ चट्टाने और पहाड़ियां खड़ी थीं। इन्हें तलाश करने वाले इस कोहिसार के दूसरी तरफ भाग दौड़ कर रहे थे। लड़की ने तैरते–तैरते एक बार फिर कोशिश की कि मेंहदी अल हसन को अपने जवान जिस्म का असीर बना ले लेकिन उसने कोई असर न लिया। बहुत दूर आगे जाकर जब मेंहदी अल हसन ने देखा कि वह ख़तरे के इलाक़े से दूर आ गया है, मुंह में दो उंगलिया डालकर ख़ास अन्दाज़ में सीटियां बजायीं। वह तैरता भी गया और वक़्फे–वक़्फे से सीटियां भी बजाता गया। थोड़ी देर बाद उसे दूर से ऐसी ही सीटी सुनाई दी। फिर सीटियों का तबादला हुआ एक कश्ती उनके करीब आ गयी।

मेंहदी अल हसन को मालूम था कि जिस तरह सरहद पर गश्ती संतरी घूमते फिरते रहते हैं उसी तरह दरिया में भी गश्ती पहरा होता है। ख़तरे के वक़्त एक दूसरे को बुलाने के लिए

वह मुंह से उसी तरह सीटी बजाया करते थे। यह कश्ती गश्ती संतरियों की थी। मेंहदी अल हसन ने अपना तआरुफ कराया। संतरियों ने उसे और लड़की को कश्ती में बैठा लिया।

❖

अली बिन सुफ़ियान गहरी नींद सोया हुआ था। उसे मुलाज़िम ने जगाया और बताया कि मेंहदी अल हसन नाम का एक आदमी एक लड़की को साथ लेकर आया है। मेंहदी अल हसन का नाम ही काफी था। अली बिन सुफ़ियान उचक कर उठा और बाहर को दौड़ा मेंहदी अल हसन और लड़की के कपड़ों से पानी टपक रहा था। दोनों को कमरे में बैठाया। कंदीलें जल रही थी मेंहदी अल हसन ने पहली बार लड़की का चेहरा देखा और सोंचा कि लड़की ने ठीक कहा था कि मुझे रौशनी में देखोगे तो सब कुछ भूल जाओगे।"

मेंहदी अल हसन ने हकीम का नाम लेकर कहा– "उसके घर फ़ौरन छापामारे।"

"मेंहदी!" अली बिन सुफ़ियान ने हैरतज़दा होकर पूछा–"किस की बात कर रहे हो?"

"क्या ईमानफ़रोशी कोई नयी ख़बर है?" मेंहदी अल हसन ने कहा और लड़की से पूछा–"हकीम तुम्हारा साथी है ना? यहाँ झूठ बोलोगी तो अन्जाम बड़ा ही भयानक होगा।"

लड़की ने सर झुका लिया। अली बिन सुफ़ियान ने उसके भीगे हुए सर पर हाथ रखकर कहा– "यहाँ तुम्हारे साथ वह सलूक नहीं होगा जो तुम सोंच रही हो। तुम्हारे हुस्न और जवानी के लिए हम पत्थर हैं और जब हम बेबस औरत की इज़्ज़त करने पर आते हैं तो हम रेशम की तरह मुलायम और नर्म हैं.....हकीम तुम्हारा साथी है?"

लड़की ने इस्बात में सर हिलाया।

मेंहदी अल हसन ने निहायत मुख़्तसर तौर पर सुनाया कि वह क्या देखकर आया है और हकीम ने उसे बदरूह का किस तरह झांसा दिया था।

अली बिन सुफ़ियान ने मुलाज़िम और अपने मुहाफ़िज़ों को बुलाया और उन्हें मुख़्तलिफ़ कमानदारों की तरफ पैग़ामात देकर दौड़ा दिया। कोतवाल ग़यास बलबीस को भी बुलवा लिया। उसने इस किस्म के हंगामी हालात के लिए ज़्यादा नफरी का एक दस्ता तैय्यार कर रखा था जो चन्द मिनटों में कार्रवाई के लिए तैय्यार हो जाता था। मेंहदी अल हसन की रिपोर्ट पर दस्ता फ़ौरन तैय्यार हो गया। अली बिन सुफ़ियान ने ग़यास बलबीस के सुपुर्द यह काम किया कि हकीम के घर छापा मारे और उसे गिरफ्तार करके उसके मकान और दवाई खाने को सरबमुहर कर दे। उसने ख़ुद सवारों को साथ लिया। एक घोड़े पर मेंहदी अल हसन को दूसरे पर लड़की को बैठाया और वारदात वाले इलाके को रवाना हो गया।

वह जगह बहुत दूर नहीं थी। लड़की के गिरोह के आदमी उस वक़्त तक तलाश से मायूस हो चुके थे। उन्होंने थक हार कर फैसला कर लिया कि वहाँ से निकल भागें। उन्हें ख़दशा यह था लड़की अगर काहिरा पहुंच गयी तो वह निशानदेही कर देगी। गिरोह में इख़्तिलाफ पैदा हो गया। कुछ आदमी कहते थे कि मेंहदी अल हसन का ऊंट यहीं है। वह अगर निकल गया है तो इतनी जल्दी क़ाहिरा नहीं पहुंच सकेगा। इस कशमकश में उन्होंने वहाँ से भागने में वक़्त ज़ाया कर दिया। आख़िर वह अपना सामान समेट कर ग़ार नुमा कमरे से निकले मगर

उन्हें घोड़ों के कदमों के धमाके सुनाई देने लगे। बाहर निकलने का रास्ता बन्द हो चुका था।

अली बिन सुफ़ियान के सवारों ने मशाले जला लीं और वादियों में फैल गये। लड़की को साथ रखा गया था। उसने बताया कि उसका गिरोह कहाँ रहता है। वहाँ गये तो ग़ार के अन्दर से चार पांच आदमी पकड़े गये। अन्दर मुख़्तलिफ़ किस्म के सामान के अंबार थे जिन में आतिशगीर मादा, तीर व कमान और खंज़र थे और एक मज़बूत बॉक्स में सोने और चांदी के वह सिक्के थे जो मिस्र में राइज थे। उन आदमियों में सिर्फ एक सलीबी था बाकी काहिरा के मुसलमान थे। उनके निशानदेही पर गिरोह के दूसरे अफराद की तलाश शुरू हुई। सारी रात और अगला पूरा दिन तलाश जारी रही जिसके नतीजे में बाकी अफराद भी पकड़े गये जिनमें दो ऐसी लड़कियाँ थीं जैसी मेंहदी अल हसन ने पकड़ी थी।

❖

उधर काहिरा में हकीम के घर को घेरे में लेकर उस के दरवाज़े पर दस्तक दी गयी तो वह दरवाज़ा एक मुलाज़िम ने खोला। ग़यास बलबीस अपने चन्द एक आदमियों के साथ अन्दर चला गया। उसके आदमी कमरो में घुस गये। उनके हाथों में मशाले थीं। हकीम का सोने का कमरा अन्दर से बन्द था। दरवाज़ा एक नीम बरहना लड़की ने खोला। हकीम पलंग पर नीम बरहना पड़ा था। पलंग के करीब सुराही और प्याले रखे थे। हकीम नशे की हालत में बेहोश पड़ा था। उसके मरीज़ और मोअतकिद तसव्वुर भी नहीं कर सकते थे कि हकीम इस हालत तक भी पहुंच सकता है। लड़की उसकी बीवी नहीं थी, और मुसलमान भी नहीं थी। यह सलीबियों का भेजा हुआ तोहफ़ा था, और उसके घर से जो दौलत बरामद हुई वह यकीनन हिकमत की आमदनी नहीं थी।

हकीम उस वक़्त होश में आया जब कैदखाने के तहखाने में बन्द हुआ था। ग़यास बलबीस को इत्तलाअ दी गयी कि हकीम बेदार हो गया है। वह हकीम के पास गया और उसे कहा कि वह अब कुछ भी छुपाने की कोशिश न करे। ज़रा सी पस व पेश के बाद उसने अपने जुर्म का एतराफ कर लिया। उसने दो नायब सालारो के नाम लेकर बताया कि वह मिस्र में सुल्तान अय्यूबी का तख़्ता उलटना चाहते हैं। यह गिरोह सलीबियों ने तैय्यार किया था। हकीम को यह लड़की तोहफे के तौर पर और बेअन्दाज़ रकम देकर इस गिरोह में शामिल किया गया था। उसकी यह शर्त भी थी कि नयी हुकूमत में उसे वज़ारत के दरजे का ओहदा दिया जाएगा। हकीम चूंकि बड़े-बड़े अफसरों में भी मकबूल था और वह काबिल हकीम भी था इस लिए उसकी हर बात बरहक मानी जाती थी। इस मकबूलियत और असर रसूख़ से यह फ़ायदा उठाता रहा कि सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ नफ़रत फैलाता रहा।

काहिरा में जो तख़रीबकारी के वाकिआत हुए थे, इनमें हकीम ज़िम्मेदारी से मुलव्विस था। उसने अपनी हैसियत और मकबूलियत से यह फायदा भी उठाया था कि अली बिन सुफ़ियान के बाज़ जासूसों को पहचान लिया था। उनमें मेंहदी अल हसन भी था जो उस पहाड़ी इलाके मेंजाने लगा जिस में तख़रीकारों का अड्डा था। पहले यह फैसला किया गया कि उसे कत्ल कर दिया जाए। हकीम ने उसे देख लिया। इत्तफ़ाक से हकीम ने मेंहदी अल

हसन के मुतअल्लिक भी मालूम कर रखा था कि काबिल और जुर्रतमन्द जासूस है। हकीम ने फैसला किया कि इतने तजुर्बाकार आदमी को कत्ल करने की बजाए ऐसे तरीके से अपने जाल में फांसा जाए कि वह इस गिरोह के लिए काम करे। गिरोह के पास ऐसे तरीके मौजूद थे। वह चन्द एक मिस्री जासूसों को अपने हाथ में ले कर इस्तेमाल कर रहे थे। अली बिन सुफियान का शेबा उन्हें अपने दियानतदार जासूस समझता था।

हकीम ने मेंहदी अल हसन को फांसने का यह तरीका इख़्तियार किया जो सुनाया जा चुका है। उसे पूरा यकीन था कि मेंहदी अल हसन इतनी हसीन बदरूह के झांसे में आ जाएगा। आगे हशीशीन और सलीबी माहिरीन उसके ज़ेहन को अपने कब्ज़े में ले लेंगे। यह कोई मुश्किल काम नहीं था और जो तरीका इख़्तियार किया गया था वह कोई अजूबा नहीं था। यह एक आम तरीका था। यह तरीका और यह शोअब्दाबाज़ी सिर्फ उन पर कामयाब नहीं होती थी जिनका ईमान मजबूत होता था। मेंहदी अल हसन उन्हीं ईमान वालों में से निकला।

जो कमानदार पुरअसरार तौर पर मर गये थे, उनके मुतअल्लिक हकीम ने बताया कि उन्हें कत्ल किया गया था। दोनों को हकीम ने ज़हर दिया था जिससे ज़र्रा भर भी तल्ख़ी महसूस नहीं होती थी। इन्सान अपने अन्दर कोई तकलीफ या तबदीली महसूस नहीं करता था, और बारह घंटो बाद अचानक मर जाता था। इन दोनों को कत्ल करने की ज़रूरत यह पेश आई थी कि सुल्तान अय्यूबी और उसकी हुकूमत के वफ़ादार थे। दीनदार मुसलमान थे। उन्हें खरीदने की कोशिश की गयी थी मगर वह ईमान बेचने की बजाए ईमान खरीदने वालों के लिए खतरा बन गये थे। हकीम पहले इनमें से एक को इस तरह मिला जैसे इत्फाकिया आमना समना हो गया हो। बातों–बातों में हकीम उसे बीमारी के वहम में मुब्तिला किया और दवाई खाने में बुलाकर उसे दवाई के बहाने ज़हर दे दिया। जो हशीशीन की इजाद था। चन्द दिनों बाद दूसरे कमानदार के साथ भी हकीम ने ऐसी ही 'इत्तफाकिया' मुलाकात की और उसे भी किसी ख़ुफिया बीमारी के वहम में डालकर ज़हर दे दिया।

हकीम ने यह इन्कशाफ़ अज़ ख़ुद ही नहीं कर दिए थे। उसकी ज़ुबान तहख़ानों की अज़ीयतों ने खुलवाई थी। उसने बताया कि फौज में एक तरफ़ तो बेइत्मीनानी फैलाई जा रही है और दूसरी तरफ उसमें नशे और जिन्सी लज़्ज़त परस्ती की आदत पैदा की जा रही है। फौजी अफ़सरों को हुकूमत के खिलाफ़ किया जा रहा है और जो मज़बूत जज़्बे वाले हैं उन्हें पुरअसरार तरीके से कत्ल करने का सिलसिला शुरू कर दिया गया है। सूडान की फौज अन्क़रीब मिस्र की सरहदों पर मिस्र की सरहदी चौकियों पर हम्लो का सिलसिला शुरू करने वाली है। इस सिलसिले की निगरानी और कयादत सलीबी करेंगे। सरहदी देहातो के लोगों को सूडानी अपने ज़ेरे असर लेंगे।

अली बिन सुफ़ियान और ग़यास बलबीस ने मिस्र के कायम मुकाम अमीर अलआदिल को इन गिरफ्तारियों, तफ़तीश और इन्कशाफात से बाख़बर रखा लेकिन और किसी को इस राज़ में शरीक नही किया गया। हकीम और उसके दूसरे साथियों ने जिन नायब सालारों और दिगर ओहदों के अफ़राद के नाम बताये थे, उन्हें गिरफ्तार करना ज़रूरी था लेकिन अल

आदिल (सुल्तान अय्यूबी का भाई) घबरा गया। उसने इस राज़ को राज़ रखने का हुक्म दिया और कहा कि यह सूरते हाल इतनी नाज़ुक है कि उसे सुल्तान अय्यूबी ख़ुद ही आकर संभाले तो ज़्यादा बेहतर है। मामिला बड़ा ही नाज़ुक था। उसने यह फ़ैसला किया कि वह सुल्तान अय्यूबी के पास ख़ुद जाने और उसे मिस्र आने के कहे या उससे हिदायत लेले।

अल आदिल की रवानानगी ख़ुफ़िया रखी गयी। तमाम मुश्तबह नायब सालारों वग़ैरह के साथ एक–एक जासूस साये की तरह लगा दिया गया।

❖

"मैं कोई नयी ख़बर नहीं सुन रहा।" शाम में हलब के क़रीब अपने हैडक्वार्टर में अल आदिल से सारी बात सुनकर सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मैं कह नहीं सकता कि क़ौम में ईमान फ़रोशी का जो मर्ज़ पैदा हो गया है उसका क्या इलाज होगा। मेरी नज़रें बैतुल मुक़द्दस पर नहीं यूरोप पर लगी हुई हैं मगर मेरे ईमान फ़रोश भाई मुझे मिस्र से नहीं निकलने दे रहे....... तुम यह मुहाज़ संभालो। मैं दमिश्क़ जाता हूं, वहां से मिस्र चला जाऊंगा।"

सुल्तान अय्यूबी ने अलआदिल को मुहाज़ की तमाम तर सूरते हाल बताई, हिदायात दीं और कहा कि अपने जासूस इतनी दूर तक गये हुए हैं कि सलीबियों ने अगर हम्ला किया तो तुम्हें कम अज़कम दो तीन रोज़ पहले इत्तलाअ मिल जाएगी। छापामार जैश हर वक़्त तैय्यारी की हालत में रहते हैं। मैंने उन्हें हम्ले के मम्किना रास्तों के इर्द गिर्द छुपा रखा है ताज़ा इत्तलाआत यह हैं कि सलीबी हम्ला नहीं करेंगे, अगर मेरी ग़ैर हाज़िरी से वह फ़ायदा उठाने की सोंच लें तो घबराना नहीं। किला बन्द होकर न लड़ना। दुश्मन के आगे आने देना। पहला वार दुश्मन को करने देना। बेशक पीछे हट जाना ज़मीन मौज़ूं है। बुलन्दियों पर कब्ज़ा रखना।

"और ख़ास तौर पर याद रखो।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "अल्मुलकुस्सालेह, सैफ़ुद्दीन और जिन उमरा ने हमारी इताअत क़ुबूल की है, सलीबियों के हम्ले की सूरत में उन पर एतबार न करना। उनके ज़ेहनों से बादशाही की ख़्वाहिश निकली नहीं। मुआहिदो के मुताबिक़ वह कोई फ़ौज नहीं रख सकते। मैंने इनके अन्दर तक जासूस भेज दिए हैं और मैंने जिन्दगी में पहली बार अपने उसूल के ख़िलाफ़ यह इन्तज़ाम कर दिया है कि हमारे यह मुसलमान भाई ज़रा सी भी मुख़ालिफ़ाना हरकत करें तो उन्हें क़त्ल कर दिया जाए।"

क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने अपनी याददाश्तों में रबीउल अव्वल 572 हि० सितम्बर 1176 ई० का महीना लिखा है जब सुल्तान अय्यूबी अल्आदिल को मुहाज़ पर छोड़कर दमिश्क़ गया। उसके एक और भाई शम्सुल दौला शाह यमन से वापस आ चुका था। यमन में भी सलीबी असरात पैदा हो गये और वहाँ के मुसलमान सल्तनते इस्लामिया के ख़िलाफ़ बाग़ी हो रहे थे। सुलातन अय्यूबी ने वहां शम्सुल दौला को भेजा था जो कामयाब लौटा था। सुल्तान अय्यूबी ने उसे दमिश्क़ का गवर्नर मुक़र्रर किया और अक्टूबर 1176 ई० में मिस्र को रवाना हो गया।

क़ाहिरा पहुचते ही उसने तमाम मुश्तबाह अफ़राद को किसी के ओहदे का लिहाज किये

बग़ैर गिरफ़्तार करने का हुक्म दे दिया। उनकी गिरफ़्तारी के अगले रोज़ उसने वह तमाम सोना और ख़ज़ाना परेड के मैदान में रखवाया जो ग़ार से बरामद हुआ था। उस वक़्त तक जितनी सलीबी लड़कियाँ पकड़ी जा चुकी थी और अब जो पकड़ी गयी थीं उन्हें ख़ज़ाने के अंबार के करीब खड़ा किया गया। इनमें हकीम भी था, नायब सालार भी थे और कमानदार भी। सब ज़ंजीरों में बंधे हुए थे। मिस्र में जितनी फौज थी उसे उनके क़रीब से गुज़ार कर मैदान में खड़ा किया गया।

सुल्तान अय्यूबी घोड़े पर सवार आया और फ़ौज के सामने रुका।

मुझे बताया गया है कि तुम्हें हुकूमत के खिलाफ़ उकसाया जा रहा है।" सुल्तान अय्यूबी ने बुलन्द और गरजदार आवाज़ में कहा– "अगर तुममें से कोई मुझे यक़ीन दिलादे कि वह इस्लाम की अज़मत और रसूले ख़ुदा की मोहब्बत की ख़ातिर तुम्हें मेरे खिलाफ़ और मेरी हुकूमत के खिलाफ़ भड़का रहा है और वह किब्ला अव्वल को कुफ़्फ़ार से आज़ाद कराने का अज़्म रखता है और वह स्पेन पर हम्ला करे उस मुल्क को एक बार फिर सल्तनते इस्लामिया का अज़्म किए हुए है तो वह सामने आए, मेरी तलवार लेले और मेरे घोड़े पर सवार हो जाए। मैं उसके हक़ में सुल्तानी से दस्तबरदार होता हूं।"

हर तरफ सन्नाटा तारी हो गया।

सुल्तान अय्यूबी पीछे को मुड़ा और मुल्ज़िमों से कहा– "मेरी जगह लेने वाला तुम में है। वह कौन है? आगे आये रब्बे काबा की कसम! मैं सच्चे दिल से अपनी हुकूमत उसके हवाले कर दूंगा और ख़ुद उसके हुक्म का पाबन्द रहूंगा।"

ख़ामोशी गहरा सकूत।

"अल्लाह के शेरों!" सुल्तान अय्यूबी फ़ौज से मुख़ातिब हुआ– "तुम्हें बग़ावत पर न इस्लाम की अज़मत के लिए उकसाया जा रहा है न रसूल के नामे मुक़द्दस की खातिर। तुम्हें जो ख़ज़ाना दिखायागया है और जो लड़कियां तुम्हारे सामने खड़ी हैं वह वह ईनाम हैं जो इन लोगों को दिया गया है। यह इनके ईमान की क़ीमत है। मैं इन सबसे कहता हूं कि आगे आयें और कहें कि मैंने जो कहा है वह झूठ कहा है।"

कोई आगे न आया। सुल्तान अय्यूबी घोड़े से उतरा और मुल्ज़िमों से हकीम को बाज़ू से पकड़ा। उसे अपने घोड़े के करीब लेजाकर कहा– "मेरे घोड़े पर सवार हो जाओ और कहो कि अय्यूबी झूठ बोल रहा है।"

हकीम घोड़ पर सवार हो गया मगर उसने सर झुका लिया।

"कहो सुल्तान झूठ बोल रहा है।" सुल्तान अय्यूबी ने ग़ज़बनाक आवाज़ में कहा

हकीम ने सर उठाया और बुलन्द आवाज़ से कहा– "सुल्तान अय्यूबी ने जो कहा है सच कहा है।" और वह घोड़े से कूद आया।

वकाअ निगार लिखते हैं कि सुल्तान अय्यूबी पहली बार ग़ुस्से में देखा गया। हकीम घोड़े से उतर कर सर झुकाए खड़ा रहा। सुल्तान अय्यूबी ने तलवार निकाली और एक ही वार में हकीम का सर तन से जुदा कर दिया । वह अपने घोड़े पर सवार हुआ और बड़ी ही बुलन्द

आवाज़ से चिल्लाया– "अल्लाह के सिपाहियों! अज़्मते इस्लाम के पासबानों! अगर मैंने बेइन्साफ़ी की है तो यह लो मेरी तलवार से मेरी गर्दन उड़ा दो।" उसने अपनी तलवार बरछी की तरह फ़ौज की तरफ़ फेंकी। तलवार की नोक ज़मीन में गड़ गयी और तलवार झूलने लगी।

सब से आगे वाला सालार घोड़े से कूदकर उतरा। तलवार ज़मीन से उखाड़कर और दोनों हाथों पर रखकर सुल्तान को पेश की और कहा– "सुल्तान! इतना जज़्बाती होने की ज़रूरत नहीं।" फ़ौज में इतना शोर उठा कि सालार की आवाज़ दब गयी। फ़ौज मुल्ज़िमों के ख़िलाफ़ भड़क उठी। सुल्तान अय्यूबी ने हाथ ऊपर करके फ़ौज को ख़ामोश किया और तख़रीबकारों के जराईम सुनाये।

उसी रोज़ सुल्तान अय्यूबी ने सूडान को अपना एल्ची इस तहरीरी पैग़ाम के साथ रवाना किया कि अगर सूडान की फ़ौज ने मिस्र की सरहद पर ज़रा सी भी बद अमनी पैदा की तो उसे मिस्र पर हम्ला तसव्वुर किया जाएगा और उसके जवाब में हम सूडान पर हम्ला करने में हक बजानिब और आज़ाद होंगे और हम सूडान पर इस्लामी परचम लहराकर दम लेंगे।

❖❖

एक मंज़िल के मुसाफ़िर

ख़ून जो सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की तलवार से टपक रहा था वह साफ किए बेग़ैर उसने तलवार म्याम में डाल ली। यह ख़ून उस ग़द्दार हकीम का था जो सलीबियों का जासूस और तख़रीबकार बना हुआ था।

फ़ौरी तौर पर जिन्हें ग़द्दारी और दुश्मन के साथ साज़ बाज़ करने के जुर्म में गिरफ़्तार किया गया था वह पाबजूलां कैदखाने की तरफ ले जाये जा रहे थे। सुल्तान अय्यूबी अपने सालारों, नायब सालारों, फ़ौज और शहरी इन्तज़ामिया के आला हुकाम के इज्लास में बेचैनी से इधर उधर टहल रहा था। उसकी आँखों में ख़ून उतरा हुआ था। वह बहुत कुछ कह चुका था और बहुत कुछ कहते--कहते रुक गया था। इज्लास के हाज़िरीन उसकी जज़्बाती कैफ़ियत को अच्छी तरह समझते थे। वह सुल्तान अय्यूबी से नज़रें मिलाने से भी डरते थे।

"सुल्ताने आली मुकाम!" एक सालार ने कहा-- "हम सलीबियों की कोई साज़िश कामयाब नहीं होने देंगे।"

सुल्तान अय्यूबी ने बड़ी तेज़ी से म्याम से तलवार निकाली। तलवार ख़ून आलूद थी। उसने तवलार हाज़िरीन के आगे करके कहा-- "यह ख़ून किसका है?......यह तुम सबका ख़ून है। यह मेरा ख़ून है। यह हमारे उस भाई का ख़ून है जो हमारे साथ मस्जिद में जुमा की नमाज़ पढ़ा करता था। उसके घर में कुर्आन भी है। अगर यह ख़ून ग़द्दार हो सकता है तो सलीबियों की हर साज़िश कामयाब होगी.....सलीबियों की यह साज़िश कामयाब हो चुकी है। वह इस्लाम की उन अफ़वाज को जिन्हें मुत्तहिद होकर फ़िलिस्तीन को सलीबी इस्तबदाद से आज़ाद कराना था आपस में लड़ाकर हमें इतना कमज़ोर कर चुके हैं कि हम एक लम्बे अर्से तक फ़िलिस्ती की तरफ कूच करने से माज़ूर हैं। हमारी मंज़िल बैतुल मुकद्दस थी हमें आज काहिरा में नहीं येरूशलम में होना चाहिए था मगर इस्लाम की जंगी ताकत तबाह हो गयी है।"

सुल्तान अय्यूबी ने तलवार अपने दरवान की तरफ फेंकी फ़िर म्याम भी उतार कर उसे दी और कहा-- "अगर यह ख़ून किसी क़ाफ़िर का होता तो मैं म्याम साफ नहीं करता। यह एक ग़द्दार का ख़ून है। म्याम में उसकी बू भी न रहे।" दरवान तलवार और म्याम साफ करने के लिए बाहर ले गया। सुल्तान अय्यूबी ने इज्लास के हाज़िरीन से कहा-- "सलीबियों की साज़िश कामयाब हो चुकी है। वह चाहते थे कि मैं हलब से आगे न जा सकूं। देख लो। मैं आगे जाने की बजाए काहिरा में आ गया हूँ। अपने आप को धोखे में न रखो। सलीबी आगे बढ़ेंगे। हम जब आपस में लड़ रहे थे वह हमें फ़ैसलाकुन शिकस्त देने की तैय्यारियां कर रहे थे।"

"हमने मुसलमानों को लड़ाकर सलाहुद्दीन अय्यूबी का रुख़ फेर दिया है।" यह त्रीपोली

(लेबनान) का सलीबी हुक्मरान रिमाण्ड कह रहा था। सलीबी जासूसों ने वहां ख़बर पहुंचा दी थी कि सुल्तान अय्यूबी हलब से मिस्र चला गया है और उसकी जगह उसका भाई अल आदिल मुहाज़ पर आया है। यह ख़बर योरूशलम तक पहुंच गयी थी। यह ख़बर अक्रा तक भी पहुंच गयी थी जहाँ सलीबे आजम थी और जहाँ बड़ा पादरी भी था जिसे सलीबे आजम का महाफ़िज कहते थे। वह फ़ौरन त्रीपोली जमा हो गये थे। उनके हां भी ऐसी ही कान्फ्रेंस हो रही थी जैसी सुल्तान अय्यूबी ने बुला रखी थी।

"अय्यूबी योरूशलम को फ़तह करने निकला था।" रिमाण्ड कह रहा था– "हमने एक भी तीर चलाये बग़ैर उसे मिस्र की तरफ़ पस्पा कर दिया है। उसके हाथों उन मुसलमान उमरा और हुक्मरानों को बेकार कर दिया है जो किसी भी वक़्त हमारे ख़िलाफ़ अय्यूबी की कुव्वत बन सकते थे। हम इससे बड़ी और क्या कामयाबी हासिल कर सकते हैं। अब वक़्त ज़ाया नहीं करना चाहिए।"

"यह कामयाबी इतनी बड़ी नहीं है जितनी आप ने कहा है।" एक सलीबी हुक्मरान बिल्डून ने कहा– "हमने हम्ले के लिए ज़मीन हमवार की है। असल काम तो हम्ला है। इसकी कामयाबी को हम बहुत बड़ी कामयाबी कहेंगे। फ़ौजें फ़ौरन जमा करो और पेशक़दमी करो और सुल्तान अय्यूबी को संभलने का मौक़ा न दो।"

"अगर हमने अपने आप को बहुत जल्दी न संभाला तो मैं बता नहीं सकता कि इसके नताइज क्या होंगे।" सुल्तान अय्यूबी ने अपने सालारों और दिगर हुक्काम से कहा– "आज ही से नयी भर्ती शुरू कर दो। सवार ज़्यादा होने चाहिए। सूडान के उन जवानों को भी भर्ती करो जिन्हें सात साल हुए बग़ावत के जुर्म में फ़ौज से निकाल कर क़ाबिले काश्त ज़मीनो पर आबाद किया गया था। उन्होंने मिस्र में इतनी ख़ुशहाली देखी है कि अब धोखा नहीं देंगे। ऐसे जवान जो घोड़ सवारी और तेग़ज़नी की सूझ बूझ रखते हों, उन्हें जंगी तरबियत दो। मैं बहुत जल्दी मिस्र से निकल जाना चाहता हूं। अगर सलीबियों का दिमाग़ ख़राब हो गया हो तो दुनियाए अरब उनकी दस्तबुरद से बच जाएगी औ अगर उनका दिमाग़ ठिकाने है तो उन्हें मेरी ग़ैर हाज़िरी से फ़ायदा उठाते हुए फ़ौरन हम्ला कर देना चाहिए। वह अनाड़ी नहीं। मेरे लिए यह हालत उन्होंने किसी मक़सद के तेहत पैदा किये थे जिनसे मजबूर होकर मैं मिस्र आ गया हूं। वह हम से बैतुल मुक़द्दस को सिर्फ़ इसी सूरत सेबचा सकते हैं कि मक़बूज़ा इलाक़ों से निकल कर हमारे इलाक़ों में आकर लड़ें। इस जंग के लिए मुझे बहुत सी फ़ौज की ज़रूरत है।"

"मैं इस वक़्त दो सौ पचास नायट (ज़िरहपोश सरदार) मैदान में ला सकता हूँ।" त्रीपोली की कान्फ्रेंस में एक मशहूर सलीबी हुक्मरान रिनॉल्ट आफ हुनीन ने कहा– "इस हम्ले की क़यादत मेरी फ़ौज करेगी। मैंने इस का प्लान भी तैय्यार कर लिया है। इसकी बुनियाद यह है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की तरह चोरों वाली जंग नहीं लड़ेंगे। हम तूफ़ान और सैलाब की मानिन्द पेशक़दमी करेंगे। हम सब अपनी फ़ौजों को इकठ्ठा करके कूच करेंगे तो आप ख़ूद महसूस करेंगे कि इन्सानों और घोड़ों का यह तूफ़ान दुनियाए अरब को ख़स व ख़ाशाक की

तरह उड़ाता मिस्र को भी रौंद जायेगा और इस का ज़ोर सूडान में जाकर थमेगा।"

"अगर सलीबी अफ़वाज मुत्तहिद होकर आयें तो अरब की सरज़मीन हम सबसे इतना ख़ून मांगेगी जिसमें रेगज़ार के ज़र्रे तैरेंगे।" सुल्तान अय्यूबी क़ाहिरा में कह रहा था– "अबके हम सरों से कफ़न बांधकर कर जाएंगे। मेरे रफ़ीकों, मेरी एक हिस मुझे बता रही है कि हमें पूरी तैय्यारी से और पूरी तरह संभल कर मैदान में उतना पड़ेगा।"

"सुल्तान अय्यूबी को मिस्र में उलझाए रखने के लिए हमें तख़रीबकारी तेज़ करनी होगी।" रिमाण्ड ने कहा और सलीबियों की इन्टेलीजेंस के उस्ताद हरमन से कहा– "हरमन! मिस्र पर अपनी गिरफ्त और सख़्त कर दो। मुझे तवक्को यह है कि अय्यूबी चैन से बैठने वाला आदमी नहीं। उसकी फ़ौज का जानी नुक़सान बहुत हो चुका है। वह फ़ौरी तौर पर नयी भर्ती करेगा......कोशिश करो कि उसे भर्ती न मिले। अगर इस में कामयाबी न हो तो मिस्र की फ़ौज के ज़ख़ीरे तबाह कराते रहो। वहाँ की फ़ौज पर नज़र रखो और वहाँ के जासूसों से कहो कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की एक–एक हरकत की इत्तलाअ फ़ौरन पहुंचाते रहें।"

"और हरमन!" एक सलीबी कमाण्डर ने कहा– "मिस्र की ख़बर मिले न मिले, ज़्याद ज़रूरी है यह है कि यहाँ की ख़बर बाहर न जाने पाये। हमें तस्लीम करना चाहिए कि अय्यूबी जिस तरह मैदाने जंग में हमारे लिए मुसीबत बन जाता है, वह जासूसी के मैदान में भी हम से होशियार है। हमारे दर्मियान उसके जासूस मौजूद हैं। यहाँ की मुसलमान आबादी पर गहरी नज़र रखो। किसी पर ज़रा सा शक हो उसे क़ैद कर दो, क़त्ल कर दो, तुम्हें पूरे इख़्तियारात दिए जाते हैं।"

"मैं किसी के दिल में नहीं उतर सकता।" सुल्तान अय्यूबी कह रहा था– "ईमान फ़रोशों के सरों पर सींग नहीं होते। मैं अली बिन सुफ़ियान और ग़यास बलबीस को इजाज़त देता हूं कि जिस पर शक हो वह सलीबियों का जासूस है उसे क़त्ल कर दो। अगर उस पर रहम करना चाहो तो उसे क़ैद में डाल दो। मैं इन हालात में जब सलीबी मुत्तहिद होकर आते नज़र आ रहे हैं किसी को बख़्श नहीं सकता। मैं अब तहक़ीक़ात और अदल व इन्साफ़ के तौर तरीक़े भी बदल देना चाहता हूं.....और अली बिन सुफ़ियान! उसने अपने इन्टेलीजेंसी के सरबराह से कहा– "मुझे यक़ीन है कि तुमने मक़बूज़ा इलाक़ों में अपना जाल बिछा रखा है। सलीबियों के हां अपने कुछ और आदमी भेज दो और वहाँ के जासूसों से कहो कि कोई ख़बर और इत्तलाअ ज़्यादा देर तक अपने पास न रखें। ख़तरा मोल लें और तीर की रफ़तार से क़ाहिरा ख़बर पहुंचाएं मुझे अंधा न कर देना अली बिन सुफ़ियान! और कोशिश करो कि यहाँ से कोई ख़बर बाहर न जा सके।"

"अगर हमारी अफ़वाज की कमान मुश्तर्का हो तो हम ज़्यादा बेहतर और मुवस्सिर तरीक़े से लड़ सकेंगे।" रिमाण्ड ने कहा।

"मैं इतेहाद पर ज़ोर दूंगा मुश्तर्का कमान पर नहीं।" रिनॉल्ट ने कहा– "मुश्तर्का कमान के कुछ नुक़सानात भी होते हैं। मैदानें जंग में हमें एक दूसरे से बाख़बर रहना चाहिए और एक दूसरे के रास्ते में नहीं आना चाहिए। हम पेशक़दमी के लिए इलाक़े तक़सीम कर लेंगे।

इहतियात सिर्फ़ यह की जाए कि हमारी नक्ल व हरकत राज़ में रहे।"

❖

दोनों तरफ़ तैय्यारियों का हंगामा था। सलीबी अब के सुल्तान अय्यूबी को फैसलाकुन शिकस्त देने का अज़्म किए हुए थे। सुल्तान अय्यूबी ज़ख़्म खुर्दा था। आप तफसील से पढ़ चुके हैं कि सलीबियों की शह पर तीन मुसलमान उमरा सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ मुहाज़आरा हो गये थे। ढाई तीन साल मुसलमान फ़ौजें एक दूसरे का ख़ून बहाती रहीं। सुल्तान अय्यूबी ने तीनों मुसलमान अफ़वाज को फ़ैसला कुन शिकस्त दे कर उनसे हथियार डलवाये और उनहोंने सुल्तान अय्यूबी की इताअत कुबूल कर ली थी मगर उस फ़तह को सुल्तान अय्यूबी उम्मते रसूल की बदतरीन शिकस्त कहता था क्योंकि सलीबियों की साज़िश कामयाब होगयी थी। इस ख़ाना जंगी में अल्लाह के वह हज़राहा सिपाही मारे गये या उम्र भर के लिए अपाहिज हो गये जिन्हें फ़िलिस्तीन को सलीब से पाक करना था।

इस दौरान सलीबियों ने फ़ौज में इज़ाफ़ा कर लिया था, फ़ौज को आराम भी दे लिया था और जंगी तैय्यारियां मुकम्मल कर ली थीं। उनका दावा बेबुनियाद नहीं था कि वह तूफ़ान की तरह आयेंगेऔर दुनियाए अरब को ख़स व ख़ाशाक की तरह उड़ा ले जाएंगे। उनके मुकाबले मुकाबले में सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज के तजुर्बाकार सिपाही और कमानदार शहीद हो चुके थे और वह नयी भर्ती की ज़रूरत महसूस कर रहा था। रंगरूटों को लड़ाना बहुत बड़ा ख़तरा था मगर इसके सिवा कोई चारा नहीं था। उसे मिस्र में भी फ़ौज की ज़्यादा नफ़री रखनी थी क्योंकि सूडान की तरफ़ से ख़तरा था। इसके अलावा मुल्क के अन्दर तख़रीबकारी और ग़द्दारी भी ज़्यादा थी।

सलीबी तूफ़ान की तरह आने के प्लान बना रहे थे और सुल्तान अय्यूबी अपने तरीकए जंग से हटना नहीं चाहता था। उसने तय कर रखा था कि वह शबख़ून मारने और 'ज़रब लगाओ और भागो' के उसूल पर लड़ेगा। अब के सलबियों ने ऐसा प्लान तैय्यारकरने की सोंची थी जिस में सुल्तान अय्यूबी का कमाण्डो आपरेशन कामयाब न हो सके। वह उसकी फ़ौज को घेरे में लेकर आमने सामने की जंग लड़ाने की तरकीबें सोंच रहे थे। दोनों तरफ़ यह कोशिश हो रही थी कि अपनी—अपनी जंगी तैयारियों, मंसूबों और नक्ल व हमल को राज़ में रखें और एक दूसरे के राज़ मालूम करें। इस मक्सद के लिए दोनों के हां एक दूसरे के जासूस मौजूद थे।

सलीबी कमाण्डरों वग़ैरह को यह तो मालूम था कि उनके दर्मियान सुल्तान अय्यूबी के जासूस मोजूद हैं लेकिन रिमाण्ड वालिये त्रीपोली और दिगर सलीबी हुक्मरानों को यह मालूम नहीं था कि उनकी कान्फ्रेंस में दो मुसलमान जासूस मौजूद हैं। पहले भी इनका ज़िक्र आ चुका है। एक मुसलमान राशिद चंगेज़ था और दूसरा फ्रांसीसी ईसाई विक्टर था। यह आला किस्म के मुलाज़िम थे जो सलीबी बादशाहों और आला कमाण्डरों की दावतों वग़ैरह में शराब और खाने वग़ैरह की सरविस की निगरानी करते थे। राशिद चंगेज़ ने अपना नाम ईसाइयों जैसा ज़ाहिर कर रखा। तुर्क होने की वजह से उसका रंग यूरोपी बाशिन्दों जैसा

था। बहुत होशियार और चरब ज़ुबान था। विक्टर के मुतअल्लिक़ तो किसी को शुबहा ही नहीं था कि वह ईसाई है। वह फ्रांस का रहने वाला था लेकिन अपने आप को उसने यूनानी ईसाई बताता था।

सलीबियों की इस कांफ्रेंस में भी दोनों अपनी मख़्सूस वर्दी पहने मौजूद थे क्योंकि सलीबी शराब के बे़ग़ैर कोई काम नहीं करते थे। यह दोनों शराब पेश कर रहे थे और उनकी बाते ग़ौर से सुन रहे थे। यह बातें बहुत ही क़ीमती थीं जो उन्हें क़ाहिरा पहुंचानी थीं मगर यह अभी मुकम्मल नहीं थी। वह सलीबियों का पूरा प्लान मालूम करके क़ाहिरा पहुंचाने का इरादा किये हुऐ थे। अली बिन सुफ़ियान को अपने दोनों जासूसों पर मुकम्मल एतमाद था, हालांकि विक्टर ईसाई था। सलीबियों को यही ख़तरा महसूस हो रहा था कि सलाहुद्दीन अय्यूबी को उनके प्लान और नकल वह हरकत का इल्म हो गया तो वह जगह–जगह घात लगाकर थोड़ी–थोड़ी नफ़री से उनके तूफ़ानी लश्कर को तबाह कर देगा। चुनांचे वहां सुल्तान के जासूसों को सुराग़ लगाने और उन्हें पकड़ने के बड़े ही सख़्त एहकाम जारी कर दिए गए।

❖

मिस्र में भर्ती की मुहिम शुरू हो गयी। दो तीन फ़ौजी दस्ते तरतीब दिए गये जो उन इलाक़ों के दौरों पर निकल गये जिनसे भर्ती मिल सकती थी। फ़ौजी जाह व जलाल और जंगी मुज़ाहिरों और खेल तमाशों का इन्तज़ाम किया गया। मस्जिदों के इमामों के लिए तेज़ रफ्तार क़ासिदों के ज़रिए सुल्तान अय्यूबी का यह पैग़ाम भेजा गया कि वह लोगों को जिहाद की अहमियत बतायें और उन्हें यह बतायें कि कुफ़्फ़ार पूरी ताक़त के साथ आलमे इस्लाम पर हम्लावर हो रहे हैं, और यह भी क़िब्ला अव्वल कुफ्फ़ार के क़ब्ज़े में है। इस सूरत में हर मुसलमान पर जिहाद फ़र्ज़ हो गया है। इमामों से कहा गया कि वह जवानों को मिस्र की फ़ौज में भर्ती होने की तलक़ीन करें।

मज़हब और क़ौम के वक़ार के जज़्बे से जवां साल आदमी भर्ती होने लगें। उनके ज़ेहनों में मक़सद वाज़ेह था मगर बहुत से ज. ान माले ग़नीमत के लालच से भर्ती हुए। यह देहाती इलाक़ों के लोग थे। उनके कानों तक इमामों की आवाज़ नहीं पहुंची थी, उन तक फ़ौजी अफ़सर पहुंचे जिन्होंने सुल्तान अय्यूबी के इस हुक्म के तकमील की ख़ातिर कि भर्ती बहुत जल्दी करो, लोगों को जिहाद के वाअज़ सुनानने की बजाए यह कहा कि सलीबियों के शहर फ़तह किए जाएंगे जहां इतनी दौलत है कि वह समेट नहीं सकेंगे। चुनांचे वह दिलों में जिहाद का जज़्बा लेकर भर्ती होने की बजाए माले ग़नीमत की लालच लेकर हंसी ख़ुशी भर्ती हुए। इन अनाड़ी और कम फ़हम फ़ौजी अफसरों ने सुल्तान अय्यूबी की तवक्क़ो के ख़िलाफ़ बेशुमार जवानों को भर्ती कर लिया मगर उसे यह न बताया कि उन्होंने मक़सद पूरा नहीं किया हुक्म की तकमील की है। मैदाने जंग में जाकर यह सिपाही सुल्तान अय्यूबी के लिए बड़ा ही तकलीफ़देह मसला बन गये।

उधर त्रीपोली से कुछ दूर सलीबी फ़ौज एक मैदाने में इकठ्ठी होने लगी। फ़िलिस्तीन के दूसरे मक़बूज़ा शहरों में एल्ची भेज दिए गये कि वह सलीबी फ़ौज को तैय्यार करलें। त्रीपोली

में सबसे ज़्यादा सरगर्मी हूनीन के हुक्मरान रिनॉल्ट की थी। उसकी फौज ख़ासी ज़्यादा थी जिसमें ढाई सौ नायब थे। नायब एक एजाज़ था जो ग़ैर मामूली तौर पर ज़ेहनी, दिलेर और क़यादत के माहिर फौजी अफसर को दिया जाता था। उसे ख़ास क़िस्म की ज़िरह बकतर दी जाती, और वह ख़ुसूसी दस्तों का कमाण्डर होता था। रिनॉल्ट को इन्तक़ाम की आग परेशान किए हुए थी। आपने ने इस सिलसिले की एक कहानी "इस्लाम की पासबानी कबतक करोगे" इस सलीबी हुक्मरान बादशाह का नाम और वाक़िआ पढ़ा होगा। 1174 ई0 के अवाइल में सलीबियों ने समुन्दर से सिकन्दरिया पर हम्ला किया था लेकिन सुल्तान अय्यूबी को अपने जासूसों के ज़रिए हम्ले की ख़बर कबल अज़ वक़्त मिल गयी थी। उसने हम्ले के इस्तक़बाल का ऐसा बन्दोबस्त कर रखा था कि सलीबियों का बहरी बेड़ा बुरी तरह तबाह हुआ और यह बेड़ा फ़ौज को साहिल पर नहीं उतार सका था।

इस हम्ले की दूसरी कड़ी ख़ुश्की के रास्ते हम्ला करना था जिस की क़यादत रिनॉल्ट कर रहा था चूंकि मुसलमान जासूस सलीबियों का पूरा प्लान ले आये थे इसलिए ख़ुश्की पर नुरुद्दीन ज़ंगी ने अपनी फ़ौज की घात लगा रखी थी। अक़्ब और पहलूओं से भी हम्लों का इन्तज़ाम कर रखा था। रिनॉल्ट इस फंदे में आ गया। उसने बहुत हाथ पांव मारे। घात से निकलने की कोशिश की मगर एक रात नुरुद्दीन ज़ंगी के छापामारों ने रिनॉल्ट के हैडक्वार्टर पर शबख़ून मारा और रिनॉल्ट को पकड़ लिया। सलीबियों का न सिर्फ़ हम्ला नाकाम रहा बल्कि उन्हें कमर तोड़ शिकस्त हुई। जानी और माली नुक़सान के अलावा सबसे बड़ा नुक़सान तो यह था कि उनका रिनॉल्ट जैसा जंगजू बादशाह क़ैदी हो गया था।

नुरुद्दीन ज़ंगी के लिए यह बड़ा ही क़ीमती क़ैदी था। उसकी रिहाई के लिए वह सलीबियों से बड़ी ही कड़ी शर्त मनावाना चाहता था मगर ज़िन्दगी ने वफ़ा न की। दो माह बाद ज़ंगी फ़ौत हो गया। उसके आला हुक्काम और सालारों ने ज़ंगी के ग्यारह साला बेटे अल्मलकुस्सालेह को सल्तनत की गद्दी पर बैठा दिया क्योंकि उसे वह अपना कथपुतली बनाकर मनमानी करना चाहते थे। उन्होने सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ मुहाज़ क़ायम कर लिया और उसे शिकस्त देने के लिए सलीबियों के साथ दोस्ती कर ली। इस दोस्ती का उन्होंने पहला मुआविज़ा यह दिया कि रिनॉल्ट जैसे क़ीमती क़ैदी को ग़ैर मशरूत तौर पर रिहा कर दिया। और उस के साथ दूसरे तमाम क़ैदियों को भी रिहा कर दिया। वहीं से सुल्तान अय्यूबी की मुसलसल मार्काआराई अपने पीर उस्ताद और अज़ीज़ दोस्त नुरुद्दीन ज़ंगी के बेटे से शुरू हो गयी। दूसरे उमरा ख़िलाफ़त से आज़ाद हो गये, और सब ने सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ मुत्तहिदा मुहाज़ क़ायम कर लिया था। उसका और जो नुक़सान हुआ सो हुआ, एक नुक़सान अब सामने आया कि रिनॉल्ट जिसे इन ग़द्दार मुसलमानों ने ख़ैर सगाली के तौर पर सलीबियों की दोस्ती हासिल करने के लिए रिहा कर दिया था वह एक जंगी कुव्वत बनकर सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ नहीं बल्कि आलमे इस्लाम को तहे तेग़ करने के लिए फ़ैसलाकुन हम्ले के लिए आ रहा था।

अल्मलकुस्सालेह ने रिनॉल्ट के साथ जो जंगी क़ैदी रिहा किए थे, वह भी इस्लाम के लिए

बहुत बड़ा ख़तरा बन कर आ रहे थे। रिनॉल्ट अपनी शिकस्त और ज़िल्लत का इन्तकाम भी लेना चाहता था। सलीबियों की इस कान्फ्रेंस में उसने इस तजवीज़ की मुख़ालिफत की कि तमाम सलीबी अफ़वाज मुश्तर्का कमान के तेहत हों। इस मुख़ालिफत की सबसे बड़ी वजह यह थी कि वह आज़ाद होकर अपने अज़ाइम के मुताबिक़ जंग लड़ने का इरादा किये हुए था। सलीबियों में यह कमज़ोरी थी कि वह मुत्तहिद नहीं होते थे। एक दूसरे की मदद करते थे लेकिन हर एक के दिल मे यह तो था कि वह ज़्यादा से ज़्यादा इलाके फतह करके उनका बादशाह बन जाए। मुतअद्दिद मोअर्रिख़ीन ने लिखा है कि सलीबियों को इस कमज़ोरी ने दुनियाए अरब में नुक़सान पहुंचाया और वह इतनी ज़्यादा और बरतर जंगी ताक़त के बावजूद नुमाया कामयाबी हासिल न कर सके। मोअर्रिख़ीन लिखते हैं कि सुल्तान अय्यूबी की सफ़ों में ग़द्दार न होते तो वह सलीबियों को दुनियाए अरब से बेदख़ल करके यूरोप के लिए ख़तरा बन जाता।

"अगर आप सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त देना चाहते हैं तो हम सब अपनी फ़ौज को मुश्तर्का कमान के सुपुर्द कर देते हैं।" रिमाण्ड ऑफ त्रीपोली ने कहा– "वरना हम बिखरकर नाकाम भी हो सकते हैं। यह ज़रूरी नहीं कि हम्ले की क़यादत रिनॉल्ट की फ़ौज करे, यह फ़ैसला मुश्तर्का कमान को करना चाहिए।"

"मैं आप से अलग नहीं हूं।" रिनॉल्ट ने कहा– "लेकिन मैं किसी मुश्तर्का कमान का पाबन्द नहीं रहूंगा। मुझे अपनी शिकस्त का इन्तकाम लेना है। नुरुद्दीन ज़ंगी तो मर चुका है, मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी को उसी तरह क़ैद में आप सबके सामने लाऊंगा जिस तरह ज़ंगी मुझे क़ैद करके दमिश्क ले गया था, वरना तारीख़ हमेशा मुझे पर लानत भेजती रहेगी। मैं आप सबसे पूछता हूं कि जिस वक़्त ज़ंगी ने मुझ पर शबख़ून मार कर मेरे दस्तों को बिखेर दिया और उनसे हथियार डलवा लिए थे उस वक़्त आप में से किस ने ज़ंगी पर जवाबी हम्ला किया था? कौन मेरी मदद को पहुंचा था?......कोई नहीं। अब मुझे पाबन्द न करें। मैंने इसी रोज़ के लिए फ़ौज को तैय्यार किया था। मेरे इन्तकाम का दिन आ गया है। मेरी फ़ौज आप की किसी भी फ़ौज की राह में हायल नहीं होगी जिसे भी मेरी मद की ज़रूरत होगी उसे ख़तरा मोल लेकर भी मदद दूंगा लेकिन मैं आप सबसे दरख़्वास्त करता हूं कि मुझे पाबन्द न करें।"

"नहीं करेंगे।" बाल्डून ने कहा– "हमारी आज की कान्फ्रेंस इब्तेदाई बात चीत तक महदूद रहेगी। इसमें हम ने यह तय कर लिया है कि हमारी ज़मीन दोज़ कोशिशों से मुसलमानों की ख़ाना जंगी ने उन्हें कमज़ोर कर दिया है और सलाहुद्दीन अय्यूबी इधर आने की बजाए मिस्र चला गया है। लिहाजा हमें बर्क़ रफ़्तार और तूफ़ानी किस्म का हम्ला करना है। हमने आज इस हम्ले का फ़ैसला कर लिया है। अब दो चार दिन हम सब फ़रदन फ़रदन सोंच लें। हममें से जो भी ग़ैर हाज़िर हैं उन्हें भी बुला लें और एक दिन मुक़र्रर करके हम्ले का प्लान तैय्यार कर लें। हमारी फ़ौजें तैय्यार हैं। इस दौरान हरमन अपने शोबाए जासूसी को इतना ज़्यादा सरगर्म कर दे कि ज़मीन की तहों में से भी सुल्तान अय्यूबी के जासूसों को निकाल कर क़ैद कर दे और यहाँ के मुसलमानों पर कड़ी नज़र रखे। हर मुसलमान घराने और हर

मुसलमान फ़र्द की रोज़ मर्रा हरकात को भी देखे। हमारी अफ़वाज का इज्तमाअ यहीं शुरू हो गया है जिसे छुपाया नहीं जा सकता। यह इन्तज़ाम हरमन को करना है कि कोई आदमी या औरत इस जगह से बाहर जाए तो यह यक़ीन कर लिया जाए कि वह जासूस नहीं।

"ऐसा ही होगा।" हरमन ने कहा– "यहां से कोई परिन्दा बाहर नहीं जाएगा।"

❖

पहल सुनाया जा चुका है कि इस कान्फ़्रेंस में शराब पिलाने वाले ख़ादिमों (मर्दों और लड़कियों) के निगरान और इन्चार्ज दो आदमी थे जो सलीबियों की कान्फ़्रेंसों और दावतों वग़ैरह में बड़ी दिलकश वर्दी में हाज़िर रहते थे। यह क़ाबिले एतमाद आदमी थे। उन्हें गहरी छानबीन के बाद मुलाज़िम रखा गया था मगर यह दोनों सुल्तान अय्यूबी के जासूस थे। इस से अन्दाज़ा होता था कि वह किस क़दर होशियार और ज़हीन थे वरना हरमन जैसे उस्ताद जासूस और सुराग़रसां की नज़रों और अक्ल को धोखा देना मुम्किन नहीं था। दोनों ख़ुबरू जवान और दराज़ क़द थे। विक्टर को अपना नाम बदलने की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि वह था ही ईसाई। राशिद चंगेज़ जो तुर्क था अपना नाम ईसाईयों जैसा रखे हुए थे। यह दोनों इस कान्फ़्रेंस में भी मौजूद थे। आधी रात के क़रीब कान्फ़्रेंस बरख़ास्त हुई और वह दोनों अपने कमरे में चले गये।

"हम दोनों में से कोई भी नौकर ग़ैर हाज़िर नहीं हो सकता।" विक्टर ने कहा– "यह ख़बर किसी और के ज़रिए क़ाहिरा भेजनी पड़ेगी। ऐसा कौन हो सकता है?"

"इमाम से बात करेंगे।" राशिद चंगेज़ ने कहा– "वही बेहतर जानता है कि कौन सा आदमी बेहतर है क़ाहिरा तक तेज़ रफ़तारी से पहुंचने के लिए किसी ख़ास आदमी की ज़रूरत होगी मगर इनका पूरा मंसूबा मालूम हो जाए तो क़ाहिरा को इत्तलाअ देंगे। अधूरी इत्तलाअ पर सुल्तान अय्यूबी कोई ग़लत चाल न चल बैठे।"

"इमाम को इतनी सी इत्तलाअ देना ज़रूरी है कि सलीबी बहुत बड़े हम्ले का फ़ैसला कर चुके हैं।" विक्टर ने कहा– "ताकि सुल्तान अपनी फ़ौज को तैय्यार कर सके और अपने नुक़सानात जल्दी–जल्दी पूरे कर ले......और सुनो!" उसने चंगेज़ से कहा– "जिस वक़्त यह लोग हम्ले की बातें कर रहे थे तो मैंने तुम्हें देखा था कि तुम शराब का प्याला रिमाण्ड के आगे रखते रखते रूक गये थे और साफ़ पता चलता था कि तुम उनकी बातें ग़ौर से सुन रहे हो। मैंने तुम्हारा चेहरा देखा था। उस पर मुझे नुमाया चमक नज़र आई थी। मैं जानता हूं कि इतना क़ीमती राज़ मिल जाने से हिजान और ख़ुशी की कैफ़ियत पैदा हो जाती है लेकिन तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि हरमन भी वहीं मौजूद होता है। हरमन अली बिन सुफ़ियान के पाये का जासूस है। मैंने तुम्हें देखकर फ़ौरन हरमन की तरफ़ देखा था। मुझे शक होता है जैसे वह तुम्हें देख रहा था। मोहतात रहो मेरे भाई! दुश्मन के पेट में ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं।"

"हरमन के लिए हम अजनबी नहीं।" राशिद चंगेज़ ने कहा– "हमारे मुतअल्लिक़ वह शकूक रफ़ा कर चुका है। अब डरने की ज़रूरत नहीं।"

"डरने की नहीं मोहतात होने की ज़रूरत है।" विक्टर ने कहा– "तुमने आज वह हिदायात सुन ली हैं जो हरमन को मिली हैं। वह अब हर किसी पर शक की निगाहों से देखेंगे....और अब तुम यूं करो,-मस्जिद में चले जाओ। सब सो गये हैं। इमाम को बताओ कि आज सलीबियों ने क्या फ़ैसला किया है। अगर क़ाहिरा को कोई जाने वाला हो तो इस फ़ैसले की इत्तलाअ अली बिन सुफ़ियान को देदे और अगर उधर से कोई आये तो हमसे मिले बग़ैर वापस न जाए।"

शहर की एक मस्जिद का इमाम सुल्तान अय्यूबी के लिए जासूसी करता था। यह मस्जिद जासूसी का ख़ुफ़िया अड्डा बनी हुई थी। मुसलमान जासूस मस्जिद में जाकर इमाम को ख़बरें पहुंचाते और उससे हिदायात लेते थे। विक्टर कभी मस्जिद में नहीं गया था। वह कहा करता था कि उसे नमाज़ नहीं आती और मस्जिद के आदाब से भी वाक़िफ़ नहीं इसलिए उसे डर था कि मस्जिद में कोई ऐसा मुसलमान उसे पकड़वा देगा जो सलीबियों का जासूस होगा। यह ग़लत भी नहीं था। सलीबियों के मुख़्बिरों में मुसलमान भी थे जो मस्जिदों में जाने वाले नमाज़ियों पर भी नज़र रखते और उनकी बातें ग़ौर से सुनते थे। वह अक्सर मुसलमानों को गिरफ़्तार कराते रहते थे। राशिद चंगेज़ चूंकि अपने आप को ईसाई ज़ाहिर कर रखा था, इसलिए वह दिन के दौरान मस्जिद में नहीं जाया करता था। सलीबी कमाण्डरों वग़ैरह की शबीना दावतों से फ़ारिग़ होकर अगर ज़रूरत पड़े तो आधी रात के बाद इमाम के घर जाता था जो मस्जिद के बिल्कुल साथ मिला हुआ था। इसका एक दरवाज़ा मस्जिद के सेहन में खुलता था।

❖

राशिद चंगेज़ ने कपड़े बदले। चुग़ा और इमामा पहना। मस्नूई दाढ़ी चेहरेपर बांधी और कमरे से निकल कर अंधेरे में ग़ायब हो गया। हुक्म के मुताबिक़ उसे दाढ़ी उस्तूरे से साफ करानी पड़ती थी। अपने मिशन पर जाने के लिए उसने ऐसी मस्नूई दाढ़ी बनाकर रखी थी जो फ़ौरन लगाई और उतारी जा सकती थी। उन दिनों वहां रात को भी रौनक़ रहती थी। रिमाण्ड की अपनी फ़ौज के अलावा रिनॉल्ट भी अपने बहुत से अफ़सरों के साथ वहाँ गया हुआ था। उसके चन्द एक दस्ते भी थे। यह फ़ौजी अफ़सर और दिगर सलीबी कमानदार रातें ऐश और ईशरत में गुज़ारते थे। पेशावर औरतों की चहल पहल लगी रहती थी। अला हुक्काम की बीवियां और दाशता औरतें भी उनके साथ थीं। वहां यह भी पता नहीं चलता था कि कौन सी औरत किस की बीवी है। औरतों की आरज़ी और मुस्तक़िल ख़रीद फ़रोख़्त भी होती थी।

राशिद चंगेज़ अपने कमरे से निकला तो उसे छुप कर जाने में बहुत दुश्वारी हुई। कमरों और ख़ेमों के अन्दर तो तूफ़ाने बदतमीज़ी बपा था ही, बाहर भी कहीं–कहीं उसे कोई बदमस्त जोड़ा नज़र आ जाता था जिससे बच कर उसे रास्ता बदलना पड़ता था। आख़िर वह ख़तरे के इलाक़े से निकल गया और शहर की गलियों में दाख़िल हो गया। फिर वह मस्जिद के दरवाज़े तक पहुंच गया। वह ज़ब इधर उधर देखकर मस्जिद में दाख़िल होने लगा तो उसने दबे क़दमों की आहट सुनी जो गली में उठी और मोड़ पर ख़ामोश हो गयी। राशिद चंगेज़ ने इस पर ग़ौर किया लेकिन यह समझ कर अपने आप को तसल्ली दी कि कुत्ता होगा और यह

आहट वहम भी हो सकती थी। वह मस्जिद के सेहन में गया और इमाम के दरवाज़े पर मख़सूस दस्तक दी। दरवाज़ा खुला। राशिद चंगेज़ अन्दर चला गया और इमाम को सारी रिपोर्ट दे दी।

"सलीबियों की ज़्यादा तर फौज यहाँ जमा होगी।" चंगेज़ ने कहा– "यह रिनॉल्ट की फौज होगी। यहाँ की फौज तो पहले ही यहाँ मौजूद है। काहिरा तक इस फौज के कूच व अज़ाइम की इत्तलाअ तो पहुंच ही जाएगी, अगर हम कोशिश करें तो इस फौज को कूच से पहले कुछ नुक़्सान भी पहुंचा सकते हैं और इसके कूच को इल्तवा में डाल सकते हैं।"

"तुम्हारा मतलब यह है कि छापामारों से कहा जाए कि वह फौज की रस्द को नज़रे आतिश कर दें।" इमाम ने कहा– "मैं यह काम करा सकता हूँ लेकिन कराऊंगा नहीं। तुमने ऐसे कई वाकिआत सुने होंगे कि जिस मक़बूज़ा शहर में हमारे छापामारों ने सलीबी फौज को नुक़्सान पहुंचाया वहाँ के मुसलमान बाशिन्दों के लिए जिन्दगी दोज़ख़ से बदतर बना दी गयी। घर–घर तलाशी हुई। हमारी मस्तूरात की बेइज़्ज़ती हुई। हमारी जवान बेटियों को सलीबी पकड़ ले गये। कैद और कत्ल का ज़ालिमाना सिलसिला शुरू हो गया। मैंने अपने एक क़ासिद के ज़रिए सुल्तान अय्यूबी तक यह मसला पहुँचाया था। सुल्ताने मोहतरम ने मेरी तवक्को के बिल्कुल मुताबिक जवाब भेजा है। उन्होंने फ़रमाया है कि मुसलमान बाशिन्दों की इज़्ज़त, जान और माल की ख़ातिर किसी शहर में ख़ुफ़िया तबाहकारी न की जाए। दुश्मन की रस्द को उसकी फौज के साथ आने दिया जाए। उसे मेरे छापामार मैदाने जंग में नहीं आने देंगे।"

"मैं यहां आप को मुकम्मल इत्तलाअ दो चार दिनों में दे सकूंगा।" चंगेज़ ने कहा– "अब आप और ज़्याद मोहतात हो जाएं। यहाँ के सुराग़रसां ग़ैर मामूली तौर पर सरगर्म हो गये हैं। वह अब यहाँ के जानवरों और परन्दों को भी शक की निगाहों से देखेंगे।"

यह तय करके कि एक आदमी सुबह काहिरा रवाना कर देंगे चंगेज़ मस्जिद से निकला। वह चोरी छिपे नहीं चल रहा था ताकि कोई शक न करे। वह गली का मोड़ मुड़ा तो उसे फिर किसी के कदमों की दबी–दबी आहट सुनाई दी। उसने घूम कर देखा। गली तारीक थी। उसे कुछ नज़र नहीं आया। अब के यह वहम नहीं था। वह आगे चल पड़ा। अपने ठिकाने के करीब जाकर उसने मस्नूई दाढ़ी उतार कर कपड़ों में छुपा ली। उसके कपड़े ऐसे थे जो कोई शक पैदा नहीं करते थे क्योंकि ऐसे कपड़े ईसाई भी पहनते थे।

अब विक्टर और चंगेज़ की कोशिश यह थी कि यह मालूम करें कि सलीबी फौज कहां–कहाँ हम्ला करेगी और उसके कूच का प्रोग्राम क्या है। ज़्यादा से ज़्यादा फौज जमा करने के इन्तज़ामात शुरू हो गये थे। क़ासिदों की भाग दौड़ भी शुरू हो गयी थी। यह दोनों जासूस इस सरगर्मी से बज़ाहिर लातअल्लुक होकर इसकी हर एक तफ़सील मालूम करने में मस्रूफ़ थे। रिमाण्ड की हैसियत मेज़बान की थी क्योंकि यह उसका दारूलहुकूमत था। उसने एक रात तमाम सलीबी हुक्मरानों, आला कमाण्डरों और दिगर आला हुकाम की ज़्याफ़त का इहतमाम किया। यह रात विक्टर और चंगेज़ के लिए ग़ैर मामूली मस्रूफ़ियत की रात थी।

चूंकि मेहमानों में बादशाह भी थे इसलिए उन्हें शराब वग़ैरह पेश करने में ज़्यादा मुस्तैद रहना था। उन्हें मालूम था कि मुस्तैदी की ज़रूरत उस वक़्त तक होती है जबतक मेहमान होश में रहते हैं। शराब में बदमस्त होकर जब बद इख़्लाकी के मुज़ाहिरे करने लगते हैं तो मुलाज़िमो का काम आसान हो जाता है।

इस ज़्याफ़त में जितने मर्द थे इतनी औरतें थीं। इनमें नौजवान लड़कियाँ भी थीं, जवान औरतें भी और वह भी जो बूढ़ापे को जवानी का धोखा दे रही थीं। विक्टर और चंगेज़ खाना और शराब वग़ैरह लाने वाले मुलाज़िमों की निगरानी करते और भागते दौड़ते रहे। एक जवान यूरोपी औरत ने चंगेज़ से दो तीन बार शराब मांगी। चंगेज़ ने हर बार मुलाज़िम या मुलाज़िमा को बुलाकर कहा उसे शराब दे। उस वक़्त मेहमान रिमाण्ड के महल में इधर उधर बिखरे हुए थे। यह औरत बहुत ख़ूबसूरत थी। उसने देखा कि चंगेज़ हर बार मुलाज़िम से कह कर शराब मंगवाता है तो उसने मुस्कुरा कर कहा– "मैं तुम्हारे हाथ से थोड़ी पीना चाहर हूँ। तुम नौकरो को हुक्म देकर इधर उधर हो जाते हो।"

"मैं ला देता हूँ।" चंगेज़ ने नौकरों के लहजे में कहा।

"यहाँ नहीं।" औरत ने कहा– "मैं बाहर बाग़ में जा रही हूँ। वहाँ लाना।"

चंगेज़ शराब की एक ख़ुश्नूमा सुराही लेकर उस जगह चला गया जहाँ वह औरत जा बैठी थी। यह महल का बाग़ था। वहाँ भी मेहमान बिखरे हुए थे। हर एक के साथ एक औरत और हाथ में शराब का प्याला था। सिर्फ़ यह औरत अकेली थी और चंगेज़ ज़रा हैरान भी हुआ कि ऐसी जवान और ख़ूबसूरत औरत अकेली क्यों है। उस पर तो मेहमानों को मख़्खियों ती तरह फिनफिनाने चाहिए था। वह उसके प्याले में शराब डालने लगा तो औरत ने पूछा कि वह कहाँ का रहने वाला है। उसने यूरोप के किसी गांव का नाम लिया और बताया कि वह लड़कपन से शाह रिमाण्ड के शाही स्टाफ में है।

"तुम थोड़ी सी देर मेरे पास रूक सकोगे?" औरत ने पूछा और प्याला उसकी तरफ बढ़ाकर कहा– "लो, मेरे प्याले में तुम पियो फिर मैं पिऊंगी।" उसकी आवाज़ में इल्तिजा और तिश्नगी थी।

"आप देख रही हैं कि मै नौकर हूँ।" चंगेज़ ने कहा– "आप शाही ख़ानदान की ख़ातून हैं। मैं इस वक़्त नौकरी के फराईज़ कर रहा हूँ।"

"इस वक़्त मुझे अपना नौकर समझो।" औरत ने उसकी कलाई पकड़ ली और प्यासी मुस्कुराहट से कहा– "तुम शहज़ादे हो। यह तो दिल बताया करता है कौन क्या है।"

"आप अकेली क्यों हैं?" चंगेज़ ने पूछा।

"क्योंकि मेरे जज़्बात इजाज़त नहीं देते कि जिससे मुझे नफ़रत हो उसके साथ हसूँ खेलूं।" उसने जवाब दिया–"मुझे जो अच्छा लगता है उसे अपने पास बुला लिया है। तुमने मेरे हाथ से प्याला लिया नहीं।"

"किसी ने देख लिया तो मुझे सूली पर खड़ा कर दिया जायेगा।" चंगेज़ ने कहा।

"अगर तुमने मेरे प्याले से एक घूंट न पिया तो मैं तुम्हें सूली पर खड़ा कर दूंगी।" औरत

ने कहा– "वह मुस्कुरा रही थी। उसने और आगे होकर धीमी आवाज़ में कहा– "पागल, तुम मुझे इतने अच्छे लगते हो कि दिल के हाथों मजबूर होकर तुम्हें इधर बुलाया है। मुझे टालने की न सोंचना।"

"मैं शराब नहीं पीऊंगा।" चंगेज़ ने कहा।

"न पियो।" औरत ने कहा– "मगर मैं जब भी जहाँ भी तुम्हें बुलाऊँ तुम्हें आना पड़ेगा।

राशिद चंगेज़ फहम व फ़िरास्त का मालिक और तजुर्बाकार इन्सान था। वह इस पर ज़रा भी हैरान न हुआ कि एक ऊंचे तब्के की हसीन व जमील औरत उसकी दोस्ती की ख़्वहिश का इज़हार कर रही है। उसे यह ख़्याल भी आया कि यह किसी बूढ़े जरनल की जवान बीवी होगी या किसी ऐसे ख़ाविन्द की बीवी होगी जो इस वक़्त किसी और के बीवी के साथ मगन होगा। एक वजह तो साफ थी। चंगेज़ ख़ुबरू आदमी था जिस के क़दबुत में बड़ी कशिश थी। यह पहला मौका नहीं था कि किसी औरत ने उसे अपनी तरफ मुतवज्जा करने की कोशिश की हो। सलीबी हुक्मरानों और आला अफ़सरों को दावतों में शराब पेश करने वाली लड़कियाँ ख़ास तौर पर हसीन और दिलकश थीं। उनमें से दो चंगेज़ के साथ तअल्लुकात पैदा करने की कोशिश कर चुकी थीं लेकिन चंगेज़ अपने किरदार को उनसे बचाए रखा था। सुल्तान अय्यूबी ने उसे जो फ़र्ज़ देकर भेजा था उसका तक़ाज़ा था कि वह अपने किरदार के क़िले को मिस्मार न होने दे।

अली बिन सुफ़ियान ने उसे ट्रेनिंग के दौरान ज़ेहन नशीन कराया था कि ज़ेहन अय्याशी की तरफ़ मायल हो जाए तो फ़राइज़ ज़ेहन से निकलना शुरू हो जाते हैं। उसके ज़ेहन में औरत को एक ऐसे ज़हर की मानिन्द बैठा दिया गया था जो ईमान खा जाता है। रिमाण्ड आफ़ त्रीपोली के महल में उसकी हैसियत ऐसी थी कि वह जिस मुलाज़िम या मुलाज़िमा को चाहे नौकरी से निकलवा सकता था। उसकी अपनी शख़्सियत का असर तो जादू का सा था। वह भी जानता था कि सलीबियों का कोई किरदार नहीं। उनकी औरतें बेहयाई और बद इख़्लाकी को क़ाबिले फ़ख़्र समझती थीं। इन वजूहात की बिना पर चंगेज़ के लिए यह औरत और उसकी यह बेतकल्लुफ़ी अजूबा नहीं थी।

वह चूंकि ख़ुसूसी क़ाबिलीयत का जासूस था इसलिए उसने फ़ौरन सोंच लिया कि वह इस औरत को यह बताये बग़ैर कि वह जासूस है उसे जासूसी के लिए इस्तेमाल कर सकता है। इस औरत ने उसे यह जो कहा था कि जहाँ भी तुम्हें बुलाऊं तुम्हें आना पड़ेगा, इसमें हुक्म या धमकी नहीं बल्कि दोस्ताना बेतकल्लुफ़ी थी और उसके लहजे में जो तासिर था, उसे चंगेज़ भी अच्छी तरह समझता था। औरत की मुस्कुराहट के जवाब में वह भी मुस्कुराया। इस मुस्कुराहट से उसने शिकारी को उसके बिछाये हुए जाल में फांसने की कोशिश की थी।

"अब मुझे जाने की इजाज़त है?" उसने कहा– "मेरी ड्यूटी अभी ख़त्म नहीं हुई। आप मेहमानों में चली जाएं।" उसने ज़रा झिझक कर पूछा– "आप किस की बीवी हैं?"

"बीवी नहीं दाश्ता।" औरत ने कहा और एक आला कमाण्डर का नाम लेकर कहने लगी– "कम्बख़्त के पास बेशुमार दौलत है। यहाँ आकर उसे एक और मिल गयी। मुझे भी

आज़ाद नहीं करता। मुझ पर इन जेज़्बात का नशा तारी रहता है जो अपने दिल की पसन्द या नापसन्द के पाबन्द होते हैं या शायद दिल उन का पाबन्द होता है। यह वह जज़्बात हैं जो यह नहीं देखते कि जो इन्सान दिल पर काबिज़ हो गया है वह बादशाह है या गुलाम। मुझे तुम्हारी हैसियत से कोई गर्ज़ नहीं। मुझ से दूर न भागना। यह ज़ुल्म होगा। तुम पहले इन्सान हो। जिसे मेरे दिल ने पसन्द किया है। मैं जिस्मानी आसूदगी की प्यासी नहीं। मेरी रूह प्यासी है। इसकी प्यास तुम्हारी आँखों चश्में बुझा सकते हैं......अब जाओ। कल रात तुम्हें ख़ूद ढूंढ लूंगी।"

❖

जिस वक़्त चंगेज़ इस औरत के साथ बाग़ में था विक्टर मेहमानों में घूम फिर रहा था। उसके कान उन चन्द एक सलीबियों की बातों पर लगे हुए थे जिन्हें यह फ़ैसला करनाथा कि पेशक़दमी किस तरफ से की जाजए, हम्ला कहाँ किया जाए। उसे काम की कुछ बातें मालूम हुईं लेकिन यह अभी तजवीजें और मशवरे थे। राशिद चंगेज़ भी मेहमानों में चला गया और रिनॉल्ट के इर्द गिर्द घूमने लगा। रिनॉल्ट अपने साथियों से अपना वही अज़्म दुहरा रहा था जिसका उसने कान्फ्रेंस में इज़्हार किया था। उसके पास इतनी ज़्यादा जंगी ताक़त थी जिसके जोर पर वह बड़े ऊंचे दावे कर रहा था।

रात गुज़र गयी। अगले दिन चंगेज़ के पास एक आदमी आया जो उसके गिरोह का जासूस था। उसने उसे पैग़ाम दिया कि आधी रात के लगभग इमाम के पास जाए। कोई ज़रूरी बात करनी थी......दिन गुज़रा। रात आई। चंगेज़ और विक्टर रिमाण्ड के खाने के कमरे में अपनी ड्यूटी पर चले गये। रात बहुत देर बाद फ़ारिग़ हुए। चंगेज़ ने अभी विक्टर को नहीं बताया था कि एक औरत उसकी दोस्ती की ख़्वाहां है। फ़ारिग़ होकर उसने विक्टर को बताया कि वह कपड़े बदल कर इमाम के यहाँ जा रहा है। विक्टर ने उसे चन्द एक बातें बतायीं जो इमाम को बताने वाली थीं।

चंगेज़ ने कपड़े बदले और मस्नूई दाढ़ी चेहरे पर बांध कर चेहरा उमामे में छुपा लिया। वह कमरे से निकल कर अंधेरे में चला गया। उस इमारत से कुछ दूर सर सब्ज़ मैदान था जिस में दरख़्तों की बुहतात थी। फूलदार पौधे भी थे और उसके इर्द गिर्द कोई आबादी नहीं थी। उसे इस कुदरती बाग़ में से गुज़र कर जांना था। उसमे दाखिल हुआ ही था कि किसी दरख़्त के पीछे से एक साया नमूदार हुआ और उसकी तरफ़ बढ़ने लगा। चंगेज़ ने पहला काम यह किया कि मस्नूई दाढ़ी उतार कर चुग़े के जेब में डाल ली। उसे ख़तरा था कि इस जगह वही आदमी हो सकता है जो इस जगह मुलाज़िम होगा और वह उसे पहचानता होगा। उसने रफ़्तार सुस्त कर ली, और आहिस्ता–आहिस्ता टहलने लगा।

साया दायें तरफ आ रहा था और जब क़रीब आया तो बोला– "मैंने कहा था न कि तुम्हें ख़ुद ढूंढ लूंगी।" और उसके साथ निस्वानी हंसी सुनाई दी। यह वही औरत थी।

"महल की घुटन ने दिमाग़ ख़राब कर दिया है।" चंगेज़ ने कहा– "हवाख़ोरी के लिए इधर निकल आया हूँ।"

"मैं तुम्हारे कमरे में आ रही थी।" औरत ने कहा– "इधर आते देखा तो तुम्हारे पीछे आने की बजाए इस तरफ आई ताकि कोई देख न ले......बैठोगे या टहलोगे? मैं सुराही और दो प्याले अपने साथ ले आई हूँ।" वह हंस पड़ी।

राशिद चंगेज़ ने उससे यह नहीं पूछा कि वह रहती कहाँ है और इतनी रात गये कहाँ से आ टपकी है और क्या जिसकी वह दाश्ता है वह उसे ढूंढेगा नहीं? वह इसी कदर समझ सका कि यह औरत जज़्बात से मग़लूब है और ख़तरे मोल ले रही है। चंगेज़ ने उससे राज़ लेने के इरादे से कहा– "तुम अपने कमाण्डर आका से निजात चाहती हो। यह तब ही मुम्किन हो सकती है कि वह लड़ाई पर चला जाए मगर ऐसा कोई इम्कान नज़र नहीं आता। वह कौन सी फ़ौज में है?"

"वह बाल्डून की फ़ौज की हाई कामन का जरनल है।" औरत ने जवाब दिया– "शायद लड़ाई पर चला जाए मगर वह मुझे और दूसरी लड़की को भी साथ ले जाएगा।"

"लड़ाई का कोई इम्कान है?" चंगेज़ ने पूछा– "वह यहाँ क्यों आया है?"

"यहाँ उसे बाल्डून ने इसी मकसद के लिए भेजा है कि लड़ाई का इम्कान पैदा किया जाए।" औरत ने जवाब दिया।

"सलाहुद्दीन अय्यूबी की फौज कहाँ है?" चंगेज़ ने पूछा।

"मैंने कभी तवज्जो नहीं दी।" उसने जवाब दिया– "तुम चाहो तो क पूछ कर बता दोगी।"

राशिद चंगेज़ ने उससे कुछ और बातें पूछीं। इस औरत को जो मालूम था उसने बताया और जो मालूम नहीं था उसके मुतअल्लिक कहा पूछ कर बता देगी।

"कोई लड़े कोई मरे तुम्हें इससे क्या?" औरत ने जज़्बाती लहजे में कहा– "अगर उसने मुझे मैदाने जंग में जाने को कहा तो मैं नहीं जाऊंगी। मैं उसकी बीवी नहीं। मैं न अपने मौजूदा आका की गुलाम हूँ न सुल्तान अय्यूबी के साथ मेरी दुश्मनी है। मुझे इतना ज़लील किया गया है कि मैं इन सब को जो अपने आप को सलीब के मुहाफ़िज़ कहते हैं ज़हर देकर मार देना चाहती हूं।" उसने चंगेज़ को बैठा लिया– "दोनों प्याले ज़मीन पर रखकर उनमें शराब उड़ेंली और एक प्याला चंगेज़ की तरफ बढ़ा कर बोली– "ऐसी तन्हाई और ऐसी तारीक रात के रूमान को लड़ाई की बातों में तबाह न करो। पियो।"

चंगेज़ के लिए मुश्किल पैदा हो गयी। वह डेढ़ साल से इन शराबियों में जिन्दगी बसर कर रहा था। अपने हाथों उन्हें शराब पिलाता था लेकिन उसने खुद कभी नहीं पी थी। इस गुनहगार माहौल में जहाँ उसे गुनाहों की बड़ी ही दिलकश दावतें मिलती थीं उस ने अपने ईमान को दाग़दार नहीं होने दिया था। अब उसे एक ऐसी औरत मिल गयी जिसकी विसासत से वह अपना फ़र्ज़ बेहतर तरीके से अदा कर सकता था लेकिन यह औरत उसे शराब पेश कर रही थी। ख़तरा था कि उसने इस जज़्बाती औरत की पेशकश ठुकराई तो वह उसके हाथ से निकल जाएगी। उसके लिए फ़ैसला करना मुश्किल हो गया कि फ़र्ज़ की अदाइगी की ख़ातिर शराब के दो घूंट पिये या इतनी कीमती औरत को ज़ाया कर दे।

"मुझे शराब पसन्द नहीं।" उसने कहा।

ख़ुदा ने तुम्हें मर्दाना शुजाअत का बड़ा ही दिलकश मुजस्मा बनाया है।" औरत ने कहा– "लेकिन शराब कुबूल न करके तुम साबित कर रहे हो कि तुम पत्थर का बेजान मुजस्समा हो।"

कुछ देर इन्कार व इसरार करने का तसादुम जारी रहा। चंगेज़ ने इस हसीन औरत को अपने जाल में फांसने के लिए उसके हाथ से प्याला ले लिया, फिर अपने मुंह से लगा लिया। औरत ने उसके प्याले में और शराब डाल दी। चंगेज़ ने कांपते हुए हाथों से प्याला होंठों से लगा लिया और आहिस्ता–आहिस्ता प्याला खाली कर दिया। थोड़ी देर बाद वह महसूस करने लगा कि जैसे उसके ख़्यालात और नज़रियात की दुनिया में भूंचाल आ गया हो। उसके इर्द गिर्द दिवारें गिर पड़ेंगी और वह आज़ादी के एहसास से लुत्फ अन्दोज़ होने लगा जैसे काल कोठरी से रिहा कर दिया हो।

वह निस्वानी जिस्म के लम्स से आशना नहीं था। उसने शादी नहीं की थी। जासूसी के लिए उसे जो मुन्तख़ब किया गया था उसकी एक वजह यह थी कि वह ग़ैर शादीशुदा था और पीछे का उसे कोई ग़म नहीं था मगर इस सूरतेहाल में जब एक दिलकश औरत उसे शराब पिलाकर उसके साथ लगकर बैठ गयी थी उसका शादीशुदा न होना उसकी बहुत बड़ी कमज़ोरी बन गयी थी। यह औरत उसे गुनाह की दावत नहीं दे रही थी। उससे उस मोहब्बत की भीख मांग रही थी जो रूह को मसरूर और मख़्मूर कर दिया करती है। चंगेज़ की फ़ितरत में चूंकि गुनाह का उन्सर नहीं था इसलिए उसके ज़ेहन में कोई बेहूदा इरादा न आया मगर इस सलीबी औरत के रेशमी बालों के लमस ने, उसकी प्यासी–प्यासी और जज़्बाती बातों ने और उसके सूडौल बाज़ूओं ने और उसके नर्म व गुदाज़ गालों ने उसे राशिद चंगेज़ भी नहीं रहने दिया था जो शराब के चन्द घूंट हलक़ से उतरने से पहले था। रात गुज़रती जा रही थी।

वह जब जुदा होने के लिए उठे तो औरत ने उससे पूछा– "तुमने मुझ से लड़ाई के मुतअल्लिक कुछ बातें पूछी थीं। मुझे सबकुछ मालूम नहीं। अगर तुम अपने तमाम सवालों का जवाब चाहते हो तो मैं कल रात जवाब फ़राहम कर दूंगी।"

अचानक चंगेज़ के अन्दर वह चंगेज़ बेदार हो गया जो सुल्तान अय्यूबी का जासूस था। उसे अपने फ़राईज़ याद आ गये और उसे यह भी याद आ गया कि उस पर शराब और एक हसीन औरत का नशा तारी है और उसे बहुत मोहतात होना चाहिए चुनांचे उसने औरत से कहा– "मुझे भी तुम्हारी तरह लड़ाई के साथ कोई दिलचस्पी नहीं। मैं आराम और सकून की जिन्दगी का शैदाई हूँ। अगर मेरे सवालों का जवाब ला सका तो मुझे यह पता चल जाएगा कि हमारी फौज जिधर से हम्ला करने जा रही है उधर मुझे भी जाना पड़ेगा और वह जगह और इलाका कौन सा होगा। शराब साथ जाएगी, मुलाज़िम साथ जाएंगे इसलिए मुझे भी साथ जाना पड़ेगा।"

वापस आकर उसने उसी वक़्त विक्टर को जगाना मुनासिब न समझा। उसे रंज इस बात का हो रहा था कि वह इमाम से मिलने जा रहा था मगर रास्ते में इस औरत ने रोक लिया और उसे कहीं से कहीं पहुँचा दिया। रात का आख़िरी पहर था। सलीबियों की इस अय्याश दुनिया

में सुबह सवेरे जागने का कोई भी आदी नहीं था। चंगेज़ इमाम के पास जा सकता था मगर मुंह में शराब की बू लिए हुए वह मस्जिद में जाने से डर रहा था। उसके दिल पर यह बोझ भी सवार हो गया कि शराब नोशी बहुत बड़ा गुनाह है जिसका वह इरतकाब कर चुका था। उसके बावजूद उसे जब उस औरत का ख़्याल आया तो उसमे उसे कोई ऐब नज़र नहीं आया बल्कि उस पर उसकी मोहब्बत का ख़ुमार अज़सरे नौ सवार हो गया। औरत के ख़्याल के साथ कोई गुनाह वाबस्ता नहीं था। यह पाक मोहब्बत का सुरूर था जिस से वह दस्तबरदार होने को तैय्यार नहीं था.....वह लेट गया और उसकी आँख लग गयी।

उसे विक्टर ने जगाया। सूरज ऊपर उठ आया था। विक्टर ने पहली बात यह पूछी–"इमाम से मिल आए थे? क्या बात थी?"

"नहीं।" चंगेज़ ने विक्टर को हैरान कर दिया– "मैं मस्जिद तक नहीं जा सका।" उसने विक्टर को तमाम तर वाक़िआ सुना दिया और कहा– "अगर मैं शराब पिए हुए न होता तो मैं उस औरत से जुदा होने के बाद भी जा सकता था।"

"फ़िर तुम कोशिश करो कि आइन्दा शराब न पिओ।" विक्टर ने उसे कहा– "अगर उस औरत को अपने हाथ में रखने के लिए उसके कहने पर दो घूंट पी ही लिए थे तो तुम्हें अपने फ़र्ज़ से कोताही नहीं करनी चाहिए थी। इमाम तुम्हारे इन्तज़ार में परेशान हो रहा होगा। दिन के वक़्त जाना ठीक नहीं। आज रात ज़रूर जाना।" विक्टर ने उससे पूछा– "तुम अनाड़ी नहीं हो चंगेज़! खुद समझ सकते हो कि उस औरत की नीयत क्या है और क्या वह तुम्हारे साथ दिली मोहब्बत करती है? तुम्हें धोखा तो नहीं दे रही या तुम्हें जिस्मानी जज़्बे की तस्कीन का ज़रिआ बनाना चाहती होगी। यह तो उसके फ़रिश्तों को भी मालूम नहीं हो सकता कि तुम जासूस हो। मैं तुम्हें यह कहना ज़रूरी समझता हूं कि औरत के जादू ने फिरऔनों जैसे बादशाहों को तख़्त से उठा कर कूड़े करकट में गुम कर दिया है। ख़ुद अपनी क़ौम को देख लो। सलीबियों की भेजी हुई लड़कियों ने मिस्र में बग़ावत तक कराई है। सुल्तान अय्यूबी के क़ाबिले एतमाद सालारों को ग़द्दार बनाया है।"

"मैं इतना कच्चा तो नहीं विक्टर भाई!" राशिद चंगेज़ ने कहा– "यह औरत मज़लूम नज़र आती है। वह बेशक दाश्ता है लेकिन शहज़ादी है, इस्मत फ़रोश नहीं। ऐश ईशरत और माही आसाइशों के लिहाज से मैं उसे शहज़ादी कहता हूँ लेकिन जज़्बाती लिहाज़ से वह मज़्लूम है। वह पाक मोहब्बत की प्यासी है। मैंने उसके जिस्म के साथ दिलचस्पी का इज़हार किया है न करूंगा लेकिन उसकी मोहब्बत को मैं ठुकरा कर उसे मज़ीद मज़लूम नहीं बनाना चाहता। तुम यह न समझो कि मैं उसी का होके रह जाऊंगा। उसे वह मोहब्बत भी दूंगा जिसकी उसे ज़रूरत है और उससे वह राज़ भी ले लूंगा जिसकी मुझे ज़रूरत है।"

"तुम दिल से उसे चाहने लगे हो?"

"हाँ विक्टर!" चंगेज़ ने जवाब दिया–"मैं तुम से कुछ छुपाऊंगा नहीं। वह मेरे दिल में उतर गयी है।"

"दिल में उतर जाने वालियां पांव की ज़ंजीरें बन जाया करती हैं चंगेज़!" विक्टर ने

कहा– "मैं इसके सिवा और क्या कह सकता हूँ कि सबसे मुकद्दम और मुकद्दस फ़र्ज़ है। फ़र्ज़ और मोहब्बत के दर्मियान, नशे और होश के दर्मियान, ईमान और जज़्बात के दर्मियान कोई दिवार नहीं होती जिसे फलांगना दुश्वार हो, बाल जैसी बारीक एक लकीर होती है जो ज़रा सी लग़्ज़िश से नज़र से ओझल हो जाती है और इन्सान इधर से उधर चला जाता है। कहीं ऐसा न हो कि उससे राज़ लेते–लेते अपने आपको उसके आगे बेनकाब कर दो।"

राशिद चंगेज़ ने कहकहा लगाया और विक्टर की रान पर हाथ मारकर बोला– "ऐसा नहीं होगा मेरे दोस्त, ऐसा नहीं होगा।"

"और याद रखो।" विक्टर ने कहा– "शराब का तअल्लुक शैतान के साथ है। जो सिफ़ात शैतान में हैं, वह शराब में हैं। इसका आदी न हो जाना। इस औरत को खुश करने के लिए इतनी न पी लेना जिससे तुम्हारी अकल ठीकाने न रहे।"

"इमाम तक यह पैग़ाम पहुंचाना ज़रूरी है कि मैं रात किसी मजबूरी की वजह से नहीं आ सका, आज रात आऊंगा।" चंगेज़ ने कहा।

"बाज़ार चले जाओ।" विक्टर ने कहा।

उनके दो चार साथी बाज़ार में दुकानदार थे। मामूली सी पैग़ाम रसानी इनके मारफ़त हो सकती थी। अहम और नाज़ुक राज़ उन्हें नहीं दिए जाते थे। विक्टर ख़ुद बाज़ार चला गया और ऐसे एक आदमी से मिल कर आ गया।

❖

अगली रात चंगेज़ अपने काम से जल्दी फ़ारिग़ हो गया। अपने कमरे में जाकर उसने वर्दी उतारी, दूसरे कपड़े पहने और मस्नूई दाढ़ी कपड़ों में छुपा ली। उसे डर था कि वह औरत उसे अचानक मिल गयी तो दाढ़ी का राज़ फाश हो जाएगा। उसका इरादा यह था कि इमाम से मिल कर वापस उसी जगह आ जाएगा जहाँ औरत से मिलना था। वह उसी रास्ते से गया। यही रास्ता महफ़ूज़ था और छोटा भी था। वह उस जगह दाख़िल हो गया जहाँ सब्ज़ा, पौधे और दरख़्त थे। वस्त में गया तो उसे मानूस साया एक तरफ से नज़र आता नज़र आया। चंगेज़ भाग नहीं सकता था। साया करीब से नमुदार हुआ था। फौरन ही उसके सामने आ गया और बोला–"आज तुम जल्दी आ गये। मेरी मोहब्बत का असर है।"

"और तुम यहाँ इतनी जल्दी क्यों आ खड़ी हुई थी?" चंगेज़ ने पूछा–"फ़ौज ने अभी आधी रात का घड़ियाल तो नहीं बजाया।"

"मेरा दिल कह रहा था कि तुम घड़ियाल की आवाज़ से पहले आ जाओगे।" औरत ने कहा।

"लेकिन मुझे यह तवक्को नहीं थी कि तुम इतनी जल्दी आ जाओगी।" चंगेज़ ने कहा– "मैं किसी काम से जा रहा था वापस यहीं आना था।"

"अगर ज़रूरी है तो जाओ।" औरत ने कहा– "मैं सारी रात तुम्हारा इन्तज़ार यहीं करूंगी।"

"अब तो यहां से हिल भी नहीं सकूंगा।" चंगेज़ ने उसे बाज़ूओं के घेरे में लेते हुए कहा। औरत के खुले बालों की महक और कपड़ों पर लगे हुए अतर ने उसे दिवाना बना डाला

लेकिन अपने आप को इस हद तक होशमन्द और चौकन्ना रखा कि इमाम के पास जाना मुल्तवी कर दिया। उसने सोंचा कि यह औरत आख़िर सलीबी है। इसके दिल में अपने आका के खिलाफ़ नफ़रत हो सकती है, अपनी क़ौम और सलीब को धोखा नहीं दे सकती। चंगेज़ यह ख़द्शा महसूस कर रहा था कि वह इमाम की तरफ गया तो यह औरत किसी और शक की बुनियाद पर उसके पीछे न चल पड़े। चुनांचे उसने मोहब्बत की शिद्दत का इज़हार करके आगे जाना मन्सूख़ कर दिया।

औरत ने प्याले ज़मीन पर रखे और सुराही से उनमें शराब डाल कर एक प्याला चंगेज़ को देने लगी। चंगेज़ शराब नहीं पीना चाहता था। उसने एक बहाना सोंच लिया।

"तुम अगर ज़हर का प्याला दोगी वह भी पी लूंगा।" चंगेज़ जज़्बात से झूमते हुए बोला– "शराब नहीं पीऊंगा।"

"तुम ईसाई होते हुए शराब से क्यों नफ़रत करते हो?"

"शराब का नशा तुम्हारे हुस्न और तुम्हारी मोहब्बत के नशे पर ग़ालिब आ जाता है।" चंगेज़ ने कहा– "जिस तरह तुम्हारे दिल ने ज़र व दौलत और ऐश व ईशरत को कुबूल नहीं किया क्योंकि उनकी मुसर्रत मस्नूई और जिस्मानी है, उसी तरह मेरा दिल शराब को कुबूल नहीं करता क्योंकि इसका नशा मस्नूई है। मुझ पर अपना ख़ुमार तारी करो।"

औरत ने उसका सर अपनी आगोश में रख लिया और उस पर अपना ख़ुमार तारी कर दिया। इससे पहले चंगेज़ ने उसके साथ जो बातें की थीं, उनमें बनावट व झूठ था, अब उसकी अक्ल पर और उसके जज़्बात पर यह औरत ग़ालिब आ गयी। उसी लज़्ज़त के आगयीं ख़ुमार में उसने ख़ुद प्याला उठाया और एक ही साँस में ख़ाली कर दिया।

"और डालो।" उसने कहा।

औरत ने उसका प्याला भर दिया, जो वह आहिस्ता–आहिस्ता पीने लगा। फिर वह उस औरत में गुम हो गया।

"हम कबतक चोरी छुपे मिलते रहेंगे?" औरत ने कहा– "ज़रा ग़ौर करो मैं कैसी अज़ीयत में मुब्तला हूँ। मेरे जिस्म का मालिक कोई और है और दिल के मालिक तुम हो। तुम्हारी मोहब्बत ने उसकी नफ़रत को और ज़्यादा कर दिया है। मैं अब उसे बर्दाशत नहीं कर सकती। आओ यहाँ से भाग चलें।"

"कहाँ जायेंगे?" चंगेज़ ने पूछा।

"दुनिया बहुत वसीअ है।" औरत ने कहा–"यहाँ से मुझे निकालो।" मेरे जज़्बात की जवानी को एक बूढ़ा कुचल और मसल रहा है।"

"चले चलेंगे।" चंगेज़ ने कहा– "थोड़े दिन ठहर जाओ......मेरे सवालों का जवाब लाई हो?"

"हाँ।" औरत ने कहा– "हमारी फ़ौजें जमा हो रही हैं.......उसने तफसील से बताया कि किस–किस की फ़ौज कहाँ–कहाँ इज्तमाअ करेगी और उनका इरादा क्या है लेकिन अभी आख़िरी प्लान का उसे इल्म नहीं हो सका था। चंगेज उससे कुरेद–कुरेद कर पुछता रहा।

वह जब वहाँ से उठे तो एक दूसरे के दिल में पूरी तरह समा चुके थे।

❖

"मैं इमाम तक तो नहीं पहुंच सका लेकिन उस औरत से कुछ नयी मालूमात ले आया हूँ।" चंगेज़ ने विक्टर को बताया– "वह मेरे जाल में आ गयी है और मेरे हाथ में खेलती रहेगी।"

"मेरा ख़्याल है कि तुम भी उसके जाल में आ गये हो।" विक्टर ने कहा– "तुम्हारा अन्दाज़ बता रहा है कि उसका तीर तुम्हारे दिल में उतर गया है।"

"मैंने तुम्हे बता दिया था कि वह मेरे दिल में उतर गयी है।" चंगेज़ ने कहा– "अब तो उसने यह भी कह दिया है कि वह मेरे साथ भाग चलेगी लेकिन मैंने उसे कहा है कि कुछ दिन और इन्तज़ार करे। मैं उसे यहाँ से निकाल ले जाऊंगा। मैंने इरादा कर लिया है कि सलीबियों का मंसूबा मालूम हो जाए तो यह राज़ मैं ख़ुद काहिरा ले जाऊंगा और इस औरत को भी साथ ले जाऊंगा।"

"उसे कब बताओगे कि तुम मुसलमान हो और यहाँ जासूसी के लिए आये थे?"

"मिस्र की सरहद में दाख़िल होकर।" चंगेज़ ने जवाब दिया– "यहाँ उसे थोड़े ही बतादूंगा।"

चंगेज मोहब्बत के नशे में सरशार था। वह सलीबियों का राज़ मालूम करने के लिए जिस क़दर बेताब था उससे ज़्यादा बेचैन उस औरत से मिलने के लिए था। वह ख़ुद महसूस कर रहा था कि उसके सोंचने के अन्दाज़ और उसकी रोज़ मर्रा हरकात व सकनात में नुमाया तबदीली आ गयी है। पहली बार उसने शराब पी ली थी तो अगले रोज़ वह पछतावे से परेशान रहा था, मगर गुज़िश्ता रात उसने अपनी मर्ज़ी से शराब का प्याला उठा लिया था और अब वह पछतावे से आज़ाद था। यह बहुत बड़ी तबदीली थी।

उस शाम उसे अचानक बताया गया कि चन्द एक सलीबी हुक्मरान और उनके आला कमाण्डर आ रहे हैं। रिमाण्ड मेज़बान था। उसने शराब की महफ़िल का इहतिमाम किया था। रात जब मेहमान आये तो यह हुजूम नहीं था। चन्द एक ख़ुसूसी मेहमान थे जो इस अम्र का सबूत था कि यह दावत कम और इज्लास ज़्यादा है। विक्टर और चंगेज़ ख़ास तौर पर सरगर्म और मुस्तैद थे। इस दावत के लिए उन्होंने खाना पेश करने के मुलाज़िमों का बाक़ायदा इन्तख़ाब किया था। इस महफ़िल में सलीबियों की इन्टेलीजेंस का सरबराह हरमन भी मौजूद था........शराब का दौर चलने लगा और हम्ले की बातें होने लगीं। अब के जो बातें हो रही थीं वह तजावीज़ नहीं बल्कि फ़ैसले की हैसियत रखती थी। उनमें प्लान का ख़ाका भी था और उन बातों से यह भी ज़ाहिर होता था कि कूच जल्दी किया जाएगा।

हरमन से उसके मुहक्कमे के सरगर्मियों के मुतअल्लिक़ पूछा गया। उसने बताया कि जहाँ जहां सलीबी फौज है वहां महकमे को सरगर्म कर दिया गया है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के जासूसों का सुराग़ लगाकर उन्हें पकड़ा जाए। त्रीपोली में जहाँ सलीबी फौज का सबसे बड़ा इज्तमाअ हो रहा है जासूसों को पकड़ने के ख़ुसूसी इन्तज़मात कर दिए गयेऔर हरमन ने बताया कि यहाँ जासूसों के एक गिरोह का सुराग़ मिला है। उस गिरोह को बेकार करने की

कोशिश की जा रही है। हरमन ने कहा– "सिर्फ एक आदमी पकड़ गया तो उसके ज़रिए पूरे गिरोह का सुराग़ मिल जाएगा। काहिरा के जासूसों को हिदायात भेज दी गयी हैं। उधर से कल ही एक आदमी आया है। उसने बताया है कि सुल्तान अय्यूबी ने भर्ती और ट्रेनिंग तेज़ कर दी है और वह योरूशलम की तरफ पेशक़दमी करने का इरादा रखता है।"

सलीबियों के इज्लास में चंगेज़ और विक्टर को इतनी मालूमात हासिल हो गयीं कि अगर यही क़ाहिर पहुंचा दी जाएं तो सुल्तान अय्यूबी के लिए काफी थीं। उसे यह इत्तलाअ बहुत जल्द मिलनी चाहिए थी कि सलीबी अन्क़रीब पेशक़दमी कर रहे हैं और उनका रुख़ हरान और हलब की तरफ है।

महफ़िल बर्ख़ास्त हुई। चंगेज़ और विक्टर आधी रात के बाद फ़ारिग़ हुए। चंगेज़ को इमाम के पास जाना था। उसने हर रात की तरह कपड़े बदले और मस्नूई दाढ़ी कपड़ों में छुपाली। आज रात चूंकि बहुत देर हो गयी थी, इसलिए उसे यह ख़तरा नहीं था कि औरत उसे रास्ते में मिल जाएगी। वह इत्मीनान से बाहर निकल गया।

❖

उसकी तवक्क़ो ग़लत साबित हुई। वह उस सर सब्ज़ बाग़ से गुज़र रहा था कि औरत ने उसे रोक लिया। चंगेज़ ने यह भी न सोंचा न उससे पूछा कि वह कहां रहती हे और उसे कहाँ से देख लेती है। वह तो मालूम होता था जैसे उसी जगह कहीं रहती थी जहाँ उसे चंगेज़ के क़दमों की आहट सुनाई देती और वह बाहर आ जाती हो। चंगेज़ ने इस पर ग़ौर न किया। उसे दर असल ग़ौर करने की मुहलत ही नहीं मिलती थी। औरत उस के ज़ेहन और दिल पर ग़ालिब आ जाती थी और वह सब कुछ भूल जाता था। आज रात भी वह इमाम के पास नहीं जा सकता था मगर उसका उसे अफसोस न हुआ। औरत ने उसे जज़्बात में उलझा लिया था। आज वह मज़्लूमियत का इज़्हार ऐसी दिवानगी से कर रही थी जिस से चंगेज़ के पांव उखड़ गये।

"मुझे पनाह में ले लो।" औरत ने जज़्बात से लरज़ती हुई आवाज़ में कहा– "देखने वाले मुझे शहज़ादी और मलिका समझते हैं मगर मेरी जिन्दगी ऐसा जहन्नम है जिसे तुम क़रीब से देखो तो सर से पांव तक कांप उठो। मै मुसलमान माँ बाप की बेटी हूँ। मेरी ख़ूबसूरती ने मुझे ऐसी अज़ीयत में डाला है जो बढ़ती जा रही है ख़त्म होती नज़र नहीं आती। पन्द्रह साल की उम्र में मेरे मां–बाप ने मुझे एक अरबी ताजिर के हाथ फ़रोख़्त किया था। मेरा बाप ग़रीब आदमी नहीं था। हम छः बहने थीं। उसके दिल में पैसे का प्यार था बेटियों को वह बिल्कुल पसन्द नहीं करता था। मेरी दो बड़ी बहनें बाप के सलूक से तंग आकर अपने चाहनें वालों के साथ चली गयी थीं। मुझे उसने बेच डाला....

"एक साल बाद उस ताजिर ने मुझे तोहफ़े के तौर पर एक सलीबी अफसर के हवाले कर दिया। थोड़े अर्से बाद वह लड़ाई में मारा गया। मैं भाग गयी मगर जाती कहाँ। एक ईसाई ने मुझे पनाह दी मगर उसने मेरे जिस्म को कमाई का ज़रिआ बना लिया। मैं कोई सस्ती सी तवायफ़ नहीं थी। वह मुझे सलीबी फ़ौज के बहुत ऊंचे रुत्बे के अफ्सरों को चन्द दिनों के

लिए दाश्ता के तौर देता था। उस आदमी ने और उन सलीबियों ने जिनके हाँ मुझे भेजा जाता था, मुझे ज़ेवरात से लाद दिया और मुझे हर वह आसाइश दी जो महल में किसी शहज़ादी को मिलती है। इस लिहाज से मैं मुत्मईन और मस्रूर थी मगर मुझे रूहानी मुसर्रत नहीं मिलती थी। इसी पेशे में मेरा मेल जोल फ़ौजी अफ़सरों के साथ बढ़ गया। मैं तजुर्बाकार हो चुकी थी। मेरी रसाई हुक्मरानों और सब से बड़े ओहदों के कमाण्डरों तक हो गयी। उन्होंने मुझे जासूसी की तरबियत देकर एक दूसरे के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करना शुरू कर दिया। एक बार मुझे बग़दाद में भेजा गया था। वहां नुरूद्दीन ज़ंगी के एक सालार को उसके ख़िलाफ़ करना था। मैंने यह काम ख़ुश अस्लूबी से कर लिया था........

"मैं अगर अपने जासूसी के कारनामें तुम्हें सुनाने लगूं तो तुम हैरान रह जाओगे और शायद यकीन भी नहीं करो। ऐसे क़िस्से बड़े लम्बे हैं। इसी दौरान इस कमाण्डर ने मुझे दाश्ता रख लिया। यह बूढ़ा आदमी है। मुझे बहुत ऐश कराता है। मुझे बड़े फ़ख़्र से अपने साथ लिए फिरता है। वह शायद लोगों को यह धोखा देना चाहता है कि वह बूढ़ा नहीं और वह मुझ जैसी जवान औरत को ख़ुश व ख़ुर्रम रख सकता है। यह मेरी हर फरमाईश पूरी करता है। मैं उसके साथ अक्रा में थी। वहाँ इत्तफ़ाक से एक मुसलमान जासूस से मुलाकात हो गयी। वह दमिश्क से आया था।"

"उसका नाम क्या था?" चंगेज़ ने पूछा।

"नाम बता दूंगी तो तुम्हारे किस काम आयेगा।" औरत ने कहा– "तुम उसे जानते तो नहीं। मेरी बात सुनो। तुम्हारी मोहब्बत ने मेरी ज़ुबान की ज़ंज़ीरें तोड़ दीं और मेरे दिल के दरवाज़े खोल दिए हैं। मैं तुम्हारे आगे ऐसा राज़ फ़ाश कर रही हूँ जो मुझे क़ैदखाने में भेजवा सकता है जहाँ इन्सानी दरन्दे मुझे अज़ीयतनाक तरीक़ों से हलाक कर देंगे, लेकिन मैं तुम्हारे हाथ से मरना पसन्द करूंगी.......मैं कह रही थी कि दमिश्क का जासूस पकड़ा गया और उसे तहख़ाने में डाल दिया गया। मैं बहुत बड़े अफसर की चहीती दाश्ता थी। मैं उस जासूस का तमाशा देखने तहख़ाने में चली गयी। उसे ऐसी ज़ालिमाना अज़ीयतें दी जा रही थीं कि मुझ पर ग़शी तारी होने लगी। उससे पूछ रहे थे कि उसके दूसरे साथी कहाँ हैं और उसने अब तक कौन सा राज़ मालूम किया है........

"उसके पीठ से खून बह रहा था और उसका चेहरा नीला हो गया था, फिर भी वह कह रहा था। 'मेरी रगों में मुसलमान बाप का ख़ून दौड़ रहा है। अपने किसी साथी के साथ ग़द्दारी नहीं करूंगा।' मेरी रग–रग बेदार हो गयी। मेरी रगों मे भी मुसलमान बाप का ख़ून दौड़ रहा था। मेरे अन्दर एक इन्कलाब ज़लज़ले की तरह आया और मैं ने पक्का इरादा कर लिया कि इस मुसलमान को इस तहख़ाने से निकाल लूंगी। मैंने अपने आक़ा का ओहदा, अपने हुस्न का फ़रेब और तीन चार टुकड़े सोना इस्तेमाल किया और एक सुबह मेरे आक़ा ने मुझे ख़बर सुनाई कि तहख़ाने से मुसलमान जासूस फ़रार हो गया है। इस बूढ़े को मालूम नहीं था कि वह तहख़ाने से फरार नहीं हुआ था। मैंने उसे वहाँ से निकलवाकर ऊपर के हिस्से में मुन्तक़िल करा दिया था। जिस वक़्त मेरा आक़ा मुझे उस के फरार की ख़बर सुना रहा था

उस वक़्त मफ़रूर जासूस उसी शहर में मौजूद था। मैंने अपने एक मुसलमान मुलाज़िम से उसके छुपने का बन्दोबस्त कर लिया था......

"वह तुम्हारी तरह ख़ूबसूरत जवान था। तहख़ाने में उसे लाश बना दिया गया था। मैंने उसे ताक़त की दवायें और ग़िज़ा दी। मैं रात में चोरी छुपे उसके पास जाया करती थी। उसने मेरी ज़ात में ईमान बेदार कर दिया। मैंने उसे बता दिया था कि मैं मुसलमान की बेटी हूँ। यह आप बीती उसे भी सुनाई थीं जो तुम्हें सुना चुकी हूँ। उसने मुझे कहा कि मेरे साथ चली चलो। मैंने उसे कहा कि मुझे जासूसी के ढंग सिखा दो, मैं अपने मज़हब और अपने कौम के लिए कुछ करना चाहती हूँ। उसने मुझे अक्रा के तीन आदमियों के नाम पते बताए और फिर उन के साथ मुलाकात का इन्तज़ाम भी कर दिया। यह जासूस तन्दरूस्त हो गया तो मैंने उसे शहर से निकलवा दिया। उसके जाने के बाद मैं चोरी छुपे उसके साथियों से मिलती रही। वह मुझे जासूसी के सबक देते रहे, फिर अमली तौर पर उनके लिए काम करने लगी.....

"एक तो मैं इतने ऊंचे रूत्बे के फौजी अफसर की दाश्ता थी दूसरे मेरी ख़ुबसूरती और जवानी की बदौलत दूसरे अफ़सर मेरी दोस्ती के ख़्वाहिशमन्द रहते थे। मैं इस्मत का मोती तो गंवा ही चुकी थी। बेहयाई और शोख़ी मेरी आदत बन गयी थी। गुनाहगारों के साथ ज़िन्दगी बसर करके मैं फ़रेबकार भी हो गयी थी। मैंने उन लोगों को ख़ूब उंगलियों पर नचाया, उन्हें बड़े हसीन झांसे दिए और बड़े कीमती राज़ मुसलमानों को देती रही। यह जासूस मुझे सुल्तान अय्यूबी के मुतअल्लिक बातें सुनाया करते थे। मैं उसे फ़रिश्ता समझती हूं। मेरे दिल में यही एक ख़्वाहिश है कि अपनी कौम के लिए कुछ करती रहूँ औ एक बार सुल्तान अय्यूबी की ज़ियारत करूं। मैं उसी को हज समझूंगी.....

'अब मैं इस कमाण्डर के साथ यहाँ आ गयी हूँ। सलीबी बड़ी ही ज़्यादा ताकत से मुसलमानों पर फौजकशी कर रहे हैं। मुझे उन के तमाम राज़ मालूम हो चुके हैं। अब मुझे किसी ऐसे आदमी की ज़रूरत है जो सुल्तान अय्यूबी का जासूस हो।"

"तुम ने इतनी दिलेरी से यह राज़ क्यों फ़ाश कर दिया है?" चंगेज़ ने उससे पूछा—"तुम अगर वाकई जासूस हो तो बिल्कुल अनाड़ी हो। तुमने मेरे मोहब्बत पर एतमाद किया है। अगर मैं तुम्हें यह बता दूं कि मैं तुम्हारी निस्बत सलीब से ज़्यादा मोहब्बत करता हू और मेरी वफ़ादारियां सलीब के साथ हैं तो क्या करोगी? अक्लमन्द जासूस अपने फ़र्ज़ पर अपने बच्चों की मोहब्बत भी कुर्बान कर देते हैं।"

"मैं तुम्हें हकीकत बता दूँ तो मान जाओगे कि मैं अनाड़ी नहीं हूँ।" औरत ने कहा—"मैंने यकीन कर लिया था कि तुम ईसाई नहीं हो। मुसलमान हो और मिस्र के जासूस हो।"

राशिद चंगेज़ यूं चौंका जैसे उस औरत ने डस लिया हो। शराब का नशा और रूमान अंगेज़ जज़्बात का ख़ुमार यूं उतर गया जैसे कमान से तीर निकल गया हो। उसने कुछ कहने की कोशिश की तो उसने महसूस किया कि जैसे उसकी ज़ुबान अकड़ गयी हो।

उसे औरत की दबी—दबी हंसी सुनाई दी। औरत ने कहा— "कहो, मैं अनाड़ी हूँ?"

चंगेज़ के लिए जवाब देना मुहाल हो गया। अगर औरत वाकई मुसलमान थी तो क्या

चंगेज पर अपना आप ज़ाहिर कर देना चाहिए था? तरीका यह था कि एक गिरोह के जासूस अपने ही मुल्क के जासूसों के दूसरे गिरोह से भी बेगाना रहने की कोशिश करते थे। चंगेज़ को यह भी मालूम नहीं था कि औरत किस पाये की जासूस है। यह भी तो मुम्किन था कि वह दोग़ला खेल खेल रही हो। उसे यह भी मालूम था कि सुल्तान अय्यूबी ने सख़्ती से हुक्म दे रखा है कि किसी औरत को कहीं जासूसी के लिए न भेजा जाए। अगर यह औरत जासूसी कर रही थी तो अपने तौर पर कर रही होगी। वह ज़्यादा से ज़्यादा यह कर सकती थी कि जासूसों को मालूमात पहुंचा देती थी। ऐसी औरत पर एतमाद नहीं करना चाहिए था।

"ख़मोश क्यों हो गये?" औरत ने पूछा – "कह दो कि मैंने ग़लत कहा है।"

"तुमने बिल्कुल ग़लत कहा है।" राशिद चंगेज़ ने जवाब दिया– "और तुमने मुझे मुश्किल में डाल दिया है।"

"कैसी मुश्किल।"

"यह कि मैं तुम्हें गिरफ़्तार करा दूँ या मोहब्बत की ख़ातिर ख़ामोश रहूं।" चंगेज़ ने कहा– "मैं ईसाई हूँ, और पक्का सलीबी हूँ।"

वह ज़मीन पर बैठे थे। औरत ने अपने ज़ानू के नीचे से कुछ निकाला और यह चंगेज़ की गोद में रख कर कहा– "यह तुम्हारी मस्नूई दाढ़ी। कल जब तुम मेरे पास थे तो भी यह तुम्हारे चुग़े की जेब से निकाल ली थी, और फिर जेब में ही डाल दी थी। आज भी निकाल ली है।"

चंगेज़ उसकी हुस्न और उसकी मोहब्बत और शराब के नशे में ऐसा गुम हो जाता था कि उसे होश नहीं रहता था।

मैंने एक रात यह दाढ़ी तुम्हारे चेहरे पर देखी थी।" औरत ने कहा– "तुम इस दाढ़ी में कमरे से निकले थे। मैंने तुम्हें रास्ते में रोक लिया और जब तुमने मुझे बाज़ूओं में लिया था, मैंने तुम्हारे चुग़े की दोनों जेबों में हाथ डाला। मेरे एक हाथ ने दाढ़ी महसूस कर ली।"

"मस्नूई दाढ़ी से तुमने कैसे यक़ीन कर लिया कि मैं जासूस हूँ?"

तुम जिस अन्दाज़ से मुझ से फ़ौजों की आमदोरफ्त की बातें पूछते रहे हो यह अन्दाज़ जासूसों का है।" औरत ने कहा– " तुमने मुझे जिन सवालों के जवाब लाने को कहा था वह कोई और नहीं पूछ सकता। किसी आम आदमी के ज़ेहन में ऐसे सवाल आते ही नहीं और शराब से इन्कार सिर्फ मुसलमान कर सकता है।" वह बोलते–बोलते चुप हो गयी। बाज़ू चंगेज़ के गले में डाल कर और गाल उसके गाल से लगा कर बोली– "तुम मुझ से डर रहे हो। क्या तुम्हारा दिल मान नहीं रहा कि मैं मुसलमान हूँ? मैं तुम्हें अपना दिल किस तरह दिखाऊं। हम दोनों एक मंज़िल के मुसाफ़िर हैं। मैंने तुम्हें सुल्तान अय्यूबी का जासूस समझ कर दिल में नहीं बैठाया था। तुम मालूम नहीं क्यों अच्छे लगे थे। मुझे यूं लगा जैसे हम आसमानों में भी इकठ्ठे थे, ज़मीन पर भी इकठ्ठा हो गये हैं और हम इकठ्ठे उठाये जाएंगे.....कहो तो मैं तुम्हारे जासूस होने के कई और सबूत पेश कर दूँ। मैं तुम्हारी हिफ़ाज़त करूंगी, और मैंने यह इरादा भी किया है कि हम दोनों बहुत कीमती राज़ अपने साथ ले कर यहाँ से इकठ्ठ

निकलेंगे। अगर यह राज़ क़ाहिरा बर वक़्त न पहुंचा तो हरान, हलब, हमात, दमिश्क़ और बग़दाद तो सलीबियों के सैलाब में डूब ही जायेंगे मिस्र को बचाना भी मुम्किन नहीं रहेगा। सुल्तान अय्यूबी बिल्कुल बेख़बर है। वक़्त ज़ाया न करो। मैं यहाँ से अकेली नहीं निकल सकती, तुम्हारा साथ ज़रूरी है। मैं तुम्हें साथ लेक सैर के बहाने शहर से निकल सकती हूँ। तुम मेरे मुहाफ़िज़ होगे और कोई भी हम पर शक नहीं करेगा।"

राशिद चंगेज़ पर ख़ामोशी तारी हो गयी थी। औरत ने उसके प्याले में शरब उड़ेली और प्याला उसके हाथ में देते हुए मख़्मूर अन्दाज़ और जज़्बाती लहजे में कहा– "तुम घबरा गये हो। पी लो। यह शराब का आख़िरी प्याला है। इसके बाद हम इससे तौबा कर लेंगे।" उसने चंगेज़ पर अपने रेशमी बालों का साया कर लिया और प्याला उसके होंठों से लगा दिया। बालों के मुलायम लमस और महक ने निस्वानी जिस्म के मस और हरारत ने और शराब ने चंगेज़ की ज़ुबान से कहलवा लिया– "तुम वाक़ई जासूस हो वरना डेढ़ साल जासूसों के सबसे बड़े उस्ताद हरमन के साये में रहकर भी वह मुझे नहीं पहचान सका। मैं तुम्हारी ज़ेहानत का मुरीद हो गया हूँ। तुम ठीक कहती हो कि हम एक मंज़िल के मुसाफिर हैं। तुम मेरे साथ क़ाहिरा चलोगी।"

"बहुत देर हो गयी है।" औरत ने कहा– "कल यहीं मिलना। मैं तुम्हें वह बातें बताऊंगी जो तुम किसी भी तरह मालूम नहीं कर सकते।"

❖

रात का आख़िरी पहर था जब राशिद चंगेज़ अपने कमरे में पहुंचा। उसने विक्टर को कभी जगाया नहीं था। सुबह उसे रात की कहानी सुनाया करता था लेकिन उस रात उसपर हिजानी कैफ़ियत तारी थी। वह बहुत ही ख़ुश था। जो औरत उसे दिल दे बैठी थी वह मुसलमान थी, और तजुर्बाकार जासूस भी। यह ख़ुशी क्या कम थी वह बहुत ही ख़ूबसूरत औरत के साथ त्रीपोली से निकल रहा था। उसने उसी वक़्त विक्टर के कमरे में जाकर उसे जगाया और बताया कि यह औरत तो अपनी जासूस है। उसने विक्टर को इस औरत की सारी कहानी सुनादी।

"तुमने उसे बता दिया है कि तुम जासूस हो?" विक्टर ने पूछा।

"हाँ।" चंगेज़ ने जवाब दिया– "मुझे बता ही देना चाहिए था।"

"मेरे मुतअल्लिक़ भी बता दिया है?"

"नहीं।" चंगेज़ ने जवाब दिया– "तुम्हारे मुतअल्लिक़ कोई बात नहीं हुई।" विक्टर को ख़ामोश देखकर उसने कहा– "तुम समझ रहे हो कि मैंने ग़लती की है। मैं अनाड़ी तो नहीं विक्टर!"

"तुम ने यह भी अच्छा किया है कि मेरा ज़िक्र नहीं किया है।" विक्टर ने कहा– "और तुम यह दावा भी न करो कि तुम अनाड़ी नहीं हो।"

"क्या मैंने ग़लती की है?" चंगेज़ ने पूछा।

"हो सकता है तुमने बहुत अच्छा किया हो।" विक्टर ने कहा– "अगर यह ग़लती है तो यह

कोई मामूली ग़लती नहीं। तुम शायद यह भूल गये थे कि सिर्फ एक जासूस अपनी फ़ौज की फ़तह का बाइस बन सकता है और शिकस्त का भी। तुम जानते हो कि सुल्तान अय्यूबी सलीबियों की इन मक्कारियों से बेख़बर है। अगर हम पकड़े गये और यह राज़ हमारे साथ क़ैदखाने में चला गया या जल्लाद की नज़र हो गये तो सुल्तान अय्यूबी जो आज तक हर मैदान का फातेह कहलाता आया है तारीख़ में शिकस्त खुर्दा के ख़िताब से भी याद किया जाएगा।"

"नहीं!" चंगेज़ ने वसूक़ और खुद एतमादी से कहा– "यह मुझे धोखा नहीं देगी। वह मुसलमान है। मैं रात को उसे मिलने जाऊंगा। वह पूरा राज़ अपने साथ ला रही है। अब हमें इमाम के पास जाने की ज़रूरत नहीं। मैं राज़ खुद क़ाहिरा ले जाऊंगा। मेरे दिल की शहज़ादी मेरे साथ होगी....हाँ। मुझे ख़्याल आता है कि मेरी ग़ैर हाज़िरी से यहाँ किसी को यह शक न हो कि मैं कोई फौजी राज़ लेकर भागा हूँ। यह औरत भी मेरे साथ लापता होगी। तुम यह मशहूर कर देना कि तुमने मुझे और उसे चोरी छिपे मिलते देखा है और मैं इस औरत को भगा कर योरूशलम की तरफ निकल गया हूँ।"

विक्टर गहरी सोंच में खो गया और राशिद चंगेज़ नशे में झूमता रहा।

जिस वक़्त चंगेज़ विक्टर के कमरे में दाख़िल हुआ था, उस वक़्त थोड़ी दूर अफ़सरों के रिहाईशी कमरों में से एक में यह औरत दाख़िल हुई जो चंगेज़ पर मर मिटी थी। कमरे में रहने वाला सोया हुआ था। उस औरत ने बेतल्लुफ़ी से उसका एक टख़्ना पकड़ा और ज़ोर से झटका दिया और वह आदमी हड़बड़ा कर उठा। औरत ने हंस कर कहा– "उठो, शिकार मार लिया है।" उस आदमी ने क़ंदील जलाई और इस औरत को अपने बाज़ूओं में लेकर बिस्तर पर गिरा लिया। कुछ देर बेहयाई के नंगे मुज़ाहिरे हुए फिर उस सुराही में जिसमें यह औरत चंगेज़ के लिए शराब ले गयी थी जो शराब बची थी वह उस आदमी ने प्यालों में उड़ेली। दोनों ने प्याले खाली किये।

"अब कहो क्या ख़बर लाई हो।"

"वह जासूस है।" औरत ने कहा– "और मुसलमान है।"

"हरमन का शक सही साबित हुआ है।"

"हाँ सही!" औरत ने कहा– "शराब का और मेरा जादू काम कर गया है वरना हरमन जैसा माहिर सुराग़रसां भी उसे न पकड़ सकता। अगर उस की मस्नूई दाढ़ी मेरे हाथ न आजाती तो शायद मैं भी नाकाम रहती। मुझे शक तो वहीं हो गया था जब उसने पहले रोज़ शराब पीने से इन्कार कर दिया था। मैं जान गयी कि यह मुसलमान है। मैंने उसे कहा कि मैं पाक मोहब्बत के लिए तरस रही हूं तो उसने मुझे पाक मोहब्बत दी, वरना हमारे लोग औरत को देखते हैं तो सबसे पहले उसके कपड़े उतारते हैं।"

"मोहब्बत पाक हो नापाक औरत का जिस्म पहाड़ों को रेज़ा–रेज़ा कर देता है।" उस आदमी ने कहा– "यह कमज़ोरी हर इन्सान में मौजूद है। मैंने तुम्हें बताया था कि तुम्हारा हुस्न इस आदमी को बेनक़ाब कर देगा। औरत मुजस्सिम तौर पर पास हो या औरत का सिर्फ तसव्वुर हो, इन्सान अपने आप में नहीं रहता।"

यह आदमी सलीबियों के इन्टेलीजेंस का अफसर था और हरमन का नायब। हरमने को किसी तरह शक हो गया था कि राशिद चंगेज़ जासूस है। एक तो वह तजुर्बाकार था दूसरे उसे हुक्म मिला था कि जिस पर ज़रा सा भी शक हो कि जासूस है उसे पकड़ लो। चुनांचे उसने बड़े सख़्त इन्तज़मात कर दिए थे। राशिद चंगेज़ को शायद उन्होंने रात को मस्जिद में जाते देख लिया था। हरमन ने अपने नायब से कहा कि चंगेज़ को किसी औरत के जाल में लाकर देखो कि यह आदमी साफ़ है या मुश्तबाह। इस मुहकमे के पास इस मक़सद के लिए एक से एक कायां औरतें मौजूद थी। इस औरत को मुन्तख़ब किया गया और उसे चंगेज़ के पीछे डाल दिया। यह औरत अपने फ़न की माहिर थी। उसने यह ड्रामा खेला जो सुनाया गया है। चंगेज़ ने कभी भी न सोंचा कि हर रात वह कमरे से निकल कर इमाम के पास जा रहा होता है तो यह औरत रास्ते मे मिल जाती है, यह आती कहाँ से और उसे किस तरह पता चल जाता है कि चंगेज़ जा रहा है। वह साये की तरह उसके साथ लगी हुई थी।

"मैंने उसे अपनी दर्दनाक कहानी जो तुमने बताई थी सुनाई तो वह जज़्बाती हो गया।" औरत ने हरमन के नायब को सुनाया– "वह फौरन कायल हो गया कि मैं मुसलमान हूं और मैं वाक़ई सुल्तान अय्यूबी के लिए जासूसी कर रही हूं।"

"मुसलमान जज़्बाती कौम है।" हरमन के नायब ने कहा– "बल्कि यह अजीब व ग़रीब कौम है। मुसलमान मज़हब के नाम पर ऐसी–ऐसी कुर्बानियां दे गुज़रते हैं जो कोई और कौम नहीं दे सकती। मैदाने जंग में एक मुसलमान दस से लेकर पन्द्रह सलीबी सिपाहियों को मुक़ाबला कर सकता है और करता है। इसे ईमान की कुव्वत कहते हैं। मैं एअतराफ करता हूं कि मैं मुसलमान की इस रूहानी कुव्वत का कायल हो गया हूं। आठ–आठ या दस–दस छापामारों का हमारे अक़्ब में चले जाना, शबखून मारना, हमारी रस्द को नज़रे आतिश करके ग़ायब हो जाना, घेरे से निकल जाना, न निकल सकें तो अपनी लगाई हुई आग में जिन्दा जल जानाकोई मामूली बहादुरी नहीं। इसे माफ़ूकुल फितरत कहा जाता है। मैं तो इसे मुअज़्ज़िा कहा करता हूं.........

"मुसलमान की इस कुव्वत को कमज़ोर करने के लिए हमारे उन दानिश्वरों ने जो इन्सानी फ़ितरत की कमज़ोर रगों को समझते हैं ऐस तरीके वज़अ किये हैं जिन में मुसलमानों के मज़हबी जुनून को उनकी कमज़ोरी बना दिया गया है। यहूदियों ने इस सिलसिले में बहुत काम किया है। हमने यह कामयाबी चन्द एक यहूदियों और ईसाईयों को मुसलमानों के आलिमों और इमामों के बहरूप में भेजकर हासिल की है। मुसलमान इलाको की कई मस्जिदों के इमाम असल में यहूदी और ईसाई हैं। उन्होंने कुर्आन और हदीस की ऐसी तफसीरें मकुबूल कर दी हैं जिनमें मुसलमान ग़लत अक़ायद के पैरोकार होते जा रहे हैं। इन्हें अब मज़हब के नाम पर भाईयों के ख़िलाफ़ लड़ाया जा सकता है..

"हम ने मुसलमानों में जिन्सी जुनून भी पैदा कर दिया है। अब जिस मुसलमान के हाँ दौलत और इक़्तेदार आता है वह सबसे पहले हरम बनाता है उसे हसीन और जवान लड़कियों से भरता है। यह ज़नपरस्ती नीचे तक चली गयी है। हम ने कई तरीकों से मुसलमान के बेटों

में तसव्वुर परस्ती और ज़ेहीन अय्याशी का रुजहान पैदा कर दिया है। इसके अलावा मुसलमान जज़्बाती हैं। तुम ने देख लिया है कि इस मुसलमान जासूस के जज़्बात को तुमने छेड़ा तो वह तुम्हारे जाल में फंस गया। जज़्बातियत बहुत बड़ी कमज़ोरी है। हरमन कहा करता है कि मुस्तकबिल करीब में यह कौम तसव्वुरों की ग़ुलाम हो जाएगी, और हकीकत से दूर हट जाएगी, फिर हमें जंग व जदल की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। मुसलमान ज़ेहनी तौर पर हमारे ग़ुलाम हो जाएंगे। वह अपनी रिवायात को तर्क करके हमारे तहज़ीब व तमद्दुन को अपनाने में फख्र महसूस करेंगे।"

"मुझे नींद आ रही है।" औरत ने कहा– "मैंने तुम्हें एक शिकार दे दिया है। अभी उसे गिरफ़्तार कर लो।"

"नहीं।" इन्टेलीजेंस के नायब ने कहा– "अभी तुम्हारा काम ख़त्म नहीं हुआ। अगर उसे गिरफ़्तार करना होता तो उसके साथ यह नाटक खेलने की क्या ज़रूरत थी। तुम्हें इतनी ज़हमत न दी जाती। हम तो किसी को भी महज़ शक में गिरफ़्तार कर सकते हैं मगर इसे अभी गिरफ़्तार नहीं करेंगे। इससे उसके उन तमाम साथियों का सुराग़ लेना है जो त्रीपोली मे जासूसी कर रहे हैं। इनमें तबाहकार छापामार भी होंगे। हो सकता है इससे दूसरे शहरों के जासूसों की भी निसानदेही कराई जा सके। तुम उसे फिर मिल रही हो। उसे कहना कि तुमने तमाम तर राज़ मालूम कर लिया है, अब चन्द एक दूसरे जासूसों की भी ज़रूरत है। उसे यह भी कहना कि एक जगह सलीबियों ने बेअन्दाज़ा आतिशगीर मादा और कीमती सामान जमा कर रखा है जो हम्ले में साथ आयेंगे। उसे तबाह करना है, इसलिए यहाँ के ज़मीनदोज़ छापामारों से मेरी मुलाकात कराओ।"

"मैं समझ गयी हूँ।" औरत ने कहा– "लेकिन यह भी इम्कान है कि वह अपने साथियों से पर्दा न उठाये।" हरमन के नायब ने औरत के बालों पर, उरियां कंधों पर और उसके सीने पर हाथ फेर कर कहा– "क्या तुम्हारे यह हथियार बेकार हो गये हैं? उसने अपना चेहरा बेनकाब कर दिया है। उसने किले का दरवाज़ा खोल दिया है। तुम्हें अब अन्दर जाकर कोने खडे की तलाशी लेनी है। तुम यह काम भी कर सकोगी। मैं सुबह हरमन को तफ़सील से बता दूंगा कि तुमने यह कारनामा कर दिखाया है।"

❖

शाम के खाने पर जब चंगेज़ और विक्टर अपनी ड्यूटी सर अन्ज़ाम दे रहे थे हरमन आ गया। उसने चंगेज़ के साथ दोस्ताना अन्दाज़ से हाथ मिलाया और कहा– "तुम्हें मालूम है कि हमारी अफ़वाज तारीख़ की सबसे बड़ी मुहिम पर जा रही हैं। हम तुम्हें भी साथ ले जा रहे हैं। बहुत दूर की सैर करायेंगे। विक्टर भी साथ होगा। चूंकि दो तीन बादशाह साथ होंगे इसलिए तुम दोनों का साथ जाना ज़रूरी है।"

"मैं ज़रूर चलूंगा।" चंगेज़ ने कहा।

हरमन को रिपोर्ट मिल चुकी थी कि राशिद चंगेज़ जासूस है और आज रात उसके मुहकमे की एक जवां साल दिलनशीं औरत जिसने उसे बेनकाब किया है इससे उसके गिरोह

के दिगर अफ़राद के नाम और पते भी हासिल कर लेगी। हरमन ने इस औरत को नयी हिदायात दी थीं और अपने नायब से कहा था कि चंगेज़ के गिरोह का इंकशाफ़ होनेतक यह औरत उसे अकेले मिलती रहे और इतनी होशियार रहे कि चंगेज को शक न हो।

चंगेज़ का ध्यान अपने काम में था ही नहीं। वह लम्हे गिन–गिन कर गुज़ार रहा था। इतनी बड़ी कामयाबी उसने कभी भी हासिल नहीं की थी कि इतना अज़ीम राज़ उसे मिला हो और इतनी हसीन लड़की उसपर मर मिटी हो। उस रात को त्रीपोली में वह आख़िरी रात समझ रहा था। मुकम्मल राज़ लेकर उस और के साथ उसे अगले रोज़ त्रीपोली से निकल जाना था......वह आख़िर फ़ारिग़ हो गया और अपने कमरे में गया। विक्टर भी उसके साथ था। उसने कपड़े बदले। मस्नूई दाढ़ी न ली। ख़ंजर चुगे के अन्दर छुपा लिया।

"मैं तुम्हे आख़िरी बार कह रहा हूँ कि इस औरत और शराब के नशे से आज़ाद होकर और दिमाग़ को हाज़िर रखकर बात करना।" विक्टर ने उसे कहा– "मुझे ख़तरा महसूस हो रहा है कि तुम इस औरत की पूरी छानबीन किए बेग़ैर उसे अपने सारे राज़ दे दोगे।"

"सुनो विक्टर!" चंगेज़ ने अजीब लहजे में कहा– "मैं उस औरत के ख़िलाफ़ कोई बात नहीं सुनूंगा। मैंने उसके साथ बड़ी लम्बी मुलाक़ात की हैं। उसकी पूरी कहानी सुनी है। तुम उसे नहीं समझ सकते। मैं बेहतर समझता हूँ। मुझे पागल न समझो। यह मेरी पहली और आख़िरी मोहब्बत है।"

विक्टर चुप रहा। उसने चंगेज़ के लहजे से जान लिया था कि वह अपने आप में नहीं। उसे यह एहसास तो था कि चंगेज़ की शकल व सूरत और क़द बुत में इतनी कशिश है कि इस औरत से कहीं और ज़्यादा ख़ूबसूरत ऊंचे तब्के की औरतें भी उसे नज़र भर देखती हैं लेकिन इस औरत के मुतअल्लिक़ उसे वहम सा हो चला था कि चंगेज़ को धोखा दे रही है, और अगर वह धोखा नहीं दे रही तो चंगेज़ उसे अपनी असलियत बताकर अपने आप को ख़तरे में डाल रहा है। अगर यह औरत मुसलमान जासूस ही है तो इसपर भरोसा नहीं किया जा सकता क्योंकि उसे सरकारी तौर पर नहीं भेजा गया था। विक्टर को इत्मीनान महसूस नहीं हो रहा था।

चंगेज़ चला गया। विक्टर गहरी सोंच में खो गया। चंगेज़ के जाने के बाद वह सो जाया करता था मगर उस रात उसे नींद नहीं आ रही थी। अपने कमरे में जाकर वह लेटने की बजाए बेचैनी से टहलने लगा।

❖

औरत उसी जगह चंगेज़ के इन्तज़ार में खड़ी थी। उसके क़रीब ज़मीन पर शराब की सुराही और दो प्याले पड़े थे। अन्धेरे में चंगेज़ को साये की तरह आता देखकर वह दौड़ पड़ी और उसके साथ लिपट गयी जैसे बच्चा माँ के साथ लिपट जाता है। उसने ऐसे वालिहाना पन और ख़ुद सुपर्दगी का मुज़ाहिरा किया जिस ने चंगेज़ की अकल पर ख़ुमार तारी कर दिया और उसके जज़्बात बेदार हो गये। इस कायां औरत ने अपने हुस्न व जवानी के वह सारे हथियार इस्तेमाल किये जिन पर हरमन के नायब ने हाथ फेर कर कहा था कि तुम्हारे यह

हथियार बेकार तो नहीं हो गये।

"तुम मुझे धोखा तो नहीं दे रहे?" उसने चंगेज़ से रूंधी हुई आवाज़ में पूछा— "तुम्हारी मोहब्बत ने मुझे ऐसा बेबस और मजबूर कर दिया है कि मैं ने अपना इतना नाज़ुक राज़ तुम्हें दे दिया है।"

औरत उसकी कमर के गिर्द एक बाज़ू लपेटे उसे वहाँ ले गयी जहाँ सुराही और प्याले रखे थे। उसे वहाँ बैठाया और प्यालों में शराब डाल कर बोली— "फतह की ख़ुशी में एक जाम।" चंगेज इस क़दर मस्रूर था कि उसने फ़ौरन प्याला ले लिया और पी गया। औरत ने उसके प्याले में और शराब डाल दी। चंगेज़ ने वह भी पी ली। उनसे आठ दस क़दम पर एक दरख़्त था। कोई पीछे रेंगता हुआ आया और उस दरख़्त के तने की ओट में बैठ गया रात ख़ामोश थी। दरख़्त की ओट में बैठे हुए आदमी को चंगेज़ और औरत की सरगोशियां भी सुनाई दे रही थीं मगर वह सरगोशियों में नहीं ज़रा ऊंची आवाज़ में बातें कर रहे थे।

"अब बताओ क्या ख़बर लाई हो।" चंगेज़ ने औरत से पूछा।

"ऐसी ख़बर लाई हूं जो सुल्तान अय्यूबी ने कभी ख़्वाब में नही सुनी होगी।" औरत ने कहा— "मैं सलीबियों की मौत का परवाना लाई हूँ।" उसने चंगेज़ को सलीबियों का प्लान और पेशक़दमी का सारा रास्ता बता दिया और यह भी बताया कि वह कहाँ हम्ला करेंगे। उसने सलीबी फ़ौज की रस्द का रास्ता भी बताया और यह भी कि कूच कब होगा।

"हमे यहाँ से जल्दी निकल जाना चाहिए।" चंगेज़ ने कहा— "कल रात निकल चलें?"

"नहीं!" औरत ने कहा— "हमे जिस राज़ की ज़रूरत है वह मिल गया है लेकिन मेरे दिल में इन्तक़ाम की जो आग भड़क रही है मैं उसे सर्द करके जाऊंगी। सलीबियों ने अपनी फ़ौज के लिए रस्द जमा कर ली है। ख़ेमों और हथियारों का कोई हिसाब नहीं। आतिशगीर सयाल के मटके भी हैं। अनाज के अंबार हैं। यह ज़ख़ीरा दूर दूर तक फ़ैला हुआ है। उसे तबाह करना कोई मुश्किल नहीं। पहरे का इतना ही इन्तज़ाम है कि सात आठ सिपाही रात को गश्त करते हैं। मुझे मालूम है कि सलीबियों ने यह ज़ख़ीरा चार महीनों में जमा किया है। अगर हमने इसे नज़रे आतिश कर दिया तो इनका हम्ला तीन चार महीनों के लिए रुक जाएगा। इस अर्से में सुल्तान अय्यूबी अपनी तैय्यारियां मुकम्मल कर लेगा। तुम हरमन को जानते हो। मैंने उसके दिल से भी राज़ निकाल लिए हैं। उसने बताया है कि सुल्तान अय्यूबी नयी भर्ती कर रहा है और उसकी पहली फ़ौज अपने ही भाईयों के ख़िलाफ़ लड़कर इतना जानी नुक़सान उठा चुकी है कि लड़ने के क़ाबिल नहीं रही। यह बदबख़्त सलीबी अय्यूबी की इस कमज़ोरी से फ़ायदा उठाना चाहते हैं। इस वक़्त ज़रूरत यह है कि सलीबियों का कूच इल्तवा में डाला जाए। इसका वाहिद ज़रिआ यह है कि उनकी रस्द जला दी जाए। उनके जो हज़ारों घोड़े हैं उन्हें हलाक करने का इन्तज़ाम भी हो सकता है।"

"रस्द को आग कौन लगायेगा।" चंगेज़ ने पूछा।

"यह तुम्हें मालूम होगा कि यहाँ तुम्हारे कितने आदमी मौजूद हैं।" औरत ने कहा— "इनमें छापामार भी होंगे। यह काम उनके सुपुर्द किया जाए। यहाँ तुम्हारे कितने छापामार

मौजूद हैं?"

"सुल्तान अय्यूबी ने हुक्म दे रखा है कि दुश्मन के मक़बूज़ा इलाको में तबाहकारी न की जाए क्योंकि छापामार तो तबाहकारी के बाद इधर उधर हो जाते हैं तकलीफ़ बेगुनाह मुसलमान बाशिन्दों को मिलती है।" चंगेज़ ने कहा– "सलीबी उनके घरों में घुस कर उनकी मस्तूरात को भी परेशान करते हैं, इसलिए हमने छापामारों को वापस भेज दिया था। यहाँ जासूस हैं। वह तख़रीकारी भी कर सकते हैं। वह यहाँ के चन्द एक जवानों को तैय्यार कर सकते हैं।"

"इन्हें किसी जगह इकठ्ठा करने का इन्तज़ाम हो सकता है?' औरत ने पूछा और चंगेज़ के प्याले में शराब डाल कर अपने हाथों से प्याला उसे मुंह के साथ लगा दिया।

"हमने एक मस्जिद को ख़ुफ़िया अड्डा बना रखा है।" चंगेज़ ने शराब का प्याला पी कर कहा। उसने मस्जिद का महले वक़ूअ बता दिया और कहा– "इस मस्जिद का इमाम हमारी जमाअत का अमीर है। बहुत क़ाबिल और दिलेर इन्सान है। मैं आज रात ही उसे बता दूंगा। वह कल इन जवानो को मस्जिद में इकठ्ठा कर लेगा। वह सब नमाज़ पढ़ने के बहाने आजायेंगे।"

"सिर्फ़ एक क़ाबिल और दिलेर आदमी से काम नहीं चलेगा।" औरत ने कहा– "इमाम के साथ तुम होगे और तीन चार ज़हीन आदमियों का होना ज़रूरी है ताकि इस तबाहकारी का मंसूबा दान्शमन्दी से बने। यह ज़ख़ीरा उस वक़्त तबाह किया जाएगा जब हम दोनों यहाँ से निकल जाएंगे वरना शहर की नाका बन्दी हो जाएगी।"

"सिर्फ़ इमाम नहीं।" चंगेज़ ने कहा– "यहाँ हमारा एक से एक बढ़कर क़ाबिल आदमी मौजूद हैं।" उसने चन्द एक आदमियों के नाम बता दिए और कहा–"मैं इन सबको मस्जिद में बुला सकता हूँ।"

यह औरत चंगेज़ से यही राज़ लेना चाहती थी। उसने इस गिरोह के मुतअल्लिक़ कुछ और बातें पूछीं जो चंगेज़ ने बता दिया और कहा– "इस महल में मैं अकेला नहीं। मेरे साथ विक्टर नाम का जो आदमी है वह भी हमारे गिरोह में है।"

"विक्टर भी?" औरत ने चौंक कर कहा।

"हां!" चंगेज़ ने कहा– "क्या तुम हमारी उस्तादी की तारीफ नहीं करोगी कि हमने एक ईसाई को भी अपना जासूस बना रखा है?"

औरत कुछ देर ख़ामूश रही फ़िर बोली– "कल दिन को मैं तुम्हारे कमरे में आऊंगी। मुझे वहाँ आने से कोई नहीं रोक सकता।"

❖

औरत जाने के लिए उठी। दरख़्त की ओट में छुपे हुए आदमी ने हरकत की। उसने बैठे–बैठे कमरबन्द से ख़ंजर निकाला और आठ दस क़दम का फ़ासिला दो छलांगों में तय करके औरत को पीछे से एक बाज़ू से जकड़ लिया। उसका ख़ंजर वाला हाथ ऊपर उठा, तेज़ी से नीचे आया और ख़ंजर औरत के सीने में उतर गया। औरत की हल्की सी चीख़ सुनाई दी और यह आवाज़– "मेरे सीने में ख़ंजर उतर गया है।"

चंगेज़ ने ख़ंजर निकाला और ललकार कर उस आदमी पर हम्ला किया। उस आदमी ने घूम कर औरत को आगे कर दिया और कहा– "मैं विक्टर हूँ चंगेज़! इस बदबख़्त को ज़िन्दा नहीं रहना चाहिए।" औरत सिसक रही थी। विक्टर ने उसे पीछे से एक बाज़ू में दबोच रखा था।

"तुम ज़लील ईसाई!" चंगेज़ शराब के नशे में कह रहा था। "सांप के बच्चे निकले?" वह घूम कर उस पर हम्ला करने लगा।

विक्टर ने औरत को आगे कर दिया और उसे ढाल बनाकर बोला– "होश में आओ चंगेज़! तुमने इसे सबकुछ बताकर सारा खेल बर्बाद कर दिया है। अगर यह जिन्दा रही तो कल हम सब गिरफ्तार हो जाएंगे।

चंगेज़ बिफ़रे हुए चीते की तरह उसके इर्द गिर्द घूम और फुंफकार रहा था। लड़की अभी होश में थी। कराहते हुए बोली– "चंगेज़ मेरे ख़ून का इन्तकाम तुम्हारे सर है। ईसाई हमारे दोस्त नहीं हो सकते। मैं अब जिन्दा नहीं रहूंगी। यह हमारा नहीं सलीबियों का जासूस है।"

चंगेज़ जुस्त लगाकर विक्टर पर हमला किया। विक्टर ने बार–बार उसे कहा कि वह धोखे में आ गया है और इस औरत को क़त्ल करके लाश दूर फेंक आयेंगे मगर चंगेज़ अब जासूस नहीं वह मर्द बन चुका था जिसकी महबूबा को एक और मर्द ने पकड़ रखा था और उसके सीने में ख़ंजर भी उतार चुका था। उसने सामने से औरत को इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि विक्टर पीछे को गिरा और औरत उसके ऊपर गिरी। चंगेज़ ने विक्टर पर ख़ंज़र का वार किया। वह होशियार और फुर्तीला था। एक तरफ़ हो गया और उठा। चंगेज ने उस पर एक और वार किया। ख़ंजर उसके कंधे पर लगा।

विक्टर संभल कर जवाबी हम्ला किया। चंगेज़ का जिन्दा रहना ख़तरनाक था। विक्टर का ख़ंजर चंगेज़ के पेट में लगा। चंगेज़ ने खंज़र खाकर वार किया जो विक्टर के बाज़ू को चीर गया। उसने चंगेज़ के सीने में ख़ंजर मारा। चंगेज़ शराब के नशे में पांव पर खड़ा रहने के क़ाबिल नहीं था। विक्टर ने एक और वार उसके सीने पर ही किया और चंगेज़ गिर पड़ा। उसने औरत के दिल पर हाथ रखा। दिल ख़ामोश था। वह मर चुकी थी। चंगेज़ भी आख़िरी सांस ले रहा था। वह होश में नहीं था।

विक्टर के कंधे औ बाज़ू से ख़ून बह रह था। उसने औरत के कपड़े फाड़े और बाज़ू पर बांध लिए। कंधे के ज़ख़्म में कपड़ा ठूंस दिया ताकि ख़ून बन्द हो जाए। वह चल पड़ा। उसने रफ़्तार तेज़ कर ली। ज़ख़्मों पर कपड़ा बांध लेने के बावजूद ख़ून रूका नहीं। उसने परवाह न की और चलता गया। वह एक गली में दाख़िल हो गया और वह एक मोड़ मुड़ कर वह एक फराख़ गली में चला गया। त्रीपोली पर गहरी नींद तारी थी। गलियां सुनसान थीं। तमाम घरों के दरवाज़े बन्द थे। सिर्फ एक दरवाज़ा खुला हुआ था। यह ख़ुदा के घर का दरवाज़ा था। यह मस्जिद थी। वह इस मस्जिद में पहली बार आया था। चंगेज़ ने उसे बता रखा था कि कभी इस मस्जिद में जाने की ज़रूरत पड़े तो मस्जिद के सेहन में चले जाना। बायें दिवार में एक दरवाज़ा है जो इमाम के घर का है। विक्टर ने यह मस्जिद बाहर से देखी थी। यह सुल्तान

अय्यूबी के त्रीपोली में मौजूद जासूसों का ख़ुफ़िया हैडक्वार्टर था और मस्जिद का इमाम मस्जिद का ही नहीं जासूसों के इस गिरोह का भी इमाम था। विक्टर ने खुले दरवाज़े में दाख़िल होकर जूते उतार दिए।

❖

रात आधी गुज़र चुकी थी। इमाम गहरी नींद सोया हुआ था। दरवाज़े पर दस्तक ने उसे जगा दिया। उसने दानिस्ता तवक्कुफ किया। दस्तक एक बार फिर सुनने के इन्तज़ार में था। दस्तक फिर हुई। यह जासूसों की मख़ूसस दस्तक थी। फिर भी उसने लम्बा ख़ंजर हाथ में लिया और दरवाज़ा खोला। धीमी आवाज़ में कहा– "चंगेज़?"

"विक्टर।" विक्टर ने जवाब दिया– "अन्दर चलें।"

"ख़ून की बू कहाँ से आ रही है?" इमाम ने अंधेरे में विक्टर का बाज़ू थाम कर पूछा।

"यह मेरा ख़ून है।" विक्टर ने जवाब दिया।

इमाम उसे घसीटता हुआ अन्दर ले गया। दीया जलाया तो उसे नज़र आया कि विक्टर के कपड़े ख़ून से लाल और तर हो रहे थे। विक्टर के साथ उसका वही तआर्रुफ था जो चंगेज़ ने ग़ायबाना करा रखा था। इमाम ने उसे दूर से देखा था। विक्टर को वह पसे मंज़र में रखते थे जिसकी वजह यह नहीं थी कि वह ईसाई था बल्कि उसे उन्होंने अन्दर की इत्तलआत फ़राहम करने का काम सौंप रखा था। यह जासूसी का एक तरीका और उनकी अपनी तन्ज़ीम थी। इस लिहाज से इमाम और विक्टर एक दूसरे के लिए अजनबी नहीं थे।

"तुम आये हो।" इमाम ने पूछा– "चंगेज़ क्यों नहीं आया?"

"वह अब कभी नहीं आ सकेगा।"

"क्यों?" इमाम ने घबराकर पूछा– "पकड़ा गया है?"

"उसे गुनाहों ने पकड़ा है।" विक्टर ने जवाब दिया– "और मेरे ख़ंजर ने उसे सज़ाए मौत दे दी है। आप मेरा ख़ून नहीं देख रहे? क्या आप मेरा ख़ून बन्द करने का बन्दोबस्त कर सकते हैं? आप घबराये नहीं, ख़ुदा का शुक्र अदा करें कि चंगेज़ जिन्दा नहीं वरना हममें से हर कोई क़ैदख़ाने की अज़ीयतों से मारा जाता।"

इमाम ने बहुत तेज़ी से दवाईयां निकालीं। पानी लाया और उस के ज़ख़्म धोने लगा। विक्टर को कपड़े बदलने को कहा।

"नहीं।" विक्टर ने जवाब दिया– "मैंने सोंच लिया है कि मुझे क्या करना है। मैं इन्हीं कपड़ों में वापस जाऊंगा। मैंने आप का नमक खाया है। मेरा अज़ीज़ दोस्त और बड़े ख़तरनाक सफ़र का साथी मेरे हाथों कत्ल हो गया है। मैं आप सबके लिए अपने आप को कुर्बान करने का इरादा कर चुका हूँ। मैं अपनी जान जल्लाद के आगेझुका कर आप सब को साफ़ बचा लूंगा।"

इमाम उस के जख़्म साफ़ करके उन पर सफ़ूफ़ छिड़क रहा था और विक्टर उसे सारा वाकिआ सुना रहा था। उसने हर एक तफ़सील सुनाकर कहा– "मुझे शक हो गया था कि यह औरत फरेब के सिवा कुछ नहीं। मैंने वह बूढ़ा कमाण्डर कभी नहीं देखा था जिसकी यह अपने

आप को दाश्ता बताती थी। उसका हर रात चंगेज़ के रास्ते में आ जाना एक सबूत था कि वह करीब ही कहीं होती है और चंगेज़ पर नज़र रखती है। मैंने चंगेज़ से जब भी कहा कि वह और ज़्यादा इहतियात करे वह गुस्से में आ गया। मैं आप को बता चुका हूं कि वह शराब भी पीने लगा था। मुझे शक है कि शराब में उसे हशीश मिलाकर पिलाई जाती थी वरना चंगेज़ जैसे सख़्त आदमी और ईमान का पक्का इतनी जल्दी और इतनी आसानी से इस फ़रेब में न आता। बड़ी ख़ूबसूरत लड़कियाँ उसे अपनी मोहब्बत में गिरफ़्तार करने की कोशिश कर चुकी थीं। वह हंस कर टाल दिया करता था। इस औरत ने उसे अपने हुस्न और हशीश की आमेज़िश वाली शराब के तिलिस्म में जिस्मानी नहीं ज़ेहनी तौर पर गिरफ्तार कर लिया था.

"उसने जब यह बताया कि उसने औरत को बता दिया है कि वह जासूस है तो मेरा दिल कांप उठा। मुझे जैसे आलमे ग़ैब से इशारा मिल रहा था कि चंगेज़ ने इतनी बड़ी लग़्ज़िश की है जिसकी सज़ा सिर्फ़ उसकी नहीं हम सबकी मौत है और उसकी यह लग़्ज़िश शाम और मिस्र की आज़ादी की मौत का भी सबब बन सकती है। मैंने उसे समझाने की कोशिश की मगर उसकी अक़्ल पर औरत ने जो तिलिस्म तारी कर दिया था वह उसे हमसे और अपने फ़राईज़ और अपने ईमान से भी बहुत दूर ले गया था। मैंने उसी वक़्त इरादा कर लिया था कि अब यही एक सूरत रह गयी है कि इस औरत को क़त्ल कर दिया जाए और अगर चंगेज़ का रवैया न बदले तो उसे भी ख़त्म कर दिया जाए। मुल्क और क़ौम को ख़तरे से बचाने के लिए एक आदमी का क़त्ल कोई बड़ी बात नहीं होती। यह तो जासूसी का उसूल है कि गिरोह के किसी आदमी पर ग़द्दारी का शक हो या उसकी विसातत से राज़ फ़ाश होने का ख़तरा हो तो उसे ख़त्म कर दिया जाए। मैंने फिर भी उसके क़त्ल से गुरेज़ किया मगर वह मुझे क़त्ल करने के लिए पागल हो गया था।"

"यह भी तो हो सकता है कि तुमने उसे ग़लत फ़हमी में क़त्ल कर दिया हो।" इमाम ने कहा– "हो सकता है कि लड़की मुसलमान ही हो और वह सच्चे दिल से हमारे लिए काम कर रहा हो।"

"हो सकता है।" विक्टर ने कहा– "लेकिन मैंने सबूत देख लिया था। मैंने चंगेज़ के साथ उसका ज़िक्र नहीं किया था। मैंने उस औरत को उस इमारत से निकलते और वापस जाते देखा था जहाँ हरमन के शोबे की लड़कियाँ रहती हैं। मैंने यह भी मालूम कर लिया था कि यह औरत किसी कमाण्डर की दाश्ता नहीं। वह इस इमारत में रहती है। आज रात मैं चंगेज़ के पीछे चला गया और जहाँ वह औरत के साथ बैठा वहां से चन्द क़दम दूर मैं एक दरख़्त के पीछे बैठ गया। औरत ने जिस अन्दाज़ से चंगेज से राज़ की बातें पूछीं और जो बातें पूछीं वह इस शक को यक़ीन में बदलने के लिए काफ़ी थीं कि यह औरत सलीबियों की जासूस है। उसने त्रीपोली में हमारे छापामरों के मुतअल्लिक़ पूछा और चंगेज़ को बताय कि सलीबी फ़ौज के रस्द वग़ैरह का बेअन्दाज़ ज़ख़ीरा रखा गया है जिसमें आतिशगीर सयाल के बेशुमार मटके हैं। मैं भी जासूस हूं। मुझे अच्छी तरह इल्म है कि यहाँ कहीं भी इतना ज़ख़ीरा नहीं रखा गया उसने जो जगह बताई थी वहाँ कुछ भी नहीं। आप ख़ुद कल जाके देख लेना.

"चंगेज़ ने उसके आगे हमारी सारी जमाअत की निसानदेही कर दी और उसने मेरा नाम लेकर मुझे भी बेनकाब कर दिया। मैं इतनी अहम जगह पर हूँ। जहाँ मुझे राज़ की गहरी बातें भी मालूम हो जाती हैं। इस औरत ने मेरा नाम सुना तो वह अपनी हैरत को छुपा न सकी। वह बहुत देर ख़ामोश रही। फिर उठ खड़ी हुई। हमारा इतना ख़तरनाक राज़ यह औरत ले जा रही थी और यह राज़ सीधा हरमन के पास जा रहा था। इसके नताइज का आप अन्दाज़ा कर सकते हैं। मैं ने उठकर औरत को पकड़ लिया और ख़ंजर उसके सीने में घोंप दिया। चंगेज़ मुझ पर टूट पड़ा था। उससे बहुत समझाया हकीकत बताई मगर शराब ने उसे हैवान बना रखा था। मैंने उसके ख़ंजर से ज़ख़्म खाकर भी उसे समझाया मगर वह सोंचने समझने की हालत में था ही नहीं। मैंने महसूस कर लिया था कि जिन्दा रहा तो मैं इसे काबू में नहीं ला सकूंगा और हमारा असल मकसद बुरी तरह ख़त्म हो जाएगा। मैंने उसे भी ख़त्म कर दिया।"

"तुमने अच्छा किया।" इमाम ने कहा– "मैं तुम्हारा फैसला कुबूल करता हूँ। तुम अब त्रीपोली से निकल जाओ। मैं इन्तज़ाम कर देता हूँ।"

"नहीं।" विक्टर ने कहा– सुबह चंगेज़ औरत की लाश सब देख लेंगे। मुझे यकीन है कि हरमन को मालूम हो चुका है कि चंगेज़ जासूस था। उसी ने उस औरत उसके पीछे डाला था। वह यही समझेगा कि उन दोनों को मुसलमान जासूसों ने कत्ल किया है, फिर यहाँ के मुसलमानों के लिए कयामत आ जाएगी। पहले ही एहकाम मिल चुके हैं कि किसी पर जासूसी का शक हो तो उसे कैद या कत्ल कर दिया जाए। अब तो यूं समझो कि यहाँ के हर मुसलमान घराने पर हरमन ने एक–एक जासूस मुकर्रर कर दिया है। यह लोग मुसलमानों को ज़ुल्म व तशद्दुद का निसाना बनाने के बहाने ढूंढ रहे हैं......मैं वापस अपनी जगह जा रहा हूँ। मैं यह कत्ल अपने ज़िम्मे लूंगा और वजह यह बताऊंगा कि मैं और चंगेज़ रकीब थे।

"हम तुमसे इतनी कुर्बानी नहीं लेंगे।" इमाम ने कहा– "मैं तुम्हारे साथ एक आदमी को भेजूंगा जो तुम्हें काहिरा छोड़ आयेगा।"

"मैं अपनी जान की कुर्बानी देना चाहता हूँ।" विक्टर ने कहा– "मुझे वह वक्त याद है जब मेरे शहर में सलीबी फ़ौज के दो अफ़सरों ने मेरी बहन पर हाथ डाला था। उन्होंने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया था कि मेरी बहन को उठा कर ले चलें। कोई ईसाई मेरी मदद को नहीं आया। तीन मुसलमान जवानों ने इन सिपाहियों का मुकाबला किया था। तीनो ज़ख़्मी हो गये थे लेकिन उन्होंने मेरी बहन को बचा लिया था। वह तो बालाई अफ़सर अच्छा था जिसने मेरी शिकायत सुन ली थी वरना मेरी बहन भी न रहती और तीनो मुसलमानों को कत्ल कर दिया जाता। इसी वाकिआ ने मुझे मुसलमानों का जासूस बनाया था। मैं आपकी कौम को इस एहसान का सिला देना चाहता हूँ। मैं अपनी जान जल्लाद के हवाले करके त्रीपोली के मुसलमानों की जान और इज़्ज़त बचाऊंगा।"

उसने इमाम को बताया– "सलीबियों ने फ़ौजें जमा करनी शुरू कर दी हैं और उनका रुख़ हलब की तरफ होगा। वह सबसे पहले शाम को तहेतेग़ करने का इरादा रखते हैं। अभी

यह पता नहीं चला कि कब कूच करेंगे यह भी मालूम नहीं हुआ कि उनकी सारी फ़ौज एक ही इलाके पर हम्ला करेगी या आगे जाकर तक़सीम हो जाएगी और एक ही वक़्त कई मुकामात पर हम्ले करेगी। सुल्तान अय्यूबी तक यह इत्तलाअ बहुत जल्दी पहुँच जानी चाहिए कि वह मिस्र में बैठा रहे।" विक्टर को जो कुछ मालूम हो सका था वह उस इमाम को बता दिया।

वह उठा और इमाम के रोकने पर भी न रुका। कहने लगा–"आप बिल्कुल मुत्मईन रहें। आपको कोई नहीं पकड़ेगा।" और वह बाहर निकल गया।

❖

वह शहर से भी निकल गया। उसके जख़्मों से खून बन्द हो चुका था। इमाम ने दोनों पर पट्टियां बांध दी थीं। उसने इस ख़्याल से दोनों पट्टियाँ उतार कर फेंक दी कि जिनके पास वह जा रहा था वह यह न पूछ बैठें कि मरहम पट्टी किससे कराई है। जख़्मों से फिर ख़ून रिसने लगा। वह उस जगह गया जहाँ चंगेज़ और औरत की लाशें पड़ी थीं। रात के पिछले पहर का चाँद ऊपर उठ आया था। विक्टर को शराब की सुराही और दो प्याले पड़े नज़र आये। उसने औरत के चेहरे को ग़ौर से देखा। मौत भी उसके चेहरे का हुस्न नहीं बिगाड़ सकी थी। उसके खुले हुए बाल रेशमी और मुलायम बाल उसके सीने पर बिखर गये थे। विक्टर ने शराब की सुराही को देखा और ज़ेरे लब कहा– "इन्सानों ने अपनी तबाही के कैसे–कैसे ज़रिए इख़्तियार किये हैं।"

उसने चंगेज़ को देखा और उसके पास बैठ गया। चंगेज़ का जिस्म बर्फ़ की तरह सर्द हो चुका था। विक्टर ने उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहा– "तुम अच्छी तरह जानते थे कि औरत मर्द की कितनी बड़ी कमज़ोरी है और शराब ने बादशहों के तख़्ते उलट दिए हैं। तुमने इस कमज़ोरी को अपने अन्दर डाल लिया......मैं भी आ रहा हूँ दोस्त, मैं आ रहा हूँ।"

वह उठा और बहुत तेज़ क़दम उठाता उस इमारत की तरफ़ चल पड़ा जिस में अफ़सर रहते थे। उसके जख़्मों से ख़ून बह रहा था। उसने न्याम से ख़ंजर निकाला। उस पर ख़ून जम गया था। उसने उसे अपने ख़ून से तर किया और ख़ंजर हाथ में रखा। ख़ून ज़्यादा निकल जाने से वह कमज़ोरी महसूस करने लगा था........उसने एक दरवाज़े पर दस्तक दी। उसे मालूम था कि जिसके पास उसे जाना है उसकी रिहाईश यही है। कुछ देर बाद एक मुलाज़िम ने दरवाज़ा खोला। विक्टर ने अफसर का नाम लेकर कहा कि उसे जगाओ और बताओ कि एक क़ातिल आया है। मुलाज़िम अन्दर को दौड़ा।

अन्दर से गालियों की आवाज़ सुनाई देने लगीं। अफ़सर ग़ालियां बकता आया। दरवाज़े पर आकर कहर भरी आवाज़ में पूछा–"कौन हो तुम, किसे क़त्ल कर आये हो?" मुलाज़िम क़दील उठाये दौड़ा आया। अफ़सर ने रौशनी में विक्टर को देखकर पूछा– "तुम? किसी से लड़ाई हो गयी थी?"

"मैं दो इन्सानों के क़त्ल का इकबाल करने आया हूँ।" विक्टर ने कहा– "मुझे गिरफ्तार कर लें।"

अफ़सर ने उसके मुंह पर बड़ी ज़ोर से थप्पड़ मारकर कहा–"क़त्ल का तुम्हें यही वक़्त

मिला था? दिन को क्यों न क़त्ल किया? मैं तुम्हारे बाप का नौकर हूं जो इस वक़्त तुम्हें गिरफ़्तार करूंगा? इतनी गहरी नींद से मुझे जगाया है।" उसने अपने मुलाज़िम से कहा– "ओए, ले जाओ इसे, क़ैदखाने में बन्द कर दो।"

मुलाज़िम विक्टर को बाज़ू से पकड़कर चल पड़ा तो अफसर ने गरज कर कहा– 'ओए रूक जाओ, जंगली कहीं के। तुमने यह भी नहीं सोंचा कि यह रास्ते में तुम्हें भी क़त्ल कर देगा अन्दर लाओ इसे। इसने क्या किया है?"

मैंने एक आदमी और एक औरत को क़त्ल किया है जनाब!" विक्टर ने बुलन्द आवाज़ में बोला।

"क़त्ल किया है?" अफ़सर ने हैरत से और घबराहट से पूछा–"क़त्ल किया है?......अगर मुसलमान को क़त्ल किया है तो जाओ अपनी मरहम पट्टी कराओ। तुम उसे क़त्ल न करते तो वह तुम्हें क़त्ल कर देता। अगर किसी सलीबी को क़त्ल किया है तो तुम्हें भी क़त्ल होना चाहिए। अन्दर आकर बताओ।"

"आप ने मेरे साथ एक बड़ा ही ख़ुबरू आदमी देखा होगा।" विक्टर ने अन्दर जाकर कहा। उसने चंगेज़ का वह ईसाई नाम बताया जिस से वह जाना पहचाना जाता था। कहने लगा– "मेरी दोस्ती एक औरत के साथ थी। मेरे उस साथी ने उस औरत को वरग़लाया और मेरे और उसके तअल्लुक़ात तोड़ डाले। उस औरत के साथ दोस्ती करली और उस औरत से मेरी बेइज़्ज़ती कराई। मैं उस औरत की दोस्ती से दस्तबरदार नहीं होना चाहता था। इन दोनों ने मुझे बहुत मुशतअिल किया। मैंने आज रात उन्हें इकठ्ठे देख लिया। मैं दरअसल उन्हें देखने ही गया था। उन्हें मैंने ऐसी हालत में देखा जो मेरे बर्दाश्त से बाहर थी। मैंने औरत पर हम्ला किया और उसे ख़ंजर से मार डाला। फिर अपने रक़ीब के साथ ख़ंजर बाज़ी हुई। मुझे यह दो ज़ख़्म आये हैं। उसे भी दो ही जख़्म आयें हैं मगर मुहलिक साबित हुए मैं कहीं भाग जाने की बजाए आप के पास आ गया हूँ।"

अफ़सर ने कहा– "औरत के लिए क़त्ल होना या क़त्ल करना अक़लमंदी तो नहीं।"

यह अफ़सर बिल्कुल संजीदा नहीं लगता था। वह शायद विक्टर को छोड़ देता मगर सुबह होते ही लाशें देखी गयीं। हरमन और उसके नायब को पता चला तो दोनों ग़ुस्से से पागल होने लगे। मक़तूला उनकी बड़ी क़ीमती और कारआमद मुख़्बिर और जासूस थी और चंगेज़ इस औरत का शिकार था जिससे उस गिरोह का सुराग़ निकालना था। यह गिरोह महफ़ूज़ हो गया था। विक्टर के जख़्मों से ख़ून बह रहा था। किसी ने उसकी मह्रम पट्टी की न सोंची। हरमन ने उसे पीटना शुरू कर दिया जिससे विक्टर बेहोश हो गया। उसके बाद वह कभी भी होश में न आया। दूसरे दिन उसे बेहोशी की हालत में जल्लाद के हवाले कर दिया गया। जल्लाद के कुल्हाड़े ने एक ही वार से उसका सर तन से जुदा कर दिया।

उसके सर और धड़ को जब एक गढ्ढे में फेंका जा रहा था, उस वक़्त इमाम का रवाना किया हुआ एक जासूस त्रीपोली से दूर निकल गया था। उसे ऊंट पर भेजा गया था क्योंकि काहिरा तक का सफ़र बड़ा ही लम्बा और बड़ा ही कठिन था।

❖

572 हि० (1177 ई०) के अवाइल का एक महीना था। काहिरा के फौजी इलाके में ग़ैरमामूली रौनक और चहल पहल थी। किसी मैदान में घोड़े दौड़ाये जा रहे थे और कहीं प्यादा सिपाहियों को ट्रेनिंग दी जा रही थी शुतरसवारों की रौनक अलग थी। काहिरा से दूर पहाड़ी इलाके का मंज़र ऐसा था जैसे जंग लड़ी जा रही हो। यह सुल्तान अय्यूबी की फौज की जंगी मश्क थी। एक वादी में आतिशगीर मादा फेंक कर आग लगायी गयी थी जो बीस पच्चीस गज़ तक फैली हुई थी। सवार घोड़े दौड़ाते इन शोलों से गुज़र रहे थे। एक जंगी मश्क दूर रेगिस्तान में हो रही थी। किसी सिपाही को पानी अपने पास रखने की इजाज़त नहीं थी।

यह बड़ी सख़्त ट्रेनिंग थी जो नये रंगरूटों को दी जा रही थी। भर्ती अभी जारी थी। फौज के तमाम सालार और दिगर अफसर इस ट्रेनिंग में मसरूफ थे। सुल्तान अय्यूबी सल्तनत के दूसरे मसाइल और उमूर की तरफ रात को तवज्जो देता था। उस का दिन ट्रेनिंग की निगरानी करते और सालारों को हिदायात देते गुज़रता था। उसने सबसे कह दिया था कि अगर सलीबियों ने शाम पर फौज कशी न की तो इसका मतलब यह होगा कि उन्होंने लड़ाई से तौबा कर ली है या उनकी अकल जवाब दे गयी है मगर इन दोनों में एक भी बात सही नहीं। वह ज़रूर आयेंगे।

"इस वक़्त तक किसी न किसी मकबूज़ा इलाके से अपने किसी आदमी को आना चाहिए थे।" सुल्तान अय्यूबी ने अपने पास खड़े एक सालार से कहा। वह एक चट्टान पर खड़ा जंगी मश्कें करा रहा था। उसने कहा– "सलीबी आयेंगे ज़रूर। यह मुझे कोई जासूस ही बता सकता है कि वह किधर से आयेंगे, कहाँ आयेंगे और उनकी नफरी कितनी होगी।"

वह चट्टान से उतर कर किसी और तरफ जाने लगा तो उसे दूर गर्द उड़ती नज़र आई जो एक या दो घोड़ों की थी। सुल्तान रूक गया। गर्द करीब आई तो उसमे दो घोड़े बरामद हुए! एक पर अली बिन सुफियान सवार था और दूसरे को सुल्तान पहचान न सका। वह त्रीपोली से इमाम का भेजा हुआ जासूस था जो वहाँ से ऊँट पर रवाना हुआ था। बहुत दिनो बाद काहिरा पहुंचा था। अली बिन सुफियान ने उससे रिपोर्ट ली और उसे घोड़ा देकर साथ ले आया ताकि यह रिपोर्ट सुल्तान अय्यूबी को फौरन दे दी जाए।

जासूस ने सुल्तान अय्यूबी को बताया– "सलीबी बर्क रफ़्तार और तूफ़ानी हम्ले के लिए तैय्यारियां कर रहे हैं। फौजों का इज्तमाअ शुरू हो गया है। सबसे ज़्यादा फौज हूनेनी के शाह रिनॉल्ट की है। वह इस तूफ़ानी यल्ग़ार की क़यादत करना चाहता है।"

"वही रिनॉल्ट जिसे नुरूद्दीन ज़ंगी ने गिरफ़्तार करके कैद में डाल दिया था।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "उसे वह अपनी शर्त पर रिहा करना चाहते थे मगर ज़ंगी की बेवक़्त मौत रिनाल्ट की रिहाई का बाइस बनी। इक़्तेदार और ज़र व जवाहरात के लालची उमरा ने नुरूद्दीन ज़ंगी के कमसिन बेटे को कठपुतली बनाया और रिनॉल्ट को रिहा कर दिया। आज वह रिनॉल्ट इस्लाम का ख़ातमा करने आ रहा है....हाँ! तुम आगे सुनाओ। उन्हे यल्ग़ार करनी चाहिए थी, और कौन होगा?"

"त्रिपोली का रिमाण्ड होगा। ज़्यादा तर अफ़वाज क इज्तमाअ वहीं हो रहा है और हम्ले की तफ़सीलात वहीं तय्य हो रही हैं। तीसरा बिल्ढून होगा। उसकी फौज भी कम नहीं। यह मालूम नहीं किया जा सका कि सलीबी फ़ौज कब कूच करेगी। हम्ला शाम पर होगा। हलब, हरान और हमात के नाम सुने गये हैं। कुच जल्दी होगा।"

"अली बिन सुफ़ियान!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मुझे त्रीपोली से आख़िरी इत्तलाअत का इन्तज़ार रहेगा।"

"उन इत्तलाआत का इन्तज़ार न करें जिनकी आप तवक्क़ो लगाये बैठे हैं।" अली बिन सुफ़ियान के बजाए जासूस ने जवाब दिया– "सलीबियों के अस्करी ऐवान में हमारे दो आदमी थे। दोनों मारे गये हैं।" उसने राशिद चंगेज़ और विक्टर का वाक़िआ सुना दिया। सुल्तान अय्यूबी की आंखे लाल हो गयीं। जासूस ने कहा– "रिनॉल्ट ने दावा किया है कि उसकी फ़ौज में ढाई सौ नायब होंगे। अपने इन दोनो जासूसों ने मरने से पहले इमाम को बताया था कि सलीबी आप को छापामार और शबखून मारने का तरीका इस्तेमाल करने की मुहलत नहीं देंगे। उन्होंने कुछ ऐसी चालें सोंच लीं हैं जिनसे वह आप को मजबूर कर देंगे कि आप पूरी फ़ौज को सामने लाकर लड़े। उन्हें आप की इस कमज़ोरी का इल्म है कि आप के पास फ़ौज की कमी है। इसी के पेशनज़र वह बहुत ज़्यादा फ़ौज ला रहे हैं ताकि आप घूम फिर कर न लड़ सके।"

जासूस की यह इत्तलाआत मिलने के बाद सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी बाहर कम नज़र आने लगा। वह कमरे में बन्द रहने लगा। कागज पर मुम्किना मैदाने जंग का नक्शा बना कर उसपर पेशक़दमी और दिगर चालों की लकीरें खींचता रहा। कभी अचानक अपने सालारों को बुलाकर उनके साथ बहस में उलझ जाता और उन्हें मौका देता कि वह भी राय दें और चाले सोंचे। इन सालारों में एक ईसा अलहकारी था जो एक क़ाबिल सालार होने के अलावा आलिम और क़ानून दां भी था। उसे बाज़ मोअर्रिख़ों ने सुल्तान अय्यूबी का दस्ते रास्त भी कहा है।

एक रोज़ सुल्तान अय्यूबी ने ख़िलाफ़े तवक्क़ो कूच का हुक्म दे दिया। उसने फ़ौज का ख़ासा हिस्सा सूडान की सरहद के साथ ख़ेमाज़न कर दिया क्योंकि उधर से भी हम्ले का ख़तरा था। उसके लिए सबसे बड़ी मुसीबत यही थी कि वह पेशक़दमी करता था तो उसके अक़्ब में भी दुश्मन होता था। सलीबियों के लिए वह मिस्र की सारी फौज नहीं ले जा सकता था। उसने कूच किया तो मोअर्रिख़ों के एअदाव शुमार के मुताबिक़ उसके पास जो फ़ौज थी वह एक हज़ार प्यादा थी। यह सब मम्लूक थे (मम्लूक आज़ाद किए हुए ग़ुलामों को कहा जाता था) यह लड़ाके और जंगजू थे। इनके अलावा आठ हज़ार घोड़सवार थे जिनमे मिस्री भी थे और वह सूडानी भी जिन्हें 1149 ई0 में सुल्तान अय्यूबी ने बग़ावत के जुर्म में फ़ौज से निकाल कर उन्हें ज़र ख़ेज़ ज़मीनों पर आबाद कर दिया था। अब वह मिस्र के वफ़ादार थे। उनपर एतमाद किया जा सकता था मगर यह एक हज़ार मम्लूक और आठ हज़ार सवार नये फ़ौज में भीर्ती हुए थे। उन्होंने अभी जंग देखी ही नहीं थी। उनकी ट्रेनिंग बमुश्किल मुकम्मल हुई थी।

सुल्तान अय्यूबी अपनी फौज अपने भाई अत्आदिल के ज़ेरे कमान हलब के मज़ाफात मे छोड़ आया था। उसे किसी तरह अन्दाज़ा हो गया था कि सलीबी इतनी जल्दी शाम तक नहीं पहुंचेगे। उसने कूच बहुत तेज़ कराया और हलब जा पहुंचा। वहाँ उसे पता चला कि सलीबियों ने हरान किले को मुहासिरे में ले रखा है। आपने हरान का मुकम्म ज़िक्र पिछली कहानियों में पढ़ा है। सुल्तान अय्यूबी ने मुहासिरा करने वाली सलीबी फौज को मुहासिरे में ले लिया। उसकी यह चाल ऐसी अचानक थी कि सलीबी जम कर लड़ न सके। सुल्तान अय्यूबी ने बहुत कैदी पकड़े और सलीबियों को बहुत नुक्सान पहुंचाया। उसने पेशक़दमी जारी रखी और दो अहम मुकामात, लिड्डिया और रम्ला, पर कब्ज़ा कर लिया।

यह फतूहात क़दरे आसान थीं। मिस्र से आये हुए नये सिपाहियों के हौसले बढ़ गये। वह समझे कि जंग इसी तरह होती है जिसमें फ़तह हमारी ही होती है। इससे नये सिपाही ग़ैर मोहतात हो गये। सलीबियों ने ग़ालिबन दानिस्ता पस्पा होकर सुल्तान अय्यूबी को धोखा दिया था। उहोंने थोड़ी सी फौज की नुमाईश की थी। यह फ़िरंगी (फ्रेंक्स) थे। रिनॉल्ट और बिल्डून की फ़ौजें अभी सामने नहीं आई थीं। वह उसी इलाके में मौजूद थीं। अब सलीबियों ने ऐसे सख़्त इक़्दमात किये थे कि सुल्तान अय्यूबी के जासूस दुश्मन के इलाक़े से निकल हीं न सके। त्रीपोली के जासूस के बाद उधर कोई आ ही न सका।

रमला के क़रीब एक नदी थी जिसका पानी तो गहरा नहीं था, नदी गहराई में थी और चौड़ी भी। ईसा ने रम्ला को फ़तह करके अपने दस्तों को रम्ला के इर्द गिर्द फैला दिया। अचानक नदी के किनारे की ओट में सलीबियों की फ़ौज यूं निकली जैसे सैलाब किनारों से बाहर आ गया हो। यह फ़ौज जाने कब से वहाँ छुपी बैठी थी। ईसा अल्हकारी के दस्ते बेख़बरी में मारे गये। वह बिखरे हुए भी थे। मुकाबिला न कर सके। त्रीपोली के जासूस की यह इत्तलाअ सही साबित हुई कि सलीबी ऐसी चालें चलेंगे जिनसे सुल्तान अय्यूबी अपने मख़्सूस तरीक़–ए–जंग से लड़ने के क़ाबिल नहीं रहेगा।

उस वक़्त के एक वक़ाअ निगार इब्ने असीर ने लिखा है– "फ़िरंगी इस तरह नदी से निकले जैसे इन्सानों और घोड़ों का सैलाब किनारों से बाहर आकर आबादियों को अपने साथ बहा ले जा रहा हो। सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज बेख़बरी में मुकम्मल घेरे में आ गयी।"

मशहूर मोअर्रिख़ जीम्ज़ ने लिखा है–"शाह बिल्डून सुल्तान अय्यूबी से पहले अपनी फ़ौज रम्ला के मज़ाफात में ले आया था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज ने रमला का शहर फतह कर लिया और उस के हरावल के एक सालार अयूलन ने शहर को आग लगा दी थी। सलीबियों की घात कामयाब रही। अय्यूबी घेरे में आ गया। उसके दस्ते बिखर गये। उसने कई दस्ते यकजा कर लिए और अपनी ख़ुसूसी चाल के मुताबिक़ जवाबी हम्ला किया मगर मैदान सलीबियों के हाथ था। सुल्तान अय्यूबी का हम्ला न सिर्फ़ नाकाम रहा बल्कि उसके लिए पस्पाई भी नामुम्किन हो गयी।

नये रंगरूट जो चन्द एक मुकामात आसानी से फ़तह करके यह समझ बैठे थे कि उन्हें कोई शिकस्त दे ही नहीं सकता वह ऐसे भागे कि उन्होंने मिस्र का रुख़ कर लिया। भागने

वालों में उनकी तादाद ज़्यादा थी जिन्हें बाज़ ग़ैर मोहतात फौजी अफ़सरों ने माले ग़नीमत का लालच देकर भर्ती किया था। सबसे बड़ी वजह यह थी कि यह सब नातजुर्बाकार थे।

सुल्तान अय्यूबी इस कैफ़ियत में रह गया था कि वह एक ऊंट पर सवार होकर मैदाने कारज़ार से निकला और अपनी जान बचाई।

काज़ी बहाउद्दीन शद्दाद जो इस जंग का ऐनी शाहिद है, अपनी याददाश्तों में लिखता है– "सुल्तान अय्यूबी ने मुझे इस शिकस्त की वजह इन अल्फाज़ में बताई थी– "सलीबियों ने मेरी चाल चलकर मेरी फौज को उस वक़्त जंग में घसीट लिया जब मैं उसे जंगी तरबियत में नहीं ला सका था। दूसरी वजह यह हुई कि मेरी फ़ौज के पहलूओं पर जो दस्ते थे वह जगह आपस में बदल रहे थे। यह बहुत बड़ी नक़ल वह हरकत थी। सलीबियों ने इस कैफ़ियत में हम्ला कर दिया। उनका हम्ला इतना शदीद और अचानक था कि मेरे नये सिपाही और सवार घबराकर पीछे को भाग उठे और उन्होंने मिस्र का रूख़ कर लिया। वह रास्ते से भटक गये और दूर–दूर बिखर गये। मैं उन्हें यकजा न कर सका। दुश्मन ने मेरी फ़ौज से बहुत से जंगी क़ैदी पकड़े। इनमें ईसा अल्हकार भी था।" सुल्तान अय्यूबी ने अपनी फ़ौज को मरवाने की बजाए हुक्म दे दिया कि अपने–अपने तौर पर मैदाने जंग से निकलो और काहिरा पहुंचने की कोशिश करो।"

सुल्तान अय्यूबी ने सलीबियों को साठ हज़ार दिनार ज़रे फ़िदिया अदा करके ईसा अल्हकारी को रिहा करा लिया। एक मिस्री वक़ाअ निगार मोहम्मद फ़रीद अबू हदीद ने लिखा है कि सुल्तान अय्यूबी ने अपने भाई शम्सुलदौला तौरान शाह को इस जंग और अपनी शिकस्त का हाल लिखा था जिसमें उसने अरबी का एक शेर भी लिखा था। उसके मानी यह हैं।

"मैंने तुम्हें उस वक़्त याद किया जब सलीबी बरछीयां चल रही थीं। दुश्मन के सीधी और गन्दुमी रंग की बरछियां हमारे जिस्मों में दाख़िल होकर हमारा ख़ून पी रही थीं।"

यह मार्का जमादिउल अव्वल 572 हि0 (अक्तूबर 1177 ई0) में लड़ा गया था। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी इस हालत मे काहिरा पहुंचा कि उसका सर झुका हुआ था। उसके साथ कोई फ़ौज नहीं थी। उसका मुहाफ़िज़ दस्ता साथ नहीं था। उसने काहिरा पहुंचते ही मज़ीद भर्ती का हुक्म दिया। शाम के मुहाज़ पर वह अपने भाई अल्आदिल और बड़े काबिल सालारों को हमात के इलाक़े में छोड़ आया था।

जब फ़र्ज़ ने मोहब्बत का ख़ून किया

आज वह रम्ला इसराईलियों के कब्ज़े में है जहाँ आठ सौ साल पहले सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सलीबियों से शिकस्त खाई थी। रम्ला बैतुलमुकद्दस से दस मील दूर शुमाल में वाक़ेअ है, उरदन के इलाक़े में है। जून 1969ई की अरब इसराईल जंग में इसराईलियों ने उरदन के इस तमाम इलाक़े पर कब्ज़ा कर लिया था जो दरियाए उरनद के मग़रीबी किनारे पर इसराईल की सरहद तक फैला हुआ है। दस वर्ष गुज़र गये हैं, इसराईलियों ने यह इलाक़ा ख़ाली करने की बजाए इस पर मुकम्मल कब्ज़ा कर लिया है और कहा कि दुनिया की कोई ताक़त हमें यहाँ से निकाल नहीं सकती। उन्होंने रम्ला को (और उसके मक़बूज़ा इलाक़े को) उस वक़्त भी क़त्लगाह बनाया था जब उन्होंने उस पर कब्ज़ा किया था, यह आज भी क़त्लगाह है। गुज़िश्ता एक साल से रम्ला में जो मुसलमन रह गये, वह इसराईली हुकूमत के खिलाफ़ मुज़ाहिरे कर रहे हैं और इसराईल उन्हें ज़ुल्म व तशद्दुद और रायफलों की गोलियों से ख़मोश कर रहे हैं।

इसराईल की हठधर्मी और अरबों के आपस के इख़्तिलाफ़ बता रहे हैं कि इसराईली इस इलाक़े को नहीं छोड़ेगे। दस बर्ष गुज़र गये हैं लेकिन आठ सौ साल पहले जब यह इलाक़ा और यही रम्ला सलीबियों के कब्ज़े में था तो सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी एक दिन भी चैन से नहीं बैठा था। वह मैदाने जंग से बड़ी मुश्किल से जान बचाकर निकला था। उसकी फ़ौज ऐसी बुरी तरह भागी कि बिखर कर मिस्र का रूख़ कर लिया। फ़ौज की ख़ासी नफ़री सलीबियों की कैदी हो गयी और कुछ नफ़री क़ाहिरा तक बेसरो सामान की हालत में या प्यादा जाते सेहरा और सफर की सऊबतों की भेंट चढ़ गये। ऐसी शिकस्त हौसले और जज़्बे तोड़ दिया करती है। संभलते–संभलते मुद्दतें गुज़र जीत हैं, लेकिन सुल्तान अय्यूबी मिस्र जाकर न सिर्फ़ संभला बल्कि उस इलाक़े में वापस गया जहाँ से शिकस्त खाकर भागा था और उसने सलीबियों के लिए क़यामत बपा कर दी।

रम्ला आज फ़िर सलाहुद्दीन अय्यूबी का इन्तज़ार कर रहा है।

सुल्तान अय्यूबी के सामने सिर्फ यह मसला नहीं था कि शिकस्त का इन्तक़ाम लेना है और सलीबियों की पेशक़दमी को रोकना है, उसे बहुत से ख़तरों ने घेर रखा था। उसकी सफ़ों में ग़द्दारों की कमी नहीं थी। सूडान की तरफ से हम्ले का ख़तरा बढ़ गया था। सूडानियों को मालूम था कि सुल्तान अय्यूबी के पास फ़ौज नहीं रही और जो है वह शिकस्त ख़ुर्दा और ज़ख़्म खुर्दा है। यह ख़तरा तो सबसे बड़ा था कि सलीबियों के पास फ़ौज दस गुना ज़्यादा थी और उस फ़ौज के हौसले को रम्ला की फतह ने मज़बूत कर दिया था। एक यह

ख़तरा भी था जो मुसलमान उमरा सुल्तान अय्यूबी के मुख़ालिफ़ थे वह उसकी शिकस्त से फ़यादा उठा सकते ते। वह एक बार फिर मुत्तहिद होकर सुल्तान अय्यूबी की उस फ़ौज के लिए मुसीबत बन सकते थे जिसे वह मुहाज पर छोड़ आया था। उस फ़ौज का सालारे आला उनका अपना भाई अल आदिल था जिस पर सुल्तान को मुकम्मल एअतमाद था।

और एक ख़तरा सलीबी जासूसों का भी था। पस्पाई के वक़्त सलीबियों के जासूसों का भी मिस्री फ़ौज के भेस में मिस्र पहुंच जाना आसान था। यह जासूस मिस्र मे अफवाहें फैला कर क़ौम की हौसला शिकनी कर सकते थे।

इस शिकस्त के बाद अल आदिल कोरूने हमात तक पीछे हट आया था। इस दास्तान की पिछली इक़्सात में आप ने हमात की जंग की तफसील पढ़ी है। यहीं सुल्तान अय्यूबी ने अपने मुख़ालिफ़ मुसलमान उमरा को शिकस्त दी थी। हमात का क़िला भी था। सलीबी सुल्तान को शिकस्त देकर हमात की तरफ़ बढ़े। अलआदिल ख़ुद भी आला सालार था और उसके साथ जो सालार थे वह मरदाने हुर थे। इनका दीन व ईमान सुल्तान अय्यूबी की तरह पुख़्ता था। अल आदिल अपने भाई सुल्तान अय्यूबी का शागिर्द था। जंगी चालों की महारत उसी से सीखी थी। उसे अन्दाज़ा था कि सलीबी इतनी बड़ी और इतनी आसान फतह के बाद रम्ला मे ही ख़ेमाज़न नहीं हो जाएंगे। उसने किसी बहरूप में अपने जासूस पीछे छोड़े और खुद फौज के साथ हमात का रुख़ किया। उसे पता चल गया था कि सुल्तान अय्यूबी मिस्र चला गया है।

उसका अन्दाज़ा सही साबित हुआ। जासूसों ने उसे इत्तलाअ दी कि सलीबियों की फ़ौज हमात की तरफ पेशक़दमी कर रही है। अल आदिल ने अपनी फ़ौज की कैफ़ियत देखी। जो अच्छी नहीं थी। सिपाहियों का हौसला मजरूह हो गया था। घोड़ों और ऊंटों की भी कमी हो गयी थी। रस्द की कैफ़ियत तसल्ली बख़्श नहीं थी। अलबत्ता वह फ़ौज को बड़ी अच्छी जगह ले आया था जहाँ सब्ज़ा, पानी और पहाड़ी था। अल आदिल ने फौज को एक जगह जमा कर लिया। उसने देखा कि ऊंटों तादाद की ख़ासी ज़ख्मी है। उसने उन ऊंटों को ज़बह करा दिया और फ़ौज से कह दिया कि पेट भरकर गोश्त खाओ। इस तरह उसने रात को एक वसीअ वादी मे जश्न का मंज़र बना दिया। शाम को ही उसने हलब और दमिश्क़ को इस पैग़ाम के साथ क़ासिद दौड़ा दिए थे कि जिस क़दर रस्द, जानवार और अस्लेहा भेज सकते हो भेजो।

रात जब सिपाही ऊंट का गोश्त खाकर सैर हो चुके तो अल आदिल एक टीकरी पर चढ़ गया। उसके दायें बायें दो मशाल बरदार खड़े थे। उसने इन्तेहाई बुलन्द आवाज़ में कहा— "अल्लाह व रसूल के मुजाहिदों, इस हकीकत को कुबूल करो कि हम शिकस्त खाकर आये हैं। क्या तुम इस हालत में अपनी माँओं, अपनी बहनों, अपनी बीवियों और अपनी बच्चियों के सामने जाओगे और उन्हें यह बताओगे कि हम अपने रसूल के मुन्किरों से शिकस्त खाकर आये हैं? क्या तुम्हारी मायें तुम्हें दूध की धारें बख़्श देंगी? वह घरों में बैठी इस ख़बर का इन्तज़ार कर रही हैं कि हम ने क़िब्ला अव्वल को कुफ़्फ़ार के कब्ज़े से आज़ाद करा लिया है।

उन्हें मालूम है कि जिन इलाकों पर कुफ़्फ़ार काबिज़ हैं वहाँ वह मुसलमान औरतों को बेआबरू कर रहे हैं। ज़रा सोचो कि क्या अपनी मांओं और बहनों को क्या जवाब दोगे? तुममें से जो यहां से पीछे जाना चाहते हैं अलग खड़े हो जाएं। मैं उन्हें नहीं रोकूंगा। उन्हें घरों को जाने की इजाज़त है।"

अल आदिल ख़ामोश हो गया। फौज पर भी खामोशी तारी थी। कोई एक भी सिपाही अलग न हुआ।

"सालारे आला हमें अपना मकसद बताएं।" किसी सिपाही की आवाज़ गरजी– "आपको किसने बताया है कि हम घरों को जाना चाहते हैं?"

"अगर मैं पस्पाई में मारा गया तो यह मेरी वसीअत है कि मेरी लाशा दफ़्न न की जाए।" एक और आवाज़ गरजी– "गिद्धों और भेड़ियों के लिए फेंक दी जाए।"

फिर कई अवाज़ें सुनाई दीं। हर आवाज़ में जज़्बे का जोश था। अल आदिल का सीना फैल गया। उसने कहा– "दुश्मन तुम्हारे पीछे आ रहा है। तुम्हें यह साबित करना है कि रम्ला की फतह उसकी आख़िरी फतह है....आज रात और कल का दिन मुकम्मल आराम करो। कल रात तुम्हें बता दिया जाएगा कि हम क्या करेंगे।"

अल आदिल फौज से फारिग़ होकर अपने सालारों और कमानदारें को अपने ख़ेमें में बुलाया और उन्हें हिदायत दीं कि कल रात वह अपने दस्तों को कहाँ--कहाँ ले जाएंगे। हमात किला करीब ही था।

सलीबी बहुत तेज़ी से पेशकदमी कर रहे थे। यह बिल्डून की फौज थी। उसे मालूम था कि आगे हमात का किला है और अल आदिल की फौज इसी किले में होगी। उसे जासूसों के ज़रिए यह भी मालूम था कि जो फौज हमात की तरफ़ पस्पा हो कर गयी है उसका कमाण्डर अल आदिल है और अल आदिल सुल्तान अय्यूबी का भाई है। यह तो मामूली सा फ़ौजी भी समझ सकता था कि थकी हुई और शिकस्त ख़ुर्दा फौज अपने करीबी किले में ही जाएगी। चुनांचे सलीबी बादशाह बिल्डून ने बर्क़ रफ्तार पेशकदमी करके हमात का मुहासिरा कर लिया। उसने ऐलान किया कि किले का दरवाज़ा खोल दिया जाए वरना किले को ज़मीन से मिला दिया जाएगा। वह इस ख़्याल में था कि अल आदिल की फ़ौज लड़ने की हालत में नहीं। एलान के जवाब में किले की दिवार से तीरों की बौछारें आयीं।

बिल्डून ने एक फिर एलान कराया कि यह ख़ून खराबा बेमकसद होगा। तुम लड़ नहीं सकोगे। किला हमारे हवाले कर दो। मैं वादा करता हूँ कि किसी कैदी के साथ नारवा सलूक नहीं किया जाएगा......किले के ऊपर से आवाज़ आई– "इतनी दूर रहो जहाँ तक हमारे तीर न पहुंच सकें। किला तुम्हें देने की बजाए इसे हम ख़ुद ज़मीन से मिला देंगे। हमारा ख़ून बेमकसद नहीं बहेगा। तुम बेमकसद मौत मरोगे।"

किले की दिवारों पर जो खड़े थे उन्हें सलीबियों की फौज यूं दिखाई दे रही थी जैसे समुन्दर की मौजें हर तरफ़ से किले को नरगे में लिए हुए हों। उसके मुकाबिले में किले में जो फौज थी वह न होने के बराबर थी लेकिन इस कलील फौज के कमाण्डर हथियार डालने पर

अमादा नहीं थे। सूरज गुरूब हो रहा था। सलीबियों ने अगली कार्रवाई सुबह तक मुल्तवी कर दी। उनकी फ़ौज तेज़ रफ़्तार पेशक़दमी करके आई थी। बहुत थकी हुई थी। यह तअक्कुब था। बिल्डून इस कोशिश में था कि अल आदिल को कहीं आराम करने और अपनी फ़ौज को अज़ सरे नौ मुन्ज़िम करने की मुहलत न दे। वह आदिल को जिन्दा पकड़ना चाहता था। सलाहुद्दीन अय्यूबी का भाई होने की वजह से अल आदिल बड़ा ही क़ीमती क़ैदी था। उसके एवज़ सलीबी सुल्तान अय्यूबी से कड़ी शर्तें मनवा सकते थे। कोई इलाक़ा ले सकते थे। बिल्डून को पूरी तवक्को थी कि वह किला किले की फ़ौज और अल आदिल समेत ले सकेगा।

❖

बिल्डून ने अपनी फ़ौज को किले से इतनी दूर पीछे हटा लिया था जहाँ तक किलों वालों के तीर नहीं पहुंच सकते थे। उसे ऐसा ख़तरा तो था ही नहीं कि बाहर से कोई फ़ौज उस पर हम्ला कर देगी। सुल्तान अय्यूबी भी वहाँ नहीं था। उसकी फ़ौज भी नहीं थी। बिल्डून को हमात का किला अपने क़दमों में पड़ा नज़र आ रहा था। शाम के फ़ौरन बाद वह अपने कमाण्डरों को अगले रोज़ के एहकामात देकर अपनी ज़ाती ख़ेमागाह में चला गया था जो फ़ौज से कुछ दूर पीछे थी। उस दौर के जंगजू बादशाहों की ख़ेमागाहें शीश महल से कम नहीं होती थीं। बिल्डून तो फातेह था। तीन चार सलीबी लड़कियाँ उसके साथ थीं और चार वह मुसलमान लड़कियाँ थी जिन्हें सलीबी कमाण्डरों ने मक़बूज़ा इलाके से पकड़ा और बिल्डून को बतौर तोहफ़ा पेश की थीं। यह लड़कियाँ अरब के हुस्न का शाहकार थीं।

सलीबी लड़कियों ने उन्हें ज़ेहन नशीन करा दिया था कि उनका रोना और आज़ाद होने के लिए तड़पना बेकार है। उन्हें यह भी बताया गया था कि वह ख़ुशकिस्मत हैं जो सलीब के एक बादशाह के हिस्से में आई हैं। जो लड़कियाँ सलीबी फ़ौजियों के क़ब्ज़े में आ गयी हैं उनका हश्र देखकर ज़मीन और आसमान कांपते हैं– "तुम्हें आख़िर मुसलमान अमीर या हाकिम के हरम में जाना था जहाँ तुम क़ैदी होतीं। दो चार साल बाद जब तुम्हारी नौजवानी की कशिश मांद पड़ने लगती तो तुम्हें किसी सौदागर के हाथ फ़रोख़्त कर दिया जाता। तुम अगर अपनी फ़ौज के हाथ चढ़ जातीं तो तुम्हारे मुसलमान भाई तुम्हारा वही हश्र करते जो हमारी फ़ौज करती है। औरत का कोई मज़हब नहीं होता। उसे जिसके साथ ब्याह दिया जाए या वह जिसके क़ब्ज़े में आ जाए वही इन्सान उसका ख़ुदा और उसका मज़हब बन जाता है। फिर क्यों न तुम इस इन्सान के पास रहो जो मैदाने जंग का बादशाह है, एक मुल्क का बादशाह है और दिल का भी बादशाह है।"

पहले रोज़ लड़कियाँ बहुत तड़पी थीं। उनपर तशद्दुद न किया गया। उन्हें कोई धमकी न दी गयी। बिल्डून ने जब देखा कि यह नौजवान हैं और ख़ूबसूरत भी हैं तो उसने अपनी हाई कमाण्ड के जरनलों से कहा था कि उन लड़कियों को ट्रेनिंग देकर बेहतर तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता है। ऐसी क़ीमती लड़कियों को अय्याशी का ज़रिआ बनाकर ज़ाया नहीं करना चाहिए। चुनांचे उसने उन्हें अपने पास रख लिया था मगर उससे यह तवक्को नहीं रखी जा सकती थी कि वह उन्हें अपनी बेटियाँ बनाकर ही रखेगा। उसने उनके साथ वही

सलूक किया जिसकी तवक्को थी लेकिन उन्हें अपनी कौम की शहज़ादियों जैसी अहमियत दी, उन्हें सब्ज़ बाग़ दिखाये और बातों—बातों में उन्हें आसमान तक पहुंचा दिया।

"हमें अपनी इस्मत की कुर्बानी देनी ही पड़ेगी।" उनमें से एक लड़की ने उस वक़्त कहा जब चारों को तन्हाई में बातें करने का मौक़ा मिला था— "हमें फ़रार होना चाहिए।"

"और इन्तक़ाम लेना चाहिए।" दूसरी ने कहा।

"लेकिन यह उस वक़्त तक मुम्किन नहीं जब तक हम उन पर यह ज़ाहिर न करें कि हमने उनकी गुलामी दिली तौर पर कुबूल कर ली है।" पहली लड़की ने कहा— "हमें अपना एतमाद पैदा करना है।"

"मेरे वालिद सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज में हैं।" एक और लड़की ने कहा— "आज कल मिस्र में हैं। उन्होंने बताया था कि काफ़िरों की लड़कियाँ अपनी कौम और सलीब की ख़ातिर अपनी इज्ज़त की कीमत देकर हमारे बड़े—बड़े हाकिमों को सलीब का वफ़ादार बना लेती हैं। किसी को कृत्ल करना हो तो कृत्ल करा देती हैं। हमारी फ़ौज के राज़ मालूम करके अपने हाकिमों तक पहुंचाती हैं।"

"मैं जानती हूँ।" एक लड़की ने कहा—"उनकी लड़कियां वही काम करती हैं जो हमारे मर्द जासूस दुश्मन के मुल्क में जाकर करते हैं।" वह चुप हो गयीं। इधर उधर देखकर राज़दारी से बोली— "अगर हम उन्हें कह दें कि हम उनका मज़हब कुबूल करती हैं तो ऐसा मौक़ा पैदा हो सकता है कि हम इस बादशाह को कृत्ल कर दें।"

"और कुछ न हुआ तो फ़रार का मौक़ा पैदा किया जा सकता है।" एक लड़की ने कहा।

जिस रात बिल्डून की फ़ौज हमात के किले को मुहासिरे में ले रखा था इससे दो रातें पहले लड़कियों ने पेशक़दमी के दौरान सलीबी लड़कियों से कह दिया था कि वह उनकी बातें समझ गयी हैं और वह किसी वक़्त भी मज़हब तबदील कर लेंगी। बिल्डून को बताया गया तो उसने चारों लड़कियों को बेशक़ीमत हार पेश किये, और चारों के गले में छोटी—छोटी सलीब लटका दीं, मगर उसने सलीबी लड़कियों को अलग करके कहा— "मैं इन चारों में से किसी के हाथ से कुछ खाऊंगा पीऊंगा नहीं। हो सकता है उन्होंने डर की वजह से मज़हब तबदील किया हो। ज़ुबान से मज़हब तबदील किया जा सकता है, दिल की तबदीली आसान नहीं होती। उनके दिलों पर कब्ज़ा करने की कोशिश करो। मुसलमानों को ख़रीदना मुश्किल नहीं लेकिन मुसलमानों पर भरोसा करना भी ख़तरे से खाली नहीं। जो मुसलमान ईमान के पक्के हैं, वह ऐसी—ऐसी कुर्बानियां दे डालते हैं जिस का हमारी कौम तसव्वुर भी नहीं कर सकती। यह लड़कियाँ कहीं भाग कर नहीं जा सकतीं लेकिन इन पर नज़र रखना कि यह मुझ पर वार न कर जाएं।"

❖

मुहासिरे की पहली रात यह चारों लड़कियाँ अलग ख़ेमें में सोई हुई थीं। बिल्डून भी उनके साथ हंस खेल कर सो गया था। तमाम छोटे बड़े कमाण्डर बेहोशी की नींद सोये हुए थे। फ़ौज को भी होश नहीं थी। सिर्फ़ संतरी और बिल्डून के बॉडीगार्ड के चार पांच सिपाही

जाग रहे थे। कोरून्ने हमात की एक वादी किले की तरफ़ निकलती थी। आगे किले तक मैदान था। इस वादी में से कम व बेश एक हज़ार प्यादा सिपाही दबे पांव निकले। उनके कमाण्डर ने उन्हें टोलियों में बांट कर फैला दिया। वह आगे बढ़ते गये। बिल्डून की फ़ौज के ख़ेमे दूर नहीं थे।

यह प्यादा सिपाही अल आदिल के थे। अल आदिल किले में नहीं था। उसे अन्दाज़ा था कि सलीबी किले का मुहासिरा करेगें। चुनांचे उसने अपने तमाम दस्ते हमात की पहाड़ियों में छुपा लिए थे। उसने किले में इत्तलाअ भेजवाई थी कि मुहासिरे से घबरायें नहीं। अल आदिल ने किलादार को अपनी स्कीम बता दी थी। यह वजह थी कि किलादार सलीबियों की ललकार का जवाब पूरी दिलेरी से और तीरों की बौछार से दे रहा था। किलादार अल आदिल का मामू शहाबुद्दीन अलहारी था। रात को अल आदिल के एक हज़ार प्यादों ने टोलियों में तक़सीम हो कर और फैल कर शबख़ून के अन्दाज़ का हम्ला किया। उन्होंने सबसे पहले ख़ेमों की रस्सियाँ काटीं और ऊपर से सलीबियों को बरछियों से छलनी करना शुरू कर दिया। ख़ेमों के नीचे फंसे हुए सिपाही क्या मज़ाहमत कर सकते थे।

यह जमकर लड़ने वाला मार्का नहीं था। यह सुल्तान अय्यूबी का मख़्सूस तरीक़ाए जंग था– "ज़रब लगाओ और भागो।" इतनी बड़ी फ़ौज के खिलाफ एक हज़ार सिपाही जम कर लड़ भी नहीं सकते थे। टोलियों को मुख़्तलिफ़ काम दिए गये थे। दो तीन टोलियों ने सलीबियों के घोड़ों ऊंटों और ख़च्चरों के रस्से खोल दिए। यह एक हज़ार सिपाही बगूले की तरह आये और दायें बायें की तरफ़ निकल गये। सलीबियों की फ़ौज में ऐसा शोर उठा और ऐसी हुड़दंग मची कि ज़मीन व आसमान कांपने लगे।

बिल्डून की आँख खुल गयी। उसके कमाण्डर भी जाग उठे थे। ख़ेमे से बाहर जाकर बिल्डून ने देखा कि कहीं आग लगी हुई। अल आदिल के सिपाहियों ने ख़ेमों को आग लगा दी थी। हम्ले के वक़्त उन्होंने अल्लाहो अकबर के नारे लगाये थे। यह नारे मुसलमान लड़कियों ने भी सुने थे। वह समझ गयीं कि यह मुसलमान फ़ौज का हम्ला है एक लड़की ने कहा भाग चलो लेकिन दो लड़कियाँ जोश में आ गयीं। वह बिल्डून को क़त्ल करने के लिए तैय्यार हो गयीं। वहाँ मशाले जला दी गयीं। बिल्डून के बॉडीगार्ड उसके इर्द गिर्द घोड़ों पर सवार खड़े हो गये।

इतने में ज़मीन बड़ी ज़ोर से हिलने लगी और हज़ारों घोड़ों के टाप सुनाई देने लगे। यह अलआदिल के सवार थे जिनकी तादाद मुसलमान मोअर्रिख़ दो हज़ार बताते हैं और यूरोपी मोअर्रिख़ चार हज़ार से ज़्यादा। इन घोड़सवारों ने फैल कर बड़ा ही शदीद और ख़ुंरेज़ हल्ला बोला। सलीबी मुक़ाबिले की हालत में नहीं थे। उन्हें अभी मालूम ही नहीं हो सका था कि यह क्या हो रहा है और हम्लावर कहाँ से आये हैं। उनके नारों से सबूत मिलता था कि मुसलमान हैं। अल आदिल के सवार सलीबियों के मुहासिरे को तोड़ते हुए और रास्ते में जो आया उसे घोड़ों तले रौंदते या तलवारों और बरछियों का निसाना बनाते हुए किले की तरफ़ निकल गये। कमाण्डरों की पुकार पर उन्होंने घोड़े पीछे को मोड़े और ऐड़ लगा दी। वह एक बार फिर

अफ़रा तफ़री में भागते दौड़ते सलीबियों में गुज़रे।

किले की दूसरी तरफ़ जो सलीब फ़ौज थी उस पर हम्ला नहीं हुआ था। इस हिस्से ने इधर का शोर व गूग़ा और घोड़ों की क़यामत ख़ेज़ अवाज़े सनुी तो उनमें भगदड़ मच गयी। इधर के सलीबी सिपाही उधर को भागे। उनके हज़ारहा घोड़े, ऊंट और ख़च्चरें खोल दी गयी थीं। उन्होंने भाग दोड़ कर सिपाहियों को कुचलना और ख़ौफ़ज़दा करना शुरू कर दिया। बिल्डून की फ़ौज का वह हिस्सा भाग उठा।

इधर चारों मुसलमान लड़कियाँ लापता हो गयीं। इनमें से एक इस कोशिश में थी कि मुसलमान सिपाहियों को बताये कि बिल्डून यहां है मगर वहाँ सब सवार थे और सरपट घोड़े दौड़ा रहे थे। वह सलीबियों की फ़ौज से दूर निकल गयी। दो तीन सवारों के साथ चीखती चिल्लाती दौड़ी मगर वहाँ इस क़दर शोर था कि किसी ने उसकी आवाज़ न सुनी, कोई उसकी तरफ़ तवज्जो न दे सका। वह दूर पीछे निकल गयी। एक सवार ने घोड़ा रोक लिया। लड़की ने उसे हांफती कांपती आवाज में बताया कि वह मुसलमान है और उस जैसी तीन लड़कियाँ सलीबी बादशाह के क़ब्ज़े मे हैं। बिल्डून की ख़ेमागाह जो उसका जंगी हैडक्वाटर भी था, फ़ौज से अलग दूर थी। लड़की की आवाज़ पर जिस सवार ने घोड़ा रोका था वह कोई कमानदार था। उसने लड़की को घोड़े पर बैठाया और पीछे ले गया।

वहाँ अल आदिल का एक सालार था जिस ने लड़की की पूरी बात सुनी। लड़की ने बिल्डून के हैडक्वार्टर की निसानदेही की। सालार ने वहाँ शबख़ून मारने और बिल्डून को पकड़ने के लिए दो जैश तैय्यार किये और ख़ुद उनकी क़यादत की। उसने सरपट घोडे दौड़ाकर बिल्डून की खेमागाह को घेरे में ले लिया। उनके साथ जलती हुई मशालें भी थीं। सालार ने बिल्डून को ललकारा। ख़ेमों को आग लगाने की धमकी दी मगर वहाँ बिल्डून नहीं था। उसके बॉडीगार्ड भी वहां नहीं थे। जो लोग हथियार डालकर सामने आये उनमें मुलाज़िम, सलीबी और तीन मुसलमान लड़कियाँ और चन्द एक सिपाही थे। उन सबको पकड़ लिया गया। बिल्डून के मुतअल्लिक़ पूछा गया मगर कोई न बता सका कि वह कहाँ है।

उस वक़्त बिल्डून घबराहट के आलम में आगे चला गया था। उसे यह मालूम हो गया था कि यह मुसलमान फ़ौज का शबख़ून है। लेकिन वहाँ इस क़दर भगदड़ थी और इतने ज़्यादा घोड़े दौड़ रहे थे और ज़ख्मी ऐसी बुरी तरह चीख़ रहे थे कि सूरते हाल पर क़ाबू पाना बिल्डून के बस का रोग नहीं था। वह वापस अपनी ख़ेमागाह को चल पड़ा। उसके साथ बॉडीगार्ड भी थे। वह ख़ेमागाह से अभी कुछ ही दूर था कि उधर से एक सवार घोड़ा दौड़ाता आया। घोड़ा उसके सामने रोक कर बिल्डून से कहा कि वह कहीं चला जाए अपनी खेमागाह में न जाए क्योंकि वहाँ मुसलमान फ़ौज पहुंच चुकी है। बिल्डून ने वहीं से घोड़े का रुख़ फेर लिया।

रात भर अल आदिल ने 'ज़रब लगाओ और भागो' की कार्रवाई जारी रखी। जब सुबह तुलूअ हुई तो हमात के किले के इर्द गिर्द सलीबियों की लाशें बिखरी हुई थीं। उनके ज़ख़्मी भी कराह रहे थे। वहाँ बिल्डून था न उसकी फौज। सलीबी अपनी रस्द भी फेंक गये थे। अल आदिल ने अपनी फ़ौज को हुक्म दिया कि वह दुश्मन का सामान इकठ्ठा करे और उसके

जानवरों को पकड़े।

❖

अल आदिल का यह हम्ला दिलेरी, जज़्बे, फ़ने हरब व ज़रब के लिहाज से काबिले तारीफ़ हम्ला था मगर जंगी नुक्ता निगाह से इससे कोई फ़ायदा न उठाया जा सका। ज़रूरत यह थी कि अफ़रा तफ़री में भागते हुए सलीबियों का तआक्कुब करके उनकी जंगी कुव्वत को मुकम्मल तौर पर तबाह कर दिया जाता, फिर पेश कदमी करके उस इलाके में दाख़िल हुआ जाता जो सलीबियों ने फ़तह कर लिया था। कैदी पकड़े जाते जिन्हें अपने कैदी छुड़ाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता, मगर अल आदिल के लिए मुम्किन न था कि कामयाब शबखून से कोई बड़ी कामयाबी हासिल कर सकता। इसकी वजह ये थी कि उसके पास फ़ौज की कमी थी। वह तआक्कुब के काबिल नहीं था। शबख़ून और छापा मारने से दुश्मन को परेशान और अधमुंवा किया जाता है, उसे शिकस्त देकर इलाके पर कब्ज़ा करने के लिए पूरी फ़ौज हम्ला करती है। अल आदिल ने एक काम तो कर लिया था लेकिन अगले मरहले के लिए उसके पास कुछ नहीं था।

अलबत्ता उसने यह कामयाबी हासिल कर ली कि उसकी इस कलील फ़ौज के जज़्बे पर रम्ला की शिकस्त का जो बुरा असर पड़ा था वह साफ़ हो गया और सिपाहियों के जज़्बे तरोताज़ा हो गये। उनके दिलो में यह एतमाद हो गया कि सलीबी उनसे बरतर नहीं और वह किसी भी मैदान में सलीबियों को शिकस्त दे सकते हैं। ज़रूरत फ़ौज में इज़ाफ़े की थी। यह कामयाबी भी हासिल की गयी हमात के किले को बचा लिया गया, वरना सलीबियों को एक किलाबन्द अड्डा मिल जाता।

अल आदिल अपने हैडक्वार्टर में दांत पीस रहा था। उसके सालारों की जज़्बाती हालत उससे ज़्यादा मुशतअिल थी। अगर उनके पास फ़ौज होती तो वह इस शबख़ून के बाद बहुत बड़ी कामयाबी हासिल कर लेते और बिल्डून अपनी फ़ौज को जिन्दा न ले जा सकता। अल आदिल ने कातिब को बुलाया और अपने बड़े भाई सुल्तान अय्यूबी के नाम ख़त लिखवाने लगा।

"बरादरे बुज़ुरगवार, सुल्ताने मिस्र व शाम!

"अल्लाह आप को सल्तनते इस्लामिया के वकार की ख़ातिर उम्र तवील अता फ़रमाये। मै। इस उम्मीद पर ख़त लिख रहा हूँ कि आप बख़ैर व आफ़ियत काहिरा पहुंच चुके होंगे। किसी ने इत्तलाअ दी थी कि आप शहीद हो गये हैं, फिर मालूम हुआ कि जख़्मी हुए हैं। मैं और मेरे सालार फ़िक्रमंद रहे। आपने दानिशमन्दी की जो रास्ते से कासिद भेजा कर हमें बता दिया कि आप जिन्दा सही सलामत हैं और काहिरा जा रहे हैं। मुझे तवक्को है कि आप ने रम्ला की शिकस्त को दिल पर बार नहीं बनाया होगा। हम इन्शाअल्लाह शिकस्त का इन्तकाम लेंगे। खोये हुए इलाके वापस लेंगे और बैतुल मुकद्दस से भी आगे जाएंगे........

"आप शिकस्त के इस्बाब पर ग़ौर कर रहे होंगे। मैं इस ज़िम्मेदारी को फ़ौज पर आयद नहीं करूंगा। हमें शिकस्त के रास्ते पर अपने भाइयों ने उसी रोज़ रौंद डाला था जिस रोज़

हमारे ख़िलाफ़ सफ़आरा हुए थे। जब दो भाई आपस में लड़ते हैं तो उनके दुश्मन हमदर्दी के पर्दे में उन्हें एक दूसरे के खिलाफ मुशतअिल करते हैं। हमारे भाईयों को बादशाही के नशे ने अंधा किया। वह दौलत जिसकी ज़रूरत सल्तनते इस्लामिया को थी, ख़नाजंगी में ज़ाया हुई। हमारी फौज की बेहतरी न और तजुर्बाकार नफ़री तबाह हो गयी। उनकी फौज जो उसी ख़िलाफ़त की फौज थी, जिसके हम हैं, सिर्फ़ इसलिए ज़ाया हो गयी कि चन्द एक अफ़राद ने तख़्त व ताज के ख़्वाब देखने शुरू कर दिये थे। जिस क़ौम के सरबराहों मे तख़्त व ताज का लालच पैदा होगा, उसको वह अपने अज़ाइम के मुताबिक ढेड़ों में तक़सीम करके आपस में ज़रूर लड़ायेंगे। हमें इस तरफ़ भी तवज्जो देनी पड़ेगी कि क़ौम ढेड़ों और गिरोहों में तक़सीम न होने पाये। मज़हबी फ़िरक़ाबन्दियाँ ही क्या कम थीं कि सल्तनत के हुसूल के लिए क़ौम गिरोहों में तक़सीम होने लगी है। हमें शिकस्त तक इस फ़िरक़ाबन्दी ने पहुंचाया है मगर इसकी सज़ा आज सालारों और सिपाहियों को मिल रही है। हमारी बेहतरीन फ़ौज ख़ानाजंगी में ज़ाया हुई। इस कमी को हमने भर्ती से पूरा किया और शिकस्त खाई। मैदाने जंग से बेतरतीब भागने वाले तमाम नये सिपाही थे........

"मैंने और मेरे सालारों ने रम्ला की शिकस्त के फ़ौरन बाद साबित कर दिया है कि फौज नहीं हारी। मेरे पास वही प्यादा और सवार नफ़री थी जो आप ने मेरी कमान में दी थी। आपने मुझे महफ़ूज़ा (रिज़र्व) में रखा मगर मैदाने जंग की कैफ़ियत इस क़दर तेज़ी से बदल गयी कि मुझ तक आप का कोई हुक्म न पहुंच सका। यह भी पता न चला कि आगे क्या हो रहा है और मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ। पस्पा होने वाले एक कमानदार ने जो दायें पहलू पर था मुझे बड़ी ही तश्वीशनाक इत्तलाअ दी और मश्वरा दिया कि मैं अपने दस्ते इस्तेमाल न करूं और हम्ले की लग़्ज़िश न करूं। मैंने यह बेहतर समझा कि कम अज़ कम इस दस्तों को जो मार्के मे अभी तक शरीक ही नहीं हुए बचा लूं। मैंने अपने जज़्बात पर काबू पा लिया और अक़्ल से काम लिया। मैंने हमात की तरफ़ कूच का हुक्म दे दिया...........

"मेरे दस्तो का जज़्बा किसी हद तक मज्रूह हो गया था। मैं दुआ करता रहा कि दुश्मन मेरे सामने आये और मैं अपने दस्तों के जज़्बे मे जान डालूं। मैंने मुख़्बिर पीछे छोड़ दिऐ थे। हमात के कोहिस्तान में मुझे मुख़्बिरों ने यह कीमती ख़बर दी कि बिल्डून मेरे तआक्कुब में आ रहा है। वह इस ग़लत फ़हमी में अपनी तमाम तर फ़ौज हमात के किले को मुहासिरे में लेने को ले आया कि मैं किले में हूंगा लेकिन मैंने आपके तरीक़ाए जंग के ऐन मुताबिक कोहिस्तान के अन्दर दस्ते छुपा दिये थे और किलादार को सूरते हाल और अपनी मुतवक्का चाल के मुतअल्लिक तफ्सील बता दिया था। मेरी तवक्को अल्लाह ने पूरी की। बिल्डून की फ़ौज पर जिसकी कुव्वत हमसे दस गुना ज़्यादा थी, मेरे जांबाज़ जैशों ने बड़ा ही दिलेराना और कामयाब शबख़ून मारा। यह आपकी उस फ़ौज का शबख़ून था जिसके मुअल्लिक तारीख़ कहेगी कि इसने शिकस्त खाई थी। मेरी ख़्वाहिश है कि यह शबख़ून तहरीर में लाकर काग़ज़ में रख लिया जाए ताकि आने वाली नस्लें यह न कहें कि शिकस्त के बाद कौम मर ही जाती है.....

"अगर आप वह मंज़र देखते जो अगले रोज़ सूरज ने हमें दिखाया तो आप शिकस्त के

सद्मे भूल जाते मुझे अफ़सोस है कि बिल्डून मेरे फंदे से निकल गया है। उसे पकड़ा नहीं जा सका। मैं इस वक़्त एक टीकड़ी पर खड़ा कातिब से ख़त लिखवा रहा हूँ। मुझे हमात का क़िला नज़र आ रहा है। इस पर वहदते मिस्र व शाम का झंडा लहरा रहा है। क़िले के इर्द गिर्द सलीबियों की लाशों के अलावा कुछ और दिखाई देता है तो वह हज़ारहा गिद्ध हैं जो लाशों को खा रहे हैं। आसमान से गिद्ध उतर रहे हैं। कहीं–कहीं धुंआ उठ रहा है। यह आग गुज़िश्ता रात मेरे छापामारों ने लगाई थी। बिल्डून की फौज जिस अफरा तफ़री में भागी है इससे मैं वसूक से कहता हूं कि बिल्डून जवाबी हम्ला नहीं कर सकेगा। ताहम मैं उसके लिए भी तैय्यार हूं.........

"अगर मेरे पास इतने ही दस्ते और होते जितने अब हैं तो मैं सलीबियों का तआक्कुब करता और शिकस्त को फ़तह में बदल देता। मैं आप को यक़ीन दिलाता हूं कि मेरें सालारों, कमानदारों और तमाम तर सिपाही का लड़ने का जज़्बा तरोताज़ा हो गया है। मुझे उम्मीद है कि आप आराम से नहीं बैठे होंगे। फ़ौज के लिए भर्ती और नयी तन्ज़ीम में मस्रूफ़ होंगे। आप इत्मीनान से तैय्यारी करें। मैं छापामार जंग जारी रखूंगा। दुश्मन को कहीं भी आराम से बैठने नहीं दूंगा। इस तरह मैं किसी इलाके पर कब्ज़ा तो नहीं कर सकूंगा अल्बत्ता आप को तैय्यारी का वक़्त मिल जाएगा। मैंने दमिश्क भाई शम्सुद्दौला को पैग़ाम भेज दिया है कि मुझे चंद एक दस्ते और दिगर सामान भेजे। हलब, में अल्मलकुसालेह को भी पैग़ाम भेज दिया है कि मुआहिदे के मुताबिक मुझे मदद दे। मै आप को अल्लाह के भरोसे पर तसल्ली दे रहा हूँ कि मेरे मुतअल्लिक फ़िक्र न करें। मैं और मेरे सालार आप की ख़ैरियत और सरगर्मियों के मुतअल्लिक बेताब हैं। अल्लाह हमारे साथ है। उसी की ज़ात बारी से मदद मांगते हैं और हम सब को उसीकी तरफ़ लौट के जाना है।

अल्मलकुल आदिल"

अल आदिल ने ख़त पढ़वा कर सुना। इस पर दस्तख़त किये और कासिद को देकर काहिरा रवाना कर दिया।

❖

काहिरा की फ़िज़ा पर मायूसी के बादल छाये हुए थे। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी वहाँ पहुँच चुका था। शहर में और शहर के मज़ाफ़ात में यही एक आवाज़ उभरती सुनाई देती थी। शिकस्त, शिकस्त, शिकस्त। शकूक और शुबहात भी उभरने लगे थे। शिकस्त जैसे हादसात और ऐसे वाक़िआयत जिनके मुतअल्लिक लोगों को कुछ पता न चल सके ऐसी फ़िज़ा पैदा कर दिए हैं जिससे अफ़वाहें फूटती, फलती फूलती और फैलती हैं। यह अमल काहिराके अन्दर भी और इर्द गिर्द भी शुरू हो गया था। वहां दुश्मन के तख़रीबकार और जासूस भी मौजूद थे जो यूरोप के बाशिन्दे नहीं मिस्र के रहने वाले मुसलमान थे। इसकी उन्हें उजरत मिलती थी कि लोगों में यह मशहूर करें कि सलीबियों के पास इतनी जंगी कुव्वत है जिसके सामने दुनिया की कोई फ़ौज नहीं ठहर सकती। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की हारी हुई फ़ौज के ख़िलाफ़ यह मशहूर किया जाने लगा कि बेकार और अय्याश फ़ौज है। जहाँ जाती है

लूट मार करती और मुसलमान ख़्वातीन की आबरूरेज़ी से भी गुरेज़ नहीं करती। सुल्तान अय्यूबी की जंगी अहलियत के ख़िलाफ़ भी बातें शुरू हो गयीं।

लोग जिस क़दर सीधे सादे होते हैं इतने ही ज़्यादा अफ़वाहें और जज़्बाती बातों को मानते हैं। मिस्रियो ने दहशत को भी क़ुबूल करना शुरू कर दिया था। ज़्यादातर दहशत सिपाही फैलाते थे जो अकेले या दो--दो, चार--चार की टोलियों में मिस्र की सरहद में दाख़िल हो रहे थे। यह देहात के रहने वाले थे जिन्हें भर्ती करके और थोड़ी ट्रेनिंग देकर मैदाने जंग में ले जाया गया था। अल आदिल ने ठीक लिखा था कि बादशाही के लालची मुसमलान उमरा अपनी और सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज को ख़ानाजंगी में ज़ाया न करा देते तो नयी भर्ती को मैदाने जंग में ले जाने का ख़तरा मोल न लिया जाता। एक ग़लती भर्ती करने वाले चन्द एक हुकाम ने की थी जो यह थी कि उन्हे जिहाद के फ़ज़ाइल और एज़ाज़ व मक़ासिद बताये जाते और बताया जाता कि उनका दुश्मन कौन है, कैसा है और उसके अज़ाइम क्या हैं। यह सिपाही प्यादा भी आ रहे थे, ऊंटों और घोड़ो पर भी आ रहे थे। जब कोई सिपाही किसी आबादी में दाख़िल होता तो लोग उसे घेर लेते, खिलाते पिलाते और मैदाने जंग की बातें पूछते थे। यह गंवार सिपाही शिकस्त की ख़िफ़्फ़त मिटाने के लिए अपने कमाण्डरों को नाअहल और अय्याश साबित करते और सलीबी फ़ौज के मुतअल्लिक दहशतनाक बातें सुनाते थे। बाज़ की बातों से पता चलता था कि जैसे सलीबियों के पास कोई माफ़ूक़ुलफ़ितरत क़ुव्वत है जिसके ज़ोर पर वह जिधर जाते हैं सफ़ाया करते जाते हैं।

ऐसे मोअर्रिख़ की तादाद ज़्यादा तो नहीं लेनिक दो तीन ने जिनमें अरनोल क़ाबिले ज़िक्र है लिखा है कि सलीबी एक ख़ुफ़िया हथियार लाये थे और यही उनकी फतह का बाइस बना था। तारीख़ की मुख़्तलिफ़ तहरीरों में इस ख़ुफ़िया हथियार का आगे चलकर कोई ज़िक्र नहीं मिलता। क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद की डायरी में ऐनी शहादत है,ऐसे किसी हथियार का ज़िक्र नहीं। उस दौर के दिगर वक़ाअ निगारों और कातिबों की तहरीरें इस पुरअसरार हथियार के मुतअल्लिक ख़ामोश हैं। ग़ालिबन यह हथियार उस प्रोपगंडे का एक ख़्याली हथियार था जिसे (और दिगर मुसलमान इलाक़ों) में सलीबियों की दहशत फैलाने के लिए किया गया था। हो सकता है इसके बहुत ज़्यादा ज़िक्र से मोअर्रिख़ ने इसे हक़ीक़ी समझ लिया हो।

यह ख़ुफ़िया हथियार दरअसल प्रोपेगंडा था जिसका मक़सद यह था कि क़ौम की नज़रों में फ़ौज को ज़लील व रूसवा कर दिया जाए ताकि सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज क़ौम के तआवुन और नयी भर्ती से महरूम हो जाए। दूसरा यह कि मुसलमानों पर सलीबियों की धाक बैठ जाए। तीसरा यह कि सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ अदमे एतमाद की फ़िज़ा पैदा हो जाए। चौथा यह कि कुछ और लोग सुल्तान के लिए दावेदार बन जाएं और एक बार फिर ख़ानाजंगी शुरू हो जाए।

सुल्तान अय्यूबी दुश्मन के इस हथियार से अच्छी तरह वाकिफ़ था। उसने क़ाहिरा पहुंचते ही अपनी इन्टेलीजेंस के डायरेक्टर सुफ़ियान, कोतवाल ग़यास बलबीस और इन दोनों के

नायबीन को बुलाकर पूरी वज़ाहत से बता दिया था कि अब वह दुश्मन के इस ज़मीनेदोज़ हम्ले को रोकने के लिए सख़्त इक्दामात करें और अपने जासूसों और मुख़्बिरों को ज़ेरे ज़मीन करके सरगर्म कर दें। मगर लोग जानना चाहते थे कि इस शिकस्त के अस्बाब क्या हैं और इस का ज़िम्मेदार कौन है।

❖

रमला से काहिरा तक की मुसाफ़ित बड़ी ही लम्बी थी और सफ़र भयानक और कठिन था रास्ते में पहाड़ी इलाके भी थे, मिट्टी और रेत के टीलों की भूल भूलइया भी और सेहरा भी था जो भूले भटके मुसाफ़िरों का ख़ून चूस लिया करता है। सुल्तान अय्यूबी के वह सिपाही जो मैदाने जंग से मिस्र को चल पड़े थे वह इस लम्बी और भयानक मुसाफ़ित में बिखर गये थे। उनकी वापसी का मंज़र हैबतनाक था। उनमें जो रेगज़ारों के सफ़र से आशना नहीं थे वह जहाँ गिरते वहाँ से उठ नहीं सकते थे। उनकी लाशें सिर्फ़ एक रोज़ सालिम नज़र आती थीं, दूसरे रोज सेहराई लोमड़ियां और भेड़िए उनकी हड्डिया बिखेर देते थे। टोलियों में आने वाले इस अन्जाम से बचे रहते थे और जो ऊंटों, ख़च्चरों और घोड़ों पर सवार थे उनके जिन्दा आ जाने के इम्कानात ज़्यादा थे।

ऐसी ही एक टोली चली आ रही थी। यह सब सिपाही थे और वह ऊंटों और घोड़ों पर सवार थे रास्ते में उनके अकेले धुकेले साथी उनके साथ मिलते गये और यह टोली तीस चालिस अफ़राद का काफ़िला बन गया। वह उस भयानक रेगज़ार में से गुज़र रहे थे जो आज सेहराये सीनाई कहलाता है। इकट्ठे होने की वजह से उनका हौसला कायम था मगर उफ़क तक पानी के आसार नज़र नहीं आते थे। दूर–दूर मैदाने जंग से जिन्दा निकले हुए फ़ौजी, एक–एक दो–दो क़दम घसीटते जाते नज़र आते थे। वह एक दूसरे की कोई मदद नहीं कर सकते थे सिवाए उसके कि कोई मर जाता तो उसका कोई साथी उसे रेत में दफ़्न कर देता था।

सवारों का यह काफ़िला चला आ रहा था आगे वह इलाका आ गया जहाँ मिट्टी के ऊंचे नीचे टीले दिवारों, सुतूनों और मकानों की तरह खड़े थे। किसी ने दूर से एक टीले पर एक आदमी का सर कंधे देखे और वह ग़ायब हो गया। देखने वाले ने अपने साथियों से कहा कि इस जगह चल कर रूक जाएंगे, वहाँ कोई और भी है। पानी न मिला तो साया मिल जाएगा। काफ़िले में अकसरियत उन आदमियों की थी जिनके दिमाग़ थकन और प्यास से माऊफ़ हुए जा रहे थे। इससे पहले वह जंग की बातें करते रहे थे मगर अब उनके मुँह से बात भी नहीं निकलती थी। इनके जानवारों में अभी जान थी और वह अच्छी तरह चले जा रहे थे।

एक मील दूर के टीले सौ कोस की मसाफ़त बन गयी। काफ़िला वहाँ पहुँच गया और वह टीलों के दर्मियान से अन्दर चला गया। अन्दर टीलों का साया था। सब जानवरों से उतरे। जानवरों को साये में छोड़कर सब एक उमूदी टीले के साये में बैठ गये। अभी बैठे ही थे कि एक टीले की ओट से एक आदमी सामने आया और बुत बनकर खड़ा हो गया। वह सर से पांव तक सफ़ेद कपड़ों में मलबूसा था। एक लम्बा और सफ़ेद चुग़ा था जो कंधो से टख़्नों तक

चला गया था। उसकी दाढ़ी स्याह थी। लम्बी नहीं थी। ख़ूबी से तराशी हुई थी। उसके हाथ में असा था जो उमूमन आलिम, फ़ाज़िल या ख़तीब हाथ में रखते थे। वह ख़ामोश खड़ा था। उसे देखकर सब पर ख़ामोशी तारी हो गयी। किसी ने आहिस्ता से कहा– "हज़रते खिज़र हैं।"

"यह इस ज़मीन का इन्सान नहीं।" एक और ने सरगोशी की।

काफ़िले वालों को डर महसूस होने लगा। वह तो पहले ही डरे हुए थे। उस पुर असरार आदमी ने उन के डर में इज़ाफ़ा कर दिया। किसी में हिम्मत नहीं थी कि उससे पूछता कि आप कौन हैं। ऐसे ज़ालिम सेहरा में इस हैसियत के किसी आदमी की मौजूदगी हैरानकुन थी। वह कोई फौजी होता तो सिपाहियों के इस काफ़िले में से कोई भी न डरता...उनके डर में उस वक़्त दहशत आ गयी जब उस आदमी के पहलू में एक औरत उसकी तरह खड़ी हो गयी थी। फ़ौरन बाद उसी तरह एक और औरत उसके दूसरे पहलू में नमूदार हुई। दोनों औरतें सर से पांव तक मस्तूर थीं, उनकी आँखों के सामने जाली की तरह बारीक कपड़ा था। बुर्क़ानुमा लिबादे से उनके हाथ भी नज़र नहीं आते थे।

"तुम पर अल्लाह की रहमत हो।" उस आदमी ने कहा– "क्या मैं आगे आकर बता सकता हूँ कि हम कौन हैं?"

सबने एक दूसरे की तरफ देखा फिर इस शख़्स और औरतों की तरफ़ देखा। किसी ने डरते हुए लहजे में कहा– "आप हमारे पास आयें और बतायें कि आप कौन हैं आप जो हुक्म देंगे हम उसकी तकमील करेंगे।"

वह ऐसी चाल चलता उन तक पहुंचा जो आम इन्सान की चाल नहीं थी। उसके चलने में और सरापा में जलाल था। दोनों मस्तूरात उसके पीछे–पीछे आयीं। सब एहतराम के लिए उठ खड़े हुए। एहतराम मे डर भी शामिल था। वह टीले के साथ बैठ गया। मस्तूरात भी उसके पास बैठ गयीं। जाली में से उनकी आँखें नज़र आ रही थीं। इनसे पता चलता था कि यह ख़ुबूसूरत औरतें हैं लेकिन उनमें से किसी में जुर्रत नहीं थी कि इन आँखों का सामना कर सकता। सफ़ेदपोश शख़्स और उन मस्तूरात के कपड़ों पर गर्द थी जिससे मालूम होता था कि वह सफ़र में हैं।

❖

"मैं भी वहीं से आया हूँ जहाँ से तुम आ रहे हो।" स्याह रेश ने भागे हुए मिस्री सिपाहियों से कहा– "फ़र्क़ यह है कि तुम जहां जा रहे हो वह तुम्हारा घर है और मैं जहां से आ रहा हूँ वह मेरा घर था।" उसके लहजे में संजीदगी और उदासी थी।

"हम किस तरह यक़ीन करें कि आप इन्सान हैं।" एक सिपाही ने पूछा– "हम आप को आसमान की मख़लूक़ समझ रहे हैं।"

"मैं इन्सान हूँ।" स्याह रेश बुज़ुर्ग ने जवाब दिया– "और यह दोनों मेरी बेटियाँ हैं। मैं भी तुम्हारी तरह रम्ला से भाग कर आ रहा हूं। अगर मेरा पीर व मुर्शिद मुझ पर करम न करता तो सलीबी मुझे क़त्ल कर देते और मेरी इन दोनो बेटियों को अपने साथ ले जाते। यह मेरे मुर्शिद

की मज़ार की बरकत है। मैं रम्ला का रहने वाला हूँ। लड़कपन से मज़हब का इल्म हासिल करने का शौक था। मैंने मस्जिदों में इमामों की बहुत खिदमत की और उनसे इल्म हासिल किया है। ख़ुदा अपने रसूल के मज़हब के परस्तारों पर बहुत करम नवाजी करता है। एक रात मुझे ख़्वाब में इशारा मिला कि बग़दाद चले जाओ और वहाँ के ख़तीब के शागिर्दी में बैठ जाओ.......

"मैं पैदल चल पड़ा। मेरे पास कुछ भी नहीं था। माँ–बाप बहुत ग़रीब थे। छोटा सा मश्कीज़ा भी मेरे नसीब में नहीं था कि मैं रास्ते के लिए पानी साथ ले जाता। इल्म का इश्क मुझे घर से निकाल ले गया। सबने कहा यह लड़का रास्ते में मर जायेगा। मेरी मां बहुत रोयी थी और मेरा बाप भी बहुत रोया था मगर मैं चल पड़ा। दिन के वक़्त प्यास और भूख मेरी जान निकाल लेती थी। शाम के बाद जब मैं इस उम्मीद पर कहीं गिर पड़ता था कि मर जाऊंगा मेरे करीब पानी का एक प्याला और खाने के लिए कुछ न कुछ रखा होता था। पहली बार मै। बहुत डरा था। मैं इसे जिन्नात का धोखा समझता था, लेकिन रात को ख़्वाब में इशारा मिला कि यह किसी मुर्शिद की करामत है। मुझे यह पता न चला कि वह मुर्शिद कौन है और कहाँ है। मैं खा पीकर गहरी नींद सो गया। सुबह उठा तो वहाँ प्याला भी नहीं और जिस चंगीर मे रोटियां थी वह भी नहीं थी....

"बग़दाद पहुंचने तक रास्ते में नये चाँद तुलूअ हुए। बहुत लम्बा सफ़र था। हर रात मुझे प्याले में पानी और चंगीर में खाना मिलता रहा। बग़दाद में जामा मस्जिद के ख़तीब ने मुझे देखा तो मेरी अर्ज़ सुनने बेग़ैर बोले कि मैं तुम्हारी राह देख रहा हूँ वह मुझे अपने हुजरे में ले गये। यह देखकर हैरान रह गया कि एक चंगीर पड़ी थी और उसमें एक प्याला रखा था। ख़तीब ने पूछा कि तुम्हें हर रात खाना और पानी मिलता रहा है? मैंने जवाब दिया कि मिलता रहा है मगर हैरान व परेशान हूँ कि चंगीर और प्याला मुझ तक कौन ले जाता और वापस लाता रहा है। वह बोले कि ख़ुदा ने हज़रत मूसा अलै0 की मदद करना चाही थी तो दरियाए नील को हुक्म दे दिया था कि रास्ता देदे। दरिया का आगे का पानी आगे और पीछे का पानी पीछे रह गया औरर ख़ुश्की की इस गली से हज़रत मूसा अलै0 निकल आये थे और जब फ़िरऔन उनके तआक्कुब मे इस गली में दाखिल हुआ तो दरिया के दोनों हिस्से आपस में मिल गये और दरिया उसी तरह कहर से बहने लगा जैसे बहता था। फ़िरऔन ग़र्क़ हो गया.

.....

"ख़तीबे मुकर्रम ने कहा कि हम उसकी ज़ात के ताबेअ हैं जिसने हमें पैदा किया और जो हमें बारी–बारी इस दुनिया से उठाता है। उसका जो बन्दा उसके इल्म के ईश्क़ से दिवाना होता है जैसे तुम हुए उसे वह सेहराओं में प्यासा नहीं मरने देता। उसी की ज़ाते बारी ने मुझे इशारा दिया कि हमने अपने एक बन्दे के लिए महीनों के फ़ासिले और उन फ़ासिलों की सऊबतें मिटा दी हैं। तुम्हारे सीने में जो इल्म है वह इस लड़के के सीने में मुन्तक़िल कर दो और हमने तुम्हारी ख़िदमत के लिए जो दो जिन्नात मुक़र्रर कर रखे हैं उन्हें कहो कि इस लड़के को रास्ते में पानी और खाना पहुंचाते रहें...मैंने ख़ुदाये ज़ुलजलाल के हुक्म की तामील

की। हर रात तुम्हारे लिए यहाँ से खाना और पानी जाता रहा है। हैरान न हो लड़के! परेशान भी न हो। बहुत कम ख़ुशनसीबों के दिलों में इल्म का चिराग़ रौशन होता है जिसकी ख़्वाहिश तुम लेकर आये हो। इरादा नेक हो, दिल में अल्लाह की ख़ुश्नूदी की ख़्वाहिश हो तो जिन्न व इन्स ग़ुलाम हो जाते हैं।"

"क्या जिन्नात आपके के ग़ुलाम हैं?" एक सिपाही ने पूछा।

"वह नहीं।" उसने जवाब दिया– "मैं उनका ग़ुलाम हूँ। कोई किसी को ग़ुलाम नहीं बना सकता। हम सब एक ख़ुदा के एक जैसे बन्दे हैं। ऊंचा और नीचा अमीरी और ग़रीबी से नहीं होता, ईमान की पुख़्तगी और कमज़ोरी से इन्सानों की दरजाबन्दी होती है।"

उसकी बातों में ऐसा असर था जिसने सब के दिलों को मोह लिया औरसब दम बख़ुद होकर सुन रहे थे। उसने कहा–"बग़दाद के ख़तीब ने मेरी रूह को इल्म से रौशन कर दिया। उन्होंने मेरी शादी भी कराई। वहीं मेरी यह दोनों बच्चियां पैदा हुई। मैंने बहुत चिल्ले किये और कुदरत के कारख़ाने के दो तीन राज़ पा लिए। तब एक रात मेरे ख़तीब ने कहा कि अब जा और उनकी ख़िदमत कर जो इल्म अपने साथ क़ब्रों में लिए अबदी नींद सो रहे हैं। उन्होंने मुझे वापस अपने घर रम्ला जाने का हुक्म दिया। दो ऊंट दिए। ज़ादे राह दिया और कहा कि गुनाह का कभी ख़्याल न आने देना। रम्ला पहुंचोगे तो एक रात तुम अपने इरादे के बेग़ैर उठकर चल पड़ोगे। शायद तुम्हें बहुत दूर जाना नहीं पड़ेगा। तुम्हारे कदम अपने आप रूक जाएंगे। वह एक मुकद्दस जगह होगी। इस जगह को अपना आसताना बना लेना, मगर मुझे एक वक़्त जो अभी मुस्तकबिल की तारीकियों में छुपा हुआ है, नज़र आ रहा है कि गुनाह होंगे और तुम्हें दूसरों की गुनाहों की सज़ा मिलेगी। शायद तुम्हे हिजरत करनी पडे......

"मैं जब अपने बीवी और बच्चों के साथ सफ़र में था तो आफ़ताब की तमाजत मेरे कुम्बे के लिए ख़ुन्क हो गयी थी। हमें उस जगह भी पानी मिल जाता था जहाँ की रेत के ज़र्रे पानी की एक बूंद को तरसते जलते अंगारों के शरारे बन कर उड़ते रहते हैं। मैं रम्ला पहुँचा तो मेरे वालिदैन मर चुके थे। मेरी बीवी ने उजड़े हुए घर को आबाद किया.......मैं इल्म व दानिश के समन्दर में गोते लगाता रहा। मेरी बच्चियाँ बड़ी हो गयीं और इनकी माँ को अल्लाह ने अपने पास बुला लिया। बच्चियों ने घर संभाल लिया और एक रात जब मैं गहरी नींद सोया हुआ था मेरी आँख इस तरह खुल गयी जैसे किसी ने जगाया हो......

"मैं उठ खड़ा हुआ। बग़दाद के ख़तीब के वर्षों पुरानी बात याद आई तुम अपने आप जाग उठोगेम और इरादे के बेग़ैर चल पड़ोगे। ऐसे ही हुआ। मेरे ज़ेहन में कोई इरादा, कोई ख़्याल नहीं था घर से निकल गया। आबादी से भी निकल गया। कहीं–कहीं ऐसे लगता था जैसे कोई मेरे आगे–आगे जा रहा हो। मालूम नहीं यह एहसास था या हकीकत, मैं चलता गया। मालूम नहीं तुमने वह जगह देखी है या नहीं जहाँ गहराई है और गहराई में नदी बहती है। सलीबियों की फौज उसी गहराई में छुपी हुई थी। मैंने सुना था कि सुल्तान अय्यूबी को ज़मीन की आख़िरी तह में छुपा हुआ दुश्मन भी नज़र आ जाता है मगर वहाँ उसकी आँखों पर ख़ुदा ने ऐसी पट्टी बांधी कि उसे यह भी नहीं मालूम हो सका कि वह ख़ुद कहाँ है। सलीबी फ़ौज

तुम्हारी फ़ौज को फंदे में लाकर गहराई से निकली और हम्ला किया और तुम्हारा जो हाल हुआ वह तुम जानते हो......

"इस जंग से वर्षों पहले मैं रात को अपने आप या ग़ैब की कुव्वत के ज़ेरे असर इस गहराई में पहुँच गया और एक जगह मेरे कदम रूक गये। चांदनी रात थी। मुझे एक क़ब्र नज़र आई जिसके इर्द गिर्द पत्थरों की दो हाथ ऊंची दिवार थी। मैंने आज़माने के लिए क़दम किसी और सिम्त को उठाये लेकिन मैं क़ब्र की तरफ घूम गया और पत्थरों को दिवार में अन्दर जाने का रास्ता बना हुआ था उसमें दाख़िल हो गया। मेरे हाथ अपने आप फ़ातिहा के लिए उठे। मुझे ऐसे लगा जैसे वहाँ चांदनी ज़्यादा सफ़ेद थी। मेरे ज़ेहन में अपने ख़्याल आया कि ख़तीबे मुकर्रम ने इसी जगह की निसानदेही की थी। मैं क़ब्र के पास बैठ गया और क़ब्र पर हाथ रखकर अर्ज की कि मुझ गुलाम के लिए क्या हुक्म है। मुझे इसके जवाब में कोई आवाज़ न सुनाई दी। अपने आप ही ख़्याल आया कि मुझे जो फ़ैज़ मिलेगा इसी से मिलेगा..... मैं ने रात वहीं गुज़ार दी। सुबह के वक़्त नदी में जाकर वज़ू किया और क़ब्र पर नमाज़ पढ़ी। वहां से जब रूख़्सत हुआ तो मुझ पर ख़ुमार तारी था जैसे मैंने ख़ज़ाना पा लिया हो.....

"इसके बाद मुझे इस क़ब्र से उसी तरह इशारे मिलने लगे कि कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती थी। मेरे दिल में कोई बात आती जो मेरा यकीन बन जाती थी। मैंने क़ब्र की दिवारें ऊंची करके ऊपर गुम्बद बनवा दिया। मैं दूर तक गया। हलब और मुसिल के अलावा बैतुल मुकद्दस तक गया। अब कुछ अर्से से मुझे उस मज़ार से जो इशारे मिल रहे थे वह अच्छे नहीं थे। यह जिस बर्गुज़ीदा इन्सान का मज़ार है उसकी रूह तड़पती महसूस होती थी। क़ब्र पर मैंने सब्ज़ चादर डाली थी। एक रात चादर फड़फड़ाई। मैं डर गया और मैंने चादर पर हाथ फेर कर कहा– "मुर्शिद! मेरे लिए क्या हुक्म है?".....

"मज़ार के अन्दर से मुझे आवाज़ सुनाई दी– "तू देख नहीं रहा कि मुसलमान शराब पी रहे हैं?" इससे पहले मैंने आवाज़ कभी नहीं सुनी थी। उसने मुझे कहा कि मैं मुसलमानों को शराब की तबाहकारियों से ख़बरदार करूँ। मैंने हुक्म की तकमील की लेकिन शराब पीने वाले उमरा और हाकिम थे जिनके कानों तक मेरी आवाज़ न पहुँच सकी। फिर एक रात क़ब्र की चादर ने फड़फड़ाकर मुझे बताया कि मिस्र से आई फ़ौज मुसलमानों की आबादियों में मुसलमान के साथ वही सलूक कर रही है जो सलीबी फौज किया करती है। उस वक़्त सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज दमिश्क में थी, और दमिश्क से हलब तक और वहाँ से रम्ला तक जगह–जगह मौजूद थी। इस फ़ौज के कमानदारों ने जिस मुसलमान घराने में कोई कीमती चीज़ और रक़म देखी उठा ले गये। उन्होंने पर्दा नशीन ख़्वातीन पर दस्तदराज़ियां कीं। उनकी देखा देखी सिपाहियों ने भी लूट मार और आबरूरेज़ी शुरू कर दी। यहाँ तक पता चला कि सालारों और कमानदारों ने मुसलमान लड़कियों को अग़वा करके अपने ख़ेमों में रखी हुई हैं। मज़ार से मुझे हुक्म मिलता था कि मैं सुल्तान अय्यूबी के पास जाऊँ और उसे बताऊँ कि यह फ़ौज ख़िलाफ़ते बग़दाद की है मिस्र की फ़िरऔनो की नहीं। अगर फ़ौज ने यह गुनाह जारी रखे तो इसका हश्र फ़िरऔने मूसा जैसा होगा.....

"उस वक़्त सुल्तान अय्यूबी हलब के करीब ख़ेमाज़न था। मैं इतनी लम्बी मसाफ़त तय करके उसे मिलने गया तो उसके मुहाफ़िज़ों ने मुझसे पूछा कि तुम सुल्तान अय्यूबी से क्यों मिलना चाहते हो। मैंने बताया कि मैं रम्ला से आया हूँ और एक पैग़ाम लाया हूँ। उन्होंने पूछा कि पैग़ाम किस तरफ से है। मैंने बताया कि जिसने पैग़ाम दिया है, वह जिन्दा नहीं। मुहाफ़िज़ों ने कहकहा लगाया और उनके कमानदार ने बुलन्द आवाज़ से कहा आओ तुम्हें एक पागल दिखाऊँ। कहता है क़ब्र से सुल्तान के लिए पैग़ाम लाया हूँ। एक ने कहा कि शेख़ सन्नान का भेजा हुआ फ़िदाई है। सुल्तान को क़त्ल करने आया है। इसे पकड़ लो। किसी ने कहा सलीबियों का जासूस है, इसे क़त्ल कर दो। मैंने गिरफ़्तारी से बचने के लिए यह ज़ाहिर किया कि मैं पागल हूँ। मैं वहाँ से भाग आया। मैंने अपनी आँखों से देखा कि सुल्तान के मुहाफ़िज़ों के एक ख़ेमें में दो लड़कियाँ बैठी हुई थीं।"

"हमने अपनी फौज के साथ कोई औरत नहीं देखी।" एक सिपाही ने कहा।

"क्या तुम उस वक़्त से फ़ौज के साथ हो जब यह दमिश्क़ में गयी थी?" स्याह रेश ने कहा।

"हम सब पहली बार इधर आये हैं।" सिपाही ने जवाब दिया– "हम फ़ौज में इतने पुराने नहीं हैं।"

"मैं पुरानी फ़ौज की बात कर रहा हूँ।" उसने कहा– "उस फ़ौज के कमानदारों और सिपाहियों को सज़ा मिल चुकी है। तुम नये थे। तुमने अभी कोई गुनाह नहीं किया था। इसलिए तुम जिन्दा व सलामत वापस आ गये हो। जिन्होंने मुसलमान होते हुए मुसलमानों के घर लूटे थे और पर्दादार औरतों पर दस्तदराज़ी की थी वह मारे गये हैं। जो ज़्यादा गुनाहगार थे उनमें से किसी की टांगे कटी और किसी के बाज़ू। वह जिन्दा थे तो गिद्ध उनकी आँखें निकाल रहे थे, और जो इनसे भी ज़्यादा गुनाहगार थे वह सलीबियों के क़ैद में चले गये हैं जो उनके लिए जहन्नम से कम नहीं होगी, उनके लिए कभी ख़त्म न होने वाली अज़ीयतें हैं। वह भूखे प्यासे तड़पते रहेंगे मगर मरेंगे नहीं। मरने की दुआएं मांगेगे। उनकी दुआएं क़ुबूल नहीं होगी।"

"क्या हमारी शिकस्त की वजह यही है?" एक सिपाही ने पूछा।

"मुझे दो साल पहले इशारा मिल गया था कि यह फ़ौज तबाह होगी।" उसने कहा– "और यह फ़ौज कुफ़्फ़ार को मौक़ा देगी कि वह इस्लाम की तज़लील करें। अब यह फ़ौज अल्लाह की दरगाह से धुत्तकारी गयी है।'

"आप कहाँ जा रहे हैं? किसी ने पूछा।

"मैं तुम्हारी तरह अल्लाह के क़हर से जो सलीबी फौज की सूरत में नाज़िल हुआ है भागकर आया हूँ।" स्याह रेश ने जवाब दिया– "सलीबी फ़ौज तूफ़ान की तरह आई। तुम्हारी फ़ौज उसे रोक न सकी। अगर सिर्फ़ मेरी अपनी जान होती तो अपने मुर्शिद के मज़ार पर जान क़ुर्बान कर देता लेकिन अपनी बेटियों की आबरू को मै क़ुर्बान नहीं कर सकता था। सलीबी दो चीज़ों को नहीं छोड़ते। रक़म और ख़ूबसूरत मस्तूरात। मुझे मज़ार से हुक्म मिला

कि अपनी बेटियों को साथ लो और मिस्र की तरफ़ निकल जाओ। मैंने अर्ज़ की कि मैं ज़िन्दा किस तरह पहुँचूंगा। मज़ार से आवाज़ आई कि तुमने हमारी जो ख़िदमत की है इसके एवज़ तुम खैरियत से काहिरा पहुंच जाओगे लेकिन वहाँ ख़ामोश न बैठना। हर किसी को बताना कि गुनाह करोगे तो तुम्हें ऐसे ही सज़ा मिलेगी जैसी तुम्हारी फ़ौज ने भुगती है। मुझे मज़ार ने बहुत कुछ बताया है जो मैं मिस्र चलकर बताऊंगा.....तुम एक दूसरे को देखो। तुम्हारे चेहरे लाशों जैसे हो गये हैं। तुम्हारे जिस्मों में जान नहीं रही। मुझे देखो, मैं अपनी बेटियों के साथ पैदल आ रहा हूँ। मेरे पास कुछ खाने के लिए भी नहीं कुछ पीने के लिए भी नहीं।"

"क्या आप हमें मिस्र तक अपनी तरह ले जा सकते हैं?" एक सिपाही ने पूछा।

"अगर तुम यह वादा करो कि दिलों से गुनाह का ख़्याल निकाल दोगे।" उसने जवाब दिया–"और यह वादा भी करो कि मैं जिस मक़सद के लिए मिस्र जा रहा हूँ उसमें मेरा साथ दोगे।"

"हम सच्चे दिल से वादा करते हैं।" बहुत सी आवाज़ सुनाई दीं।" हमें अपना मक़सद बतायें। हम जब तक जिन्दा हैं आप का साथ देंगे।"

"मैं सिर्फ़ अपनी जान और अपनी बेटियों की इज्ज़त बचाने के लिए रम्ला से नहीं भागा।" उसने कहा – "मुझे मज़ार ने हुक्म दिया है कि मिस्र जाकर लोगों को बताओ कि तुम फ़िरऔनों की सरज़मीन के पैदवार हो। इस मिट्टी में गुनाहों की तासीर है। हज़रत युसूफ़ मिस्र में निलाम हुए थे। हज़रत मूसा की बेअदबी मिस्र में हुई थी। मिस्र में पैग़म्बरों के कबीले फ़िरऔनों के हाथों कत्ल हुए थे। ऐ मिस्र वालो! इस मिट्टी की तासीर से और इसकी फ़िज़ा के असर से बचो और ख़ुदा की रस्सी को मज़बूती से पकड़ो। तुम्हारी तबाही और सज़ा शुरू हो चुकी है। मैं यह पैग़ाम मिस्र वालों के लिए ले जा रहा हूँ तुम अगर यह पैग़ाम सारे मुल्क में फैलाने में मेरी मदद करोगे तो तुम्हारी दुनिया भी बहिश्त बनी रहेगी और आख़िरत में भी तुम्हारे लिए बहिश्त के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे।"

❖

सूरज ग़ुरूब होने में अभी बहुत देर बाकी थी। रम्ला की तरफ़ से आने वाले दो तीन सिपाही करीब से गुज़रे। स्याह रेश ने कहा कि उन्हें रोक लो। यह रात तक ज़िन्दा नहीं रहेंगे। उन्हें रोक लिया गया। वह सिस्कियों की तरह पानी मांग रहे थे। स्याह रेश ने उन्हें कहा– "पानी रात को मिलेगा। उस वक़्त तक उस ख़ुदा को याद करो जिसने तुम्हें रम्ला से ज़िन्दा निकाला और नयी ज़िन्दगी दी है।"

कुछ देर बाद दो आदमी घोड़े पर सवार उधर से गुज़रे। वह फ़ौजी नहीं थे। उन्होंने उस काफ़िले को देखा। फ़िर स्याह रेश को देखा। उन्होंने घोड़े रोक लिए, कूद कर उतरे, घोड़ों को वहीं छोड़कर दौड़े आये। दोनों ने स्याह रेश के सामने सज्दा किया फिर उसके हाथ चूमे और पूछा– "या मुर्शिद! आप कहाँ?" उसका जवाब सुनकर इन दोनों ने सिपाहियों को बताया कि वह कितने ख़ुशनसीब हैं कि अल्लाह की भेजी हुई इस बुज़ुर्ग व बरतर शख़्सियत का साथ उन्हें मयस्सर आया है। उन्होंने यह भी बताया कि स्याह रेश ने एक साल पहले बता

दिया था कि मिस्र की गुनाहगार फ़ौज इस मज़ार के इलाके में आ गयी तो तबाह हो जाएगी।

"इधर देखो।" स्याह रेश ने सबसे कहा– "जहाँ कहीं कोई भूला भटका मिस्र की तरफ़ जाता नज़र आ जाए उसे यहाँ ले आओ। रात को यहाँ कोई भूखा और प्यासा नहीं रहेगा।"

गुज़रने का यही एक रास्ता था। बाक़ी तमाम इलाक़ा टीलों का था, और यह वसीअ इलाक़ा था। उसके अन्दर जाना बेकार था। बाहर से ही पता चल रहा था कि यहाँ पानी का नाम व निसान नहीं। सबको मौत नज़र आ रही थी मिस्र क़ी सरहद अभी बहुत दूर थी। यह लोग सहारे ढूंढ रहे थे। वह स्याह रेश के आगे पीछे जा रहे थे। उसकी हर एक बात उनकी दिलों में बैठ गयी थी मगर प्यास की शिद्दत से दो तीन सिपाही ग़शी की हालत में चले गये थे। स्याह रेश उन्हें तसल्लियां दे रहा था।

सूरज ग़ुरूब हो गया फ़िर रात तारीक हो गयी। बहुत देर बाद जब सेहरा ख़ामोश था टीलों के अन्दर से एक परिन्दे की आवाज़ सुनाई दी। सब चौंक उठे। ऐसे जहन्नम में जहाँ पानी का तसव्वुर भी नहीं था और मौत सर पर मंडला रही थी वहाँ परिन्दे की आवाज़ ग़ैर क़ुदरती थी। यह परिन्दा हो नहीं सकता था। सबकी सांसे रूक गयीं। यह कोई बदरूह हो सकती थी।

"अल्लाह तेरा शुक्र।" स्याह रेश ने सकून की आह लेकर कहा–"मेरी दुआ क़ुबूल होगयी है।" उसने अपने सामने बैठे हुए दो सिपाहियों से कहा– "तुम दोनों उस तरफ़ जाओ। चालिस क़दम गिनो। वहाँ से दायें को मुड़ जाओ। चालिस क़दम गिनो। वहाँ से बायें को मुड़ जाओ। आग कहीं आगे जलती नज़र आयेगी। उसकी रौशनी में तुम्हें पानी नज़र आयेगा। शायद खाने के लिए भी कुछ हो। जो कुछ वहाँ पड़ा हुआ हो उठा लाना। यह आवाज़ परिन्दे के नहीं ग़ैब का इशारा है।"

"मैं नहीं जाऊँगा।" एक सिपाही ने ख़ौफ़ज़दा लहजे में कहा– "मैं जिन्नात की जगह नहीं जाऊंगा।"

वह दो आदमी उठ खड़े हुए जो बाद में घोड़ों पर सवार आये थे और स्याह रेश के आगे सज्दा किया था। एक ने सिपाहियों से कहा– "मत डरो। जिन्नात तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुंचायेंगे। उन्हें हुक्म मिला हुआ है कि यह बुज़ुर्ग जहाँ जाएंगे उन्हें खाना और पानी पहुंचता रहेगा। हम इनके मुअज़िज़े से वाक़िफ़ हैं.......दो तीन आदमी हमारे साथ चलो।"

वह दो तीन सिपाहियों को साथलेकर चल पड़े। स्याह रेश के कहने के मुताबिक़ उन्होंने क़दम गिने और मुड़े। दो टीलों के दर्मियान से गुज़रे तो उन्हें एक जगह आग जलती नज़र आई। सब कलमा तैय्यबा का विर्द करते आगे बढ़े। आग की रौशनी में पानी भरे हुए चार पांच मश्कीज़े पड़े थे और कपड़े के एक थैले में ख़जूरें भरी हुई थीं। उन्होने मश्कीज़े और थैला उठाया और स्याह रेश के आगे यह सामान जा रखा। उसने सब को थोड़ी–थोड़ी ख़जूरें तकसीम कीं और दो मश्कीज़े उनके हवाले करके कहा कि ज़रूरत से ज़्यादा पानी न पियें, पानी बचाने की कोशिश करें। इसके बाद शक की गुंजाईश नहीं रही कि स्याह रेश कोई आम किस्म का दूरवेश नहीं, अल्लाह के मुसाहिबों में से है। उसने सब को तयम्मुम कराया और

बाजमाअत नमाज़ पढ़ाई। फिर सब सो गये अभी सेहर तारीक थी जब उसने सबको जगा दिया और काफ़िला मिस्र को रवाना हो गया। स्याह रेश को एक ऊंट पर और उसकी बेटियों को दूसरे ऊंट पर सवार करा दिया गया था। रास्ते में उन्हें तीन चार सिपाही मिले जो मिस्र को जा रहे थे। स्याह रेश ने उन्हें पानी पिलाया, खजूरें खिलाई और दो शुतरसवारों के पीछे उन्हें सवार करा दिया। इस काफ़िले से दायें तरफ़ दूर एक और काफ़िला जा रहा था किसी ने कहा कि उन्हें भी साथ मिला लिया जाए। स्याह रेश ने कहा वह हमारी तरह भागे हुए लोग मालूम नहीं होते। उनका और हमारा कोई साथ नहीं।

❖

बहुत दिनों बाद सिपाहियों का यह काफ़िला स्याह रेश की क़यादत में मिस्र की सरहद में दाख़िल हुआ। वह दो आदमी जिन्होंने स्याह रेश के आगे सज्दा किया था रास्ते में स्याह रेश के मुअज़िज़े सुनाते गये थे। उन्होंने सिपाहियों से कहा था कि उसे जो कोई अपने गांव में रख लेगा उसे रिज़्क़ की कमी नहीं होगी और ख़ुदा उस पर हमेशा मेहरबान रहेगा। एक ही गाँव के तीन चार सिपाही उसे वहाँ रखने के लिए तैय्यार हो गये। स्याह रेश से कहा गया कि वह उनके गाँव चले। उसने कुछ बातें पूछीं और उनके गाँव जाने पर अमादा हो गया।

यह एक बड़ा गाँव था जो क़ाहिरा से दूर नहीं था। काफ़िला जब उस गाँव में दाखिल हुआ तो सिपाहियों को देखकर गाँव वाले उनके गिर्द जमा हो गये। उनके जानवरों के आगे चारा डाला। काफ़िले वालों को खाना और पानी दिया और उनसे मुहाज़ की बातें सुनने बैठ गये। उन्हें स्याह रेश के मुतअल्लिक़ बताया गया कि ख़ुदा के मुसाहिबों में से है और इसे जिन्नात के हाथों रिज़्क़ पहुँचता है। लोगों को उसकी मुख़्तसर सी दस्ताने हयात सुनाई गयी। इस दौरान वह आँखे बन्द किए मुकराक़बे में रहा। उसकी बेटियों को उस गाँव का रहने वाला एक सिपाही अपने घर ले गया।

"मुहाज़ का राज़ मुझसे पूछो।" यह सिपाही हैं। यह सिर्फ़ लड़ते हैं। उन्हें कुछ इल्म नहीं होता कि उन्हें लड़ाने वालों की नीयत क्या है। इन चन्द सिपाहियों ने जिन्हे मैं सेहरा की आग से जिन्दा निकाल लाया हूँ उस फ़ौज की गुनाहों की सज़ा भुगती है जो इससे पहले मुल्क शाम को गयी थी। उस फ़ौज ने हर मैदान में फ़तह हासिल की। वहाँ की वादियां और वहाँ के सेहरा, सुल्तान अय्यूबी जिन्दाबाद, के नारों से गूंजते लरज़ते रहे। इस फौज ने हर जगह ज़र व जवाहरात और औरतें देखीं। वहाँ औरतें मिस्र की औरतों से ज़्यादा ख़ूबसूरत हैं। फ़तह के नशे ने उस फ़ौज में फ़िरऔनियत पैदा कर दी। दिमाग़ों में माले ग़नीमत रह गया, फ़िर उस फ़ौज के सालारों, कमानदारें और सिपाहियों ने क़ौम की इज़्ज़त और ग़ैरत को ख़ैरबाद कहा और मुसलमानों में भी लूट मार शुरू कर दी। जहाँ कोइ ख़ूबसूरत औरत और जवान लड़की नज़र आई उसे बेआबरू और अग़्वा किया। यह सब मुसलमान मस्तूरात थीं। उन्हें ख़ेमो में रखा गया।"

"क्या सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी अंधा था?" किसी ने क़हर आलूदा आवाज़ में कहा— "वह देख नहीं सकता था कि उसकी सिपाह क्या कर रही है?"

"ख़ुदा जब सज़ा देने का फ़ैसला कर लेता है तो इमामो, आलिमों और हुक्मरानों की अक्ल पर भी पर्दा डाल देता है।" स्याह रेश ने कहा– "सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ख़ुद फ़तह के नशे से बदमस्त हो गया था। वह शायद ख़ुदा के वजूद को और उसकी लाठी को भूल गया था। उसके गिर्द उसके मुहाफ़िज़ों और अय्याश सालारो ने ऐसा घेरा डाल रखा था कि किसी मज़लूम की फ़रियाद उस तक पहुँच ही नहीं सकती थी। जो बादशाह फ़रियादियों के लिए इन्साफ के दरवाज़े और अपने कान बन्द कर लेता है वह अल्लाह की बख़्शिश से महरूम हो जाता है। मुझे दो साल से इशारे मिल रहे थे कि यह फ़ौज अमाले बद से बाज़ न आई तो तबाह होगी। मुझे रातों को ग़ैब की आवज़ें सुनाई देती रहीं मगर जिनके लिए आवाज़े आई थीं उनके कान बन्द थे.......

"फिर ख़ुदा ने यूँ किया कि उनकी आँखों पर पट्टियां बांध दी और सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी जो मैदान जंग का बादशाह है और जिसे सलीब के कुफ़्फ़ार मैदाने जंग का देवता कहते हैं अक्ल का ऐंसा अंधा हुआ कि सारी चालें भूल गया। उसकी चाल दुश्मन चल गया और उसे ऐसी शिकस्त हुई कि तन तन्हा मिस्र पहुँचा।"

"हम सलीबियों से शिकस्त का इन्तक़ाम लेंगे।" एक जोशिले देहाती ने कहा– "हम अपने बेटों को क़ुर्बान कर देंगे।"

"फ़तह और शिकस्त ख़ुदा के इख़्तियार में है।" स्याह रेश ने कहा– "उसकी ज़ात ने हुक्म शिकस्त का दिया हो तो बन्दों को जोश सर्द पड़ जाता है। मैं भी इसीलिए यहाँ आया हूँ कि मिस्र के बच्चे बच्चे को शिकस्त का इन्तक़ाम लेने के लिए तैय्यार करूँ लेकिन सज़ा का वक़्त अभी ख़त्म नहीं हुआ। तुम अगर अपने बेटों को फ़ौरन फ़ौज में भर्ती कराके मुहाज़ पर भेज दोगे तो वह मरेंगे और शिकस्त खायेंगे। हर अमल के लिए एक वक़्त मुकर्रर होता है। वह वक़्त अभी दूर है। जब तुम शिकस्त को फ़तह में बदल दोगे। सबसे पहले ख़ुदा को याद करो। उससे अपने बेटों की गुनाहों की बख़्शिश मागों जिन्हे तुम ने मुल्क शाम में भेजा था।"

❖

"शिकस्त की ज़िम्मेदारी मेरे सर पर डालो।" सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने कहा। वह अपने सालारों, नायब सालारों, कमानदारों और शहरी इन्तज़ामियां के हुकाम से ख़िताब कर रहा था– "शिकस्त के अस्बाब बड़े वाज़ेह हैं। मुझ से यह ग़लती हुई कि मैं नयी भर्ती लेकर गया। अगर मैं ज़्यादा इन्तज़ार करता और मिस्र में बैठा रहता तो दुश्मन सारे शाम में फैल जाता। मैंने फ़ौज की जिस कमी को नये सिपाहियों से पूरा किया है उसके मुतअल्लिक तुम जानते हो कि इसका जिम्मेदार कौन है, लेकिन मैं अब इस बहस में वक़्त ज़ाया नहीं करूंगा कि इस का जिम्मेदार फ़लां है और वह गुनाह फ़लां ने किया है। अगर जुर्म आयद करने हैं तो मुझ पर करो। फ़ौज को मैंने लड़ाया है।। अगर चालें ग़लत थीं तो मेरी थीं। इसका कफ़्फ़ारा मुझे अदा करना है और मैं करूँगा। फ़तह और शिकस्त हर मार्के का अन्जाम होता है। आज हम उस अन्जाम से दो चार हुए हैं जिसके लिए तुम ज़ेहनी तौर पर तैय्यार नहीं थे। इसलिए तुम सबके चेहरों पर उदासी और आँखों में बेचैनी है। अगर तुम मुझे शिकस्त की सज़ा देना

चाहते हो तो मैं इसके लिए भी तैय्यार हूँ। मेरे कानों में यह आवाज़े भी पहुँच रही हैं कि मेरी फ़ौज शाम में जाकर आबरू रेज़ी, लूट मार और शराब खोरी की आदी हो गयी थी। मुझे यह भी बताया जा रहा है कि मैंने ख़लीफ़ाए बग़दाद पर दहशत तारी करने के लिए दानिस्ता शिकस्त खाई है और मैं शिकस्त को फ़तह में बदल कर ख़लीफ़ा को अपना मुरीद बनाने की कोशिश करूंगा। मुझे फ़िरऔन तक कहा जा रहा है। मैं किसी भी इल्ज़ाम का जवाब नहीं दूंगा। इन इल्ज़ामात का जवाब मेरी ज़ुबान नहीं मेरी तलवार देगी। मैं अल्फ़ाज़ से नहीं अमल से साबित करूंगा कि यह किसके गुनाह थे जिनकी सज़ा मुझे और मेरे मुजाहिदीन को मिली है।"

इतने में दरबान ने इत्तलाअ दी कि हमात से क़ासिद आया है। सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने उसे फ़ौरन अन्दर बुलाया। गर्दो गुबार से अटे हुए और थकन से चूर क़ासिद ने सुल्तान अय्यूबी को अल आदिल का पैग़ाम दिया। पैग़ाम खोल कर पढ़ा तो सुल्तान अय्यूबी के आँखों में आसू आ गये। उसने पैग़ाम एक सालार के हाथ देकर कहा– "यह पढ़कर सबको सुनाओ।"

ज्यों–ज्यों सालार पैग़ाम पढ़ता जा रहा था सबकी आँखों में चमक आती जा रही थी। सिस्कियों की तरह तीन चार सरगोशियाँ सुनाई दीं। "ज़िन्दाबाद, ज़िन्दाबाद।"

"यह गुनाहगारों का कारनामा है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "तुममे से जो क़ाहिरा में थे नहीं जानते कि अल आदिल के पास कितनी फ़ौज है। तुम यह भी नहीं जानते कि बिल्डून के पास दस गुना ज़्यादा फ़ौज थी। उसके सवार ज़िर्रापोश हैं। उसके प्यादे लोहे के ख़ौद पहनते हैं। क्या अल आलि के मुजाहिदीन ने साबित नहीं कर दिया कि हम शिकस्त को फ़तह में बदल सकते हैं? क्या तुम मुझसे यह तवक्को रखते हो कि सर पकड़ कर बैठ जाऊं? अगली जंग की तैय्यारी करो। मुझे फ़ौज की भर्ती दो। तुम्हे क़िब्ला अव्वल पुकार रहा है। मैं दुश्मन के साथ कोई समझौता और कोई मुआहिदा नहीं करूंगा।"

अल आदिन के पैग़ाम ने जहाँ सुल्तान अय्यूबी को हौसला दिया वहाँ तमाम सालारों वग़ैरह के मजरूह हौसले तरो ताज़ा हो गये। उनमें से बाज़ के दिलों में सुल्तान अय्यूबी और उसके फ़ौज के ख़िलाफ़ शकूक पैदा हो गये थे। वह साफ़ होने लगे। अल आदिल ने इसी एक मार्के पर इक्तेफ़ा नहीं किया। उसने अपने दस्तों को तीस से चालीस नफ़री के जैशों मे तक़सीम कर दिया और उन्हें उस इलाके में ले गया जहाँ बिल्डून की फ़ौज ख़ेमाज़न हो गयी थी। अल आदिल ने अपने जैशों के कमानदारों को शबख़ून मारे और ग़ायब हो जाने की हिदायात दीं। मक़सद यह था कि दुश्मन को परेशान रखा जाए ताकि वह पेशक़दमी भी न कर सके और आराम से बैठ भी न सके।

बिल्डून पहले ही नुक़सान उठा चुक था। वह इस इरादे से इतनी ज़्यादा फ़ौज लेकर आया था कि दमिश्क़ तक के इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर लेगा। अब उसकी यह हालत हो गयी कि हर रात ख़ेमागाह के किसी न किसी हिस्से पर तीरों की बौछार होती थी या हम्ला होता था। फ़ौज के बेदार होने तक हम्लावर दूर निकल गये होते थे। बिल्डून ने फ़ौज को तमाम तर

इलाके में दूर दूर तक फैला दिया। अल आदिल के छापामारों को पकड़ने के लिए उसने टोलियां तैय्यार कीं जो रात को गश्त पर रहती थीं मगर हर सुबह बिल्डून को यह ख़बर सुननी पड़ती थी कि आज फलां कैम्प पर हम्ला हुआ है या फलां टोली मारी गयी है। वह इलाका पहाड़ी था। इस से अल आदिल के छापामार जैश ख़ूब फ़ायदा उठा रहे थे मगर यह फ़ायदा अल आदिल को बहुत मंहगा पड़ा। छापामार इतनी दिलेरी से शबखून मारते थे कि कैम्प के अन्दर चले जाते और उनमें से चन्द एक जाने कुर्बान कर देते थे।

इस तरीकाए जंग और कुर्बानी से अल आदिल कोई इलाका फतह नहीं कर सकता था। वह दुश्मन को वहाँ से पीछे भी नहीं हटा सकता था लेकिन यह फ़ायदा कुछ कम न था कि सलीबियों की इतनी बड़ी फ़ौज पेशक़दमी करने के काबिल नहीं रही थी। अगर बिल्डून पेशक़दमी करता तो आमने सामने जंग में अल आदिल इतनी क़लील फ़ौज से उसके सामने दो घंटे भी नहीं रुक सकता। उसने बिल्डून के कैम्प में काम करने वाले मुक़ामी लोगों में अपने जासूस भी छोड़ रखे थे। वह दुश्मन की ज़रा-ज़रा सी हरकत की इत्तलाअ अल आदिल को दे देते थे। एक बार इन जासूसों में से एक ने सलीबियों के उस ख़ुश्क घास के पहाड़ जैसे अंबार को आग लगा दी थी जो उन्होंने घोड़ों के लिए जमा कर रखा था।

अल आदिल को इत्तलाअ मिल चुकी थी कि दमिश्क से थोड़ी सी कुमक आ रही है। हलब से कुमक मिलने की तवक्को नहीं थी। अल्मलकुस्सालेह ने पैग़ाम का जवाब दिया था कि सलीबी (फ्रेंक्स जिन्हें फिरंगी कहा जाता था) किला हरान को मुहासिरे में लेना चाहते हैं। अगर उन्होंने ऐसा ही किया तो उन पर हलब की फ़ौज से हम्ला किया जाएगा।

❖

चन्द एक यूरोपी मोअर्रिख़ीन सलीबी जंगो के इस दौर के मुतअल्लिक़ लिखा है कि रम्ला की शिकस्त के बाद इस्लामी फ़ौज को ख़त्म कर दिया गया। इसके जो दस्ते बच गये थे उन्होंने लूट मार को पेशा बना लिया। वह सलीबियों के फ़ौजी क़ाफ़िलों को लूट लेते थे।

हक़ीकत यह है कि लूट मार ख़ुद सलीबी करते थे। ज़्यादा तर मोअर्रिख़ इसकी तस्दीक़ करते हैं। इससे पहले भी इस सिलसिले की कहानियों में मोअर्रिख़ों के हवाले से बयान किया गया है कि सलीबी फ़ौज मक़बूज़ा इलाक़ों में मुसलमान क़ाफ़िलों को लूट लिया करती थी और यह लूट मार इस तरह की जाती थी जैसे यह कोई फ़ौजी ड्यूटी हो। जिन मुसलमान दस्तों के मुतअल्लिक़ चन्द एक मोअर्रिख़ों ने यह लिखा है कि वह लूट मार करने लगे थे वह अल आदिल के छापामार जैश थे जिन्होंने शाह बिल्डून की इतनी बड़ी फ़ौज को गोरीला आपरेशन से एक ही इलाके में उलझा लिया था।

पहले कहा जा चुका है कि शबखून (गोरिला आपरेशन) अल आदिल को मंहगा पड़ा था लेकिन उसके ट्रोप्स का जज़्बा ऐसा था कि कोई सिपाही मुंह नहीं फेरता था। अक्सर जैश मुसलसल वादियों वग़ैरह में ही घूमते और भटकते रहते थे। अपनी ज़रूरियात पूरी करने के लिए भी अपने अड्डे पर वापस नहीं आते थे। असदुल असदी की ग़ैर मतबूआ तहरीरों के मुताबिक़ वह चीतों की तरह शिकार की तलाश में रहते थे, और जब शिकार पर झपटते थे तो

उन्हें अपनी जानें चले जाने का कोई ग़म नहीं होता। वह दुश्मन को ज़्यादा से ज़्यादा नुक्सान पहुँचाने की कोशिश में शहीद और शदीद ज़ख़्मी हो जाते थे। उनकी रातें दश्त और बयाबां में गुज़रतीं और वह मनपसन्द खानों से अपने आप को महरूम रखते थे।

मगर क़ाहिरा में यह प्रोपेगण्डा बहुत तेज़ी से बढ़ता जा रहा था कि अपनी फ़ौज बदकार और अय्याश हो गयी है और रम्ला की शिकस्त उसी की सज़ा है। क़ाहिरा की इन्टेलीजेंस को यह पता नहीं चलता था कि यह प्रोपेगण्डा कहाँ से उठ रहा है यह नये सिपाहियों की ग़ैर मोहतात बातों का नतीजा है या दुश्मन के बाक़ायदा एजेंट सरगर्म हैं? यह भी देखा गया कि लोग फ़ौज में भर्ती होने से हिचकिचाते थे। इस शिकस्त से पहले मिस्रियों का रवैया यह नहीं था। अली बिन सुफ़ियान और ग़यास बलबीस ने अपने मुख़्बिरों और जासूसों का जाल बिछा दिया मगर इसके सिवा कुछ पता नहीं चलता था कि लोग फ़ौज को बदनाम कर रहे हैं। सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ भी बातें सुनी जाने लगी थीं।

वह स्याह रेश सफेदपोश जो दो बेटियों के साथ एक गाँव में ठहरा हुआ था वहीं का होके रह गया। गांव वालों ने उसे एक मकान दे दिया था। उसने खुली महफ़िल में बैठने और बातें करने से परहेज़ शुरू कर दिया था किउसे मिस्रियों के गुनाह मांफ़ कराने के लिए तीन माह का चिल्ला करना है। वह अब मकान से बाहर थोड़ी सी देर के लिए निकलता, ख़ामोश रहता, हाज़िरीन को हाथ लहरा कर सलाम करता और अन्दर चला जाता था। उसके ख़ास मुसाहिबों में वही सिपाही थे जो उसके साथ आये थे और दो वह आदमी थे जिन्होंने टीलों के इलाके में उसके आगे सज्दा किया था। इन सब ने उसकी इतनी तशहीर कर दी थी कि दूर के लोग भी उसकी झलक देखने को पहुँच जाते थे।

❖

एक शाम अली बिन सुफ़ियान का एक जासूस अपनी ख़ुफ़िया ड्यूटी पर क़ाहिरा के मज़ाफात में किसी बहरूप में घूम फिर रहा था। शाम हो गयी। वह नमाज़ पढ़ने के लिए एक मस्जिद में चला गया। नमाज के बाद इमाम ने दुआ मांगी। दुआ ख़त्म हुई तो एक नमाज़ी ने रम्ला की शिकस्त की बात शुरू कर दी। उसने सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज के ख़िलाफ़ वही बातें कीं जो स्याह रेश ने की थीं। इस नमाज़ी ने स्याह रेश का हवाला इस तरह दिया कि वह ग़ैबदां है और जिन्नात उसे रिज़्क़ पहुँचाते हैं। उसने सफ़र की पूरी बात सुनाई और बताया कि किस तरह ग़ैब से उन्हें पानी और खजूरें मिली थीं। तमाम नमाज़ी उसकी बातें सुनते रहे। उसने बात ख़त्म कर लिया तो नमाज़ियों ने उससे इस किस्म की बातें पूछनी शुरू कर दीं। "वह मुरादें पूरी करता है?.....लाइलाज मरीज़ों को शिफ़ा देता है?....आने वाले वक़्त का हाल बताता है?.....औलाद देता है?"

सुनाने वाले ने उन्हें बताया कि अभी वह सबको यही बात बताता है कि सुल्तान अय्यूबी और उसकी फ़ौज में फिरऔनों वाली ख़स्लतें पैदा हो गयी थीं और शिकस्त की वजह यही है और वह यह भी बताता है कि न ख़ुद फ़ौज में भर्ती होना न किसी को होने देना वरना नुक्सान उठाओगे क्योंकि गुनाहों की सज़ा का अभी वक़्त पूरा नहीं हुआ और यह भी कि वह तीन माह

का चिल्ला कर रहा है। उसके बाद वह बतायेगा कि मिस्र वालों के गुनाह बख़्शे गये हैं या नहीं।

यह आदमी मस्जिद से निकल कर गाँव से बाहर को चल पड़ा। अली बिन सुफ़ियान का जासूस उसके पीछे गया और उससे पूछा कि वह इस आलिम से किस तरह मिल सकता है। उसने अपना मुद्दुआ यूँ बयान किया– "मैं फ़ौज में हूं। तुम्हारी बातें सुनकर मेरे दिल में यह डर पैदा हो गया है कि अपनी फ़ौज के गुनाहों की सज़ा मुझे भी मिलेगी। मैं भी दमिश्क़ और हलब के मुहाज़ों पर गया था। मैंने भी वही गुनाह किये हैं जिनका ज़िक्र तुम कर रहे थे। मुझे उस आलिम बुज़ुर्ग के पास ले चलो। अगर वह कहेगा कि फ़ौज से भाग जाओ तो भाग जाऊंगा। वह जो ख़िदमत कहेगा करूँगा। मैं ख़ुदा के क़हर से डरता हूँ।" उसने इतनी मिन्नत समाजत की कि उसके आँसू निकल आये।

"मेरे साथ चलो।" उस आदमी ने कहा– "लेकिन किसी से ज़िक्र न करना कि तुम उसके पास गये थे। वह आज कल चिल्ले में है। किसी के साथ बात नहीं करता। वह जो पूछेगा सिर्फ़ उसका जवाब देना। फ़ालतू बात न करना।"

"तुम इसी गांव के रहने वाले हो?" जासूस ने पूछा– "तुमने बताया था कि तुम रम्ला के मुहाज़ से आये हुए सिपाही हो।"

"इसीलिए तो मैं क़ुर्आन पर हाथ रखकर कह सकता हूँ कि यह बुज़ुर्ग ख़ुदा के मसाहिबों में से है।" सिपाही ने कहा– "मैंने मैदाने जंग का क़हर देखा है और मैंने सफ़र का क़हर भी देखा है लेकिन इस बुज़ुर्ग ने रेगज़ार को गुलज़ार बना दिया था। मैं अब फ़ौज में वापस नहीं जा रहा।"

गाँव दूर नहीं था। वह बातें करते पहुँच गये। रात गहरी हो चुकी थी। सिपाही ने जासूस को अंधेरे में खड़ा रहने को कहा और उस मकान में चला गया जहाँ स्याह रेश सफ़ेदपोश रहता था। थोड़ी देर बाद वापस आया। सिपाही ने कहा कि वह पीछे वाले दरवाज़े से अन्दर चला जाए। वह ख़ुद उसके आगे–आगे चल पड़ा और दोनों दरवाज़े में दाख़िल हो गये। ड्योढ़ी से गुज़रे, सेहन से गुज़रे और एक कमरे में दाख़िल हो गये। सेहन में रौशनी थी दोनो लड़कियाँ जिन्हें स्यह रेश ने अपनी बेटियां बताया था एक और कमरे में थीं। उन्हें जब सेहन में क़दमों की आहट सुनाई दी तो दोनों ने दरीचे का किवाड़ ज़रा सा खोल कर देखा। एक लड़की इतनी चौंकी कि उसके मुंह से "ओह!" निकल गयी।

"क्या हुआ?" दूसरी लड़की ने पूछा– "कौन है?"

"शायद मुझे धोखा हुआ हो।" उसने जवाब दिया– "मैंने इस शख़्स को कहीं पहले भी देखा है।" और वह गहरी सोंच में खो गयी।

जासूस कमरे में जाकर स्याह रेश के आगे सज्दा किया। उसके पांव पर माथा रगड़ा। वह फ़र्श पर दरी बिछा कर बैठा हुआ था। जासूस ने गिड़गिड़ा कर इल्तिजा की कि उसे गुनाहों की बख़्शिश दिलायी जाए। उसने वही बातें कीं जो वह सिपाही के साथ कर चुका था। उसकी आँखों में आँसू आ गये। स्याह रेश ने अपनी तस्बीह उसके सर पर फेरी, मुस्कुराकर

उसके सर पर हाथ रखा।

"इससे मेरी तस्कीन नहीं होगी।" जासूस ने आँसू बहाते हुए कहा—"अपनी ज़ुबान से मुझे तस्कीन दें। मुझे कोई हुक्म दें जो मैं बजा लाउं। मुझे हुक्म दें कि मेरा जो एक ही बच्चा है उससे आप के क़दमों में जबह कर दूँ। मुझे हुक्म दें कि सुल्तान अय्यूबी को क़त्ल करदूं तो मैं आप का हुक्म भी बजा लाउँगा। कुछ बोलें। कुछ कहें फिर देखें कि मैं क्या करता हूँ।"

एक और आदमी अन्दर आ गया था और वह जासूस की बातें ग़ौर से सुन रहा था और उसे बड़ी गहरी नज़रों से देख रहा था। उसने जासूस से कहा– "तुम इतने बेज़ार और बेताब क्यों हुए जा रहे हो? तुम अब मुर्शिद के साये में हो।"

"मेरे गुनाह इतने घिनावने हैं जो मुझे रातों को सोनें भी नहीं देते।" जासूस ने कहा– "मैंने हमात के करीब एक गाँव में एक मुसलमान घराने की लड़की को अग़वा करने के लिए लड़की के जवान भाई को क़त्ल कर दिया था। अगर मैं फ़ौज में न होता तो मुझे जल्लाद के हवाले कर दिया जाता लेकिन मुझे किसी ने पूछा तक नहीं।"

स्याह रेश ने आँखे बन्द कर लीं। उसके होंठ हिल रहे थे। उसने दोनो हाथ ऊपर उठाए फिर जासूस की तरफ इशारा किया। ज़रा देर बाद मुस्कुराया और उसने आँखें खोल दीं। जासूस से कहा– "बहुत मुश्किल से तुम्हारे साथ बात करने की इजाज़त ली है। ग़ौर से सुनो। हम तुम्हारे गुनाह बख़्शवायेंगे। तुम कल फिर आओ। किसी के साथ ज़िक्र न करना वरना तुमहारे ख़ानदान का अन्जाम बहुत ख़ौफ़नाक होगा। यह आदमी (सिपाही) तुम्हें गाँव से बाहर मिलेगा और मेरे पास ले आयेगा। तुम्हारे माथे पर लिखा है कि तुम्हारे गुनाह बख़्शे जाएंगे बल्कि तुम्हें और तुम्हारे खानदान को इतना रिज़्के हलाल मिलेगा जो तुमने ख़्वाब में भी नहीं देखा। चले जाओ। कल आ जाना।"

स्याह रेश फिर मुराक़िबे में चला गया। सिपाही ने और दूसरे आदमी ने जासूस को उठाया और सेहन मे ले जाकर उसे स्याह रेश की ऐसी मुअज्ज़िानुमा बातें सुनाई जिन्होंने जासूस को मसहूर कर लिया। दोनों लड़कियाँ दरीचे के किवाड़ की ओट से उसे देख रही थीं। जो लड़की उसे पहली बार देखकर चौंकी थी उसने दूसरी लड़की से कहा– "इसे मैंने पहले भी कहीं देखा है। यह धोखा नहीं। वही है। वही है।"

❖

"यह वही मामिला मालूम होता है जो हम पहले भी पकड़ चुके हैं।" यह जासूस अपने महकमे के हाकिमे आला अली बिन सुफ़ियान को बता रहा था– "वही मुराक़बा, चिल्ला, जिन्नात और लोगों के जज़्बात को क़ब्ज़े में लेकर उनपर अपना जादू चलाना। अपनी फ़ौज का जो सिपाही मुझे उसके पास ले गया था वह सिर्फ फ़ौज के खिलाफ़ बातें करता था। वह इस किस्म की बातें मस्जिद में नमाज़ियों के साथ कर रहा था। उसने मेरे साथ जो बातें की उनसे पता चलता था कि उसके और भी कई साथी हैं और वह मस्जिदों में जाकर नमाज़ियों को फ़ौज के खिलाफ़ उकसाते हैं। मुहाज़ की झूठी बातें सुनाते हैं और ज़ोर इस पर देते हैं कि फ़ौज में भर्ती होना गुनाह है।'

"उन्हें ऐसी बातें मस्जिदों में ही करनी चाहिए।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा–"मस्जिद में कही हुई बात को लोग वही का दरजा देते हैं। लोग जज़्बात के ग़ुलाम हैं। उसी मुर्शिदत्त को मान लेते है। जो उनके जज़्बात को पहले भड़काये फिर अलफाज़ में उनका तस्कीन कर दे........तुम कल फ़िर वहाँ जाओ। मुझे वह गाँव और मकान समझा दो। इधर उधर देखकर ज़्यादा से ज़्यादा मालूमात लाने की कोशिश करना। तुम्हारी लाई हुई इत्तलाअ के बाद हम वहां छापा मारेंगे।"

"मुझे डर है कि छापे से वहां के लोग मुश्तअिल हो जाएंगे।" जासूस ने कहा– "सिपाही ने बताया था कि गाँव का बच्चा–बच्चा उसका मुरीद हो चुका है और दूर–दूर से लोग उसकी ज़्यारत के लिए आते हैं।"

"हमें लोगों के साथ नहीं चलनी।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "लोगों के जज़्बात का ख़्याल सिर्फ़ वह हुक्मरान रखा करते हैं जो उनपर हुकूमत करना चाहते हैं। ऐसे हुक्मरान लोगों के जज़्बात से खेला करते हैं ताकि रिआया ख़ुश रहे और उनके आगे सज्दे करे। हमें सल्तनते इस्लामिया और उन्हीं लोगों के वकार का तहफ़्फ़ुज़ करना है। हम उन लोगों को हकीकत दिखायेंगे। हम उन्हें सुल्तान अय्यूबी का ग़ुलाम और मुरीद नहीं बनाना चाहते। हम उन्हें इस्लाम का दुश्मन दिखायेंगे। हम कौम पर जज़्बात परस्ती का नशा तारी करके उसे सुलाना नहीं चाहते, कौम को हकाइक के झटके देकर जगाना है.....तुम जाकर वह भी देखो जो तुम्हें अभी नज़र नहीं आया।"

जासूस के वहाँ जाने का वक़्त रात का था। अली बिन सुफ़ियान ने भेस बदला और उस गाँव में चला गया। उसने मकान भी देख लिया और उसने लोगों की अकीदत मन्दी की बेताबियाँ भी देख लीं। लोगों की बातें भी सुनीं।

फ़ौज के खिलाफ तूफ़ान उठाया जा रहा था। अली बिन सुफ़ियान ने मकान के पिछवाड़े को दूर से देखा। वहाँ छोटा सा एक दरवाज़ा था जो बन्द था। वहाँ दरख़्त थे और दायें बायें दो मकानों के पिछवाड़े थे। उस तरफ़ कोई इन्सान नहीं था। हुजुम मकान के सामने था।दरवाज़ा खुला और एक सफ़ेद रेश आदमी पुराने चुग़े मे मलबूस दरवाज़े से निकला। अली बिन सुफ़ियान ओट में हो गया। उसने खुले हुए दरवाज़े में एक ख़ूबसूरत और जवान लड़की को खड़े देखा। लड़की ने फ़ौरन दरवाज़ा बन्द कर दिया।

सफ़ेद रेश आदमी हाथ में लाठी लिए झुका–झुका गांव से निकल गया। अली बिन सुफ़ियान उसे देखता रहा। दूर जाकर वह रुक गया और इधर उधर देखने लगा। एक तरफ़ से एक घोड़सवार आया। सफ़ेदरेशआदमी घोड़े पर सवार हुआ और काहिरा की तरफ चला गया। जो आदमी घोड़ा लाया था वह गांव की तरफ चला गया। अली बिन सुफ़ियान अपने घोड़े पर सवार हुआ और सफ़ेदरेश सवार के पीछे गया मगर फ़ासिला रखा। सफ़ेदरेश ने कई बार पीछे देखा। अली बिन सुफ़ियान उसके पीछे जातारहा। आगे जाकर सफ़ेदरेश ने काहिरा के रास्ते की बजाए घोड़े दूसरे रास्ते पर डाल दिया। रफ़तार मामूली थी। अली बिन सुफ़ियान ने भी घोड़ा उसी रास्ते पर डाल दिया।

काहिरा शहर नज़र आ रहा था। दूर नहीं था। इधर उधर एक–एक दो–दो झोंपड़े या ख़ेमे नस्ब थे। कहीं–कहीं ख़ानाबदोश ने डेरे डाल रखे थे। सफ़ेदरेश सवार ने कई रास्ते बदले और पीछे देखता रहा। अली बिन सुफ़ियान उसके पीछे रहा। सफ़ेदरेश की बेचैनी साफ़ ज़ाहिर होने लगी थी। आख़िर उसने काहिरा का रूख़ कर लिया और घोड़े की रफ़्तार ज़रा तेज़ कर ली। अली बिन सुफ़ियान ने भी बागों को झटका दिया, हल्की सी ऐड़ लगाई घोड़े की चला बदल कर तेज़ हो गयी। फ़ासिला पन्द्रह बीस क़दम रह गया। वह अब शहर में तकरीबन दाख़िल हो चुके थे। सफ़ेदरेश सवार ने घोड़ा रोक लिया और अली बिन सुफ़ियान के रास्ते में हो गया। अली बिन सुफ़ियान ने भी घोड़ा उसके क़रीब जाकर रोका।

"तुम कोई रहज़न मालूम होते हो।" सफ़ेदरेश सवार ने कहा और ख़ंजर निकाल लिया। बोला– "मेरा पीछा कर रहे हो।"

अली बिन सुफ़ियान ने देखा कि उसकी सफ़ेद दाढ़ी से उसकी उम्र सत्तर से उपर लगती थी मगर चेहरा, आंखें और दांत बताते थे कि चालिस से बहुत कम है। अली बिन सुफ़ियान भी बहरूप में था। उसने अपने कमरबन्द से सवा गज़ लम्बी तलवार लटका रखी थी जों उसके चुग़े में छुपी हुई थी। उसने बिजली जैसी फुर्ती से तलवार निकाल ली।

"दाढ़ी उतार दो।" उसने सफ़ेद रेश के पहलू में तलवार रखकर कहा–"और मेरे आगे–आगे चल पड़ो।"

सफ़ेद रेश की आँखें ठहर गयीं। अली बिन सुफ़ियान ने तलवार की नोक उसकी कनपटी पर रख कर दाढ़ी में उलझाई और झटका दिया। वहीं से दाढ़ी चेहरे से अलग हो गयी। आधा चेहरा नंगा हो गया। अली बिन सुफ़ियान ने अपनी दाढ़ी उतार दी और बोला– "हम एक दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं। चलो चलें।"

वह शहरी इन्तज़ामिया का कोई आला हाकिम तो नहीं था लेकिन छोटा और ग़ैर अहम भी नहीं था। मिस्र का रहने वाला था। उसके मुतअल्लिक अली बिन सुफ़ियान तक यह इत्तलाएं पहुंची थीं कि माज़ूल की हुई अबासी ख़िलाफ़त का ज़मीन दोज़ कारिन्दा है। उस खिलाफ़त को जिसकी गद्दी काहिरा में थी, सुल्तान अय्यूबी ने सात आठ साल पहले खत्म कर दिया था। खलीफ़ा अल लआज़िद था। जिसने हशीशीन, सलीबियों और सूडानियों के साथ गठजोड़ कर रखा था। सुल्तान अय्यूबी ने नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम के साथ बात करके इस खिलाफ़त को माज़ूल किया और इमारते मिस्र को खिलाफ़े बग़दाद के तहत कर दिया था। माजूल शुदा खिलाफ़ते अबासिया के पैरोकार अभी तक जिन्दा ज़मीनदोज़ कार्रवाइयों मे मसरूफ़ थे। रम्ला की शिकस्त उनके लिए अच्छा मौका था। चुनांचे सुल्तान अय्यूबी और उसकी फ़ौज को बदकार, अय्याश, लूटेरी और शिकस्त का ज़िम्मेदार साबित करने की मुहिम में अबासी खुफ़िया तरीकों से सरगर्म हो गये थे। अली बिन सुफ़ियान ने इस आदमी को हिरासत में ले लिया और अपने उस क़ैदखाने में जा बन्द किया जहाँ वह मुल्ज़िमों से इब्तेदाई तफ़्तीश किया करता था।

❖

अली बिन सुफ़ियान का जासूस रात को स्याह रेश बुज़ुर्ग के बताये हुए वक़्त पर गाँव के बाहर जा खड़ा हुआ। गुज़िश्ता रात वाला सिपाही उसे लेने आया। सिपाही ने उसे कोई नयी हिदायत दीं और साथ ले गया। वह पिछले दरवाज़े से अन्दर गये मगर जासूस को गुज़िश्ता रात वाले कमरे के बजाए एक और कमरे में ले गये। उसे कमरे में स्याह रेश बुज़ुर्ग नज़र नहीं आया। वहाँ कुछ भी नहीं था। दरवाज़ा बन्द हुआ तो उसने दरवाज़े की तरफ़ देखा। सिपाही बाहर निकल गया था। उसने दरवाज़े को हाथ लगाया तो उसे पता चला कि दरवाज़ा बाहर से बन्द कर दिया गया है। इस कमरे की न कोई खिड़की थी न रोशनदान। वह समझ गया कि उसे पहचान लिया गया है और उसे पकड़ लिया गया है। फ़रार मुम्किन नहीं था। वह सोचने लगा कि क्या करे।

ख़ासी देर बाद दरवाज़ा खुला। उन लड़कियों में एक अन्दर आई जिन्हें स्याह रेश अपनी बेटियाँ बताता था। वह अब मस्तूर नहीं थी लेकिन यूरोपी लड़कियों की तरह उरियां भी नहीं थी। उसका लिबास अरब की मुसलमान लड़कियों जैसा था। नक़्श व निगार अरब और यूरोप के मिले जुले थे। वह अन्दर आई तो बाहर से किसी ने दरवाज़ा बन्द करके जंज़ीर चढ़ा दी।

कमरे में क़ंदील जल रही थी। जासूस ने लड़की को देखा तो उसकी आँखें जैसे हैरत से साकिन हो गयी हों। लड़की मुस्कुरा रही थी।

"पहचानने की कोशिश कर रहे हो?" लड़की ने कहा— "इतनी जल्दी भूल गये? तुम मेरे शहर से बच कर निकल आये थे, मगर अपने शहर में आकर मेरे क़ैदी बन गये। अब नहीं निकल सकोगे।"

जासूस ने लम्बी आह भरी जिसमें सकून भी इज़्तराब भी था। उसे तीन साल पहले के वह दिन याद आ गये जब उसे जासूस के लिए अकरा भेजा गया था। अकरा सलीबियों के क़ब्ज़े में था। वहाँ उनका बड़ा पादरी रहता था जिसे सलीबे आज़म का मुहाफ़िज़ कहते थे। सलीबी बादशाह जो अपनी फ़ौजें अरब इलाक़ों पर क़ब्ज़ा करने की गर्ज़ से लेकर आते अकरा ज़रूर जाते थे और सलीब आज़म के मुहाफ़िज़ को सलाम करते थे। इसलिए जंगी लिहाज से यह अहम जगह थी। अली बिन सुफ़ियान ने वहाँ अपने जासूस भेज रखे थे। उन्होंने ईसाइयों के बहरूप में वहाँ एक ख़ुफ़िया अड्डा भी क़ायम कर रखा था। इनमें से तीन चार पकड़े और दो शहीद हो गये तो वहां के ज़मीन दोज़ कमाण्डर ने मज़ीद जासूस मांगे थे। इनमें उसे भी भेजा गया था जो अब मिस्र में एक कमरे में बन्द था।

उसका रंग अच्छा, क़द बुत और ज़्यादा अच्छा और चेहरा दिलकश था। दिमाग़ी लिहाज से वह तेज़ और होशियार था। वह घोड़े की सवारी का इतना माहिर था कि फ़ौजी नुमाइशों और मेलों मे हैरान कर देने वाले करतब दिखाया करता था। अदाकारी मे भी महारत रखता था। उसने स्याह रेश के सामने अपने आँसू निकाल लिए थे। वह ईसाई नाम से अकरा में दाख़िल हुआ था और उसने वहाँ कोई अपनी दर्दनाक कहानी सुनाई थी औरबताया था कि वह हलब की मुसलमान फ़ौज मे नये सिपाहियों को घोड़सवारी और रिसाले की लड़ाई की ट्रेनिंग दिया करता था लेकिन मुसलमानों ने उसकी नौजवान बहन को अग़वा करके उसे

फौज से निकाल दिया।

उसकी अदाकारी से मुतासिर होकर उसे सवारी की ट्रेनिंग देने के लिए रख लिया गया लेकिन उसके शागिर्द फौजी नही थे बल्कि जवान लड़कियाँ थीं और बड़े—बड़े फौजी अफसरों के लड़के। उसे पता चला कि इन लड़कियों को मुसलमान इलाकों में जासूसी के लिए तैय्यार किया जा रहा है। फिर मर्द भी उसके हवाले किये जाने लगे। यह सब सलीबी जासूस थे। वह इनमें घुल मिल गया था और उनसे बड़ी कीमती मालूमात मिल जाती थीं।

यह लड़की जो काहिरा के मज़ाफात के एक गांव में उसे कह रही थी कि अब नहीं निकल सकोगे, अकरा में उसकी शागिर्द थी। वह जासूसी का तजुर्बा रखती थी घोड़सवारी नहीं जानती थी। अली बिन सुफ़ियान का यह जासूस उसे अच्छा लगने लगा था। फिर उस्तादी शगिर्दी बड़े गहरे लगाव की सूरत इख़्तियार कर गयी। लड़की ने यहाँ तक इरादा कर लिया था कि वह उस आदमी की ख़ातिर जासूस जैसा ज़लील पेशा तर्क कर देगी और उसकी बीवी बनकर बाइज़्ज़त जिन्दगी गुज़ारने लगेगी। इस मुसलमान जासूस ने मोहब्बत का जवाब मोहब्बत से दिया था लेकिन अपने फ़र्ज़ को नज़रअन्दाज़ नहीं किया था। लड़की ने अपने काम मे दिल चस्पी लेनी छोड़ दी थी। वह इस आदमी की होके रह गयी थी।

एक रोज़ अकरा मे दो मुसलमान जासूस पकड़े गये। उनमें से एक ने अपने गिरोह के उन तमाम आदमियों की निसानदेही कर दी जिन्हें वह जानता था। उनमें यह जासूस भी था। अजीब बात यह हुई कि इस लड़की ने इसे पूछा– "तुम जासूस तो नहीं हो सकते। तुम मुसलमान तो नहीं? मुझे पता चला है कि यहाँ का जासूसी मुहकमा तुम्हारे मुतअल्लिक तफ़तीश कर रहा है और तुम पर नज़र रखी जा रही है।"

वह हंस पड़ा और इल्ज़ाम की तरदीद की मगर बेचैन हो गया। रात को वह अपने ज़मीन दोज़ कमाण्डर से मिला। कमाण्डर ने उसे बताया कि गिरोह के बहुत से आदमियों की निसानदेही हो गयी है और बेहतर है कि वह यहाँ से निकल जाए। वह कमाण्डर के घर से निकला तो उसे पता चल गया कि दो आदमी उसके पीछे—पीछे आ रहे हैं। यह तआक्कुब था। वह चलता गया और अस्तबल में गया। एक घोड़े पर ज़ीन कसी तो दोनों आदमी आ गये। उससे पूछा कि वह कहाँ जा रहा है। वह फुर्तीला और होशियार था। कूदकर घोड़े पर सवार हुआ। और ऐड़ लगा दी। एक आदमी उसके घोड़े तले कुचला गया। वह अकरा से निकल आया।

❖

"मैंने तुम्हें पहचान लिया है।" उस लड़की ने कहा। वह एक दूसरे को तीन साल बाद देख रहे थे। उसने कहा– "मुझे हैरान नहीं होना चाहिए था। तुम आख़िर जासूस हो।"

"तीन साल पहले मैंने तुम्हारी मोहब्बत के धोखे में आकर जासूसी छोड़ देने का अहद किया था।" लड़की ने कहा– "तुम अगर मुझे बता देते कि तुम मुसलमान हो जासूस हो तो भी तुम्हें धोखा नहीं देती, शायद तुम्हारे साथ आ जाती। तुम्हारे भाग आने के बाद जब मुझे पता चला था कि तुम मुसलमान जासूस थे तो मुझे दुख नहीं हुआ था। तुम्हारे खो जाने का

बहुत ग़म था।"

"क्या अब तुम्हारे दिल में मेरी मोहब्बत नहीं रही?" जासूस ने पूछा– "तुम अब मेरे मुल्क में हो। मेरे साथ आओ। यहाँ तुम्हें धोखा नहीं दूँगा।"

"मोहब्बत अब भी है।" लड़की ने कहा–"मगर इस पर फ़र्ज ग़ालिब आ गया है। यह तुम्हारा जुर्म है। मैं ने तो तुम्हारी मोहब्बत की खातिर जासूसी छोड़ देने का इरादा कर लिया था मगर तुमने मेरे इरादों को कुचल डाला और जासूसी की ग़िलाज़त मे मुझे डूबो आए। तीन साल गुज़र गये हैं। इतनी लम्बी मुद्दत में मैं अपने आप को बुरी तरह नापाक कर चुकी हूँ। इस्लाम के खिलाफ़ नफ़रत मेरी रूह में उतर गयी है। अब नही। अब तुम मेरे कैदी हो। मैं अपने गिरोह को धोखा नहीं दे सकती। मैं जिस आदमी के साथ आई हूँ उसे मैंने ही बताया था कि तुम जासूस हो। मैंने उसे अकरा की सारी बात सुनादी थी। अगर मैं तुम्हें सेहन से गुज़रते इत्तफाक से न देख लेती तो हम सब गिरफ्तार हो चुके होते। तुम्हें मैने पकड़वाया है।"

"यह आदमी जो ग़ैबदां और मुर्शिद बना हुआ है मुसलमान है या सलबी?" जासूस ने पूछा।

"अब पूछ कर क्या करोगे?" लड़की ने पूछा।

"जासूसी एक आदत बन गयी है।" जासूस ने कहा– "मरने से पहले जानना चाहता हूँ। अब यह राज़ बाहर तो नहीं ले जा सकूंगा।"

"यह मुसलमान है।" लड़की ने कहा–"मुसलमान की कमज़ोरियों से वाकिफ़ है। उस्तादों का उस्ताद है।"

कमरे का दरवाज़ा खुला और स्याह रेश एक आदमी के साथ अन्दर आया। लड़की से बोला– "अगर तुम्हारी बात पूरी हो गयी है तो बाहर निकल जाओ।" लड़की जासूस को गहरी नज़रों से देखती बाहर निकल गयी। स्याह रेश ने जासूस से पूछा– "मुझे सिर्फ़ यह बता दो कि मेरा राज़ किस किस को मालूम है। क्या तुमने अली बिन सुफ़ियान को बता दिया है कि मैं मशकूक आदमी हूं?"

"नहीं।" जासूस ने जवाब दिया– "मैं जासूस ज़रूर हूँ। जासूसी के ख़्याल से यहा नहीं आया था।"

स्याह रेश के हाथ में चमड़े का चाबुक (हंटर) था। उसने पूरी ताकत से जासूस को मारा और कहा– "मैं सच्ची बात सुनना चाहता हूँ।"

दरवाज़ा ज़ोर से खुला वही लड़की अन्दर आई। उसने स्याह रेश को दोनो बाज़ू पकड़ कर इल्तिजा की– "इसे मारो मत सब कुछ बता देगा।"

"मैं कुछ नही बताऊंगा।" जासूस ने कहा।

स्याह रेश ने चाबुक घुमाया तो लड़की दौड़कर जासूस के आगे हो गयी। चिल्लाकर बोली– "मारो नहीं। इसके जिसम की चोट मेरे दिल का ज़ख़्म बन जायेगी।"

"तुम इससे बचाना चाहती हो?" दूसरे आदमी ने गरज कर पूछा।

"नहीं।" लड़की ने रोते हुए कहा– "यह कुछ न बताये तो तलवार के एक वार से इसका

सर तन से जुदा कर दो। अज़ीयत देकर न मारो।"

लड़की को घसीट कर बाहर ले गये फिर जासूस पर तशद्दुद शुरू हो गया। उसे रात भर सोने नहीं दिया गया। इससे बहुत कुछ पूछा जा रहा था। उसे बहुत कुछ बताया जा रहा था मगर वह बुत बना चोट पर चोट खा रहा था। सेहर का वक़्त था। लड़की फिर इस कमरे में आ गयी। उस वक़्त जासूस नीम ग़शी की हालत में था। वह फ़र्श पर पड़ा था। अब उसे तलवार की नोक जगह जगह चुभोई जा रही थी। लड़की उसके ऊपर लिपट गयी और चीखने लगी– "यह मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती। मैं तुम्हें बता चुकी हूँ कि यह मेरी पहली और आख़िरी मोहब्बत। इसकी अज़ीयत मेरी अज़ीयत है। यह अपना फ़र्ज़ अदा कर रहा है, मैं अपना फ़र्ज अदा कर रही हूँ। हमारे लिए यही काफ़ी है। इसे जान से मार दो, अज़ीयत न दो।"

जासूस ने नीम बेहोशी की हालत में अपने ऊपर पड़ी लड़की को बाज़ूओं के घेरे में ले लिया और मरी हुई आवाज़ में कहा–"तुम चली जाओ। कहीं ऐसा न हो कि मैं अपने फ़र्ज़ से भटक जाऊं। यह अज़ीयतें मेरे फ़र्ज़ का हिस्सा हैं। तुम अपने मज़हब पर कुर्बान हो जाओ, मुझे अपने मज़हब पर कुर्बान होने दो।"

लड़की पागल हुई जा रही थी उसे एक बार फिर घसीट कर बाहर ले गये। स्याह रेश ने हुक्म के लहजे में कहा–"इस बदबख़्त लड़की को किसी कमरे में बन्द कर दो।

❖

दिन आधा गुज़र गया था। अली बिन सुफ़ियान उस जासूस के इन्तज़ार में बेज़ार हो रहा था। एक रोज़ पहले उसने जिस आदमी को सफ़ेद दाढ़ी के बहरूप में पकड़ा था उसे भी गुज़िश्ता रात क़ैद खाने में ऐसी ही अज़ीयतें देकर उससे कहलवा लिया गया था कि यह स्याह रेश कौन है और उसकी असलियत और उसका मिशन क्या है। दिन के पिछले पहर अली बिन सुफ़ियान ने इस शक के बिना पर कि उसका जासूस पकड़ा न गया हो एक छापामार जैश तैय्यार किया। उस मकान के मुतअल्लिक पता चल ही चुका था कि तक़रीबकार जासूसों का अड्डा बन गया है।

छापमार इस क़दर तेज़ी से आये कि गाँव वालों में किसी को संभलने का मौक़ा न मिला। वह घोड़ों से उतर कर बन्दरों की तरह मकान की दिवार फलांग गये। दरवाज़े तोड़ दिएगये। अन्दर जितने आदमी थे उन्हें पकड़ लिया गया। अली बिन सुफ़ियान के जासूस की अब यह हालत थी कि बेहोश पड़ा था और उसपर नज़अ की कैफियत तारी थी। एक कमरे में उसे चाहने वाली लड़की फ़र्श पर पड़ी मिली। एक खंज़र उसके पेट में उतरा हुआ था। वह इतना ही कह सकी– "मैंने ख़ुदकुशी की है।" और मर गयी।

स्याह रेश को उस हुजूम के सामने खड़ा किया गया जो गाँव के अन्दर और बाहर था और उसे कहा गया कि वह लोगों को बताते कि उसकी असलियत क्या है और वह किस मक़सद के तहत फ़ौज और सुल्तान को बदमान कर रहा था। उसने बता दिया। एक लड़की मर चुकी थी। वह दूसरी को लोगों के सामने किया गया और बताया गया कि यह लड़की मुसलमान

नहीं सलीबी है। यह भी बताया गया कि टीलों के इलाके में आग के करीब जो पानी और खूजूरें पड़ी थीं वह उसके गिरोह के आदमियों ने रखी थी। यह गिरोह उससे दूर–दूर सफ़र कर रहा था।

अली बिन सुफ़ियान ने अपने तहखाने में इस आदमी और उसके गिरोह से जो बातें उगलवाई उनसे पता चला कि उसने मुहाज़ से भागे हुए नये फ़ौजियों को अपने असर में ले लिया था। उसके साथ अपने आदमी भी थे। यह तमाम लोग मस्जिदों और उन जगहों पर जहाँ लोग इकट्ठे होते थे मिस्र की फ़ौज के खिलाफ़ बातें करते थे। मकसद यह था कि कौम और फ़ौज के दर्मियान शकूक और नफ़रत की दिवार खड़ी की जाए। इससे सलीबी बहुत फ़ायदा उठा सकते थे। इस मुहिम में मिस्र की इन्तज़ामिया के चन्द हाकिम भी शामिल थे और माज़ूल शुदा अबासी ख़िलाफ़त के खुफ़िया पैरोकार भी। मुख़्तसर यह कि दुश्मन तो इस मुहिम में शरीक था ही, ख़ुद मुसलमान भी इसमें शामिल हो गये थे जिनका कोई न कोई मफ़ाद वाबस्ता था।

"जब कभी फ़ौज और कौम में नफ़रत पैदा हो गयी तो समझ लो कि सल्तनते इस्लामिया का ज़वाल शुरू हो गया।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा। उसने हुक्म दिया–"तमाम मस्जिदों के इमामो को रम्ला की शिकस्त के असल अस्बाब बताने का इन्तज़ाम करो। और इमाम सारी कौम को बतायें। अगर किसी को ज़िम्मेदारियाँ और इल्ज़मात आयद करने से तस्कीन होती है तो सारी ज़िम्मेदारी मुझ पर डालो। हज़रत ईसा ने सूली पर जान देकर कौम के गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा किया था। मैं फ़िलिस्तीन के मैदाने जंग में जान देकर अपनी कौम के हर उस फ़र्द के गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा करूँगा जो तख़्त व ताज के नशे में मेरी फ़ौज और मकबूज़ा फ़िलिस्तीनी के रास्ते में हायल हो रहा है और मेरे ख़ून के कतरों से अवाज़ आयेगी कि शिकस्त की ज़िम्मेदार फ़ौज नहीं थी और मेरे किसी फ़ौजी ने कोई गुनाह नहीं किया था।"

❖❖

तसादुम रूह बदरूह का

हमिस पुरसुकून कस्बा था। यह हलब के शुमाल में आज के शाम और लेबनान की सरहद के करीब वाकेअ था। पुरसुकून इसलिए था कि अभी जंग की लपेट में नहीं आया था। इसके मज़ाफ़ात से कभी–कभी सलीबी फौज गुज़रा करती थी। इसके क़रीब से एक छोटा सा दरिया गुज़रता था इसलिए हमिस फ़ौजों की आम गुज़रगाह नहीं बन सकता था। इस कस्बे में मुसलमानों की अबादी इतनी ज़्यादा थी कि इसे मुसलमान बस्ती कहा जाता था चन्द एक घराने ईसाइयों के भी थे और चन्द एक यहूदियों के भी। तिजारत ईसाइयों और यहूदियों के कस्बे में थी। यह लोग दूर के इलाक़ों में कारोबार के सिलसिले में जाते रहते थे इसलिए वह बाहर की दुनिया की जो ख़बरे लाते थे उन्हें सच समझा जाता था। वह सलीबी और इस्लामी फ़ौजों की जंग की ख़बर लाया करते थे। इन ख़बरों में मुसलमानों की शिकस्त का ज़िक्र ज़्यादा होताथा। सलीबी फ़ौज के मुतअल्लिक वह डरावनी बातें सुनाया करते थे।

उनका मकसद यह होता था कि हमिस के मुसलमानोंपर सलीबी फ़ौज की दहशत तारी रहे और कम अज़कम इस बस्ती का कोई मुसलमान इस्लामी फ़ौज में न जाए लेकिन इस का असल उल्टा हो रहा था। मुसलमानों ने डरने की बजाए जंगी तैय्यारियां शुरू कर दी थीं। उन्हें इन तैयारियों से कोई हुक्मत रोक नहीं सकती थी। यहाँ सलीबियों की हुक्मरानी नही थी। हमिस के मुसलमान घोड़सवारी, नेज़ाबाज़ी, तेग़ज़नी और तीर अन्दाज़ी की मश्क़ करते रहते थे। यह तरबियत लड़कियों को भी दी जाती थी। इनका कायद बड़ी मस्जिद का ख़तीब था जिसका इल्म और अमल जिहाद पर मरकूज़ था। उसने मुसलमानों को बता रखा था कि क़िब्ला अव्वल को आज़ाद कराना है और सलीबियों को अरब की सरज़मीन से बेदख़ल करना है।

"......और यह जंग क्यों लड़ी जा रही है?" ख़तीब अपने ख़ुत्बों में इस सवाल का जवाब इन अल्फ़ाज़ में दुहराता रहता था– "सलीबी अरब पर क़ब्ज़ा करके अपनी बादशाही कायम करने की कोशिश में हैं और हम यहाँ अल्लाह की बादशाही क़ायम करने के लिए जान व माल की कुर्बानी दे रहे हैं। उन्होंने अरब को मैदाने जंग सिर्फ़ इसलिए बनाया है कि ख़ुदाए ज़ुलजलाल का अज़ीम पैग़ाम अरब को अता हुआ है और इस पैग़ाम ने हम अरबों पर यह फ़र्ज़ आयद कर दिया है कि हम यह पैग़ाम जो हमारे रसूल सल्ल0 को ग़ारे हिरा में अता हुआ था तमाम तर बनी नूअ इन्सान तक पहुंचायें। तारिक बिन ज़्याद ने बहेराए रोम के मिस्र वाले साहिलपर खड़े होकर ख़ुदाए अज़्ज़ोजल से कहा था– "अगर तेरी ज़ाते बारी मुझे हिम्मत व इस्तक़लाल अता फ़रमाये तो मैं तेरा नाम समन्दर पार ले जाऊं।" और उसके सीने से जज़्बा ईमान का

शोला जो उठा तो उसने घोड़ा समुन्दर में डाल दिया। उसकी फौज कश्तियों में यूरोप के साहिल पर उतरी। ज़्याद के बेटे तारिक ने हुक्म दिया– "कश्तियों को आग लगा दो, हम वापस जाने के लिए नहीं आयें...."

"मगर आज सलीबी इस अज़्म के साथ अल्लाह की इस सर ज़मीन पर आयें हैं कि वह वापस नहीं जाएंगे। उन्हों ने इस सरज़मीन को तहेतेग़ करने का फैसला इसलिए किया है कि ख़ुदा के इस अज़ीम पैग़ाम को जो सारी दुनिया में फैलाने के लिए रसूले अकरम सल्ल० को अता हुआ था यहीं ख़त्म कर दिया जाए। याद रखो मुसलमानो! इस्लाम एक ऐसा मज़हब है जो पत्थरों को मोम कर देता है। हकूक अल्इबाद एक ऐसा उसूल है जो सिर्फ इस्लाम ने इन्सान को दिया है। इस्लाम एक नज़रिया है सिर्फ अकीदा नहीं। सलीब के अलम्बरदार जानते हैं कि इस्लाम को फ़रोग़ का मौका मिला तो तमाम ज़मीन परचमे रिसालत के मुकद्दस साये तले आ जाएगी और सलीब का नाम व निसान मिट जाएगा। इसलिए सलीबी अपनी तमाम तर जंगी कुव्वत लेकर यहीं आ गये हैं। वह इल्म व फ़ज़ल के इस सर चश्मे को बन्द करने आए हैं.....

"यहूदियों के साथ उनका यह सौदा हुआ है कि वह बैतुलमुकद्दस को फतह करके उनके हवाले कर देंगे ताकि यहूदी मस्जिदे अक़्सा को जो हमारा किब्ला अव्वल है, हैकल सलैमानी बना लें। यह यहूदियों का एक पुराना ख़्वाब है जिसे वह अमली शकल में लाने को बेताब हैं। इसके लिए उन्होंने अपनी बेटियां और अपनी दौलत सलीबियों के हवाले कर दी है। इन दोनों चीज़ों ने हमारी सफ़ों में गद्दार पैदा कर दिये हैं। मैं तुम सब तक सलाहुद्दीन अय्यूबी का पैग़ाम पहुंचा रहा हूँ। इसे अपने दिलों पर नक़्श कर लो। रिसालत के पासबान सलाहुद्दीन अय्यूबी नें अपनी फौज को और कौम को यह बता रखा है कि यह दो फौजों की नहीं दो मज़हबों की जंग है। यह किब्ला अव्वल और हैकल सुलैमानी की जंग है। अगर हम ने आज बातिल को हमेशा के लिए ख़त्म न किया तो एक रोज़ बातिल हमारे मज़हब को ख़त्म कर देगा। हमारी रूहें देखेगी और तारीख़ देखगी कि फ़िलिस्तीन पर यहूदी काबिज़ हैं और मस्जिदे अक़्सा हैकले सुलैमानी में तबदील हो रही है.....

"हमिस के मुसलमानों! तुम सलाुद्दीन अय्यूबी की फौज के सिपाही नहीं होकर अल्लाह के सिपाही हो। तुम पर जिहाद फर्ज़ हो गया है। कुर्आन का हुक्म है कि अपने वतन और अपने मज़हब के दिफाअ के लिए घोडे और अस्लेहा तैय्यार रखो और जिहाद की तैय्यारी में मस्रूफ़ रहो....और यह भी याद रखो कि तुम्हारे मज़हब का दुश्मन सिर्फ़ मैदाने जंग में तुम्हारे ख़िलाफ नहीं लडता। उसका एक मुहाज़ और भी है। वह अफ़वाहों के ज़रिए तुम पर अपनी फौज की दहशत और इस्लामी फौज के खिलाफ़ वसवसे पैदा करता है। सर करदा अफ़राद को हसीन लड़कियों और सोने की चमक दमक से अपना गरविदा बनाता है। यह दोनों चीजें इन्सान की बहुत बड़ी कमजोरी हैं। इमें जब शराब शामिल हो जाती है तो मुसलमान अपना ईमान अपने ईमान के दुश्मन के कदमों में रख देता है। ऐसा हो चुका है और हो रहा है। सलीबी हमें ख़ाना जंगी में उलझा कर हमारी जंगी ताकत को कमज़ोर कर चुक हैं। यह गुनाह उन चन्द एक

उमरा का था जो सलीबियों के बड़े ही दिलकश जाल में आ गये थे मगर उनके गुनाहों की सज़ा कौम और फ़ौज को और सल्तनते इस्लामिया को मिली.....

"खाना जंगी कराने वाले कौम और फ़ौज को जज़्बात में उलझा कर भड़काते और मरवाते हैं और खुद अपने महल्लात में उन हरमों में बदमस्त रहते हैं जिन्हें सलीबियों और यहूदियों ने अपनी लड़कियों से रौनक दी है। याद रखो, यह सारी चट्टाने सोना बन जाएं और तुम्हारे कदमों में रख दी जाएं तो भी यह जिहाद का सिला और ईनाम नहीं बन सकतीं। जिहाद का ईनाम रूह को मिला करता है। रूह ज़रो जवाहरात से खुश नही हुआ करती। जिहाद का ईमान खुदा के पास है। तुम अल्लाह की राह में जान दोगे तो भी ज़िन्दा रहोगे। यह जिस्म की ही लानत है जिसने जिस्मानी लज्ज़त को शिआर बनाया उसने अपने भाई का गला काटा और मुरतद कहलाया। कुर्आन तुम्हें रूहानी लज़्ज़त से सरशार करता है।"

और इस तरह उस ख़तीब ने हमिस के मुसलमानों को रूहानी लज़्ज़त से सरशार कर रखा था। जंगी तरबियत उसी के ज़ेरे निगरानी और उसी की हिदायात के तेहत होती थी। वह खुद तेग़ और ख़ंजरज़नी का माहिर था। हमिस में इस तरबियत से रौनक रहती थी। कस्बे में तीन मस्जिदें थीं। जहाँ जिहाद की बातें होती थीं मगर वहाँ जो सलीबी और यहूदी रहते थे, वह मुसलमानों के हमदर्द बन कर हौसला शिकन खबर सुनाते रहते थे। मुसलमान अपने ख़तीब और इमामों से इस खबरों के मुतअल्लिक़ पूछते और बेताब रहते थे। ख़तीब ने हमिस के एक जवान साल आदमी, तबरेज़ को इस मक़सद के लिए दमिश्क भेज रखा था कि वहाँ से सही सूरते हाल मालूम करके आये।

❖

तबरेज़ सही सूरते हाल मालूम करके हमिस को वापस जा रहा था। उसे दमिश्क तक जाने की ज़रूरत नहीं पड़ी थी रास्ते में ही उसका काम हो गया था। उसने हमात से बहुत दूर सलीबी फौज देखी थी जो एक जगह पड़ाव किए हुए थी। उसने दूर से झंडों से पहचान लिया कि यह सलीबी फ़ौज है। फ़िर उसे दो शुतर सवार मिले थे जो मुसलमान थे। उन्होंने भी उसे बताया कि यह सलीबियों की फ़ौज है। उन्होंने यह भीबताया था कि यह फ़ौज मुसलमानों से बहुत नुक़सान उठाकर आई है। तबरेज़ ने उन्हें बताया कि वह हमिस से यह मालूम करने आया है कि सलीबी फ़ौज कहां तक पहुंची है और अरब के कितने इलाके फतह कर चुकी है।

"वह पहाड़ियाँ तुम्हें नज़र आ रही हैं।" शुतर सवार ने बताया था– "यही रास्ता तुम्हें इन पहाड़ियों के अन्दर ले जायेगा। अपनी फ़ौज वहीं है। दमिश्क बहुत दूर है। तुम अपनी फ़ौज के किसी अदमी से पूछ लेना, तुम्हें सब कुछ मालूम हो जाएगा। हम इतना ही जानते हैं कि रम्ला की लड़ाई हुई थी जिसमे मुसलमान नुक़सान उठाकर इधर उधर हो गये थे, और फ़िर सलीबियों से हमात के क़िले के क़रीब लड़ाई हुई थी जिसमें सलीबी फौज बहुत नुक़सान उठाकर भागे...तुम आगे चले जाओ लेकिन किसी सलीबी सिपाही के क़रीब न जाना। उसे ज्योंहि पता चला कि तुम मुसलमान हो वह तुम्हें क़त्ल कर देगा।"

सूरज गुरूब होने को था जब वह हमात की पहाड़ियों में गुज़र रहा था। फ़राख़ वादी थी

आगे से चन्द एक सवार आ रहे थे। तबरेज़ रास्ते से हटा नहीं। एक सवार घोड़ा दौड़ाता आया और उसे गुस्से से कहा कि वह रास्ते से दूर हट जाए सालारे आला आ रहे हैं।" तबरेज़ ज़रा सा अलग हट गया। सवार उसे और परे हटा रहा था। सालारे आला और उसके सवार तेज़ी से आ रहे थे। सालारे आला, सुल्तान अय्यूबी का भाई अल आदिल था। उसने देखा कि उसका मुहाफ़िज़ एक मुसाफ़िर के साथ बहुत गुस्से से बोल रहा है और मुसाफ़िर शायद रास्ते से हट नहीं रहा। अल आदिल करीब आकर रुक गया। तबरेज़ को अपने पास बुलाया और पूछा कि वह कौन है और मुहाफ़िज़ के साथ क्यों झगड़ रहा है।

तबरेज़ ने जवाब दिया कि वह हमिस से यह मालूम करने आया है कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज किस हाल में है और सलीबी फ़ौज को कितनी कुछ कामयाबियां हासिल हुई हैं। उसने यह भी बताया कि हमिस के मुसलमान जंगी तैय्यारियों में मसरूफ़ रहते हैं और वह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी की फ़ौज का इन्तज़ार कर रहे हैं। "हमारी बहनें भी जंग के लिए तैय्यार हैं और हमारे बच्चे और बूढ़े भी।"

अली बिन सुफ़ियान का नायब अब्दुल्लाह जो इन्टेलीजेंस का ज़िम्मेदार था अल आदिल के साथ था। वह तबरेज़ को बड़ी ग़ौर से देख रहा था। तबरेज़ जासूस हो सकता था। उसकी सादगी बता रही थी कि वह जासूस नही लेकिन शक लाज़मी था। जासूस ज़ाहिरी तौर पर इससे ज़्यादा गंवार और सादा लगते हैं।

"तुम्हारे ख़तीब का नाम क्या है?" हसन बिन अब्दुल्लाह ने उससे पूछा।

तबरेज़ ने नाम बताया। उस वक़्त की जो ग़ैर मतबूआ तहरीरें मौजूद हैं उनमें यह नाम साफ़ नहीं इसलिए उसे हम ख़तीब कहेंगे। हसन बिन अब्दुल्लाह ने अल आदिल से कहा कि वह अपना आदमी है और इस आदमी (तबरेज़) की बातों से मालूम होता है कि वह अपना काम जांफ़िशानी से कर रहा है, तबरेज़ के ख़िलाफ़ जो शक हो गया था वह रफ़ा हो गया।

अल आदिल के हुक्म के मुताबिक उसे मेहमान की हैसियत से ख़ेमागाह में भेज दिया गया जहाँ उसकी ख़ातिर व मदारत की गयी।

रात हसन बिन अब्दुल्लाह ने उसे अपने ख़ेमे में बुलाया और ख़तीब के नाम यह पैग़ाम दिया—"हालात दुश्वार हैं लेकिन इतने नहीं जितने आपको वहाँ सलीबी बता रहे हैं। लोगों से कहो कि उसे सच समझें जो उनकी आँखों के सामने हो और जो उन्हें मस्जिद में बताया जाए। इधर उधर की बातों और ख़बरों को सच न समझें। आप लोग बड़े ख़तरनाक इलाक़े में हैं। अपनी बस्ती के सलीबियों और यहूदियों पर नज़र रखें और यह भी ख्याल रखें कि वह आपकी सरगर्मियों पर नज़र न डाल सकें जिन्हें आख़िर दम तक छुपाये रखना है।"

हसन बिन अब्दुल्लाह ने तबरेज़ को ऐसा पैग़ाम दिया जो हमिस के मुसलमानों के लिए हौसला अफ़ज़ा था लेकिन उसे यह न बताया कि वह कौन सी सरगर्मियाँ हैं जिन्हें आख़िर दम तक छुपाये रखना है। हक़ीक़त यह थी कि हमिस के मुसलमानों को सलाहुद्दीन अय्यूबी के हुक्म के तेहत जंगी तरबियत दी जा रही थी। उसका मकसद यह था कि जब कभी ज़रूरत पड़े वह सलीबी फ़ौज पर अक़्ब से शबख़ून मारें। ज़ाहिरी तौर पर उनके वफ़ादार रहें। इस

मक़सद के लिए हमिस में तीन चार तजुर्बाकार छापामार भेज दिएगये थे जो वहाँ अपने मतलब की ट्रेनिंग दे रहे थे। ख़तीब उनका कमाण्डर था। उनके साथ अभी बक़ायदा राबता नहीं रखा गया था क्योंकि अभी उन लोगों की ज़रूरत नहीं थी।

दूसरी सुबह तबरेज़ हमिस को रवाना हो गया।

❖

वह ज़माना क़ाफ़िलों की सूरत में चलने का था। लोग अकेले—अकेले भी सफ़र करते थे ऐसे अकेले मुसाफ़िरों को जहाँ चन्द आदमी सफ़र में नज़र आते थे वह उनसे जा मिलते और इस तरह क़ाफ़िले बनते और बड़े होते जाते थे। तबरेज़ आया अकेला था। वापस जा रहा था कि उसे मुख़्तसर सा क़ाफ़िला मिल गया जो हमिस की सिम्त जा रहा था। उसमें हमिस के यहूदी ताजिर भी थे। दो ईसाई कुम्बे ऊंटों पर सवार थे और कुछ लोग पैदल जा रहे थे। तबरेज़ इस क़ाफ़िले में शामिल हो गया। क़ाफ़िला चलता गया। रास्ता लम्बा था। दो रातें क़याम करना पड़ा। तीसरा दिन आख़िरी दिन था। आधी रात से पहले क़ाफ़िले को हमिस पहुंच जाना था। आगे एक दरिया था जो बहुत बड़ा नहीं था। उसकी गहराई ज़्यादा से ज़्यादा कमर तक रहती थी। लोग उसमें आसानी से गुज़र जाया करते थे।

सफ़र के आख़िरी रोज़ का सूरज सर पर आया तो उफ़क से स्याह घटा उठती नज़र आई। क़ाफ़िला और तबरेज़ तेज़ चलने लगा ताकि बारिश से पहले मंज़िल तक पहुँच जाएं या चट्टानी इलाके में पहुंच जाएं कि छुपने की जगह ढूंढ ली जाए और अगर मुम्किन हो तो तुग़यानी आने से पहले ही दरिया पार कर लिया जाए। यह उन लोगों की हिमाक़त थी। घटा की रफ़्तार क़ाफ़िले के निसबत ज़्यादा थी और घटा जाने कहाँ से बरसती आ रही थी। वह तमाम इलाक़ा चट्टानी और पहाड़ी था। क़ाफ़िला दरिया के क़रीब पहुँचा तो घटा दुनिया को तारीक कर चुकी थी और मेंह ऐसा मुसलाधार बरसने लगा कि आँखें खोल कर चलना मुम्किन न रहा। एक बूढ़े ईसाई ने कहा कि दरिया चढ़ रहा है, अभी गुज़र सकते हैं। फ़ौरन पार हो जाओ।

इस बूढ़े के साथ वाले ऊंट पर एक जवान और ख़ूबसूरत ईसाई लड़की सवार थी। क़ाफ़िला दरिया के किनारे पहुँच चुका था। उसका पानी मटियाला हो गया था और उसकी रवानी में तुग़यानी वाला जोश पैदा हो गया था। गहराई में कोई इज़ाफ़ा मालूम नहीं होता था। बारिश बहुत तेज़ थी। घटा ने गहरी शाम का मंज़र बना रखा था। सूरज ग़ुरूब होने को ही था। एक आदमी ने घोड़ा दरिया में डाल दिया। चन्द क़दम आगे जाकर उसने चिल्लाकर कहा— "आ जाओ.....पैदल चलने वाले भी आ जाओ। पानी गहरा नहीं।"

यह किसी ने न देखा कि शदीद ख़तरनाक तुग़यानी का रेला आ रहा है। ऊपर की तरफ़ बहुत मेंह बरसा था और वह पहाड़ी इलाक़ा था जिसकी तुग़यानी बहुत ही तेज़ हुआ करती थी। ऊंट और घोड़े शायद इस ख़तरे को महसूस कर रहे थे। यह जानवर बड़े आराम और इत्मीनान से दरिया में से गुज़र जाया करते थे मगर बारिश में वह दरिया में बिदक रहे थे, हालांकि पानी गहरा नहीं था। अचानक दरिया बिफ़र गया। ऊंची—ऊंची लहरें किसी को

संभलने का मौका दिए बग़ैर आ गयी। दरिया के किनारे डूब गये। पानी गहरा हो गया। पैदल चलने वाले डूबने लगे तो वह तैरने लगे। ऊंटों ने वावैला बपा कर दिया। काफ़िला दरिया में बिखर गया। दूसरा किनारा दूर तो नहीं था लेकिन तुग़यानी जो बढ़ती जा रही थी आगे जाने ही नहीं दे रही थी फ़िर काफ़िले वालों को एक दूसरे का होश न रहा।

ईसाई लड़की की चीख़ सुनाई दी। तबरेज़ कहीं करीब ही था। उसने चीख़ सुन ली और यह भी देख लिया कि वह ऊंट जिस पर ईसाई लड़की सवार थी तुग़यानी का मुकाबला न कर सका और उसके पांव उखड़ गये। तुग़यानी ने उसे गिरा दिया। उसकी पीठ पर बैठी लड़की दरिया में जा पड़ी। तुग़यामी का यह आलम था कि कभी लहरें ऊपर को उठतीं और गिरती थीं और कभी भंवर बन जाती थीं। शोर इतना ज़्यादा था कि किसी को आवाज़ सुनाई नहीं देती थी। अगर तबरेज़ करीब न होता तो लड़की की चीख़ कोई न सुन सकता। वह घोड़े पर सवार था और घोड़ा सीधा तो नहीं जा रहा था लेकिन तुग़यानी का मुकाबला कर रहा था। तबरेज़ ने लड़की को पानी में गिरते देखा तो उसने घोड़े को दरिया के रुख़ पर डाल दिया लेकिन घोड़ा इतनी तेज़ी से तैर नहीं सकता था।

तबरेज़ घोड़े से कूद गया और बहुत तेजी से तैरता हुआ लड़की के पीछे गया। एक लहर ने लड़की को उपर उठाया तो तबरेज़ ने देखा लिया। तुग़यानी का ज़ोर भी था और तबरेज़ के जवान बाज़ूओं की कुव्वत भी थी कि उसने थोड़ी ही दूर लड़की को जा पकड़ा। वह अभी डूबी नहीं थी लेकिन वह तैर भी नहीं रही थी। तबरेज़ के लिए उसे संभालना बहुत मुश्किल हो गया था। इसी कोशिश में पानी उन्हें बहुत आगे ले गया। तबरेज़ उसे अपने ऊपर डाल कर किनारे की तरफ़ तैरने लगा। लड़की दूबारा उसकी पीठ से लुढ़क गयी। वह होश में नहीं थी। अगर तबरेज़ के जिस्म में ताक़त और दिल मे बेख़ौफ़ी न होती तो वह लड़की को छोड़ कर अपनी जान बचाने की फ़िक्र करता। तुग़यानी का ज़ोर और उसका शोर हौसला पस्त कर रहा था।

जिस जगह से काफ़िला दरिया में उतरा था वहाँ से कम बेश दो मील दूर तबरेज़ और लड़की को संभाले किनारे से जा लगा। वहाँ चट्टानें थीं। बारिश अभी थमी नहीं थी। तबरेज़ ने लड़की को एक चपटी चट्टान पर लिटाया। वह ज़िन्दा थी, होश में नहीं थी। उसे मालूम था कि बेहोश को किस तरह होश में लाया जाता है। वह लड़की को देखता रहा। लड़की बेहोशी में अज़ख़ुद पेट के बल हो गयी। पेट पर ज़ोर पड़ा तो दरिया का पानी निकलने लगा। तबरेज़ ने उसकी कमर पर हाथ रखकर दबाया तो बहुत सा पानी मुँह के रास्ते बाहर निकल गया। उसने और ज़ोर से दबाया। पहलूओं से भी पेट को दबाया। इससे लड़की का पेट पानी से खाली हो गया।

घटा फटने लगी। बारिश का ज़ोर कम हो गया और कुछ रौशनी भी हो गयी। तबरेज़ ने लड़की को सीधा किया। लड़की ने ज़रा सी आँख खोली और बन्द कर ली। तबरेज़ का जिस्म शल हो चुका था। उसने अपना घोड़ा दरिया में छोड़ दिया था। वह दरिया से निकल गया होगा। तबरेज़ को मालूम नहीं था कि घोड़े का अन्जाम क्या हुआ। तबरेज़ की थकन कम हो

गयी थी। सूरज ग़ुरूब होने को था। उसे ख्याल आया कि रात आ रही है और पनाह ढूंढना ज़रूरी है। उसे उम्मीद थी कि यह चट्टानी इलाका है, इसमें कहीं न कहीं गुफ़ा या ग़ार मिल जाएगी। लम्बी मसाफ़ित के मुसाफ़िर मिट्टी के टीलों और चट्टानों मे ग़ार बनाये रखते थे जो दूसरे मुसाफिरों के भी काम आती थीं।

❖

उसने लड़की को पीठ पर डाला और चट्टानों के दर्मियान चल पड़ा। पनाह मिलने का उसे यक़ीन नहीं था, उम्मीद थी। वह दिल में ख़ुदा से मदद मांगता चला जा रहा था। कुछ देर इधर उधर घूमते फिरते वह एक कुशादा सी जगह पहुँचा जहाँ एक चट्टान के साथ उसे तीन चार ऊँट खड़े नज़र आये। यह किसी मुसाफ़िर के नहीं हो सकते थे क्योंकि उनपर ज़ीन वग़ैरे नहीं थीं। ऊँटों तक गया तो उसे आवाज़ें सुनाई दीं। उधर देखा तो चट्टान में उसे एक फ़राख़ और ऊँचा दहाना नज़र आया। उसमें तेरह चौदह साल उम्र के दो लड़के खड़े थे। वह दोनों बारिश में दौड़े आये थे।

"तुम दरिया से निकल कर आ रहे हो?" एक लड़के ने पूछा– "वहाँ आ जाओ। बहुत अच्छी जगह है।"

वह जगह वाक़ई अच्छी थी। चट्टान भुरभुरी थी। साफ़ पता चलता था कि मुसाफ़िरों ने या क़रीब कहीं रहने वाले गड़ेरियों ने इसे काट–काट कर कमरा बना दिया है। यह एक कुशादा गुफ़ा थी। अन्दर से बिल्कुल ख़ुश्क थी। लड़कों ने वहाँ आग जला रखी थी। तबरेज़ ने लड़की को फ़र्श पर डाल दिया। वह अभी तक होश में नहीं आयी थी। एक तरफ़ ख़ुश्क घास और दरख़्तों की ख़ुश्क टहनियों का ढेर पड़ा था।

"तुम यहां क्या कर रहे हो?" तबरेज़ ने लड़कों से पूछा।

"हमारा घर दरिया के पार है।" एक लड़के ने जवाब दिया – "हम कभी कभी ऊंटों को इधर ले आते हैं। घास तो उधर भी बहुत है लेकिन हम यहाँ खेलने के लिए आते हैं और ऊंटों को भी चरने के लिए साथ ले आते हैं। एक जगह दरिया चौड़ा है। वहाँ पानी हमारे घूटनो तक होता है। आज भी हम आ गये और बारिश शुरू हो गयी। यहीं आग जलाकर खेलते रहे।"

"घर किस तरह जाओगे?" तबरेज़ ने पूछा– "दरिया चढ़ा हुआ है।"

"इस दरिया का ज़ोर ज़्यादा देर नहीं रहता।" एक लड़के ने इत्मीनान से कहा–"हम जहाँ से गुज़रते हैं वहाँ तुग़यानी में ख़तरा नहीं होता। पानी फैल जाता है।"

बारिश थम गयी थी। सूरज ग़ुरूब हो रहा था। लड़के अपने ऊंटों को लेकर चले गये। तबरेज़ ने उनसे मदद न मांगी। यह भी न सोंचा कि लड़की को उठा कर उनके गाँव चला जाए। लड़कों के जाने के बाद उसने आग पर ख़ुश्क टहनियां फेंकी। शोला उठा तो उसने अपना कुर्ता उतारा जो गले से टख़्नों तक लम्बा था। उसे आग पर ख़ुश्क करने लगा। वह दिल में शुक्र अदा कर रहा था। ख़ुदा ने उसे ऐसी तूफ़ानी बारिश में इन लड़कों को आग जलाने के लिए भेज दिया था। इस दौरान लड़की ने आँखे खोल दीं। उसके चेहरे पर ख़ौफ़ का तास्सुर नज़र आ रहा था। उसने इधर उधर देखा। फिर तबरेज़ को देखा तो उसका मुँह

दहशत से खुल गया। तबरेज़ ने अपना चुग़ानुमा कुर्ता उतार रखा था और तुग़यानी के मटियाले और गदले पानी ने उसके बालों और चेहरों को ख़ौफ़नाक बना रखा था।

"डरो नहीं।" तबरेज़ ने उसे कहा– "मुझे पहचानती नहीं हो? मैं तुम्हारा हमसफ़र था।"

"मगर तुम मुसलमान हो।" लड़की उठ बैठी और बोली– "मुझे तुम पर भरोसा नहीं करना चाहिए। मुझे जाने दो।"

"जाओ।" तबरेज़ ने कहा– "चली जाओ।"

वह उठी। उससे चला नहीं जा रहा था। गुफ़ा के बाहर एक क़दम रखा तो बाहर तारीक रात के सिवा कुछ नज़र नहीं आया। अन्दर आग की रौशनी थी। उसने घूम कर तबरेज़ को देखा जो टहनियों की आग की रौशनी में पुर असरार सा इन्सान नज़र आ रहा था। वह लड़की को देखता रहा। लड़की पांव पर खड़ी न रह सकी। एक दो क़दम आगे आकर गिर पड़ने के अन्दाज़ से बैठ गयी और बेबसी से तबरेज़ को देखने लगी।

"तुम्हारी निस्बत वह घोड़ा मुझे ज़्यादा अज़ीज़ था जिसे मैं दरिया में छोड़ आया और तुम्हें डूबने से बचाया।" तबरेज़ ने कहा।

"मेरी क़ीमत बीस घोड़ों से ज़्यादा है।" लड़की ने नक़ाहत ज़दा आवाज़ में कहा– "तुमने मुझ जैसी लड़की कभी नहीं देखी होगी। मुझे ज़लील व ख़्वार करके बेच डालोगे। तुम्हें कौन रोक सकता है।"

"मुझे ख़ुदा रोक सकता है।" तबरेज़ ने कहा– "और ख़ुदा ने मुझे रोक रखा है। यह एक मुअज़िज़ा है कि मैंने तुम्हें इस तुग़यानी से बचाया है जिसमें ऊंट औंधा हो गया था। फिर यह मुअज़िज़ा नहीं तो और क्या है कि हमें सर पर यह छत और जलती हुई यह आग मिल गयी। मैंने ख़ुदा से मदद मांगी थी। ख़ुदा सिर्फ़ उनकी मदद करता है जिनकी नीयत साफ़ होती है। यह आग दो लड़के जला गये हैं। वह फ़रिश्ते थे। मैं अपने मज़हब की रौशनी में बात कर रहा हूँ। तुम इसलिए डरती हो कि तुम्हारा मज़हब बातिल है और तुम इसलिए डरती हो कि तुम्हारी निगाह अपने जिस्म पर है जो बहुत दिल कश है और तुम्हारी नज़र में अपना चेहरा है जो बहुत हसीन है। मेरी निगाह मेरी अपनी रूह पर है जो तुम्हारे जिस्म से ज़्यादा दिलकश और तुम्हारे चेहरे से ज़्यादा हसीन है। मैं जानता हूँ कि थोड़ी देर बाद तुम मुझे अपना जिस्म पेश करके कहोगी कि मुझे मंज़िल पर पहुंचा दो। कान खोल कर सुन लो। मैं अपनी रूह को नापाक नहीं होने दूँगा। मेरे दिल में यह ख़ुराफ़ात डालने की कोशिश न करो कि तुम जैसी लड़की कभी नहीं देखी होगी।"

तबरेज़ के बोलने के अन्दाज़ में कोई ऐसा असर था जिसने लड़की के होंठ सी दिए औरवह हैरत और ख़ौफ़ भरी हुई आंखों से तबरेज़ को देखती रही थी। तबरेज़ की बातों में जो ख़ुलूस और अज़्म था, वह साफ़ महसूस हो रहा था।

"आग के क़रीब सरक आओ।" तबरेज़ ने कहा– "वह कुर्ता आग पर ख़ुश्क कर रहा था। लड़की यूं सरक कर आग के क़रीब हो गयी जैसे उसमें हुक्म उदूली की जुर्रत नहीं थी। तबरेज़ ने कुर्ते का एक सिरा उसकी तरफ़ बढ़ाते हुए कहा– "इसे पकड़ो और आग पर

रखो।" उसने कुर्ते को दूसरी तरफ़ से पकड़े रखा और दोनों कुर्ते को आग पर हिलाने जुलाने लगे। लड़की के कपड़े भीगे हुए थे। कुर्ता खुश्क हो जाए तो तुम पहन लेना, फिर तुम्हारे कपड़े खुश्क कर लेंगे।"

"नहीं।" लड़की ने घबराकर कहा--"मैं अपने कपड़े नहीं उतारूंगी।"

"तुम अपनी खाल भी उतार कर आग पर रख दोगी।" तबरेज़ ने कहा-- "मेरे फ़र्ज़ के रास्ते में आने की कोशिश न करो लड़की! मैं तुम पर साबित करूंगा कि वहशी मुसलमान होते हैं या ईसाई। मैं यह भी जानता हैं कि तुम कितनी पाकदामन हो। तुम मेरी पनाह में हो। मैं कोई सख़्त बात नहीं कह सकता। तुम औरत हो। मेरा मज़हब हुक्म देता है कि मजबूर औरत पर हाथ न उठाओ।"

"तुमने मुझे किस तरह तुग़यानी से निकाला था?" लड़की ने पूछा-- "क्या बाकी लोग पार हो गये थे?"

तबरेज़ ने उसे तफ़सील से बता दिया और यह भी बताया कि उसे बाकी लोगों के मुतअल्लिक बिल्कुल मालूम नहीं। लड़की का डर दूर न हुआ, कुछ कम हो गया था और उसकी जिस्मानी हालत भी अच्छी होती जा रही थी। तबरेज़ के पूछने पर उसने बताया कि अपने बूढ़े बाप के साथ हमिस जा रही थी। वह दोनों उस इलाके से नक़ले मकानी करके आ रहे थे जो मुसलमानों की हुक्मरानी में था। हमिस में उनके रिश्तादार रहते थे। लड़की अपने बाप के लिए परेशान थी।

❖

क़ाफ़िला तुग़यानी में से निकल गया था। कोई कहीं जा कर किनारे लगा कोई कहीं लगा। वह एक दूसरे को पुकारते इकट्ठे होने लगे। लड़की और तबरेज़ उनमें नहीं थे। वह ऊंट भी लापता था जिस पर लड़की सवार थी और तबरेज़ का घोड़ा किनारे लग गया था। वह दूर खड़ा था। क़ाफ़िले का एक आदमी उसे पकड़ लाया और सब ने यक़ीन से कह दिया कि हमिस का इतना ख़ुबसूरत जवान जो रास्ते में क़ाफ़िले से मिला था घोड़े से गिर कर डूब गया है। तबरेज़ का तो किसी को दुख नहीं था लड़की के ग़म में उसका बूढ़ा बाप, दो ईसाई और यहूदी निढाल हुए जा रहे थे। वह आगे जाने की बजाए दरिया के किनारे दूर तक जाने की सोंच रहे थे। क़ाफ़िले के कुछ और लोग कहते थे कि बेकार है, वह डूब गयी होगी। वह चारों सवार हुए और दरिया के साथ चल पड़े। उस वक़्त तबरेज़ लड़की को तुग़यानी से निकाल चुका था और उसे चपटी चट्टान पर लिटा कर उसका पेट पानी से खाली कर रहा था। वहाँ दरिया का मोड़ था। चट्टानें भी थीं इसलिए लड़की की तलाश में आने वाले लड़की को न देख सके। वह जब उस जगह आये उस वक़्त तबरेज़ लड़की को पीठ पर बैठाये चट्टानों के अन्दर चला गया था। तलाश करने वाले आगे निकल गये। वह फिर वापस नहीं आये। सूरज ग़ुरूब हो गया तो हमिस के रास्ते पर हो लिए।

"इतनी क़ीमती लड़की ज़ाया करने पर उन्होंने हमें सज़ाए मौत न दी तो समझेंगे कि वह बहुत रहम दिल हो गये हैं।" बूढ़े ने कहा-- "क्या जवाब दोगे वह किस तरह डूबी?"

"कह देंगे तुग़यानी में उसने मनमानी की।" यहूदी ने कहा– "कहती थी कि अलग ऊंट पर दरिया पर करूंगी। उसने ज़िद की और तुग़यानी का ज़ोर उसे हम से दूर ले गया......वह दरिया से निकल आती तो हमें मिल जाती। मर गयी है।"

"जो जी मे आये कहो।" एक ईसाई ने कहा– "हमारी यह कोताही बख़्श भी दी जाए तो क्या तुम सबको अफ्सोस नहीं होगा कि इतनी कारआमद लड़की ज़ाया हो गयी है? दूसरी लड़की लाते एक महीने से ज़्यादा अर्सा लगेगा।"

"मैं ने कई मश्वरा दिया था कि इस काम के लिए दो लड़कियों की ज़रूरत है।" बूढ़े ने कहा– "हमिस के मुसलमान जोश से फटे जा रहे हैं। इसमें कोई शक नहीं रहा कि वह जो जंगी तरबियत हासिल कर रहे हैं वह कोई जज़्बाती या वक़्ती जोश नहीं। मैंने उनकी तरबियत बहुत ग़ौर से देखी है। मेरा तजुर्बा कहता है कि यह शबखून और छापे मारने की बाक़ायदा तरबियत है। मैंने उनके चारों उस्ताद देखे हैं। वह काहिरा से भेजे गये हैं या दमिश्क़ से और वह माहिर छापामार मालूम होते हैं।"

"अगर यह लोग हमारी हुक्मरानी में होते तो हम देखते कि यह किस तरह जंगी तरबियत हासिल कर लेते हैं।" एक ईसाई ने कहा।

"तुम क्या समझते हो यहाँ यह अपनी तरबियत मुकम्मल कर लेंगे?" यहूदी ने कहा– "हम उन्हें आपस में टकरा देंगे।"

"इसी मक़सद के लिए हम इस लड़की को दमिश्क़ से ला रहे थे।" बूढ़े ने कहा– "हमिस में फ़साद पैदा करने का काम मुझे सौंपा गया था। मैंने इस लड़की का नाम लिया था। उन्होंने मुझे ही हुक्म दिया कि लड़की के बाप बन जाओ और हमिस ले जाओ। कोई पूछे तो बताओ कि नक़ले मकानी कर रहा हूँ।"

रात के अंधेरे में वह चलते जा रहे थे और अपनी उस ख़ुफ़िया मुहिम के मुतअल्लिक़ बातें करते जा रहे थे जिसके लिए उन्हें हमिस जाना था। बूढ़ा सलीबियों का तजुर्बाकार जासूस था और नफ़सियाती तख़रीबकारी का माहिर। वह अपने साथियों से कह रहा था– "मुसलमान तो हर जगह जंगी तरबियत हासिल करते हैं। दमिश्क में नुरूद्दीन ज़ंगी की बेवा लड़कियों को बाक़ायदा जंगी तरबियत दे रही है। बस्ती–बस्ती यह जोश देखने में आया है मगर हमिस और उसके गिरदोनवाह के इलाक़े को ऐसी अहमियत हासिल है कि यहाँ मुसलमानों के छापामारों को अड्डा नहीं मिलना चाहिए।"

"हमिस सरहद पर है।" यहूदी ने कहा– "अगर मुसलमानों ने यहाँ अड्डा बना लिया तो हमारे लिए ख़तरनाक होगा। होना तो यह चाहिए कि यहाँ के मुसलमानों को सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ कर दिया जाए और उनके दिलों पर क़ब्ज़ा कर लिया जाए।"

"यह मुम्किन नज़र नहीं आता।" बूढ़े ने कहा– "मुझे बताया गया है कि हमारे आदमियों ने बहुत अफ़वाहें फैलाई हैं मगर मुसलमान इन पर कान नहीं धरते। मुझे यह भी बताया गया है कि उनके ख़तीब का उन पर बहुत असर है और यह भी पता चला है कि ज़ंगी तरबियत उसी की हिदायात के मुताबिक़ हो रही है। मुझे हमिस नहीं जाना चाहिए था क्योंकि हम लड़की को

गुम कर बैठे हैं। मैं अब इसलिए वहाँ तक जाना चाहता हूँ कि ख़तीब को देखूं कि वह कौन है और क्या वह आलिम है या कोई फौजी कमानदार। यह भी देखना है कि उसे अपने हाथ में लिया जा सकता है या नहीं। मुझे और तुम सबको हमिस के ईसाई और यहूदी घरानों से एक या दो लड़कियों का इन्तख़ाब करना है जो इस मुहिम में हमारी मदद कर सकें। तुम जानते हो कि लड़कियों को क्या करना है।"

"मैंने तुम्हें यह दमिश्क़ में भी बताया था कि यहाँ के मुसलमान ईमान के पक्के हैं।" एक ईसाई ने कहा– "अभी तक हम किसी एक को भी नहीं खरीद सके।"

"मैं सारी उम्र इस दरिया पर लानत भेजता रहूँगा, जिसने हमें दीरा से महरूम कर दिया है।"

❖

"मेरा नाम दीरा है।" लड़की ने तबरेज़ के पूछने पर बताया– "हम ग़रीब लोग हैं। मुसलमानों ने दमिश्क़ में हमारा जीना मुहाल कर दिया था। खुदा गरीब की बेटी को हुस्न न दे। बड़े–बड़े अमीर मुझे ख़रीदने की कोशिश करते थे। एक ने मुझे अग़वा करने की भी कोशिश की थी। मेरा बाप मुझे काज़ी के पास ले गया। उसने हमारी फ़रियाद सुन ली और मेरी हिफ़ाजत का इन्तज़ाम कर दिया मगर वहाँ हुकूमत मुसलमानो की थी। हम डरते रहे। मेरे बाप ने यही बेहतर समझा कि दमिश्क़ से निकल ही जाएं। हमिस में हमारे रिश्तेदार हैं। अब हम उनके पास जा रहे थे। मालूम नहीं मेरा बाप ज़िन्दा होगा या नहीं......क्या तुम एक मज़लूम और मजबूर लड़की पर रहम नहीं करोगे?"

रात गुज़रती जा रही थी। बूढ़ा ईसाई जिसको दीरा अपना बाप कहती थी अपने साथियों के साथ बहुत दूर निकल गया था।

"मेरा जामा ख़ुश्क हो गया है।" तबरेज़ ने कुर्ता उसकी तरफ़ फेंकते हुए कहा– "मैं बाहर निकल जाता हूँ। उठो, अपने कपड़े उतारो और यह पहन लो। तुम्हें सर से पांव तक ढांप लेगा। फिर अपने कपड़े ख़ुश्क करके पहन लेना।"

"मैं तुम्हारे हाथ में मजबूर हूँ।" दीरा रूंधी हुई आवाज में बोली– "मेरे साथ उस दरिन्दे का सा सलूक न करो जो शिकार से पहले उस के साथ खेलता है।"

"मैं कह रहा हूँ यह भींगे हुए कपड़े उतार दो।' तबरेज़ ने ग़ुस्से से कहा और बाहर को चल पड़ा।

दीरा ने उसे बाहर जाते और एक तरफ़ होते देखा। वह ओट में हो गया। जहाँ से दीरा को नज़र नहीं आता था। दीरा ने ज़रा आगे होकर देखा। वह गुफ़ा की तरफ़ पीठ किए खड़ा था। आग इतनी ज़्यादा थी कि रौशनी तबरेज़ की पीठ पर पड़ रही थी। दीरा ने अपने फ़राक के अन्दर हाथ डाला। उसने अन्दर कमर के गिर्द कपड़ा लपेट रखा था। उसने कपड़े में खंज़र उड़सा हुआथा। दीरा ने ख़ंजर निकाल लिया और दबे पांव आगे बढ़ी। तबरेज़ बेख़बर खड़ा था। दीरा उससे एक कदम दूर रह गयी तो उसने ख़ंजर दायें तरफ करके पहलू में घोपने को वार किया। तबरेज़ बिजली की तेज़ी से घूमा और लड़की के दायें हाथ की कलाई इतनी जोर

से मरोड़ी कि लड़की घूम गयी और उसके हाथ से ख़ंजर गिर पड़ा।

तबरेज़ के बचने का बाइस यह था कि वह जहाँ खड़ा था वहाँ से चन्द ही क़दम आगे एक और चट्टान थी। आग तबरेज़ के पीछे थी। तबरेज़ को सामने वाली पहाड़ी पर अपना साया नज़र आया। उसने पीछे न देखा क्योंकि साये का दायां बाज़ू दायें को फैला तो उसे ख़ंजर साफ़ नज़र आ गया। दीरा पहलू में वार करके पेट चाक करना चाहती थी साये की हरकत देखकर तबरेज़ पीछे को घूमा और लड़की की कलाई पकड़ ली। ख़ंजर गिरा तो उसने दीरा की कलाई छोड़ कर ख़ंजर उठा लिया। उसने नोक लड़की की तरफ़ की तो वह उसके सामने घूटनों के बल बैठ गयी और हाथ जोड़ कर इल्तिजा की– "जो कहोगे मानूगी। मुझे क़त्ल न क़रना।"

"मैं इसके सिवा तुम्हें कुछ नहीं कहूंगा कि यह कपड़े उतार दो और मेरा कुर्ता पहन लो।" तबरेज़ ने हुक्म के लहजे में कहा– "तुमने देख लिया है कि तुम मुझे क़त्ल नहीं कर सकती। मेरी आँखे आगे हैं खोपड़ी के पीछे नहीं यह मेरी रूह की आँखे हैं जिनसे मैंने तुम्हें देख लिया था.....क्या मैं अपने सामने तुम्हारे कपड़े नहीं उतरवा सकता? मैं तुम्हें कपड़ों के बग़ैर नहीं देखना चाहता।"

वह एक दफ़ा फिर वहीं जाकर खड़ा हुआ। दीरा गुफ़ा के एक कोने में चली गयी। उसने बड़ी तेजी से अपना फराक उतरा, फ़िर ज़ेरे जामा भी उतार दिया और तबरेज़ का कुर्ता पहन लिया जिसमें वह गर्दन से पांव तक मस्तूर हो गयी। उसने तबरेज़ को आवाज़ देकर कहा– "आ जाओ।"

तबरेज़ अन्दर गया। दीरा का फ़राक उठा कर एक तरफ़ से उसके हाथ में दिया और आग पर ख़ुश्क करने लगा। दीर उसे कंखियों से देखती रही। तबरेज़ ने कोई बात न की। दीरा को उसकी ख़ामोशी परेशान कर रही थी। उसका दिल मान नहीं रहा था कि यह जवान आदमी उसे बख़्श देगा। अब तो ख़ंजर भी उस जवान के पास था..... वह ख़ामोशी से कपड़े ख़ुश्क करते रहे। जब ख़ुश्क हो गये तो तबरेज़ लड़की को यह कहकर बाहर निकल गया कि यह पहन लो। लड़की ने एक बार फ़िर डरते–डरते कपड़े बदले और तबरेज़ को अन्दर बुलाया।

"यह ख़ंजर अपने पास रखो।" तबरेज़ ने ख़ंजर उसकी तरफ़ फेंक कर कहा– "और सो जाओ। सुबह रवाना होंगे।"

"तुम मुझे धोखा दे रहे हो।" दीरा ने कहा– "या तुम बे हिस और मुर्दा इन्सान हो।"

"यह मुझे तुम्हारी फौज के सामने साबित करना है कि मैं बेहिस और मुर्दा नहीं। मेरे दिल में तुम्हारे खिलाफ़ कोई दुश्मनी नहीं। मैं तुम्हारे उन बादशाहों का दुश्मन हूँ जो मेरे वतन पर कब्ज़ा करने आये हैं, और जो हमारे क़िब्ला अव्वल पर क़ाबिज़ हो चुके हैं।"

"तुम्हें ग़लत बातें बताकर भड़काया जा रहा है।" दीरा ने कहा– "तुम कुछ न जानने वाले देहाती हो। जिसे तुम क़िब्ला अव्वल कहते हो, वह दर असल यहूदियों का मआबद है। वह हैकले सुलैमानी है। सलाहुद्दीन अय्यूबी अपनी सल्तनत को बहुत दूर तक फैलाना चाहता

है। तुम जैसे सीधे सादे मुसलमानों के मज़हबी जज़्बात को भड़काने के लिए वह कह रहा है कि वह किब्ला अव्वल और मस्जिद है।"

"हम अपने ख़तीब के सिवा किसी की बात नहीं सुना करते।" तबरेज़ ने कहा– "तुम सो जाओ। मैं तुम्हारी कोई बात नहीं सुनूंगा।"

"मुझे नींद नहीं आयेगी।" दीरा ने कहा–"मैं तुमसे डरती हूँ। बातें करते रहो.....तुम्हारा ख़तीब हमिस का रहने वाला है या कहीं बाहर से आया है?"

"हमिस का रहने वाला है।" तबरेज़ ने जवाब दिया और अपना कुर्ता पहन कर लेट गया।

दीरा को किरदारी कुशी और जासूसी की ट्रेनिंग मिली हुई थी। दमिश्क़ में उसे इसी मकस्द के लिए भेजा गया था और अब इसी मकसद के लिए उसे हमिस ले जाया जा रहा था। उसने हमिस के ख़तीब और वहाँ के मुसलमानों के मुतअल्लिक़ तबरेज़ से मालूमात लेने केलिए बहुत बातें कीं लेकिन तबरेज़ ने कोई दिलचस्पी न ली और बेरुख़ी का इज़हार करता रहा। दीरा का जिस्म टूटा हुआ था। वह इस कोशिश में थी कि उसे नींद न आये मगर उसकी आँख लग गयी।

❖

दीरा की आँख खुली तो वह घबरा कर उठ बैठी। बाहर सुबह का धुंधलका था। उसने इधर उधर देखा तबरेज़ सज्दे में पड़ा था। वह सज्दे से उठा फिर सज्दा किया और खड़ा हो गया। वह सुबह की नमाज़ पढ़ रहा था। दीरा ने अपने लिबास का जायजा लिया। उसे रात नींद ने न सोने के इरादे के बावजूद दबोच लिया था। आँख खुली तो वह तबरेज़ से डर गयी लेकिन वह जिस हालत मे सोयी थी उसी हालत में जागी और उसने तरबेज़ को ख़ुदा के हुज़ूर सज्दे में पड़े देखा। उसे वह ख़्वाब समझने लगी। मुसलमानों के मुतअल्लिक उसकी राय यह थी कि वहशी क़ौम है लेकिन तबरेज़ जैसे तनूमन्द जवान उसकी तरफ़ तवज्जो ही नहीं दे रहा था। जिस लड़की ने नाज़ो अन्दाज़ से सरकरदा मुसलमानों को अपने जाल में फांस लिया था, उसके लिए तबरेज़ ख़्वाब की दुनिया का ही आदमी हो सकता था।

दीरा पाक दामन नहीं थी। बचपन से उसे इब्लीसियत की तरबियत दी गयी थी। उसके हुस्न और जिस्म की कशिश को जादू असर बनाने का ख़ास इन्तज़ाम किया गया था। जवान होने तक बदी उसकी फ़ितरत में शामिल हो चुकी थी मगर इन्सानी फ़ितरत का यह ख़ास्सा है कि बरसो मुसलसल अर्क रेज़ी के बग़ैर उसकी असलियत बदल नहीं सकती, उस पर बहरूप चढ़ाया जा सकता है। दीरा को तुग़यानी ने जो पटख़ियां दी थीं और जिस तरह मौत के मुंह में फेंका था, इससे उसके जज़्बात उस पर ग़ालिब आ गये। वह तुग़यानी से तो ज़िन्दा सही सलामत निकल आई थी मगर उसकी दहशत से अभी तक नहीं निकली थी। उसके साथ उसपर तबरेज़ की दहशत तारी हो गयी थी। इस मुसलमान जवान से उसे और कोई डर नहीं था। ख़ौफ़ यह था कि यह कोई ख़ानाबदोश या बद्दू हुआ तो उसे किसी के हाथ बेच डालेगा। वह बिक जाने के बाद अज़ीयत नाक जिन्दगी से डर रही थी।

रात गुज़र गयी। तबरेज़ ने उसके इतने दिलकश जिस्म की तरफ़ तवज्जो ही नहीं दी।

वह बेहोशी की नींद सो गयी तो भी तबरेज़ उस से दूर रहा। सुबह तुलूअ हुई तो उसकी थकन ख़त्म हो चुकी थी और तबरेज़ का ख़ौफ़ भी। रात तक वह उसे गंवार, बेहिस और मुर्दा समझती रही थी। अब वह उसे ग़ौर से देखने लगी। तबरेज़ के होंठ हिल रहे थे। दीरा को यूं महसूस होने लगा जैसे यह शख़्स बराहे रास्त ख़ुदा से हमकलाम हो। उसे तबरेज़ के यह अल्फ़ाज़ याद आने लगे कि ख़ुदा सिर्फ़ उनकी मदद करता है जिनकी नीयत और रूह पाक होती है। तब उसे ख़्याल आया कि उसकी अपनी पाक नीयत नहीं। वह तबरेज़ की कौम के लिए एक हसीन धोखा बनी हुई है। उस लड़की ने रात को यह भी फ़ैसला कर लिया था कि अपना आप तबरेज़ के हवाले करके उसे कहेगी कि उसके एवज़ हर्मिस पहुँचा दो।

और रूह? दीरा को जिन्दगी में पहली बार एहसास हुआ कि उसका जिस्म रूह से महरूम है और अगर रूह है भी तो वह किरदार की ग़िलाज़त में दब गयी है लेकिन रूह मरा नहीं करती। दीरा पर जो गुज़री थी उससे उसकी रूह बेदार हो गयी थी जो उसे शर्मसार कर रही थी। उसे तबरेज़ की शकल व सूरत बदली नज़र आने लगी। उसकी निगाह में वह फ़रिश्ता बन गया जो ख़ुदा से हमकलाम था। लड़की के आँसू निकल आये थे। ज्यों--ज्यों आँसू बहते गये उसे ऐसे लगा जैसे उसका वजूद तबरेज़ के वजूद में समाता जा रहा हो।

तबरेज़ ने दुआ के लिए हाथ उठाये। वह शायद भूल गया था कि इस गुफ़ा में कोई और भी है, या यह कि लड़की गहरी नींद सोई है। उसने बुलन्द आवाज़ से कहा-- "ख़ुदाए अज़ोवजल! मुझे गुनाहों से दामन पाक रखने की हिम्मत अता फ़रमा। मेरी रूह को इतनी पकीज़गी अता फ़रमा कि तेरी इतनी ख़ुबसूरत अमानत को ख़यानत के बग़ैर मंज़िल तक पहुँचा सकूं। तेरा यह बन्दा कमज़ोर और नातवां है। मुझे शैतान का मुक़ाबला करने की हिम्मत और जुर्रत अता फ़रमा।"

तबरेज़ फ़रिश्ता नहीं था। वह इन्सानी फ़ितरत की कमज़ोरियों से पनाह मांग रहा था। उसने हाथ मुँह पर फेरे और घूम कर देखा। दीरा उसे देख रही थी। उसके रुख़सारों पर आँसू बहे जा रहे थे। तबरेज़ उसे कुछ देर देखता रहा। लड़की ने कोई हरकत न की।

"बाहर जाओ।" तबरेज़ ने उसे कहा-- "उस तरफ साफ़ पानी का चश्मा है। मुँह धो आओ।" उसने अपने सर पर लिपटा हुआ मोटे कपड़े का गज़ भर लम्बा चौड़ा रूमाल उतारकर उसे देते हुए कहा-- "मुंह अच्छी तरह धोओ और बालों को भी अच्छी तरह झाड़ पोंछ लो। मैं तुम्हें उसी रूप में तुम्हारे रिश्तेदारों के हवाले करना चाहता हूँ जिस तरह तुग़यानी में गिरने से पहले थीं।"

दीरा उसके हाथ से रूमाल लेकर ऐसे अन्दाज़ से बाहर निकल गयी जैसे गूंगा और बहरा बच्चा किसी के इशारे पर चल पड़ा हो। तबरेज़ के पास खाने पीने का जो सामान था वह घोड़े के साथ बंधा हुआ था। अब खाने के लिए कुछ भी न था। वह दीरा के इन्तज़ार में बैठ गया।

❖

दीरा सर धोकर वापस आई तो तबरेज़ को यूं धचका लगा जैसे किसी ने उसे कांटा चुभो दिया हो। इससे पहले दीरा के बाल मिट्टी से अटे हुए और जड़े हुए थे। चेहरे का भी यही

हाल था। अब बाल और चेहरा धुल गये तो तबरेज़ जैसे उसे पहचान ही न सका। वह ऐसे तिलिस्माती बालों को कभी तसव्वुर में भी नहीं ला सका था। दूर दराज़ रहने वाले देहाती ने ऐसा हुस्न कभी नहीं देखा था। चेहरा इतना मुलायम और आँखों में ऐसी दिलकशी उसे हैरान कर रही थी। तबरेज़ उस तबरेज़ के हाथ से निकलने लगा जो कुछ देर पहले ख़ुदा के हुज़ूर खड़ा था। उसने बड़ी मुश्किल से अपने आप को संभाला। और बोला– "खाने के लिए कुछ नहीं। हमें ख़ाली पेट सफ़र करना पड़ेगा, चलो।"

वह उठने लगा तो दीरा ने उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा– "ज़रा देर बैठो। मैं कुछ पूछना चाहती हूँ। कुछ जानना चाहती हूँ" तबरेज़ रात भर उस लड़की के लिए दहशत बना रहा था, अब उस की ज़ेहनी कैफियत यह थी जैसे यहलड़की उस पर ग़ालिब आ गयी हो। कुछ कहे बेग़ैर उठते–उठते बैठ गया– "तुम जब ख़ुदा के साथ बातें कर रहे थे तो ख़ुदा तुम्हें नज़र आ रहा था?"

"ख़ुदा हमें नज़र नहीं आया करता।" तबरेज़ ने कहा– "मैं आलिम नहीं, इसलिए बता नहीं सकता कि ख़ुदा नज़र आये बेग़ैर किस तरह अपनी मौजूदगी का एहसास दिलाता है। मैं इतना जानता हूँ कि ख़ुदा मेरी बातें, मेरी दुआएं सुन लेता है।"

"तुम्हें यकीन है कि यह ख़ुदा था जिसने तुम्हें अपनी कुव्वत दी कि तुमने मुझे तुग़यानी से निकाल लिया?" दीरा ने पूछा।

"हमे ख़तीब ने बताया है कि रूह पाक हो तो ख़ुद हर मुश्किल में मदद देता है।" तबरेज़ ने जवाब दिया– "अगर मैं इस इरादे से तुम्हें बचाने की कोशिश करता कि तुम बहुत खुबसूरत लड़की हो और तुम्हें बचाकर कहीं ले भागूंगा तो मैं भी तुम्हारे साथ डूब जाता।"

"मगर मेरी रूह पाक नहीं है।" दीरा ने दुखियारे से लहजे में कहा– "ख़ुदा ने मेरी मदद क्यों की है? मुझे डूबने से क्यों बचाया है?"

"हमिस चलके ख़तीब से पूछेंगे।" तबरेज़ ने कहा–"मुझे इतनी अक्ल नहीं।"

'और तुमने मेरे जिस्म से क्यों बेरूख़ी की?" दीरा ने पूछा।

"अगर मैं ऐसा करता जैसे तुम्हें डर था तो मैं तुम्हारे ख़ंजर से न बच सकता।" तबरेज़ ने जवाब दिया– "तुम ख़ुदा की अमानत हो, और......वह चुप हो गया। ज़रा देर बाद बेइख़्तियार बोला– "तुम बहुत खुबसूरत अमानत हो दीरा! आओ चलें।" वह बेकरार सा होकर उठने लगा। दीरा ने उसे उठने न दिया। तबरेज़ ने कहा–"मुझे अपने क़रीब ज़्यादा देर न बैठने दो। मुझे इतने सख़्त इम्तेहान में न डालो लड़की! मुझे ख़ुदा के हुज़ूर सुरख़ुरू होने दो।"

"तुम्हें अपने ख़ुदा की क़सम!" दीरा ने कहा– "मुझे भी ख़ुदा के हुज़ूर सुरख़ुरू होने के क़ाबिल बनाओ। तुम अपने जैसे इन्सानो से बहुत ऊंचे। तुम ख़ुदा के एल्ची हो।"

"तुम रो क्यों रही हो?"

"मैं गुनाहगार हूँ।" दीरा ने जवाब दिया–"ख़ुदा मुझसे नाराज़ है। जब ऊंट ने मुझे तुग़यानी में गिरा दिया था तो भी मुझे ख़ुदा याद नहीं आया था। मैं समझती थी कि जो कुछ है वह जिस्म है और मुझे अपने जिस्म को बचाना चाहिए। तुम मुझे तुग़यानी से निकालकर

यहाँ ले आए तो भी मेरे सामने यही मसला आ गया कि मुझे तुम से अपना जिस्म बचाना है। अपने जिस्म को बचाने के लिए ही मैंने तुम्हें क़त्ल करने की कोशिश की थी मगर नाकाम रही। मैं तुग़यानी से भी बच गयी। तुमसे भी बच गयी लेकिन तुम्हारी इबादत और दुआ ने मुझे बताया कि मुझे बचाने वाली कुव्वत कोई और थी। मुझे बताओ वह कुव्वत क्या है? कहाँ है?"

"यह ख़ुदा की कुदरत है।" तबरेज़ ने जवाब दिया– "यह रूह की पाकीज़गी का करिश्मा है।"

"मेरी सारी ज़िन्दगी एक गुनाह है।"

"मुझे साफ़ लफ़्ज़ो में बताओ।" तबरेज़ ने पूछा–"तुम रक़ासा हो? अमीरों वज़ीरों के पास रहती हो? मैंने सुना है कि ऐसी लड़कियाँ बहुत ख़ूबसूरत होती हैं। मैंने ऐसी ख़ूबसूरत लड़की कभी नहीं देखी थी।"

दीरा ख़ामोश रही। उसकी आँखों में आँसू आ गये। वह सरक क़र तरबेज़ के क़रीब हो गयी। तबरेज़ परे सरक गया। दीरा ने कहा– "मुझे डर आता है। तुग़यानी की दहशत मुझे अभी तक डरा रही है। मुझे अपने क़रीब रखो।"

"नहीं।" तबरेज़ ने अजीब सी मुस्कुराहट से कहा–"मेरे इतना क़रीब न आओ। मैं भटक जाऊंगा।"

"देख लिया, मैं कितनी गुनाहगार हूँ? दीरा ने कहा– "तुम इसलिए मुझसे दूर रहना चाहते हो कि भटक न जाओ। मैं ने बहुत से लोगों को गुमराह किया है।" उसने देख लिया कि तबरेज़ के पास मज़हबी जज़्बात हैं और जज़्बा भी लेकिन उसकी सोंच में गहराई नहीं है। अगर उसे सांचे में ढाला जाए तो ढल जाएगा। दीरा ने उसके साथ खुल कर बातें करनी शुरू कर दीं। कहने लगी– "अगर मैं कहूँ कि आओ हम सारी उम्र के सफ़र में इकट्ठे रहें तो क्या जवाब दोगे?"

तबरेज़ ने उसके चेहरे को देखा। ज़रा सा मुस्कुराया और संजीदा हो गया। बोला– "आओ चलें। सूरज निकल आया है सफ़र मुश्किल हो जाएगा।"

दीरा अपनी ज़ात में एक इन्क़लाब महसूस कर रही थी जिसे वह अच्छी तरह समझ न सकी। वह उसके साथ उठकर चल पड़ी। वह रास्ते को कम और तबरेज़ को ज़्यादा देख रही थी। गुज़िश्ता रात वह तबरेज़ को क़त्ल करके हमिस को भाग जाने की फ़िक्र में थी लेकिन अब वह तेज़ चलने से गुरीज़ कर रही थी। वह ज़्यादा से ज़्यादा देर तबरेज़ के साथ रहने की ख़्वाहिश लिए हुए थी। एक बार उसने तबरेज़ का हाथ पकड़ लिया और कहा– "आहिस्ता चलो।"

"हमें आहिस्ता नहीं चलना चाहिए।" तबरेज़ ने कहा–"वरना एक और रात आ जायेगी।"

"आने दो।" दीरा ने कहा– "मैं तेज़ नहीं चल सकती।"

"जहाँ रह जाओगी वहां तुम्हें उठा लूंगा।" तबरेज़ ने कहा– "आहिस्ता न चलो।"

❖

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के भाई अल आदिल ने सलीबी बादशाह बिल्डून को हमात

के किले के बारह बहुत बड़ी शिकस्त दी थी जिससे बौखलाकर बिल्डून की फ़ौज बिखरकर पस्पा हुई थी। इस मार्के की तफ़सील सुनाई जा चुकी है। इस सलीबी बादशाह ने बड़ी मुश्किल से अपनी बिखरी हुई फ़ौज को यकजा किया था। तब उसे अन्दाज़ा हुआ था कि उसका कितना जानी नुक़सान हुआ है। उसके पास निस्फ़ से कुछ ज़्यादा फ़ौज रह गयी थी। वह तो दमिश्क तक के इलाके पर कब्ज़ा करने आया था। उसकी फ़ौज अल आदिल के छापामार हम्ले में मर गई थी और जब सलीबी भागे तो उनमें बहुत से वादियों और वीरानों मे भटक गये थे। इनमें से कई एक को मुसलमान गड़ेरियों, ख़ानाबदोशों और देहातियों ने मार डाला और उनके हथियारो और घोड़ों पर कब्ज़ा कर लिया था।

जब बिल्डून ने बची खुची फौज को हमात सेदूर एक जगह जमा कर लिया तो उसे बताया गया कि फ़ौज के जो सिपाही और ओहदेदार अकेले–अकेले आ रहे थे। मुसलमानों के हाथों कत्ल हो गये हैं। बिल्डून शिकस्त से बौखलाया हुआ था, इस इत्तलाअ से उसका गुस्सा और तेज हो गया। उसने हुक्म दिया कि जहाँ कहीं मुसलमानों का कोई गांव नज़र आये उसे लूट लो, जवान लड़कियाँ उठा लाओ और गाँव को आग लगा दो। चुनांचे यह फ़ौज जब नफरी और दिगर नुक़सान पूरा करने और हम्ले की अज़सरे नौ तैय्यारी करने के लिए पीछे जा रही थी मुसलमानों के गाँव तबाह करती गयी।

अब यह फौज हमिस से छः सात मील दूर खेमाज़न थी। बिल्डून इस कोशिश में था कि कोई सलीबी हुक्मरान उसके साथ तआवुन करे और अपनी फ़ौज उसे दे दे जिससे वह अल आदिल से शिकस्त का इन्तक़ाम ले सके और दमिश्क तक अपनी हुक्मरानी जिसे वह सलीब की हुक्मरानी कहता था क़ायम करने का अज़्म पूरा कर सके। इसी सिलसिले में वह एक और सलीबी बादशाह रिनॉल्ट आफ शायतून के यहाँ गया हुआ था।

दीरा की तलाश से मायूस होकर बूढ़ा ईसाई और उसके साथी रात भर चलते रहे और सुबह हमिस पहुंचे। काफ़िले के दूसरे लोग भी पहुंच गये। इनमें से कोई भी हमिस का नहीं था। उन्हें आगे जाना था। तबरेज़ का घोड़ा उनके साथ था। उन्होंने घोड़ा एक मस्जिद के इमाम के हवाले करके बताया कि इसका मालिक हमिस का रहने वाला था। वह तुग़यानी में घोड़े से गिरकर डूब गया था और घोड़ा बाहर आ गया था। थोड़ी देर बाद घोड़ा पहचान लिया गया। जब घोड़ा तबरेज़ के घर पहुंचा तो वहाँ कुहराम बपा होगया।

वहाँ एक यहूदी ताजिर का घरथा। यह एक दौलत मंद यहूदी था। वह जो अपने आप को दीरा का बाप कहता था अपने साथियों के साथ इस यहूदी के घर में बैठा था। वह बता चुका था कि दीरा डूब गयी है। सब अफ़सोस का इज़हार कर रहे थे लेकिन उनका मस्ला अफ़सोस करने से हल नहीं हो सकता था। बूढ़े ने यहूदी मेज़बान से पूछा कि हमिस के मुसलमानों की सरगर्मिया और अज़ाइम क्या हैं।

"बहुत ख़तरनाक।" मेज़बान ने जवाब दिया–"उन्हें बक़ायदा ट्रेनिंग दी जा रही है और यह कस्बा सुल्तान अय्यूबी के छापामारों का अड्डा बनता जा रहा है। ख़तीब सिर्फ़ ख़तीब नहीं फौज का कमानदार और उस्ताद मालूम होता है।"

"अगर उसे कत्ल करा दिया जाए तो क्या फायदा होगा?" बूढ़े ईसाई ने पूछा।

"कुछ भी नहीं।" यहूदी ताजिर ने जवाब दिया—"उसका नुक़सान होगा कि मुसलमान हम पर शक करके हममें से किसी को भी जिन्दा नहीं रहने देंगे। यह कस्बा उनकी सल्तनत में है।"

"यहाँ तो ईसाई और यहूदी घराने हैं क्या उनकी लड़कियाँ कुछ नहीं कर सकतीं?" बूढ़े ने पूछा।

"आप जानते हैं कि इस काम के लिए कितनी ट्रेनिंग और तजुर्बे की ज़रूरत होती है।" मेज़बान ने जवाब दिया—"हमारी लड़कियों में कोई एक भी इतनी चालाक नहीं।"

"और आप ज़रूरी समझते हैं कि यहाँ के मुसलमान जंगी ट्रेनिंग हासिल न करें?" बूढ़े ने पूछा।

"क्या आप हुक्म लेकर आये हैं?" मेज़बान ने पूछा।

"हुक्म बड़ा साफ़ है।" बूढ़े ने कहा—"इन मुसलमानों को आपस में टकराना और उन्हें सलाहुद्दीन अय्यूबी के खिलाफ़ करना है। दीरा के लिए यह काम मुश्किल नहीं था। उसके बग़ैर यह मुहिम मुम्किन नहीं रही। हमें दो लड़कियाँ यहाँ लानी पड़ेंगी।"

"वक़्त कहाँ है।" मेज़बान ने कहा— "आप जानते हैं कि रम्ला की लड़ाई को कितने महीने गुज़र चुके हैं जिसमें सलाहुद्दीन अय्यूबी को शिकस्त हुई थी। आप अगर हकीकत को कुबूल करें तो यह शिकस्त सलाहुद्दीन के अज़्म और जज़्बे का कुछ नहीं बिगाड़ सकी। वह संभल चुका है और उसने फौज तैय्यार कर ली है। काहिरासे जासूस जो ख़बरे भेज रहे हैं वह अच्छी नहीं। सलाहुद्दीन अय्यूबी काहिरा से कूच करने वाला है। अभी यह पता नहीं चल सका कि किस तरफ़ से कूच करेगा कहां हम्ला करेगा। इधर उसके भाई अल आदिल को दमिश्क से कुमक मिल गयी है। उसने शाह बिल्डून को ऐसी शिकस्त दी है इतना अर्सा गुज़र जाने के बाद भी शाह बिल्डू संभल न सका। आप यह भी जानते हैं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी शबख़ून और छापों की जंग लड़ता है। हमारी फौज की रस्द उससे महफूज़ नहीं रहती। अगर हमिस के मुसलमान ने उसे छापामारों के लिए अड्डा मुहैया कर दिया तो यह लोग हमारी रस्द और आगे जाने वाली कुमक के लिए मुसीबत बन जायेंगे.......

"इन हालात में आप का यह तरीकाकार बिल्कुल साबित होगा कि तरबियत याफ़्ता लड़कियों को यहाँ लाकर मुसलमानों में रक़ाबत पैदा की जाए और उनकी किरदाकुशी की जाए। इसलिए हालात और मुकामात मुख़्तलिफ़ होते हैं। मैं आप के उन अफसरों पर हैरान हूँ जिन्होंने एक लड़की यहाँ भेजी थी।"

"फिर क्या किया जाए?"

"सफाया।" मेज़बान ने अपने हाथ तलवार की तरफ दायें बायें जुंबिश देकर कहा— "पूरे कस्बे को आबादी समेत ख़त्म करना पड़ेगा। इस सूरत में हम भी यहाँ नहीं रह सकेंगे। हम अपने बीवी बच्चों को और माल व दौलत को यहाँ से पहले निकाल देंगे। मुझे उम्मीद है कि सलीबी बादशाह हमेंकिसी दूसरी जगह आबाद करने में मदद देंगे और हमारा माली नुक़सान

पूरा कर देंगे। मैं यहूदी हूं। मैं हैकले सुलेमानी की ख़ातिर अपना घर तबाह कराने के लिए तैय्यार हूं।"

"लेकिन इस कस्बे की तबाही का इन्तज़ाम क्या होगा?" बूढ़े ने पूछा– "इसके लिए फ़ौज की ज़रूरत है।"

"फ़ौज मौजूद है।" यहूदी ने कहा– "शाह बिल्डून की फ़ौज पांच छः मील दूर ख़ेमाज़न है। आप को शायद मालूम नहीं कि इस फ़ौज ने स्पाई के रास्ते में आने वाली मुसलमान बस्तीयों को तबाह व बर्बाद कर दिया है। इससे हमिस भी तबाह कराया जा सकता है। मैं आज ही रवाना हो जाऊंगा और बादशाह बिल्डून को बताऊंगा कि हमारा कस्बा उसकी फ़ौज के लिए किस क़दर ख़तरनाक है।"

"मकसद यह नहीं कि कस्बा तबाह कराया जाए।" बूढ़े ने कहा– "बल्कि यह कि यहाँ के किसी मुसलमान को जिन्दा न रहने दिया जाए।"

"और लड़कियों को फ़ौज उठा ले जाए।"

सब मुत्तफ़िक हो गये और फ़ैसला हुआ कि मेज़बान यहूदी उसी रात शाह बिल्डून की ख़ेमागाह को रवाना हो जाए वह बाहर निकले तो उन्हें एक घोड़सवार कस्बे में दाख़िल होता नज़र आया। वह कोई अजनबी था। ख़तीब का घर नज़र आ रहा था। यह सवार ख़तीब के घर के साम्ने घोड़े से उतरा। दरवाज़े पर दस्तक दी। ख़तीब बाहर आया। अजनबी से हाथ मिलाया और उसे अन्दर ले गया।

"यह सवार दमिश्क या काहिरा का कासिद है।" मेज़बान यहूदी ने कहा।

❖

ईशा की नमाज़ के बाद नमाज़ी चले गये। पांच छः आदमी ख़तीब के पास बैठे रहे। इनमें यह अजनबी घोड़सवार भी था। ख़तीब ने किसी से कहा कि मस्जिद का दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर दिया जाए।

"मेरे दोस्तो!" ख़तीब ने कहा– "हमारा यह दोस्त अल्मुलकुल आदिल की तरफ़ से ख़बर लाया है कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी बहुत जल्द काहिरा से कूच करने वाले हैं। आप सब फ़ौजी हैं और शबख़ून के उस्ताद हैं। आप को यह बताने की ज़रूरत नहीं कि आप को क्या करना है। तरबियत और मश्क तेज़ कर दो। अल आदिल ने यह इत्तलाअ भेजी है कि सलीबी बादशाह बिल्डून की फ़ौज जो हमात से भागी थी हमारे करीब डेरा डाले हुए है। हमें उस पर नज़र रखनी है और उसकी नकल व हरकत की इत्तलाअ अल आदिल तक पहुंचानी है। उन्होंने यह हुक्म भी भेजा है कि अगर हम ज़रूरी समझें तो सलीबियों की इस फ़ौज पर शबख़ून मारें या छापामार कार्रवाईयाँ जारी रखें ताकि यह फ़ौज चैन से न बैठ सके...

"इसके साथ अल आदिल ने यह भी कहा कि इस फ़ौज ने मुसलमानों के बहुत से गाँव तबाह कर दिए हैं। चुंकि अल आदिल के पास फ़ौज की कमी थी इसलिए सलीबी फ़ौज का तआक्कुब न किया जा सका। उन्होंने कहा है कि अगर बिल्डून की फ़ौज और पीछे अपने इलाके में चली जाती है तो उसे न छेड़ा जाए क्योंकि ख़तरा है कि हमिस को तबाह करदेगी।

हमें तरबियत और मश्क़ तेज़ करने को कहा गया है। हो सकता है सुल्तान अय्यूबी किसी तरफ हम्ला करे तो बिल्डून उन पर अक़्ब या पहलू से हम्ला करे। इस सूरत में हमें बिल्डून के अक़्ब पर शबख़ून मारने हैं और उसे यहीं उलझाए रखना है।"

ख़तीब ने एक आदमी को यह काम सौंपा कि वह इस फ़ौज को देख आए।

उस वक़्त तबरेज़ और दीरा इस हालत में क़स्बे में दाखिल हुए कि दीरा तबरेज़ की पीठ पर थी। रास्ते में पानी तो मिल गया था लेकिन खाने को कुछ नहीं मिला था। दीरा सलीबियों की शहज़ादी थी। वह पैदल सफ़र की आदी नहीं थी। तबरेज़ के लिए कहीं रुकना नहीं चाहता था। उसने दीरा को पीठ पर उठा लिया और बाकी सफ़र उसी तरह तय किया। उसने लड़की को अपने घर के सामने उतारा और उसे अन्दर ले गया। उसके घर वालों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि तबरेज़ ज़िन्दा है। उसका घोड़ा पहले ही घर पहुँच चुका था। उसने घर वालों को बताया कि उस पर क्या बीती है।

दीरा को मालूम था कि उसकी मंजिल यहूदी ताजिर का घर है। उसने कहा कि वह उसके घर फ़ौरन जाना चाहती है। शायद उसका बाप ज़िन्दा आ गया हो। तबरेज़ उसके साथ गया। उसे यहूदी ताजिर का घर मालूम था। रास्ते में अंधेरा था। दीरा अचानक रुक गयी और तबरेज़ से लिपट गयी। कभी चेहरा उसके सीने पर रगड़ती, कभी उससे अलग होकर उसके हाथ चूमती और आँखों से लगाती।

"हमारी मंज़िल जुदा हैं।" दीरा ने जज़्बात और रिक़्क़त से बोझल आवाज़ में कहा– "मगर हम किसी दो राहे पर फिर मिलेंगे। मैं अपनी रूह से बेगाना थी वह मिल गयी है और मैं नहीं जानती थी मोहब्बत क्या है, वह तुमने दे दी है। दिल में तुम्हारी याद लेकर जा रही हूँ। तुम मुझे भूल जाओगे।"

"नहीं दीरा।" तबरेज़ की जज़्बाती कैफ़ियत दीरा से ज़्यादा मुतज़लज़िल थी। कहने लगा– "मैं तुम्हें भूल नहीं सकूंगा। मैंने तुम्हें रास्ते में कहा था कि अब तक एक बातिल मज़हब की पूजारी रही हो, बाकी उम्र इस्लाम के साये में गुज़ारो। मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूंगा। मेरे दिल में अब कोई लड़की नहीं समा सकेगी। तुम अब इसी क़स्बे में रहोगी। हम मिला करेंगे लेकिन वहाँ जहाँ कोई देख न सके।"

तबरेज़ ने अमानत में ख़्यानत नहीं की थी। दौराने सफ़र यह लड़की उसकी मुरीद हो गयी थी। फिर यूं हुआ कि लड़की तबरेज़ के दिल में उतर गयी। अब वह दिल पर पत्थर रखकर उसे यहूदी के हवाले करने जा रहा था......वह जब उसे यहूदी के घर ले गया तो वहाँ उसे बूढ़ा ईसाई मिला। उसने दीरा को गले से लगा लिया। यहूदी ताजिर घर नहीं था। वह फ़ैसले के तेहत शाह बिल्डून के ख़ेमागाह को रवाना हो गया था। तबरेज़ बूढ़े के इसरार के बावजूद वहाँ रुका नहीं। वहां से वह मस्जिद में चला गया। दरवाज़ा अन्दर से बन्द था। उसने दस्तक दी। दरवाजा खुला तो अन्दर चला गया।

❖

सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने एक साल के अन्दर अपनी फ़ौज तैय्यार कर ली थी।

उसने मज़ीद इन्तज़ार न किया। जिस रात हमिस का एक यहूदी ताजिर शाह बिल्डून से यह कहने जा रहा था कि वह अपनी फ़ौज से हमिस के मुसलमानों को तबाह व बर्बाद करदे उसरात सुल्तान अय्यूबी की फौज काहिरा से निकल गयी थी। उसकी मंज़िल दमिश्क थी। कूच बहुत तेज़ था। सुल्तान अय्यूबी वक़्त ज़ाया नहीं करना चाहता था। उस दौर के वकाअ निगारों के मुताबिक़, सुल्तान अय्यूबी दमिश्क कयाम करके वहाँ के हालात, ग़द्दारियों और साज़िशों का जायज़ा लेकर और उनका सद्दे बाब करके अल आदिल से मिलना चाहता था और वहां से उसे जंगी कार्रवाई का आग़ाज़ करना था मगर रास्ते में ही उसने रास्ता बदल दिया।

इसकी वजह यह थी कि उसे अज़ाउद्दीन का एक एल्ची रास्ते में मिला। वह सुल्तान अय्यूबी के नाम काहिरा पैग़ाम ले जा रहा था। उसे मालूम नहीं था कि सुल्तान अय्यूबी वहाँ से कूच कर आया है। आधे रास्ते में उसने एक फ़ौज को आती देखी। झंडो से पहचाना गया कि यह सुल्तान अय्यूबी की फौज है। वह कलब में चला गया। जहाँ सुल्तान अय्यूबी था। एल्ची ने उसे अज़ाउद्दीन का पैग़ाम दिया। अज़ाउद्दीन नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम के मुशीरों में था जिसे अमीर का दरजा हासिल था। वह मर्दे मोमिन था, इसलिए ज़ंगी का मंजूरे नज़र था। जंगी ने वफ़ात से पहले उसे हलब के सूबे मे कारा हेसार नाम का किला दे कर उसका अमीर बना दिया था। ख़ासा इलाका इस किले के तेहत आता था। उससे मुल्हिक इब्ने लाऊन की रियासत थी जो सलीबियों के साथ सलीबी और मुसलमानों के साथ मुसलमान बन जाता था। उसने सलीबियों की शह पर अज़ाउद्दीन के इलाके में सरहदी झड़पों का सिलसिला शुरू कर दिया था। अज़ाउद्दीन अकेला इसका मुकाबला नहीं कर सकता था। वह हलब और मुसिल वालों से मदद नहीं लेना चाहता था क्योंकि जब से हलब और मुसिल के हुक्मरानों अल्मलकुस्सालेह और सैफुद्दीन वग़ैरह ने सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ मुहाज़ कायम किया था, अज़ाउद्दीन ने उनके साथ तअल्लुकात तोड़ लिए थे।

उसने सुल्तान अय्यूबी को जो पैग़ाम भेजा वह यूं था-- "काबिले एहतराम सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी बिन अय्यूब सुल्तान मिस्र व शाम! आप पर और सल्तनते इस्लामिया पर अल्लाह की रहमत हो। मेरी वफ़ादारी के मुतअल्लिक आपको शक नहीं होगा। मैं ने तल ख़ालिद की तरफ से सलीबियों का रास्ता रोक रखा है। तमाम तर इलाका और पेशकदमी के रास्ते मेरे छापामारों की नज़र में रहते हैं। सलीबियों ने मुझे रास्ते से हटाने के लिए इब्ने लाऊन के साथ गठजोड़ कर लिया है। आप जानते हैं कि मेरी सरहद इस इलाके से मिलती है जो दर असल आरमिनियों का इलाका है। इन आरमिनियों ने मेरी सरहदी चोकियों पर हम्ले शुरू कर दिए हैं। आप आगाह होगें कि मेरे पास फ़ौज की कमी है। सलीबियों और आरमिनियों ने मेरे पास दो बार एल्ची कीमत तहायफ के साथ भेजे थे। वह मुझे दावत दे रहे हैं कि मैं उनका इत्तेहादी बन जाऊं और आपके खिलाफ़ लडूं। इन्कार की सूरत में उन्होंने मुझे हम्ले की धमकी दी है.....

"मेरी जगह कोई और होता अपनी ज़मीन की तहफ़ुज़ के लिए दावत कुबूल कर लेता।

यह जगह इतनी दूर है कि वक़्त पड़े तो मदद को आने वाले बरवक़्त नहीं पहुंच सकते। इसके बावजूद मैंने उनकी दावत की बजाए उनकी धमकी कुबूल की है और मैंने यह इक़्दाम अल्लाह के भरोसे पर क्या है। मैं अपना किला और अपना इलाक़ा और उसके साथ अपनी जान कुर्बान कर दूंगा, सलीबियों के साथ इत्तेहाद नहीं करूंगा। मैं नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम की रूह के आगे जवाबदेह हूं और उनके लाखों शहीदों के आगे जवाबदेह हूं जो क़िब्लाअव्वल के नाम पर कुर्बान हो चुके हैं.....मुझे मालूम नहीं कि आप का आइंदा इक़्दाम क्या होगा। मुझे यह मालूम है कि रम्ला के हादसे के बाद आप तंज़िमे नौ और दिगर तैय्यारियों में मसरूफ़ होंगे। मुझे यह भी मालूम है कि मोहतरम अल्मुलकुल आदिल मेरी मदद करने के क़ाबिल नहीं। मैं आप को अपने अहवाल से ख़बरदार रखना ज़रूरी समझता था। अगर आप हुक्म दें तो मैं अपने इलाके और क़ारा हेसार से दस्तबरदार हो कर अपनी फ़ौज आप के पास ले आऊं। दूसरी सूरत में मुझे हिदायत दें कि मैं क्या करूं। मैं किसी क़ीमत पर सलीबियों और आरमिनियों के साथ कोई समझौता नहीं करूंगा।"

सुल्तान अय्यूबी ने यह पैग़ाम पढ़ा। उसी वक़्त अपने सालारों और मुशीरों को बुलाया। उन्हें पढ़कर सुनाया और यह हुक्म देकर सबको हैरान कर दिया कि कूच का रास्ता बदल दो, हम इब्ने लाऊन के इलाके पर यलग़ार करेंगे। सुल्तान अय्यूबी डिक्टेटरों की तरह हुक्म नहीं दिया करता था और वह जज़्बात से मग़लूब होकर भी कोई जंगी कार्रवाई नहीं किया करता था मगर इस हुक्म के पीछे जंगी फ़हम व फ़रास्त के साथ जज़्बात भी कार फ़रमा थे।

"क़ारा हेसार मेरे मोहतरम उस्ताद नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम की निसानी है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "और अज़ाउद्दीन के अल्फ़ाज़ में मुझे ज़ंगी मरहूम की आवाज़ सुनाई दे रही है। मैं इस शख़्स को तन्हा नहीं रहने दूंगा जो हमारे मक़सद और अज़्म के साथ वफ़ादारी का इज़्हार करता है।"

"सुल्ताने मोहतरम!" एक सालार ने कहा– "हम हक़ाइक़ को सामने रखें तो किसी बेहतर फ़ैसले पर पहुंचेंगे।"

"हक़ाइक़ यह है कि हमें पहले दमिश्क़ जाकर वहाँ के हालात का जायज़ा लेना था।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "अब अगर हम दमिश्क़ चले गये तो इब्ने लाऊन तलख़ालिद पर हमला कर देगा और अज़ाउद्दीन उसके आगे नहीं ठहर सकेगा। आगे हलब है। तुम सब अल्मलकुस्सालेह और उसके मुशीरों को अच्छी तरह जानते हो। बेशक वह इस मुआहिदे का पाबन्द है जो उसने हमारे साथ कर रखा है लेकिन मुआहिदा लोहे की दिवार नहीं होती की टूट न सके। वह फ़ौरन सलीबियों के साथ समझौता करके एक बार फिर हमारे ख़िलाफ़ लड़ने को आजाएगा। मैं सलीबियों को हलब नहीं लेने दूंगा और अज़ाउद्दीन को मैं अकेला नहीं छोड़ूंगा।"

कुछ देर अमली पहलुओं पर बहस मुबाहिसा हुआ और तय हुआ कि तलख़ालिद की सिम्त कूच होगा। सुल्तान अय्यूबी ने अज़ाउद्दीन के एल्ची को ज़ुबानी पैग़ाम दिया जिसमें कहा कि अज़ाउद्दीन इब्ने लऊन से मिले और उसे दोस्ती का धोखा दे लेकिन उसे अपने

इलाके में दख़ल अन्दाज़ न होने दे। उसके साथ दोस्ती की शराइत पर बात चीत करता रहे। और उसे यहाँ तक धोखा दे कि वह अपनी फौज उसके हवाले कर देगा। सुल्तान अय्यूबी ने एल्ची को बता दिया कि उसने अपनी फौज को तलख़ालिद की तरफ तेज़ कूच का हुक्म दे दिया है। एल्ची रवाना हो गया।

❖

सलीबी जासूस सुल्तान अय्यूबी की नक्ल व हरकत देख रहे थे और सलीबियों तक ख़बरे पहुंचा रहे थे। जिन के मुताबिक उन्होंने अपने किलों और अपने इलाकों का दिफाअ मज़बूत कर लिया था। वह जानते थे कि सुल्तान अय्यूबी के इकदामात के मुतअल्लिक कोई पेशीनगोई नहीं की जा सकती। सलीबियों के मुश्तर्का हैडक्वार्टर में जब जासूसों ने यह इत्तलाअ दी कि सुल्तान अय्यूबी की फौज दमिश्क के रास्ते से हट कर किसी दूसरे सिम्त जा रही है तो उनके जरनलों ने कहा कि अय्यूबी अपने आज़माए हुए मैदानें में लड़ना चाहता है।

हमिस का यहूदी ताजिर हमिस को तबाह कराने के लिए शाह बिल्डून के पास गया था वापस आ गया था उसे बिल्डून नहीं मिला था। वह अपने सलीबी दोस्तों से मदद मांगने गया था। उसके जरनलों ने यहूदी से कहा था कि वह शाह बिल्डून के हुक्म के बेग़ैर कोई इकदाम नहीं कर सकते। करेंगे ज़रूर। यहूदी हमिस वापस आया तो उसे बताया कि दीरा ज़िन्दा आ गयी है और उसे तबरेज़ नाम का एक मुसलमान लाया है। तबरेज़ को ईसाइयों और यहूदियों ने नक्द ईनाम पेश किया था जो उसने यह कह कर लेने से इन्कार कर दिया था कि उसने अपना फर्ज़ अदा किया है।

अब यहूदी ताजिर दीरा को बेकार समझता था क्योंकि कस्बे को तबाह कराने का इन्तज़ाम हो चुका था। यह फैसला किया गया कि दीरा को वापस हैडक्वार्टर में भेज दिया जाए लेकिन दीरा चालाक लड़की थी। उसने कहा कि वह ख़तीब के एअसाब पर ग़ालिब आ जाएगी और मुसलमानों को जंगी तरबियत देने वालों के दर्मियान रकाबत और दुश्मन पैदा कर देगी।

उसने यह भी कहा कि यहाँ के मुसलमान के अज़ाइम मालूम करने के लिए भी उसकी ज़रूरत है चुनांचे उसे हमिस ही में रहने दिया गया लेकिन किसी को पता न चला कि वह सिर्फ तबरेज़ के खातिर कुछ दिन वहाँ और रूकना चाहती है।

वह तबरेज़ से मिलती रही। रात को कस्बे से दूर निकल जाते और बहुत देर वहीं बैठे रहते थे। इस सलीबी लड़की के मुकाबले तबरेज़ की कोई हैसियत ही नहीं थी। वह तो उमरा, वुज़रा और बादशाहों के महलात में रहने वाली लड़की थी। दमिश्क में उसने इन्तज़ामिया के दो उमरा को अपने कदमों में बैठा लिया था और उनके हाथों ऐसी साज़िश तैय्यार करा दी थी जिसकी इत्तलाअ पर सुल्तान अय्यूबी दमिश्क जा रहा था मगर तुग़यानी की दहशत और तबरेज़ के किरदार ने उसे ऐसा झटका दिया था कि उसकी ज़ात में रूह और जज़्बात बेदार हो गये थे। वह तबरेज़ की पूजा करने लगी थी और तबरेज़ उसकी मोहब्बत मे गिरफ़्तार हो चुका था।

"तबरेज़ एक बात बताओ।" एक रात दीरा ने उससे पूछा– "ख़तीब और दूसरे चन्द

आदमी जो तुम्हें जंगी तरबियत देते हैं वह कहाँ से आए हैं?"

तबरेज़ जवाब देने लगा तो दीरा बोल उठी– "रहने दो, जाने दो तबरेज़! हमें इससे क्या। कोई कुछ करता फिरे। हम इतनी खुबसूरत रात को जंग की बातों से क्यों मुकद्दर करें।"

इस तरह वह दो हिस्सों में कट गयी थी। तबरेज़ के साथ होती तो वह मासूम और पाक लड़की होती थी। उसे यह भी याद नहीं रहता था कि वह जासूस है। उसने एक ही बार तबरेज़ और दूसरे उस्तादों के मुतअल्लिक़ पूछा लेकिन उसे उसने धोखा समझा और तबरेज़ को जवाब देने से रोक दिया। यही दीरा जब यहूदी ताजिर के घर में बैठी होती तो मुसलमानों की तबाही की बातें करती थी।

❖

डेढ़ महीने गुज़र गये थे। एक शाम दीरा तबरेज़ के घर चली गयी उसकी माँ के साथ बातें करती रही। उसने तबरेज़ को इशारा किया जिसे वह समझता था। वह चली गयी। शाम का अंधेरा गहरा होते ही तबरेज़ उस जगह पहुँच गया जहाँ वह मिला करते थे। दीरा आ गयी थी। तबरेज़ को कस्बे से दूर ले गयी। वह घबराई हुई थी। तबरेज़ के पूछने पर भी उसने न बताया कि उसकी घबराहट की वजह क्या है। उन्हें आवाज़ें सुनाई दीं। कोई दीरा को पुकार रहा था। तबरेज़ ने पूछा यह कौन है? दीरा ने घबराई हुई आवाज़ में कहा कि उसके आदमी उसे तलाश कर रहे हैं। "चलो और दूर निकल चलें।" दीरा ने कहा और उसे दूर ले गयी। उसे अभी तक कोई पुकार रहा था।

"इन आवाज़ों को मत सुनो तबरेज़!" दीरा ने कहा– "मैं जब तुम्हारे पास होती हूँ तो मैं अपने किसी आदमी की आवाज़ नहीं सुनना चाहती।"

आगे चट्टाने थीं। दीरा तबरेज़ को चट्टानों के पीछे ले गयी। तबरेज़ हैरान सा होके उसके साथ चलता रहा,और वह एक जगह रुक गये। वहाँ किसी की आवाज़ नहीं पहुँचती थी. ....तबरेज़ चौंक उठा और बोला– "शोर सा सुनाई देता है। तुम भी सुनने की कोशिश करो। ऐसे लगता है जैसे चीख व पुकार हो रही है और घोड़े दौड़ रहे हैं।"

"तुम्हारे कान बज रहे हैं।" दीरा ने हंस कर कहा– "हवा के तेज़ झोंके चट्टानों से टकरा कर गुज़र रहे हैं। यह उनकी आवाज़ें हैं।"

दीरा ने उसे अपने बाज़ूओं और रेशमी बालों में गिरफ़्तार करके उसकी आँखों, कानों और अक्ल पर कब्ज़ा कर लिया। तबरेज़ मान गया कि यह आवाज़ें हवा की है जो बहुत दूर के शोर की तरह सुनाई देती हैं मगर उसे मालूम न हो सका कि यह अवाज़ें उसकी अपनी बस्ती के लोगों की हैं और वहाँ वह कयामत बपा हो चुकी है जो यहूदी ताजिर बपा करना चाहता था। दीरा को मालूम था। वह नहीं चाहती थी कि यह आवाज़ें तबरेज़ के कानों तक पहुंचे।

यह इन्तज़ाम इस तरह हुआ था कि यहूदी ताजिर एक बार फिर बिल्डून से मिलने गया था। उसे बिल्डून मिल गया था। यहूदी ने उसे बताया कि हमिस के मुसलमान क्या कर रहे हैं और वह किस तरह सलीबी फ़ौज के लिए ख़तरा बन सकते हैं। बिल्डून का यह मन पसन्द

शिकार था। उसने यहूदी को बताया कि वह किस तरह चुपके से हमिस पर हम्ला करायेगा। उसने यहूदी से यह भी कहा कि ईसाई और यहूदी उस रात हम्ले से पहले कस्बे से निकलें। अगर वह दिन के दौरान निकले तो मुसलमानों को शक होगा कि कोई गड़बड़ है। यहूदी ने वापस आकर जब अपने आदमियों को यह स्कीम बताई तो दीरा ने कहा कि वह तबरेज़ और उसके कुम्बे को बचाना चाहती है।

"हमे इसे सलीब से ग़द्दारी कहेंगे।" बूढ़े ईसाई ने कहा।

"सांप के बच्चों को बचाना कहाँ की अक्ल मंदी है?" यहूदी ताजिर ने कहा।

"यहाँ मुसलमानों के दो घर ऐसे हैं जिनके साथ मेरे दिली तअल्लुकात हैं।" वहाँ के रहने वाले एक ईसाई ने कहा–"लेकिन मैं उन्हें बचाने की नहीं सोंच रहा। हमें मुसलमान का ख़ून चाहिए। मुसलमान मेरा ज़ाती दोस्त हो सकता है, मेरे मज़हब का वह दुश्मन होगा।"

"मैं उसे ज़िन्दा रखना चाहती हूँ जिसने मुझे मौत के मुँह से निकाला था।" दीरा ने गुस्से से कहा– "हमने उसे इतना ईनाम पेश किया था जो उसने कभी ख़्वाब में नहीं देखा होगा।" यहूदी ताजिर ने कहा– "उसने कहा कि उसने अपना फ़र्ज़ अदा किया है। हमने उसे ईनाम पेश करने का अपना फ़र्ज अदा दिया है। अब वह हमारा दुश्मन और हम उसके दुश्मन हैं।"

"मैं उसे दुश्मन नहीं समझती।" दीरा ने झुंझला कर कहा– "यह सिर्फ़ एक मर्द है जिसने मेरे जिस्म पर ज़र्रा भर तवज्जा नहीं दी। तुम सब गुनहगार हो। तुममें कौन है जिसकी नीयत मेरे हक़ में साफ़ है। मेरी आँखों में अपने चेहरे देखो।"

"तुम सिर्फ़ तबरेज़ को बचालो।" यहूदी ताजिर ने कहा–"लेकिन उसे कैसे बचाओगी? अगर तुमने उसे बताया कि क्या होने वाला है तो वह सारी आबादी को नही बता देगा? और अगर तुम उसके पूरे कुंम्बे को घर से निकल जाने को कहोगी तो वह वजह नहीं पूछेंगे? तुम क्या बताओगी? तुम एक मुसलमान की नेकी का सिला देते–देते इन तमाम मुसलमानों को चौकन्ना कर दोगी जो हमारे लिए ख़तरा बने हुए हैं।"

"मुझे अनाड़ी न समझो।"दीरा ने कहा– ' मैं सलीब को धोखा नहीं दूंगी।"

हम्ले की शाम दीरा तबरेज़ के घर गयी और उसे बाहर ले गयी। उसके आदमियों को मालूम था कि रात को वह अक्सर कहाँ चली जाती है। उसने उन्हें बता रखा था कि तबरेज़ को मोहब्बत का धोखा देकर वह उससे भेद लेती है। वह उसे बाहर ले गयी तो ईसाई और यहूदी कस्बे से दबे पांव निकलने लगे। उन्होंने दीरा की तलाश में एक आदमी भेजा जो उसे पुकारता रहा, लेकिन दीरा तबरेज़ को दूर ही दूर ले जाती रही। वह उसे इतनी दूर ले जाना चाहती थी। जहाँ से उसे कस्बे का शोर न सुनाई दे। दीरा की तलाश में जो आदमी गया था वह मायूस होकर वापस चला गया।

❖

कस्बे पर नींद का ग़ल्बा तारी था। सलीबी फ़ौज के प्यादे दस्ते दबे पांव करीब गये थे। उनकी तादाद कस्बे की आबादी से कई गुना ज़्यादा थी। प्यादा फ़ौज बिल्कुल करीब आ गयी तो अक्ब से घोड़ सवार भी आ गये। मुसलमान गहरी नींद सोये हुए थे। फ़ौज ने तुग़यानी की

तरह यलग़ार कर दी। फौजियों ने मशालें जला लीं थीं। दो तीन झोंपड़ियों को आग लगा दी गयी ताकि रौशनी हो जाए। सलीबी सिपाही दिवारें फलांग कर घरों में दाखिल हुए ज़्यादातर मुसलमान जागने से पहले मारे गये। जो बरवक़्त जाग उठे और हथियार उठा सके उन्होंने मुक़ाबला किया। बाज़ लड़कियों ने ख़ुदकशी कर ली। सलीबी घोड़ सवारों ने क़स्बे को घेर रखा था। किसी को बाहर को भागता देखते तो उसे बरछी या तलवार का शिकार कर लेते थे।

यह थी वह चीख व पुकार और शोर जो चट्टानों में बैठे हुए तबरेज़ ने सुना था। उसका घर तबाह हो चुका था। बच्चा–बच्चा कट गया थ। शाह बिल्डून ने मुसलमानों की इस बस्ती से भी अपनी शिकस्त का इन्तक़ाम ले लिया था।

"तुम आज मुझे इतनी दूर क्यों ले आइ हो?" तबरेज़ ने पूछा और कहा– "तुम आज बोलनती क्यों नहीं?" घबराई हुई क्यों हो?"

"इस लिए कि तुम मेरा साथ नहीं दोगे।" दीरा बहुत होशियार लड़की थी। कहने लगी– "मैं तुम्हें कहीं और ले जा रही हूँ...उसे खामोश देखकर बोली–"कल वापस आ जायेंगे।"

"कहाँ?"

"क्या तुम्हें मुझ पर भरोसा नहीं?" दीरा ने उसे बाज़ूओं में लेकर उसका चेहरा इतना करीब कर लिया कि उसके बिखरे हुए रेशमी बाल तबरेज़ के गालों को छूने लगे। यह वही बाल थे जिन्हें गुफा में धुला हुआ देखकर तबरेज़ ने अपनी ज़ात में अजीब सा लरज़ा महसूस किया था। अब तो दीरा की मोहब्बत उसके दिल में दूर तक उतर गयी थी।

उस पर ख़ुमार तारी हो गयी– "हम कब तक चोरों की तरह मिलते रहेंगे? मैं अब तुम्हारे बग़ैर नहीं रह सकती। अगर तुम्हारे दिल में मेरी मोहब्बत है तो मुझ से अभी यह न पूछो कि मैं तुम्हें कहाँ ले जा रही हूँ। यह समझ लो कि हम वहां चलेंगे जहाँ हमारे दर्मियान मज़हब की दिवारें हायल नहीं होगी। तुम मर्द हो। मुझे देखो। कमज़ोर सी औरत होकर तुम्हारी मोहब्बत की ख़ातिर कितना बड़ा ख़तरा मोल ले रही हूँ।"

कमज़ोर दर असल तबरेज़ था। दीरा उसकी अकल पर ग़ालिब आ गयी थी। वह इस कोशिश में थी कि तबरेज़ अपने क़स्बे में वापस न जाए। वह जानती थी कि वहाँ उसे अपने घर जले हुए खंडर और घर वालों की जली हुई लाशें मिलेंगी, फिर वह पागल हो जाएगा। हो सकता था दीरा को किसी शक की बिना पर क़त्ल ही कर दे। दीरा के दिमाग़ में कुछ और आ गया था। उसने मोहब्बत की ख़ातिर और तुग़यानी से बचाने और उसे बाइज़्ज़त हमिस लाने के सिले में सलीबियों के हाथों क़त्ल होने से बचा लिया था और अब अपने घर की बर्बादी देखने की अजीयत से बचाना चाहती थी। उसने तबरेज़ को उठा लिया और चल पड़ी। तबरेज़ उसके साथ यूँ जा रहा था जेसे हिप्नोटाइज़ कर लिया गया हो।

सुबह तुलूअ हुई तो हमिस जले हुए खंडरों में तबदील हो चुका था। वहाँ कोई मुसलमान ज़िन्दा नहीं रहा था। बड़ी मस्जिद के मीनार खड़े थे। ख़तीब और उसके साथी मुक़ाबले के बग़ैर शहीद हो गये थे। उस वक़्त दीरा तबरेज़ को साथ लिए सलीबी फौज के ख़ेमागाह तक

पहुँच चुकी थी। तबरेज़ का दिमाग़ बेदार हो गया। उसने दीरा से पूछा कि वह यहाँ क्या लेने आई है। दीरा ने उसके वसवसे अपनी ज़ुबान के कमाल से रफ़ा कर दिए। उसे एक तरफ़ खड़ा करके उसने एक कमानदार से बात की। क़मानदार ने उसे कोई रास्ता समझा दिया। दीरा तबरेज़ को साथ लिए उधर चली गयी।

वह जहाँ पहुँचे वह शाह बिल्डून की ज़ाती ख़ेमागाह थी जिस पर महल का गुमान होता था। मुहाफ़िज़ों ने बहुत कुछ पूछकर दीरा को बिल्डून के ख़ेमे मे भेज दिया। कुछ देर बाद तबरेज़ को अन्दर बुला लिया गया। बिल्डून ने उसे सर से पांव तक देखा और कहा– "यह लड़की तुम्हें अपने साथ रखना चाहती है। इसने ऐसी ख़्वाहिश का इज़हार किया है जिसे हम रद्द नहीं कर सकते। तुम्हें किसी किस्म का शक या डर नहीं होना चाहिए।"

"मैं अपना मज़हब तबदील नहीं करूंगा।" तबरेज़ ने कहा।

"तुम्हें मज़हब तबदील करने को किसने कहा।" दीरा ने कहा।

"फिर क्या होगा?" तबरेज़ ने पूछा–"मैं यहाँ रहकर क्या करूंगा?" मुझे वापस जाना है।"

"तबरेज़!" दीरा ने उसे अपनी तरफ मुतवज्जा करके उसकी आँखों में आँखें डाल दीं और कहा– "मैंने तुम्हें क्या कहा था। मुझे भी वहीं जाना है, जहाँ तुम्हें जाना है।"

तबरेज़ कुछ भी न समझ सका।

❖

अज़ाउद्दीन का एल्ची सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का जवाब लेकर कभी का अज़ाउद्दीन के पास पहुंच चुका था। सुल्तान अय्यूबी की हिदायत के मुताबिक़ अज़ाउद्दीन ने इब्ने लाऊन से एक मुलाक़ात कर ली थी और उसे यक़ीन दिलाया था कि वह उसके साथ दोस्ती कर लेगा और सुल्तान अय्यूबी को धोखा देगा। उसने इब्ने लाऊन को ऐसे सब्ज़ बाग़ दिखाये थे कि वह पूरी तरह उसके झांसे में आ गया था। इसके बाद इब्ने लाऊन उसे मिलने कारा‌हेसार आया था। काराहेसार ज़र ख़ेज़ और सब्ज़ इलाका था जिसे देख कर इब्ने लाऊन के चेहरे पर रौनक आ गयी।

इससे चन्द ही रोज़ बाद सुल्तान अय्यूबी अपनी फ़ौज के साथ काराहेसार के क़रीब ख़ेमाज़न हुआ। उसकी फ़ौज थकी हुई थी लेकिन वह आराम में वक़्त ज़ाया नहीं करना चाहता था। यह ख़तरा भी था कि हम्ले में ताख़ीर हो गयी तो इब्ने लाऊन की फ़ौज को आमद की ख़बर मिल जाएगी। उसे तवक्को थी कि इब्ने लाऊन के साथ बड़ा सख़्त मुकाबला होगा। इस ख़तरे के पेश नज़र उसने हलब की फ़ौज को भी बुला लिया था। उस मुहाहिदे के तहत था जो सुल्तान अय्यूबी ने अल्मलकुस्सालेह को शिकस्त देकर उसके साथ किया था।

आधी रात से कुछ देर बाद सुल्तान अय्यूबी ने अपनी फ़ौज को यलग़ार के लिए कूच का हुक्म दिया। इन्टेलीजेंस रिपोर्टों से मालूम हो गया था कि आरमिनियों की चौकियां कहाँ–कहाँ हैं और उनमें कितनी–कितनी नफ़री है। नफ़री जितनी भी थी वह बेख़बर पड़ी थी। अज़ाउद्दीन की तरफ से उन्हें हम्ले का ख़तरा ही नहीं था और सुल्तान अय्यूबी का वहाँ इतनी ख़ामोशी से

पहुंच जाना उनके वहम व गुमान में भी नहीं आ सकता था। सुल्तान अय्यूबी की यलग़ार सेह तरफ़ी थी। हर हम्लावर कालम के साथ अज़ाउद्दीन के मुहैया किये हुए गाइड थे। सुल्तान उसकालम के साथ जिसने नहर अल असवद (दरियाए स्याह) की तरफ़ से हम्ला किया था।

यह दरिया इब्ने लाऊन के मुल्क की सरहद था। इसपर कश्तियों का पुल बना हुआ था। दरिया के किनारे आरमिनियों का किला मख़ाज़तुल इख़्जान था। इब्ने लाऊन इसी किले मे मुकीम था। उसे सर करने से तमाम तर इलाका फ़तह हो सकता था। इसीलिए सुल्तान अय्यूबी अपनी फ़ौज के इस कालम के साथ रहा। उसकी कयादत सुल्तान अय्यूबी का भतीजा फ़र्रुख़ शाह कर रहा था जो ग़ैर मामूली तौर पर बहादुर और हरब व ज़रब का माहिर था। दूसरे दो कालमों ने चौकियों पर हम्ले करके दुश्मन की फ़ौज को हलाक या क़ैद कर लिया और चौकियों को आग लगा दी। दहशत फैलाने के लिए बाज़ बस्तियों को भी आग लगा दी गयी।

इब्ने लाऊन की आँख उस वक़्त खुली जब सुल्तान अय्यूबी के जांबाज़ कमन्दें फेंककर किले कि दिवारों पर चढ़ गये थे और मिन्जनिकों से वज़नी पत्थर फेंक कर किले का दरवाज़ा तोड़ा जा चुका था। किले में फ़ौज सोई हुई थी। इब्ने लाऊन दौड़ कर किले के एक मीनार पर मया। दूर उसे आग के शोले नज़र आये वह अभी सोंच भी न पाया था कि यह क्या हो रहा है और वह क्या करे कि सुल्तान अय्यूबी का एक जांबाज़ जैश उसपर टूट पड़ा। उसके मुहाफ़िज़ों ने मुकाबला तो ख़ूब किया लेकिन मारे गये और इब्ने लाऊन को क़ैद कर लिया गया।

सुबह तुलूअ हो रही थी जब इब्ने लाऊन को सुल्तान अय्यूबी के सामने खड़ा किया गया। सुल्तान अय्यूबी हुक्म दे चुका था कि किले को मिस्मार कर दिया जाए। उसकी फ़ौज इस काम के लिए काफ़ी नहीं थी। अज़ाउद्दीन भी सुल्तान अय्यूबी के साथ था। सुल्तान अय्यूबी के कहने पर इब्ने लाऊन ने हर तरफ़ कासिद इस हुक्म के साथ दौड़ दिए कि तमाम फ़ौज हथियार डाल कर किले के करीब आ जाए.........फ़ौज के आने तक सुल्तान अय्यूबी ने अज़ाउद्दीन के कहने पर इब्ने लाऊन के साथ सुलह की शराईत तय कर लीं। इनमें एक यह थी कि इब्ने लाऊन अपनी आधी फ़ौज सुल्तान अय्यूबी के हवाले कर दे। दूसरी यह कि इब्ने लाऊन की फ़ौज की हद मुक़र्रर कर दी गयी। तीसरी यह कि इब्ने लाऊन सालाना जज़्या देता रहे। और ऐसी चन्द और शराईत थी जिन्होंने इब्ने लाऊन को बराये नाम हुक्मरान रहने दिया।

जब इब्ने लाऊन की फ़ौज हथियार डाल कर किले के करीब इकठ्ठी हो गयी तो सुल्तान अय्यूबी ने इस फ़ौज को हुक्म दिया कि किले को इस तर मिसमार कर दे कि उसका यहाँ निसान भी न रहे। शिकस्त ख़ुर्दा फ़ौज ने उसी वक़्त किला मिस्मार करना शुरु कर दिया और सुल्तान अय्यूबी अपनी फ़ौज को मसाफ़ा नाम के एक गांव के करीब ले गया। उसने हलब की फ़ौज को वापस भेज दी और अपनी फ़ौज के आराम करने को लम्बी मुहलत दी। इब्ने लाऊन की जो आधी फ़ौज उसने ले ली थी वह अज़ाउद्दीन को दे दी, मगर सुल्तान अय्यूबी को

मालूम था कि उसकी फौज की ख़ेमागाह जिस सिलसिला कोहिस्तान के दामन में है, उसके अन्दर और उसकी बुलन्दियों पर बिल्डून की फौज आ चुकी है और वह उकाब की तरह उस पर झपटने पर तुल रहे है। सुल्तान अय्यूबी ने इस इलाके में देखभाल की ज़रूरत महसूस नहीं की थी क्योंकि उसे किसी फौज का ख़तरा नहीं था।

तकरीबन तमाम मोअर्रिख़ों के तहरीरों से हैरत का इज़हार होता है कि सुल्तान अय्यूबी ने अज़ाउद्दीन के पैग़ाम पर क्यों अपना इतना बड़ा प्लान तबदील करके इब्ने लाऊन जैसे ग़ैरअहम हुक्मरान पर फौज कशी की जिसमें उसने बेशक फ़तह हासिल की लेकिन जो वक़्त और जो फौज ज़ाया हुई उसकी कीमत ज़्यादा थी। अरनोल नाम का मोअर्रिख़ लिखता है कि सुल्तान अय्यूबी इर्द गिर्द के ख़तरों को कम करना चाहता था। उस वक़्त के वकाअ निगार जिनमें असदुल असदी काबिले ज़िक्र है, लिखते हैं कि सुल्तान अय्यूबी अज़ाउद्दीन का पैग़ाम पढ़कर जज़्बात में आ गया था। बहरहाल जंग के माहरीन ने सुल्तान अय्यूबी के इस हम्ले को सराहा नहीं। वह लिखते हैं कि सुल्तान अय्यूबी को मालूम था कि करीब ही कहीं शाह बिल्डून की फौज है जो सुल्तान अय्यूबी पर उस वक़्त हम्ला कर सकती थी जब वह एक ही रात में हासिल की हुई फतह के माबाअद के इन्तज़ामात में मसरूफ़ था। मोअर्रिख़ इस पर भी हैरान हैं कि बिल्डून ने अपनी फौज को उस वक़्त पहाड़ी इलाके में जंगी तरतीब में फैला दिया था जब सुल्तान अय्यूबी की फौज पहाड़ियों के दामन में ख़ेमे गाड़ रही थी। शाह बिल्डून ने हम्ले में ताख़ीर की। किसी भी मोअर्रिख़ को मालूम नहीं था कि यह उसकी शाहाना हिमाकत थी या कोई मजबूरी, अगर वह उसी वक़्त हम्ला करता तो सुल्तान अय्यूबी की हालत वही होती जो रम्ला में हुई थी। शिकस्त और पस्पाई!

❖

सुल्तान अय्यूबी को वहाँ ख़ेमाज़न होने के बाद भी पता न चला कि शाह बिल्डून उसके सर पर बैठा दांत तेज़ कर रहा है। बुलन्दियों से बिल्डून के देख भाल के आदमी सुल्तान अय्यूबी की ख़ेमागाह को देखते रहते और बिल्डून को बताते रहते थे। यह ग़ालिबन पहला मौक़ा था कि सुल्तान अय्यूबी का जासूसी और देखा भाल का निजाम ढीला पड़ गया था।

तबरेज़ भी उस फौज के साथ था। दीरा ने अभी तक उसे बताया नहीं था कि वह उसे अपने साथ क्यों ले आई है। वह शायद ईसाई बनाकर जासूस बनाना चाहती थी। उसमें दोनों बातें थीं। सलीब की वफ़ादारी भी और तबरेज़ की मोहब्बत भी। शाह बिल्डून को तबरेज़ के साथ कोई दिलचस्पी नहीं थी या नहीं उसे दीरा के साथ गहरी दिलचस्पी थी क्योंकि वह बहुत ख़ूबसूरत थी। एक रोज़ दीरा ने बिल्डून से कहा था कि वह उसे उसके हैडक्वार्टर में भेज दे जो अकरा में था। बिल्डून ने उसे रोक लिया था।

यह उस जगह की बातें हैं जो हमिस के करीब थी। एक रोज़ बिल्डून को जासूसों ने इत्तलाअ दी कि सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज तलख़ालिद को जा रही है। बिल्डून के वहम व गुमान में भी नहीं था कि सुल्तान अय्यूबी इब्ने लाऊन पर हम्ला करने जा रहा है। वह इस इलाके से वाकिफ़ थ। उसने फ़ौरन अपनी फ़ौज को मसाफ़ा गांव की पहाड़ियों की तरफ़ कूच

करने का हुक्म दे दिया। उसका प्लान यह था कि वह सुल्तान अय्यूबी को इन पहाड़ियों मे घसीट कर लड़ायेगा। इस प्लान के मुताबिक उसने पहाड़ियों की मौज़ूं बुलन्दियों और ढकी छुपी जगहों में अपनी फौज को फैला दिया। यह बहुत बड़े पैमाने की घात थी।

उसने जब हमिस के करीब ख़ेमागाह के लौह का हुक्म दिया था तो दीरा ने उसे कहा कि वह उसके पास पनाह लेने आई थी। तबरेज़ के मुतअल्लिक उसने बिल्डून से सारी कहानी सुनाकर बताया कि वह उसे क्यों साथ–साथ लिए फिरती है। अब जबकि बिल्डून लड़ने के लिए जा रहा था दीरा और तबरेज़ का उसके साथ रहने का कोई मकसद नहीं था। मगर बिल्डून ने दीरा को न जाने दिया।

"मेरे यहाँ लड़कियों की कोई कमी नहीं।" बिल्डून ने कहा– "लेकिन तुम पहली लड़की हो जिसने मेरे दिल पर कब्ज़ा कर लिया है। तुम मेरे पास होती हो तो मुझे रूहानी सकून महसूस होता है। तुम कुछ अर्सा और मेरे साथ रहो।"

दीरा अपने बादशाहों को अच्छी तरह जानती थी। बिल्डून की नीयत को समझना उसके लिए मुश्किल नहीं था। उसने साफ लफ़्ज़ों में उसे कह दिया– "अगर बात रूहानी सकून की है तो मुझे यह सकून इस मुसलमान से मिलता है जिसका सारा कुम्बा कत्ल कराके मैं उसे अपने साथ–साथ लिए फिरती हूँ। मैं बता नहीं सकती कि मैंने उसे उसके कुम्बे के कत्ल से बेख़बर रखने का जो गुनाह किया है उसका कफ़्फ़ारा मेरा ज़मीर मुझ से किस तरह अदा करायेगा।"

"तुम्हारी भी रूह है?" बिल्डून ने कहा– "तुम्हारा ज़मीर है? रातें मुसलमान उमरा के साथ गुज़ारने वाली गुनाह का कफ़्फ़ारा अदा करने की भी सोच सकती है?"

"आप के सामने मैं सिर्फ जिस्म हूँ दिलकश जिस्म।" दीरा ने कहा– "और जब तबरेज़ के पास होती हूँ तो रूह होती हूँ प्यार की प्यासी रूह।"

बिल्डून बादशाह था। उसने बादशाहों की तरह हुक्म दिया–"तुम मेरे साथ रहोगी।" उसने दरबान को बुलाकर कहा– "उस मुसलमान के पांव में ज़ंजीर डाल दो जो हमारी ख़ेमागाह में रहता है।"

और जब बिल्डून मराफ़ा की पहाड़ियों में पहुंचा तो तबरेज़ ज़ंजीरों में बंधा हुआ कैदी था और दीरा ऐसी कैदी जिसे ज़ंजीर नहीं डाली गयी थी, वह मुहाफ़िज़ों के पहरे में थी। यहाँ आकर बिल्डून अपनी फौज के डिप्लाई में मसरूफ हो गया। फारिग़ हुआ तो उसने दीरा को तड़पना शुरू कर दिया। इसका तरीका यह था कि तबरेज़ को अपने सामने बुला लेता। दीरा को सामने खड़ा कर लेता और हुक्म देता कि तबरेज़ को कोड़े से मारे जाएं। कोड़े तबरेज़ की पीठ पर पड़ते तो चीख़ें दीरा की निकल जाती थीं। बिल्डून दीरा से कहता– "तुम अपने आप को मुझसे बचा नहीं सकती, मैं तुम्हें उस ज़ुबान दराजी की सज़ा दे रहा हूँ जो तुमने मेरे साथ की थी।"

तबरेज़ जैसे गूंगा और बहरा हो गया था। उसे कुछ समझ नहीं आता था कि यह क्या हो रहा है। उसे यकीन नहीं आता था कि उसे यह सज़ा दीरा दिला रही है। दीरा की चीख़ व

पुकार और आहोज़ारी से वह समझ गया कि यह भी मजलूम है। तबरेज़ बर्दाश्त करता रहा मगर एक रोज़ दीरा की बर्दाश्त टूट गयी। वह बिल्डून के पास चली गयी। उसके पाँव पकड़कर माफी मांगी और कहा कि जब तक कहेंगे जिस तरह कहेंगे आप के साथ रहूंगी, तबरेज़ को छोड़ दें। बिल्डून के हुक्म से तबरेज़ की जंज़ीरें खोल दी गयीं और उसकी मरहम पट्टी का इन्तज़ाम कर दिया गया। दीरा शाह बिल्डून की तन्हाई की रौनक बन गयी।

चन्द दिनो बाद बिल्डून ने रात शराब और दीरा के हुस्न से बदमस्त होकर उसे कहा— "अगर मैं सलाहुद्दीन अय्यूबी को तबरेज़ की तरह जंज़ीरों में बांध कर तुम्हारे सामने खड़ा कर दूँ तो मान जाओगी कि मैं इतना बूढ़ा नहीं जितना तुम समझती हो?"

"मैं सलाहुद्दीन से कहूंगी कि मैं मल्काए बिल्डून हूँ।" दीरा ने कहा— "अपनी तलवार मेरे कदमों में रख दो।"

"दो रोज़ बाद मैं तुम्हें यह करके दिखा दूंगा जो मैंने कहा है।" बिल्डून ने कहा।

"मुम्किन नज़र नहीं आता।" दीरा ने कहा।

"तुमने देखा नहीं कि सलाहुद्दीन अय्यूबी ने मेरे कदमों में पड़ाव डाल रखा है?" बिल्डून ने कहा— "परसों सुबह की तारीकी में हम उस पर हम्ला करेंगे। पेशतर इसके कि उसे मालूम हो कि यह क्या हुआ है वह मेरा कैदी होगा। उसे मेरी मौजूदगी का इल्म नहीं।"

❖

तबरेज़ आज़ाद था। उसके मुतअल्लिक बिल्डून ने कोई फैसला नहीं किया था वह चला जाए, रहे या क्या करे। वह शाही मेहमान बना हुआ था। सुबह तुलूअ हुई तो दीरा तबरेज़ के ख़ेमें में गयी। तबरेज़ बेताबी से उसे मिला और उस पर बरसा।

"ज़्यादा बातों का वक़्त नहीं।" दीरा ने उसे कहा— "मैं आज तुम्हारे एहसान का सिला और तुम्हारी मोहब्बत का जवाब देना चाहती हूँ। मैं जो कहती हूं वह करना। मुझ से कुछ मत पूछना। मैंने बहुत गुनाह किये हैं। तुम्हारा हमिस तबाह हो चुका है। वहाँ न जाना। वहाँ खंडर होगा और तुम्हें वहाँ अपने घर वालों की हड्डियाँ मिलेंगी।" उसने तबरेज़ को उस तबाही और तबरेज़ को बचाने की तफसील सुनाकर कहा—"तुम्हें बिल्डून की फौज से इन्तकाम लेना है। आज रात इस तरह पहाड़ी इलाके से निकल जाओ कि तुम्हें कोई देख न सके। सलाहुद्दीन के पास जाओ और उसे बताओ कि सलीबी फौज तुम्हारे सर पर बैठी है और परसों तुम पर हम्ला करेगी।" दीरा ने उसे बिल्डून के हम्ले का सारा प्लान बता दिया और कहा—"अब मेरी तरफ न देखो वरना यहाँ से हिल नहीं सकोगे। मैंने तुम्हें कहा था कि हमारी मंज़िलें जुदा—जुदा हैं। आज हम दोनों ने अपनी—अपनी मंज़िल पा ली है।"

अगर दीरा उसे हमिस की तबाही और कत्ले आम की कहानी न सुनाती तो तबरेज़ वहाँ से इतनी जल्दी न चलता वह आँखों में आँसू लेकर दीरा से जुदा हुआ...शाम तारीक होते ही वह चुपके से निकला और बचता बचाता निकल आया। सुल्तान अय्यूबी की फौज की ख़ेमागाह में आया और कहा कि वह सुल्तान के पास जाना चाहता है। उसे वहाँ पहुंचा दिया गया। सुल्तान अय्यूबी ने उसकी सारी दास्तांन तहम्मुल से सुनी और उससे बिल्डून की फौज और

उसके प्लान के मुतअल्लिक पूरी इत्तलाअ ली। उसने उसी वक़्त अपने सालारों को बुलाया और ज़रूरी एहकाम दिए।

शाह बिल्डून ने तीसरी रात के आख़िरी पहर सुल्तान अय्यूबी की ख़ेमागाह पर हम्ला किया मगर वह सिर्फ़ ख़ेमे थे, फ़ौज नहीं थी। अचानक फिज़ा में फ़लीते वाले तीरों के शरारे उड़े और ख़ेमों पर गिरे। ख़ेमें जिनके अन्दर ख़ुश्क घास और उसपर आतिशगीर सयाल छिड़का हुआ था। मुहिब शोले बन गये। बिल्डून ने यह हालत देखी तो उसने अपने मज़ीद दस्तों को हम्ले के लिए भेजा। उन पर दायें और बायें से तीरों की बौछारें बरस पड़ीं। सुबह हो गयी बिल्डून की इस फ़ौज पर जो वादियों में छुपी हुई थी हम्ला हो गया। तब बिल्डून को एहसास हुआ कि उसने सुल्तान अय्यूबी को बेख़बरी में नहीं लिया बल्कि ख़ुद सुल्तान अय्यूबी के घात मे आ गया है।

बिल्डून एक बुलन्दी पर जाकर खड़ा हुआ और अपनी फ़ौज का हश्र देखने लगा। अक़ब से उस पर तीर आये मगर वह उसके दो मुहाफ़िज़ों को लगे। वह भाग कर नीचे उतरा तो आगे से सुल्तान अय्यूबी के सिपाही आ गये। बिल्डून एक तंग से रास्ते से निकल भागा।

अक्टुबर 1179 ई० (575 हि०) के इस मार्के में बिल्डून क़ैदी होते–होते बचा। सुल्तान अय्यूबी ने रम्ला की शिकस्त का इन्तक़ाम ले लिया जिससे उसकी फ़ौज का हौसला बुलन्द और ख़ुद एतमादी बहाल हो गयी। और दीरा और तबरेज़ तारीख़ की तारीकियों में रूपोश हो गये।

❖❖

जब बेटा मर रहा था

रज़ीअ ख़ातून को ख़ादिमा ने इत्तलाअ दी कि उसे उसकी बेटी शम्सुन निसा मिलने आई है। रज़ीअ ख़ातून की आँखें ठहर गयीं। फिर आँखों से आँसू जारी हो गये। माँ बेटी उस वक़्त जुदा हुई थीं जब बेटी की उम्र नौ साल थी। अब बेटी पन्द्रह साल की हो चुकी थी। माँ को दौड़कर बाहर निकल जाना और अपनी बिछड़ी हुई बेटी को सीने से लगा लेना चाहिए था मगर माँ ने ग़ुस्से से पूछा– "वह क्यों आई है?"

"आप से मिलने आई है ख़ातून!" ख़ादिमा ने कहा–"शायद आप के पास वापस आ गयी है।"

माँ पर ख़ामोशी तारी हो गयी। ख़ादिमा मुन्तज़िर खड़ी थी। माँ ने कहा– "उसे कहो वापस चली जाए। अपने ग़द्दार भाई के पास जाए। मेरे सामने आने की जुर्रत न करे।"

"यह तो उस वक़्त बच्ची थी जब आप का बेटा उसे अपने साथ ले गया था।" ख़ादिमा ने कहा– "मासूम बच्ची को क्या मालूम था कि भाई उसे कहाँ ले जा रहा है।"

"मैं जानती हूँ इसे भाई ने भेजा है।" रज़ीअ ख़ातून ने कहा–"और मैं यह भी जानती हूँ कि क्यों भेजा है। मेरा बेटा ग़द्दार और बेग़ैरत है......मैं बेटी से नहीं मिलूंगी।"

रज़ीअ ख़ातून नुरूद्दीन ज़ंगी की मरहूम बेवा थी। आप इस सिलसिले की पिछली इक़्सात में तफ़सील से पढ़ चुके हैं कि इस्लाम की अज़मत का पासबान नुरूद्दीन ज़ंगी फ़ौत हो गया तो उसके उमरा वुज़रा और बाज़ फ़ौजी हुक्काम मनमानी करने के लिए उसके बेटे अल्मलकुस्सालेह को सुल्तान बना दिया था। अल्सालेह की उम्र सिर्फ़ ग्यारह साल थी। शम्सुन निसा उसकी छोटी बहन थी। उम्र आठ नौ साल थी। ज़ंगी मरहूम की सल्तनत के तेहत बाज़ उमरा और क़िलादार ने ख़ुद मुख़्तारी का एलान कर दिया और बग़दाद की ख़िलाफ़त तक से आज़ाद हो गये। इन सब ने सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के ख़िलाफ़ मुहाज़ क़ायम कर लिया। उस वक़्त सुल्तान अय्यूबी मिस्र में था। ज़ंगी मरहूम और सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ इन उमरा वग़ैरह की यह शिकायत थी कि उन दोनों ने ऐश व ईशरत मम्नूअ क़रार दे रखी थी। उन्होंने अपने जीने का मक़सद सिर्फ़ यह बना रखा था कि सलीबियों के अज़ाइम को तहस नहस करेंगे, फ़िलिस्तीन को आज़ाद करायेंगे और सल्तनते इस्लामिया को वुसअत देंगे।

बाग़ी उमरा पर सलीबियों के असरात भी थे। इसीलिए वह ऐश व ईशरत के दिलदादह थे। सलीबियों की भेजी हुई लड़कियों और ज़रो जवाहरात ने उनका ईमान ख़रीद लिया था। नुरूद्दीन ज़ंगी तो फ़ौत हो ही गया था, अब यह लोग सुल्तान अय्यूबी को शिकस्त देकर

उसकी हुक्मरानी को ख़त्म करने पर तुले हुए थे। ज़ंगी मरहूम की आधी फौज बाग़ी कर ली गयी थी। सुल्तान अय्यूबी को इत्तलाअ मिली तो वह सिर्फ सात सौ सवारों के साथ दमिश्क में दाखिल हुआ। शहरियों ने उसका इस्तक्बाल किया। शहर के क़ाज़ी ने उसे शहर की चाबी दे दी मगर फ़ौज का जो हिस्सा बाग़ी था वह लड़ा। यह खाना जंगी थी। नुरूद्दीन ज़ंगो की बेवा सुल्तान अय्यूबी की हामी थी। वह अपने ख़ाविन्द के मक़ासिद की तकमील चाहती थी।

एक ही रात में बाग़ी फ़ौज को शिकस्त हुई। रात ही रात अल्मलकुस्सालेह, उसके हाशिया बरदार उमरा और दो तीन सालार और बाग़ी फ़ौज दमिश्क से भागकर हलब चले गये। अल्मलकुस्सालेह अपनी बहन शम्सुन निसा को भी साथ ले गया। जिन उमरा और किलादारां ने खुद मुख़्तारी का एलान किया उनमे हरान का क़िलादार गुमश्तगीन और मुसिल का अमीर सैफुद्दीन ग़ाज़ी ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं। अल्मलकुस्सालेह ने हलब को अपना दारूल हुकूमत बना लिया, फ़िर यह शहर उसकी फौज, गुमश्तगीन और सैफुद्दीन की अफ्वाज का मुश्तर्का हेडक्वार्टर बन गया। इस सबके पास सलीबी मुशीर आ गये। उनके साथ शराब और लड़कियाँ भी आयीं जो सिर्फ़ ख़ुबसूरत ही नहीं थीं बल्कि जासूसी और ज़ेहनी तख़रीबकारी की माहिर थीं। सलीबियों ने उन्हें बराये नाम जंगी मदद भी दी और अपनी प्रोपेगण्डा मिशीनरी को इस तरह इस्तेमाल किया कि उनके दिलों में सुल्तान अय्यूबी की मुख़ालिफ़त पुख़्ता हो गयी।

नुरूद्दीन ज़ंगी की बेवा रज़ीअ ख़ातून दमिश्क में रही जहाँ उसने लड़कियों को फौजी ट्रेनिंग देने का इन्तज़ाम कर लिया और उसने जहाँ ज़रूरत पड़ी इन लड़कियों को इस्तेमाल किया। वह जवानी की उम्र में थी। उसका ख़ाविन्द मर चुका था इसलिए दो बच्चे ही थे। दोनों उससे छिन गये। वह मासूम बच्चे थे। माँ ने सीने पर सिल रख ली और अपने आप को यक़ीन दिला लिया कि बच्चे भी मर गये हैं मगर कभी–कभी ममता उभर आती थी और उसके आँसू निकल आते थे। सुल्तान अय्यूबी ने अपने जासूस हलब, हरान और मुसिल में भेज दिए थे। वह बड़ी ख़तरनाक इत्तलाअें भेज रहे थे। वहां सलीबियों की ज़ेरे निगरानी ज़ोर शोर से सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ़ जंगी तैय्यारियाँ हो रही थीं। सुल्तान अय्यूबी ने मिस्र से फ़ौज बुला ली। दमिश्क की फौज का बड़ा हिस्सा उसके साथ था। उसने पहले तो तमाम बाग़ी उमरा को पैग़ाम भेजे कि वह अज़मते इस्लाम की ख़ातिर सलीबियों के हाथों न खेलें और उसका साथ दें ताकि सलीबियों को आलमे इस्लाम से बेदख़ल करके यूरोप पर चढ़ाई की जाए मगर ईमानफरोशों ने सुल्तान अय्यूबी के एल्चीयों का मज़ाक़ उड़ाया और जवाब दिए बेग़ैर वापस भेज दिया। गुमश्तगीन ने जो क़िलादार से ख़ुद मुख़्तार हाकिम बन गया था, सुल्तान अय्यूबी के दो एल्चीयों को क़ैद में डाल दिया।

सुल्तान अय्यूबी ने पेशक़दमी की। नुरूद्दीन ज़ंगी की बेवा दमिश्क से दूर तक उसे रूख़सत करने घोड़े पर सवार उसके साथ गयी और बवक़्ते रूख़सत कहा–"अगर मेरा बेटा तुम्हारे तीर और तलवार के ज़द में आये तो भूल जाना कि वह मेरा बेटा है। वह ग़द्दार है। उसकी लाश मिले तो दफ़्न न करना। गिद्ध और गीदड़ों के आगे फेंक देना।" माँ की आँखें

ख़ुश्क थीं लेकिन सुल्तान अय्यूबी के आँखों में आंसू बहने लगे। रज़ीअ ख़ातुन उससे छोटी थी। उसने सुल्तान अय्यूबी का हाथ अपने हाथ में लेकर चूमा और कहा-"अल्लाह तुम्हें फतह अता फरमाये।" वह बहुत देर तक फौज को जाते देखती रही थी।

यहाँ से मुसलमानों की ख़ाना जंगी तवील और ख़ून में डूबा हुआ दौर शुरू हो गया। आप इन तमाम लड़ाइयों की तफ़सीलात पढ़ चुके हैं जो सुल्तान अय्यूबी को मुसलमान उमरा के खिलाफ़ लड़नी पड़ी। सलीबियों ने यह प्लान बनाया था कि मुसलमानों के खिलाफ़ लड़ने की बजाए उन्हें आपस में लड़ाया जाए और उनके इत्तेहाद के साथ-साथ उनकी जंगी ताकत भी ख़त्म किया जाए। इस दौरान उन्होंने हसन बिन सबाह के फ़िदाइयों से सुल्तान अय्यूबी पर क़ातिलाना हम्ले भी कराये। अल्लाह ने हर बार इस्लाम की अज़मत के इस पासबां को बचा लिया। मुसलमान तीन चार साल आपस में लड़ लड़कर मरते रहे। सुल्तान अय्यूबी को ख़ुदाए ज़ुलजलाल ने हर मैदान में फतह अता फ़रमाई। एक लड़ाई में ज़ंगी की बेवा की भेजी हुई सैकड़ों लड़कियों ने भी मार्का लड़ा और मार्के का पांसा पलट दिया था मगर सुल्तान अय्यूबी ने सख़्ती से हुक्म दे दिया कि आइंदा कोई औरत मैदाने जंग में न आये।

आख़िरी मार्के में सुल्तान अय्यूबी हलब तक जा पहुंचा और हलब का फ़िदाई किला एजाज़ ले लिया। अल्मलकुस्सालेह ने अपनी बहन शम्सुन निसा को अपने एल्चीयों के साथ सुल्तान अय्यूबी के पास सुलह के मुआहिदे के लिए भेजा और बहन से यह भी कहलवाया कि एजाज़ का किला उन्हें वापस दे दिया जाए। सुल्तान अय्यूबी ने बच्ची को गले लगा लिया। अल्मलकुस्सालेह की पेशकश मंजूर कर ली। एज़ाज़ का किला बच्ची को दे दिया। शन्द और शराईत तय करके अल्मलकुस्सालेह को हलब का नीम ख़ुद मुख़्तार हुक्मरान रहने दिया। इन शराईत में यह भी था कि सुल्तान अय्यूबी को जब फौज की ज़रूरत पड़ेगी अल्मलकुस्सालेह उसे फ़ौज देगा। यह सुलह मुआहिदा था। गुमश्तगीन को अल्मलकुस्सालेह ने अपने खिलाफ़ साज़िश के जुर्म में मरवा दिया था। बाकी उमरा ने सुल्तान अय्यूबी की इताअत कुबूल कर ली।

पिछली किस्त में आप ने पढ़ा है कि सुल्तान अय्यूबी ने कारहेसार के हुक्मरान इब्ने लाऊन को शिकस्त दी। उस जंग में मुआहिदे के मुताबिक़ हलब से भी फ़ौज भेजी गयी थी। इसके साथ ही सुल्तान अय्यूबी ने एक सलीबी बादशाह बिल्डून को जो सुल्तान अय्यूबी पर हम्ला करने आया था, बहुत ही बुरी शिकस्त दी। बिल्डून कैद होते-होते बचा और उसकी फ़ौज का अन्जाम बहुत ही बुरा हुआ। अब सुल्तान अय्यूबी उन्हीं इलाक़ों में कहीं ख़ेमाज़न था और सलीबी अपने जासूसों के ज़रिए यह मालूम करने की कोशिश कर रहे थे कि उसकी अगली पेशक़दमी किस तरफ़ होगी।

❖

नवम्बर 1181 ई० (रजब 577 ई०) का वाक़िआ है कि अल्मलकुस्सालेह की छोटी बहन शम्सुन निसा हलब से दमिश्क़ अपनी माँ को मिलने आई। वह माँ से जुदा हुई तो उसकी उम्र आठ नौ साल थी। अब वह पन्द्रह सोलह साल की जवान लड़की थी। अल्मलकुस्सालेह

सतरह अठ्ठारह साल का जवान हो गया था। शम्सुन निसा के साथ मुहाफ़िज़ भी थे। ख़ादिमा ने नुरूद्दीन ज़ंगी के बेवा को बताया कि उसकी बेटी आई है। उसने बेटी से मिलने से इन्कार कर दिया। ख़ादिमा भी औरत थी। उसने रज़ीअ ख़ातून को क़ायल करने के लिए ममता का वास्ता दिया और कहा–"वह इतनी दूर से इतने अर्से बाद आई है। उसे अन्दर बुला कर कह दें कि वह चली जाए।"

"ममता मर चुकी है।" रज़ीअ खातून ने कहा।

इतने में कमरे में एक नौजवान लड़की दाखिल हुई। उसके चेहरे, बालों और कपड़ों पर गर्द की तहें चढ़ी हुई थीं। साफ पता चलता था कि वह लम्बे सफर से आई है। रज़ीअ ख़ातून ने हैरान होकर उसे देखा और पूछा– "तुम कौन हो?"

लड़की खामोश खड़ी रही। ख़ादिमा एक तरफ़ हट गयी। रज़ीअ ख़ातून आहिस्ता–आहिस्ता आगे बढ़ी।

उसके बाज़ू अपने आप फैलते जा रहे थे। उसके मुंह से सरगोशी निकली– "तुम मेरी बच्ची हो।"

"शम्सुन निसा। मेरी शम्सी।" वह आहिस्ता–आहिस्ता आगे बढ़ती जा रही थी और कह रही थी– "तुम इतनी बड़ी हो गयी हो।" शम्सुन निसा दरवाज़े के पास खामोश खड़ी रही।

रज़ीअ खातुन जब अपनी बेटी से दो तीन क़दम दूर रह गयी तो रूक गयी। उसके फैले हुए बाज़ू उसके पहलूओं में गिर पड़े। उसके होठों से मुस्कुराहट ग़ायब हो गयी। दो तीन क़दम आगे जाने की बजाए दो तीन क़दम पीछे हटे आयी। उसके दांत जो मुस्कुरा रहे थे गुस्से से पिसने लगे। ममता जो अपने आप बेदार हो गयी थी अपने आप बुझ गयी।

"तुम यहाँ क्यो आई हो?" माँ ने दबी हुई मगर कहर भरी आवाज़ में पूछा।

"मा!" शम्सुन निसा ने रुंधी हुई आवज़ में कहा और बाज़ू फैलाकर आगे बढ़ी– "मैं आप से मिलने आई हूँ। मैंने बारह रोज़ की मुसाफ़त तीन दिनों में तय की है।"

"तुम यहाँ क्यों आई हो?" माँ ने बुलन्द आवाज़ से पूछा और कहा– "दूर खड़ी रहो। मैं सलीबियों के साये पली हुई लड़की को अपने करीब नही आने दूंगी।"

"माँ! मेरी बात सुन लो।" बेटी ने मिन्नत की–"मेरे उपर जो गर्द पड़ी है उसे देखो।"

"इस गर्द से मुझे मुजाहिदीन इस्लाम के ख़ून की बू आ रही है।" माँ ने कहा– "यह उन मुजाहिदीन का ख़ून है जो मेरे बेटे की फ़ौज के हाथों शहीद हुए। यह ख़ाना जंगी का ख़ून है।"

"मां!" शम्सुन निसा आगे आई और मां के क़दमों में गिर पड़ी। रो रोकर कहने लगी– "भाई अल्मलकुस्सालेह मर रहा है। शायद मर चुका हो। आप को बुला रहा है। वह सख़्त तकलीफ़ में है। उसने मुझे भेजा है। उसने कहा कि माँ को ले आओ, मैं उससे दूध की धारें और गुनाह बख़्शवाऊंगा।"

"मैं उसे दूध की धारें बख़्श सकती हूँ।" माँ ने कहा– "उसे वह ख़ून कौन बख़्शेगा जो उसने मुसलमान की औलाद होकर मुसलमानों का बहाया है। माँ अपने बेटे की ग़द्दारी का

गुनाह नहीं बख़्श सकती।"

"माँ! वह आप का इकलौता बेटा है।" शम्सुन निसा ने कहा– "वह आप के अज़ीम शौहर की निसानी है।"

"उसने बाप की अज़मत को सलीबियों के कदमों तले फेंक दिया है।" माँ ने कहा।

"वह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ सुलह का मुआहिदा कर चुका है।" शम्सुन निसा ने कहा–"उनकी अब आपस में कभी लड़ाई नहीं होगी।"

"क्या तुम मुझे हल्फ़िया बता सकती हो कि उसके हाँ कोई सलीबी मौजूद नहीं?" माँ ने गरज कर बेटी से पूछा– "क्या उसके हरम में कोई सलीबी और यहूदी लड़की नहीं? वह अब अठ्ठारह साल का जवान होगा उसके नीचे अब घोड़ा भी महसूस करता हो कि पीठ पर कोई मर्द सवार है। मुझे यकीन दिलादो कि मेरे बेटे के दरबार से सलीब के मकरूह साये उठ गये हैं तो तुम ने बारह रोज़ की जो मुसाफ़त तीन दिनों में तय की है वह मैं डेढ़ दिन में तय करके अपने बीमार बेटे के पास पहुंचंगी।"

"वह अब किसी लड़की को देखने के भी काबिल नहीं रहा माँ!" बेटी ने कहा– "उसकी ज़िन्दगी के लिए दुआ करो।"

"मैं दुआ नहीं करूंगी।" माँ ने कहा– "और मैं बद दुआ भी नहीं करूंगी।" उसकी आवाज़ को जज़्बात ने दबा लिया। वह रिक्त में दबी हुई आवाज़ से बोली– "माँ बद दुआ नहीं दिया करती लेकिन माँ की आहों को ख़ुदाए ज़ुलजलाल नज़र अन्दाज़ भी नहीं किया करते। मैं रोज़े महशर उन हज़ारो शहीदों की मांओं, बीवियों और बेटियों के आगे शर्मसार भी नहीं होना चाहती जो मेरे बेटे की फौज के हाथों शहीद हो चुके हैं। मैं उन शहीदों की मुकद्दस रूहों को अपनी ममता के ख़ून का ख़िराज दूंगी।"

"वह अपने गुनाहों की बख़्शिश मांग रहा है माँ!" बेटी ने रोते और चिल्लाते हुए कहा।

"यह भी मुझे फरेब नज़र आता है।" मां ने कहा– "मुझे मालूम है कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने हलब को तहे तेग़ कर लिया है उसने तुम्हें सलाहुद्दीन अय्यूबी के पास एजाज़ के किले की भीख मांगने को भेजा था।

उस अज़ीम सुल्तान ने तुम्हें अपनी बच्ची समझकर किला तुम्हे बख़्श दिया था। अल्सालेह ख़ुद सल्तान के सामने क्यों नहीं आया था? उसने शिकास्त खा ली थी तो उसे अपने गुनाहों से शर्मसार होना चाहिए था। उसे ख़ुद आकर अपनी तलवार अय्यूबी के कदमों में रख देनी चाहिए थी। अय्यूबी उसका दुश्मन नहीं था। उसे वह मामू जान कहा करता था, मगर अपना ईमान नीलाम कर देने वालों में अपने गुनाहों का सामना करने की जुर्रत नहीं होती। वह बुज़्दिल, और फरेबकार हो जाते हैं, अय्यार और मक्कार हो जाते हैं।"

"पत्थर दिल न बनो माँ!" शम्सुन निसा ने कहा।

"हर वह शहीद जो खानाजंगी में शहीद हुआ है उसकी माँ ने दिल पर पत्थर रखा हुआ है।" माँ ने कहा –"वह किसी को बताते हुए शर्मसार होती हैं कि उन्होंने जो बेटे इस्लाम के दुश्मनो के खिलाफ लड़ने के लिए भेजे थे वह आपस में लड़ कर मारे गये। उसका ज़िम्मेदार

कौन है?.........मेरा बेटा!"

"वह उस वक़्त बहुत छोटा था माँ!"

"तो मेरे पास रहता।" मां ने कहा– "उसका शऊर जब बेदार हो गया था तो मेरे पास आ जाता। हलब सुल्तान अय्यूबी के हवाले कर देता......तुम जल्दी चली जाओ। अगर इस्लाम की माऐं जज़्बात में उलझ गयीं तो अल्लाह की राह में कोई बेटा शहीद नहीं होगा। मैं ममता को मार चुकी हूँ। ममता शहीद हो चुकी है।"

"मायें अपने बेटियों को यूं रुख़सत किया करती हैं माँ?"

"तो मेरे पास रहो।" माँ ने कहा– "मगर इस शर्त पर कि मेरे सामने भाई का कभी नाम नही लोगी।"

"माँ! यह मुम्किन नहीं।" बेटी ने कहा–"जिस भाई ने मुझे पाला पोसा है उसका नाम मैं क्यों नहीं लूंगी।"

'तो उसी के पास चली जाओ।" माँ ने कहा–"तुम सलीबियों के साये में पल कर जवान हुई हो। यहाँ की बेटियों को देखो। इस्लाम के नाम पर जान कुर्बान करने को तैय्यार हैं। मैं जब उन्हें जंगी तरबियत देती और उन्हें डांटती हूँ तो डरती हूं कि उनमें से कोई मुझे यह न कह बैठे कि ज़रा अपनी बेटी की भी खबर लो....

क्या तुम इस ग़लीज़ हक़ीक़त को झुठला सकती हो कि मेरा बेटा सलीबियों के साथ बैठ कर शराब पीता है और उसके हरम में सलीबी और यहूदी लड़कियां है?"

शम्सुन निसा का सर झुक गया। वह इन्कार न कर सकी।

"अपनी माँ के घर का खाना कुबूल कर लो और जाओ।" माँ ने कहा–"अगर मेरा बेटा ज़िन्दा हुआ तो उसे कहना कि मां ने तुम्हें दूध की धारें बख़्श दी हें मगर शहीदों का ख़ून नहीं बख़्शा। उसे कहना कि तुम्हारे सीने में सलीबियों का तीर उतर गया होता और तुम सल्तनते इस्लामिया के झंडे के साये में गिर कर जान देते तो तुम्हारी माँ उड़ कर पहुंचती और तुम्हारी लाश को सीने से लगा कर दमिश्क़ लाती और फ़ख़्र से कहती कि यह है मेरे शहीद बेटे का मज़ार.......अब मैं क्या कहूं? माँ का फख़्र बेटे ने छीन लिया है।"

शम्सुन निसा कुछ देर खामोश खड़ी रही। उसका सर झुका हुआ था। उसने सर उठाया तो उसके रुख़सारों पर गर्द की जो तह दबी हुई थी, उसमें से आंसूओं ने नदी की तरह रास्ता बना लिया था। उसने दो जानू होकर माँ के कुर्ते का दामन पकड़ा, चूमा, आँखों से लगाया और उठ कर कहा– "वह मेरा भाई है। बचपन का साथी है। शायद ज़िन्दा न रहे। मैं उसके पास ज़रूर जाऊंगी। तबीबों ने कह दिया है कि वह ज़िन्दा नहीं रह सकेगा। मैं उसके कफ़न दफ़्न के बाद आप के क़दमों में आ बैठूंगी।"

"किस लिए?" माँ ने तंज़िया पूछा।

"उस बच्चे को जन्म देने के लिए जो अल्लाह की राह में शहीद होगा।" बेटी ने कहा– "आपके बेटे के एवज में आप को एक बच्चा दूंगी जिसकी क़ब्र पर प्यार से हाथ फेर कर आप फ़ख़्र से कह सकेंगी कि यह मेरे शहीद बेटे का मज़ार है.....मैं आऊंगी। मेरी शादी का इन्तज़ाम

कर रखना। मैं आँखें बन्द करके आई थीं, आँखे खोल कर जा रही हूँ। मुझे इजाज़त दो भाई को अपने हाथों कफ़न पहना सकूं.........अलविदा माँ! अलविदा।"

लडकी जो दबे पांव आहिस्ता-आहिस्ता अन्दर आई थी, सीना फैलाकर, गर्दन तान कर लम्बे-लम्बे डग भरती हुई कमरे से निकल गयी। रज़ीअ खातून उसे देखती रही। दरवाज़ा बन्द हुआ तो उसने बाज़ू फैला दिए और वह दरवाज़े तक गयी। उसके मुंह से चीख सी निकली- "मेरी बच्ची!" उसने दरवाज़ा ज़रा सा खोला। बाहर से उसे अपनी बच्ची की आवाज़ सुनाई दी जो बड़ी ही गरज़दार थी- "बिन आज़र! तमाम सवारों को जल्दी बुलाओ, हलब को वापसी के लिए, फ़ौरन।"

ज़रा सी देर बाद माँ ने ज़रा से खुले हुए किवाड़ में से देखा। उसकी बेटी घोड़े पर सवार आठ सवारों के आगे चली जा रही थी उसके हुक्म पर तेज़ हो गये। रज़ीअ ख़ातुन ने किवाड़ बन्द कर दिया और उसकी हिचकियां बंध गयीं। ख़ादिमा अन्दर आई तो रज़ीअ ख़ातुन ने रोते हुए कहा- "वह भूखी चली गयी है।"

❖

यह नवम्बर 1181 ई0 का वाक़िआ है जब माँ बेटी की मुलाक़ात हुई थी। दो साल पहले का वाक़िआ है जब सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने इब्ने लाऊन को ऐसे शिकस्त दी कि उसका क़िला उसी के फ़ौज के जंगी क़ैदियों से इस तरह मिस्मार करा दिया था कि उसका नाम व निसान नहीं रहा था। उसका मलबा दरिया में फेंक दिया गया। उसके फ़ौरन बाद सुल्तान अय्यूबी ने सलीबी बादशाह बिल्डून को शिकस्त दी थी। यह दर असल एक मुसलमान जासूस का कारनामा था। उसने सुल्तान अय्यूबी को बरवक़्त इत्तलाअ दे दी थी कि फत्रैज फ़लां पहाड़ी मुकाम पर घात में बैठी है। आप ने उन दोनों जंगों की तफ़सीलात पिछली क़िस्त में पढ़ी हैं।

यह बिल्डून की दूसरी पस्पाई और पिटाई थी। इससे पहले वह सुल्तान अय्यूबी के भाई अलआदिल से ऐसी ही शिकस्त खा चुका था। अब सुल्तान अय्यूबी ने उसे उठने के क़ाबिल नहीं रहने दिया था लेकिन वहाँ वह अकेला सलीबी बादशाह नहीं था। आलमे इस्लाम में कई सलीबी अफ़वाज मौजूद थीं। उनके हुक्मरान दिल से एक दूसरे के खिलाफ़ थे लेकिन उनका दुश्मन मुश्तर्क था इसलिए वह एक दूसरे को मदद करते थे। हर एक के दिल में यही था कि वह अकेला ज़्यादा इलाकों पर क़ाबिज हो जाए। इसी मकसद के तेहत बिल्डून ने अकेले अल आदिल और उसके बाद सुल्तान अय्यूबी से जंगे लड़ी थीं। उसके पास फ़ौज और वसाइल की कमी नहीं थी। उसका अस्लेहा भी बरतर था और उसके जानवर भी बेहतर थे लेकिन हार गया।

कुछ अर्सा तो उसे बिखरी हुई फ़ौज को इकट्ठी करने में लग गया। इस दौरान उसे इत्तलाअ मिली कि सुल्तान अय्यूबी इब्ने लाऊन को भी शिकस्त दे कर उसकी बादशाही और जंगी ताकत कमज़ोर कर आया है। इब्ने लाऊन आरमीनी था। आरमीनी सलीबियों के दोस्त थे। उनकी शिकस्त सलीबियों के लिए अच्छी खासी चोट थी। इसके साथ हीं उसे इत्तलाअ

मिली कि इब्ने लाऊन की सल्तनत तलखालिद और उसके किले काराहेसार पर हम्ले में सुल्तान अय्यूबी की फौज के साथ अल्मलकुस्सालेह की फौज के दस्ते भी थे तो वह बेचैन हो गया। यह तो उसे और दूसरे सलीबी हुक्मरानों को पता चल गया था कि सुल्तान अय्यूबी अल्मलकुस्सालेह को शिकस्त देकर अपना ख़ुद मुख़्तार अमीर बना लिया है मगर उन्हें यह तवक्को नहीं थी कि अल्सालेह इस मुआहिदे पर अमल करेगा। यह अल्सालेह की ख़सलत थी। वह बज़ाहिर सुल्तान अय्यूबी के ताबेअ हो गया था मगर उसने सलीबियों के साथ मरासिम नही तोड़े थे। अब बिल्डून को पता चला कि अल्सालेह ने सुल्तान अय्यूबी को फौज दी थी तो वह योरुशलम चला गया जहाँ सलीबी बादशाहों का हैडक्वार्टर बन गया था। दूसरा हैडक्वार्टर अकरा था।

"क्या आप को मालूम है कि मुसलमान फिर मुत्तहिद हो रहे हैं?" बिल्डून ने सलीबी हुक्मरानों और जरनलों की कान्फ्रेंस में कहा– "अल्मलकुस्सालेह को आप अपना इत्तेहादी समझते रहे और उसने अपनी फौज सलाहुद्दीन अय्यूबी को दे दी थी।"

"इब्ने लाऊन की शिकस्त हमारी शिकस्त है।" फिलिप आगस्टस ने कहा– "अगर आप घात में बैठने की बजाए इब्ने लाऊन की मदद को पहुंचते, सलाहुद्दीन अय्यूबी पर अक़ब से हम्ला कर देते तो शिकस्त उसकी होती।"

"जिस तरह आपमें किसी को मालूम नहीं हो सका कि सलाहुद्दीन ने पेश क़दमी का रुख़ बदल कर तल ख़ालिद का रुख़ कर लिया है इस तरह मुझे भी मालूम न हो सका।"

यह आपके निजामें जासूसी की कोताही है।" गे आफ लोज़िनान ने कहा– "हम बहुत दूर थे। देख भाल और जासूसी का इन्तज़ाम आप को करना चाहिए था। आप क़रीब थे। सुल्तान अय्यूबी की फौज आपके क़रीब से गुज़र गयी। आप को पता न चल सका। आप घात में छुपे रहे।"

"मुझे मालूम नहीं था कि मेरे साथ एक मुसलमान जासूस है।" बिल्डून ने कहा –"मैं उसे बेज़रर आदमी समझता रहा। वह मेरा कैदी था मगर भाग गया और सुल्तान अय्यूबी को घात की खबर दे दी.....लेकिन अब यह सोंचना है कि अय्यूबी और अल्सालेह का मुआहिदा किस तरह तोड़ा जाए।"

"क्या आप मुसलमानों की कमज़ोरियों को भूल गये हैं या उन्हे नज़र अन्दाज़ कर रहे हैं? एक और सलीबी बादशाह ने कहा– "उस वक़्त अल्सालेह बच्चा था जब हमने उसके मुशीरों, अमीरों और सालारों को तोहफ़े तहायफ़ और अय्याशी का सामान देकर अपने हाथ में ले लिया था। अब वह जवान हो गया है। उसे अब हाथ में लेना ज़्यादा आसान है। अपना हरबा इस्तेमाल करें और मख़्सूस तोहफ़ा अपने एल्ची के हमराह भेज दें। अगर आप जंगी कुव्वत से उसे साथ मिलाने की सोंच रहे हैं तो यह ख़्याल ज़ेहन से निकाल दें। सुल्तान अय्यूबी की फौज उस इलाके मे मौजूद है। अल आदिल भी अपनी फ़ौज के साथ यहीं है। अल सालेह के पास अपनी फौज के अलावा हरान और मुसिल की फौज भी है। अगर आप ने हलब पर हम्ला किया तो सुल्तान अय्यूबी तमाम अफ़वाज की कमान अपने हाथ में ले लेगा। अगर उसने हम

पर फतह हासिल की तो यह नुक़सान ज़रूर होगा कि अल्सालेह आप के हाथ से हमेशा के लिए निकल जाएगा। हमें फ़िलिस्तीन का दिफ़ाअ करना है। हमने अपनी अफ़वाज को मुख़्तलिफ जगहों पर फैला दिया है और देख रहे हैं कि सलाहुद्दीन किधर का रूख करता है और उसके अज़ाइम क्या हैं। इन हालात में हम आप को मदद नहीं कर सकेंगे। आप अपने तौर पर अल्सालेह को हाथ में लें।"

❖

1181 ई० में वालिये मुसिल सैफुद्दीन ग़ाजी मर गया। उसकी जगह अज़ाउद्दीन मस्ऊद ने इमारत संभाल ली। इसी साल सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी का भाई शम्सुल दौला शाह सिकन्दरिया में मौत हो गया। सुल्तान अय्यूबी मिस्र चला गया। वहाँ के हालात बिगड़ने लगे थे। वह अपनी फौज अपने भाई अल आदिल की ज़ेरे कमान पीछे छोड़ गया था।

फिर 1181 का साल आ गया। बिल्डून ने अपनी फौज की कमी पूरी कर ली थी। उसे ट्रेनिंग भी दे ली थी। उसने अपनी फौज को सुल्तान अय्यूब की चालों के मुताबिक जंगी मश्कें भी कराई थीं। वह अगली जंग के लिए तैय्यार था लेकिन अल्सालेह को वह अपने हाथ में लेना चाहता था।

अल्सालेह अब बच्चा नहीं जवान था। सल्तनत के कारोबार को वह समझने लगा था। उसकी कमज़ोरी उस के मुशीर और सालार थे जो दरपरदा सलीबियों के हामी थे। जैसा कि बताया जा चुका है कि उसने सुल्तान अय्यूबी के साथ सुलह कर ली थी मगर उसके दिमाग से अभी बादशाही का खब्त निकला नहीं था। वह खुद मुख़्तार हुक्मरान बनने के ख़्वाब देख रहा था। एक रोज़ उसे इत्तलाअ मिली कि सलीबी बादशाह बिल्डून का एल्ची आया है। उसने फ़ौरन उसे अन्दर लाने की इजाज़त दे दी। यह एल्ची ज़ेहनी तखरीबकारी का माहिर और इन्सानी नफ़सियात की कमज़ोरियों से वाकिफ़ था। उसने अल्मलकुस्सालेह को बताया कि वह कुछ तोहफे भी लाया है।

तोहफ़ों में एक तो बेशक़ीमत हीरों को और जवाहरात और सोने के सिक्कों का बॉक्स था। दो तलवारें थीं। बचास आला नस्ल के घोड़े थे और एक लड़की थी। अल्सालेह ने बाहर जाकर घोड़े देखे। हीरे और जवाहरात देखे लेकिन जिस तोहफे पर उसकी नज़रें जम कर रह गयीं वह लड़की थी। वह बहुत देर लड़की को ही देखता रहा। उसकी उठती जवानी की तमाम तर कमज़ोरियाँ एक जादू बन कर उसकी अक्ल पर ग़ालिब आ गयीं। एल्ची ने उसके हाथ मे बिल्डून का पैग़ाम दिया जो अरबी ज़ुबान में लिखा हुआ था। उसने कुछ देर तो पैग़ाम की तरफ़ देखा ही नहीं। लड़की उसके ख्वाबों से ज़्यादा हसीन थी।

एल्ची ने पैग़ाम खोल कर उसके आगे रखा। उसने पढ़ा। बिल्डून ने लिखा था—"अज़ीज़ अल्मलकुस्सालेह वालिये हलब! मैं एल्ची और तोहफ़ों की बजाए अपनी फौज भेज सकता था लेकिन मैं आप के खिलाफ़ हथियार उठाने की ज़रूरत महसूस नहीं करता। आप मेरे दोस्त और मेरे बच्चे हैं। हमने आप की मदद उस वक़्त की है जब आप बच्चे और सलाहुद्दीन अय्यूबी आप की सल्तनत पर काबिज़ होने के लिए आ गया था। हमे अफसोस है कि गुमश्तगीन

और सैफुद्दीन ने आप के दोस्ती को धोखे में रखा। हम भी इस धोखे को न समझ सके। अगर आप अकेले होते तो आप की फौज कभी शिकस्त न खाती। आप ने देख लिया है कि गुमश्तगीन किस कदर फरेबकार थे। आप को उसे सज़ाए मौत देनी पड़ी। सैफुद्दीन ने भी आप को हमेशा धोखे में रखा। वह हलब पर कब्जा करना चाहता था। यह हम थे जिन्होंने उसे इन अज़ाइम से बाज़ रखा.....

"आप ने आख़िर सलाहुद्दीन अय्यूबी से शिकस्त खाई जिसने आप को उसकी इताअत कुबूल करने पर मजबूर किया। आप इतने मजबूर हुए कि उसे आपने इब्ने लाऊन पर हम्ला करने के लिए फौज दे दी। मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि आप जैसा ग़यूर जंगजू अपनी यह तौहीन बर्दाश्त नहीं कर सकता मगर आप तन्हा थे। मैं खुद जंग व जदल में उलझा रहा वरना आप की मदद को पहुंचता। अब मैं आपकी तरफ तवज्जो देने के काबिल हो गया हूँ। आप यह न भूलें कि सुल्तान अय्यूबी ने आपको ऐसी खुद मुख़्तारी दी है कि जिसका मतलब गुलामी है। वह आप को आहिस्ता—आहिस्ता गुलाम बना रहा है। उसने अज़ाउद्दीन की मदद के लिए आरमिनियों को शिकस्त दी और उसे अपने एहसान की ज़ंजीरों में जकड़ लिया है। तमाम छोटे—छोटे उमरा उसकी इताअत कुबूल कर चुके हैं। अब उस की नज़र आपके अलावा मुसिल और हरान पर है...

"ज़रा ग़ौर करें कि वह मिस्र से हमारे खिलाफ लड़ने के लिए फौज लाया था लेकिन उसने तलखालिद पर जो हम्ला किया और आप से भी फौज ले ली। अब वह फिर मिस्र चला गया है। उसके जाने का जो मकसद है वह हमारे जासूस हमें बता चुके हैं। वह बेबहा ख़ज़ाना लेकर गया है जो वह काहिरा अपने ख़ज़ाने मे रख कर वापस आयेगा। उसने आपको क्या दिया है? आपकी फौज को उसने माले गनीमत में कितना हिस्सा दिया है? उसने योरूशलम की तरफ पेशकदमी क्यों नहीं की? क्या आप को किसी ने बताया है कि आरमिनियों की कितनी लड़कियां वह अपने साथ ले गया है?........

"इन सवालों को अपने ज़ेहन में उलट पुलट करें। आप पर सलाहुद्दीन अय्यूबी के किरदार और उसकी नीयत की असल हकीकत वाज़ेह हो जाएगी। आप के साथ हमारी कोई दुश्मनी नहीं। हम इस ख़ित्ते में अमन व अमान कायम करने आये हैं। हम यह भी जानते हैं कि सुल्तान अय्यूबी यहाँ से हमें बेदख़ल करके यूरोप पर हम्ला करने और अपनी सल्तनत को वसअत देने की सोंच रहा है। आप को और दूसरे उमरा को वह अपनी थैली के सिक्के समझता है। अगर आप ने अपने दिफ़ाअ का इन्तज़ाम न किया तो आपका नाम व निसान मिट जाएगा। हम यहां यूरोप के दिफाअ के लिए लड़ रहे हैं। अगर आप मेरी बात समझ लिए हैं तो मुझे जवाब दें। अपने मुशीर भेजूंगा जो आप की माली और जंगी ज़रूरत का जायज़ा लेकर मुझे बतायेंगे। मैंने जो घोड़े भेजे हैं यह तोहफ़ा है। मैं आप की फौज के लिए ऐसे सैंकड़ो घोड़े भेज सकता हूँ। यूरोप से हम ने जदीद हथियार मंगवाये हैं। वह आप को दिए जाएंगे। आप सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ किया हुआ मुआहिदा तोड़ें, दरपरदा मुआहिदा तोड़ दें और अपने दिफ़ाअ की तैय्यारी करें। हम आप के साथ हैं।"

अल्मलकुस्सालेह के नौजवान एसाब पर यहूदियों की इतनी हसीन और दिलकश लड़की ने पहले ही कब्ज़ा कर लिया था। पैग़ाम के अलफ़ाज़ जादू की तरह उसके दिल में उतरते गये। उसने एल्ची के आराम और ख़ुराक का ऐसा इन्तज़ाम करने का हुक्म दिया जैसे बिल्डून ख़ुद आ गया है। फिर उसने अपने आप को लड़की के हवाले कर दिया। उसने इससे ज़्यादा ख़ूबसूरत लड़कियाँ भी देखी थीं, लेकिन इस लड़की का जो अन्दाज़ था और उसकी जो मुस्कुराहट थी उसने उसके हुस्न में तिलिस्माती असर पैदा कर रखा था। अल्सालेह अंधा हो गया।

रात को लड़की उसकी ख्वाबगाह में आई तो उसके हाथ में सुराही और प्याले थे। यह तोहफ़ा था। लड़की ने उसे बताया कि यह फ़्रांस की शराब है जो सिर्फ़ बादशाहों के लिए तैय्यार की जाती है।

"आप के हरम में तो कुछ भी नहीं।" लड़की ने उसे कहा– "क्या आप ज़रूरत महसूस नहीं करते कि आपका हरम आबाद हो?"

"मेरे हरम के लिए तुम अकेली काफ़ी हो।" अल्मलकुस्सालेह ने मख़मूर अवाज़में कहा।

"मैं अपने जैसी लड़कियों से आपका हरम भर दूंगी।" लड़की ने शराब का प्याला उसके हाथ में देते हुए कहा– "क्या यह सही है कि सलाहुद्दीन अय्यूबी की एक ही बीवी है और वह किसी को हरम में औरते रखने की इजाज़त नहीं देता?"

"हाँ!" अल्सालेह ने ज़वाब दिया-- "यह सही है। वह शराब की भी इजाज़त नहीं देता।

"आप को मालूम नहीं कि उसका अपना एक ख़ुफ़िया हरम है जिसमे ग़ैरमामूली तौर पर हसीन लड़कियाँ हैं। इनमें मुसलमान भी हैं, यहूदी और ईसाई भी हैं।"

फ़ानूस की रंगीन और हल्की–हल्की रौशनी और फ़्रांस की शराब के नशे में यह लड़की तिलिस्म बन कर उस पर छाती गयी और ज़रा सी देर बाद वह लड़की के रेशमी बालों की ज़ंजीरों में जकड़ गया.....गुनाह की रात की कोख से सेहर ने जन्म लिया तो अल्सालेह ने लड़की से कहा– "यहाँ मेरी एक बहन भी है। तुम उसके सामने न आना। वह अभी पसन्द नहीं करती कि मैं शादी के बेग़ैर किसी लड़की के क़रीब जाऊं। मैं किसी वक़्त उसे बताऊंगा कि तुम मुसलमान हो और मेरे साथ शादी करने आई हो।"

अपनी बहन को आज़ाद क्यों नहीं करते?" लड़की ने कहा– "उसे मर्दों में उठने बैठने दें। वह शहज़ादी है। आप बादशाह हैं। सलाहुद्दीन अय्यूबी आपको यह हैसियत ख़त्म कर रहा है। हम आपकी बहन को अलग सल्तनत देकर सुल्ताना बना देंगे।"

अल्मलकुस्सालेह तसव्वुरों में बादशाह बन गया।

❖

"क्या ख़बर लाये हो?" बिल्डून ने शराब के नशे में बदमस्त लहजे में अपने एल्ची से पूछा।

"क्या मैं कभी नाकाम लौटा हूँ?" एल्ची ने जवाब दिया। उसने अल्मलकुस्सालेह के महल में चार रोज़ क़याम किया था और बड़ी लम्बी मसाफ़त तय करके अभी–अभी वापस आया था।

उसने कहा– "मुसलमानों पर फौजकशी करके आप इतनी जाने ज़ाया करते और इतने ज़्यादा घोड़े मरवाते हैं। मुसलमानों के हुक्मरानों से सिर्फ़ एक ही लड़की हथियार डलवा सकती है।"

"सिर्फ़ लड़की नहीं।" बिल्डून ने कहा–"मुसलमानों को सिर्फ़ लड़की का तसव्वुर दे दो तो वह अपने नेक व बद को भूल कर उसी तसव्वुर का हो जाता है......कहो, तुम क्या करके आये हो?"

"उसने तहरीरी जवाब नहीं दिया।" एल्ची ने कहा– "कहता था कि सलाहुद्दीन के जासूस और छापामार हर तरफ़ घूमते फिरते रहते हैं। कहीं ऐसा न हो कि पैग़ाम पकड़ा जाए। उसने आप की हर बात मान ली है। वह सलाहुद्दीन अय्यूबी का हामी नहीं, अलबत्ता घबराया हुआ था और अपने आप को अय्यूबी के मुक़ाबले तन्हा समझता था। आपके पैग़ाम ने बहुत हौसला दिया है। उसने कहा है कि आप अपने मुशीर भेज दें लेकिन अरबी ताजिरों के लिबास में हों और यहाँ हर किसी को यही बतायें कि वह शाही सतह पर तिजारत की बात चीत करने आये हैं।"

"वह किसी शक में तो नहीं?" बिल्डून ने पूछा।

"आप ने उसे यहूदियों का जो तोहफ़ा भेजा है उसने किसी शक की गुन्जाईश नहीं रहने दी।"

एल्ची ने जवाब दिया– "मैंने वहाँ चार रोज़ क़याम किया है। इस दौरान मैं उसके सालारों से मिलता रहा हूँ और उसके दूसरे हकिमों से भी मिला हूँ। उनमें बहुत से ऐसे मिले हैं जो अय्यूबी के हक़ में हैं। मैंने उनमे से दो अपने हक़ में ले लिया है। और उन्हें वादे दिए हैं। चोरी छुपे उन्हें तोहफ़े भी दिए हैं। वहाँ सलाहुद्दीन अय्यूबी के जासूस भी मौजूद हैं। इसलिए किसी बात का मख़्फ़ी रखना मुम्किन नहीं। ताहम अल्मलकुस्सालेह को अपने हाथ में समझिए। मैंने लड़की को इन दो जरनलों से मुतआरूफ़ करा दिया है। जिन्हें मैंने हाथ में ले लिया है। वह अपनाकाम करती रहेगी। आप अपने आदमी जल्दी रवाना कर दें।"

एल्ची सिर्फ़ एल्ची नहीं था। बताया जा चुका है कि इन्सानी नफ़सियात से खेलने वाला उस्ताद था।उसने कहा– "सलाहुद्दीन अय्यूबी अपने अफ़सरों को और अपनी क़ौम को नसीहत और वाअज़ करता रहता है कि बादशाही के ख़्वाब, दौलत औरत ऐसी बिदअतें हैं जो इन्सान के ईमान को ख़त्म कर देती हैं।

उसे मालूम नहीं कि जब यह तीनों बिदअतें किसी आलिम फ़ाज़िल के सामने आ जाएं तो उसके भी ईमान के पाँव उखड़ सकते हैं। यह इन्सानी कमज़ोरियाँ हैं। उनके सामने वाअज़ बेकार हो जाते हैं।"

बिल्डून ने उसी वक़्त तीन मुशीर तैय्यार कर लिए।

❖

तिजारती सामान से लदे हुए बहुत से ऊंटों का एक काफ़ला हलब में अल्सालेह के महल से ज़रा ही दूर रूका। उसके साथ कई आदमी थे। उनमें से तीन आदमी जो अरबी लिबास में

थे महल की तरफ चल पड़े। दरबानों ने उन्हे रोक लिया। ताजिर अल्मलकुस्सालेह से मिलना चाहते थे। कहते थे कि वह हीरे और बेश कीमत सामान लायें हैं जो बादशाह ख़रीदते हैं, और हलब के साथ तिजारत करने की बात चीत करेंगे। मुहाफ़िज़ों के कमाण्डर इब्ने ख़तीब ने उन्हे सर से पाँव तक देखा। उनकी बातों में दिलचस्पी लेकर उन्हें बेतकल्लुफ़ी से बोलने का मौका दिया। वह उनकी आँखों का सब्ज़ और नीला रंग को ग़ौर से देखता रहा। उसे मालूम था कि तिजारत कीबात चीत बराहे रास्त बादशाह के साथ कभी नहीं हुई। वह उन्हें अलग ले गया।

"आप अपना असल मक़सद बतायें।" इब्ने खतीब ने पूछा।

"हम मकसद बता चुके हैं।"

"योरूशलम से आये हो या अकरा से?" इब्ने ख़तीब ने पूछा।

"हम ताजिर हैं।" एक ने जवाब दिया– "हम हर मुल्क में जाते हैं। योरूशलम और अकरा भी जाते हैं तुम किस शक में हो?"

"शक में नहीं।" इब्ने ख़तीब ने कहा–"मुझे यकीन है। मैं आप तीनों को जानता हूँ। आप मुझे नहीं जानते। मैं आप का आदमी हैं। मेरा नाम इब्ने ख़तीब है लेकिन मेरा नाम कुछऔर है। हरमन अच्छी तरह जानता है।"

हरमन सलीबियों के जासूसी और सुराग़रसानी के निजाम का सरबराह और इस फ़न का माहिर था। इब्ने ख़तीब ने कोई ख़ुफ़िया लफ़्ज़ बोला जो सलीबियों के जासूस एक दूसरे की शिनाख़्त के लिए बोला करते थे। ताजिर जो दरअसल बिल्डून के भेजे हुए मुशीर थे मुस्कुराये। उन्हें बताया गया था कि अल्मलकुस्सालेह के वहाँ सलीबी जासूस भी मौजूद हैं। इब्ने ख़तीब ने उन्हें यकीन दिलाया कि वह उन्हीं का जासूस है।

"आप इसी मक़सद के लिए आयें हैं?" इब्ने ख़तीब ने पूछा– "मुझ से न छुपायें वरना आप को अन्दर नहीं जाने दिया जाएगा।"

"हाँ!" एक सलीबी ने कहा– "इसी मकसद के लिए.......और हमें यह बताओ कि सलाहुद्दीन अय्यूबी के जासूस महल में मौजूद हैं?"

"मौजूद हैं लेकिन उन पर हमारी नज़र है।" इब्ने ख़तीब ने कहा– "उनसे हम आपको छुपाये रखेंगे लेकिन आपके मक़सद से पूरी वाकफ़ियत होनी चाहिए।"

इन तीनों ने अपने ख़ुफिया अल्फ़ाज़ और तरीकों से यकीन कर लिया कि इब्ने ख़तीब उन्हीं का आदमी है। उन्होंने उसे अपना मक़सद बता दिया। इब्ने ख़तीब ने अन्दर जाकर अल्मलकुस्सालेह को इत्तलाअ दी कि तीन ताजिर शरफ़े मुलाकात चाहते हैं।

"तुम मुहाफ़िज़ दस्ते के नये कमानदार हो?" अल्मलकुस्सालेह ने पूछा।

"जी हुज़ूर!" उसने जवाब दिया।

"कहाँ के रहने वाले हो?"

उसने किसी गाँव का नाम लिया तो अल्मलकुस्सालेह ने कहा– "हम हर वक़्त हर किसी से नही मिल सकते। आइंदा ख़्याल रखना। उन तीनों को अन्दर भेज दो।"

उसने बाहर जाकर तीनों को अन्दर जाने को कहा और आँख मार कर हिदायात दी कि बहुत संभलकर बात करें।

❖

रात ईशा के नमाज़ के बाद ख़तीब जामा मस्जिद के इमाम के पास बैठा था। दो आदमी और भी थे। "अब इसमें किसी शक गुंजाईश नहीं रही कि अल्मलकुस्सालेह एक बार फिर सलीबियों के जाल में आ रहा है।" इब्ने ख़तीब ने कहा-- "मैंने आप को पहले एल्ची और तोहफों की इत्तलाअ दी थी। वह सलीबियों की तरफ़ से आये थे और साथ एक बहुत ही ख़ूबसूरत लड़की थी। आज पता चल गया है कि वह एल्ची बिल्डून की तरफ़ से आया था। आज तीन ताजिर अल्मलकुस्सालेह से तिजारत की बात चीत करने के लिए आये है।

आप जानते हैं मैंने दो साल बैतुलमुकद्दस में सलीबियों के दर्मियान रहकर जासूसी की है। इन तीनों के चेहरे और ज़ुबान का लहजा बताता था कि उन्होंने लिबास पहन रखा है। यह बहरूप है। मैंने उनका जासूस बनकर उनका असल रूप देख लिया है। बैतुल मुकद्दस की जासूसी ने आज मुझे फ़ायदा दिया है। मैं उनके ख़ुफ़िया (कोड) जानता हूँ और ख़ुफ़िया इशारे भी। मोहतरम अली बिन सुफ़ियान की तरबियत की बरकत आज देखी है।"

इब्ने ख़तीब सुल्तान अय्यूबी का जासूस था जो थोड़ा ही अर्सा गुज़र हलब में आया और अल्मलकुस्सालेह के एक ऐसे नायब सालार की कोशिश से मुहाफ़िज़ दस्ते का कमानदार बना दिया गया जो सुल्तान अय्यूबी का हामी था। इब्ने ख़तीब अली बिन सुफ़ियान का ख़ुसूसी तौर पर ज़हीन और बेख़ौफ़ जासूस था। वह दो साल बैतुल मुकद्दस में सलीब बादशाहों और जरनलों के हैडक्वार्टर में रहा और उसने कामयाब जासूी की थी। जामा मस्जिद का इमाम इन तमाम जासूसों का कमाण्डर था जो सुल्तान अय्यूबी ने हलब में भेज रखे थे। ईशा की नमाज़ के बाद जिसे कोई रिपोर्ट देनी होती वह मस्जिद में जाकर इमाम को बता देता था। इमाम अपने तौर पर तस्दीक़ करके रिपोर्ट सुल्तान अय्यूबी तक पहँचा देता था। इब्ने ख़तीब बड़ी ही क़ीमती रिपोर्ट लाया था।

इतने में एक अधेड़ उम्र की औरत आ गयी। वह सर से पांव तक स्याह बुर्कानुमा कपड़े में मस्तूर थी। अन्दर आकर उसने चेहरा बेनक़ाब किया। उसे देखकर सब हंस पड़े, वह अल्मलकुस्सालेह की ख़ादिमा थी। यह उसकी ख़्वाब गाह की देखभाल करती और उसकी दरपरदा जिन्दगी की राज़दां थी। वह उसी रोज़ इमाम को रिपोर्ट दे चुकी थी कि सलीबियों की तरफ़ से अल्सालेह के पास एक लड़की आई है जो शकल व सूरत, जिजस्म, रंग और नाज़ अदा और ज़ुबान की चाशनी के लिहाज़ से सरतापा ऐसा जादू है जिससे कोई ज़ाहिद और परहेज़गार भी नहीं बच सकता। वह इमाम को बता चुकी थी कि अल्सालेह का बाकायदा हरम नहीं लेकिन उसकी रातें औरत के बेग़ैर नहीं गुज़रतीं। औरत उसकी कमज़ोरी बन गयी है।

"......मगर इस लड़की ने जो मुझे यहूदी मालूम होती है, अल्सालेह को अपना गुलाम बल्कि कैदी बना लिया है।"

ख़ादिम: ने कहा-- "वह इतना पागल हो गया है कि मुझ से बाछें खिलाकर पूछता है यह

लड़की तुम्हें पसन्द है? मैं इसके साथ शादी कर लूं?" मैंने एक बार उसे कहा कि अपनी बहन से पूछ लें। उसने मुझे सख़्ती से कहा कि उसकी बहन के साथ ज़िक्र न करूं।" ख़ादिमा भी जासूस थी। उसनें तफ़सील से बताया कि अल्मलकुस्सालेह पूरी तरह उस लड़की के जाल में आ गया है। अब कोई और लड़की उसकी ख़्वाबगाह में दाख़िल नहीं हो सकती।

"अब सोंचना यह है कि इसी वक़्त सुल्तान अय्यूबी को इत्तलाअ दे दी जाए या देख लिया जाए कि सलीबी क्या करते या अल्सालेह से क्या करवाते हैं।" इमाम ने कहा– "मेरी राय यह है कि अल्सालेह कोई ठोस कार्रवाई करले जो मुआहिदे के ख़िलाफ़ हो तो सुल्तान को इत्तलाअ दी जाए।"

"सुल्तान मिस्र चले गये हैं।" एक और ने कहा जो बूढ़ा था और दानिशमन्द मालूम होता था– "इधर अल्आदिल हैं। वह सुल्तान से हुक्म मंगवाये बेग़ैर कोई कार्रवाई नहीं करेंगे। इतने अर्से में यहाँ के हालात ऐसे हो सकते हैं जो शायद क़ाबू से निकल जाएं। क्यों न कोई ऐसी कार्रवाई सोंची जाए जो इस सिलसिले को यहीं पर ख़त्म कर दे।"

"मैं आप को एक मश्वरा देती हूँ।" ख़ादिमा ने कहा– "अल्सालेह की तवज्जा सिर्फ़ लड़की पर है। वह भला बुरा सोंचने के भी क़ाबिल नहीं रहा। यह लड़की दिन के वक़्त भी उसे शराब में मदहोश रखती है। बदबख़्त पहले भी पीता था लेकिन सिर्फ़ रात को पीता था और इतनी ज़्यादा उसने कभी नहीं पी थी। नशे की हालत में वह अपनी बहन के सामने नहीं होता था। उसे दिन को मिलता था। अब यह हालत है कि जब से यह लड़की आई है, बहन भाई की मुलाक़ात नहीं हुई। बहन में बाप की शराफ़त है वह मुझ से पूछती है तो मैं कह देती हूँ कि सल्तनत के काम ऐसे हैं कि अल्सालेह को फ़ुर्सत नहीं....मेरा मश्वरा यह है कि लड़की को ग़ायब कर दिया जाए तो अल्सालेह के होश ठिकाने नहीं रहेंगे। मैं आप को यक़ीन दिलाती हूँ कि वह सोंच भी नहीं सकेगा कि सलीबियों से कोई बात करे या न करे।"

इस कार्रवाई पर बहस मुबाहिसा होता रहा। इब्ने ख़तीब ने कहा कि वह ताजिरों को भी ग़ायब कर सकता है। यह फ़ैसला हुआ कि मौक़ा देखकर पहले लड़की को ग़ायब किया जाय मगर यह काम आसान नहीं था बल्कि नामुम्किन था। ताहम उन्होंने इस कार्रवाई का फ़ैसला कर लिया।

❖

यह नवम्बर 1181 ई0 के दिन थे। ऊंटों का क़ाफ़िला बाहर रूका रहा। लोग ख़रीद फ़रोख़्त करते रहे। तीनों सलीबी मुशीर अरबी ताजिरों के भेस में अल्सालेह से मिलते मिलाते रहे। वह अपनी शराइत ख़ुफ़िया तौर पर तय कर रहे थे। 16/17 नवम्बर (7/8 रजब 577 ई0) की रात अल्सालेह ने बहुत बड़ी ज़याफ़त का इहतिमाम किया जिसकी बज़ाहिरा कोई वजह नहीं थी, लेकिन दरपरदा इस ज़याफ़त की तक़रीब यह थी कि सलीबी मुशीरों के साथ अल्सालेह ने ख़ुफ़िया मुआहिदा कर लिया था जिस का इल्म सिर्फ़ दो सालारों को था। रात की ज़याफ़त में सैकड़ों मेहमान थे। इनमें सलीबी मुशीर भी थे जो अभी तक अरबी ताजिरों के लिबास में थे। उनके क़ाफ़िले के शुतरबान भी इसमें मदऊ थे लेकिन वह शुतरबानों की

हैसियत से ज़याफ़त में नहीं आये थे। उनमें दरअसल शुतरबान कोई भी नहीं था। उनमें बाज़ जासूस थे और बाक़ी सलीबी फौज के अफ़सर ज़याफ़त में यहूदी लड़की भी थी और अल्सालेह की बहन भी, मगर उसे इन्तज़मात की देखभाल सौंपी गयी थी।

उस रात मुहाफ़िज़ दस्ते की पाबन्दियाँ कम हो गयी थीं। मेहमानों का रेला चला आ रहा था। कोई ख़तरा नहीं था। कम अज़कम अलसालेह कोई ख़तरा महसूस नहीं कर रहा था। शराब का दौर चल रहा था। सालिम बकरे रोस्ट किये गये थे। वसीअ मैदान में क़नातें और शमियाने लगाये गये थे। ज्यों–ज्यों रात गुज़रती जा रही थी ज़याफ़त का रंग निखरता आ रहा था। हर तरफ़ मेहमानों की चहल पहल थी।

यहूदी लड़की इधर उधर फुदकी फिर रही थी। वह किसी से मिल कर आ रही थी कि उसे ख़ादिमा ने रोक लिया और किसी सालार का नाम लेकर कहा कि वह किसी ज़रूरी बात करने के लिए बुला रहा है। लड़की को मालूम थ कि वह उसका अपना आदमी है। वह उधर चली गयी। फिर वापस नहीं आई। अल्सालेह को भी पता नहीं चला कि लड़की ग़ायब हो गयी है। इब्ने ख़तीब उस रात ड्यूटी पर नहीं था। उसने तीन ताजिरों में से एक के साथ बात करने का मौक़ा पैदा कर लिया और कहा– "आप तीनों यहाँ से निकलें वरना मारें जाएंगे। बहुत बड़ा ख़तरा है। सुल्तान अय्यूबी के छापामारों की इत्तलाअ मिली है कि मेहमानों के भेस में यहाँ मौजूद हैं।" उसने उसे एक जगह बता कर कहा कि तीनों वहाँ आ जाएं। आगे उन्हें लेजाकर छुपाने का इन्तज़ाम कर लिया गया है।

"अब हमें यहाँ से निकलना ही है।" सलीबी ने कहा– "हमारा काम हो चुका है।"

"फिर जल्दी निकलें।" इब्ने ख़तीब ने कहा– "वरना सुबह तक आपकी लाशें यहाँ निकलेंगी।"

इस सलीबी ने यह बात अपने साथियों के कानों में डाली और एक–एक करके वहाँ से इस तरह निकले कि किसी को शक न हो। अगर वह महल के अन्दर होते तो निकलते देखे जा सकते थे। वह मैदान था। अंधेरे रास्ते से गये। आगे इब्ने ख़तीब तीन घोड़ों के साथ खड़ा था। ख़ुद भी घोड़े पर सवार था। ज़याफ़त में रक़्स व सुरूर और मेहमानों का इतना शोर था कि किसी को चार घोड़ों के क़दमों की आवाज़ न सुनाई दी और अल्सालेह को इल्म हीं नहीं हो सका कि उसके ख़ुसूसी मेहमान फ़र्ज़ी ख़तरे से भाग कर हक़ीक़ी ख़तरे में चले गये हैं।

❖

आबादी से दूर एक झोंपड़ानुमा मकान था। तीनों सलीबी उसमें बैठे थे। इब्ने ख़तीब ख़ुदा का शुक्र अदा कर रहा था कि उनकी जान बच गयी। उन्होंने अपने शुतरबानो के मुतअल्लिक़ फ़िक्र का इज़हार किया। इब्ने ख़तीब ने उन्हें तसल्ली दी कि सबको निकाल लिया जाएगा। उसने उन से पूछा कि वह उसे बताकर जाएं कि क्या मामिला तय हुआ है ताकि वह उसके मुताबिक़ चौकन्ना रहे। उन्होंने उसे बताया कि अल्सालेह को दरपरदा जंगी सामान और घोड़े देंगे। उसकी फ़ौज को ट्रेनिंग देंगे। जासूस देंगे और जब वह सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ लड़ेगा तो सलीबी फ़ौज सुल्तान अय्यूबी पर अक़्ब से हम्ला करेंगे। मुख़्तसर यह कि

अल्सालेह सुल्तान अय्यूबी के साथ किया हुआ मुआहिदा तोड़ देगा लेकिन उस वक़्त तोड़ेगा जब सलीबी उसे इशारा देंगे।

"अब हमें रवाना हो जाना चाहिए?" एक सलीबी ने पूछा।

"हाँ!" इब्ने ख़तीब ने कहा– "आपकी रवांगी का वक़्त आ गया है। मेरे साथ आओ।"

इब्ने ख़तीब ने कमरे का दरवाज़ा खोला। यह दूसरा दरवाज़ा था। उसने तीनों से कहा कि चलो। वह कमरा तारीक था। तीनों कमरे में गये तो पीछे से एक की गर्दन के गिर्द एक बाज़ू लिपट गया और एक–एक खंज़र हर एक के दिल में उतर गया। कमरे के एक कोने में एक गहरा गढ्ढा पहले ही खोद लिया गया था। तीनों को उसमें फेंक दिया गया।

उसी कमरे के एक कोने में यहूदी लड़की बैठी हुई थी जो अंधेरे में किसी को नज़र नहीं आती थी। उसके हाथ पाँव बंधे हुए थे और मुँह में कपड़ा ठूंसा हुआ था। उसे भी ज़ियाफ़त से ख़ादिमा के ज़रिए बुला कर बड़ी कामयाबी से अग़वा कर लिया गया था। कमरे में इब्ने ख़तीब के अलावा पांच आदमी थे। उन्होंने लड़की के हाथ पांव खोल दिए मुँह से कपड़ा निकाल दिया। लड़की अपने सलीबियों का हश्र देख चुकी थी। उसने कहा कि दूसरे कमरे में ले चलो। उसे वहाँ से ले गये। वहाँ एक दीया जल रहा था।

'क्या तुमने मुझ से ज़्यादा ख़ूबसूरत लड़की कभी देखी है।?" लड़की ने पूछा।

"क्या तुमने हमसे ज़्यादा ईमान वाले कभी देखे हैं?" इब्ने ख़तीब ने कहा–"हम तुम्हें इतनी मुहलत नहीं देंगे कि तुम अल्सालेह की तरह हमारे ईमान भी ख़रीद सको।"

"मैं अपनी जान की बख़्शिशमांग रही हूँ।" लड़की ने कहा– "मुझे तुम लोग पसन्द नहीं करते तो बताओ कि कितना सोना मांगते हो, सुबह तुम्हारे क़दमों में रख दूंगी, फिर मैं यहाँ से योरूशलम चली जाऊंगी।"

इब्ने ख़तीब ने अपने साथियों की तरफ़ देखा। उसने दो साथियों के चेहरे पर अजीब से तास्सुरात देखे। इब्ने ख़तीब ने बड़ी तेज़ीसे ख़ंजर निकाला और लड़की के दिल में उतार दिया। वह गिरी तो उसे बालों से पकड़ कर घसीटता हुआ दूसरे कमरे में ले गया और गढ्ढे में फेंक दिया। सबने मिलकर गढ्ढा मिट्टी से भर दिया।

इमाम को रात को ही इत्तलाअ दे दी गयी कि काम मुकम्मल कर लिया गया है। इधर अल्सालेह तीनों सलीबियों और लड़की के मुतअल्लिक कह रहा था कि बहुत देर से नज़र नहीं आये.....आधी रात के कुछ देर बाद जब आख़िरी मेहमान भी रूख़्सत हो गया तो वह अपने हमराज़ो से यही पूछ रहा था कि वह कहाँ है। वह कभी भी न मिलें। वह लड़की के लिए बेक़रार हो रहा था। उसने ख़ादिमा की जान खा ली। बाकी रात न खुद सोया न उसने अपने ज़ाती मुलाज़िमों को सोने दिया। ख़ादिमा ने इमाम से कहा था कि लड़की के बग़ैर वह होश खो बैठेगा। उसकी राय सही साबित हुई। वह तो पागल हुआ जा रहा था।

❖

सुबह उसकी हालत पागलों से भी बदतर थी। उसने अपने दो हमराज़ सालारों को अपने सामने खड़ा कर रखा था। उन्होंने इब्ने ख़तीब को बुला लिया और पूछा कि उसने एक

लड़की और अरबी ताजिरों को बाहर जाते हुए तो नहीं देखा?"

"मैंने देखा था।" इब्ने ख़तीब ने कहा—"मैं अपने दस्ते के साथ बाहर मुस्तैद खड़ा था। आधी रात से पहले तीनों ताजिर बाहर आये। उनके साथ एक ख़ूबसूरत लड़की थी। वह चले गये और अंधेरे में ग़ायब हो गये। मुझे दौड़ते घोड़ों के क़दमों की आवाज़ें सुनाई दी थीं। मैंने उन्हें वापस आते नहीं देखा।"

वह सालार भी जो सुल्तान अय्यूबी का हामी था आ गया। उसे मालूम था कि सलीबी और लड़की कहाँ हैं। उसने अल्सालेह को सलीबियों के खिलाफ़ भड़काना शुरू कर दिया। उसने कहा—"वह इतनी ख़ूबसूरत लड़की को आपके पास नहीं छोड़ना चाहते थे। उन्होंने आप को धोखा देकर आप से कोई बड़ा, ही नाज़ुक राज़ हासिल कर लिया है। यह शायद आप को भी मालूम नहीं कि वह राज़ क्या होगा।"

अल्सालेह पर ख़मोशी तारी हो गयी। उसे ग़ालिबन यह एहसास हो गया था कि लड़की उसे दिन के वक़्त भी शराब में बेहोश रखती है। इस हालत में मालूम नहीं वह उससे क्या कुछ कहलवाती रही है। उसे शदीद सदमा हुआ। वह रात भर सोया भी नहीं। बहुत दिनों से वह दिन रात शराब पीता रहा था। उसके असरात के अलावा गुस्सा और पछतावा भी था। उसने गुस्से से हुक्म दिया—"वह जो उन के साथ काफि ला आया था उन सबको कैद में डाल कर मार डालो। उनके ऊंटों और सामान को सरकारी मिल्कियत में ले लो।"

उसी शाम अल्सालेह की पेट में दर्द की टीस उठी। तबीब ने दवाईदी लेकिन मर्ज़ बढ़ता ही गया और रात को दर्द पेट से नाफ़ तक फैल गया। 9 रजब 577 हि0 यानी अगले रोज़ उसकी हालत तबीबों के बस से बाहर हो गयी। तबीब हर लम्हा उसके पास मौजूद रहने लगे मगर इफ़ाक़ा होने की बजाए दर्द बढ़ता ही गया। रात भी ऐसे गुज़री।दूसरे दिन उस पर ग़शी तारी होने लगी। तबीबों ने उसे तो न बताया, सालारों वग़ैरह को बता दिया कि अल्सालेह का बचना मुश्किल है। जामा मस्जिद के इमाम को बुला लिया गया। उसने सिरहाने बैठ कर कुर्आन पढ़ना शुरू कर दी। रात को अल्सालेह ने आँख खोली। इमाम को देखा और मरी हुई आवाज़ में कहा— "अगर कुर्आन बरहक़ है तो इसकी बरकत से मुझे सेहतयाब करो।"

"मैं यह कहने से नहीं डरूंगा कि आप कुर्आन के एहकाम की खिलाफ़ वर्ज़ी करते रहे हैं।" इमाम ने कहा— "कुर्आन की बरकत उनके लिए है जो उसके हर फ़रमान पर अमल करते हैं. ...ख़ुदा से गुनाहों की बख़्शिश मांगें। अपनी माँ से गुनाहों की माँफ़ी मांगे।"

उस वक़्त शम्सुन निसा पास खड़ी रो रही थी। अल्सालेह के मुंह से निकला— "माँ....मेरी माँ को बुलाओ। उसे कहो कि तुम्हारा गुनाहगार बेटा मर रहा है। आकर दूध की धारें और गुनाह बख़्श दो।"

इमाम शम्सुन निसा के तरफ़ देखा। उसने भाई के माथे पर प्यार से हाथ फ़ेर कर कहा— "मैं अभी दमिश्क के लिए रवाना हो जाती हूँ। माँ को ले आऊंगी।" वह तेज़—तेज़ कदम उठाती हुई बाहर निकल गयी। थोड़ी ही देर बाद वह अपने मुहाफ़िज़ों के साथ दमिश्क के रास्ते पर जा रही थी।

क़ाज़ी बहाउद्दीन शद्दाद ने अपनी याददाश्तों में लिखा है– "13 रजब के रोज़ अल्सालेह की हालत इतनी बिगड़ कि क़िले के दरवाज़े बन्द कर दिए गये। अल्सालेह ने ज़रा होश में आकर अज़ाउद्दीन को अपना जानशीन मुक़र्रर किया। अज़ाउद्दीन सैफुद्दीन के मरने के बाद मुसिल का वाली बना था। वह मुसिल में था। अब उसे हलब का वाली भी बना दिया। अल्सालेह ने तमाम उमरा और सालारों को बुलाकर कर हलफ़ उठायें कि अज़ाउद्दीन को अपना वाली तस्लीम करते हैं और उसके वफ़ादार रहेंगे। सबने हलफ़ उठाया। 25 रजब 577 हि0 अल्मलकुस्सालेह ग़शी के आलम में मौत हो गया। मुसिल को क़ासिद दौड़ाया गया कि अज़ाउद्दीन को कह कर बुलाये कि उसे हलब का वाली मुक़र्रर किया गया है।"

❖

जिस वक़्त शम्सुन निसा दमिश्क़ में अपनी माँ के क़दमों में बैठी मां से कह रही थी कि उसका बेटा मर रहा है और दूध की धारें बख़्शवाने के लिए उसे बुला रहा है और माँ ने कहा था कि मैं दूध की धारें बख़्श दूंगी उसके गुनाह अल्लाह बख़्शेगा, उस वक़्त अल्सालेह मौत हो चुका था। शम्सुन निसा हलब वापस गयी तो उसके इकलौते भाई का जनाजा क़िले से बाहर निकल रहा था।

अज़ाउद्दीन को क़ासिद ने अल्सालेह की मौत का पैग़ाम दिया तो वह उसी वक़्त रवाना हो गया। रास्ता छोटा करने के लिए वह किसी और रास्ते से जा रहा था। रास्ते में उसका गुज़र सुल्तान अय्यूबी के भाई अल आदिल की ख़ेमागाह से हुआ। वह अल आदिल से मिलने रूक गया। अल आदिल को मालूम नहीं था कि वहाँ अल्साले मर गया है। अज़ाउद्दीन ने उसे यह ख़बर सुनाई और यह भी कि उसे हलब का वाली मुक़र्रर किया गया है।

अल आदिल ने उसे कहा–" तुम आइंदा ख़ाना जंगी को रोक सकते हो और हलब को दमिश्क़ से मिला सकते हो। ग़द्दार मर गया है। तुम तो ईमानफ़रोश नहीं।"

अज़ाउद्दीन गहरी सोंच में खो गया। कुछ वक़्त बाद उसने अलआदिल से कहा– "हाँ! मैं हलब और दमिश्क़ को ऐसे रास्ते में जकड़ सकता हूँ कि जो कभी नहीं टूटेगा, लेकिन..... लेकिन उसे मज़बूत बनाने के लिए तुम एक काम बल्कि मेरी ख़्वाहिश पूरी कर सकते हो....मैं नुरूद्दीन ज़ंगी की मरहूम बेवा से शादी करना चाहता हूँ। अगर वह अज़ीम औरत मान जाये तो...."

"मैं आज ही दमिश्क़ चला जाऊंगा।" अल आदिल ने कहा–"मुझे उम्मीद है कि वह मान जायेगी।"

अलआदिल दमिश्क़ गया। रज़ीअ ख़ातुन को यह ख़बर सुनाई कि उसका बेटा मर गया है।

"अल्लाह उसके गुनाह मांफ़ करे।" माँ ने कहा।

कुछ देर बाद अल आदिल ने कहा कि अल्सालेह अज़ाउद्दीन को अपना जानशीन मुक़र्रर कर गया है और अज़ाउद्दीन ने उस के साथा शादी की ख़्वाहिश ज़ाहिर की है। रज़ीअ ख़ातुन ने इन्कार कर दिया।

"यह शादी आप की और अज़ाउद्दीन की नहीं होगी।" अल आदिल ने कहा– "यह दमिश्क और हलब की शादी होगी। इससे आइंदा ख़ाना जंगी रूक जाएगी और सलीबियों के खिलाफ मुहाज़ मुस्तहकम हो सकेगा।"

"अज़मते इस्लाम के लिए मैं हर कुर्बानी देने के लिए तैय्यार हूँ।" रज़ीअ ख़ातुम ने कहा– "मेरी ज़ाती ख़्वाहिश मर चुकी हैं।"

5 शव्वाल (11 फरवरी 1182 ई0) अज़ाउद्दीन और रज़ीअ खातुन की शादी हो गयी।

❖❖

साँप और सलीबी लड़की

साँप डेढ़ बालिश्त लम्बा होगा उसने इस्हाक़ के इतने क़वी हैकल घोड़े को औंधा कर दिया। मंज़िल अभी बहुत दूर थी। सेहरा सीना अभी आधा बाक़ी था। इस्हाक़ दाविशकी तुर्की का रहने वाला था। जिस्मानी लिहाज से वह तनूमंद था, ख़ुबरू था, चेहरे की रंगत में कशिश थी। उसकी आँखें नीली थीं। उसे देखकर कोई नहीं कह सकताथा कि मुसलमान है या सलीबी। वह जितना तनूमन्द और ख़ुबरू था उससे कहीं ज़्यादा दिमाग़ी लिहाज से चुस्त और चालाक था। वह उस वक़्त सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज में शामिला हुआ था जब उसकी उम्र अठ्ठारह साल थी। उसने फ़ौजी मुलाज़िमत को ज़रिआ मआश नहीं समझा था। वह मर्दे मोमिन की सही तस्वीर था। जब सुल्तान अय्यूबी को मिस्र की इमारत सौंपी गयी तो इस्हाक़ को मिस्र भेज दिया गया था। वह बड़े फ़ख्र से अपने आप को तुर्क कहलाता था।

तुर्की के बेशुमार बाशिन्दे सुल्तान अय्यूबी की फ़ौज में थे। सुल्तान अय्यूबी को उन पर भरोसा और एतमाद था। उसने जब कमाण्डो फ़ोर्स बनाई तो उसके लिए ज़्यादा तर नफ़री तुर्कों की तैय्यार की। इसी फ़ोर्स में से जासूस भी मुन्तख़ब किये गये थे। उनमें इस्हाक़ तुर्क भी था। वह ग़ैर मामूली तौर पर ज़हीन और दिलेर छापामर था। उसे कमानदार बना दिया गया। फिर उसे सलीबियों के इलाक़ों में जासूसी के लिए भेजा गया था। वह फ़र्ज़ का शैदाई था। जान की बाज़ी लगाकर ज़मीन कीतहों से भी राज़ निकाल लिया करता था, मगर अब सेहराए सीना में ज़रा जितने साँप ने उसे बड़े ही कड़ी इम्तेहान में डाल दिया। वह मुसलमान इलाक़ों में था जिन पर सलीबियों ने क़ब्ज़ा कर रखा था। वहाँ से हलब चला गया और अब वह एक निहायत अहम इत्तलाअ लेकर क़ाहिरा जा रहा था। उस वक़्त सुल्तान अय्यूबी क़ाहिरा में था। इस्हाक़ तुर्क को बहुत जल्दी पहुँचना था। रास्ते में वह कम से कम आराम कर रहा था।

वह सर सब्ज़ इलाक़ों से निकल गया था। आगे रेत का वह समन्दर था जिस से कोई भटका हुआ मुसाफ़िर कभी ज़िन्दा निकलकर नहीं गया। सेहरा इन्सान और हैवान का दुश्मन है। इस्हाक़ तुर्क रेगज़ार का भेदी था..... सर सब्ज इलाके से उसने पानी घोड़े के साथ बांध लिया था। उसे रास्ते का भी इल्म था जहाँ एक दो जगह पानी मिल जाता था। इस सेहरा में उसने लड़ाइयां भी लड़ी थीं। हलब से आते हुए जब वह इसमें दाख़िल हुआ था तो उसे कोई ख़तरा नहीं हुआ था। सलीबियों और सहराओं से वह कभी नहीं डरा था। उसी जंग व जदल और मुसाफ़त को वह जिन्दगी समझता थ। यह उसका अक़ीदा था कि ख़ुदा की ख़ुश्नूदी इसी जिहाद ~ है।

वह सेहराई टीलों में घोड़े को ज़रा आराम देने के लिए रुक गया। दोपहर का सूरज कुछ

आगे निकल गया था। इस्हाक़ तुर्क एक टीले के साये में लेट गया और उसकी आँख लग गयी। घोड़ा बड़ी ज़ोर से हिनहिनाया। इस्हाक़ की आँख खुल गयी। घोड़ा थोड़ी सी जगह में चक्कर दौड़ रहा था लेकिन ज़्यादा न दौड़ सका, रुक गया और उसका सारा जिस्म कांपने लगा। इस्हाक़ तुर्क ने देखा कि जहाँ वह सोया था उससे चार पांच क़दम दूर डेढ बालिश्त लम्बा सांप जिसका रंग स्याह और उस पर सफ़ेद और गोल धब्बे थे तड़प रहा था। दुम की तरफ़ से उस का आधा जिस्म कुचला हुआ था। घोड़ा वहीं खड़ा था। इस्हाक़ समझ गया कि साँप के काटने से पहले या बाद घोड़े के पांव के नीचे आया है। वह अपने से चलने के काबिल नहीं रहा था। इस्हाक़ तुर्क ने उस का सर अपने पाँव तले मसल डाला।

घोड़े के जिन्दा रहने की उम्मीद ख़त्म हो गयी थी। सेहरा का बिच्छू और यह साँप इतने ज़हरीले होते हैं कि जिसे डस लें उसे पानी पीने की मुहलत नहीं मिलती। सेहराओं के मुसाफ़िर जला देने वाले सूरज से और लूट कर क़त्ल कर देने वाले डाकूओं से इतना नहीं डरते जितना इस साँप और बिच्छू से डरते हैं। यह साँप मैदानी और पहाड़ी इलाक़ों के साँपों की तरह आगे को नहीं रेंगता बल्कि पहलू की तरफ अजीब सी चाल से रेंगता है। इस्हाक़ ने अपने घोड़े को मायूसी से देखा। घोड़ा बड़ा ही ज़ोर से कांपा उसका मुँह खुल गया था। घोड़े की टांगे दूहरी हुई फिर उसका का पेट ज़मीन से लगा और वह एक पहलू पर गिर पड़ा। इस्हाक़ तुर्क उसकी कोई मदद नहीं कर सकता था। यह आला नस्ल का जंगी घोड़ा था जो लक़ व दक सेहरा, भूख और प्यास को खातिर में नहीं लाता था। यह तो एक नुक़सान था ऐसा आला घोड़ा ज़ाया हो गया था, मगर उस वक़्त नुक़सान यह हुआ कि इस्हाक़ तुर्क को पैदल क़ाहिरा पहुंचना था। वह बहुत जल्दी में था।उसे मालूम था कि उसने यह राज़ जो वह सीने में ले करजा रहा है फ़ौरन सुल्तान अय्यूबी तक न पहुंचा तो बहुत बड़े जंगी नुक़सान का बाइस बन सकता है।

उसने घोड़े को हसरत भरी नज़रों से देखा। उसकी नज़र घोड़े के एक पाँव पर पड़ी। खुर के ज़रा ऊपर ख़ून के चन्द क़तरे जमे हुए थे। यहाँ साँप ने काटा था। घोड़ा मर चुका था। इस्हाक़ ने घोड़े की ज़ीन से खजूरों का थैला और पानी का एक मश्कीज़ा खोला और चल पड़ा। उसने मरे हुए साँप को देखा और नफ़रत से कहा– "साँप और सलीबी की फ़ितरत एक सी है।"

❖

वह रेतीले टीलों के इलाक़े से निकल गया। सूरज उफ़क़ से कुछ दूर रह गया था। उसका क़हर उरूज पर था। वह अप्रैल 1182 ई0 के दिन थे जो दुनिया के लिए बहार के दिन थे सेहराओं में कभी बहार नहीं आती। इस्हाक़ तुर्क के सामने उफ़क़ तक फैला हुआ रेत का समन्दर था जिसमें छोटी–छोटी खुश्क झाड़ियां थीं। रेत इस तरह झुलस रही थी जैसे एक आध मील पानी ही पानी हो और उसमें से शफ़ाफ़ भाप उठ रही हो। इस्हाक़ अभी ताज़ा दम था। वह खुजूरों के थैले, मश्कीज़े, तलवार और ख़ंजर का बोझ महसूस नहीं कर रहा था। उसकी चाल में जान थी और क़ाहिरा बहुत जल्दी पहुंचने के अज़्म में अभी कोई लरज़ा पैदा

नहीं हुआ था। वह चलता गया और सूरज ग़ुरूब हो गया।

वह ज़रा सी देर के लिए रूका। चन्द एक खजूरें खाईं, पानी पिया और चन्द मिनट लेट कर उठ बैठा। वह बहुत खुश था कि बड़ी ही कीमती इत्तलाअ सुल्तान अय्यूबी के लिए ले जा रहा है। उसे कुछ खाने और पीने की जैसे ज़रूरत ही नहीं थी। उसकी रूह सैर थी। फ़र्ज़ के शैदाई जब फ़र्ज़ अदा कर लें तो उनकी रूहें मस्रूर हो जाती हैं। इस्हाक़ तुर्क भी रूहानी मुसर्ररत से सरशार था। वह उठा सितारों को देखा। सिम्त का तअीन किया और चल पड़ा। सेहरा की रात इतनी खुनक होती है जितना दिन गर्म और झुलसा देने वाला होता है। रात को चलना ज़्यादा आसान होता है। वह चलता गया। उसने चलते–चलते बहुत कुछ सोंचा। यह भी सोंचा कि वह इतनी लम्बी दूरी इतने कम अर्से में तय नहीं कर सकेगा। उसका यही एक इलाज था कि कोई अकेला घोड़सवार या शुतर सवार मिल गया तो उससे घोड़ा छिन लेगा और अगर कोई काफ़िला रूका हुआ नज़र आ गया तो घोड़ा या ऊंट चोरी कर लेगा। इसी तवक्को पर चलता गया।

रात गुज़रती जा रही थी। उसके पांव तले से रेगज़ार पीछे हटता जा रहा था और उसे थकन का एहसास भी होने लगा था लेकिन उसे ट्रेनिंग ऐसी मिली थी कि थकन, नींद, भूख और प्यास को कई रोज़ बदार्श्त कर सकता था। थकन के पहले एहसास को उसने एक जंगी तराने के हवाले कर दिया। वह बुलन्द आवाज़ से तराना गाने लगा....रात के आख़िरी पहर वह एक जगह बैठ गया। थोड़ा सा पानी पिया और वहीं सो गया। अभी सूरज तुलूअ नहीं हुआ था जब उसकी आँख खुल गयी। उसने भूख के एहसास को दबा लिया। पानी भी न पिया। मंज़िल अभी बहुत दूर थी। खजूरें और पानी बचाने की ज़रूरत शदीद थी। वह उठा और चल पड़ा।

उसे सेहरा का एक और ख़तरा दूर से ही नज़र आने लगा। यह रेत की गोल गोल टीकरियां थीं जो दूर दूर तक फैली हुई थीं। यह सब एक जैसी होती हैं। इनकी बुलन्दी भी एक जैसी होती है। उनमें कोई अजनबी दाख़िल हो जाए तो बाहर नहीं निकल सकता। यह भूल भूलइया बनी होती थी। बाज़ मुसाफ़िर एक ही टीकरी के इर्द गिर्द घूमते रहते हैं और समझते हैं कि वह सफर तय कर रहे हैं। सेहराओं के भेदी भी इनसे डरते हैं। इस्हाक़ तुर्क का पहला एहसास यह हुआ कि यह टीकरियां उसके रास्ते में नहीं आनी चाहिए थीं। इस सवाल ने उसे परेशान कर दिया। क्या वह उस रास्ते से भटक गया है जिस से वह वाकिफ़ था, वह अब इधर उधर कहीं नहीं जा सकता था और सेहरा तपने लगा था। वह टीकरियों में घूमता, मोड़ मुड़ता गया। रेत उसके पाँव जकड़ने की कोशिश कर रही थी। वहाँ की रेतीली ज़मीन बता रही थी कि इस्हाक़ से पहले यहाँ से कभी कोई मुसाफ़िर नहीं गुज़रा। इस्हाक़ चलता गया। सूरज सर पर आ गया तो वह रेत की उन्हीं ढेरों में घूमता मुड़ता जा रहा था। वह एक और मोड़ मुड़ा तो ठिठक कर रूक गया। उसने ज़मीन पर अपने पाँव के निसान देखे जो एक और टीकरी के गिर्द मुड़ गये थे। तब उसे एहसास हुआ कि वह सेरहा के बेहद ख़तरनाक धोखे में आ गया है। वह साथ वाली टीकरी पर चढ़ गया। हर सू निगाह दौड़ाई। उसे यूं नज़र

आया जैसे सारी दुनिया रेत के गोल–गोल ऊंचे–ऊंचे ढेरों के सिवा कुछ भी नहीं।

सूरज की आग और रेत की गर्मी ने उसके जिस्म की नमी को चूसनी शुरू कर दी थी। रेत ने उसके पाँव जकड़–जकड़ कर मन मन वज़नी कर दिए थे। उसने पानी पिया और सिम्त का अन्दाज़ा करके नीचे उतरा। अब उसे दिमाग़ हाजिर रखना था। हर मोड़ ज़ेहन में महफ़ूज रखना था। वह ट्रेनिंग के मुताबिक चल पड़ा। अब वह जिन दो ढेरों नुमा टीकरियों के दर्मियान से गुज़रता उन्हें ज़ेहन में नक़्श कर लेता। आगे चलता, पीछे देखता मगर सेहरा के ज़ालिम असरात उसके दिमाग़ को माउफ़ करने लगे थे। उसमें बर्दाश्त की कुव्वत औसत दरजा इन्सानों से ज़्यादा थी वरना वह कभी न उठने के लिए गिर पड़ता।

सूरज उफ़क से थोड़ा ही उपर रह गया था जब वह सेहरा के इस धोखे से निकल गया मगर उसकी टाँगों में जिस्म का बोझ उठाने की ताक़त नहीं रही थी। यह फ़र्ज़ की लगन थी जो उसे चलाए जा रही थी। उसने आगे देखा तो उसे एक क़तार में कई घोड़े उसका रास्ता काटकर जाते नज़र आये। घोड़ों पर सवार भी थे। उसने सवारों को पुकारा, फिर और ज़्यादा ऊंची आवाज़ से पुकारा। किसी भी सवार ने उसकी तरफ़ न देखा। घोड़े दायरे में चलने लगे। इस्हाक तुर्क रूक गया। उसने आँखें बन्द करके सरको ज़ोर–ज़ोर से झटके दिए। वह समझ गया कि यह घोड़े नहीं वाहिमा है और यह सराब है जो सेहरा का एक और ख़तरनाक धोखा होता है। उसका ज़ेहन साफ़ हुआ तो घोड़े ग़ायब हो गये। झुलसती रेत और उसकी भाप नुमा चमक दूर तक देखने नहीं देती थी। वह अब कदम घसीट रहा था।

❖

उसे दिन और रात का भी एहसास न रहा। एक जगह उसका पाँव फिसला तो वह गिर पड़ा और लुढ़कता हुआ दूर नीचे चला गया। इससे वह ज़रा सा बेदार हुआ। उसने इधर उधर देखा। वह नाहिस्ता मिट्टी की एक टीकरी पर चढ़ गया था और वहाँ से गिरा तो नीचे आ पड़ा। उसने पानी की शदीद ज़रूरत महसूस की। हलक में कांटे चुभ रहे थे और होंठ खुश्क लकड़ी की तरह अकड़ गये थे मगर उसके पास न पानी का मश्कीज़ा था न खजूरों का थैला। उसने उठ कर इधर उधर देखा। दोनों का कहीं नाम व निसान न था। वह मायूसी और बेबसी के आलम में चला। इधर उधर देखा। उसे हर सू सफ़ेद–सफ़ेद और शफ़ाफ़ से शोले नज़र आये जो उससे कुछ दूर–दूर गोल दायरे की शक्ल में उसे घेरे हुए थे। वह अब लाशाऊरी तौर पर नीम ग़शी की हालत की कैफ़ियत में चल रहा था।

वह रूक गया। उसे दो आदमी एक औरत खड़ी नज़र आई। तीनों उसी की तरफ़ देख रहे थे। उनके अक़ब में, थोड़ी दूर, ख़जूर के दरख़्त भी उसे दिखाई दिए। उनके करीब टीले थे। इस्हाक तुर्क उसे भी वाहिमा और सराब समझा। उस पर जो मायूसी तारी हो गयी थी उसमें इज़ाफ़ा हो गया जिस से उसके जिस्म में अगर कुछ सकत रह गयी थी वह भी न रही। उसने उन आदमियों और औरत को आवाज़ देने को बेकार समझा। सराब और वाहिमे बोला नहीं करते। मुसाफ़िरों को अपनी तरफ घसीटते और पीछे हटते जाते हैं हत्ता कि इन्सान हार कर गिर पड़ता है और रेत उसका गोश्त पोस्त चूस कर उसे हड्डियों का ढांचा बना देती है।

इस्हाक तुर्क में इतनी जिन्दगी रह गयी थी जिसने उन आदमियों और औरत को वाहिमा समझा मगर उसने चलने के लिए क़दम उठाया तो उसकी टांगे दोहरी हो गयीं और उसकी आँखों के सामने सेहरा, सराब और वाहिमा गुप तारीकी में छुप गये।

उसे बातें सुनाई दीं। वह आहिस्ता–आहिस्ता होश में आ रहा था। बातें साफ होने लगीं। वह रेत पर गिरा था। रेत आग पर रखी हुई लोहे की चादर की तरह तप रही थी लेकिन होश में आते वह खुन्की महसूस कर रहा था।

"वहीं मरने दिया होता।" उसेएक मर्दाना आवाज़ सुनाईदी– "उठाओ और इसे बाहर फेंक दो। कोई भूला भटका मुसाफ़िर है।"

"यह कोई आम मुसाफ़िर नहीं लगता।" एक और मर्दाना आवाज़ उसके कानों में पड़ी–

"ज़रा इसे होश में आने दो।" यह आवाज़ किसी औरत की थी। 'मुझे शक है यह बेहोशी में बड़बड़ा रहा था "क़ाहिरा कितनी दूर है? सुल्तान......सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी! होशियार होकर क़ाहिरा से निकलना। बड़ी कीमती ख़बर लाया हूँ' शक रफ़ा कर लेना चाहिए।"

इस्हाक़ तुर्क इसे भी ख़्वाब और वाहिमा समझने लगा। उसे मालूम नहीं था कि यह आवाज़ें उन्हीं दो आदमियों और औरत की हैं जिन्हें उसने सेहरा में अपने सामने खड़े देखा था। उन्हें उसने वाहिमा समझा लेकिन यह इन्सान हक़ीक़ी थे। वाहिमा नहीं थे।

"तुम इसके पास बैठो!" एक आदमी ने कहा– "अगर होश में आ गया तो इसे पानी पिला देना और खाने के लिए भी कुछ दे देना, फिर हमें बताना कि यह कौन है।" आदमी बाहर निकल गये।

इस्हाक आहिस्ता–आहिस्ता आँखें खोलीं। उसके कानों में घोड़े के हिनहिनाने की आवाज़ पड़ी।

वह यकलख़्त बेदार हो गया और उठ बैठा। उसके मुँह से बेइख़्तियार निकला– "यह घोड़ा मुझे दे दो।"

"लो, थोड़ा पानी पी लो।" एक निस्वानी आवाज़ ने उसे अपनी तरफ़ मुतवज्जा किया। उसके होंठो की तरफ़ एक प्याला बढ़ रहा था। औरत ने कहा– "थोड़ा पीना, एक ही बार सारा पानी न पी लेना, मर जाओगे।"

उसे पानी की ही ज़रूरत थी। उसने यह देखने से पहले कि पानी पिलाने वाली कौन है, प्याला अपने हाथ में ले लिया और होंठों से लगाकर दो तीन घूंट पिए। प्याला होंठों से अलग करके बोला–"मैं जानता हूँ कि इस हालत में ज़्यादा पानी नहीं पीना चाहिए।"

उसने औरत को देखा। वह जवान लड़की थी। उसका लिबास उसी इलाक़े के सेहराई खाना बदोशों की तरह था लेकिन उसके नक़्श व निगार और रंग रूप से धोखा होता था कि वह ख़ानाबदोश लड़की नहीं। उसके सर पर लिपटे हुए रूमाल में से जो बाल नज़र आ रहे थे वह भी ख़ानाबदोश लड़कियों जैसे नहीं थे लेकिन इस इलाक़े मे कोई अमीर कबीर लड़की नहीं आ सकती, ख़ानाबदोश ही हो सकती थी।

"तुम किस काफ़िला के साथ हो?" लड़की ने जवाब दिया और पूछा– "तुम कहां से आये

हो और कहाँ जा रहे हो?"

इस्हाक तुर्क जवाब देने की बाजए पानी का प्याला मुंह से लगा लिया और पानी की नमी ने उसमें सोंचने की कुव्वत कुछ बहाल कर दी थी। उसे याद आ गया कि वह सुल्तान अय्यूबी का जासूस है और उसे अपना आप किसी पर ज़ाहिर नहीं करना चाहिए।

"मैं ताजिरों के एक काफ़िले के साथ था।" उसने सोंच कर जवाब दिया— "यहाँ से बहुत दूर एक रात डाकूओं ने हम्ला कर दिया। जो कुछ था ले गये। ऊंट और घोड़े भी ले गये। मैं वहाँ से भागा और भटक गया।"

"मैं तुम्हारे लिए कुछ खाने को लाती हूँ।" लड़की ने कहा और बाहर निकल गयी।

वह ख़ेमे में था जिसमें दीया जल रहा था। उसने ख़ेमे से ज़रा छुप कर बाहर देखा। चांदनी रात थी। उसे बाहर तीन चार आदमी इधर—उधर फिरते दिखाई दिए। उसे लड़की की हंसी सुनाई दी। फिर उसने लड़की को अपनी तरफ़ आते देखा। वह पीछे हट कर अपनी जगह बैठ गया। लड़की ने उसके आगे खाना रखा जो वह खाने लगा।

"तुम अब काहिरा जा रहे हो?" लड़की ने पूछा।

"नहीं।" इस्हाक तुर्क ने झूठ बोला— "सिकन्दरिया जा रहा हूँ।"

"सुल्तान अय्यूबी तो काहिरा में है।" लड़की ने मुस्कुरा कर कहा— "सिकन्दरिया जाकर क्या करोगे?"

"मेरा सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ क्या तअल्लुक है?" इस्हाक तुर्क ने हैरत से कहा।

"हमारा तो है।" लड़की ने कहा— "वह हमारा सुल्तान है। हम मुसलमान हैं। हम उसके हुक्म पर जाने कुर्बान करने को तैय्यार हैं।"

"लेकिन मुझ से तुमने यह क्यों कहा कि सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी काहिरा में है?" इस्हाक ने पूछा।

"सुनो।" लड़की ने उसके सर पर हाथ फेर कर प्यार से कहा— "तुम्हे घोड़ा चाहिए। तुम सुल्तान के पास जा रहे हो। हम तुम्हारी मदद करेंगे। तुम्हें घोड़ा देंगे। तुम बहुत जल्दी सुल्तान तक पहुँच जाओगे।"

"तुम्हे कैसे पता चला?"

"यह मत पूछो।" लड़की ने कहा— "तुम अपना फ़र्ज़ अदा कर रहे हो, हमे अपना फर्ज अदा करने दो। हम तुम्हें घोड़ा देकर समझेंगे कि हमने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया है।"

लड़की का अन्दाज़ ऐसा था कि इस्हाक तुर्क पसीज गया। उसने कहा— "हाँ मुझे बहुत जल्दी सुल्तान के पास पहुँचना है।"

"कोई बहुत ज़रूरी ख़बर है?"

"मुझ से ऐसी बातें न पूछो।" इस्हाक ने जवाब दिया—"तुम्हें इनके साथ दिलचस्पी नहीं होनी चाहिए।"

"मैं तुम्हारे लिए घोड़े का इन्तज़ाम करती हूँ।" लड़की ने उठते हुए कहा—"आराम करलो।

रात अभी शुरू हुई है। आख़िरी पहर रवाना होना।"

लड़की ख़ेमे से निकल गयी। इस्हाक़ तुर्क की जिस्मानी हालत ऐसी थी कि वह फ़ौरन सो गया।

❖

"कौन कहता था उसे वहीं पड़ा रहने देते?" लड़की ने ख़ेमे से बाहर जाकर अपने आदमियों से कहा– "मुझे उस्ताद मानते हो? यह अय्यूबी का जासूस है। कहता है कि एक घोड़ा दे दो, सुल्तान के पास जल्दी पहुँचना है। वह जब बेहोशी में बड़बड़ा रहा था तो मैंने कान लगाकर सुना था। वह सुल्तान अय्यूबी का नाम ले रहा था और कह रहा था कि बड़ी क़ीमती ख़बर लाया हूँ।" लड़की ने इस्हाक़ तुर्क के साथ जो बातें कीं और जो उससे कहलवाई थीं सबको सुना दीं।

यह ताजिरों का काफ़िला नहीं था। यह सब सलीबी जासूस और तख़रीबकार थे जो मिस्र में कुछ अर्सा अपनी ज़मीनदोज़ कार्रवाइयाँ करके वापस अपने या किसी और मुसलमान इलाके में जा रहे थे। उनके साथ उनके मुहाफ़िज़ भी थे। इन दस बारह आदमियों के साथ दो जवान लड़कियाँ थीं। इनका इस्तेमाल और रोल वही था जो आप इस सिलसिले की कहानियों में पढ़ चुके हैं। यह दोनों ख़ूबसूरत और तरबियत याफ़्ता थीं। यह गिरोह ताजिरों के भेस में जा रहा था। उनके पास ऊंट भी थे और घोड़े भी। सफ़र के दौरान यहाँ पानी और साया देखकर रूक गये थे। शाम से कुछ देर पहले उन्होंने दूर से इस्हाक़ तुर्क को आते देखा। दो सलीबी और एक लड़की उसकी तरफ़ चल पड़े। उनका इरादा यह था कि इस आदमी को अपने कैम्प से दूर रखें। वह देख रहे थे कि यह आदमी बहुत बुरी हालत में चल रहा है और ज़्यादा देर चल नहीं सकेगा।

इस्हाक़ तुर्क ने उन्हें देखा तो उसे सराब और वाहिमा समझा। फिर वह गिर पड़ा और बेहोश हो गया। यह दोनों सलीबी और लड़की उस तक पहुंचे। सबसे पहले लड़की ने कहा था कि यह कोई आम किस्म का मुसाफ़िर नहीं। दोनों आदमियों ने राय दे दी कि यह कोई अनाड़ी मुसाफ़िर है वरना इस हाल को न पहुँचता। ताहम इस्हाक़ की शकल व सूरत और जिस्म से शक होता था कि यह कोई मामूली आदमी नहीं। कुछ अज़राहे मज़ाक़ और कुछ शक की बिना पर वह उसे अपने कैम्प में उठा ले गये और एक खेमे में लिटा दिया। उसके मुँह पर पानी और शहद टपकाते रहे इस दौरान इस्हाक़ तुर्क बड़बड़ाता रहा। उस पर ग़शी तारी थी। ग़शी और नींद में ज़ेहन लाशऊर में बेदार होता है जासूसों को यह ख़ास तौर पर बताया जाता था कि वह दुश्मन के इलाके में बेहोश होने से बचें। बेहोशी में इन्सान की ज़ुबान से बाज़ औक़ात सीने के राज़ निकल आते हैं। इस्हाक़ को सेहरा ने बेबस और बेहोश कर दिया था वरना उसमें हैरान कुन क़ुव्वते बर्दाश्त और क़ुव्वते मदाफ़िअत थी। अगर बेहोशी में उसकी ज़ुबान बन्द रहती तो उसका असल रूप बेनक़ाब न होता।

इस्हाक़ होश में आया तो इस क़दर चालाक और ज़हीन होते हुए भी एक लड़की के जाल में आ गया। यह लड़की की उस्तादी थी। वह भी तरबियतयाफ़्ता थी और हसीन लड़की थी।

उसकी ज़ुबान पर यक़ीन करते हुए वह उसे मुसलमान समझ बैठा। लड़की ने बाहर जाकर अपने साथियों से बताया कि उसका शक सही निकला है और यह ख़ुबरू शख़्स सुल्तान अय्यूबी का जासूस है।

"मोटा शिकार है।" उस गिरोह के सरबराह ने कहा– "अब इससे यह मालूम करना है कि वह क्या राज़ अपने साथ ले जा रहा है और यह राज़ कहाँ से लाया है।"

"अगर उसने यह बता दिया कि वह राज़ कहाँ से लाया है तो उससे यह भी पूछेंगे कि वहाँ उसके साथी कौन–कौन हैं।" एक आदमी ने कहा।

"लेकिन इस पर यह ज़ाहिर न होने पाए कि हम कौन हैं।" सरबराह ने कहा– "मैं सुल्तान अय्यूबी के जासूसों को अच्छी तरह जानता हूँ। मौत को क़ुबूल कर लेते हैं कोई राज़ नहीं देते ख़ासी उस्तादी से बात करनी होगी।"

"मैं मुसलमानों को ज़्यादा अच्छी तरह जानती हूँ। लड़की ने मानीख़ेज मुस्कुराहट से कहा– "राज़ तो राज़ यह अपने ख़ंजर से अपना दिल निकाल कर मेरे क़दमों में रख देगा।"

"तुम उन मुसलमानों को जानती हो जिन पर हुक्मरानी और दौलत का नशा सवार होता है।" एक और सलीबी ने कहा–"तुम्हारा पाला कभी किसी ग़रीब मुसलमान और सिपाही से नहीं पड़ा। वह मुसलमान दौलत और रुत्बे के शैदाई होते हैं जिन्हें तुम गुमराह कर लेती हो। जिन मुसलमानों के पास दौलत की बजाए ईमान है कभी उनके क़रीब जाकर देखना।"

उनके पास एक और सलीबी लड़की बैठी थी। जिसने अभी तक कुछ भी नहीं कहा था। सरबराह ने उसकी तरफ़ देखा और क़दरे तंज़िया लहजे में उसे कहा– "क्या तुम मुसलमान के सीने से राज़ निकाल सकती हो बारबरा?"

लड़की ने उसे ख़ाली–ख़ाली निगाहों से देखा। सरबराह ने कहा– "तुमने क़ाहिरा में हमें बहुत ख़राब किया था। मरीनियाँ की उस्तादी देखो और उससे कुछ सीखो। मैं तुम्हें और कोई मौक़ा नहीं दूंगा। ज़रा मरीनिया की अक़्ल पर ग़ौर करो। हम सब इस आदमी को भटका हुआ कोई मुसाफ़िर और बेकार आदमी समझते थे लेकिन इसने उसे पहचान लिया कि यह मोटा शिकार हो सकता है। मैं तुम्हें इसीलिए मिस्र से निकाल कर ले जा रहा हूँ कि तुम सलीब को फ़ायदा पहुंचाने के बजाए नुक़सान पहुंचाती हो।"

"तुम्हारा अन्जाम बहुत बुरा होगा।" एक और सलीबी ने कहा–"तुम्हें इस पेशे से महरूम कर दिया जाएगा जिसमें तुम्हें शहज़ादियों की तरह रखा जाता है। इससे निकाल दिया गया तो किसी की दाश्ता बन कर रहने या इस्मत फ़रोशी के सिवा तुम्हारा कोई ठीकाना नहीं होगा।"

"ऊंह!" दूसरी लड़की जिसका नाम मीरीनिया था नफ़रत से बोली– "यह तो है ही इसी क़ाबिल।"

बारबरा ने मीरीनियां की तरफ़ क़हर भरी नज़रों से देखा। उसके चेहरे का रंग गुस्से से लाल हो गया लेकिन ख़मोश रही। वह भी मीरीनियां की तरह ख़ुबसूरत थी लेकिन जब से मिस्र गयी थी, उसकी उस्तादी मांद पड़ गयी थी। उसकी वजह यह थी कि उनका सरबराह भी

मिस्र में था और ज़मीनदोज़ कार्रवाईया कर रहा था। यह लोग किसी जगह आपस में मिला करते थे। सरबराह रुत्बे वाला अफ़सर था और ख़ुबरू भी था। वह बारबरा को पसन्द करता था और उसने बारबरा के साथ शादी करने का वादा कर रखा था। सरबराह जिस जासूस की सिफ़ारिश करदे उसे तरक्की और ईनाम दिलाया करता था। बारबरा बहुत ख़ुश थी मगर मीरीनियाँ ने सरबराह पर अपना जादू चला लिया। उस लड़की ने अपनी फ़नकारी से सरबराह को बारबरा के खिलाफ़ बदज़न कर दिया और उसके साथ मोहब्बत का खेल खेलने लगी। बारबरा बुझ के रह गयी। जासूसी और तखरीबकारी से उसकी तबीअत उचाट हो गयी। ऐसे मौके भी आये कि वह शक में पकड़ी जाने लगी थी लेकिन बच गयी।

उसे सुल्तान अय्यूबी के फ़ौज के किसी बड़े अहम हाकिम के साथ लगाया गया था लेनिक वह मतलूबा काम न कर सकी। सरबराह को मालूम हो गया कि उसके दिल में मीरीनियाँ के खिलाफ़ रक़ाबत पैदा हो गयी है। उसने बेहतर समझा कि पूरे गिरोह को वापस ले जाए और उसकी जगह नया गिरोह भेजा जाए। हक़ीक़त भी यही थी कि बारबरा मीरीनियां से जलने लगी थी। सरबराह उसका दुश्मन बन गया था। मीरीनिया उसके साथ तंज़ और नफ़रत से बात करती थी। उसे अपना अन्जाम नज़र आ रहा था। अब मीरीनियां ने उसे कहा कि यह तो है ही इसी क़ाबिल तो उसके अन्दर इन्तक़ाम की आग भड़क उठी।,

"इस आदमी के सीने से सिर्फ़ मैं राज़ निकाल सकती हूँ।" मीरीनियां ने कहा– "यह बारबरा के बस का रोग नहीं।" बारबरा गुस्से से उठी और अपने ख़ेमे में चली गयी।

❖

यह आदमी रात को कहीं भाग के नहीं जा सकता।" सरबराह ने कहा– "अभी उसके पास भागने की कोई वजह भी नहीं। फिर भी इहतियात लाज़िमी है। इसे बेहोश कर देना चाहिए।"

थोड़ी देर बाद मीरीनियां उस ख़ेमें में दाख़िल हुई जिस ख़ेमें में इस्हाक़ तुर्क सोया हुआ था। दीया जल रहा था। मीरीनियां के हाथ में एक रूमाल था जो बेहोश करने वाली दवाई में भींगा हुआ था। वह दबे पांव इस्हाक़ के पास गयीऔर बैठ गयी। उसने रूमाल इस्हाक़ की नाक पर रख दिया। कुछ देर बाद रूमाल हटाया और बाहर निकल गयी। अपने साथियों के पास जाकर कहने लगी– "कल सूरज निकलने के बाद ज़रा होश में आयेगा।"

"इत्मीनान से सो जाओ।" सरबराह ने कहा– "कल हम सलाहुद्दीन अय्यूबी के इस जासूस को उसकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ घोड़ा ज़रूर देंगे लेकिन वह उस घोड़े पर क़ाहिरा नहीं बैरूत जायेगा। यह हमारा हमसफ़र होगा।"

सुल्तान अय्यूबी के एक जासूस को पकड़ लेना बहुत बड़ी कामयाबी थी। वह शराब पीने और ख़ुशिया मनाने लगे। मीरीनियाँ उछल कूद रही थी मगर बारबरा जैसे उस जश्न से लातअल्लुक़ थी। इसीलिए वह अपने ख़ेमे में चली गयी थी। बहुत देर बाद सब एक–एक करके अपने–अपने ख़ेमे में चले गये। बारबरा भी जा चुकी थी। उस टोले का सरबारह मीरीनियाँ को अपने साथ वहाँ से दूर ले गया। बारबरा ख़ेमें में तन्हा लेटी उदासियों और नाकामियों में उलझी हुई थी। उसके दिल में इन्तक़ाम की आग सुलगने लगी थी। बाहर

जश्न शराब नोशी का शोर उस आग को भड़का रहा था। जब शोर ख़त्म हुआ तो वह और ज़्यादा बेचैन हो गयी। उसने ख़ेमे का पर्दा हटा कर देखा। उसे अपना सरबराह और मीरीनियां टीले की तरफ़ जाते नज़र आये चाँदनी रात में कुछ दूर तक नज़र आये और ग़ायब हो गये।

बारबरा के कानों में मीरीनियाँ के यह अल्फ़ाज़ गूंज रहे थे– "सिर्फ़ मैं उसके सीने से राज़ निकाल सकती हूँ।" बारबरा के दिमाग़ में यह सोंच आई कि वह मीरीनिां को नाकाम कर सकती है। इसका यह तरीका हो सकता था कि वह इस्हाक़ तुर्क को बता दे कि हम सब सलीबी जासूस हैं ताकि वह अपना असल रूप छुपा ले। उसने यह भी सोंचा कि वह इस्हाक़ को यहाँ से भगा दे। यह सब इन्तक़ामी सोंचें थीं। वह सबके सो जाने का इन्तज़ार करती रही। उसे नींद नहीं आ रही थी। उसके ख़ेमे का पर्दा उठा। उसे मालूम था कि यह कौन है। उसे सरगोशी सुनाई दी– "बारबरा।"

"चले जाओ मार्टिन" बारबरा ने ग़मऔर ग़ुस्से से कांपती हुई आवाज़ में कहा– "चले जाओ यहाँ से।"

मार्टिन जाने की बजाए ख़ेमे के अन्दर चला गया और बारबरा के पास जा बैठा। बोला– "तुम्हें आख़िर हो क्या गया है। क्या तुम यह समझती हो कि हमारा यह लीडर मीरीनियां के साथ दिल से मोहब्बत करता है? और क्या वह तुम्हें दिल से चाहता रहा है? यह सब बदमाशी है बारबरा। तुम दिल पर बोझ डाल करअपने फ़राईज़ से लापरवाह हो गयी हो। अगर सच्ची मोहब्बत की ख़्वाहिशमंद हो तो वह मेरे दिल में है। मैं ने तुम्हें कब धोखा दिया है?"

'तुम सरापा धोखा हो।" बारबरा ने जल कर कहा– "हम सब धोखा हैं। मैं अपने फ़राईज़ से लापरवाह नहीं हुई, मेरा दिल तो दुनिया से उचाट हो गया है। हम सब को बचपन से फ़रेबकारी की ट्रेनिंग दी गयी थी। इसका मक़सद यह था कि हम मुसलमानो को फ़रेब देकर उन्हें सलीब के मुक़ाबले में बेकार कर दें मगर हम एक दूसरे को भी फ़रेब देते हैं। हम सलीब गले में लटकाकर बदकारी करते। एक दूसरे को धोखे देते हैं। मुसलमान हमसे अक़लमंद हैं कि वह जासूसी और तख़रीबकारी के लिए अपनी लड़कियों को इस्तेमाल नहीं करते। हमारे लीडर ने पहले मुझे मोहब्बत का झांसा दिया। मीरीनियां चूंकि ज़्यादा होशियार है इसलिए उस ने लीडर पर कब्ज़ा कर लिया। तुमने मुझ पर कब्ज़ा करने की कोशिश की और नतीजा यह निकला कि हमारा सारा गिरोह बेकार वापस जा रहा है। अगर तुम्हारे साथ हम दो लड़कियाँ न होतीं तो तुम मर्द अपना काम ख़ुश अस्लूबी से करते औरत का वजूद मर्दों के दर्मियान दुश्मनी पैदा करता है।"

"इसीलिए हम मुसलमानों के दर्मियान अपनी तरबियतयाफ़्ता औरतों को छोड़ देते हैं।" मार्टिन ने कहा– "उनके दर्मियान दुश्मनी पैदा करना ही हमारा मक़सद है। हम यह इसलिए करते हैं कि इस्लाम को ज़वाल आये और सलीब की हुक्मानरी क़ायम हो।" उसने झुंझला कर बारबरा को अपनी तरफ़ घसीट कर कहा– "इतनी प्यारी रात को ऐसी ख़ुश्क बातों से बेमज़ा न करो बारबरा। आओ बाहर चलें। देखो चांदनी कितनी हसीन है।"

"मेरा दिल टूट चुका है।" बारबरा ने कहा– "मैं नाकाम हो चुकी हूँ। मेरे दिल में नफ़रत

पैदा हो गयी है। मैं कहीं नहीं जाऊंगी। तुम जाओ।"

"एक रोज तुम मेरे क़दमों में आ बैठोगी और कहोगी, मुझे बचाओ। देखो यह लोग मुझे कुत्तों के हवाले कर रहे हैं। उस वक़्त मैं तुम्हारी मदद नहीं कर सकूंगा।"

"मैं अब भी कुत्तों के हवाले हूँ।" बारबरा ने हिकारत से कहा– "मैं तुमसे कभी मदद नहीं मागूंगी। यहाँ से चले जाओ।"

मार्टिन ग़ुस्से से बाहर निकल गया। वह ख़ेमे का पर्दा हटाकर उसे देखती रही और इन्तज़ार करती रही कि मार्टिन सो जाए। उसे मालूम था कि सरबराह और मीरीनिया बहुत दे से आयेंगे.....कुछ देर बाद वह ख़ेमे से निकली। वह उठी नहीं, पांव पर बैठे–बैठे एक तरफ़ को सरकती गयी। आगे ज़रा गहराई थी। उसमें उतर गयी। वहाँ से झुक कर चलती ख़ेमे के पीछे गयी और दूर का चक्कर काट कर उस ख़ेमे के क़रीब पहुंच गयी जिसमें इस्हाक़ तुर्क बेहोश पड़ा था। बारबरा को मालूम नहीं था कि उसे बेहोश कर दिया गया है। वह बैठ गयी और पांव पर सरकती ख़ेमे के अन्दर चली गयी। दीया ज़ल रहा था। उसने इस्हाक़ को हिलाया मगर वह न जागा। उसके सर को पकड़कर झझोंड़ा, उसे बुलाया। इस्हाक़ तुर्क पर कुछ असर न हुआ।

"उठो बदबख़्त।" उसने इस्हाक़ के मुंह पर थप्पड़ मार कर कहा– "तुम धोखे में आ गये हो। हम सब जासूस हैं। तुम क़ाहिरा नहीं पहुंच सकोगे, बैरूत में क़ैदखाने के तहखाने में अज़ीयतनाक मौत मरोगे।"

इस्हाक़ बेहोश पड़ा रहा जैसे मर गया हो। बारबरा को ख़ेमे के बारह हल्की–हल्की हंसी की आवाज़ें सुनाई देने लगीं मगर वह घबराई नहीं। वह तरबियतयाफ़्ता थी। आवाज़ें क़रीब आ गयी तोवह इस्हाक़ के पास बैठी रही। आवाज़ें ख़ेमे तक पहुंच गयी। इनमें एक आवाज़ मीरीनिया की थी। वह सरबराह के साथ अपने क़ैदी को देखने आई थी।

"हम सब मुसलमान हैं।" बारबरा ने इस्हाक़ से मुख़ातिब होकर बुलन्द आवाज़ से कहा– "हम तुम्हें ऐसा घोड़ा देंगे जो तुम्हें दो दिनों में क़ाहिरा पहुंचा देगा।"

"बारबरा!" उसे अपने सरबराह की आवाज़ सुनाईदी। उसने घूम कर देखा, ख़ेमे में सरबराह और मीरीनिया खड़े थे। सरबराह ने कहा– "तुम अपना फ़र्ज़ अभी अदा नहीं कर सकोगी।" उसे बेहोश कर दिया गया है।"

"यह मेरा शिकार है बारबरा।" मीरीनियां ने तंज़िया मुस्कुराहट से कहा– "यह सिर्फ़ मुझे मालूम है कि इसके सीने से मैं कैसे राज़ निकाल सकती हूँ।"

सरबराह और मीरीनिया हंस पड़े। बारबरा तंज़िया हंसी को समझ गयी। अपने आप को क़ाबू में रखते हुए बोली–"मैने कोई ग़लती तो नहीं की। अपना फर्ज़ अदा कर रही हूँ"

"जाओ सो जाओ।" सरबराह ने कहा।

वह उठी और बाहर को निकल गयी। सरबराह ने इस्हाक़ की नब्ज़ पर हाथ रखा फिर मीरीनिया को साथ लेकर बाहर निकल गया। इस्हाक़ तुर्क सुल्तान अय्यूबी के लिए बड़ी ही अहम इत्तलाअ लिए गहरी बेहोशी में पड़ा रहा।

❖

अली बिन सुफ़ियान!" काहिरा में सुल्तान अय्यूबी ने अपनी इन्टेलीजेंसी के सरबराह अली बिन सुफ़ियान से कहा– "उधर से अभी कोई इत्तलाअ नहीं आई। इसका यह मतलब है कि वहाँ कोई तबदीली नहीं आई। कोई हलचल नहीं। मैं तस्लीम नहीं कर सकता।"

"और मैं यह तस्लीम नहीं कर सकता कि वहाँ कोई तबदीली या हलचल हो तो हम तक इत्तलाअ न पहुंचे।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "वहाँ हमारे जो आदमी हैं वह मामूली सूझ बूझ वाले नहीं। इस्हाक तुर्क को आप भी अच्छी तरह जानते हैं। वह ज़मीन का सीना चीर कर राज़ और ख़बरे लाने वाला आदमी है। बाकी भी उसी जैसे होशियार और अक्ल वाले हैं।"

"सलीबी उन वाकिआत से ज़रूर फ़ायदा उठायेंगे जो उस तरफ रोनूमा हुए हैं।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा–"बिल्डून अपने फिरंगी लश्कर के साथ हलब और मुसिल के इर्द गिर्द मौजूद है।"

"मगर अल्मलकुस्सालेह मर गया है।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "अब हलब का हुक्मरान अज़ाउद्दीन है। वह सलीबियों के साथ आने वाला नहीं।"

"अली!" सुल्तान अय्यूबी ने क़दरे हैरत से कहा– "तुम भी ख़ुश फ़हमियों में मुब्तला हो रहे हो? तुम शायद इस ख़्याल से अज़ाउद्दीन को पक्का मुसलमान समझते हो कि मैं उसे अपना दोस्त समझता हूं और मैंने उसकी मदद के लिए अपना मंसूबा बदल कर तलख़ालिद पर हम्ला किया और आरमिनियों से हथियार डलवाये थे मगर मैं अपने मुसलमान हुक्मरानों और उमरा पर भरोसा नहीं कर सकता। अज़ाउद्दीन हमारा इत्तेहादी हो सकता है, उसके उमरा और वुज़रा में सलीबियों के बही ख़्वाह मौजूद हैं। अली! तुमने देखानहीं कि मोमिन किस्म के हुक्मरान भी अपने वज़ीरों और मुशीरों के ख़ुशामदाना मश्वरों के जाल में आकर मोमिन रहते हुए भी वतन और कौम को ग़लत फ़ैसलों से तबाही की खाइयों में फेंक देते हैं? मैं मुशीरों के खिलाफ़ नहीं। यह कुर्आन का हुक्म है जो रसूले अकरम सल्ल0 को ख़ुदा ने दिया था कि फ़ैसले से पहले मश्वरा कर लिया करो, मगर हुक्मरान में इतनी अक्ल होनी चाहिए कि मश्वरा देने वालों की नीयत और किरदार को समझे। ख़ुशामद हुक्मरानी के नशे को और तेज़ करती है। एक वक़्त आता है कि हुक्मरान ख़ुशामद की सुरेली लोरियों में मीठी नींद सो जाता है। सोये हुए ज़ेहन वाला हुक्मरान कितना ही ग़ाज़ी क्यों न हो कौम और वतन को ले डूबता है। यही ख़तरा मुझे अज़ाउद्दीन के तरफ़ से नज़र आ रहा है।"

"मैं इस तवक्को पर बात कर रहा हूँ कि नुरूद्दीन ज़ंगी मरहूम की बेवा ने अज़ाउद्दीन के साथ शादी कर ली है।"

अली बिन सुफ़ियान ने कहा–"आप तक यह इत्तलाअ पहुंच चुकी है कि मोहतरमा रज़ीअ ख़ातुन ने यह शादी सिर्फ़ इसलिए कुबूल की है कि हलब और मुसिल की इमारतें और उनकी फ़ौजें हमारी इत्तेहादी रहें। इस ख़ातुन को शादी की और क्या ज़रूरत हो सकती है?"

"इसके बावजूद मुझे शक है।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "और मेरे शक की वजह यह है कि अज़ाउद्दीन सलीबियों के ख़तरे की बराहे रास्त ज़द में है। वह अपने तहफ़्फ़ुज़ के लिए

सलीबियों का दरपरदा इत्तेहादी बन सकता है। मुझे वहाँ की इत्तलाअ मिलनी चाहिए। तुम मेरी आँखें और कान हो अली! मैं ने अंधेरे में कभी पेशक़दमी नहीं की।"

"कुछ दिन और इन्तज़ार कर लिया जाए।" अली बिन सुफ़ियान ने मश्वरा दिया।

"मैं ज़्यादा देर इन्तज़ार नहीं करूंगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "तुम जानते हो मैंने फ़ौज को तैय्यारी का हुक्म दे रखा है। यह तुम्हारे सामने की बात है कि मैं दिन रात फ़ौज को जंगी मश्कें करा रहा हूँ। राज़ की यह बात भी सुन लो कि मैं हलब और मुसिल की तरफ़ नहीं जाऊंगा। मेरा हदफ़ बैरूत होगा। मैं अब दिफ़ाई जंग नहीं लड़ूंगा। हलब वग़ैरह के इलाक़ों में अपनी फ़ौज ले जाने का मतलब यह होगा कि मैं उन इलाकों के दिफ़ाअ के लिए ले जा रहा हूं। अब मेरा अन्दाज़ जारिहाना होगा। बैरूत फ़िरंगियों का दिल है। टांगों और बाज़ूओं पर वार करने की बजाए क्यों न हम दुश्मन के दिल पर एक ही वार करके ख़त्म कर दें। अब मैं कौम और फ़ौज को जारहियत की तरबियत दे रहा हूँ। अपने इलाक़ों में लड़ते रहने से हम बैतुलमुक़द्दस तक कभी नहीं पहुंच सकते.....मालूम करो अली! मालूम करो। वहाँ से अभी तक कोई इत्तलाअ नहीं आई। मुझे दो राज़ दरकार हैं। एक यह कि बैरूत में फ़िरंगी फ़ौज की सरगर्मियाँ क्या हैं और हलब में अज़ाउद्दीन की नीयत क्या है। क्या हम एक और ख़ानाजंगी की तरफ़ तो नहीं बढ़ रहे?"

"बैरूत में इस्हाक़ तुर्क है।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "वह ख़ुद न आय तो किसी और को भेज देगा।" अली बिन सुफ़ियान ने कहा– "मैं यहां से किसी को रवाना कर देता हूँ।"

"मैं ज़्यादा दिन इन्तज़ार नहीं कर सकता अली!" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– " यहाँ से किसी को रवाना करोगे। वह जायेगा। वहाँ के हालात मालूम करेगा और वापस आयेगा। इसमें कम अज़कम तीन महीने लग जायेंगे। मैं चन्द दिनों तक फ़ौज को कूच का हुक्म दे दूंगा।"

"तो फिर आप अंधेरे मे पेशक़दमी करेंगे?" अली ने पूछा।

"छापामारों को हरावल से बहुत आगे फैला कर रखूंगा।" सुल्तान अय्यूबी ने कहा– "मैं अल्लाह के हुक्म से अल्लाह की सरज़मीन की आबरू की ख़ातिर जा रहा हूँ। मैं अपनी सलामती के लिए मिस्र मे आराम से नहीं बैठ सकता।"

यह अप्रैल 1182 ई0 के दिन थे जब सुल्तान अय्यूबीऔर अली बिन सुफ़ियान अपने उन जासूसों में से किसी का इन्तज़ार बेताबी से कर रहे थे जो उन्होंने सलीबियों के मक़बूज़ा मुसलमान इलाकों और हलब वग़ैरह भेज रखे थे। आप पीछे पढ़ आये हैं कि इससे दो माह क़ब्ल नुरूद्दीन जंगी का बेटा अल्मलकुस्सालेह जो वालिये हलब बन कर सुल्तान अय्यूबी के ख़िलाफ़ हो गया था मर गया था। सुल्तान अय्यूबी के साथ जंग न करने और उसका इत्तेहादी रहने के मुआहिदे के बावजूद वह दरपरदा सलीबियों का हवारी रहा था। उसकी मौत सलीबियों और सुल्तान अय्यूबी के लिए बहुत अहम वाकिआ था। अलसालेह ने मरने से पहले अज़ाउद्दीन मस्ऊद को अपना जानशीं मुक़र्रर कर दिया था। यह वाकिआ भी अहम था और सबसे ज़्यादा अहम वाकिआ यह हुआ कि अज़ाउद्दीन की ख़्वाहिश के मुताबिक नुरूद्दीन जंगी

मरहूम की बेवा (अल्तालेह की माँ) रज़ीअ खातुमन ने उसके साथ शादी कर ली थी। रज़ीअ खातुन शादी की ख़ातिर शादी नहीं करना चाहती थी। सुल्तान अय्यूबी के भाई अल आदिल ने उस तक अज़ाउद्दीन का पैग़ाम लेकर उसे कहा था कि यह शादी दमिश्क और हलब की होगी, इसलिए आइंदा ख़ानाजंगी का ख़तरा खत्म हो जाएगा और सलीबियों के खिलाफ़ मुहाज़ मजबूत किया जा सकेगा। रज़ीअ खातुन यह कह कर रज़ामन्द हो गयी थी कि मेरी ज़ाती ख़्वाहिश मर चुकी है। मैं अज़मते इस्लाम की खातिर हर कुर्बानी देने के लिए तैय्यार हूँ।

उसने कुर्बानी दे दी अज़ाउद्दीन के साथ शादी कर ली। हलब और मुसिल की इमारतों पर बड़ी मुद्दत से सलीबियों के असरात काम कर रहे थे जिस के नतीजे में यह इमारतें सुल्तान अय्यूबी के खिलाफ मुत्तहिद हो गयीं और तीन साल मुसलमानों में ख़ानाजंगी होती रही। आप इसकी तफ़सीलात पढ़ चुके हैं। अब रज़ीअ खातुन ने अज़ाउद्दीन के साथ शादी कर ली तो सलीबियों को यह फ़िक्र लाहिक हुई कि रज़ीअ खातुन सलीबियों के सबसे बड़े दुश्मन ज़ंगी की बेवा है इसलिए वह हलब और मुसिल और दिगर मुसलमान इलाकों से सलीब के असरात ख़त्म कर देगी। इधर मिस्र में सुल्तान अय्यूबी को यह परेशानी लाहिक थी कि सलाबी जंगी कार्रवाई करेंगे। सुल्तान ने यह भी सोचा था कि अरब से उसकी ग़ैरहाज़िरी से सलीबी फ़ायदा उठायेंगे।

सुल्तान अय्यूबी ने हालात का और आने वाले हालात का भी जायज़ा लिया और फ़ैसला किया कि पेशतर इसके कि सलीबी पेशकदमी करके हलब और मुसिल का मुहासिर कर लें, वह मिस्र से बर्क रफ़्तार पेशक़दमी करके और बैरूत को मुहासिरे में लेले। यह बड़ा ही नाज़ुक और ख़तरनाक फ़ैसला था। बैरूत के मुहासिरे में लेने के लिए उसे फ़ौज दुश्मन के इलाके में से गुज़ार कर ले जानी थी। रास्ते में ही तसादुम का ख़तरा था। बहरहाल सुल्तान अय्यूबी ने तमाम ख़तरों का जायज़ा ले लिया था और हर किस्म के सूरते हाल का मुकाबला करने के लिए तैय्यार था। उसने जासूसों की इत्तलाआत के बग़ैर कम ही कभी पेशकदमी की थी लेकिन अब हालात का तकाज़ा कुछ और था। उसे सबसे ज़्यादा ज़रूरत इस इत्तलाअ की थी कि अज़ाउद्दीन की नीयत क्या है और क्या रज़ीअ ख़ातुन का वहां कोई असर पड़ रहा है या नहीं।

अली बिन सुफ़ियान के भेजे हुए जासूस अनाड़ी नहीं थे। राज़ हासिल करने और काहिरा तक पहुंचाने के लिए वह जान की बाज़ी लगा दिया करते थे। उन्हें यह सबक हमेशा याद रहता था कि आधी जंग जासूस जंग शुरू होने से पहले ही जीत लिया करते हैं, और यह भी कि सिर्फ एक जासूस की कोताही या ग़लत इत्तलाअ अपनी पूरी फ़ौज को मरवा सकती है और यह भी कि सिर्फ एक जासूस दुश्मन की फ़ौज से हथियार डलवा सकता है। अली बिन सुफ़ियान को इस्हाक तुर्क पर पूरा पूरा भरोसा था। यह भरोसा बजा था। इस्हाक बड़े ही अहम राज़ लेकर काहिरा के लिए रवाना हुआ था। सुल्तान अय्यूबी को ख़बरदार करने आ रहा था कि बिल्डुन का फिरंगी लश्कर बैरूत के इर्द गिर्द दूर-दूर तक फैल गया है और अज़ाउद्दीन सलीबियों की तरफ झुक रहा है, इसलिए सुल्तान अय्यूबी कहीं बैरूत की तरफ फ़ौज न ले

जाए और अगर उधर ही पेशकदमी का इरादा हो तो इस्हाक फिरंगियों की फ़ौज के फैलाव और पोज़ीशनों का नक़्शा बताने आ रहा था। मगर वह रास्ते में ही सलीबी जासूस के गिरोह के जाल में फंस गया।

❖

'आख़िर वह इत्तलाअ क्या है जो तुम सुल्तान अय्यूबी तक ले जा रहे हो?" सलीबी जासूस के इस गिरोह के सरबराह ने इस्हाक तुर्क से पूछा और कहा–"हम भी मुसलमान हैं। सुल्तान के वफ़ादार और शैदाई हैं। तुम्हारे लिए घोड़ा तैय्यार खड़ा है। खाने पीने का सामान घोड़े के साथ बांध दिया गया है।"

"अल्लाह हमारे सुल्तान को ऐसे वफ़ादारों और शैदाइयों से महफूज़ रखे।" इस्हाक ने कहा–"मैंने इस लड़की को कहा था कि आधी रात के कुछ देर बाद मुझे जगा देना। मैं फ़ौरन रवाना होना चाहता था मगर तुमने मुझे जगाया नहीं। आधा दिन गुज़र गया है। वक़्त अलग ज़ाया हुआ और अब मैं रवाना हुआ तो घोड़ा इतना सफ़र तय नहीं कर सकेगा जितना रात को कर सकता है।"

"तुम थके हुए थे।" मीरीनिया ने प्यार से कहा–"तुम ऐसी गहरी नींद सोये हुए थे कि तुम्हें जगाना ज़ुल्म समझा। घोड़ा इतना अच्छा है कि जो वक़्त ज़ाया हुआ है घोड़ा उसे पूरा कर देगा।'

इस्हाक तुर्क को अभी यह एहसास नहीं हुआ था कि जिसे वह थकन के बाद गहरी नींद समझ रहा है वह किसी दवाई के असर की बेहोशी है। इतना ज़्यादा वक़्त सोने के बाद भी उसका जिस्म टूट रहा था। यह दवाई का असर था जिसे वह थकन का असर समझ रहा था। वह सफ़र के काबिल नहीं था लेकिन फ़ौरन रवाना होने के लिए बेकरार था।

उसकी आँख उस वक़्त खुली जब सूरज सर पर आया हुआ था। जासूसों का सरबराह और मीरीनिया उसके होश में आने से पहले ही उसके पास बैठ गये थे। उसकी आँख खुली तो उसके साथ बातें करने लगे। उन्होंने ऐसी बातें की जिनसे इस्हाक तुर्क को उन पर ज़रा सा शुबहा नहीं हुआ। वह उन्हें मुसलमान समझता रहा लेनिक वह उनके इस सवाल का जवाब देने से गुरीज़ करता रहा था कि वह सुल्तान अय्यूबी के लिए क्या इत्तलाअ ले के जा रहा है।

सरबराह बाहर निकल गया। यह इशारा था कि मीरीनिया उसे अपने जादू से राम करे। इस दिलकश लड़की ने उकसे ज़ज़्बात को मश्तअिल कर देने वाले अन्दाज़ से कहा कि वह उसे दिल व जान से चाहने लगी है और भी बहुत कुछ कहा।

"काहिरा चलके इश्क व मोहब्बत के लिए वक़्त निकाल सकूंगा।" इस्हाक ने कहा– 'अगर तुम मुझे दिल व जान से चाहती हो तो मुझे फ़र्ज अदा करने में मदद दो।' वह उठ खड़ा हुआ और खेमे से निकल गया। कहने लगा– "मुझे फ़ौरन घोड़ा दो।"

"कुछ खा पी लो।" मीरीनिया ने उसे बाज़ू से पकड़कर खेमे में वापस ले जाते हुए कहा– "मैं तुम्हें भूखा प्यासा तो नहीं जाने दूंगी।" वह इस्हाक से बग़लगीर हो गयी मगर इस्हाक को फ़र्ज की अदाइगी ने पत्थर बना दिया था। मीरीनिया ने उसे बैठा दिया और खेमे के दरवाज़े

में जाकर बुलन्द आवाज़ से कहा— "फ़ौरन खाना लाओ। वक़्त नहीं है।"

खाना बारबरा लेकर आई और इस्हाक के आगे रखकर पीछे हट गयी। मीरीनिया इस्हाक के पास बैठी थी और बारबरा उधर जा खड़ी हुई जिधर मीरीनिया की पीठ थी। इस्हाक ने खाना खाते हुए बारबरा की तरफ़ देखा। बारबरा ने हाथ में छोटी सी सलीब छुपा रखी थी। उसने यह सलीब इस्हाक को दिखाई, अपने सीने पर हाथ रखा। मीरीनिया की तरफ इशारा किया फिर बाहर को इशारा करके उंगली हिलाई और उंगली अपने होंठो पर रखी। वह ख़ेमे से निकल गयी। यह इशारे इतने वाज़ेह थे कि इस्हाक साफ़ समझा कि सब सलीबी हैं और उन्हें कुछ नहीं बताना। वह चौंक उठा लेकिन उस्ताद था। अपने रद्देअमल का इज़हार न किया। शक पुख़्ता हो गया। उसे इस सवाल का जवाब मिल गया कि यह लोग उससे इसका इसरार क्यों कर रहे कि वह सुल्तान अय्यूबी के लिए क्या इत्तलाअ ले के जा रहा है। तब उसे यह ख़्याल भी आया कि उसे नींद पर इतना काबू था कि ऐसी बेहोशी की नींद कभी नहीं सोया था। उसे जागते ही नाक में अजीब सी बू महसूस हुई थी। वह जान गया कि उसे सोते में बेहोश कर दिया था, मगर उसे इस सवाल का कोई जवाब न सूझा कि दूसरी लड़की उसे यह इशारे क्यों कर गयी है। क्या वह कोई मुसलमान लड़की है जो उनके जाल में फंसी हुई है?

मीरीनिया उसे बड़ी ही प्यारी बातों और मस्हूर कर देने वाली मुस्कुराहटों और अदाओं से अपने जाल में फांसने की कोशिश कर रही थी और इस्हाक का दिमाग़ बड़ी तेजी से सोच रहा था कि वह क्या करे और इन लोगों से किस तरह रिहाई हासिल करे। उसने मीरीनिया से पूछा कि इस काफ़िले में कितने आदमी हैं। मीरीनिया ने बता दिया। कुछ और बातें पूछा और कहा— "चलो, मुझे घोड़ा दो।" वह बाहर निकल गया। वह देखना चाहता था कि बाहर कितने आदमी हैं और उसके निकल भागने के इम्कानात क्या हैं। बाहर उसने कोई घोड़ा न देखा जो उसे बताया गया था कि उसके लिए तैय्यार खड़ा है। मीरीनिया उसके पास आ खड़ी हुई।

"घोड़ा कहाँ है?" इस्हाक ने पूछा।

"मैं जाकर देखती हूँ।" वह चली गयी।

❖

"तुम ठीक कहते थे।" मीरीनिया ने अपने सरबराह को जाकर बताया— "यह शख़्स पत्थर है। वह घोड़े के सिवा कोई बात नहीं करता। हम जो पूछते हैं उसकानाम नहीं लेने देता।"

"उसे कोई शक तो नहीं हुआ?"

"अभी नहीं।" मीरीनिया ने जवाब दिया— "लेकिन वह बतायेगा कुछ भी नहीं।"

"इसका मतलब यह है कि तुम नाकाम हो गयी हो।"

उन्हें मालूम नहीं था कि बारबरा ने उनसे इन्तक़ाम लिया है और उसने यह साबित कर दिया है कि मीरीनिया कोई जादूगरनी नहीं जो नामुम्किन काम भी कर दिखायेगी। वह तो यह सोच रही थी कि सुल्तान अय्यूबी के इस जासूस को यहाँ से भाग जाने में मदद दे लेकिन यह मुम्किन नज़र नहीं आता था।

इस्हाक फिर खेमे से निकल गया। उसने मीरीनिया और उसके सरबराह को देख लिया। वह दूर खड़े बातें कर रहे थे। वह उनकी तरफ दौड़ा गया और पूछा कि घोड़ा कहाँ है।

"कहीं भी नहीं है।" सरबराह ने बिल्कुल बदले हुए लहजे में कहा– "तुम कहीं भी नहीं जा सकोगे।"

इस्हाक ने अपनी कमर पर हाथ रखा। वहाँ न तलवार थी न खंज़र। उसने उन लोगों की असलियत जान लेने के बावजूद कहा– "मैं हैरान हूँ कि तुम मुसलमान होते हुए भी मेरे रास्ते में आते हो।"

"अगर हमसे इज़्ज़त कराना चाहते हो तो बता दो कि अपने सुल्तान के लिए क्या पैग़ाम ले जा रहे हो।" सरबराह ने पूछा।

"सिर्फ इतना सा पैग़ाम है कि हमारे एक अमीर अज़ाउद्दीन ने नूरूद्दीन ज़ंगी की बेवा के साथ शादी कर ली है।" इस्हाक ने कहा।

"यह ख़बर पूरानी हो गयी है।" सरबराह ने कहा– "तुम्हारा सुल्तान दो माह गुज़रे यह ख़बर सुन चुका है, और वह अपनी फ़ौज को शाम मे लड़ाने के लिए तैय्यार कर रहा है। सही बात बताओ।"

"क्या तुम सही बात बता दिया करते हो?" इस्हाक तुर्क ने पूछा।

"तुम्हें सही बात बतानी होगी।" सरबराह ने कहा– "और तुम्हें हमारे साथ चलना होगा। तुम निहत्थे हो। निहत्थे न भी होते तो इतने आदमियों से लड़ न सकते.....सुनो दोस्त! मैं तुम्हारे ज़िन्दा रहने और शहज़ादों की तरह ज़िन्दा रहने की एक सूरत पैदा कर सकता हूँ। मेरी तजवीज़ मंज़ूर कर लो। हमारे साथ चलो। हमारे लिए यही काम करो जो सुल्तान अय्यूबी के लिए कर रहे हो और ज़र व जवाहरात में खेलो।" उसने मीरीनिया की तरफ इशारा करके कहा– "इस किस्म की लड़कियाँ तुम्हारी खिदमत के लिए हाज़िर रहा करेंगी। क्यों सेहराओं मे मारे–मारे फिर रहे हो।"

"मैं सलीब के लिए काम करूंगा?"

"नहीं करोगे तो हमारे किसी कैदखाने के तहखाने में बन्द रहोगे।" सरबराह ने कहा– "वह ऐसा जहन्नम होगा कि न मरोगे न ज़िन्दा रहोगे। तुम उस सज़ा का तसव्वुर भी नहीं कर सकते। तसव्वुर भी हौलनाक है। सोच लो और हमारे साथ चलो। तुम वापस नहीं जा सकोगे।"

"तुम मुझ पर एतमाद किस तरह करोगे?" इस्हाक तुर्क ने कहा– "मैं तुम्हारे गिरोह में शामिल हो जाऊं तो तुम मुझे मेरे ही इलाके में भेजोगे। तुम किस तरह यकीन करोगे कि मैं अपने ही इलाके मे नहीं रह जाऊंगा और तुम्हें धोखा नहीं दूंगा?"

"हमारे पास इसका इन्तज़ाम है।" सलीबी सरबराह ने कहा–"तुम अपने इलाके की बात करते हो। हम तुम्हें तुम्हारे घर के तहखाने से भी निकाल लायेंगे। तुम्हारा ख़्याल है कि तुम्हारे मुल्क में हमारे जितने जासूस हैं उनमें तुम्हारे मुल्क का कोई बाशिन्दा नहीं? दस जासूसों के एक गिरोह में सिर्फ दो आदमी हमारे और दस तुम्हारे अपने भाई होते हैं। उनमें से कोई हमें धोखा देने की जुर्रत नहीं करता। वह जानते हैं कि ऐसी जुर्रत करने वाले का अन्जाम क्या

होता है। हम सिर्फ उसे क़त्ल नहीं करते। सबसे पहले उसके बीवी बच्चों को एक–एक करके क़त्ल करते और लाश उसके सामने रख देते हैं और जो हमारे वफ़ादार रहते हैं उनके लिए यह दुनिया बहिश्त बनी रहती है। उनमें से जो पकड़ा जाता है उसके घर वालों के घर जाकर वहाँ हम नक़दी के अंबार लगा देते हैं।"

"मुझे सोंचने दो।" इस्हाक़ ने कहा–"यहाँ से कब रवांगी होगी?"

"आज ही।" सरबराह ने कहा– "आधी रात के बाद। तुम सोंच लो। यह भी सोंच लेना कि इन्कार के बाद तुम आज़ाद नहीं हो सकोगे।"

"मैं जानता हूँ।"

"और तुम्हें यह भी बताना पड़ेगा कि क्या राज़ लेकर जा रहे हो।" सरबराह ने कहा।

"बता दूँगा।" इस्हाक़ ने जवाब दिया– "मेरा ज़ेहन बहुत हद तक आमादा हो गया है।"

"जाओ। अभी आराम करो।" सरबराह ने कहा।

इस्हाक़ तुर्क खेमें की तरफ चल पड़ा।

❖

दो माह पहले का ज़िक्र है कि अज़ाउद्दीन ने नुरूद्दीन जंगी की बेवा रज़ीअ खातुन के साथ शादी कर ली तो रज़ीअ खातुन को इस शादी की सिर्फ़ यह खुशी थी कि वह अज़ाउद्दीन को अपने ज़ेरे असर रखेगी और हलब की अफ़्वाज सुल्तान की अफ़्वाज की इत्तेहादी बन जायेगी। ख़ानाजंगी में मुसलमानों की फ़ौजों की बड़ी काम की कारआमद नफ़री मारी गयी थी। इतनी ज़्यादा जंगी क़ुव्वत ज़ाया हुई जो सलीबियों को सरज़मीने अरब से निकाल सकती थी और फ़िलिस्तीन को आज़ाद कराया जा सकता था। रज़ीअ खातुन को तवक्को थी कि अज़ाउद्दीन उसे अपना मुशीर बना लेगा मगर शादी के पहले रोज़ जब रज़ीअ खातुन उससे के साथ इस क़िस्म की बातें की तो उसने देखा अज़ाउद्दीन कोई दिलचस्पी नहीं ले रहा। उसके अन्दाज़ में उकताहट थी। वह उस कमरे मे सोया नहीं महल के किसी और कमरे में चला गया।

रज़ीअ खातुन ने उसका यह रवैया इसलिए बर्दाश्त कर लिया कि उसने इमारत को अभी–अभी हाथ में लिया है इसलिए मसरूफ़ भी होगा और उसका ज़ेहन इमारत के झमेलों में उलझा होगा। वह ख़ुद इमारत के मसलों में ख़ुसूसन फ़ौज के मामिलात में दिलचस्पी लेना और काम करना चाहती थी। नुरूद्दीर ज़ंगी की जिन्दगी में उसने बहुत काम किये थे। उसने दमिश्क़ की जवान लड़कियों को जंगी तरबियत दे रखी थी। वह सही मानों में मुजाहिदा थी, इसलिए वह सुल्तान की मुरीद थी।

सुबह हुई तो वह अपने कमरे से निकली। टहलती–टहलती महल के अन्दर–अन्दर कुछ दूर चली गयी। बहुत बड़ा महल था। उसे दूर एक बाग़ीचा नज़र आया। उसमें पांच छः जवान लड़कियाँ हंस खेल रही थीं। वह अभी उनसे दूर थी। एक अधेड़ उम्र औरत जिसका चेहरा करख़्त सा था दौड़ी हुई आई और रज़ीअ ख़ातुन से कहने लगी– "आप अपने कमरे में चली जाएं।"

"क्यो?"

"मोतहरत अमीर का यही हुक्म है।" औरत ने बताया– "आइये, मैं आपको वह जगह बताऊं जहाँ आप घूम फिर सकती हैं। उन्होंने सख़्ती से हुक्म दिया है कि आप को इधर न आने दिया जाए।"

"अगर मैं यह हुक्म न मानू तो क्या होगा?" रज़ीअ खातुन ने पूछा।

"मुझे गुस्ताख़ी का मौका न दें।" औरत ने इल्तिजा के लहजे में कहा–"मुझे आक़ा का हुक्म मानना है और मनवाना भी है।"

एक और अधेड़ उम्र औरत आ गयी। वह रज़ीअ खातुन के पास रूक गयी। उसने रज़ीअ खातुन को साथ लिया और उस कमरे में ले आई। कहने लगी– "मैं आपकी ख़ादिमा हूँ और मुझे हर वक़्त आप के पास रहने का हुक्म मिला है और यह हुक्म मुझे मिला है कि आप को एक खास हद से ज़्यादा बाहर न जाने दिया जाए।" रज़ीअ ख़ातुन सिटपिटा उठी। उसकी ख़ादिमा ने कहा– "आप घबरायें नहीं। मैं जानती हूँ कि आप क्या क्या ख़्वाब देखकर यहाँ आई हैं। आप का हर ख़्वाब ख़्वाब ही रहेगा। मुझे अपना हमदर्द और हमराज़ समझें। इस महल पर सलीबियों के घिनावने साये पड़े हुए हैं। आप का बेटा उनके हाथों खिलौना बना रहा, अब नया अमीर भी जो आपका ख़ाविन्द है सलीबियों का हाशिया बरदार बनेगा। यहाँ के बहुत से वज़ीर मुशीर सलीबियों के ज़र ख़रीद हैं।"

"सलाहुद्दीन अय्यूबी के मुतअल्लिक़ महल के लोगों की क्या राय है?" रज़ीअ खातुन ने पूछा– "क्या उसका यहाँ कुछ असर नहीं?"

"उतना नहीं जितना सलीबियों का है।" ख़ादिमा ने राज़दारी से कहा– "महल में सुल्तान के जासूस मौजूद हैं। मैं खुद उसी गिरोह से तअल्लुक रखती हूँ। आप को मैं अच्छी तरह जानती हूँ इसीलिए आप को बता दिया है कि मै क्या हूँ। मैं अभी आपको सारी बातें नहीं बताऊंगी। आप अज़ाउद्दीन से शिकायत करें कि आप को उसने कमरे का कैदी क्यों बना लिया है।"

"वह तो मैं करूंगी।"

"आप पर इस की नीयत वाज़ेह हो जायेगी।" ख़ादिमा ने कहा– "बाद के हालात तस्दीक करदेंगे कि मै झूठ नहीं बोल रही हूँ। हकीकत यह है कि अज़ाउद्दीन ने आप के साथ सिर्फ़ इसलिए शादी की है कि वह आप को अपना कैदी बना ले। वह सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी के साथ आप का तअल्लुक हमेशा के लिए तोड़ना चाहता था और वह आप को दमिश्क से निकालना चाहता था। दमिश्क के लोग सुल्तान अय्यूबी के हिमायती इस लिए हैं कि आप वहाँ मौजूद थीं। अब यह टोला दमिश्क के लोगों को सुल्तान के खिलाफ़ उकसायेगा। सका नतीजा यह होगा कि मुसलमान एक बार फिर ख़ानाजंगी में कटने लगेंगे और सलीबी इत्मीनान से हमारे इलाकों पर छा जायेंगे।"

"क्या यह इत्तलाअ सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी तक पहुँचायी जा सकती है?" रज़ीअ ख़ातुन ने पूछा।

"यह इन्तज़ाम किया जा चुका है।" ख़ादिमा ने जवाब दिया– "हमारे गिरोह के कमानदार ने एक बड़े ही दानिशमन्द और दिलेर आदमी को बुला भेजा है। उसका नाम इस्हाक है। वह तुर्क है। मैं उसे अच्छी तरह जानती हूँ। आप के बेटे की वफ़ात के बाद वह सलीबियों के इलाकों में यह देखने के लिए निकल गयाथा कि सलीबियों के अज़ाइम क्या हैं। वह आ जाएगा।"

"मुझे मिल सकेगा?"

"ज़रूर मिलवाऊंगी।" ख़ादिमा ने जवाब दिया–"मुझे अपने कमानदार ने कहा कि यह बातें आपको बता दूँ।"

❖❖

❖❖❖
❖❖
❖